विद्यया ऽ मृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर
2022

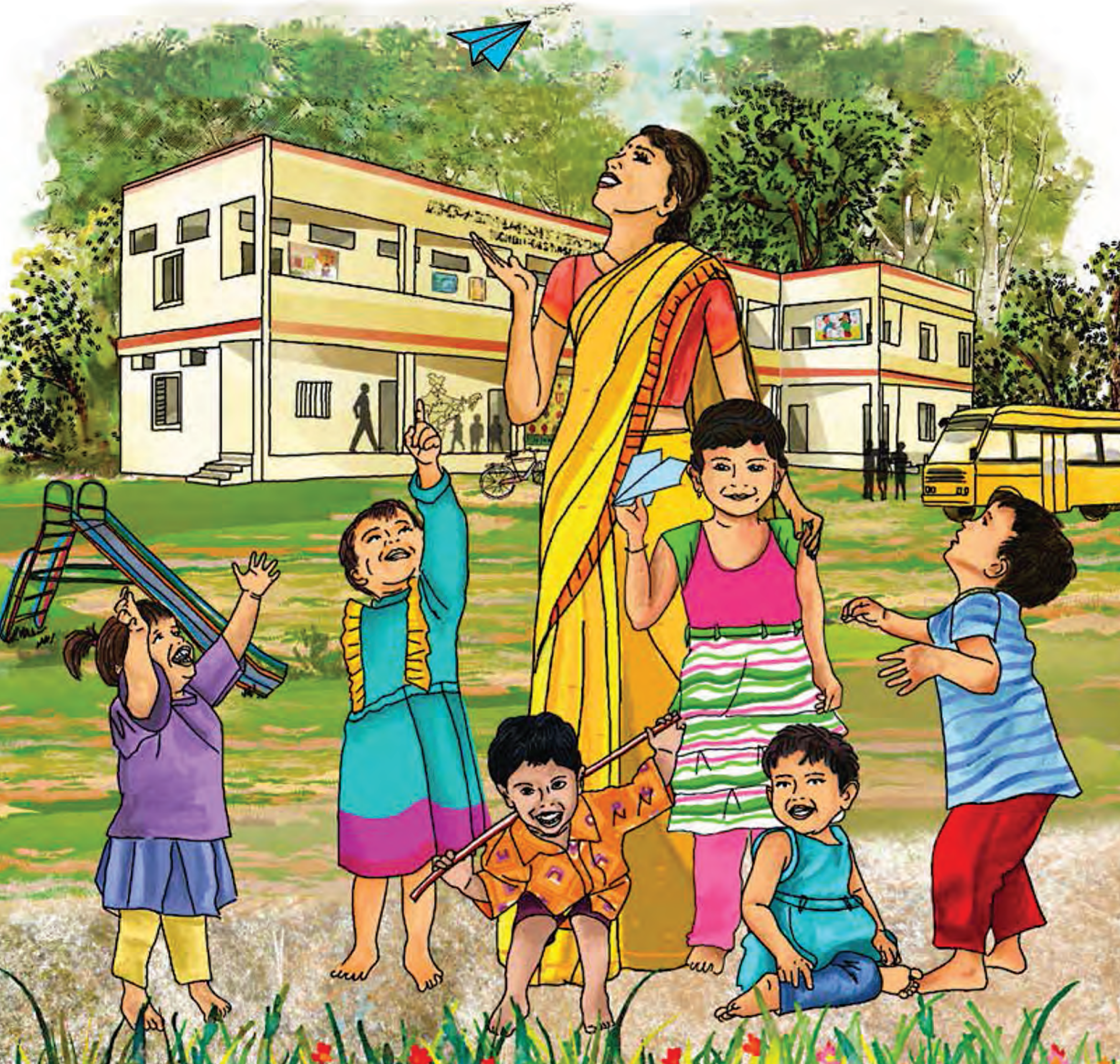

मानव जाति के हर दौर में ज्ञान, पिछली सभी पीढ़ियों द्वारा जो कुछ निर्मित हुआ, उसके योग का प्रतिनिधित्व करता है, वर्तमान पीढ़ी इसमें अपना योग देती है।

मोबियस पट्टी (Mobius strip) का रूपांकन ज्ञान की सतत, विकासशील और जीवंत प्रकृति का प्रतीक है जिसका न कोई प्रारंभ है, न अंत।

यह नीति इस सातत्य के एक भाग के रूप में ज्ञान के सृजन, संचरण, उपयोग और विस्तार की परिकल्पना करती है।

— राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा
बुनियादी स्तर
2022

विद्यया ऽमृतमश्नुते
एन सी ई आर टी
NCERT
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

32160 – राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा — बुनियादी स्तर, 2022

ISBN 978-93-5292-539-1

प्रथम संस्करण

दिसंबर 2024, अग्रहायण 1946

PD 5T BS

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2024

₹ 435.00

एन.सी.ई.आर.टी. वॉटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशन प्रभाग में प्रकाशित तथा डी.पी. प्रिंटिंग एवं बाइंडिंग, बी-149, ओखला-I, ए-1, नई दिल्ली 110020 द्वारा मुद्रित।

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फ़ोटो प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रचारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशन की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 फ़ोन : 011-26562708

108, 100 फ़ीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
बेंगलुरु 560 085 फ़ोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फ़ोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पिनहटी
कोलकाता 700 114 फ़ोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगाँव
गुवाहाटी 781021 फ़ोन : 0361-2676869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	:	*एम.वी. श्रीनिवासन*
मुख्य संपादक	:	*बिज्ञान सुतार*
मुख्य उत्पादन अधिकारी (प्रभारी)	:	*जहान लाल*
मुख्य व्यापार प्रबंधक	:	*अमिताभ कुमार*
उत्पादन अधिकारी	:	*दीपक जैसवाल*

आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या के लिए गठित राष्ट्रीय संचालन समिति की ओर से बहुत ही गर्व और संतोष के साथ मैं बुनियादी स्तर के लिए यह 'राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा' (एन.सी.एफ.) श्री धर्मेंद्र प्रधान, *माननीय शिक्षा मंत्री*, भारत सरकार को प्रस्तुत कर रहा हूँ।

21वीं सदी के ज्ञान आधारित समाज की चुनौतीपूर्ण माँगों को पूरा करने के लिए भारत स्वयं को तैयार कर सके, इस हेतु राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 एक परिवर्तनकारी पहल है। एन.सी.एफ. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रमुख घटकों में से एक है। यह एन.ई.पी. 2020 के उद्देश्यों, सिद्धांतों और दृष्टिकोण के आधार पर उपरोक्त परिवर्तन को सक्षम और ऊर्जावान बनाता है। इसका लक्ष्य सभी बच्चों को उच्चतम गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करना है, जो हमारे संविधान द्वारा परिकल्पित एक न्यायसंगत, समावेशी और बहुलतावादी समाज के अनुरूप हो।

भारत में 3 से 8 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए यह अब तक की पहली एकीकृत पाठ्यचर्या रूपरेखा है। यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा विद्यालयी शिक्षा के लिए निर्मित 5+3+3+4 'पाठ्यचर्या और शिक्षणशास्त्रीय' ढाँचे का सीधा प्रतिफल है।

बुनियादी स्तर 3–8 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा के एक एकीकृत दृष्टिकोण की कल्पना करता है। इस चरण की परिवर्तनकारी प्रकृति से शिक्षा की विषयवस्तु और प्रतिफलों में गुणात्मक सुधार की उम्मीद की जाती है, जिससे हमारे बच्चों के जीवन को बेहतर भविष्य की ओर बढ़ाया जा सके। बच्चों के विकास की प्रारंभिक अवधि से संबंधित सभी अध्ययन और शोध, निष्कर्षत: यह कहते हैं कि सभी व्यक्तियों और राष्ट्र के लिए उच्च गुणवत्ता वाली देखभाल और शिक्षा के सकारात्मक परिणाम होते हैं।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की यह रूपरेखा यह एन.सी.एफ. पूरी दुनिया में अनेक विधाओं में हुए अत्याधुनिक शोध पर आधारित है। इनमें अन्य चीजों के अलावा तंत्रिका विज्ञान, मस्तिष्क अध्ययन और संज्ञानात्मक विज्ञान की बेहतर समझ शामिल है। इसके अलावा इस एन.सी.एफ. में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा के अभ्यास से संचित अंतर्दृष्टि और विविध भारतीय परंपराओं से प्राप्त विवेक व ज्ञान का भी विशेष ध्यान रखा गया है। जैसा कि राष्ट्रीय शिक्षा निति 2020 में स्पष्ट है, पाठ्यचर्या-संगठन, शिक्षणशास्त्र, समय व विषयवस्तु संगठन और बच्चे के समग्र अनुभव के लिए यह नीति अवधारणात्मक, प्रक्रियात्मक और व्यावहारिक दृष्टिकोण के मूल में 'खेल' का उपयोग करती है। राष्ट्रीय शिक्षा निति 2020 में व्यक्त बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए बच्चों की आयु उपयुक्त रणनीतियों के साथ यह राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा एक स्पष्ट मार्ग दिखाती है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा हमारे लोगों और राष्ट्र की आवश्यकताओं-आकांक्षाओं के लिए जवाबदेह हो तथा इसमें सर्वश्रेष्ठ अनुभवों और ज्ञान का समावेश हो, यह सुनिश्चित करने के लिए हमने पूरे देश में व्यापक परामर्श किया। विद्यार्थियों और अभिभावकों सहित 10 लाख से अधिक इच्छुक नागरिकों, देश-भर के 1.3 लाख से अधिक शिक्षकों और शिक्षाविदों, 32 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के 1550 से अधिक जनपद स्तर के

परामर्श और 35 संस्थानों ने इस प्रक्रिया में भाग लिया जिससे हम लाभान्वित हुए। इसके अलावा राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों द्वारा गठित समूहों ने 25 विशेष प्रासंगिक विषयों पर 500 से अधिक प्रपत्र लिखे और इस प्रक्रिया में 4000 से अधिक विशेषज्ञ शामिल थे। साथ ही राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद द्वारा बनाए गए विशेषज्ञ समूह, जिसमें 175 से अधिक सदस्य थे, ने इन विषयों पर 25 प्रपत्र तैयार किए।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के लिए प्राप्त इस सामूहिक ज्ञान और विवेक के इतने विपुल आधार के बाद चुनौती यह थी कि इनका विश्लेषण करते हुए एक ठोस, व्यावहारिक और प्रभावी संश्लेषण कैसे विकसित किया जाए, जो धरातल पर व्यवहार में बदलाव ला सके। इस कारण इस राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा को एक ऐसी भाषा, संरचना और विभिन्न प्रकार के दृष्टांतों के साथ प्रस्तुत किया गया है जिससे पेशेवर, विशेष रूप से शिक्षक जो सबसे महत्वपूर्ण दृष्टि रखते हैं, अपनी वर्तमान वास्तविकताओं से इसे जोड़ने में सक्षम हो सकें। नए तरीके और दृष्टिकोण विकसित करने की आवश्यकता से उत्पन्न चुनौतियों को रेखांकित करने के लिए मैं इस समिति के काम के उपरोक्त पहलू पर बल दे रहा हूँ।

पाठ्यचर्या की यह रूपरेखा, विद्यालयी शिक्षा के लिए समग्र राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा का एक अभिन्न अंग होगी जो विकसित की जा रही है और जो 5+3+3+4 ढाँचे के शेष तीन स्तरों को संबोधित करेगी, जिसमें 18 वर्ष की आयु तक के बच्चों की शिक्षा शामिल होगी। हालाँकि यह राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा अपने आप में पूर्ण है, पर अन्य स्तरों के साथ इसके संबंध और निहितार्थ विद्यालयी शिक्षा के लिए समग्र राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा में तय किए जाएँगे। इसके अलावा, बुनियादी स्तर की यह पाठ्यचर्या रूपरेखा शिक्षा के इस स्तर के लिए शिक्षकों की तैयारी का मार्गदर्शन भी करेगी।

हम मानते हैं कि इस तरह की किसी भी रूपरेखा को धरातलीय क्रियान्वयन से प्राप्त प्रतिपुष्टियों से सुधारा जाना चाहिए। इसके क्रियान्वयन के समुचित अनुभव के बाद हम ऐसा करेंगे।

भारतीय शिक्षा और उसके माध्यम से देश के लिए योगदान करने का अवसर हमें मिला, इसके लिए हम आभारी हैं।

के. कस्तूरीरंगन

अध्यक्ष

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के लिए राष्ट्रीय संचालन समिति

बेंगलुरू

20 अक्तूबर 2022

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के बारे में

बुनियादी स्तर के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.एफ.एस.) को राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 की दृष्टि के आधार पर और इसके क्रियान्वयन को सक्षम बनाने के लिए विकसित किया गया है। समूचे भारत के विभिन्न संस्थानों के लिए बुनियादी स्तर के अंतर्गत 3 से 8 वर्ष की आयु वाले बच्चे हैं। यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा परिकल्पित स्कूली शिक्षा के शिक्षणशास्त्रीय पुनर्गठन और 5+3+3+4 पाठ्यचर्या का पहला चरण है।

पाठ्यचर्या

पाठ्यचर्या का तात्पर्य किसी भी संस्थागत व्यवस्था में शैक्षिक लक्ष्यों और उद्देश्यों के प्रति विद्यार्थियों के संगठित अनुभवों की समग्रता से है। पाठ्यचर्या को बनाने और जीवंत करने वाले तत्व बहुत हैं। इनमें लक्ष्य और उद्देश्य, पाठ्यक्रम, सीखने-सिखाने की विषयवस्तु, शिक्षणशास्त्रीय प्रक्रियाएँ और आकलन, शिक्षण-अधिगम सामग्री, स्कूली और कक्षा-कक्षीय प्रक्रियाएँ, सीखने का परिवेश, संस्था की संस्कृति आदि सहित बहुत कुछ शामिल है।

ऐसे कई दूसरे मामले भी हैं जो पाठ्यचर्या और उसके क्रियान्वयन को प्रभावित करते हैं या पाठ्यचर्या में शामिल न होने के बावजूद उससे अभिन्न रूप से जुड़े हुए हैं। इनमें शिक्षक और उनकी क्षमताएँ, अभिभावकों और समुदाय की भागीदारी, संस्थानों तक पहुँच के मुद्दे, संसाधनों की उपलब्धता तथा प्रशासनिक और सहयोगी ढाँचे आदि शामिल हैं।

पाठ्यचर्या की रूपरेखा

समूचे देश की पाठ्यचर्या में भारत की गौरवशाली एकता और विविधता की समझ होनी चाहिए और इसके प्रति पाठ्यचर्या को पूरी तरह उत्तरदायी होना चाहिए। एन.ई.पी. 2020 की संकल्पना, जिसमें पाठ्यचर्या विकसित करने के साथ संस्थानों और शिक्षकों का सशक्तीकरण करना भी शामिल है, इस विविधता और इसके पोषण से ऊर्जा हासिल करती है। राज्यों के पास संवैधानिक अधिदेश है कि वे अपने सभी बच्चों को उच्च गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करें और अपने राज्य विशिष्ट संदर्भ से पाठ्यचर्या के प्रति अपने दृष्टिकोण को तय करें।

देश-भर में सामंजस्य और सद्भाव को संभव बनाते हुए तथा गुणवत्ता और समता को आधार प्रदान करते हुए पाठ्यचर्या की रूपरेखा को देश में विविध पाठ्यचर्याओं को विकसित करने में मदद करने के लिए एक ढाँचे की तरह काम करना होगा।

इस प्रकार पाठ्यचर्या की रूपरेखा पाठ्यचर्या विकसित करने के तत्व, मार्गदर्शक सिद्धांत, लक्ष्य और एक संरचना प्रदान करती है। इसी के आधार पर राज्य, बोर्ड और स्कूलों के शिक्षकों सहित संबंधित प्राधिकारियों द्वारा पाठ्यपुस्तकों सहित शिक्षण-अधिगम सामग्री, पाठ्यक्रम और आकलन विधियाँ विकसित की जाएँगी।

एन.सी.एफ के उद्देश्य

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.) का उद्देश्य, एन.ई.पी. 2020 की परिकल्पना के अनुसार शिक्षणशास्त्र सहित पाठ्यक्रम में सकारात्मक परिवर्तनों के माध्यम से भारत की स्कूली शिक्षा प्रणाली को सकारात्मक रूप से बदलने में मदद करना है।

विशेष रूप से एन.सी.एफ. का उद्देश्य शिक्षा में मात्र विचारों को ही नहीं, बल्कि व्यवहारों को भी बदलने में मदद करना है। चूँकि 'पाठ्यचर्या' शब्द, विद्यार्थियों द्वारा स्कूल में होने वाले समग्र अनुभवों को समाहित करता है, इसलिए 'व्यवहार' केवल पाठ्यचर्या की अंतर्वस्तु और शिक्षणशास्त्र को संदर्भित नहीं करता है, बल्कि इसमें स्कूल का परिवेश और संस्कृति भी शामिल है। पाठ्यचर्या का यही समग्र समस्त बदलाव, विद्यार्थियों के सीखने के समग्र अनुभवों को सकारात्मक रूप से बदलने में हमें सक्षम बनाएगा।

उद्देश्य प्राप्ति हेतु एन.सी.एफ. की विशेषताएँ

यह एन.सी.एफ. प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा के क्षेत्र में हुए नवीनतम शोधों पर आधारित है। इसका लक्ष्य है कि शिक्षा पेशेवर, जिसमें शिक्षक और अन्य प्रशिक्षक, स्कूल नेतृत्व तथा शिक्षा व्यवस्था के प्राधिकारी जैसे– परियोजना अधिकारी, क्लस्टर व ब्लॉक संसाधन व्यक्ति, ब्लॉक शिक्षा अधिकारी, शिक्षक प्रशिक्षक, परीक्षा बोर्ड और पाठ्यचर्या/पाठ्यक्रम/पाठ्यपुस्तक विकास समूह आदि इसे समझ सकें, अपने को इससे जोड़ सकें और इसका इस्तेमाल कर सकें।

एन.सी.एफ. का उद्देश्य इच्छुक पाठकों में इस बात की तार्किक समझ पैदा करना है कि स्कूलों के लिए हमारे नए दृष्टिकोण में विद्यालयी शिक्षा कैसी होनी चाहिए। अपने पाठकों को इसके कारणों की समझ प्रदान करना भी एन.सी.एफ. का उद्देश्य है। साथ ही एन.सी.एफ. का यह भी उद्देश्य है कि भारतीय शिक्षा में बड़ी हिस्सेदारी रखने वाले अभिभावक, समुदाय के सदस्य और भारतीय नागरिक के रूप में कोई व्यक्ति इसमें क्या भूमिका निभा सकता है।

एन.सी.एफ. के केंद्र में प्राथमिक रूप से शिक्षक ही है। इसका कारण यह है कि शिक्षा व्यवहारों के केंद्र में शिक्षक ही होते हैं। जो बदलाव हम चाहते हैं, अंततः उसका पथ-प्रदर्शक शिक्षक ही होता है। इस तरह पाठ्यक्रम विकासकर्ताओं, प्रशासकों और अन्य सहित सबको शिक्षक के दृष्टिकोण को अपनाना चाहिए।

इस प्रकार एन.सी.एफ. का उद्देश्य ऐसी प्रस्तुति शैली और ढाँचा अपनाना है जो शिक्षक के लिए पठनीयता, पहुँच और प्रासंगिकता के उपरोक्त उद्देश्यों को संभव बनाए। एन.सी.एफ. का उद्देश्य अंतर्निहित दर्शन और सिद्धांतों को स्पष्ट करना है, पर यह इन्हें केवल अमूर्तता के स्तर पर नहीं छोड़ता है बल्कि व्यवहार में भी लाता है।

इसे संभव बनाने के लिए और अपने विचारों को और अधिक स्पष्टता से संप्रेषित करने के लिए इस एन.सी.एफ. में तरह-तरह के संदर्भों में वास्तविक जीवन के स्पष्ट उदाहरणों सहित व्यवहार के स्तर पर विभिन्न तरह के विवरण और विशिष्टताएँ शामिल हैं। शिक्षक या पाठ्यचर्या विकसित करने वाले इन उदाहरणों से बँधे नहीं हैं, लेकिन यह सोचा गया है कि इस तरह के विवरण प्रस्तुत एन.सी.एफ. को समझ सकने, खुद को इससे जोड़ सकने और इसका इस्तेमाल कर सकने में मदद करेंगे।

सर्वोत्तम संसाधन वाले संस्थानों की परिकल्पना के अनुरूप होने के साथ ही इस एन.सी.एफ. का उद्देश्य मौजूदा संस्थानों और शिक्षक की वास्तविकताओं का लेखा-जोखा भी रखना है। इस प्रकार उद्देश्य वर्तमान संदर्भ की वास्तविकता में गहरी पैठ होने के साथ महत्वाकांक्षी भी है।

आभार

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के लिए राष्ट्रीय संचालन समिति

- के. कस्तूरीरंगन (*अध्यक्ष*)
- नज़मा अख्तर
- टी. वी. कट्टीमनी
- मिलिंद काम्बले
- धीर झींगरन
- मिशेल डैनिनो
- महेश चंद्र पंत
- मञ्जुल भार्गव
- शंकर मरुवाड़ा
- गोविंद प्रसाद शर्मा
- एम.के. श्रीधर
- दिनेश प्रसाद सकलानी (*सदस्य सचिव*)
- जगबीर सिंह

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के लिए अधिदेश समूह

- मञ्जुल भार्गव (*अध्यक्ष*)
- रंजना अरोड़ा
- बी. एन. गंगाधर
- धीर झींगरन
- मिशेल डैनिनो
- अनिरुद्ध देशपांडे
- अनुराग बेहर
- शंकर मरुवाड़ा
- के. रामचंद्रन
- एम. के. श्रीधर

एकीकरण समूह

- रंजना अरोड़ा
- अनिरुद्ध देशपांडे
- अनुराग बेहर

- मञ्जुल भार्गव
- एम.के. श्रीधर
- श्रीधर श्रीवास्तव
- दिनेश प्रसाद सकलानी

बुनियादी स्तर समूह

- टी.वी. कट्टीमनी
- आयुष्मान गोस्वामी
- अमरेंद्र बेहरा
- पद्मा यादव
- के. रामचंद्रन
- शशिकला वंजारी
- गोविंद प्रसाद शर्मा

आरंभिक स्तर समूह

- धीर झींगरन
- हर्षभाई पटेल
- अमरेंद्र बेहरा
- के. रामचंद्रन
- वाई. श्रीकांत
- सुनीति सनवाल

मध्य स्तर समूह

- मिलिंद काम्बले
- मिशेल डैनिनो
- हर्षभाई पटेल
- एम.सी. पंत
- प्रत्यूष कुमार मंडल
- वाई. श्रीकांत
- अंजुम सिबिआ

माध्यमिक स्तर समूह

- नज़मा अख्तर
- पी.सी. अग्रवाल

- मिशेल डैनिनो
- प्रत्यूष कुमार मंडल
- मिलिंद मराठे
- संध्या साहू
- जगबीर सिंह

शिक्षा मंत्रालय

- अनिता करवाल
- रजनीश कुमार
- लामचोंघोई स्वीटी चांग्सन

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.)

- रंजना अरोड़ा
- आर.आर. कोइरेंग
- अमरेंद्र बेहरा
- प्रत्यूष कुमार मंडल
- पद्‌मा यादव
- सरयुग यादव
- श्रीधर श्रीवास्तव
- दिनेश प्रसाद सकलानी
- सुनीति सनवाल

एन.सी.एफ. के लिए राष्ट्रीय फोकस समूह

एन.सी.एफ. के लिए राज्य फोकस समूह

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् एवं राज्यों के शिक्षा विभाग

बड़ी संख्या में शिक्षक, नागरिक समाज संगठन, स्कूल और 1.3 लाख से अधिक दूसरे हितधारक, जिन्होंने राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के लिए ऑनलाइन सर्वेक्षण में भाग लिया।

जनपद स्तरीय परामर्शों के प्रतिभागी

समीक्षा समिति के सदस्य

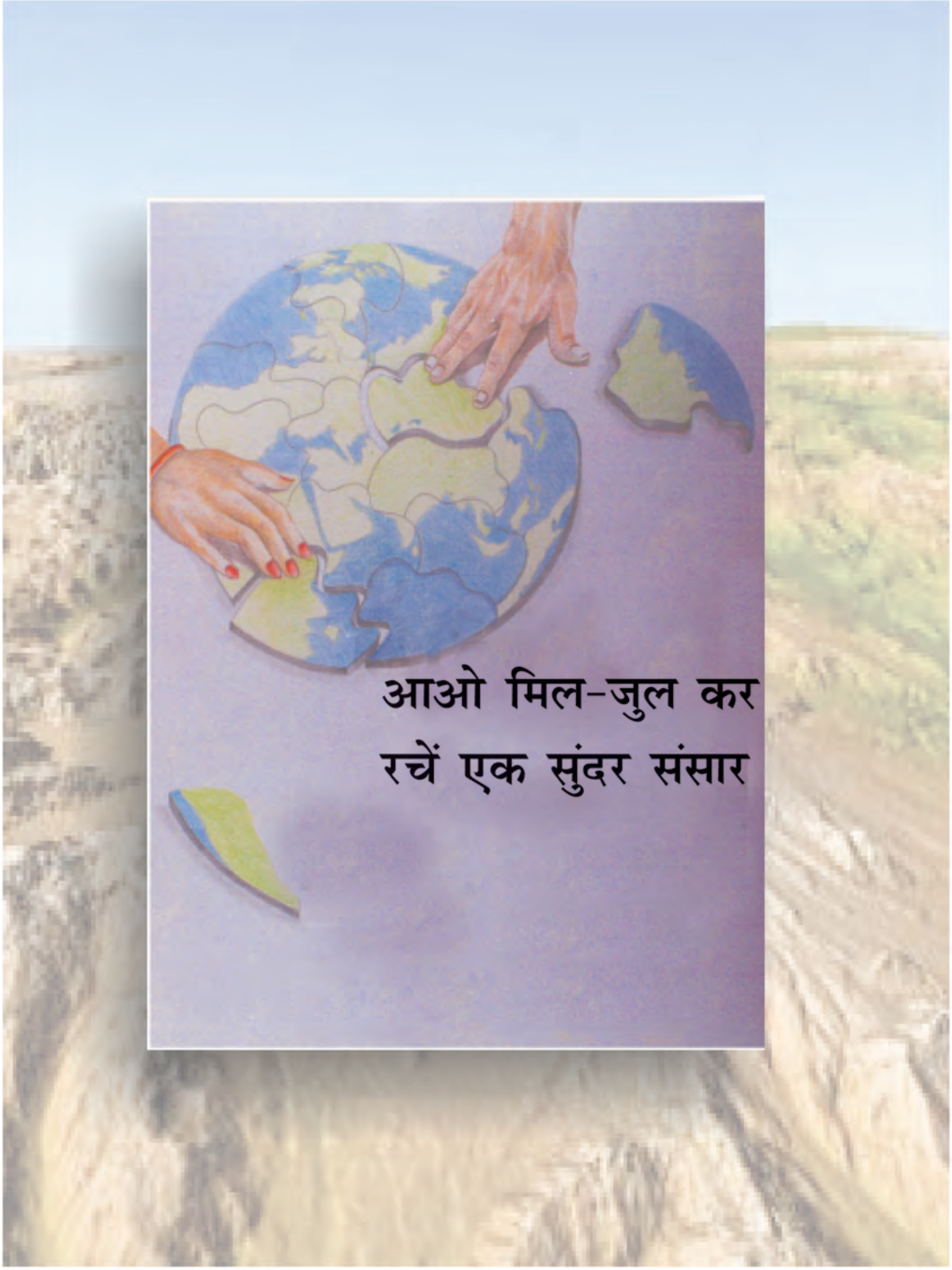
आओ मिल-जुल कर
रचें एक सुंदर संसार

शब्द संक्षेप

बी.ई.ओ.	BEO	ब्लॉक शिक्षा अधिकारी
बी.आई.टी.ई.	BITE	ब्लॉक शिक्षक शिक्षा संस्थान
बी.आर.सी.	BRC	ब्लॉक संसाधन केंद्र
सी.बी.एस.ई.	CBSE	केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
सी.जी.	CG	पाठ्यचर्या लक्ष्य
सी.आर.सी.	CRC	क्लस्टर संसाधन केंद्र
डी.ई.ओ.	DEO	जिला शिक्षा अधिकारी
डायट	DIET	जिला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थान
दीक्षा	DIKSHA	ज्ञान साझाकरण डिजिटल अवसंरचना
डी.आई.एस.ई.	DISE	जिला शिक्षा सूचना केंद्र
ई.सी.सी.ई.	ECCE	प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा
ई.सी.ई.	ECE	प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा
एफ.एल.एन.	FLN	बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान
एन.सी.एफ.-एफ.एस.	NCF-FS	बुनियादी स्तर के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा
जी.डी.पी.	GDP	सकल घरेलू उत्पाद
जी.ई.आर.	GER	सकल नामांकन अनुपात
जी.आर.आर.	GRR	जिम्मेदारी से क्रमिक मुक्ति
आई.सी.डी.एस.	ICDS	समेकित बाल विकास योजना
आई.ई.सी.ई.आई.	IECEI	भारत में प्रारंभिक बाल्य शिक्षा प्रभाव
आई.टी. ई. पी.	ITEP	एकीकृत माध्यमिक शिक्षा कार्यक्रम
एम.डब्लू.सी.डी.	MWCD	महिला और बाल विकास मंत्रालय
एन.ए.एस.	NAS	राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण
एन.सी.एफ.	NCF	राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा
एन.सी.पी.एफ.ई.सी.सी.ई.	NCPFECCE	प्रारंभिक बाल्यवस्था देखभाल और शिक्षा हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या एवं शैक्षणिक रूपरेखा
एन.सी.टी.ई.	NCTE	राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद
एन.डी.ई.ए.आर.	NDEAR	राष्ट्रीय डिजिटल शिक्षा वास्तुशिल्प
एन.ई.पी.	NEP	राष्ट्रीय शिक्षा नीति
एन.ई.आर.	NER	कुल नामांकन अनुपात
एन.एफ.एच.एस.	NFHS	राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण
एन.जी.ओ.	NGO	गैर-सरकारी संगठन
एन.आई.ओ.एस.	NIOS	राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
एन.आई.पी.सी.सी.डी.	NIPCCD	राष्ट्रीय जन सहयोग एवं बाल विकास संस्थान
निपुण	NIPUN	समझ के साथ पढ़ने और संख्या ज्ञान में प्रवीणता के लिए राष्ट्रीय पहल

पी.ई.ई.ओ.	PEEO	पंचायत प्राथमिक शिक्षा अधिकारी
पोषण	POSHAN	समग्र पोषण हेतु प्रधानमंत्री व्यापक योजना
पी.टी.आर.	PTR	विद्यार्थी-शिक्षण अनुपात
क्यू.आर. कोड	QR Code	द्रुत प्रतिक्रिया कोड
आर.ओ.आई.	ROI	निवेश संबंधी प्रतिफल
आर.टी.ई.	RtE	शिक्षा का अधिकार
सार्थक	SARTHAQ	गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों एवं शिक्षकों का समग्र विकास
एस.सी.ई.आर.टी.	SCERT	राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
सी.ई.डी.जी.	SEDG	सामाजिक-आर्थिक वंचित वर्ग
एस.एल.ए.एस.	SLAS	राज्य स्तरीय उपलब्धि सर्वेक्षण
एस.एम.सी.	SMC	स्कूल प्रबंधन समिति
टी.ई.टी.	TET	शिक्षक योग्यता परीक्षा
टी.एल.एम.	TLM	शिक्षण-अधिगम सामग्री
यू.डी.आई.एस.ई.	UDISE	समेकित जिला शिक्षा सूचना केंद्र
यूनेस्को	UNESCO	संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन
यूनिसेफ	UNICEF	संयुक्त राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय बाल आपातकालीन कोष

अनुक्रमणिका

आमुख *iii*

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के बारे में *v*

शब्द संक्षेप *xi*

अध्याय 1: प्रस्तावना और परिचय **1**

खंड 1.1: परिचय 2

खंड 1.2: भारत और दुनिया में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा का विकास 6

खंड 1.3: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की परिकल्पना 20

खंड 1.4: बुनियादी स्तर में बच्चे कैसे सीखते हैं? 27

खंड 1.5: बुनियादी स्तर के लिए विद्यालयी शिक्षा का संदर्भ 35

अध्याय 2: लक्ष्य, पाठ्यचर्या के उद्देश्य, दक्षताएँ और सीखने के प्रतिफल **38**

खंड 2.1: परिभाषाएँ 39

खंड 2.2: लक्ष्य से सीखने के प्रतिफलों तक 41

खंड 2.3: पाठ्यचर्या के उद्देश्य 44

खंड 2.4: दक्षताएँ 47

खंड 2.5: उदाहरण के साथ सीखने के प्रतिफल 52

अध्याय 3: भाषा शिक्षा और साक्षरता के प्रति दृष्टिकोण **57**

खंड 3.1: सिद्धांत 58

खंड 3.2: बुनियादी स्तर पर भाषा शिक्षा और साक्षरता पर एन.सी.एफ. का दृष्टिकोण 62

अध्याय 4: शिक्षणशास्त्र **68**

खंड 4.1: शिक्षणशास्त्र के सिद्धांत 69

खंड 4.2: शिक्षण के लिए योजना 71

खंड 4.3: शिक्षकों और बच्चों के बीच सकारात्मक संबंध का निर्माण 76

खंड 4.4: खेलों के माध्यम से सीखना — बातचीत, कहानियाँ, खिलौने, संगीत, कला और शिल्प 80

खंड 4.5: साक्षरता और संख्या ज्ञान के लिए रणनीतियाँ 102

खंड 4.6: सकारात्मक कक्षा-कक्ष परिवेश बनाना 115

खंड 4.7: परिवेश का आयोजन 124

अध्याय 5: शिक्षण के लिए विषयवस्तु का चयन, संगठन और संदर्भीकरण **127**

खंड 5.1: पाठ्यक्रम का विकास 129

खंड 5.2: विषयवस्तु चयन के सिद्धांत 130

खंड 5.3: विषयवस्तु को संगठित करने के तरीके 136

खंड 5.4: शिक्षण-अधिगम सामग्री 143
खंड 5.5: पुस्तकें और पाठ्यपुस्तकें 153
खंड 5.6: सीखने का परिवेश 160

अध्याय 6: सीखने में संवर्धन के लिए आकलन 164
खंड 6.1: आकलन के कुछ मार्गदर्शक सिद्धांत 165
खंड 6.2: आकलन के तरीके और उपकरण 167
खंड 6.3: प्रभावी शिक्षण-अधिगम के लिए बच्चों की प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण 174
खंड 6.4: आकलन का प्रलेखन और संप्रेषण 176

अध्याय 7: समय का नियोजन 180
खंड 7.1: दिन का नियोजन 181

अध्याय 8: अतिरिक्त महत्वपूर्ण क्षेत्र 185
खंड 8.1: विकासात्मक विलंब और दिव्यांगता/अक्षमता को संबोधित करना 186
खंड 8.2: विद्यालय में सुरक्षा और संरक्षण 194

अध्याय 9: आरंभिक स्तर तक संयोजन 197
खंड 9.1: विकासात्मक क्षेत्रों से पाठ्यचर्या के क्षेत्रों तक 198
खंड 9.2: विषयवस्तु, शिक्षणशास्त्र और आकलन में निरंतरता और परिवर्तन 199

अध्याय 10: एक सहायक पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण 200
खंड 10.1: शिक्षकों को सक्षम और सशक्त बनाना 201
खंड 10.2: सीखने का समुचित परिवेश सुनिश्चित करना 207
खंड 10.3: अकादमिक और प्रशासनिक पदाधिकारियों की भूमिका 210
खंड 10.4: अभिभावकों और समुदाय की भूमिका 212
खंड 10.5: तकनीकी का लाभ उठाना 215

अनुलग्नक 1: सीखने के प्रतिफलों के उदाहरणात्मक विवरण 218
अनुलग्नक 2: उदाहरणात्मक प्रक्रियाएँ 271
अनुलग्नक 3: बुनियादी स्तर के लिए निपुण भारत और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की दक्षताओं की मैपिंग 329
अनुलग्नक 4: भारत और विश्व में प्रारंभिक बाल्यावस्था और देखभाल शिक्षा पर शोध 340

पारिभाषिक शब्दावली 344
संदर्भ 348
ग्रंथ-सूची 350
राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के विकास के लिए विस्तृत और समावेशी प्रक्रिया 356

अध्याय 1

प्रस्तावना और परिचय

यह अध्याय बुनियादी स्तर के लिए एन.सी.एफ. का एक आधार तैयार करता है। यह प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा की अहमियत, भारतीय परंपरा में इसकी जड़ें, जीवन में इसके महत्व को रेखांकित करने वाले समसामयिक शोध, प्रारंभिक वर्षों में 'खेल' की केंद्रीयता और इस समय परिवार व समुदाय द्वारा निभाई जाने वाली अहम भूमिका आदि को शामिल करते हुए एक रूपरेखा प्रस्तुत करता है।

यह अध्याय एन.सी.एफ. का मार्गदर्शन करने वाले मूल सिद्धांतों और दृष्टि का भी एक खाका प्रस्तुत करता है।

खंड 1.1
परिचय

1.1.1 प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा

बच्चे के जीवन के पहले आठ साल बहुत ही अहम होते हैं। इन प्रारंभिक वर्षों में ही उसके पूरे जीवन के स्वास्थ्य एवं कल्याण और अन्य सभी आयामों यथा शारीरिक, संज्ञानात्मक और सामाजिक–भावनात्मक में समग्र वृद्धि और विकास की नींव पड़ जाती है।

निश्चित रूप से, इन वर्षों में मस्तिष्क के विकास की गति, व्यक्ति के जीवन की किसी भी अन्य अवस्था की तुलना में अधिक तेज होती है। तंत्रिका विज्ञान के क्षेत्र में हुए शोधों से हमें पता चलता है कि व्यक्ति के मस्तिष्क का 85 प्रतिशत से अधिक हिस्सा छह वर्ष की आयु तक विकसित हो चुका होता है। यह प्रारंभिक वर्षों में बच्चे के मस्तिष्क के स्वस्थ व सतत विकास और वृद्धि के लिए उनकी उपयुक्त देखभाल और उपयुक्त प्रोत्साहन के विशिष्ट महत्व को इंगित करता है।

हाल ही में हुए शोध यह भी दर्शाते हैं कि आठ वर्ष से कम आयु के बच्चे एक रैखिक और आयु आधारित शैक्षिक पथ का अनुसरण नहीं करते। आठ वर्ष की आयु में आते-आते बच्चे अपने सीखने के निर्धारित पथ को प्राप्त करने लगते हैं। आठ वर्ष की आयु के बाद के सीखने और विकास की यह अंतर्निहित विशेषताएँ भी होती हैं कि वे गैर-रैखिक और सीखने की अलग-अलग गति लिए होते हैं। यद्यपि, आठ वर्ष की आयु तक यह अंतर इतने भिन्न होते हैं कि औसतन आठ वर्ष की आयु को सीखने के एक चरण से दूसरे चरण के संक्रमण बिंदु के रूप में देखना प्रभावी रहता है। विशेष रूप से, केवल आठ वर्ष की आयु में ही बच्चे अधिक क्रमबद्ध रूप से सीखने के अनुकूल होने लगते हैं। इस प्रकार प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ई.सी.सी.ई.) को आमतौर पर जन्म से आठ वर्ष तक के बच्चों की देखभाल और शिक्षा के रूप में परिभाषित किया जाता है।

1.1.2 बुनियादी स्तर

(क) मुख्यतः घर पर (0–3) वर्ष

तीन साल की आयु तक अधिकांश बच्चे अपने घर-परिवार के परिवेश में बड़े होते हैं। कुछ बच्चे क्रेच (शिशु सदन) भी जाते हैं। तीन साल की आयु के बाद बहुत से बच्चों का काफ़ी सारा समय आँगनवाड़ियों और पूर्व-प्राथमिक जैसी संस्थागत जगहों पर गुज़रता है। तीन वर्ष से अधिक आयु के बच्चों के लिए एक संगठित व्यवस्था में उच्च गुणवत्ता वाली पूर्व-प्राथमिक शिक्षा प्रदान करना, एन.ई.पी. 2020 की प्रमुख प्राथमिकताओं में से एक है। तीन वर्ष की आयु तक घर का परिवेश ही बच्चे के लिए पर्याप्त पोषण, अच्छी स्वास्थ्य आदतें, जिम्मेदारीपूर्वक देखभाल, सुरक्षा व संरक्षण और बचपन के आरंभिक दिनों में सीखने के लिए प्रोत्साहन का एकमात्र प्रदाता होता है। वे यही पहलू हैं, जो ई.सी.सी.ई. का आधार बनते हैं। तीन वर्ष की आयु के बाद, पोषण, स्वास्थ्य, देखभाल, सुरक्षा और प्रोत्साहन जैसी घटकों पर घर पर तो काम होते ही रहना चाहिए, साथ ही आँगनवाड़ियों और पूर्व-प्राथमिक जैसे संस्थागत व्यवस्था में उचित और पूरक तरीके से भी इसे सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

तीन वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए उपयुक्त ई.सी.सी.ई. में न केवल स्वास्थ्य, सुरक्षा और पोषण शामिल है, अपितु इसमें संज्ञानात्मक और भावनात्मक देखभाल तथा शिशु के साथ बातचीत, खेलना, घूमना, संगीत और आवाज़ें सुनना और अन्य इंद्रियों खासकर देखना, छूना आदि को विकसित करने के लिए उपयुक्त अनुभव उपलब्ध करवाना भी शामिल है, ताकि तीन वर्ष पूरे होते-होते विकास के विभिन्न क्षेत्रों में इष्टतम विकासात्मक प्रतिफलों को हासिल किया जा सके। विकास के इन विभिन्न क्षेत्रों में शामिल हैं— शारीरिक और गत्यात्मक विकास, सामाजिक–भावनात्मक विकास, संज्ञानात्मक विकास, संप्रेषण, प्रारंभिक भाषा, उद्गामी साक्षरता और संख्या ज्ञान। यह ध्यान में रखना आवश्यक है कि ये सभी क्षेत्र परस्पर व्यापी हैं और निश्चित रूप से एक का विकास दूसरे पर निर्भर करता है।

घर के परिवेश में 0–3 आयुवर्ग के बच्चों के लिए, उच्च गुणवत्तापूर्ण ई.सी.सी.ई. सुनिश्चित करने के लिए महिला व बाल विकास मंत्रालय द्वारा दिशानिर्देश या सुझावात्मक प्रक्रियाएँ विकसित और प्रचारित की जाएँगी।

(ख) संस्थागत व्यवस्था (3–8) वर्ष से

तीन से आठ वर्ष की आयु के दौरान, संस्थागत परिवेश में मिलने वाली उपयुक्त और उच्च गुणवत्तापूर्ण ई.सी.सी.ई. सभी बच्चों के लिए उपलब्ध होनी चाहिए। भारत में आमतौर पर यह कार्यक्रम निम्नानुसार होते हैं—

i. **3–6 वर्ष:** आँगनवाड़ियों, बाल-वाटिकाओं और पूर्व-प्राथमिक के प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा के कार्यक्रम

ii. **6–8 वर्ष:** स्कूल के प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा के कार्यक्रम (कक्षा 1 व 2)

तीन से आठ वर्ष की आयु तक, ई.सी.सी.ई. में स्वास्थ्य, सुरक्षा, देखभाल और पोषण पर निरंतर ध्यान देना शामिल हैं; लेकिन साथ ही, स्व-सहायता कौशल, गत्यात्मक कौशल, स्वच्छता, अलगाव की चिंता से निपटना, घूमने और व्यायाम के ज़रिए शारीरिक विकास, माता–पिता और अन्य लोगों के साथ बातचीत में अपने विचार और भावनाएँ व्यक्त करना, अपने साथियों के साथ आराम से रहना, अपने काम को पूरा करने के लिए समय दे पाना, नीतिगत गुणों का विकास और सभी अच्छी आदतें बनाने के लिए भी ध्यान देना महत्वपूर्ण है। इस आयु के दौरान बच्चों के लिए खेल आधारित शिक्षा खासतौर पर महत्वपूर्ण है। यह खेल समूह में या व्यक्तिगत हो सकते हैं। खेल आधारित शिक्षा, बच्चों की जन्मजात क्षमताओं और जिज्ञासा, सृजनात्मकता, आलोचनात्मक चिंतन, सहयोग, टीम वर्क, सामाजिक अंतर्क्रिया, समानुभूति, करुणा, समावेशिता, संप्रेषण, संस्कृति की सराहना, हँसी-खेल की भावना, आस-पास के परिवेश के प्रति जागरूकता, साथ-ही-साथ शिक्षकों, अपने साथियों व अन्य के साथ सफलतापूर्वक एवं सम्मानपूर्वक बातचीत करने की योग्यता को भी पोषित करते हैं।

(ग) साक्षरता और संख्या ज्ञान का महत्व

इन वर्षों के दौरान ई.सी.सी.ई. में प्रारंभिक साक्षरता और संख्या ज्ञान का विकास भी शामिल होता है, जिसमें वर्णमाला, भाषा, संख्याएँ गिनना, रंग, आकृतियाँ, चित्रांकन या रेखांकन, आंतरिक और बाह्य खेल, पहेली और तार्किक चिंतन, कला, शिल्प, संगीत और घूमना-फिरना आदि के बारे में सीखना शामिल है। इसका उद्देश्य ऊपर वर्णित क्षेत्रों में विकासात्मक प्रतिफलों का निर्माण करना है, जो प्रारंभिक साक्षरता, संख्या ज्ञान और पर्यावरण के बारे में जागरूकता पर केंद्रित है। 6–8 वर्ष की आयु सीमा के दौरान यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि यही

वर्ष बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान की उपलब्धि का आधार बनते हैं। समग्र शिक्षा के लिए बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान (एफ.एल.एन.) का महत्व बहुत ही स्पष्ट है और एन.ई.पी. 2020 में इस पर पूरी तरह से बल दिया गया है।

(घ) बुनियादी स्तर के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.)

ऊपर वर्णित सभी बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 की नई व्यवस्था में 5+3+3+4 के तहत 3–8 वर्ष की आयु को बुनियादी स्तर कहा गया है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की इस रूपरेखा का उद्देश्य, प्रारंभिक बाल्यावस्था एवं देखभाल शिक्षा के संपूर्ण संदर्भ को लेते हुए, संस्थागत व्यवस्था में बुनियादी स्तर को संबोधित करना है। चूँकि यह एन.सी.एफ. संस्थागत व्यवस्था में ई.सी.सी.ई. पर ध्यान केंद्रित करता है, इसलिए इसमें घर के परिवेश— जिसमें परिवार, रिश्तेदार, पड़ोसी और करीबी समुदाय के अन्य लोग शामिल हैं और जो इस आयु के बच्चों पर काफी महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं—के बारे में ज़्यादा बल देकर बात नहीं कही गई है। इसलिए, इस एन.सी.एफ. में इस आयु में वांछित विकासात्मक प्रतिफलों को प्राप्त करने में अभिभावकों और समुदाय की भूमिका के बारे में बात होगी, लेकिन इसमें 3 वर्ष से छोटी आयु के बच्चों के संदर्भ में ई.सी.सी.ई. की बात नहीं होगी, क्योंकि यह संस्थागत व्यवस्था के तहत नहीं आता है।

(ङ) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का लक्ष्य

किसी व्यक्ति के विकास और समाज को होने वाले दीर्घकालीन लाभ में, इस बुनियादी स्तर का विशिष्ट महत्व है और इसके मद्देनज़र, एन.ई.पी. 2020 का लक्ष्य स्पष्ट है— वर्ष 2025 तक, 3–8 आयु वर्ग के प्रत्येक बच्चे के लिए निःशुल्क, सुरक्षित, उच्च गुणवत्तापूर्ण, मानसिक तथा विकासात्मक दृष्टि से उपयुक्त ई.सी.सी.ई. उपलब्ध हो। यह बच्चे के जन्म की परिस्थितियों और उसकी पृष्ठभूमि से प्रभावित न हो। गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा जीवन-भर, शैक्षिक प्रणाली में बच्चों को भागीदारी करने और फलने–फूलने में सक्षम बनाती है और इसलिए ई.सी.सी.ई. वह कारक है जो सबसे उपयुक्त और सक्षम है। बुनियादी स्तर में उच्च गुणवत्ता वाली ई.सी.सी.ई. का होना सभी बच्चों को एक अच्छे, नैतिक, विचारशील, सृजनात्मक, समानुभूतिपूर्ण और निर्माणकारी मनुष्य बनने का अवसर देता है।

हमारे देश के कल्याण और समृद्धि के लिए, हमारे समाज के सभी सदस्यों (शिक्षकों से लेकर स्कूल के पदाधिकारियों, माता-पिता और समुदाय के सदस्यों से लेकर नीति निर्माताओं और प्रशासकों) को यह सुनिश्चित करने के लिए एक साथ आना चाहिए कि जीवन के इन प्रारंभिक और सबसे महत्वपूर्ण वर्षों में प्रत्येक बच्चे को, उचित और पर्याप्त पोषण के साथ-साथ शारीरिक, संज्ञानात्मक और सामाजिक-भावनात्मक प्रोत्साहन उपलब्ध हो पाए। ई.सी.सी.ई. में निवेश करने के लिए मज़बूत आधार अगले भाग में विस्तार से बताया गया है।

1.1.3 प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा का आधार

पूरी दुनिया में शिक्षा, तंत्रिका विज्ञान और अर्थशास्त्र के क्षेत्र में हुए शोध यह स्पष्ट तौर पर दर्शाते हैं कि निःशुल्क, सुलभ और उच्च गुणवत्ता वाली प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा सुनिश्चित करना शायद सबसे अच्छा निवेश है जो कोई भी देश अपने भविष्य के लिए कर सकता है।

- जैसा कि पहले जिक्र किया गया है, बच्चे के जीवन के पहले आठ वर्षों में मस्तिष्क का विकास बहुत तेजी से होता है और यही प्रारंभिक वर्षों में संज्ञानात्मक और सामाजिक-भावनात्मक प्रोत्साहन के महत्व को इंगित करता है।
- बच्चे प्रारंभिक वर्षों में खेल आधारित गतिविधियों को सहज रूप से करते हैं। यदि बच्चों की आयु को ध्यान में रखते हुए, उनके साथ खेल आधारित, शारीरिक, शैक्षिक और सामाजिक गतिविधियाँ हों तो वे बेहतर सीखेंगे और बेहतरी से बढ़ेंगे। बच्चों को मिलने वाले प्रोत्साहन, मदद और पोषण की गुणवत्ता में कमी का बच्चों के समग्र विकास पर हानिकारक प्रभाव पड़ सकता है। प्रारंभिक बाल्यावस्था की अवधि जीवन-भर सीखने और विकास की बुनियाद रखती है और यह वयस्क जीवन की गुणवत्ता का एक प्रमुख निर्धारक है। इन प्रारंभिक वर्षों में बच्चों के साथ काम करने से सीखने में देरी को बहुत कम किया जा सकता है।

इस प्रकार प्रारंभिक बाल विकास में सुधार की कोशिश लागत न होकर एक निवेश है। गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक शिक्षा में निवेश राष्ट्र के दीर्घकालिक आर्थिक विकास को बढ़ावा देने में मदद करता है, साथ ही भविष्य की आवश्यक सफलता के लिए व्यक्ति के स्वास्थ्य, संज्ञानात्मक कौशल और चरित्र के विकास को लक्षित करने में भी मदद करता है।

विस्तृत विवरण के लिए अनुलग्नक 4 देखें

निष्कर्ष— मस्तिष्क के विकास से लेकर स्कूल की तैयारी तक, सीखने के बेहतर प्रतिफल, समानता एवं न्याय, रोज़गार और देश की समृद्धि तथा आर्थिक विकास इन सभी कारणों से भारत को सुलभ और गुणवत्तापूर्ण ई.सी.सी.ई. में निवेश करना चाहिए। यह निवेश उचित निरीक्षण और सही नियमन के साथ हो ताकि सभी बच्चों के लिए उच्च गुणवत्ता और विकासात्मक रूप से उपयुक्त प्रोत्साहन सुनिश्चित हो पाए।

खंड 1.2
भारत और दुनिया में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा का विकास

1.2.1 प्रबुद्ध भारतीय परिप्रेक्ष्य

बच्चों के सर्वांगीण विकास में मदद के लिए ई.सी.ई.ई की महत्ता को भारतीय परंपराओं और हमारे दीर्घकालिक इतिहास में पहचाना गया है। बच्चे के जीवन के प्रारंभिक वर्षों को भारत के विविध सांस्कृतिक परिदृश्य में बहुत महत्व दिया गया है। इस देश में छोटे बच्चों में मूल्यों के विकास और सामाजिक क्षमताओं सहित सर्वांगीण विकास को प्रोत्साहित करने के लिए परंपराओं और अभ्यासों की एक समृद्ध श्रृंखला है। इस तरह की पारंपरिक देखभाल संयुक्त परिवारों और समुदाय के भीतर होती थी, बच्चे उनकी देखभाल करने वाले वयस्कों और हमउम्र साथियों के साथ होते थे।

शिक्षा की भारतीय परिकल्पना व्यापक और गहन रही है। इसमें यह शामिल है कि शिक्षा को आंतरिक और बाह्य दोनों ही तरह के विकास को पोषित करना चाहिए। बाहरी दुनिया के बारे में सीखना और अपनी आंतरिक वास्तविकता एवं स्वयं के बारे में सीखना साथ-साथ होना चाहिए। व्यावहारिक नज़रिया भी यही है— अच्छा स्वास्थ्य और सामाजिक-भावनात्मक कौशलों, विचार कर पाने और विवेकपूर्ण चयन तथा निर्णय लेने की क्षमता का विकास, यह सब समेकित और समग्र रूप से होना चाहिए। सीखना केवल जानकारी को इकट्ठा करना नहीं है, अपितु यह स्वयं के विकास, दूसरों के साथ अपने संबंधों के विकास, ज्ञान के विभिन्न रूपों में विभेद करने की योग्यता और जो भी सीखा है, उसे स्वयं के लिए और समाज के लाभ के लिए उपयोग कर पाने की क्षमता है।

बॉक्स 1.2 क

पंचकोश का विकास (Five-fold Development) — भारतीय परंपरा का आधार-स्तंभ

पंचकोश के साथ, बच्चा एक संपूर्ण व्यक्ति बनता है। ये कोश हैं— अन्नमय कोश (शारीरिक परत), प्राणमय कोश (जीवनशक्ति ऊर्जा परत), मनोमय (मन की परत), विज्ञानमय कोश (बौद्धिक परत) और आनंदमय कोश (आंतरिक स्व)। हर कोश के कुछ विशेष गुण हैं। इन पाँच कोशों को पोषित करने पर बच्चे का सर्वांगीण विकास होता है। हर कोश के विकास के लिए कुछ खास तरीके डिज़ाइन किए गए हैं।

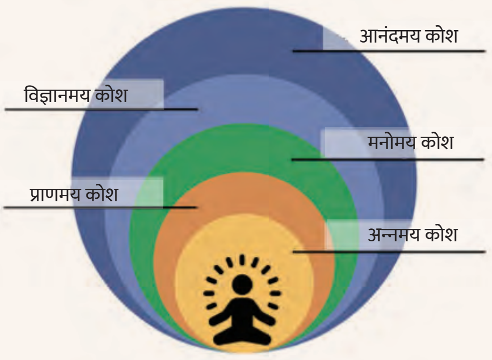

पंचकोश विकास

स्रोत– thenounproject.com

ये तरीके इस बात को ध्यान में रखते हुए डिज़ाइन किए गए हैं कि ये सभी कोश एक-दूसरे

से आपस में जुड़े हुए हैं, इसलिए ऐसी गतिविधियाँ जिससे किसी एक कोश का विकास होता है, वह दूसरे कोश के विकास में भी योगदान देगी।

- *उदाहरण के लिए, संतुलित आहार, पारंपरिक खेल, पर्याप्त कसरत और योगासन (उपयुक्त आयु के अनुसार) पर ध्यान केंद्रित करने से शारीरिक विकास होता है, जिससे सकल और सूक्ष्म दोनों ही तरह के गत्यात्मक कौशलों का विकास होता है। पूरे शरीर को आवश्यक ऑक्सीजन मिल पाए, इस तरह से साँस लेना सीखना महत्वपूर्ण है; यह आवाज़ को भी साधता है और स्व-जागरूकता के लिए भी दिशा देता है। अलग-अलग तरह की कहानियाँ, गीत, लोरियाँ, कविताएँ और प्रार्थनाएँ न केवल बच्चों में उनकी संस्कृति के प्रति प्यार विकसित करती हैं, अपितु उनको मूल्य आधारित दृष्टि भी देती हैं। यह सुनने और ध्यान केंद्रित कर पाने की क्षमताओं का विकास करता है और इस तरह भाषा के विकास में भी योगदान देता है। अपने आस-पास की दुनिया, इसकी सुंदरता और आश्चर्य को अनुभव कर पाने के लिए इंद्रियों को भी तेज करने की ज़रूरत है। दैनिक जीवन में समेकित सेवा, संबंधों की खुशी को अनुभव करने और इसके साथ-साथ अपने समुदाय का हिस्सा होने और समुदाय के लिए कुछ अच्छा करने के लिए भी तैयार करती है।*

- *ई.सी.सी.ई. में परिकल्पित विकास के विभिन्न क्षेत्रों में भी पंचकोश की अवधारणा और कल्पना का ढाँचा दिखता है। ये क्षेत्र ही पाठ्यचर्या के उद्देश्यों के आधार हैं। इनके बारे में अगले अध्याय में चर्चा की गई है।*

- *शारीरिक विकास– आयु के अनुसार संतुलित शारीरिक विकास, शारीरिक तंदुरुस्ती, लचीलापन, ताकत और सहनशीलता इंद्रियों का विकास, पोषण, स्वच्छता, व्यक्तिगत, स्वास्थ्य, शारीरिक क्षमताओं का विकास, व्यक्ति के सौ वर्षों तक स्वस्थ जीवन जीने को ध्यान में रखते हुए शारीरिक आदतों का विकास।*

- *जीवन ऊर्जा का विकास (प्राणिक विकास)– ऊर्जा का संतुलन और संरक्षण, सकारात्मक ऊर्जा और उत्साह, अनुकंपी और परानुकंपी तंत्रिका तंत्र को सक्रिय करते हुए शरीर के सभी मुख्य तंत्रों का निर्बाध रूप से काम करना (पाचन तंत्र, श्वसन तंत्र, परिसंचरण तंत्र और तंत्रिका तंत्र)।*

- *भावनात्मक/मानसिक विकास– ध्यान केंद्रित करना, शांति, संकल्प और इच्छाशक्ति, नकारात्मक भावनाओं से निपटना, मूल्यों का विकास, काम, लोगों और स्थितियों से जुड़ने और अलग होने का संकल्प, खुशी, दृश्य और प्रदर्शन कला, संस्कृति और साहित्य।*

- *बौद्धिक विकास– अवलोकन, प्रयोग, विश्लेषणात्मक योग्यता, अमूर्त और अपसारी (खुला) चिंतन, संश्लेषण, तार्किक सोच, भाषा वैज्ञानिक कौशल, कल्पना, सृजनात्मकता, विभेदन, सामान्यीकरण और अमूर्तीकरण की शक्ति।*

- *आध्यात्मिक विकास (चेतसिक विकास)– खुशी, प्रेम और करुणा, स्वतःस्फूर्तता, स्वतंत्रता, सौंदर्य बोध, चेतना की आंतरिक यात्रा।*

- *पंचकोश मानवीय अनुभव और समझ में शरीर और मन के जटिल रिश्ते के महत्व की एक प्राचीन व्याख्या है। मानव विकास का यह गैर-द्विभाजी उपागम समग्र शिक्षा के लिए एक स्पष्ट मार्ग और दिशा देता है।*

अंतर्दृष्टि का फैलाव – शिक्षा की वह प्रणाली जिसमें गुरुकुल में शिक्षा होती थी, दुनिया की सबसे पुरानी प्रणाली है। यह न केवल समग्र विकास को पोषित करती है, अपितु शिक्षक और शिक्षार्थी के बीच के अंतर्संबंधों के महत्व और साथ-ही-साथ सीखने और विकास पर भी बल देती है। सीखने का आदर्श परिवेश वह है जो सीखने की इच्छा पैदा करता है और इस ज्ञान को उपयोग में लाने का अवसर देता है। यह अधिगम (सीखना) ही है जो आंतरिक स्व के अन्वेषण और परीक्षण के अवसर देता है।

बॉक्स 1.2 ख

प्राचीन भारत में स्मृति पर बल दिया जाता था, यह व्यक्ति के संपूर्ण विकास के लिए आवश्यक है। प्राय: इसका गलत अर्थ लगाया जाता है और इसे रटने पर बल देना समझा जाता है, लेकिन सैद्धांतिक रूप से जब बच्चे अपनी निष्ठा से खुद अभ्यास करते हैं, तो यह रटना नहीं होता है।

संज्ञानात्मक विज्ञान के क्षेत्र में किए गए मौजूदा शोध इंगित करते हैं कि स्मृति— क्रियाशील स्मृति और दीर्घकालिक स्मृति, दोनों ही संज्ञान और अर्थबोध में एक विशिष्ट भूमिका निभाती है। कक्षा में स्मृति पर सही तरीके से बल नहीं देने का परिणाम यह होता है कि पर्याप्त प्रतिफल हासिल नहीं हो पाते हैं।

कक्षा में स्मृति का सीखने में उपयोग हो, इसके लिए कुछ गतिविधियाँ हो सकती हैं— सोचे-समझे और नियमित अभ्यास, गहरी प्रक्रियाएँ, संकेतों को निर्मित करना, संबंध जोड़ पाना और सहबद्ध बना पाना। इस एन.सी.एफ. के उद्देश्यों और शिक्षणशास्त्र के उपागम में यह परिलक्षित होता है और यह स्कूली शिक्षा के सभी वर्षों, विशेष रूप से मध्य, प्रारंभिक और माध्यमिक स्तरों में प्रासंगिक है।

अधिकांश भारतीय परंपराओं में बच्चों को शायद ही कभी कोरी/खाली स्लेट के रूप में देखा जाता है, यहाँ तक कि शिशुओं को भी नहीं। ऐसा माना जाता है कि उनके पास कुछ प्रवृत्तियाँ हैं जो दुनिया के साथ उनके संबंधों को प्रभावित करती हैं। इन परंपराओं में बच्चे को एक सामाजिक प्राणी और एक अद्वितीय व्यक्ति, दोनों के रूप में देखा जाता है, जो संदर्भ के साथ-साथ अपने चुनावों से भी प्रभावित होता है। अधिगम से बच्चे को कुछ काम करने (कर्म) और उसके फलस्वरूप मिले परिणामों को स्वीकार करने के लिए तैयार करने में मदद मिलनी चाहिए। जिस सांस्कृतिक दृष्टिकोण से शिक्षा को समझा जाता है, वही फिर व्यक्तित्व के विकास एक महत्वपूर्ण पहलू बन जाता है।

वैदिक युग से ही आयुर्वेद की भारतीय प्राचीन समग्र प्राकृतिक चिकित्सा प्रणाली प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल के तरीकों के लिए एक मार्गदर्शक रही है, इसकी आठ शाखाओं में से एक बच्चों की देखभाल के लिए समर्पित है। आयुर्वेद की किताबों में बच्चों की देखभाल से संबंधित ज्ञान और समझ का एक समग्र दृष्टिकोण था। इनमें जैविक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण परस्पर समावेशी हैं। आयुर्वेद के समसामयिक तरीकों में, *कश्यप संहिता* के पहले खंड 'कौमारभृत्य' को प्राय: बाल रोग, स्त्री रोग और प्रसूति के संदर्भ में परामर्श देने के लिए संदर्भित किया जाता है। माना जाता है कि यह छठी शताब्दी ईसा पूर्व में लिखा गया था, आयुर्वेदिक ग्रंथ बाल विकास के बारे में विस्तार से बताते हैं। उदाहरण के तौर पर—

i. ताजी हवा, हरियाली और पर्याप्त धूप से भरपूर परिवेश बच्चे के समग्र विकास को बढ़ावा देता है।

ii. *वच*, एक कायाकल्प करने वाली जड़ी-बूटी है। यह स्वाद में कड़वी होती है और सूखे रूप में इसका प्रयोग, बच्चे के तंत्रिका तंत्र पर सकारात्मक प्रभाव डालता है। संस्कृत में वाचा का अर्थ है स्पष्ट रूप से बोलना। यह जड़ी-बूटी बुद्धि और अभिव्यक्ति को उद्दीप्त करती है। वच को प्रतिदिन शहद के साथ लेने से वाणी में सुधार होता है (जैसे– स्मृति, शब्दों का उच्चारण और उनको बोलने का ढंग)।

वेद, माँ और बच्चे दोनों को एक सहजीवी इकाई के रूप में देखते हैं और ये संस्कारों या धार्मिक रिवाज़ों के साथ-साथ निर्धारित विकासात्मक दृष्टिकोण और बच्चों की देखभाल के तरीकों पर बल देते हैं। बच्चे की आयु के आधार पर ये संस्कार बच्चे के जीवन-चक्र के प्रत्येक चरण में इष्टतम शारीरिक और मनोवैज्ञानिक प्रगति का अनुक्रम करते हैं और ये अलग-अलग विकासात्मक पड़ावों द्वारा चिह्नित होते हैं। उदाहरण के लिए, अन्नप्राशन (आमतौर पर जन्म के बाद छठे महीने में बच्चे को ठोस भोजन देना) और विद्यारंभ या अक्षराभ्यास (औपचारिक रूप से बच्चे को वर्णमाला से परिचित कराना) एक बच्चे के विकास से संबंधित संस्कार हैं और जीवन के पहले आठ साल के भीतर कर दिए जाते हैं। ये संस्कार बच्चे के जीवन की यात्रा में चार पुरुषार्थों धर्म (धार्मिकता/सच्चाई), अर्थ (धन), काम (सुख) और मोक्ष (मुक्ति) की खोज में संलग्न होने के साधन हैं। इसी तरह के विचार और तरीके पूरे देश की व्यापक सांस्कृतिक परंपराओं में व्याप्त हैं, उदाहरण के लिए, प्राचीन संगम युग और उसके भी पहले तमिलनाडु व इसके आस-पास के क्षेत्रों में, नागा और मिज़ो परंपराओं में और निचले हिमालय की स्थानीय परंपराओं में।

बच्चों की देखभाल के बहु-सांस्कृतिक होने का प्रमाण, जो मुख्य रूप से घर और परिवार पर आधारित था और पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तातंरित किया गया, यह शिशु और बाल खेलों, लोरी, बच्चों की लोक कथाओं, तुकबंदी और पहेलियों, लोक खिलौने और शिशुओं के लिए मालिश आदि में प्रकट होता है। यह भारतीय बचपन का एक अभिन्न अंग रहा है। बच्चों की देखभाल और विकास को लेकर, संस्कार की अवस्थाओं और आधुनिक वैज्ञानिक विचारों व ज्ञान में जो घनिष्ठ संबंध है, वह उल्लेखनीय है। इसका एक उदाहरण है, छह महीने के बाद अन्नप्राशन या दूध छुड़ाना, जो वर्तमान में कही जाने वाली इस बात से पूरी तरह जुड़ता है कि जीवन के पहले छह महीनों में स्तनपान अत्यंत आवश्यक है।

बच्चों के पारंपरिक लोक खिलौनों जैसे लट्टू, बाँसुरी और मिट्टी के बर्तनों का उपयोग खेल के माध्यम से बुनियादी वैज्ञानिक सिद्धांतों को प्रदर्शित करने के लिए किया जाता था। शिशुओं के खेलों की प्रकृति ऐसी थी, जिन्हें पियाज़े की विकासात्मक अवस्थाओं के अनुरूप, संवेदी-गत्यात्मक कह सकते हैं। कविताएँ, पहेलियाँ और कहानियाँ जिनमें बच्चों को आनंद आता है, वे बच्चों को भाषा के परिवेश में डूबने देती हैं। जहाँ इनमें से कुछ प्रथाएँ अभी भी बड़े या संयुक्त परिवारों में दिखायी देती हैं, वहीं पारिवारिक संरचनाओं में बदलाव और एकल परिवारों की ओर रुझान के परिणामस्वरूप ये प्रथाएँ कमज़ोर भी हो रही हैं।

सहस्राब्दियों से विकसित, भारत की इन विविध और जीवंत ई.सी.सी.ई. परंपराओं की समृद्ध श्रृंखला को जीवित रखने के लिए तथा इनकी प्रभाविता और स्थानीयता को सुनिश्चित करने के लिए, इन्हें भी ई.सी.सी.ई. के पाठ्यचर्या और शिक्षणशास्त्रीय फ्रेमवर्क में उपयुक्त रूप से शामिल किया जाना चाहिए। यह संदर्भगत प्रासंगिकता, आनंद, उत्साह, स्थानीय संस्कृति, पहचान और समुदाय की भावना के प्रति संवेदनशील बनाएगी। इसके अलावा, बच्चों को बड़ा करने, पालने और शिक्षित करने में परिवारों की पारंपरिक भूमिकाओं को भी ई.सी.सी.ई. के पाठ्यचर्या फ्रेमवर्क के भीतर दृढ़ता से समर्थित और एकीकृत किया जाना चाहिए।

1.2.2 पथप्रदर्शक और विचारक

भारत में शैक्षणिक विचारधारा के क्षेत्र में कई प्रसिद्ध हस्तियों ने योगदान दिया है। शिक्षा को लेकर उनके अधिकांश सरोकार केवल तात्कालिक नहीं थे, अपितु वे नैतिक जीवन और राष्ट्र निर्माण के सवालों से जुड़े थे।

नीचे दिया गया संक्षिप्त विवरण शिक्षा को लेकर कुछ प्रमुख विचारों का एक संक्षिप्त परिप्रेक्ष्य प्रदान करता है। यह किसी भी तरह से एक विस्तृत सूची नहीं है।

(क) सावित्रीबाई फुले और ज्योतिबा फुले

सावित्रीबाई और ज्योतिबा फुले हाशिए के लोगों के लिए सामाजिक न्याय के प्रबल पैरोकार थे। जब लड़कियों और कमजोर समुदायों के बच्चों के लिए स्कूलों की स्थापना की बात तक नहीं होती थी, तब उन्होंने ऐसे स्कूलों की स्थापना का कार्य किया।

ज्योतिबा फुले ने प्राथमिक शिक्षा के विस्तार और सुदृढ़ीकरण के लिए आवाज़ उठाई। उन्होंने कहा कि स्कूल की पाठ्यचर्या सभी बच्चों की ज़रूरतों को ध्यान में रखते हुए तैयार की जाए और खासतौर से यह ध्यान रखा जाए कि वंचित बच्चे सीख सकें। देश में लड़कियों की शिक्षा के अग्रदूत के रूप में, सावित्रीबाई फुले ने यह सुनिश्चित किया कि लड़कियों को गणित और विज्ञान पढ़ाया जाए। यह लड़कों के लिए कई स्कूलों में पढ़ाए जाने वाले पाठ्यक्रम से बिल्कुल अलग था। इन दोनों के अनुसार एक बड़े सामाजिक कार्य के संदर्भ में, समाज में बदलाव लाने के लिए शिक्षा का कार्य हमेशा ही महत्वपूर्ण होगा।

(ख) रवींद्रनाथ टैगोर

रवींद्रनाथ टैगोर के शिक्षा संबंधी विचारों में व्यक्तित्व के सामंजस्य, संतुलन और समग्र विकास पर बल दिया गया है। टैगोर के शैक्षिक दर्शन का मूल था— प्रकृति और जीवन से सीखना। टैगोर के अनुसार, किसी भी सार्थक राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली का मूल उद्देश्य रचनात्मकता, स्वतंत्रता, आनंद और देश की सांस्कृतिक विरासत के बारे में जागरूकता को बढ़ावा देना था। प्राकृतिक परिवेश में सीखने से संबंधित टैगोर के विचारों में, क्षेत्र भ्रमण तथा प्रकृति की सैर और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर बल दिया गया है। इन विचारों ने प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा में खेल और विभिन्न जीवन-कौशलों पर बल दिया।

(ग) स्वामी विवेकानंद

स्वामी विवेकानंद ने शरीर, मन और आत्मा की समग्र तैयारी पर बल दिया। वे पूछते हैं, “क्या हमें केवल अनुभवजन्य दुनिया को जानने की ज़रूरत है? क्या हम बस यही हैं? क्या केवल मानव अस्तित्व के भौतिक पहलुओं में सुधार करने की कोशिश करना ही सब कुछ है?” उनके लिए मानव अस्तित्व और मानवीय संभावनाओं का मूल आत्मा (स्व) और आत्मज्ञान में निहित है। आत्मज्ञान पर उनके बल देने के कारण महत्वपूर्ण हैं। पहला, हम जो हैं उसका सारतत्व आत्म है, इसलिए आत्मज्ञान की महत्ता को नकारा नहीं जा सकता; दूसरा, आत्मा वह है जो सभी मनुष्यों में समान रूप से विद्यमान है, इसलिए विषय और वस्तु दोनों सार्वभौमिक हैं और तीसरा, यदि आत्म मानव अस्तित्व का सारतत्व है, तब इसका ज्ञान मानव की संपूर्णता के लिए एक शर्त की तरह होगा। इस महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि पर

आधारित शिक्षा का आदर्श, हमारे सारतत्व की अभिव्यक्ति, पूर्णता के बीजारोपण और सभ्यतागत आदर्शों की पुनर्परिभाषा के लिए नींव का मार्ग प्रशस्त करेगा। इसलिए उनका कहना है कि शिक्षा मनुष्य में पहले से ही छिपी हुई सच्ची पूर्णता की अभिव्यक्ति है।

(घ) महात्मा गाँधी

महात्मा गाँधी ने शिक्षा को सामाजिक व्यवस्था में व्याप्त अन्याय, हिंसा और असमानता के प्रति राष्ट्र की अंतरात्मा को जगाने के साधन के रूप में देखा। गाँधी ने आस-पास के परिवेश को, जिसमें मातृभाषा और कर्म शामिल था, समाज के परिवर्तनकारी दृष्टिकोण में बच्चे के सामाजीकरण के लिए एक संसाधन के रूप में उपयोग करने की सिफ़ारिश की। उन्होंने एक ऐसे भारत का सपना देखा जिसमें प्रत्येक व्यक्ति दुनिया— जो हमेशा से ही राष्ट्रों के बीच, समाज के भीतर और मानवता एवं प्रकृति के बीच संघर्षों से जानी जाती है— के पुनर्गठन के लिए दूसरों के साथ काम करते हुए अपनी प्रतिभा और क्षमताओं की खोजबीन करे, उसे समझे। उन्होंने 6 साल से कम आयु के बच्चों के लिए पूर्व-बुनियादी शिक्षा नामक एक पाठ्यक्रम तैयार किया। इसमें सीखना बच्चों के विकास और रुचि पर आधारित था। इसमें तीन H's—हृदय (Heart), हाथ (Hand) और मस्तिष्क (Head) पर बल दिया गया था। गाँधी के शिक्षा संबंधी विचारों में केंद्रीय बातें थीं—शिक्षित समुदाय का अपने बच्चों के प्रति जिम्मेदार होना; हार्ट, हैंड, हेड के अनुसार होना; स्थानीय अनुभवों पर बल दिया जाना और शिक्षक के रूप में स्थानीय संसाधन व्यक्तियों का होना।

(ङ) श्री अरविंद

श्री अरविंद के शिक्षण का केंद्रीय विचार समेकित शिक्षा था। बच्चे का विकास न केवल संज्ञानात्मक होता है, अपितु यह शारीरिक, प्राणिक, मानसिक, मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक भी होता है। शिक्षा पारंपरिक और आधुनिक विचारों का एकीकरण है। यह सार्वभौमिक चरित्र की होनी चाहिए। उनके अनुसार सभी बच्चों में कुछ न कुछ दिव्य होता है और कुछ ऐसा होता है जो उनके बारे में अनूठा है। शिक्षक को सभी संभावनाओं को देखने और बच्चों को स्वयं को खोजने और उनकी वास्तविक क्षमता को प्राप्त करने की दिशा में मार्गदर्शन देने में सक्षम होना चाहिए। उन्होंने कहा कि शिक्षक... "उस ज्ञान का आह्वान नहीं करता जो भीतर है; वह केवल उसे दिखाता है कि यह कहाँ है और कैसे साधना से यह ऊपर सतह तक उठ सकता है।" केवल स्वतंत्र और रुचिपूर्ण शिक्षा ही बच्चे की आत्मा का पोषण कर सकती है।

श्री अरविंद का विश्वास था कि बच्चों के आस-पास का परिवेश, उनके परिचित अनुभव और उनकी मातृभाषा ही सीखने और सिखाने का आधार होनी चाहिए और कोई भी नया ज्ञान बच्चे के उस संदर्भ से जुड़ना चाहिए जिसका बच्चा पहले से एक हिस्सा है। अरविंद के अनुसार बच्चा दुनिया के बारे में सीखने के लिए, अपनी पाँचों इंद्रियों और मस्तिष्क, जिसे छठी इंद्रिय कह सकते हैं, का उपयोग करता है। इन प्रक्रियाओं के माध्यम से बच्चा चेतना का बोध विकसित करना शुरू कर देता है जो आध्यात्मिक और नैतिक विकास से संबंधित है। केवल एक रचनात्मक और स्वतंत्र अधिगम परिवेश ही इस विकास को सुनिश्चित कर सकता है।

1950 के दशक में स्थापित श्री अरविंद आश्रम के स्कूल ने 'स्वतंत्र प्रगति' के सिद्धांत पर काम किया, जहाँ स्कूली शिक्षा की कई क्रांतिकारी अवधारणाओं को लेकर प्रयोग किए गए। ऐसा संभवतः भारत में पहली बार हुआ था और इस शिक्षा में पाठ्यपुस्तकों की अनुपस्थिति करके सीखने पर अधिक बल और बच्चों का उनकी अपनी गति से सीखना एवं मूल्यांकन शामिल था।

(च) जिद्दू कृष्णमूर्ति

जिद्दू कृष्णमूर्ति ने कहा था कि शिक्षा का उद्देश्य स्वतंत्रता, प्रेम, 'अच्छाई का खिलना' और समाज का पूर्ण परिवर्तन है। उनके लेखन और व्याख्यानों में एक सतत विषय स्वतंत्रता था और कृष्णमूर्ति के लिए स्वतंत्रता का चरित्र आंतरिक अधिक था, न कि राजनीतिक। मानस और आत्मा की गहरी स्वतंत्रता तथा एक आंतरिक मुक्ति जो उन्होंने महसूस की, वह शिक्षा का साधन और साध्य दोनों थीं। शिक्षा परंपरा के रूप में संचित अपने विशाल ज्ञान से, अनुबंधन से स्वतंत्र थी। कृष्णमूर्ति ने महसूस किया कि न केवल एक व्यक्ति की प्रकृति और गहरे पहलुओं को उजागर किया जाना चाहिए, अपितु प्रत्येक व्यक्ति की अपनी अनूठी वृत्ति या योग्यता होती है जिसे खोजने की आवश्यकता होती है; वे वास्तव में जो करना पसंद करते हैं, उसे ढूँढ़ना और उसके लिए बार-बार प्रयत्न किया जाना चाहिए और इसके अलावा कुछ करना सबसे खराब प्रकार की वंचना है, खासकर अगर ऐसी वंचना आर्थिक या व्यावसायिक सफलता या फिर ऐसी अन्य सामाजिक-सांस्कृतिक आकांक्षाओं को प्राप्त करने के लिए हो। कृष्णमूर्ति के लिए शिक्षा का आशय संपूर्ण व्यक्ति (व्यक्ति के सभी भागों) को शिक्षित करना, यानी व्यक्ति को समग्र रूप में शिक्षित करना (भागों के संयोजन के रूप में नहीं) और व्यक्ति को उस संपूर्णता में (समाज, मानवता, प्रकृति के हिस्से के रूप में) शिक्षित करना है, जिससे उस व्यक्ति को अलग करना अर्थपूर्ण नहीं है।

निष्कर्ष– बुनियादी स्तर के लिए इन सभी विचारों के प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष निहितार्थ हैं। स्वामी विवेकानंद और श्री अरविंद का समग्र शिक्षा पर ध्यान, रवींद्रनाथ टैगोर का प्रकृति पर बल, महात्मा गाँधी का शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक विकास (3H) पर बल, जिद्दू कृष्णमूर्ति के स्वतंत्रता पर बल देने के साथ-साथ ज्योतिबा फुले और सावित्रीबाई के सामाजिक न्याय को महत्व देने संबंधी विचार उस शिक्षा के बारे में बात करते हैं जिससे छोटे बच्चों को लाभ होगा।

1.2.3 भारत में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा का क्रमिक विकास

पिछले कई दशकों में ई.सी.सी.ई. का काफ़ी विकास हुआ है। यद्यपि भारत में प्रारंभिक बाल्यावस्था का हमेशा एक विशेष सांस्कृतिक और सामाजिक स्थान रहा है पर पिछले कुछ वर्षों में शिक्षा की रूपरेखा और नीतियों में इस पर अधिक ध्यान केंद्रित किया गया है। परंपरागत रूप से प्रारंभिक शिक्षा परिवार आधारित थी और बच्चों को मूल्य और सामाजिक कौशल सिखाने पर केंद्रित थी। सामाजिक-सांस्कृतिक और जनसांख्यिकीय परिवेश में बदलाव के साथ भारत में प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा जो पहले प्रायः सामाजिक-सांस्कृतिक प्रथा के रूप में अनौपचारिक होती थी, वह अब अधिक औपचारिक और संस्था आधारित व्यवस्था में होने लगी है।

आधुनिक भारत में प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा का प्रारंभ करने वालों में गिजुभाई बधेका और ताराबाई मोदक का नाम अग्रणी है। वे आधुनिक शिक्षा में उन पहले भारतीयों में से थे, जिन्होंने छोटे बच्चों की शिक्षा और देखभाल के लिए बाल-केंद्रित दृष्टिकोण की संकल्पना बनाई। उनका विचार था कि शिक्षा बच्चे की मातृभाषा में होनी चाहिए और बच्चे के सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश से जुड़ी होनी चाहिए, साथ ही समुदाय को भी सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से शामिल होना चाहिए। चूँकि भाषा सही मायनों में आत्म-अभिव्यक्ति की वाहक है, इसलिए बच्चे अपने विचारों को मातृभाषा या स्थानीय भाषा में स्वतंत्र रूप से व्यक्त कर सकते हैं। सामाजिक-भावनात्मक

अधिगम और भाषा सिखाने के लिए गिजुभाई ने कहानी आधारित पाठ्यचर्या पर विशेष ध्यान केंद्रित किया। प्रारंभिक शिक्षा की अग्रणी मारिया मोंटेसरी के विचारों को संदर्भित करते हुए उन्होंने कहा, "प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा एक महान राष्ट्र के निर्माण की दिशा में पहला और सबसे महत्वपूर्ण कदम है"; जबकि ताराबाई मोदक ने समुदाय आधारित प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा कार्यक्रमों के औपचारिक आयोजन की वकालत की। यद्यपि प्रारंभिक शिक्षा विचारक फ्रेडरिक फ्रोबेल के विचारों पर आधारित किंडरगार्टन मॉडल, 19वीं शताब्दी के अंत में अंग्रेजी मिशनरियों द्वारा कुछ शहरों में स्थापित किए गए थे। पहला स्वदेशी प्री-स्कूल 1916 में गिजुभाई बधेका द्वारा स्थापित किया गया था। ताराबाई मोदक ने 1925 में 'नूतन बालशिक्षण संघ' की स्थापना की। ताराबाई मोदक द्वारा कोसबाड में स्थापित विकासवाड़ी केंद्र बाद में देश में सामुदायिक ई.सी.सी.ई. कार्यक्रमों के विकास के लिए एक प्रेरणादायक व्यवस्था बन गयी। पूर्व-बुनियादी (प्री-बेसिक) और बुनियादी शिक्षा के संदर्भ में महात्मा गाँधी के उभरते विचारों और 1939 में मारिया मोंटेसरी की भारत यात्रा के साथ, प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा के व्यवस्थित ढाँचे की नींव को और मज़बूती मिली।

1.2.3.1 स्वतंत्र भारत में प्रारंभिक शिक्षा

हमारा संविधान बच्चों के कल्याण और विकास को संबोधित करने वाले कई मौलिक अधिकार और निर्देश प्रदान करता है। 1953 में प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा समिति ने प्राथमिक विद्यालय की व्यवस्था के अंतर्गत ही पूर्व-प्राथमिक विद्यालय स्थापित करने की आवश्यकता पर बल दिया। केंद्रीय समाज कल्याण बोर्ड की एक योजना के तहत, कई संगठनों ने ग्रामीण क्षेत्रों में 'बालवाड़ी' की स्थापना का समर्थन किया ताकि वे ऐसी सेवाएँ प्रदान कर सकें जो परिवारों और समुदायों के लिए एकीकृत शिक्षा, स्वास्थ्य और देखभाल प्रदान करती हों। 1963–64 में बाल देखभाल समिति द्वारा कई प्रावधानों की सिफ़ारिश की गई थी ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि प्रारंभिक वर्षों में शिक्षा भारतीय संदर्भ में प्रासंगिक हो।

कोठारी आयोग (1964) ने देश में पूर्व-प्राथमिक केंद्रों की स्थापना की सिफ़ारिश की। राष्ट्रीय शिक्षा नीति और राष्ट्रीय बाल विकास बोर्ड की स्थापना के साथ, प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करना एक महत्वपूर्ण लक्ष्य के रूप में रखा गया था जो आगे की स्कूली शिक्षा में योगदान देता है।

1.2.3.2 समेकित बाल विकास योजना

देश में समेकित बाल विकास योजना (आई.सी.डी.एस.) 1975 में 33 प्रायोगिक ब्लॉकों में शुरू की गई। इस कार्यक्रम में यह परिलक्षित हुआ कि आई.सी.डी.एस. का मुख्य ध्यान अब कल्याण-आधारित सेवाओं पर न होकर विकास-आधारित सेवाओं पर होगा। इसमें बच्चों को एक राष्ट्रीय संसाधन की तरह देखा जा रहा था। कई वर्षों से आई.सी.डी.एस. दुनियाभर में ई.सी.सी.ई. सेवाओं के लिए सबसे बड़ा और सबसे व्यापक कार्यक्रम है। आई.सी.डी.एस. के तहत आने वाली आँगनवाड़ियाँ देशभर के दूर-दराज़ के इलाकों में, 6 साल से कम आयु के बच्चों को और साथ ही माताओं व किशोरों को स्वास्थ्य, शिक्षा और पोषण सेवाएँ प्रदान करती हैं। आई.सी.डी.एस. के तहत छह सेवाएँ प्रदान की जाती हैं— पूरक पोषण, प्री-स्कूली शिक्षा, पोषण और स्वास्थ्य शिक्षा, टीकाकरण, स्वास्थ्य जाँच और संदर्भित (रेफरल) सेवाएँ।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 ने ई.सी.सी.ई. को मानव संसाधन विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण माना। इस नीति के अनुसार, ई.सी.सी.ई. को प्राथमिक शिक्षा के लिए पोषक और कामकाजी महिलाओं के लिए एक सहायक

के रूप में कार्य करना चाहिए। पहले की तुलना में अधिक वित्तीय आवंटन और बच्चों के लिए एकीकृत और खेल आधारित शिक्षा पर केंद्रित होने के साथ, इस नीति ने प्रारंभिक शिक्षा क्षेत्र में विकास को गति दी। विभिन्न कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण और समर्थन की ज़रूरतों को समझने और स्थापित करने के लिए, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (रा.शै.अ.प्र.प.) और राष्ट्रीय जन सहयोग एवं बाल विकास संस्थान (एन.आई.पी.सी.सी.डी.) जैसे सरकारी निकायों ने देशभर में इन कार्यक्रमों की पहुँच और प्रभावशीलता को तय करने के लिए कई शोध परियोजनाएँ शुरू कीं। शिक्षकों को सेवा-पूर्व और सेवाकालीन प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए एन. आई.पी.सी.सी.डी. और राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद (एन.सी. टी. ई.) द्वारा सहायक व्यवस्थाएँ भी बनाई गईं।

पिछले कुछ वर्षों में इन प्रयासों से ई.सी.सी.ई. में महत्वपूर्ण सुधार हुए हैं। यद्यपि इसके तहत दी जाने वाली सेवाओं के क्रियान्वयन और पर्यवेक्षण में काफी रिक्तताएँ रहीं है, इनमें नीतियों और कार्यक्रमों द्वारा निर्धारित मानकों और लक्ष्यों से अनेक समझौते किए गए हैं।

1.2.3.3 पिछले दो दशक

वर्ष 2006 में ई.सी.सी.ई., महिला एवं बाल विकास मंत्रालय (एम.डब्ल्यू.सी.डी.) के कार्यक्षेत्र में आया। इस मंत्रालय के तहत राष्ट्रीय प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा नीति 2013 तैयार की गई। यह प्रारंभिक वर्षों के बच्चों के लिए पहली और एकमात्र नीति थी। इसमें 6 साल से कम आयु के सभी बच्चों के इष्टतम विकास और उनमें सक्रिय सीखने की क्षमता विकास करने के लिए समावेशी, न्यायसंबद्ध और प्रासंगिक अवसरों को बढ़ावा देने की संकल्पना थी। इसके बाद वर्ष 2014 में मंत्रालय द्वारा एक राष्ट्रीय प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा पाठ्यक्रम की रूपरेखा तैयार की गई, जिसमें प्रारंभिक वर्षों में शिक्षा में सुधार के लिए महत्वपूर्ण प्रतिबद्धताएँ थीं। इसने सभी छोटे बच्चों की गुणवत्तापूर्ण देखभाल, उनकी शिक्षा और इन तक उनकी सार्वभौमिक पहुँच के प्रति देश की प्रतिबद्धता को और सुदृढ़ किया है। 2019 में रा.शै.अ.प्र.प. ने तीन साल की पूर्व-विद्यालयी शिक्षा के लिए, पाठ्यचर्या और दिशानिर्देश भी विकसित किए।

हालिया सबसे परिवर्तनकारी पहल राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 रही है, जो एक बहुत ही स्पष्ट लक्ष्य को व्यक्त करती है— वर्ष 2025 तक 3–8 वर्ष की आयु के हर बच्चे को निशुल्क, सुरक्षित, उच्च गुणवत्तापूर्ण, विकासात्मक दृष्टि से उपयुक्त, प्रारंभिक बाल्यावस्था में देखभाल और शिक्षा की पहुँच हो।

1.2.4 मौजूदा स्थिति

(क) अपार संभावनाएँ, फिर भी अधूरी

वर्तमान समय में भारत में अधिगम का संकट है। बच्चे प्राथमिक विद्यालय में नामांकित हैं, इसके बावजूद वे बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान जैसे बुनियादी कौशल प्राप्त करने में असफल हो रहे हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि बच्चों के कक्षा एक में प्रवेश करने से पहले ही ऐसा कुछ हो रहा है जो इस संकट का प्रमुख स्रोत है। 6 से अधिक वर्ष के कई बच्चे, ई.सी.सी.ई. के बहुत ही सीमित अनुभव के साथ कक्षा एक में प्रवेश कर रहे हैं। साथ-ही-साथ उपयुक्त पूर्व-प्राथमिक के विकल्पों की कमी के कारण, 6 वर्ष की आयु से कम के बहुत से बच्चे सीधे कक्षा एक में दाखिला ले रहे हैं। ये अक्सर वे बच्चे होते हैं जो प्रारंभिक वर्षों में तो स्कूल में सबसे पीछे रहते

ही हैं, लेकिन साथ ही साथ उसके बाद भी पीछे ही रहते हैं। जो कमियाँ बच्चे अनुभव कर रहे हैं, उनमें अंतर विशेष रूप से सुविधा संपन्न और वंचित समूहों के बीच हैं। इसका कारण यह है कि अधिक सुविधा संपन्न परिवारों के बच्चों के पास रोल मॉडल, प्रिंट सामग्री और जागरूकता, स्कूल की भाषा में धाराप्रवाहिता और घर पर सीखने के सशक्त परिवेश के साथ-साथ बेहतर पोषण, स्वास्थ्य देखभाल और पूर्व-प्राथमिक शिक्षा तक पहुँच भी निश्चित है। सभी बच्चों को सार्वभौमिक गुणवत्ता वाली ई.सी.सी.ई. प्रदान करने से यह संभावनाएँ बनती हैं कि सभी छोटे बच्चों तक इसकी पहुँच होगी और ऐसी उच्च गुणवत्ता वाली ई.सी.सी.ई. से मिलने वाले सारे लाभ बच्चों को मिल पाएँगे।

(ख) विविध संस्थागत व्यवस्था

मौजूदा समय में प्रारंभिक बाल्यावस्था की अधिकांश शिक्षा आँगनवाड़ियों और निजी पूर्व-प्राथमिक विद्यालयों में दी जाती है, इन निजी संस्थाओं में गैर-सरकारी संगठनों और अन्य संगठनों द्वारा संचालित पूर्व-प्राथमिक विद्यालयों का अनुपात बहुत ही कम है। जहाँ मदद के ढाँचे उपलब्ध हैं, वहाँ आई.सी.डी.एस. के तत्वावधान में पूर्व-प्राथमिक शिक्षा की आँगनवाड़ी प्रणाली ने भारत के कई हिस्सों में बड़ी सफलता के साथ काम किया है; खासकर माताओं और शिशुओं के लिए स्वास्थ्य देखभाल के संबंध में। आँगनवाड़ियों ने वास्तव में अभिभावकों की मदद करने और समुदायों को विकसित करने में सहायता की है; उन्होंने आवश्यक पोषण व स्वास्थ्य जागरूकता, टीकाकरण, बुनियादी स्वास्थ्य जाँच, संदर्भित (रेफ़रल) और स्थानीय सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणालियों से जुड़ाव बनाने के लिए काम किया है। इस प्रकार करोड़ों बच्चों के स्वस्थ विकास और उनके कहीं अधिक उत्पादक जीवन की बुनियाद रखी है। यद्यपि कुछ आवश्यक संज्ञानात्मक प्रोत्साहन, खेल और दिनभर की देखभाल (डे-केयर) उपलब्ध कराते हुए भी अधिकांश आँगनवाड़ियाँ ई.सी.सी.ई. के शैक्षिक पहलुओं पर अपेक्षाकृत कमज़ोर रही हैं। वर्तमान में आँगनवाड़ियों में शिक्षा उपलब्ध कराने और बुनियादी ढाँचे की बहुत अधिक कमी है। परिणामस्वरूप उनमें 2–4 वर्ष की आयु सीमा के बच्चे अधिक होते हैं और शैक्षिक दृष्टि से महत्वपूर्ण 4–6 वर्ष की आयु के बच्चे कम; यहाँ ऐसे शिक्षक जो खासतौर पर प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा में प्रशिक्षित हों, उनकी भी कमी है।

i. 11.7 लाख सरकारी और सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों में से 9.3 लाख स्कूलों में प्राथमिक वर्ग और 1.9 लाख में पूर्व-प्राथमिक वर्ग हैं। 2.7 लाख स्कूलों में आँगनवाड़ी वर्ग स्कूल परिसर में ही है।[1]

ii. वे आँगनवाड़ियाँ जो स्कूल परिसर में ही स्थित हैं, उनके मामले में 4–6 वर्ष की आयु के बच्चों को पूर्व-प्राथमिक के बच्चे माना जाता है और पूर्व-प्राथमिक वर्गों में आमतौर पर दो साल की शिक्षा शामिल होती है।

निजी क्षेत्र में चल रहे ई.सी.सी.ई. संस्थानों (प्ले स्कूल/प्री-स्कूल) का पूरी तरह से सही आँकड़ा उपलब्ध नहीं है। यद्यपि वास्तविक उपाख्यानात्मक (anecdotal) और अवलोकन संबंधी प्रमाणों से ऐसे संस्थानों के बहुत संख्या में प्रसारित होने का पता चलता है। इनमें कुछ ऐसे है जहाँ अधिक संसाधन हैं और कुछ ऐसे हैं जहाँ संसाधनों की कमी है। निजी और अन्य पूर्व-प्राथमिक, बड़े पैमाने पर विद्यालयों के सभी जगह विस्तार के रूप में संचालित हो रहे हैं। यद्यपि कुछ संस्थान बच्चों के लिए बेहतर बुनियादी ढाँचा और सीखने के संसाधन प्रदान करते हैं, पर ज़्यादातर मुख्य रूप से औपचारिक शिक्षण और रटने पर केंद्रित होते हैं और इनमें विद्यार्थी-शिक्षक अनुपात भी अधिक होता है। साथ ही विकासात्मक रूप से उपयुक्त, खेल आधारित और गतिविधि आधारित शिक्षण के अवसर भी सीमित होते हैं। इनमें से अधिकांश संस्थानों में काम कर रहे शिक्षक प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा में प्रशिक्षित भी नहीं हैं। स्वास्थ्य और पोषण के पहलुओं पर आमतौर पर वे बहुत सीमित जानकारी रखते हैं और 4 साल से कम आयु के बच्चों की पूरी देखभाल भी नहीं कर पाते।

भारत में ऐसे बच्चों का अनुपात बहुत अधिक है जो सार्वजनिक या निजी पूर्व-प्राथमिक शिक्षा पूरी करते हैं किंतु स्कूल में शामिल होने के लिए आवश्यक स्कूल तैयारी, क्षमताएँ उनके पास नहीं होती हैं। इस प्रकार अधिकांश के लिए नहीं तो भी कई मौजूदा प्रारंभिक सीखने के कार्यक्रमों के लिए, पहुँच की समस्याओं के अलावा गुणवत्ता संबंधी कमियाँ जैसे कि विकासात्मक दृष्टि से अनुपयुक्त पाठ्यक्रम, योग्य और प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी व कम उपयुक्त शिक्षण विधियाँ आदि प्रमुख चुनौतियाँ बनी हुई हैं। 6–8 वर्ष की आयु के बच्चे स्कूल में होते हैं। इस आयु के दौरान आने वाली चुनौतियाँ— शैक्षणिक, पाठ्यचर्यागत ढाँचागत आदि भारत की शैक्षिक चुनौतियों की प्रमुख जड़ों में से हैं। इन सभी चुनौतियों को एन.ई.पी. 2020 में सीधे तौर पर दूर किया गया है।

(ग) गैर-नियामक निजी पूर्व-प्राथमिक

राष्ट्रीय ई.सी.सी.ई. नीति 2013 स्पष्ट रूप से कहती है कि "बच्चों के लिए उपलब्ध ई.सी.सी.ई. की गुणवत्ता को मानकीकृत करने के लिए, ई.सी.सी.ई. हेतु बुनियादी गुणवत्ता मानक और विशेष निर्देश निर्धारित किए जाएँगे जो सार्वजनिक, निजी और गैर-सरकारी सेवा प्रदाताओं पर लागू होंगे। यह नीति अनुशंसा करती है कि सभी सेवा प्रदाताओं के लिए ई.सी.सी.ई. को लेकर एक नियामक रूपरेखा राष्ट्रीय ई.सी.सी.ई. परिषद द्वारा विकसित की जानी चाहिए, जिसे 2016 तक लागू किया जाना चाहिए।"[2]

यद्यपि निजी पूर्व-प्राथमिक अभी भी बहुत हद तक अनियमित हैं। यह भी हो सकता है कि बहुत से स्कूलों का गुणवत्तापूर्ण ई.सी.सी.ई. में निवेश करने का इरादा या साधन न हो। कम-से-कम वे बच्चों को कुछ घंटे रहने के लिए सुरक्षित जगह देने का काम तो करते हैं।

(घ) प्रवेश और नामांकन

आई.सी.डी.एस. योजना की उल्लेखनीय पहुँच (यह दुनिया का एक सबसे बड़ा कार्यक्रम है) और अन्य प्री-स्कूलों के होने के बावजूद कई चुनौतियाँ बनी हुई हैं, विशेष रूप से प्राथमिक विद्यालय की तुलना में कम नामांकन और उपस्थिति। यही समस्या स्कूल में कक्षा 1 में 5 साल के बच्चों के प्रवेश को लेकर भी दिखाई देती है।

पिछले दो दशकों में पहुँच और नामांकन पर महत्वपूर्ण ध्यान दिया गया है। यद्यपि प्राथमिक विद्यालय में प्रवेश और नामांकन में नाटकीय रूप से वृद्धि हुई है, लेकिन ई.सी.सी.ई. कार्यक्रमों में नामांकन अभी भी कम है।

i. प्रवेश के मामले में आई.सी.डी.एस. योजना का समग्र कवरेज अच्छा रहा है, यहाँ तक कि दूरस्थ स्थानों में स्थापित आँगनवाड़ियाँ भी काम कर रहीं हैं। वर्ष 2022 में 13,99,661 स्वीकृत आँगनवाड़ियों में से 13,91,004 आँगनवाड़ियाँ काम कर रही थीं।[3]

ii. लेकिन व्यापक उपलब्धता के बावजूद नामांकन कम रहता है। 2020–21 के दौरान कक्षा 1 में 19,344,199 भर्ती हुए और इनमें से पूर्व-प्राथमिक का अनुभव केवल 50.9 प्रतिशत के पास था। इनमें से 24.7 प्रतिशत विद्यार्थी, स्कूल में ही स्थित पूर्व-प्राथमिक से थे जबकि 7.9 प्रतिशत विद्यार्थियों के पूर्व-प्राथमिक व प्राथमिक स्कूल अलग थे और 18.3 प्रतिशत का अनुभव आँगनवाड़ी/ई.सी.सी.ई. केंद्र का था।[4]

iii. 2020–21 में प्राथमिक विद्यालय में 103.3 के जी.ई.आर. और 92.7 के एन.ई.आर. के साथ नामांकन उत्कृष्ट रहा।

iv. 2019–20 में शहरी पूर्व-प्राथमिक में बच्चों की उपस्थिति 44 प्रतिशत और ग्रामीण क्षेत्रों में 39 प्रतिशत रिपोर्ट की गई थी और कुल मिलाकर, 2–4 वर्ष की आयु के 40 प्रतिशत बच्चे पूर्व-प्राथमिक शिक्षा से जुड़े थे। इसमें सामाजिक और आर्थिक रूप से वंचित समूहों (Socio–Economically Disadvantaged Groups, SEDGs) के बच्चों की उपस्थिति सबसे कम थी। यद्यपि 6–10 वर्ष की आयु के बच्चों में 95 प्रतिशत स्कूल जाते हैं।[5]

v. देश के 21 राज्यों में 5 वर्ष के बच्चे कक्षा 1 में प्रवेश लेते हैं।[6]

(ङ) मानव संसाधन

यद्यपि आँगनवाड़ियों का स्टाफ पूरा नहीं है, फिर भी यह उच्च स्तर पर है। निजी संस्थानों के आँकड़े उपलब्ध नहीं है। ई.सी.सी.ई. के लिए प्रासंगिक शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों की पेशकश करने वाले संस्थानों की संख्या भी कम और अपर्याप्त है।

i. आँगनवाड़ी में स्वीकृत पदों की संख्या 13,99,696 है, जिसमें रिक्त पद मात्र 5 प्रतिशत ही हैं। आँगनवाड़ी सहायिकाओं के स्वीकृत पदों में से 7 प्रतिशत रिक्त हैं।[7]

ii. पूर्व-प्राथमिक शिक्षा के लिए शिक्षक तैयार करने वाले कार्यक्रमों की पेशकश करने वाले शिक्षक शिक्षा संस्थानों की संख्या बेहद कम है। निजी क्षेत्र में केवल एक प्रतिशत शिक्षक शिक्षा संस्थान (जिसमें देश में 92 प्रतिशत शिक्षक शिक्षा संस्थान शामिल हैं) पूर्व-प्राथमिक शिक्षकों के लिए कार्यक्रम पेश करते हैं। उत्तर-पूर्वी राज्यों में से किसी में भी पूर्व-प्राथमिक शिक्षा के लिए शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम नहीं हैं।[8]

(च) पोषण

अच्छा पोषण ई.सी.सी.ई. का एक अभिन्न अंग है। यद्यपि पिछले कुछ वर्षों में भारत में बच्चों के प्रमुख पोषण संकेतकों पर प्रगति हुई है, लेकिन तब भी महत्वपूर्ण चुनौतियाँ बनी हुई हैं।

i. भारत में पाँच वर्ष से कम आयु के 36 प्रतिशत बच्चों का विकास पूर्ण रूप से नहीं हो पाया (अर्थात उनकी आयु के हिसाब से वे बहुत ही छोटे लगते हैं)। यह दीर्घकालिक अल्पपोषण का संकेत है। पाँच साल से कम आयु के 19 प्रतिशत बच्चे बहुत ही कमज़ोर हैं (अर्थात उनकी लंबाई के अनुपात में बहुत ही दुबले), जो कि अत्यंत कुपोषण का संकेत है, जबकि पाँच साल से कम आयु के 32 प्रतिशत बच्चे कम वज़न के हैं।[5] दैनिक जीवन और दीर्घावधि दोनों में ही इसका बच्चों के समग्र विकास पर प्रभाव पड़ता है।

ii. 2015–16 के बाद से ही बच्चों के ठीक से नहीं बढ़ने व अविकसित होने और कम वज़न होने का आँकड़ा कम हुआ है। 2015–16 में अविकसित बच्चों का प्रतिशत 38 था जो 2019–21 में घटकर 36 प्रतिशत हो गया। इसी समयावधि में कमज़ोरी की व्यापकता 2015–16 में 21 प्रतिशत थी जो 2019–21 में घटकर 19 प्रतिशत हो गई है। यद्यपि राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में व्यापक भिन्नताएँ हैं, कुछ राज्यों में लगभग 40 प्रतिशत या अधिक बच्चे अभी भी विकास में पीछे हैं।[5]

(छ) सीखने के प्रतिफल

बहुत से ई.सी.सी.ई. संस्थानों में शैक्षिक प्रतिफलों पर ध्यान कम रहा है और प्रतिफलों की उपलब्धि अपर्याप्त रही है। उपलब्धि की ये कमियाँ स्कूल के बाद के वर्षों में बढ़ती रहती हैं।

i. कई कारणों आदि के चलते जैसे– उपलब्ध समय, शिक्षक की क्षमता आँगनवाड़ियों में शिक्षा के घटक पर ध्यान अपर्याप्त रहा है। आमतौर पर आँगनवाड़ियों में पठन-पूर्व गतिविधियाँ, लेखन-पूर्व गतिविधियाँ और संख्या-पूर्व अवधारणाओं से संबंधित गतिविधियाँ बहुत कम होती हैं।

ii. कई बच्चे अपनी आयु के अनुसार सीखने के स्तर को प्रदर्शित करने में असमर्थ हैं; यह समस्या तब भी बनी रहती है, जब बच्चे प्राथमिक विद्यालय में जाते हैं।[9]

iii. एन.ए.एस. 2021 कक्षा 3 में सीखने के स्तर में गिरावट और सभी कक्षाओं में सीखने की कमी के लगातार बढ़ने को दर्शाता है। प्राथमिक कक्षाओं में भाषा और गणित में औसत अंक उच्च प्राथमिक और माध्यमिक कक्षाओं की तुलना में काफी कम हो गए हैं।[9]

(ज) आगे की राह

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत में ई.सी.सी.ई. की चुनौतियों को स्पष्ट रूप से बताती है— "करोड़ों छोटे बच्चों, विशेष रूप से सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित पृष्ठभूमि के बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण ई.सी.सी.ई. उपलब्ध नहीं है", यह नीति मज़बूत निवेश के साथ इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए एक स्पष्ट प्रतिबद्धता दर्शाती है और इस तरह गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक बाल्यावस्था विकास, देखभाल और शिक्षा के लिए सार्वभौमिक प्रावधान "जितनी जल्दी हो सके और अधिक-से-अधिक 2030" प्रदान करने की बात करती है, (*राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020,* अनुच्छेद 1.1)।

देश में ई.सी.सी.ई. परिदृश्य को बदलने के लिए एन.ई.पी. 2020 के बहुआयामी दृष्टिकोण के मद्देनज़र, यह एन.सी.एफ. सबसे महत्वपूर्ण है। यद्यपि बुनियादी ढाँचे और कुछ अन्य मामलों में निवेश में कुछ समय लग सकता है, लेकिन पाठ्यचर्या और शैक्षिणिक बदलाव समानांतर रूप से व तेज़ी से किए जा सकते हैं। इस एन.सी.एफ. का उद्देश्य संस्थानों में अन्य सुधारों के साथ ही ई.सी.सी.ई. के अभ्यास में ऐसे बदलावों को संभव बनाना है।

1.2.5 विश्व में बुनियादी स्तर हेतु शिक्षण-अधिगम को आकार देने वाले अन्य विचार

रूसो, फ्रोबेल, ड्यूई और मोंटेसरी जैसे विचारक पूरी दुनिया में, प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा को लेकर किए जाने वाले काम में अग्रणी थे। ड्यूई ने इस बात पर बल दिया कि रोज़मर्रा के अनुभव सीखने के बेहतरीन अवसर प्रदान करते हैं। उनका यह भी कहना था कि बच्चे की अपनी प्रवृत्तियाँ, गतिविधियाँ और रुचियाँ शिक्षा का प्रारंभ बिंदु होना चाहिए। इसका निहितार्थ यह है कि बच्चा जिस वक्त जिस जगह पर है या जो भी क्रियाकलाप कर रहा है, उसमें उसे शामिल किया जाना चाहिए। इसलिए महत्वपूर्ण प्रारंभिक बिंदुओं के रूप में शिक्षकों को बच्चे के निकटतम सामाजिक परिवेश और रुचि को देखते हुए, विषयों (Topics) का चयन करना चाहिए।

फ्रोबेल का मानना था कि क्रिया और प्रत्यक्ष अवलोकन बच्चों को शिक्षित करने का सबसे अच्छा तरीका है। इसका निहितार्थ है कि एक शिक्षक बच्चों के साथ खेल और अन्य गतिविधियों में शामिल रहे। यह प्रभावी शिक्षण-अधिगम के लिए एक महत्वपूर्ण शर्त है।

हाल के दिनों में, विकासात्मक मनोविज्ञान और बाल विकास के विद्वानों, जैसे– पियाज़े, ब्रूनर, वायगोत्स्की, यूरी ब्रोंफेनब्रेनर और गार्डनर आदि ने अपने शोध के आधार पर इस बात पर बल दिया है कि खेल और गतिविधियाँ बच्चों के अधिगम के सहज तरीके हैं और बच्चों का कई सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों में रहते हुए सीखना, उनके अधिगम और विकास को प्रभावित करता है।

पियाज़े ने इस बात पर ज़ोर दिया कि बच्चे अपने अनुभवों को आत्मसात करके और फिर उन्हें अपनी समझ में समायोजित करके अपने ज्ञान का निर्माण करते हैं और अपनी अनुभूतियों और अनुभवों को समझने के लिए लगातार नई जानकारी का समायोजन और उपयोग करते हैं।

वायगोत्स्की ने यह पाया कि बच्चे सामाजिक और सांस्कृतिक अनुभवों में सक्रिय रूप से शामिल होते हैं और सीखने तथा विकास की प्रक्रिया में बच्चों व उनसे अधिक अनुभवी अन्य लोगों के बीच एक सक्रिय अंतर्क्रिया होती है। इसका निहितार्थ यह है कि बहुकक्षीय, बहुस्तरीय कक्षा-कक्षों में छोटे समूहों में गतिविधियों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए जहाँ वे बच्चे, जो कुछ ज़्यादा समझ रखते हैं, अपने साथी बच्चों को सीखने में मदद करते हैं।

जेरोम ब्रूनर ने प्रस्तावित किया कि बच्चे प्राप्त सूचना व ज्ञान को अपनी स्मृति में तीन अलग-अलग लेकिन परस्पर जुड़े तरीकों में निरूपित करें। ये तरीके हैं— क्रिया आधारित, छवि आधारित और भाषा व प्रतीक आधारित। 'सर्पिल पाठ्यचर्या' की अवधारणा के माध्यम यह कैसे संभव हो सकता है, इसकी व्याख्या भी उन्होंने दी। इसमें जानकारियों को व्यवस्थित किया जाना शामिल था ताकि जटिल विचारों को पहले सरल स्तर पर पढ़ाया जा सके, जहाँ बच्चे मूर्त अनुभवों के माध्यम से अधिक सीखें और फिर बाद में इन विचारों को अधिक जटिल स्तरों पर समझें (इसलिए सर्पिल (Spiral) की उपमा का प्रयोग किया गया है)। इस प्रकार किसी भी विषय को धीरे-धीरे कठिनाई स्तर के बढ़ते हुए क्रम में पढ़ाया जाएगा। इसका निहितार्थ यह है कि कक्षा में निरूपण के विभिन्न तरीकों का उपयोग किया जाना चाहिए— मूर्त, चित्र आधारित और भाषा या प्रतीक आधारित। प्रारंभिक वर्षों की पाठ्यचर्या में, बच्चों के एक ही समूह के साथ पूरे तीन साल की अवधि में एक ही विषय या टॉपिक को दोहराने का आधार यही है।

इन विचारों ने पाठ्यचर्या की विषयवस्तु निर्माण में संवेदी और व्यावहारिक गतिविधियों को जगह देने में मदद की। भारतीय विचारक भी छोटे बच्चों और गतिविधियों के दौरान सीखने-सिखाने की अलग-अलग सामग्री का प्रयोग करने में उनकी दिलचस्पियों से संबंधित अपने स्वयं के अवलोकनों द्वारा निर्देशित थे। खोज और खेल, कला, लय, तुकबंदी, शारीरिक गत्यात्मकता और बच्चे की सक्रिय भागीदारी आदि महत्वपूर्ण तत्वों को कक्षा में शामिल किया जाना चाहिए।

खंड 1.3
राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की परिकल्पना

बॉक्स 1.3 क

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय मूल्यों (Ethos) पर आधारित ऐसी शिक्षा व्यवस्था की परिकल्पना करती है जो सभी को उच्च गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करके भारत को एक न्यायसम्मत और जीवंत ज्ञान समाज में सतत रूप से रूपांतरित करने की दिशा में प्रत्यक्ष रूप से योगदान करेगी और इस तरह भारत को एक वैश्विक ज्ञान महाशक्ति बनाएगी।

नीति में यह परिकल्पना की गई है कि हमारे संस्थानों की पाठ्यचर्या और शिक्षणशास्त्र विद्यार्थियों में मौलिक कर्तव्यों और संवैधानिक मूल्यों के प्रति गहरे सम्मान की भावना विकसित करें तथा अपने देश के साथ जुड़ाव और बदलती दुनिया में उनकी अपनी भूमिका और जिम्मेदारियों के प्रति जागरूकता विकसित करें। नीति की परिकल्पना में शिक्षार्थियों के बीच न केवल विचार अपितु आत्मा, बुद्धि और कार्यों में भी भारतीय होने का गहरा गर्व पैदा करना है; साथ ही ऐसे ज्ञान, कौशलों, मूल्यों और स्वभाव को विकसित करना है जो मानवाधिकारों, सतत विकास एवं रहन-सहन और वैश्विक कल्याण के लिए जिम्मेदार प्रतिबद्धता को आधार दें, ताकि वे एक सच्चे वैश्विक नागरिक बनें।

1.3.1 राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के समस्त मार्गदर्शक सिद्धांत

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 कहती है कि शिक्षा का लक्ष्य अच्छे व्यक्ति का विकास करना है, जो विवेकशील रूप से तर्कसम्मत और विचार व कार्य करने में सक्षम हो, जिसमें करुणा और समानुभूति, साहस और लचीलापन, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और रचनात्मक कल्पनाशक्ति के साथ ही ठोस नैतिक आधार और मूल्य हों। इसका लक्ष्य हमारे संविधान द्वारा परिकल्पित न्यायसम्मत, समावेशी और बहुलतावादी समाज के निर्माण के लिए संलग्न, उत्पादक और योगदान करने वाले नागरिकों को तैयार करना है। एक अच्छा शैक्षणिक संस्थान वह है जहाँ हर विद्यार्थी का स्वागत और देखभाल की जाती है; जहाँ एक सुरक्षित और प्रोत्साहित करने वाला परिवेश मौजूद है; जहाँ सीखने के ढेर सारे अनुभव उपलब्ध होते हैं और जहाँ सभी के सीखने के लिए अनुकूल भौतिक बुनियादी ढाँचा और उपयुक्त संसाधन उपलब्ध हैं। हर शैक्षणिक संस्थान का यह लक्ष्य होना चाहिए कि उनका संस्थान यह सभी विद्यार्थियों को उपलब्ध करा पाए। यद्यपि इसी के साथ-साथ, सभी शैक्षणिक संस्थानों में और शिक्षा के सभी चरणों में निर्बाध एकीकरण और समन्वय भी होना चाहिए।

एन.ई.पी. 2020 के मुख्य मार्गदर्शक सिद्धांत हैं —

(क) हर बच्चे की विशिष्ट क्षमताओं की स्वीकृति, पहचान और उनके विकास हेतु प्रयास; शिक्षकों और अभिभावकों को इन क्षमताओं के प्रति संवेदनशील बनाना, जिससे वे बच्चे की अकादमिक और अन्य क्षमताओं में उसके सर्वांगीण विकास पर भी पूरा ध्यान दें;

(ख) बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान को सर्वाधिक प्राथमिकता देना, जिससे सभी बच्चे कक्षा 3 तक साक्षरता और संख्या ज्ञान सीखने के मूलभूत कौशलों को हासिल कर सकें;

(ग) लचीलापन, ताकि शिक्षार्थियों में उनके सीखने के तौर-तरीके और कार्यक्रमों को चुनने की क्षमता हो और इस तरह वे अपनी प्रतिभा और रूचियों के अनुसार जीवन में अपना मार्ग चुन सकें;

(घ) कला और विज्ञान के बीच, पाठ्यक्रम और पाठ्येतर गतिविधियों के बीच, व्यावसायिक और शैक्षणिक विषय-वर्गों आदि के बीच कोई स्पष्ट अलगाव न हो, जिससे ज्ञान क्षेत्रों के बीच परस्पर दूरी एवं असंबद्धता को दूर किया जा सके;

(ङ) ज्ञान की सभी धाराओं के बीच एकता व अखंडता और एक बहु-विषयक दुनिया के लिए विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कला, मानविकी और खेल के बीच एक बहु-विषयक और समग्र शिक्षा का विकास को सुनिश्चित किया जा सके;

(च) रटंत पद्धति और केवल परीक्षा के लिए पढ़ाई के बजाए अवधारणात्मक समझ;

(छ) तार्किक निर्णय लेने और नवाचार को प्रोत्साहित करने के लिए बल देना रचनात्मकता और तार्किक सोच विकसित करना;

(ज) नैतिक, मानवीय और संवैधानिक मूल्य जैसे– सहानुभूति, दूसरों के लिए सम्मान, स्वच्छता, शिष्टाचार, लोकतांत्रिक भावना, सेवा की भावना, सार्वजनिक संपत्ति के लिए सम्मान, वैज्ञानिक चिंतन, स्वतंत्रता, जिम्मेदारी, बहुलतावाद, समानता और न्याय;

(झ) बहु-भाषिकता और अध्ययन-अध्यापन के कार्य में भाषा की शक्ति को प्रोत्साहन देना;

(ञ) जीवन कौशल जैसे– आपसी संवाद, सहयोग, सामूहिक कार्य और लचीलापन;

(ट) 1 साल के अंत में होने वाली परीक्षाओं पर आधारित मूल्यांकन, जिससे आज की 'कोचिंग संस्कृति' को बढ़ावा मिलता है, इसके बजाय सीखने के सतत मूल्यांकन पर बल देना;

(ठ) अध्ययन-अध्यापन, भाषा संबंधी बाधाओं को दूर करने, दिव्यांग बच्चों के लिए शिक्षा को सुलभ बनाने और शैक्षणिक नियोजन और प्रबंधन में तकनीकी के यथासंभव उपयोग पर बल देना;

(ड) यह ध्यान में रखते हुए कि शिक्षा एक समवर्ती विषय है, सभी पाठ्यक्रम, शिक्षणशास्त्र और नीति में स्थानीय संदर्भ की विविधता और स्थानीय परिवेश के प्रति सम्मान;

(ढ) सभी शैक्षिक निर्णयों की आधारशिला के रूप में पूर्ण समता और समावेशन करना ताकि, यह सुनिश्चित किया जा सके कि सभी विद्यार्थी शिक्षा प्रणाली में सफलता हासिल कर सकें।

(ण) प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा से स्कूली शिक्षा और उच्चतर शिक्षा तक सभी स्तरों के शिक्षण पाठ्यक्रम में तालमेल;

(त) शिक्षकों और संकायों को सीखने की प्रक्रिया का केंद्र मानना— उनकी नियुक्ति और तैयारी की उत्कृष्ट व्यवस्था, निरंतर व्यावसायिक विकास और सकारात्मक कार्य परिवेश और सेवा की स्थिति;

(थ) ऑडिट और सार्वजनिक प्रकटीकरण के माध्यम से शैक्षिक प्रणाली की अखंडता, पारदर्शिता और संसाधन कुशलता सुनिश्चित करने के लिए सहज, लेकिन प्रभावी नियामक ढाँचा बनाना साथ ही साथ स्वायत्तता, सुशासन और सशक्तीकरण के माध्यम से नवाचार और रचनात्मक ढंग से विचारों को प्रोत्साहित करना;

(द) गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और विकास के लिए उत्कृष्ट स्तर का शोध;

(ध) शैक्षिक विशेषज्ञों द्वारा निरंतर अनुसंधान और नियमित मूल्यांकन के आधार पर प्रगति की सतत समीक्षा;

(न) भारतीय जड़ों और गौरव से जुड़ाव और जहाँ प्रासंगिक लगे, वहाँ भारत की समृद्ध और विविध प्राचीन और आधुनिक संस्कृति एवं ज्ञान प्रणालियों और परंपराओं को शामिल करना और उससे प्रेरणा पाना;

(प) शिक्षा जन-सेवा है; गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुँच को प्रत्येक बच्चे का मौलिक अधिकार माना जाना चाहिए।

1.3.2 राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में हुए प्रतिमान परिवर्तन जो राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के मार्गदर्शक हैं

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में स्कूली शिक्षा के संदर्भ में तीन मुख्य प्रतिमान परिवर्तन हुए हैं जो एन.सी.एफ. के मार्गदर्शक हैं—

(क) एक अधिक बहु-विषयक और समग्र शिक्षा की ओर बढ़ना

i. इसका लक्ष्य बेहतर व्यक्ति के रूप में विकास करना है। ऐसे व्यक्ति जो ठोस नैतिक और भारतीय आधार लेते हुए, करुणा और मानवीयता तथा साहस और रचनात्मक कल्पनाशक्ति के साथ स्वतंत्र रूप से विवेकशील, तर्कसम्मत विचार और कार्य कर सकें।

ii. सभी क्षमताओं से युक्त— बच्चे के बौद्धिक, सामाजिक, शारीरिक, नैतिक और भावनात्मक के समग्र विकास के लिए पाठ्यचर्या में विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कलाओं, भाषाओं, खेलकूद और व्यावसायिक शिक्षा पर बहुत ज़ोर दिया जाना चाहिए।

iii. 'कला' और 'विज्ञान' में, 'अकादमिक' और 'व्यावसायिक' पढ़ाई में और 'पाठ्यचर्या-संबंधी' और 'पाठ्येतर' गतिविधियों में बहुत अधिक विभाजन न होना चाहिए।

iv. बच्चों के पास कला, मानविकी, विज्ञान, खेल और व्यावसायिक, सभी क्षेत्रों में विषयों का अध्ययन करने के लिए विकल्प होंगे और चयन करने की ज़्यादा आज़ादी होगी।

v. आवश्यक ज्ञान और कौशल जो सभी बच्चों को सीखने चाहिए, उनमें शामिल है— वैज्ञानिक दृष्टिकोण, सौंदर्यशास्त्र और कला, मौखिक और लिखित संप्रेषण, नीतिगत तर्क, संधारणीय जीवनचर्या, भारतीय ज्ञान प्रणाली, डिजिटल साक्षरता और अभिकलनीय सोच, देश के बारे में ज्ञान, समसामयिकी और दुनिया के समक्ष उपस्थित महत्वपूर्ण मुद्दे।

(ख) रटने की बजाय समालोचनात्मक और विश्लेषणात्मक चिंतन पर ज़ोर देना

i. बच्चों में विश्लेषणात्मक रूप से सोचने की क्षमता पैदा करना। बच्चे चर्चाओं में भाग लें; बोलने, लिखने और 21वीं सदी के अन्य कौशलों में कुशल बनें और यह सीखें कि उन्हें सीखना कैसे है?

ii. प्रमुख अवधारणाओं, गहरे अनुभवात्मक अधिगम, विश्लेषण और मनन (reflection), मूल्यों और जीवन कौशलों को सीखने पर ज़ोर दिया जाना चाहिए।

iii. हमारे स्कूली ढाँचे में मौजूद आकलन की प्रणाली जिसमें मुख्यतः बिना सोचे-समझे याद करने के कौशल को जाँचा जाता है, इसे बदलना चाहिए। आकलन रचनात्मक हो, सीखने और विकास को बढ़ावा दे और उच्च स्तरीय कौशलों की जाँच की जानी चाहिए।

(ग) नई पाठ्यचर्या और शिक्षणशास्त्रीय संरचना की ओर बढ़ना

i. शिक्षार्थी के विकास की अलग-अलग अवस्थाओं और उनकी इच्छा आदि ज़रूरतों के प्रति अधिक तत्परता से प्रतिक्रिया देने के लिए, पाठ्यचर्या और शिक्षणशास्त्रीय दृष्टिकोण बच्चे की विकासात्मक अवस्थाओं के अनुरूप होना चाहिए। इसलिए यह चार चरणों 5 + 3 + 3 + 4 द्वारा निर्देशित किया जाएगा।

(1) बुनियादी स्तर– लचीला, बहुस्तरीय, खेल-आधारित अधिगम

(2) प्रारंभिक स्तर– कुछ औपचारिक अंतर्क्रिया आधारित कक्षा-अधिगम के साथ-साथ खोज और गतिविधि आधारित अधिगम ताकि पढ़ने, लिखने, बोलने, शारीरिक शिक्षा, कला, भाषाओं, विज्ञान और गणित आदि सीखने के लिए एक ठोस बुनियाद तैयार हो सके।

(3) मध्य स्तर– इस स्तर में शिक्षणशास्त्रीय और पाठ्यचर्या की शैली वैसी ही होगी जैसी कि प्रारंभिक स्तर में है, लेकिन यहाँ विभिन्न विषयों से परिचय और उनकी अधिक अमूर्त अवधारणाओं को सीखना और उन पर चर्चा कर पाना भी शामिल होगा।

(4) माध्यमिक स्तर– चार साल तक विषयों का गहराई से बहुविषयक अध्ययन, विश्लेषणात्मक चिंतन पर फोकस करना, जीवन की आकांक्षाओं पर ध्यान और बच्चों के लिए विषयों के विकल्प और चुनाव में लचीलापन।

1.3.3 राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020— प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा के विशिष्ट लक्ष्य

(क) प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा के सार्वभौमिक प्रावधान को जितनी जल्दी हो सके, उतनी जल्दी हासिल किया जाना चाहिए (*एन.ई.पी. 2020,* अनुच्छेद 1.1)।

(ख) सभी बच्चों द्वारा निम्न क्षेत्रों में इष्टतम प्रतिफलों को हासिल करना—

i. शारीरिक और गत्यात्मक विकास

ii. संज्ञानात्मक विकास

iii. सामाजिक-भावनात्मक-नैतिक विकास

iv. सांस्कृतिक / कलात्मक विकास

v. प्रारंभिक भाषा और संवाद, साक्षरता एवं संख्या ज्ञान का विकास (*एन.ई.पी. 2020,* अनुच्छेद 1.2)

(ग) संस्थाओं द्वारा लचीले, बहुआयामी, बहुस्तरीय, खेल आधारित, गतिविधि आधारित और जाँच आधारित शिक्षा जिसमें भाषाएँ, संख्याएँ, गिनना, रंग, आकार, इनडोर एवं आउटडोर खेल, पहेलियाँ और तार्किक सोच, समस्या-समाधान, चित्रकला, पेंटिंग और अन्य दृश्य कलाएँ, दस्तकारी, नाटक, कठपुतली, संगीत और शारीरिक गत्यात्मकता आदि को शामिल किया जाए। अर्थात् इन सभी का संस्थानीकरण हो और इनके साथ सामाजिक क्षमताओं, संवेदनशीलता, अच्छा व्यवहार, शिष्टता, आचार नीति, व्यक्तिगत और सार्वजनिक स्वच्छता, समूह में काम करना और आपसी सहयोग पर भी ध्यान केंद्रित हो। (*राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020,* अनुच्छेद 1.2)

एन.ई.पी. 2020 के अनुसार बुनियादी स्तर 3 वर्ष से 8 वर्ष तक का है अर्थात् पाँच वर्ष की विद्यालय पूर्व शिक्षा से लेकर स्कूली शिक्षा तक और स्कूली शिक्षा से लेकर कक्षा 2 तक की शिक्षा शामिल है और इसलिए 6 वर्ष के बच्चे कक्षा 1 में हों।

1.3.4 राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में बुनियादी स्तर के लिए मार्गदर्शक सिद्धांत

(क) हर एक बच्चा सीखने की सामर्थ्य रखता है, चाहे उसके जन्म या पृष्ठभूमि की परिस्थितियाँ कैसी भी रही हों।

(ख) हर बच्चा अलग है और वह अपनी ही गति से बढ़ता है, सीखता है और विकसित होता है।

(ग) बच्चे नैसर्गिक शोधकर्ता होते हैं। उनके पास जबरदस्त अवलोकन कौशल होते हैं। वे खुद अपने सीखने के अनुभवों के निर्माणकर्ता होते हैं और वे अपनी भावनाओं और विचारों को अलग-अलग तरीकों से अभिव्यक्त करते हैं।

(घ) बच्चे सामाजिक प्राणी हैं; वे अवलोकन, अनुकरण और सहयोग के माध्यम से सीखते हैं। बच्चे ठोस अनुभवों, अपनी इंद्रियों का उपयोग करते हुए और अपने परिवेश से अतंर्क्रिया करते हुए सीखते हैं।

(ङ) बच्चों के अनुभवों और सीखने के तरीकों को स्वीकार और शामिल किया जाना चाहिए। बच्चे सबसे अच्छा तब सीखते हैं जब उनका सम्मान किया जाता है, उन्हें महत्व दिया जाता है और सीखने की प्रक्रिया में पूरी तरह से शामिल किया जाता है।

(च) खेल और गतिविधियाँ बच्चों के सीखने और विकास के प्रमुख तरीके हैं। बच्चों को अपने परिवेश को अनुभव करने, उसकी पड़ताल करने और उसके साथ प्रयोग करने के अवसर देने चाहिए।

(छ) बच्चों को विकासात्मक और सांस्कृतिक रूप से उपयुक्त तथा समस्या सुलझाने और अवधारणात्मक समझ विकसित करने वाली सामग्री, गतिविधियों और परिवेश से अवश्य जुड़ना चाहिए।

(ज) विषयवस्तु बच्चों के अनुभवों से ली गई हो। विषयवस्तु की नवीनता या उसकी चुनौतियाँ बच्चों के परिचित अनुभवों पर आधारित होनी चाहिए।

(झ) विषयवस्तु बच्चों की विकासात्मक आवश्यकताओं के अनुकूल होनी चाहिए और इसे फंतासी (कल्पना), कहानी कहने, कला, संगीत और खेल के लिए कई अवसर प्रदान करने वाली होनी चाहिए।

(ञ) विषयवस्तु में जेंडर, जाति, वर्ग और अक्षमता/दिव्यांगता जैसे मुद्दों में समता पर बल दिया जाना चाहिए।

(ट) शिक्षक बच्चों के सीखने में सुगमकर्ता एवं मध्यस्थ की भूमिका निभाएँ और उन्हें मुक्त-अंत वाले प्रश्न पूछकर, खोज करने के अवसर देकर संबलन प्रदान करें।

(ठ) परिवार और समुदाय दोनों ही इस प्रक्रिया में कई तरीकों से भागीदार हैं।

(ड) देखभाल सीखने के केंद्र में है। इस आयु के बच्चे परिचित वयस्कों को सहज तौर पर देखभालकर्ता के रूप में देखते हैं। शिक्षक बच्चों की आवश्यकताओं और उनकी मनोदशा के प्रति संवेदनशील और जिम्मेदार भी हों। कक्षा गतिविधियों में सीखने के भावनात्मक पहलू पर बल दिया जाना चाहिए (उदाहरण के लिए, कहानी कहने और कला के माध्यम से)।

बॉक्स 1.3 ख

बुनियादी स्तर एक एकल पाठ्यचर्या और शिक्षणशास्त्रीय चरण है जिसमें 3 से 8 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए पाँच साल का लचीला, बहुस्तरीय, खेल और गतिविधि आधारित शिक्षण शामिल है। एन.ई.पी. 2020 इन प्रारंभिक वर्षों को विकास और सीखने की दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण मानती है।

इन वर्षों के दौरान शिक्षा में बुनियादी क्षमताओं और कौशल विकसित करने पर ध्यान देना चाहिए। इनमें संज्ञानात्मक, भाषा संबंधी और सामाजिक-भावनात्मक कौशल शामिल हैं। इन सभी के विकास के लिए प्रारंभिक वर्ष सबसे संवेदनशील अवधि का प्रतिनिधित्व करते हैं। वे बच्चों को परिपक्व होते जाने के साथ-साथ अकादमिक रूप से उनके पढ़ने-लिखने एवं संख्यात्मकता सीखने के लिए आधार तैयार करते हैं और साथ ही आजीवन सीखने की बुनियाद भी प्रदान करते हैं।

1.3.5 राष्ट्रीय शिक्षा नीति की प्राथमिकताओं पर प्रमुख नई पहलें

(क) निपुण (NIPUN) भारत

2021 में शुरू किया गया 'निपुण भारत' (समझ के साथ पढ़ने और संख्या ज्ञान में प्रवीणता के लिए राष्ट्रीय पहल) एन.ई.पी. 2020 द्वारा निर्देशित है। यह देश में बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान (एफ.एल.एन) के लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु एक राष्ट्रीय मिशन है। 'निपुण भारत' का लक्ष्य 2026–27 तक कक्षा 3 तक के देश के सभी बच्चों द्वारा एफ.एल.एन को प्राप्त करना है।

कोरोना महामारी के दौरान स्कूल बंद होने की वजह से हुई सीखने की क्षति के कारण बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान (एफ.एल.एन) हासिल करने की चुनौतियाँ अधिक गहरी और व्यापक हो गई हैं। निपुण भारत पहल

में इस हेतु रणनीतिक क्रियान्वयन पर तो ध्यान केंद्रित किया ही गया है, साथ-ही-साथ यह एन.ई.पी. 2020 के अध्याय 2 में उल्लिखित लक्ष्यों को पूरा करने के लिए महत्वपूर्ण आवश्यक ढाँचों, भूमिकाओं और जिम्मेदारियों पर ध्यान केंद्रित करता है। इस महत्वपूर्ण मुद्दे पर ध्यान केंद्रित करने में इसने एक उत्कृष्ट काम किया है और पूरे देश में इस पर काम शुरू हो गया है। इस महत्वपूर्ण कार्य को निरंतरतापूर्वक पूरी तरह से आगे बढ़ाना चाहिए।

'निपुण भारत' के वे तत्व जो अपनी प्रकृति में पाठ्यचर्या से संबद्ध हैं, (जैसे– पाठ्यचर्या के लक्ष्य और क्षमताएँ) वे सभी एन.सी.एफ से जुड़ेंगे।

(ख) विद्या प्रवेश

'विद्या प्रवेश' सभी बच्चों के लिए बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान के लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में दिए गए बल पर आधारित है। यह नीति इस बात पर चिंता व्यक्त करती है कि चूँकि हम अभी तक हर बच्चे को ई.सी.सी.ई. नहीं उपलब्ध करवा पाएँ हैं, इसलिए बच्चों का एक बड़ा हिस्सा कक्षा एक के पहले कुछ सप्ताहों में ही पिछड़ जाता है। सीखने में आई इस कमी को दूर करने में मदद करने के लिए, तीन महीने का खेल आधारित स्कूल तैयारी मॉड्यूल, एक अंतरिम उपाय के रूप में प्रस्तावित किया गया है।

'विद्या प्रवेश' कक्षा एक में प्रवेश करने वाले बच्चों के लिए रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा विकसित किया गया है। इसकी सीखने-सिखाने की प्रकिया तीन महीनों तक की जाएगी, इसमें बच्चों को स्कूल के परिवेश से परिचित कराने और अपने आप का ध्यान रखने से संबंधित अनुभव प्रदान करने के लिए पूरे दिन के चार घंटे होंगे। विद्या प्रवेश नीतिगत मूल्यों और सांस्कृतिक विविधता को सीखने और भौतिक, सामाजिक और प्राकृतिक परिवेश के साथ बातचीत भी संभव बनाएगा। इन पहलुओं के अलावा 'विद्या प्रवेश' को गणित, भाषा और साक्षरता की बुनियाद निर्मित करने के लिए डिज़ाइन किया जाएगा और इसमें 'निपुण भारत' में निर्धारित सीखने के प्रतिफलों का भी ध्यान रखा जाएगा।

(ग) बालवाटिका

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 कहती है, "5 वर्ष की आयु से कम आयु का प्रत्येक बच्चा एक 'प्रिपरेटरी कक्षा' या 'बालवाटिका' (जो कक्षा एक से पहले है) में जाएगा, जिसमें एक योग्य ई.सी.सी.ई. शिक्षक होगा" (*एन.ई.पी. 2020,* अनुच्छेद 1.6)।

बालवाटिका कार्यक्रम कक्षा 1 से पहले एक साल के कार्यक्रम के रूप में परिकल्पित किया गया है। इसका उद्देश्य खेल आधारित उपागम के माध्यम से बच्चों को संज्ञानात्मक और भाषायी दक्षताओं में तैयार करना है। ये दक्षताएँ पढ़ना, लिखना सीखने और संख्याओं की समझ विकसित करने के लिए पूर्व-शर्त हैं। रा.शै.अ.प्र.प. ने बालवाटिका के साथ-साथ पूर्व-प्राथमिक के तीन वर्षों के लिए भी दिशानिर्देश और प्रक्रियाएँ विकसित की हैं।

निष्कर्ष– इस एन.सी.एफ. का उद्देश्य एन.ई.पी. 2020 के लक्ष्यों के मद्देनजर, बुनियादी स्तर के लिए पाठ्यचर्या की रूपरेखा तैयार करना है। इस पाठ्यचर्या को तैयार करने में ई.सी.सी.ई. के क्षेत्र में हुए व्यापक विश्वव्यापी शोध, भारत की समृद्ध ई.सी.सी.ई. परंपराओं और हाल ही में शुरू की गई पहलों जैसे 'निपुण भारत' और 'विद्या प्रवेश' आदि को भी ध्यान में रखा जाएगा, ताकि भारत के सभी बच्चों के लिए बाल्यावस्था देखभाल और सीखने का पारिस्थितिकी तंत्र दुनिया में सबसे आगे हो।

खंड 1.4
बुनियादी स्तर में बच्चे कैसे सीखते हैं?

बच्चे नैसर्गिक अधिगमकर्ता होते हैं। वे सक्रिय होते हैं, सीखने के लिए उत्सुक होते हैं और नई चीजों के संदर्भ में दिलचस्पी से जवाब देते हैं। उनमें जिज्ञासा की एक सहज (innate) भावना होती है। वे दुनिया को समझने की कोशिश में अचंभित होते हैं, प्रश्न करते हैं, पड़ताल करते हैं, कोशिश करते हैं और खोज करते रहते हैं। अपनी जिज्ञासा पर काम करते हुए, वे अधिक-से-अधिक खोजना और सीखना जारी रखते हैं।

बच्चे खेल के माध्यम से खुद गतिविधि करके बेहतर सीखते हैं। उन्हें दौड़ना, कूदना, घुटनों के बल या लेटकर खिसकना और संतुलन बनाना पसंद आता है। कुछ बातों को दोहराना उन्हें आनंद देता है, वे लय के प्रति तत्काल व सहज प्रतिक्रिया देते हैं, वे बात करते हैं, वे पूछते हैं और चिंतन करते हैं, खुद से पूछे गए प्रश्नों का उत्तर देते हैं। वे सोच-समझकर किसी व्यक्ति और चीज़ को जोड़-तोड़ करके, पड़ताल और प्रयोग करते हुए प्रत्यक्ष अनुभवों से सीखते हैं। सामग्रियों, विचारों, सोच, भावनाओं के साथ यह हँसी-खेल बच्चों की सृजनात्मकता, लचीली सोच और समस्या सुलझाने की योग्यताओं को विकसित करने में मदद करता है और उनकी एकाग्रता, ध्यान केंद्रित करने और किसी चीज़ को हासिल करने के लिए बार-बार कोशिश करने की क्षमता को बढ़ाता है। खेल के माध्यम से बच्चे अपनी सोच, शब्दावली, कल्पना, बोलने और सुनने के कौशल बेहतर करते हैं, चाहे इनमें वे वास्तविक परिस्थितियों का पुनर्निर्माण कर रहे हों या काल्पनिक दुनिया बना रहे हों। इसलिए इस चरण में सीखना एक सक्रिय और संवादात्मक प्रक्रिया है, जिसमें बच्चे खेल के तथा अन्य बच्चों व अधिक अनुभवी लोगों के साथ बातचीत के माध्यम सीखते हैं। बच्चे अपने सामाजिक और सांस्कृतिक अनुभवों में सक्रिय रूप से संलग्न रहते हैं और वे अपने संवेदनों और अनुभवों को समझने के लिए लगातार नई जानकारियों को समायोजित और उपयोग करते हैं।

बच्चों का खेलना और बिना किसी हिचक के मज़े से काम करना, इन दोनों को दूसरों के साथ सक्रिय भागीदारी के अनुभव देते हुए पोषित और मज़बूत किया जा सकता है। साथ ही प्राकृतिक व वास्तविक दुनिया की ऐसी सामग्री जो सीखने, कल्पना करने, रचनात्मकता, नवाचार तथा विविध और अनूठे तरीकों से समस्या समाधान की क्षमता को उद्दीप्त और बेहतर करती है, वह भी इन्हें पोषित और मज़बूत करती है।

यह महत्वपूर्ण है कि इस स्तर में बच्चों की शिक्षा अपने आस-पास के लोगों के साथ उनके सबंधों को भी पोषित करे। ये रिश्ते बच्चों को सुरक्षित महसूस करने, अधिक आशावादी, जिज्ञासु बनने और बातचीत कर पाने में मदद करते हैं।

1.4.1 खेल का महत्व

खेलना बच्चों के लिए कुछ काम करने जैसा है। खेल की प्रकृति ही कुछ ऐसी है कि छोटे बच्चे इसे करना और इसमें सक्रिय रूप से संलग्न होना पसंद करते हैं। हम कह सकते हैं कि खेलना और सीखना पारस्परिक आदान-प्रदान की दोतरफा प्रक्रिया है। खेल बच्चों को सक्रिय रहने, संलग्न रहने और अन्य वयस्कों और बच्चों के

साथ सामाजिक अंतर्क्रिया में जुड़ने के मौके देते हुए सीखने को संभव करता है, इस प्रकार यह सीखने के लिए आवश्यक सभी शर्तों को पूरा करता है।

जब हम खेल में संलग्न बच्चों का अवलोकन करते हैं, तो हम उन्हें निम्न प्रक्रियाओं को करते हुए पाते हैं—

(क) चयन– जब बच्चे खेलते हैं तब वे अपने लक्ष्यों को चुन सकते हैं और उनके बारे में निर्णय ले सकते हैं (उदाहरण के लिए, मुझे इस पहेली को पूरा करना है; इन ब्लॉकों से टावर बनाना है और गुड़िया के घर में चाय बनानी है)। यह चयन उन्हें सक्रिय और संलग्न रखता है।

(ख) विस्मय– यह उन्हें सोचने और ध्यान केंद्रित करने में समर्थ करता है। (उदाहरण के लिए, यह गुब्बारा बड़ा होता जा रहा है, पतंग आसमान में कितनी दूर तक चली गई है, यह रुमाल कहाँ चला गया, क्या यह जादू है?)

(ग) आनंद लेना– बच्चे अपने आप में आनंद लेते हैं। खेलने को लेकर उमंग होती है और जो वे करते हैं, उसके प्रति प्यार भी होता है। यह एक अर्थपूर्ण सामाजिक अंतर्क्रिया को बढ़ावा देता है और सीखते रहने की इच्छा को बढ़ाता है।

सक्रिय खेल की इस प्रक्रिया में बच्चे बहुत-सी चीज़ें सीखते हैं, जैसे– दुनिया की समझ बनाना सीखना, समस्याओं को हल करना सीखना, स्वयं के बारे में सीखना, दूसरों के बारे में सीखना, गणित और भाषा सीखना।

इस प्रकार खेल बच्चों के सीखने और विकास के केंद्र में हैं। कक्षा में खेल के माध्यम से सीखना बच्चों के विकास के सभी क्षेत्रों और पाठ्यचर्या के सभी उद्देश्यों पर सक्रिय रूप से ध्यान देते हुए, उन्हें कई प्रकार के अवसर उपलब्ध कराता है। चयन, विस्मय और आनंद लेना बच्चों के खेल के मुख्य पहलू हैं और इन तीनों पहलुओं को ध्यान में रखेंगे तो हमारी कक्षाएँ बेहतर करेंगी।

खेलते वक्त बच्चे बहुत सक्रिय होते हैं; वे दुनिया को समझने की कोशिश में चीज़ों को व्यवस्थित करते हैं, योजना बनाते हैं, कल्पना करते हैं, सोच-समझकर चीज़ो को नियंत्रित करते हैं, बातचीत से बीच का रास्ता निकालते हैं, अन्वेषण और खोज करते हैं। उदाहरण के लिए, खेलते वक्त बच्चे—

- योजना बनाते हैं और उसका अनुसरण करते हैं— *मैं अपने घर और परिवार का चित्र बनाना चाहता हूँ; यह कैसा दिखेगा? और इस तस्वीर में मैं किस-किस को शामिल करूँ?*
- गलती करके सीखने, कल्पनाशक्ति और समस्या हल करने के कौशल का उपयोग करते हैं— *मेरा टावर गिरता रहता है; शायद मुझे नीचे आधार में और ब्लॉक्स रखने चाहिए?*
- वास्तविक जीवन में मात्रा, विज्ञान और गति की अवधारणाओं का अनुप्रयोग करते हैं— *इस रेत में मैं एक सुरंग खोदना चाहता हूँ, शायद मुझे रेत को गीला करना पड़े।*

- तार्किक और विश्लेषणात्मक तरीके से सोचते हुए काम करते हैं— *चित्र पहेलियों को हल करते हुए शायद किनारे वाले टुकड़ों को पहले लगाना ठीक रहेगा।*
- दोस्तों के साथ बातचीत करते हैं और उनके साथ मत-भिन्नताओं को लेकर किसी सहमति तक पहुँचते हैं— *अभी मैं डॉक्टर की भूमिका अदा करूँगा, अगली बार तुम यह कर सकते हो?*
- काम पूरा हो जाने पर संतुष्ट महसूस करते हैं— *यह रेत का घरौंदा मैंने अपने दोस्त के साथ बनाया।*
- सृजनात्मक बनते हैं— *जब मैं लाल और नीले रंग को मिलाता हूँ, यह बैंगनी हो जाता है; अगर मैं हरे और नीले रंग को मिलाऊँ, तो क्या होगा?*

1.4.2 खेल के माध्यम से सीखना

यह राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 'खेल' के महत्व को रेखांकित करती है। यह कहती है कि पाठ्यचर्या को व्यवस्थित करने में, शिक्षणशास्त्र, समय और विषयवस्तु को व्यवस्थित करने में और बच्चे के संपूर्ण अनुभव के लिए अवधारणात्मक, प्रक्रियात्मक और कक्षा में काम करने के उपागम में खेल प्रमुख हैं।

ई.सी.सी.ई. के संदर्भ में 'खेल' शब्द में वे सभी गतिविधियाँ शामिल हैं जो बच्चे के लिए आनंदमय और उसे व्यस्त रखने वाली हैं। यह शारीरिक खेल, अंतर्क्रिया, बातचीत, प्रश्न-उत्तर सत्र, कहानी सुनाना, जोर से पढ़ना और मिलकर पढ़ना, पहेलियों, तुकबंदियों या खेल, खिलौने, दृश्य कला और संगीत से जुड़ी अन्य मनोरंजक गतिविधियों के रूप में हो सकती हैं।

खेल बच्चों को सक्रिय और प्रेरणादायक रूप से सीखने के अवसर प्रदान करता है और इसे विभिन्न तरीकों से व्यवस्थित किया जा सकता है—

(क) स्वतंत्र खेल

i. इसमें बच्चे ही यह चुनते हैं कि वे क्या खेलना पसंद करेंगे, कैसे खेलना पसंद करेंगे और कितनी देर तक खेलना पसंद करेंगे। यह पूरी तरह से बच्चों के द्वारा शुरू किया जाता है और वे स्वयं ही इसे निर्देशित भी करते हैं। उदाहरण के लिए, पहेलियों को हल करना, अपने साथियों के साथ भूमिका निर्वहन करना (रोल प्ले), उनके साथ किताब पढ़ना।

ii. शिक्षक की भूमिका अप्रत्यक्ष होती है, उदाहरण के लिए, स्वतंत्र खेल हेतु परिवेश तैयार करना, खेल खेलते बच्चों का अवलोकन करना और जब आवश्यकता हो, तब उनकी मदद करना।

iii. स्वतंत्र खेल बच्चों को सामाजिक और आत्म-नियमन के कौशल विकसित करने में सहायक होता है। उदाहरण के लिए, नेतृत्व करना और अनुसरण करना, असहमतियों को सुलझाना, दूसरों के प्रति संवेदनशील होना, भावनाओं को संभालना और सामग्री को साझा करना।

iv. यद्यपि बच्चे सब कुछ स्वतंत्र खेल के माध्यम से नहीं सीख सकते। वास्तव में अक्सर उन्हें खास तरह की सलाह की जरूरत पड़ती है, तब भी जब वे स्वयं से खोजबीन कर रहे हों।

(ख) मार्गदर्शित खेल

i. इसमें बच्चे गतिविधि का नेतृत्व करते हैं, लेकिन वयस्क सक्रिय रूप से इस खेल गतिविधि में सहायता प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए, यदि बच्चे मिट्टी से खेलना चाहते हैं तो शिक्षक बच्चों को मिट्टी का उपयोग करने, मिट्टी को रोल करने, उससे आकृतियाँ बनाने के बारे में मार्गदर्शन करते हैं। शिक्षक इस अभ्यास में एक विशिष्ट उद्देश्य के साथ जुड़ते हैं जैसे कि बच्चों के सूक्ष्म गत्यात्मक कौशल और कल्पनाशक्ति के विकास के लिए।

ii. विकास के सभी क्षेत्रों से संबंधित कौशलों को बेहतर करने के लिए मार्गदर्शित खेल को सबसे प्रभावी माना जाता है, क्योंकि यह बच्चों और शिक्षकों दोनों के मिलकर सीखने के लिए, शिक्षक को चर्चा में शामिल होने और बच्चों से उनके खेल के बारे में प्रश्न पूछने के अवसर देता है। उदाहरण के लिए, उद्गामी साक्षरता कौशल के विकास के लिए शिक्षक एक शब्दावली गतिविधि करवाता है, जैसे– किसी कहानी से तुकबंदी वाले शब्द ढूँढ़ना, उनके बारे में बात करना और शब्दावली का सक्रिय रूप से उपयोग करने के लिए नए खेलों को करवाना।

iii. बाल्यावस्था में मार्गदर्शित खेल को प्रभावी माना जाता है क्योंकि यह बाल-लक्षित सीखने पर केंद्रित रहता है, जिसमें शिक्षक द्वारा सौम्य और सक्रिय संबलन भी किया जाता है ताकि सीखने के विशिष्ट उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सके।

(ग) निर्देशित खेल

i. यह शिक्षक द्वारा निर्देशित होते हैं। इनमें सोच-समझकर बनाई गई गतिविधियाँ होती हैं जो मज़ेदार और मनोरंजक होती हैं, लेकिन उनके कुछ खास नियम और दिशानिर्देश भी होते हैं। उदाहरण के लिए, शिक्षक बच्चों को एक कहानी बनाने के लिए कह सकते हैं जिसमें एक वाक्य पर हर बच्चे को एक वाक्य कहते हुए कहानी बनानी है और तब इस कहानी को लिखा जा सकता है या फिर बच्चे ज़ोर-ज़ोर से पढ़ने के एक सत्र के बाद कहानी के कार्डों को क्रम में लगा सकते हैं।

ii. बुनियादी स्तर में खास दक्षताओं और सीखने के प्रतिफलों पर ध्यान केंद्रित करने की दृष्टि से संरचित खेल बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। शिक्षक ऐसे खेलों और गतिविधियों, जिनमें कुछ नियम होते हैं, के माध्यम से सीखने के लिए मज़ेदार अनुभवों की योजना बनाते हैं। इनमें शामिल हो सकते हैं— कहानी कहना, कविताओं का उपयोग, निर्देशित बातचीत, भाषा एवं गणित के खेल और निर्देशित चहलकदमी। इस प्रकार के खेल की सीमाएँ शिक्षक द्वारा निर्देशित की जाती हैं जैसे कि सीखने के क्रम को ध्यान में रखा जाए, खेल के नियमों का पालन किया जाए आदि।

खेल आधारित अधिगम को एक ऐसा शिक्षण उपागम कहा जाता है जिसमें वयस्कों के कुछ मार्गदर्शन और संबलन देने वाले सीखने के उद्देश्यों के साथ-साथ हँसी-खेल और बाल केंद्रित तत्व शामिल हैं।

खेल आधारित अधिगम का यह अबाध क्रम, खेल में शिक्षकों की भूमिका के उन विभिन्न स्तरों को रेखांकित करता है जो एक बाल केंद्रित और खेलयुक्त परिवेश में बच्चों के सीखने में सहायक हो सकते हैं। इस अबाध क्रम में बाल निर्देशित और शिक्षक निर्देशित दोनों ही तरह की गतिविधियाँ शामिल हैं। बुनियादी स्तर जिसमें कक्षा 1 और 2 दोनों शामिल हैं, में बच्चों को हर वर्ष सभी तरह के खेल खेलने के बराबर अवसर मिलने चाहिए।

तालिका 1.4 क

	स्वतंत्र खेल	मार्गदर्शित खेल	निर्देशित खेल
भूमिकाएँ	बच्चे द्वारा संचालित बच्चे द्वारा निर्देशित	बच्चे द्वारा संचालित शिक्षक सहायक की भूमिका में	शिक्षक द्वारा संचालित बच्चों की सक्रिय भागीदारी
बच्चे क्या करते हैं?	खेल के सभी पहलूओं को लेकर बच्चे निर्णय लेते हैं जैसे- क्या खेलना है, कैसे खेलना है, कितनी देर तक खेलना है, किसके साथ खेलना है?	बच्चे योजना बनाते हैं और स्वयं ही खेल खेलते हैं, वैसे ही जैसे कि वे स्वतंत्र खेल में करते हैं।	बच्चे ध्यानपूर्वक सुनते हैं, नियमों का अनुसरण करते हैं और शिक्षक द्वारा सोची गई गतिविधियों और खेलों में भागीदारी करते हैं।
शिक्षक क्या करते हैं?	शिक्षक कक्षा में एक प्रेरक खेल-परिवेश बनाते हैं, बच्चों को ध्यानपूर्वक देखते हैं और जब बच्चे मदद के लिए कहते हैं, तो उनकी सहायता करते हैं।	शिक्षक मदद करते हैं और सक्रिय रूप से खेल को आगे बढ़ाने में मदद करते हैं। बच्चे जो अलग-अलग काम कर रहें हैं, उनमें शिक्षक उन्हें मार्गदर्शन देते हैं, उनसे प्रश्न पूछते हैं, बच्चों के साथ खेलते हैं ताकि वे सीखने के विशिष्ट प्रतिफलों को हासिल कर सकें।	शिक्षक सीखने के क्रम में आने वाली दक्षताओं को बढ़ाने के लिए विशेष नियमों को ध्यान में रखते हुए सोच–समझकर गतिविधियों और खेलों की योजना बनाते हैं। भाषा और गणित के खेल, प्रकृति के साथ सैर, गीत, कविताएँ, आदि प्रतिदिन किए जाते हैं।

विभिन्न प्रकार के खेलों के कुछ विशेष उदाहरण नीचे दिए गए हैं—

तालिका 1.4 ब

	खेल का प्रकार	उदाहरण
1.	नाट्य खेल/ काल्पनिक खेल	कहानी के नाटकीकरण के लिए, घोड़े को दर्शाने हेतु एक छोटी छड़ी का उपयोग करें। परिवार के सदस्यों, शिक्षकों और डॉक्टर जैसे अभिनय करें अपने पसंदीदा चरित्र का नाट्य रूपांतर करें, जैसे– झाँसी की रानी, छोटा भीम, शक्तिमान, रानी चेन्नमा।
2.	खोजबीन खेल	जोड़ो, तोड़ो, फिर जोड़ो—वस्तुओं के भागों को अलग-अलग करके उन्हें फिर से जोड़ना (उदाहरण के लिए, घड़ी, टॉयलेट फ्लश, तीन पहिए वाली साइकिल) उपकरणों के साथ प्रयोग (जैसे– चुंबक, प्रिज़्म, आवर्धक लेंस) विभिन्न दालों को मिलाना और फिर अलग छाँटना रेत और पानी के खेल

3.	पर्यावरण/ छोटी दुनिया के खेल	जानवरों, फर्नीचर, किचन सेट, डॉक्टर सेट आदि की लघु आकृतियों का उपयोग करते हुए वास्तविक दुनिया को फिर से बनाना और इसके साथ जुड़ना। प्रकृति की सैर, पेड़ों, पौधों, कीड़ों, पक्षियों, जानवरों, ध्वनियों, रंगों की पहचान करना।
4.	शारीरिक खेल	संगीत, शारीरिक हलचल, नाटकीकरण, आउटडोर खेल, संतुलन, खेलों के माध्यम से शरीर की पड़ताल।
5.	नियमों के साथ खेल	हॉप स्कॉच (कित-कित, स्टापू, लंगड़ी), टैग, साँप-सीढ़ी, चौपड़, लट्टू, बुगुरी, कंचे, कोकला चपकी, पिठ्ठू, पल्लनगुजी।

1.4.3 बच्चों को खेल में शामिल करना

किसी भी तरह के खेल— स्वतंत्र खेल, मार्गदर्शित या निर्देशित आयोजित किए जा सकते हैं और बच्चे इनमें शामिल हो पाएँ, यह कई तरीकों से संभव और सुगम किया जा सकता है (जैसे– गतिविधियाँ, उपकरण, कलाकृतियाँ)। ऐसे कुछ प्रमुख तरीके नीचे बताए गए हैं—

(क) खेल के माध्यम से सीखना— कला, दस्तकारी, संगीत, गति

कलाओं के माध्यम से बच्चे अपने आप को बेहिचक होकर अभिव्यक्त करते हैं, कल्पना करते हैं और अपनी रचनात्मकता को दर्शाते हैं। कलाओं का खुलापन और उनका आनंदित कर देने वाला गुण, आत्म-अभिव्यक्ति, सहज ज्ञान, चिंतन, कल्पना और संप्रेषण को प्रोत्साहित करता है। बच्चों को चित्र बनाने, रंग करने, छापने, कोलाज बनाने, ब्लॉक का उपयोग करते हुए संरचनाएँ बनाने के अवसर देने चाहिए और इस संदर्भ में आए उनके विचारों को सहयोग देना चाहिए। बच्चों को हिलना-डुलना, नाचना, खोजबीन तथा अपने शरीर के साथ तरह-तरह के करतब करना और वाद्ययंत्र बजाना अच्छा लगता है।

(ख) खेल के माध्यम से सीखना— बातचीत, कविताएँ, कहानियाँ

बातचीत, कहानियों और कविताओं के माध्यम से सीखने में बच्चों को आनंद आता है। इससे उन्हें अपनी स्वाभाविक जिज्ञासा का निर्माण करने, गहरे वैचारिक कौशल और मूल्यों को विकसित करने में मदद मिलती है, खासकर जब उन्हें मनन करने, पूर्वानुमान लगाने, प्रश्न करने और परिकल्पना करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। प्रासंगिक प्रश्न पूछना या पहेलियाँ पूछना भी बच्चों के सीखने का संबलन करता है और उन्हें समझ के एक नए स्तर पर चुनौती देता है। बच्चे जो कहते हैं, उसे ध्यान से सुनना, उनके प्रश्नों का अर्थपूर्ण उत्तर देना, उनकी रुचि जगाने के लिए उनसे प्रासंगिक प्रश्न पूछना और उन्हें सोचने के लिए सहजता से प्रेरित करना भी बच्चों को सीखने में मदद करता है।

बातचीत, कविताओं और कहानियों में बच्चों को शामिल करना भी उनके साथ रिश्तों को बेहतर करने का एक शानदार तरीका है।

(ग) खेल के माध्यम से सीखना— सामग्री और खिलौने

खिलौनों के साथ खेलने में बच्चे आनंद लेते हैं और उससे सीखते हैं। खिलौने कोई भी मूर्त वस्तु हो सकते हैं जिन्हें बच्चे जोड़-तोड़ सकते हैं और जिनके साथ बच्चे स्वयं ही सोचते हुए और स्वयं ही आनंददायी और अर्थपूर्ण गतिविधियाँ कर सकते हैं। बहुत से अनुभव और प्रमाण हैं जो यह दर्शाते हैं कि सीखने के लिए बच्चों को महँगे या विशेष खिलौनों की आवश्यकता नहीं होती है। खिलौनों के उपयोग से छोटे बच्चों के गत्यात्मक कौशल, आँख-हाथ के समन्वय, समझ, संज्ञानात्मक लचीलापन, भाषा कौशल, रचनात्मक और विविधतापूर्ण चिंतन क्षमता, सामाजिक दक्षता और इंजीनियरिंग कौशलों में सुधार होता है।

(घ) खेल के माध्यम से सीखना— आस-पास के परिवेश का उपयोग

बच्चे स्वाभाविक रूप से जिज्ञासु होते हैं और उन्हें अपने आस-पास की दुनिया की खोजबीन करने, प्रयोग करने, जोड़-तोड़ करने, कुछ सृजित करने और सीखने के अवसरों की आवश्यकता होती है। बच्चे अपनी इंद्रियों के माध्यम से अपने आस-पास के परिवेश को अन्वेषित करते हैं; वे अपने परिवेश का अवलोकन करते हैं; जो कुछ भी देखते हैं, उसे छूते हैं, पकड़ते हैं, संभालते हैं; ध्वनियों, संगीत और ताल को सुनते हैं और जब प्रतिक्रिया देते हैं और जब कुछ नई तथा असामान्य-सी ध्वनि सुनने को मिलती है, तो उत्साहित भी होते हैं।

जैसे-जैसे बच्चे अपने प्रत्यक्ष अनुभवों के माध्यम से लोगों की, वस्तुओं की और वास्तविक जिंदगी की परिस्थितियों की समझ निर्मित करते हैं, उनकी सोच विकसित होती है। बच्चे अपने स्वयं के अनुभवों, संदर्भों और योग्यताओं के आधार पर अपने स्वयं के विचारों, रुचियों और विश्वासों को कक्षा में लाते हैं।

शिक्षक और परिवार बच्चों को अपने आस-पास की दुनिया की खोजबीन करने, प्रयोग करने और खोजने, तुलना करने, प्रश्न पूछने, सूक्ष्म अवलोकन करने, सोचने और अपने अवलोकनों एवं पूर्वानुमानों के बारे में बात करने के अवसर प्रदान करते हैं। ऐसा करके बच्चों की जिज्ञासाओं को पूरा करने और अधिक खोजबीन करने की दिशा में मदद की जाती है। घर और स्कूल में प्रत्यक्ष अनुभवों के माध्यम से अपनी दुनिया की खोज करने के लिए बच्चों की स्वाभाविक जिज्ञासा को बनाए रखना सीखने की बुनियाद बनाता है।

(ङ) आउटडोर खेल के माध्यम से सीखना

प्रारंभिक वर्षों में बच्चे एक ही जगह पर लंबे समय तक नहीं बैठे रह सकते हैं। वे इधर–उधर जाने की इच्छा रखते हैं। बाहर खेलना उन्हें प्राकृतिक परिवेश की खोजबीन करने, अपनी शारीरिक सीमाओं का परीक्षण करने, स्वयं को व्यक्त करने और आत्मविश्वास विकसित करने का मौका उपलब्ध कराता है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि ऐसा करना उनके समग्र गत्यात्मक कौशल, शारीरिक योग्यता और संतुलन बनाने में मदद करता है। बच्चे जगह का, दौड़ने, कूदने व चढ़ने और एक-दूसरे से साथ धक्का-मुक्की करने की स्वतंत्रता का पूरा आनंद लेते हैं। बाहर खेलना कई बच्चों के लिए आराम करने और शांत होने जैसा है। यह बहुत आनंदमयी है!

निष्कर्ष– इस स्तर पर बच्चे खेल के माध्यम से सीखते हैं जिसमें गतिविधियों की एक विस्तृत शृंखला और प्रोत्साहित करने वाले अनुभव शामिल होते हैं। इन सभी गतिविधियों और अनुभवों को इस तरह से व्यवस्थित करने की आवश्यकता है कि वे सीखने में संलग्न होने के साथ-साथ, भावनात्मक और मानसिक रूप से प्रेरित भी होते रहें।

खेल के इस व्यापक विचार के तहत यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि बच्चे भी अवलोकन करके, चीज़ों को स्वयं करके, सुनकर, पढ़कर, बोलकर, लिखकर, सोचकर और अभ्यास करके सीखते हैं। बच्चे नई अवधारणाओं को सीखते हैं, उनकी व्याख्या करते हैं और इस नए ज्ञान को अपने मौजूदा ज्ञान से जोड़ते हैं। स्पष्ट और व्यवस्थित शिक्षण, कुछ अभ्यास और अनुप्रयोग आवश्यक हैं, खासकर जब वे पढ़ना-लिखना और प्रारंभिक गणित की शुरुआत करते हैं। यद्यपि यह सब बच्चों के सकारात्मक जुड़ाव की बुनियादी जरूरत से संबद्ध होना चाहिए, साथ ही इसमें आनंद और खेल के तत्व भी शामिल होने चाहिए।

यह कक्षा में कैसे होगा, इसके विस्तृत विवरण के लिए अध्याय 4 देखें।

खंड 1.5
बुनियादी स्तर के लिए विद्यालयी शिक्षा का संदर्भ

बच्चों के सीखने और शिक्षा में परिवार, साथी, समुदाय, पर्यावरण के अन्य पहलू और शिक्षा व्यवस्था जिसमें शिक्षक भी सम्मिलित हैं, यह सभी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यद्यपि यह एहसास होना महत्वपूर्ण है कि इन पाँचों में से प्रत्येक की भूमिका और उसका सापेक्ष प्रभाव बच्चों के बढ़ने के साथ-साथ बदलता जाता है। उदाहरण के लिए शैशवावस्था में माँ और निकटतम परिवार की भूमिका की केंद्रीयता स्पष्ट है। बचपन के बाद की अवस्था में साथियों का प्रभाव बढ़ता है और युवा वयस्कों में और भी अधिक बढ़ जाता है।

नई शिक्षा नीति 2020 का 5+3+3+4 पाठ्यचर्या और शिक्षणशास्त्रीय ढाँचा 3 से 18 वर्ष तक के लिए है और यह ऊपर वर्णित पाँच प्रभावी कारकों और सीखने एवं शिक्षा के स्रोतों की भूमिका में होने वाले परिवर्तनों के प्रति सजग है। खासतौर पर बुनियादी स्तर के लिए यह एन.सी.एफ. 3–8 वर्ष की आयु के अनुरूप आवश्यकताओं को बताता है, उदाहरण के लिए इस चरण में शिक्षा का आधार देखभाल होना चाहिए।

1.5.1 परिवार और समुदाय की महत्ता

भारत में अधिकांश बच्चे अपने परिवार के सदस्यों और बाहर के लोगों से घिरे होते हैं। यद्यपि माता-पिता बच्चे के बड़े होने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, अक्सर एक बड़े परिवार में बच्चों के पालन-पोषण का साझा अनुभव होता है जिसमें दादा-दादी, पड़ोसियों और करीबी समुदाय के अन्य लोग शामिल होते हैं। इस अवधि में परिवार के वे संबंध खासतौर पर अधिक प्रभावी होते हैं जो पर्याप्त पोषण, सामाजिक जुड़ाव और भावनात्मक बल सुनिश्चित कर पाते हैं। संतुलित देखभाल करने वाले और जवाबदेह परिवार बच्चों के स्वस्थ विकास और सकारात्मक सीखने में योगदान देते हैं। उदाहरण के लिए यह सुनिश्चित करना कि बच्चे सही प्रकार का खाना खाएँ, बच्चों से उनकी मातृभाषा में बात करना ताकि उनकी शब्दावली बेहतर हो, उनको अच्छे मूल्यों और स्थानीय इतिहास की पारंपरिक कहानियाँ सुनाना।

प्रारंभिक अवस्था में बच्चे का परिवार के साथ संबंध और जुड़ाव, बच्चे के विकास के सबसे शक्तिशाली पुर्वानुमान कारकों में से एक है। परिवार बच्चों के सबसे पहले शिक्षक होते हैं। प्रारंभिक वर्षों में अभिभावक और बच्चे के बीच संबंध और अंतर्क्रिया बच्चों के सीखने और विकास को गहराई से प्रभावित करती है। आरंभिक वर्षों में स्कूली और कक्षा-कक्षीय प्रक्रियाओं को इस अहम कारक का ध्यान रखना चाहिए। बच्चे के विकास और उसके सीखने में स्कूल, परिवार और समुदाय भागीदार हैं।

1.5.2 स्थानीय और भारतीय संदर्भ की केंद्रीयता

अधिकांश बच्चे अपने परिवारों और समुदाय की कहानियों, गीतों, खेलों, भोजन, संस्कारों और त्यौहारों के साथ बड़े होते हैं। साथ-ही-साथ वे बड़े होते हैं, उन स्थानीय अभ्यासों के साथ जो उनके परिवार और समुदाय के दैनिक जीवन के अभिन्न अंग हैं, जैसे– कपड़े पहनने या काम करने या यात्रा करने और रहने के स्थानीय ढंग।

हालाँकि शिक्षण और सीखने के समसामयिक विचार पाठ्यचर्या का हिस्सा होने चाहिए, यह भी अहम है कि बच्चों, उनके परिवारों और उनके समुदायों के विविध अनुभवों को कक्षा में जगह मिले। स्थानीय कहानियाँ, गीत, भोजन, कपड़े, कला, संगीत और नृत्य स्कूल में बच्चों के सीखने के अनुभवों का एक अभिन्न अंग होने चाहिए।

बुनियादी स्तर में, पाठ्यचर्या बच्चों के संदर्भ को ध्यान में रखते हुए बने और इसमें शामिल विषयवस्तु और शिक्षणशास्त्र बच्चों के जीवन के परिचित अनुभवों, यानी वह सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ जिसमें बच्चा बढ़ रहा है, से जुड़े हों। यह बच्चों के साथ गहरे संबंध बनाने में और शिक्षक व बच्चे दोनों ही के पाठ्यचर्या में अपनत्व को भी विकसित करता है।

पूरी पाठ्यचर्या और शिक्षणशास्त्र संस्कृति, परंपरा, विरासत, रीति-रिवाज़, भाषा, दर्शन, भूगोल, प्राचीन और समसामयिक ज्ञान, सामाजिक और वैज्ञानिक आवश्यकता, सीखने के देशज और पारंपरिक तरीकों के लिहाज़ से भारतीय और स्थानीय संदर्भ व लोकाचार से मज़बूती से जुड़ी हो, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि शिक्षा बच्चों के लिए संबद्ध, प्रासंगिक, दिलचस्प और प्रभावी हो। कहानियों, कलाओं, खेलों, उदाहरणों, समस्याओं के मूल में भारतीय और स्थानीय संदर्भ हों। जब सीखने के मूल में यह होगा तो विचार, अमूर्तता और रचनात्मकता वास्तव में सबसे अच्छी तरह से विकसित होगी।

विशेष रूप से सभी भाषाओं को कक्षा में जगह दी जाए और उनकी सराहना की जाए। बुनियादी स्तर में बच्चों को घरेलू भाषा में अभिव्यक्त करने, अंतर्क्रिया करने और उसके माध्यम से सीखने के लिए प्रोत्साहित किया जाए। घरेलू भाषा और अन्य भाषाओं का उपयोग करते हुए विभिन्न संदर्भों में सुनने और बोलने के अवसर (घरेलू या परिचित भाषा को एक संबलन की तरह मानते हुए) बच्चों को मौखिक अभिव्यक्ति सीखने में बहुत मदद करते हैं। बच्चों में अच्छी तरह से भाषायी, संज्ञानात्मक व सामाजिक-भावनात्मक कौशल विकसित करने के लिए आवश्यक है कि उन्हें अपने विचारों, भावों के बारे में चिंतन करने और उन्हें सोच-समझकर शिक्षक, अभिभावक और अपने साथियों के समक्ष व्यक्त कर पाने के लिए पर्याप्त समय और अवसर दिए जाएँ। कहानियाँ, कविताएँ, तुकबंदी, गीत, खेल, नाटक आदि, विशेष रूप से जो स्थानीय और भारतीय संदर्भ के हैं, भाषा सीखने को आनंदमयी, रोमांचक, प्रासंगिक, प्रभावी और साथ-ही-साथ सांस्कृतिक रूप से संतोषप्रद बनाते हैं।

(कक्षा में बहुभाषावाद और भाषा प्रवीणता तथा साक्षरता विकसित करते हुए भी घरेलू भाषा के उचित और निरंतर उपयोग को सुनिश्चित करने हेतु अधिक विस्तृत तर्क और रणनीतियों के लिए, कृपया अध्याय 3, अध्याय 4 और खंड 4.5 देखें।)

1.5.3 संस्थागत विविधता — पृष्ठभूमि

संस्थागत व्यवस्थाएँ, माता-पिता, परिवारों और समुदाय के साथ घनिष्ठ साझेदारी करते हुए बच्चों के समग्र विकास के लिए एक व्यवस्थित दृष्टिकोण को संभव बनाती है। वे पारंपरिक ज्ञान, अनुसंधान आधारित ज्ञान, व्यावहारिक अनुभव और स्थानीय संदर्भ को एक साथ लाती हैं ताकि बच्चों के आजीवन सीखने के लिए मज़बूत जड़ों को पोषित करने हेतु सीखने के अवसरों को डिज़ाइन और कार्यान्वित किया जा सके।

वर्तमान में, बुनियादी स्तर में बच्चे अलग-अलग प्रकार के संस्थागत परिवेश में सीखते हैं।

(क) 3 से 6 वर्ष की आयु के बच्चे आँगनवाड़ी, बालवाटिका, पूर्व-प्राथमिक या फिर एक ऐसे प्री-स्कूल में हो सकते हैं जो किसी बड़े स्कूल का हिस्सा हो और जिसमें कक्षा 1 और 2 हों।

(ख) 6 से 8 वर्ष की आयु के बच्चे (कक्षा 1 और 2) ऐसे स्कूल में हो सकते हैं जिनमें केवल कक्षा 1 से आगे की कक्षाएँ हों या ऐसे स्कूल में जिसमें पूर्व-प्राथमिक से आगे की कक्षाएँ हों।

इनमें से हर एक परिवेश में मिलने वाली आधारभूत संरचना और सीखने के संसाधन अलग-अलग होंगे। इन सभी संस्थागत परिवेशों में मिलने वाले शिक्षक भी अलग होंगे। उनकी नियुक्ति भी अलग-अलग प्रक्रियाओं से हुई होगी; उनकी योग्यताएँ अलग होंगी और उनके सेवाकालीन व्यावसायिक विकास की प्रक्रिया भी अलग होगी। कुछ व्यवस्थाओं में उनकी जिम्मेदारियाँ भी अलग-अलग होंगी। यद्यपि बुनियादी स्तर की संपूर्ण पाठ्यचर्या और शिक्षणशास्त्र का निर्माण सभी पाँच वर्षों, जो 3 साल से शुरू होकर 8 साल तक है, के लिए निरंतरता में किया जाना चाहिए, पाठ्यचर्या डिज़ाइन की बारीकियों के बारे में सोचते समय विभिन्न संस्थागत संरचनाओं को भी ध्यान में रखा जाना चाहिए।

इस प्रकार इस एन.सी.एफ. को बुनियादी स्तर के लिए सभी संस्थागत व्यवस्थाओं में लागू करने का उद्देश्य है।

अध्याय 2

लक्ष्य, पाठ्यचर्या के उद्देश्य, दक्षताएँ और सीखने के प्रतिफल

यह अध्याय राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के बुनियादी स्तर के लिए अधिगम-मानकों का वर्णन और चर्चा करता है। अधिगम के ये मानक राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा परिकल्पित शिक्षा के लक्ष्यों से लिए गए हैं।

खंड 2.1 लक्ष्यों, पाठ्यचर्या के उद्देश्यों, दक्षताओं और सीखने के प्रतिफलों को परिभाषित करता है, जिन्हें एक साथ अधिगम के मानकों के रूप में संदर्भित किया जाता है। उद्देश्यों, दक्षताओं और प्रतिफलों के बीच स्पष्टता और अंतर सभी हितधारकों के लिए महत्वपूर्ण हैं और यह खंड उस स्पष्टता को प्रदान करने का प्रयास करता है।

खंड 2.2 लक्ष्यों से सीखने के प्रतिफलों तक व्युत्पत्ति की प्रक्रियाओं और इन प्रक्रियाओं में विभिन्न हितधारकों की भूमिका का वर्णन करता है।

खंड 2.3 पाठ्यचर्या के उद्देश्यों को स्पष्ट करता है। खंड 2.4 प्रत्येक पाठ्यचर्या के उद्देश्यों के लिए दक्षताओं की रूपरेखा तैयार करता है और खंड 2.5 बुनियादी स्तर पर इनमें से कुछ दक्षताओं के लिए सीखने के प्रतिफलों के कुछ उदाहरण देता है।

सभी दक्षताओं के लिए उदाहरणात्मक सीखने के प्रतिफलों का एक पूरा सेट अनुलग्नक 1 में देखा जा सकता है।

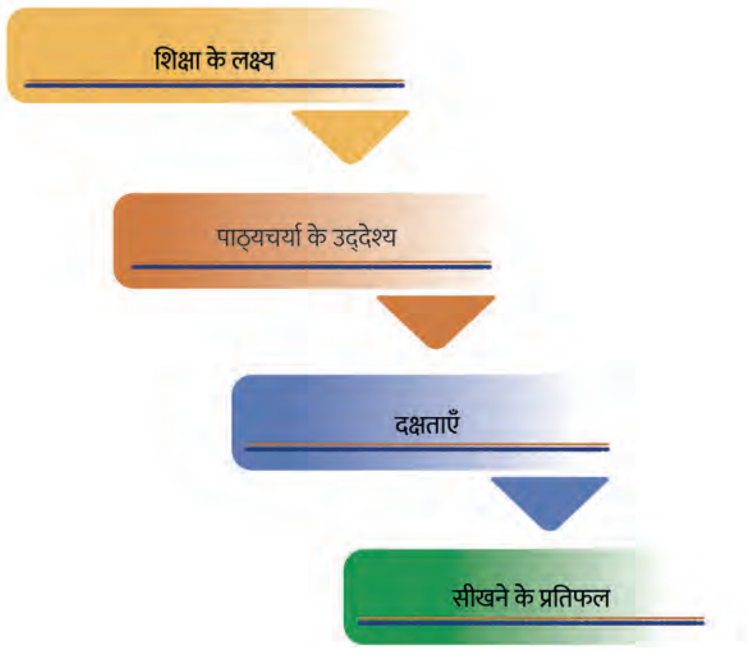

खंड 2.1
परिभाषाएँ

यह खंड इस अध्याय में प्रयुक्त कुछ प्रमुख शब्दों को परिभाषित करता है—

(क) **शिक्षा के लक्ष्य–** लक्ष्य शैक्षिक दृष्टि के विवरण हैं जो शैक्षिक प्रणालियों के सभी सुविचारित प्रयासों— पाठ्यचर्या विकास, संस्थागत व्यवस्थाएँ, वित्त और वित्त पोषण, लोगों की क्षमता आदि को व्यापक दिशा देते हैं। शिक्षा के लक्ष्य आमतौर पर शिक्षा नीति दस्तावेज़ों में व्यक्त किए जाते हैं। उदाहरण के लिए, एन.ई.पी. 2020 बताती है, "शिक्षा प्रणाली का लक्ष्य एक अच्छे मनुष्य का विकास करना है, जो विवेकशील हो, अपने विचार और कर्म में तर्कसम्मत हो, जिसमें करुणा और समानुभूति, साहस और लचीलापन, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और रचनात्मक कल्पनाशक्ति के साथ ही ठोस नैतिक आधार और मूल्य हो। इसका लक्ष्य हमारे संविधान द्वारा परिकल्पित न्यायसम्मत, समावेशी और बहुलतावादी समाज के निर्माण के लिए एक समर्पित, उत्पादक और योगदान करने वाले नागरिकों को तैयार करना है।"

(ख) **पाठ्यचर्या के उद्देश्य–** पाठ्यचर्या के उद्देश्य ऐसे वक्तव्य हैं जो पाठ्यचर्या विकास और कार्यान्वयन को दिशा देते हैं। वे लक्ष्यों से प्राप्त होते हैं और शिक्षा में किसी एक स्तर के लिए विशिष्ट होते हैं (उदाहरण के लिए, बुनियादी स्तर)। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा जो सभी पाठ्यचर्याओं के विकास का मार्गदर्शन करती है, पाठ्यचर्या के उद्देश्य बताती है। उदाहरण के लिए, इस एन.सी.एफ. में "बच्चे अपनी दिन-प्रतिदिन की बातचीत के लिए दो भाषाओं में प्रभावी संप्रेषण कौशल विकसित करते हैं" बुनियादी स्तर के लिए एक पाठ्यचर्या का उद्देश्य है।

(ग) **दक्षताएँ–** दक्षताएँ सीखने की वे उपलब्धियाँ हैं जो व्यवहार में आती हैं और जिनका व्यवस्थित रूप से आकलन किया जा सकता है। ये दक्षताएँ पाठ्यचर्या के उद्देश्यों से प्राप्त होती हैं और इनके एक स्तर के अंत तक प्राप्त होने की अपेक्षा होती है। दक्षताओं को पाठ्यचर्या की रूपरेखाओं में व्यक्त किया जाता है। यद्यपि पाठ्यचर्या विकसित करने वाले उन विशिष्ट संदर्भों को संबोधित करने के लिए दक्षताओं को अनुकूलित और संशोधित कर सकते हैं जिसके लिए पाठ्यचर्या विकसित की जा रही है। इस एन.सी.एफ. में उपरोक्त पाठ्यचर्या के उद्देश्य के लिए तय की गई कुछ दक्षताओं के उदाहरण निम्नलिखित हैं— "बच्चा धाराप्रवाह बातचीत करता है और एक अर्थपूर्ण बातचीत कर सकता है" तथा "एक जटिल कार्य के लिए मौखिक निर्देशों को समझता है और दूसरों को उसी कार्य के लिए स्पष्ट मौखिक निर्देश देता है।"

(घ) **सीखने के प्रतिफल–** दक्षताएँ एक निश्चित अवधि में प्राप्त की जाती हैं। इसलिए सीखने की उपलब्धियों के अंतरिम चिह्नों की आवश्यकता होती है ताकि शिक्षक सीखने का निरीक्षण और समय-समय पर उसका अनुसरण करते रहें और लगातार शिक्षार्थियों की ज़रूरतों पर प्रतिक्रिया कर सकें। ये अंतरिम चिह्न सीखने के प्रतिफल हैं। इस प्रकार सीखने के प्रतिफल सीखने के छोटे महत्वपूर्ण बिंदु हैं और आमतौर पर एक ऐसे क्रम में प्रगति करते हैं जिससे दक्षता प्राप्त होती है। सीखने के प्रतिफल विशिष्ट दक्षताओं को प्राप्त करने के लिए शिक्षकों को अपनी विषयवस्तु, शिक्षण प्रक्रिया और आकलन की

योजना बनाने में सक्षम बनाते हैं। पाठ्यचर्या विकसित करने वालों और शिक्षकों को दक्षताओं के साथ संबंध बनाए रखते हुए, सीखने के प्रतिफलों को उनके कक्षा संदर्भों के लिए उपयुक्त रूप में परिभाषित करने की स्वायत्तता होनी चाहिए।

निम्नलिखित तालिका बुनियादी स्तर हेतु निर्धारित दक्षता—"(बच्चा) धाराप्रवाह बातचीत करता है और एक अर्थपूर्ण बातचीत कर सकता है" के लिए तय किए गए सीखने के प्रतिफलों का एक उदाहरण है—

तालिका 2.1 क

	A	B	C	D	E
	दक्षता— (बच्चे) धाराप्रवाह बातचीत करते हैं और एक अर्थपूर्ण बातचीत कर सकते हैं				
	आयु 3 – 8 वर्ष				
1	ध्यान से सुनते हैं और आस–पास के परिचित लोगों के साथ छोटी बातचीत करते हैं।	स्कूल की विभिन्न जगहों पर साथियों और शिक्षकों के साथ दैनिक जीवन में बातचीत की पहल करते हैं।	घटनाओं, कहानियों या अपनी ज़रूरतों के आधार पर बातचीत में शामिल होते हैं और सवाल पूछते हैं।	बातचीत में शामिल होते हैं, बोलने के लिए अपनी बारी का इंतज़ार करते हैं और दूसरों को बोलने देते हैं।	कई बार हुई बातचीत के सूत्र को बनाए रखते हैं।
2	छोटे अर्थपूर्ण वाक्यों के माध्यम से अपनी आवश्यकताओं और भावनाओं को व्यक्त करते हैं।	सरल वाक्यों में दैनिक अनुभवों का वर्णन करते हैं और क्या, कब, कैसे, किस आदि शब्दों का उपयोग करते हुए सरल प्रश्न पूछते हैं।	विस्तृत विवरणों में दैनिक अनुभवों का वर्णन करते हैं और 'क्यों' शब्द का उपयोग करते हुए प्रश्न पूछते हैं।	गैर-काल्पनिक विषयवस्तु के साथ जुड़ते हैं, उसे जोर से पढ़ते या कक्षा में चर्चा करते हैं, अपने स्वयं के अनुभवों से ज्ञान को जोड़ने में सक्षम होते हैं और इसके बारे में बात करते हैं।	किसी विषय पर चर्चा में शामिल होते हैं और प्रश्नों को उठाते हैं और उनका उत्तर देते हैं।

खंड 2.2
लक्ष्य से सीखने के प्रतिफलों तक

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा स्पष्ट अधो-प्रवाह (फ्लो डॉउन) के महत्व पर बल देती है, जो शिक्षा के लक्ष्यों से, पाठ्यचर्या के उद्देश्यों से, दक्षताओं से, सीखने के प्रतिफलों तक होना चाहिए। उच्च स्तर पर उद्देश्यों की पूर्ण प्राप्ति सुनिश्चित करते हुए प्रत्येक सेट को निकटतम उच्च स्तर से निकलना चाहिए। यह शिक्षा को व्यवहार में उपयोग करने योग्य बनाने के लिए अपेक्षाकृत अमूर्त और समेकित धारणाओं को और अधिक ठोस घटकों में 'तोड़ने और परिवर्तित' करने की प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया को अन्य विचारों सहित, जिन्हें इस अधो-प्रवाह में शामिल किया जाना चाहिए, इस अध्याय में वर्णित किया गया है। शिक्षा के लक्ष्यों से लेकर सीखने के प्रतिफलों तक यह एक सख्त अधो-प्रवाह से उत्पन्न होने वाली केवल ऐसी सुसंबद्धता, व्याप्तता और संबद्धता है, जिसे हम पाठ्यक्रम, विषयवस्तु, शिक्षणशास्त्रीय प्रक्रियाओं, संस्थागत संस्कृति और वह बहुत कुछ, जिसे हम शिक्षा से चाहते हैं, के साथ संरेखित कर सकते हैं। यह केवल इसलिए है क्योंकि शिक्षक और संस्थानों के दैनिक जीवन में बहुत विशिष्ट, अवलोकन योग्य और अल्पकालिक सीखने के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए प्रयास किए जाते हैं जिन्हें सीखने के प्रतिफलों के रूप में चिह्नित किया जाता है; जो वर्णित 'अधो-प्रवाह' की प्रक्रिया से उत्पन्न होने पर, दक्षताओं की प्राप्ति की दिशा में शैक्षिक प्रयासों के पथ का मार्गदर्शन करते हैं, बदले में पाठ्यचर्या के उद्देश्यों में जमा होते हैं और जो एक साथ शिक्षा के प्रासंगिक लक्ष्यों को पूरा करेंगे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने शिक्षा के लक्ष्यों को स्पष्ट किया है। इस एन.सी.एफ. ने अन्य प्रासंगिक विचारों के साथ एन.ई.पी. के लक्ष्यों से पाठ्यचर्या के उद्देश्य तैयार किए हैं। इन पाठ्यचर्या के उद्देश्यों से दक्षताओं को और उन दक्षताओं से सीखने के प्रतिफलों को लिया गया है।यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि खंड 2.4 में दक्षताएँ और खंड 2.5 और अनुलग्नक 1 में सीखने के प्रतिफलों के उदाहरण हैं।

पाठ्यचर्या विकासकर्ताओं को एन.सी.एफ. में दक्षताओं के समूह पर सावधानीपूर्वक विचार करना चाहिए और जहाँ पर यदि आवश्यक हो, वहाँ प्रासंगिक परिवर्तन करने के बाद इनका उपयोग करना चाहिए। संदर्भों (और समय) में दक्षताओं की सापेक्ष स्थिरता और क्रॉस-कटिंग प्रासंगिकता को देखते हुए, एन.सी.एफ. में व्यक्त दक्षताओं में बदलाव की आवश्यकताएँ कम हो सकती हैं; यद्यपि इस मामले के निर्णयों पर पाठ्यचर्या विकासकर्ताओं द्वारा सावधानीपूर्वक विचार किया जाना चाहिए।

सीखने के प्रतिफल कहीं अधिक प्रासंगिक हैं और इसलिए पाठ्यचर्या या पाठ्यक्रम को विकसित करने के लिए, समुचित ध्यान देने और संदर्भीकरण की आवश्यकता होगी। विकासकर्ता एन.सी.एफ. में व्यक्त समूहों का उपयोग कर सकते हैं, लेकिन यह उचित विचार करने के बाद किया जाना चाहिए और ज़्यादा प्रासंगिक समूहों का उपयोग करने में कोई झिझक नहीं होनी चाहिए।

इस प्रकार, राज्यों और उनके संबंधित संस्थानों और पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम के विकास के लिए जिम्मेदार अन्य संस्थानों को अपने उपयोग के लिए अधिगम के मानकों के एक संपूर्ण सेट पर पहुँचने के लिए इस तरह के अधो-प्रवाह का एक कठोर अभ्यास करने की आवश्यकता होगी।

2.2.1 लक्ष्य से पाठ्यचर्या के उद्देश्यों तक

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा परिकल्पित शिक्षा के लक्ष्य और दूरदृष्टि (विज़न), बुनियादी स्तर के लिए अपेक्षित शैक्षिक उपलब्धियों को दिशा देते हैं। एन.ई.पी. 2020 के निम्न तीन विशिष्ट स्रोत एन.सी.एफ. के बुनियादी स्तर हेतु पाठ्यचर्या के उद्देश्यों तक पहुँचने के लिए हैं—

(क) शिक्षा के व्यापक लक्ष्य, जैसा कि स्पष्ट किया गया है

(ख) विकास के कार्यक्षेत्र, जो कि अन्वेषण की भारतीय परंपरा और आधुनिक विज्ञान दोनों में कल्पित हैं

(ग) बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान पर फोकस

एन.ई.पी. 2020 ने शिक्षा के लक्ष्य स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किए हैं और ये इस एन.सी.एफ. के अध्याय 1 के खंड 1.3 में उद्धृत किए गए हैं। शिक्षा के ये लक्ष्य स्कूली शिक्षा और उच्च शिक्षा के सभी स्तरों के लिए लागू होते हैं और बुनियादी स्तर को दिशा देते हैं और उस पर ध्यान केंद्रित करते हैं। वे इस स्तर के लिए पाठ्यचर्या के उद्देश्यों तक पहुँचने के लिए पहले महत्वपूर्ण स्रोत हैं।

बुनियादी स्तर 3 से 8 साल की आयु के बच्चों के लिए है। भारत और अन्य संस्कृतियों में विकास के विभिन्न क्षेत्रों में अन्वेषण यानी पूछताछ की एक लंबी परंपरा रही है जो छोटे बच्चों में देखी जाती है। यह स्वाभाविक और वांछनीय है।

तैत्तिरीय उपनिषद् में पंचकोश का वर्णन मानव के विकास के विभिन्न कार्यक्षेत्रों की प्रारंभिक अभिव्यक्तियों में से एक है। ये वर्णन विकासात्मक जीवविज्ञान, मनोविज्ञान और संज्ञानात्मक तंत्रिका विज्ञान के माध्यम से उभरी अधिक आधुनिक समझ के साथ-साथ प्रासंगिक बने हुए हैं।

शारीरिक विकास या अन्नमय कोश और प्राणमय कोश को एक साथ जोड़कर देखा जाता है। इसमें सभी संवेदी अनुभवों के सक्रिय जुड़ाव के माध्यम से शारीरिक जागरूकता और शारीरिक सक्रियता से संबद्ध सीखना शामिल है।

भावनात्मक और आध्यात्मिक विकास या मनोमय कोश में हमारी भावनाओं के प्रति जागरूक होना और इन्हें कुशलता से नियंत्रित करना शामिल है। इस प्रकार सामाजिक-भावनात्मक और नैतिक विकास का कार्यक्षेत्र भारतीय परंपराओं और वर्तमान शोध दोनों से विकास के एक महत्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में उभरता है।

मानव-अनुभव के संज्ञानात्मक और जागरूकता संबंधी पहलुओं के साथ अर्थपूर्ण रूप से जुड़ने के लिए बुद्धि के विकास या विज्ञानमय कोश पर बल दिया जाता है। संज्ञानात्मक विकास का क्षेत्र विकास के इस पहलू को समा लेता है।

आनंदमय कोश या ज्ञानातीत/इंद्रियातीत अवस्था की अनुभूति, इस आयु वर्ग के लिए कला और संस्कृति के माध्यम से संबोधित की जाती है। इस प्रकार सौंदर्य बोध और सांस्कृतिक विकास के क्षेत्र को शामिल करना, शैक्षिक अनुभव को समग्र और पूर्ण बनाता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने 'सीखने के लिए तत्काल और आवश्यक शर्त' के रूप में बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान पर बल दिया है। भाषा और साक्षरता विकास के कार्यक्षेत्र के माध्यम से बुनियादी साक्षरता पर और संज्ञानात्मक विकास के कार्यक्षेत्र के माध्यम से बुनियादी संख्या ज्ञान पर विशेष ध्यान दिया गया है।

अंत में, बुनियादी स्तर को औपचारिक स्कूली शिक्षा की नींव स्थापित करने के रूप में भी देखा जाता है। सीखने की सकारात्मक आदतों का विकास, जो औपचारिक स्कूली परिवेश के लिए अधिक उपयुक्त है, इस स्तर के लिए एक और महत्वपूर्ण पाठ्यचर्या का उद्देश्य बन जाता है।

इस प्रकार एन.ई.पी. 2020 के परिकल्पना एवं विवरण और विकास के कार्यक्षेत्रों पर समान ध्यान देकर बुनियादी स्तर के लिए पाठ्यचर्या के उद्देश्य प्राप्त किए गए हैं।

2.2.2 पाठ्यचर्या के उद्देश्यों से दक्षताओं तक

बुनियादी स्तर के लिए दक्षताओं की सूची पर पहुँचने के चार मुख्य स्रोत हैं—

(क) पाठ्यचर्या के उद्देश्य

(ख) बुनियादी स्तर के लिए उपयुक्त वर्तमान शोध साहित्य

(ग) देश के विभिन्न शैक्षिक प्रयासों का अनुभव

(घ) हमारा संदर्भ, जिसमें संसाधन उपलब्धता, समय उपलब्धता, संस्थागत और शिक्षक क्षमताएँ शामिल हैं।

स्कूली शिक्षा में सभी हितधारकों को उन दक्षताओं की स्पष्ट दृश्यता होनी चाहिए जिन्हें हासिल करना अपेक्षित है। बुनियादी स्तर में प्रत्येक बच्चे के लिए इन दक्षताओं की प्राप्ति की प्रगति पर नज़र रखने से स्कूल प्रणाली को यह सुनिश्चित करने में मदद मिलेगी कि सभी बच्चों को एन.सी.एफ. के पाठ्यचर्या उद्देश्यों तक पहुँचने के लिए सीखने के उपयुक्त अवसर प्राप्त हों।

2.2.3 दक्षताओं से सीखने के प्रतिफलों तक

सीखने के प्रतिफल दक्षताओं की प्राप्ति की दिशा में सीखने की उपलब्धि के अंतरिम चिह्नक हैं। उन्हें सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों की बारीकियों, उपलब्ध सामग्री और संसाधनों और कक्षा की आकस्मिकताओं के आधार पर परिभाषित किया गया है। हमारी शिक्षा प्रणाली के संदर्भ की व्यापक समझ के आधार पर, इस एन.सी.एफ. में सीखने के प्रतिफलों का एक सेट उदाहरण के तौर पर परिभाषित किया गया है।

इन सीखने के प्रतिफलों को शिक्षकों और स्कूल के प्रतिनिधियों के लिए योग्य बनाने वाले दिशानिर्देशों के रूप में देखा जाना चाहिए, न कि उन पर बाध्यता के रूप में। उन्हें अपने संदर्भों के आधार पर सीखने के प्रतिफलों की फिर से कल्पना करने की स्वायत्तता है।

खंड 2.3
पाठ्यचर्या के उद्देश्य

इस खंड में बुनियादी स्तर के लिए पाठ्यचर्या के उद्देश्यों को रेखांकित किया गया है। इन पाठ्यचर्या के उद्देश्यों की समय-समय पर समीक्षा की जानी चाहिए, जिन्हें राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के कार्यान्वयन के अनुभव तथा राष्ट्रीय आकांक्षाओं में विकास और परिवर्तन द्वारा जाना जा सकता है।

पाठ्यचर्या के उद्देश्यों को C.G.-1, C.G.-2 और इसी तरह आगे क्रमांकित किया गया है—

कार्यक्षेत्र	पाठ्यचर्या के उद्देश्य	
शारीरिक विकास	C.G.-1	बच्चे ऐसी आदतें विकसित करते हैं जो उन्हें स्वस्थ और सुरक्षित रखती हैं।
	C.G.-2	बच्चे संवेदी अनुभूतियों में कुशाग्रता विकसित करते हैं।
	C.G.-3	बच्चे एक स्वस्थ और लचीले शरीर का विकास करते हैं।
सामाजिक–भावनात्मक और नैतिक विकास	C.G.-4	बच्चे भावनात्मक बुद्धिमत्ता, अर्थात अपनी भावनाओं को समझने व प्रबंधन करने और सामाजिक मानदंडों के प्रति सकारात्मक रूप से प्रतिक्रिया देने की क्षमता विकसित करते हैं।
	C.G.-5	बच्चे उत्पादक कार्य और 'सेवा' के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करते हैं।
	C.G.-6	बच्चे अपने आस-पास के प्राकृतिक परिवेश के प्रति सकारात्मक सोच विकसित करते हैं।
संज्ञानात्मक विकास	C.G.-7	बच्चे अवलोकन और तार्किक चिंतन के माध्यम से दुनिया को समझते हैं।
	C.G.-8	बच्चे मात्राओं, आकृतियों और मापों के माध्यम से गणितीय समझ और दुनिया को पहचानने की क्षमता विकसित करते हैं।
भाषा और साक्षरता विकास	C.G.-9	बच्चे दो भाषाओं में रोज़मर्रा की बातचीत के लिए प्रभावी संप्रेषण कौशल विकसित करते हैं।
	C.G.-10	बच्चे भाषा 1 को पढ़ने और लिखने में धाराप्रवाहिता विकसित करते हैं।
	C.G.-11	बच्चे भाषा 2 (एल 2) में पढ़ना और लिखना शुरू करते हैं।
सौंदर्यबोध और सांस्कृतिक विकास	C.G.-12	बच्चे दृश्य और प्रदर्शन कलाओं में क्षमताएँ और संवेदनशीलता विकसित करते हैं और कला के माध्यम से अपनी भावनाओं को अर्थपूर्ण और आनंदपूर्ण तरीके से अभिव्यक्त करते हैं।

विकास के कार्यक्षेत्रों पर आधारित उपरोक्त पाठ्यचर्या के उद्देश्यों के अलावा, सीखने की सकारात्मक आदत विकसित करना, बुनियादी स्तर के लिए एक और प्रासंगिक उद्देश्य है।

	C.G.-13	बच्चे सीखने की आदतें विकसित करते हैं जो उन्हें स्कूली कक्षाओं जैसे सीखने के औपचारिक परिवेश में सक्रिय रूप से संलग्न रहने में मदद करती हैं।

बॉक्स 2.3 क

नैतिकता, मूल्य और स्वभाव

विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण, उन्हें एक अच्छे व्यक्ति के रूप में विकसित होने, सार्थक और खुशहाल जीवन जीने तथा समाज में सकारात्मक योगदान देने के लिए स्कूल के प्रारंभिक वर्षों में और बाद के वर्षों के पाठ्यक्रम में आचरण संबंधी बातों को शामिल करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस प्रकार मूलभूत नैतिक तर्क को पूरे स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए। बच्चों को कम उम्र से ही 'जो सही है, उसे करने' के महत्व के बारे में सोचने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए और नैतिक निर्णय लेने के लिए एक तार्किक आधार दिया जाना चाहिए, जैसे– 'क्या इससे किसी को चोट पहुँचेगी? क्या ऐसा करना अच्छी बात है?' ये ऐसे प्रश्न हैं जिन्हें बच्चों को प्रतिदिन कक्षा की प्रक्रिया के एक हिस्से के रूप में निर्णय लेने से पहले स्वयं से पूछने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। शिक्षा के अगले स्तरों में, इस तार्किक आधार को व्यापक विषयों (जैसे– सहिष्णुता, अहिंसा, ईमानदारी, समानता, समानुभूति आदि) के साथ विस्तारित किया जाएगा ताकि बच्चों को अपने जीवन में नैतिक मूल्यों को अपनाने, कई परिप्रेक्ष्यों से किसी नैतिक मुद्दे के बारे में अपने दृष्टिकोण या तर्क बनाने और सभी दैनिक गतिविधियों में आचारगत और नैतिक व्यवहारों का उपयोग करने में सक्षम बनाया जा सके।

पाठ्यक्रम में आचारगत तथा नैतिक जागरूकता और तर्क को शामिल करने को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष तरीकों से बढ़ावा दिया जा सकता है। प्रत्यक्ष विधि में आचारगत तथा नैतिक जागरूकता और तर्क को संबोधित करने के लिए विशेष रूप से डिज़ाइन की गई कक्षा की गतिविधियाँ, चर्चाएँ और पाठ हो सकते हैं। अप्रत्यक्ष पद्धति में भाषाओं और साहित्य की सामग्री में विशेष रूप से आचारगत और नैतिक सिद्धांतों और देशभक्ति, बलिदान, अहिंसा, सत्य, ईमानदारी, शांति, न्यायपरायणता या सदाचार, क्षमा, सहिष्णुता, समानुभूति, सहायता, शिष्टाचार, स्वच्छता, समानता और बंधुत्व जैसे मूल्यों को संबोधित करने के उद्देश्य से चर्चा शामिल हो सकती है।

मूलभूत नैतिक तर्क के परिणाम के रूप में सेवा, अहिंसा, स्वच्छता, सत्य, निष्काम कर्म, ईमानदारी से कड़ी मेहनत, महिलाओं का सम्मान, बड़ों का सम्मान, सभी लोगों और उनकी अंतर्निहित क्षमताओं का सम्मान, चाहे वे किसी भी पृष्ठभूमि से हों और पर्यावरण का सम्मान जैसे पारंपरिक भारतीय मूल्यों को रोपित किया जाएगा। वैज्ञानिक रूप से कहा जाए तो ये गुण समाज और व्यक्ति दोनों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

सभी स्तरों पर शिक्षा की प्रक्रिया और सामग्री का उद्देश्य सभी विद्यार्थियों के बीच संवैधानिक मूल्यों और उनके अभ्यास के लिए क्षमताओं को विकसित करना होगा। ये लक्ष्य पाठ्यचर्या के साथ-साथ प्रत्येक स्कूल की समग्र संस्कृति और पर्यावरण को प्रभावित करेंगे। इनमें से कुछ संवैधानिक मूल्य हैं— लोकतांत्रिक दृष्टिकोण तथा स्वाधीनता और स्वतंत्रता के प्रति प्रतिबद्धता; समानता, न्याय और निष्पक्षता; विविधता, बहुलता और समावेशन को अपनाना; मानवता और भाईचारे की भावना; सामाजिक जिम्मेदारी और सेवा की भावना; सत्यनिष्ठा और ईमानदारी की नैतिकता; वैज्ञानिक दृष्टिकोण और तर्कसम्मता और

सार्वजनिक संवाद के प्रति प्रतिबद्धता; शांति; संवैधानिक साधनों के माध्यम से सामाजिक कार्य; राष्ट्र की एकता और अखंडता और एक राष्ट्र के रूप में निरंतर सुधार करने की भावना के साथ भारत से सच्चा जुड़ाव और गौरवान्वयन।

बड़ी संख्या में वैज्ञानिक रूप से तुलनात्मक और अधोमुखी अध्ययनों के माध्यम से वर्तमान में किए गए शोध से पता चलता है कि स्कूलों में सामाजिक-भावनात्मक अधिगम (एस.ई.एल.) का प्रारंभिक परिचय संज्ञानात्मक और भावनात्मक लचीलेपन में सुधार ला सकता है और इससे रचनात्मक सामाजिक जुड़ाव को बढ़ावा मिल सकता है। सामाजिक-भावनात्मक अधिगम को रोपित करने वाली गतिविधियों के उदाहरणों में टीमों या समूहों में कार्य करना, अलग-अलग आयु-वर्गों के लिए खेलों का आयोजन, अभिनयात्मक गतिविधियाँ और समस्या समाधान, दयालुता की कहानियों पर चर्चा करना और सोचकर लिखना, बोलना और कला शामिल हैं। सामाजिक-भावनात्मक कौशल में मुखर प्रशिक्षण अच्छी तरह से ध्यान केंद्रित करना और भावनात्मक एवं संज्ञानात्मक विनियमन सुनिश्चित करता है जो न केवल कल्याण, दूसरों के प्रति समानुभूति और कम तनाव के लिए आवश्यक है, अपितु शैक्षणिक सफलता में भी वृद्धि करता है।

साहित्य और भारत के लोगों के प्रेरक उदाहरणों को पूरे पाठ्यक्रम के दौरान प्रासंगिकता के तहत शामिल किया जाना चाहिए। भारत में लोगों और कहानियों का एक लंबा इतिहास और परंपरा है जो हमें ऊपर बताए गए कई मूल मूल्यों और सामाजिक-भावनात्मक कौशलों के बारे में खूबसूरती से सिखाती हैं। बच्चों को *पंचतंत्र, जातक, हितोपदेश* की मूल कहानियों और भारतीय परंपरा की अन्य आनंददायी दंतकथाओं और प्रेरक कहानियों को पढ़ने और उनसे सीखने का अवसर दिया जाना चाहिए। भारतीय संविधान और समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व के मूल्यों जिन्हें संविधान अपनाता है, पर चर्चा कक्षा-कक्षीय प्रक्रिया का एक हिस्सा होना चाहिए। इतिहास के महान भारतीय नायकों के जीवन की कहानियाँ भी बच्चों में बुनियादी मूल्यों को प्रेरित करने और उनका परिचय देने का एक शानदार तरीका है।

एन.सी.एफ. के बुनियादी स्तर के लिए नैतिकता, मूल्यों और स्वभाव की सीखने की अपेक्षाओं को विषयवस्तु के चयन, शैक्षणिक पद्धतियों और आकलन उपकरण के माध्यम से कक्षा-कक्षीय प्रक्रियाओं के हिस्से के रूप में शामिल किया गया है। स्पष्ट रूप से ऐसी दक्षताएँ हैं जो स्वयं को मूल्यों के साथ जोड़ लेती हैं, जैसे– 'ज़रूरत पड़ने पर दूसरों (जानवरों, पौधों सहित) के प्रति दया और मदद का भाव दिखाना' एक ऐसी दक्षता है जो करुणा के मूल्य का प्रतीक है। बच्चे जिस विकासात्मक अवस्था में हैं, उसे देखते हुए यह अच्छी तरह से समझा जाता है कि बच्चे इन विचारों और उनके व्यवहारों को उस समय सबसे अच्छी तरह सीखते हैं, जब यह शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग होता है।

खंड 2.4
दक्षताएँ

इस खंड में प्रत्येक पाठ्यचर्या के उद्देश्य की दक्षताओं को परिभाषित किया गया है। इन दक्षताओं को पाठ्यक्रम विकासकर्ताओं के लिए दिशानिर्देशों के रूप में देखा जाना चाहिए और इन्हें निर्देशात्मक नहीं माना जाना चाहिए।

दक्षताओं को C-1.1, C-1.2, आदि के रूप में क्रमांकित किया गया है।

2.4.1 कार्यक्षेत्र—शारीरिक विकास

C.G.-1 बच्चे ऐसी आदतें विकसित करते हैं जो उन्हें स्वस्थ और सुरक्षित रखती हैं।	**C-1.1**	पौष्टिक भोजन में रुचि व इसकी समझ दिखाते हैं तथा भोजन बर्बाद नहीं करते हैं।
	C-1.2	अपनी देखभाल और प्रारंभिक स्वच्छता को अपने आचरण में लाते हैं।
	C-1.3	स्कूल या कक्षा-कक्ष को स्वच्छ और व्यवस्थित रखते हैं।
	C-4	सामग्रियों और सरल उपकरणों के सुरक्षित उपयोग का व्यवहार करते हैं।
	C-1.5	गतियों (चलना, दौड़ना, साइकिल चलाना) में सुरक्षा संबंधी सावधानी प्रदर्शित करते हैं और समुचित तरीके से ये कार्य करते हैं।
	C-1.6	असुरक्षित स्थितियों को समझते हैं और मदद माँगते हैं।
C.G.-2 बच्चे संवेदी अनुभूतियों में कुशाग्रता विकसित करते हैं।	**C-2.1**	आकृतियों, रंगों और उनके शेड्स के बीच अंतर करते हैं।
	C-2.2	प्रतीकों और निरूपणों के लिए दृश्य स्मृति विकसित करते हैं।
	C-2.3	ध्वनियों और ध्वनि पैटर्न में स्वरमान (Pitch), तीव्रता और गति (Tempo) के आधार पर अंतर करते हैं।
	C-2.4	विभिन्न गंधों और स्वादों के बीच अंतर करते हैं।
	C-2.5	स्पर्श की अनुभूतियों में विभेद की क्षमता विकसित करते हैं।
	C-2.6	अनुभवों की समग्र जागरूकता प्राप्त करने के लिए संवेदी अनुभूतियों को एकीकृत करना शुरू करते हैं।
C.G.-3 बच्चे एक स्वस्थ और लचीले शरीर का विकास करते हैं।	**C-3.1**	विभिन्न गतिविधियों में संवेदी अनुभूतियों और शरीर संचालन के बीच समन्वय प्रदर्शित करते हैं।
	C-3.2	विभिन्न शारीरिक गतिविधियों में संतुलन, समन्वयन और लचीलापन दिखाते हैं।
	C-3.3	हाथों और उंगलियों से काम करने में सटीकता और नियंत्रण दिखाते हैं।
	C-3.4	किसी सामान को ढोने, चलने और दौड़ने में ताकत तथा सहनशक्ति प्रदर्शित करते हैं।

2.4.2 कार्यक्षेत्र— सामाजिक-भावनात्मक और नैतिक विकास

C.G.-4 बच्चे भावनात्मक बुद्धिमत्ता, अर्थात अपनी भावनाओं को समझने व प्रबंधन करने और सामाजिक मानदंडों के प्रति सकारात्मक रूप से प्रतिक्रिया देने की क्षमता विकसित करते हैं।	**C-4.1**	परिवार और समुदाय से संबंधित व्यक्ति के रूप में 'स्व' को पहचानने लगते हैं।
	C-4.2	अलग-अलग भावनाओं को पहचानते हैं और उनका उपयुक्त तरीके से नियमन करने के लिए सुविचारित प्रयास करते हैं।
	C-4.3	अन्य बच्चों और वयस्कों के साथ आराम से बातचीत करते हैं।
	C-4.4	दूसरे बच्चों के साथ सहयोगात्मक व्यवहार प्रदर्शित करते हैं।
	C-4.5	कक्षा और विद्यालय में सामाजिक नियमों को समझते हैं और उन पर सकारात्मक रूप से प्रतिक्रिया देते हैं।
	C-4.6	दूसरों (जानवरों, पौधों सहित) के प्रति ज़रूरत के वक्त दयालुता और मदद का भाव प्रदर्शित करते हैं।
	C-4.7	दूसरे बच्चों के विभिन्न विचारों, प्राथमिकताओं और भावनात्मक जरूरतों को समझते हैं और उनके प्रति सकारात्मक रूप से प्रतिक्रिया देते हैं।
C.G.-5 बालोपयोगी कार्य और 'सेवा' के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करते हैं।	**C-5.1**	दूसरों की मदद के लिए अपनी आयु के अनुसार शारीरिक कार्य करने की इच्छा और भागीदारी प्रदर्शित करते हैं।
C.G.-6 बच्चे अपने आस–पास के प्राकृतिक परिवेश के प्रति सकारात्मक सोच विकसित करते हैं।	**C-6.1**	सभी सजीवों के प्रति परवाह और उनसे जुड़ने में खुशी दिखाते हैं।

2.4.3 कार्यक्षेत्र— संज्ञानात्मक विकास

C.G.-7 बच्चे अवलोकन और तार्किक चिंतन के माध्यम से दुनिया को समझते हैं	**C-7.1**	वस्तुओं की विभिन्न श्रेणियों और उनके बीच के संबंधों को देखते-समझते हैं।
	C-7.2	प्रकृति में कार्य-कारण संबंधों को सरल परिकल्पनाएँ बनाकर देखते व समझते हैं और परिकल्पनाओं को समझाने के लिए अपने अवलोकनों का उपयोग करते हैं।
	C-7.3	दैनिक जीवन की परिस्थितियों में और सीखने के लिए उपयुक्त उपकरणों व तकनीकों का उपयोग करते हैं।

C.G.-8 बच्चे मात्राओं, आकृतियों और मापों के माध्यम से गणितीय समझ और दुनिया को पहचानने की क्षमता विकसित करते हैं।	**C-8.1**	चीज़ों को एक से अधिक गुणों के आधार पर समूहों और उप-समूहों में छाँटते हैं।
	C-8.2	अपने परिवेश, आकृतियों और संख्याओं में सरल नमूनों को पहचानते और उनका विस्तार करते हैं।
	C-8.3	सीधी और उल्टी गिनती से और 10–10 एवं 20–20 के समूहों में 99 तक गिन पाते हैं।
	C-8.4	99 तक की संख्याओं को आरोही और अवरोही क्रम में व्यवस्थित करते हैं।
	C-8.5	दाशमिक स्थानीय मान प्रणाली की समझ के साथ 99 तक की मात्राओं को दर्शाने के लिए संख्याओं को पहचानते और उनका उपयोग करते हैं।
	C-8.6	संयोजन और वियोजन की लचीली रणनीतियों का उपयोग करके आसानी से दो अंकों की संख्याओं का जोड़ और घटाव करते हैं।
	C-8.7	गुणा को बार-बार जोड़ और भाग को बराबर बँटवारे के रूप में जानते-समझते हैं।
	C-8.8	बुनियादी ज्यामितीय आकृतियों और उनके अवलोकनीय गुणों को पहचानते, बनाते और वर्गीकृत करते हैं और किसी स्थान में वस्तुओं के सापेक्ष संबंध को समझते व समझाते हैं।
	C-8.9	अपने आस-पास के परिवेश में वस्तुओं की लंबाई, वज़न और आयतन का सरल मापन करने के लिए उपयुक्त उपकरणों और इकाइयों का चयन करते हैं।
	C-8.10	मिनटों, घंटों, दिनों, सप्ताहों और महीनों में समय का सरल मापन करते हैं।
	C-8.11	100 रुपये तक की मुद्रा का उपयोग करके सरल लेन-देन करते हैं।
	C-8.12	मात्राओं, आकृतियों, स्थान और मापन से संबंधित अवधारणाओं और प्रक्रियाओं को समझने और व्यक्त करने के लिए पर्याप्त और उपयुक्त शब्दावली विकसित करते हैं।
	C-8.13	मात्राओं, आकृतियों, स्थान और मापन से संबंधित सरल गणितीय समस्याओं को निरूपित करते हैं और हल करते हैं।

2.4.4 कार्यक्षेत्र— भाषा और साक्षरता विकास

C.G.-9 बच्चे दो भाषाओं में दैनिक बातचीत के लिए प्रभावी संप्रेषण कौशल विकसित करते हैं।[1]	**C-9.1**	सरल गीतों, तुकबंदियों और कविताओं को सुनते-सराहते हैं।
	C-9.2	स्वयं सरल गीत और कविताएँ बनाते हैं।
	C-9.3	धाराप्रवाह और अर्थपूर्ण बातचीत कर सकते हैं।
	C-9.4	किसी जटिल कार्य के लिए दिए गए मौखिक निर्देशों को समझते हैं और दूसरों को उसी कार्य के लिए स्पष्ट मौखिक निर्देश देते हैं।
	C-9.5	सुनाई गई/बोलकर पढ़ी गई कहानियों को समझते हैं। पात्र, कथानक और लेखक क्या कहना चाहते हैं, इसे पहचानते हैं।
	C-9.6	स्पष्ट कथानक और पात्रों के साथ छोटी कहानियाँ सुनाते हैं।
	C-9.7	प्रभावी ढंग से दैनिक बातचीत करने के लिए पर्याप्त शब्द जानते हैं, उनका उपयोग करते हैं और मौजूदा शब्दावली का उपयोग करके नए शब्दों के अर्थ का अनुमान लगा पाते हैं।
C.G.-10 बच्चे भाषा 1 को पढ़ने और लिखने में धाराप्रवाहिता विकसित करते हैं।[2]	**C-10.1**	भाषा (L1) में ध्वनि जागरूकता विकसित करते हैं और स्वनिमों (phonemes) / शब्दांशों (syllables) को मिलाकर शब्द बनाते हैं और शब्दों को स्वनिमों/शब्दांशों में विभाजित करते हैं।
	C-10.2	पुस्तक का बुनियादी ढाँचा/प्रारूप, छपे हुए शब्द और उनकी छपाई की दिशा के विचार को समझते हैं और मूलभूत विराम चिह्नों को पहचानते हैं।
	C-10.3	लिपि (L1) की वर्णमाला के सभी अक्षरों को पहचानते हैं और इस ज्ञान का उपयोग शब्दों को पढ़ने-लिखने के लिए करते हैं।
	C-10.4	कहानियों और गद्यांशों को (L1 में) सटीकता और प्रवाह के साथ, उचित विरामों और आवाज़ में उतार-चढ़ाव के साथ पढ़ते हैं।
	C-10.5	छोटी कहानियाँ पढ़ते हैं और पात्रों, कथानक और लेखक क्या कहना चाहता है, इसकी पहचान करके, खुद से ही उनका अर्थ समझते हैं। (L1)
	C-10.6	छोटी कविताएँ पढ़ते हैं और शब्दों व कल्पना के चुनाव के लिए कविता की सराहना करना शुरू करते हैं। (L1)
	C-10.7	लघु समाचारों, निर्देशों, व्यंजन विधियों और प्रचार सामग्री को पढ़ते-समझते हैं। (L1)
	C-10.9	अपनी समझ और अनुभव को व्यक्त करने के लिए एक अनुच्छेद लिखते हैं। (L1)
	C-10.10	विविध प्रकार की बच्चों की किताबें चुनने और पढ़ने में रुचि दिखाते हैं। (L1)

1. अधिकांश कथाओं के लिए यह लक्ष्य होना चाहिए, विशेष रूप से बहुभाषावाद की आवश्यकता को देखते हुए, लेकिन जिन स्थितियों में भाषा 2 बच्चों के लिए बहुत अपरिचित है, वहाँ (C-9.1 से C-9.7) तक की गई क्षमताएँ बुनियादी स्तर के अंत तक भाषा 2 में प्रारंभिक अवस्था में हो सकती है और आरंभिक स्तर में उन्हें मजबूत किया जा सकता है।

2. L1 घर की भाषा/मातृभाषा/परिचित भाषा है और L2 कम परिचित भाषा है। L1 और L2 की अवधारणा के बारे में अधिक विस्तार से अध्याय 3 में समझाया गया है।

C.G.-11 बच्चे भाषा 2 (L2) में पढ़ना और लिखना शुरू करते हैं।	**C-11.1**	ध्वनि जागरूकता विकसित करते हैं और स्वनिमों (phonemes)/ शब्दांशों (syllables) को मिलाकर शब्द बनाते हैं और शब्दों को स्वनिमों शब्दांशों में विभाजित करते हैं।
	C-11.2	लिपि की वर्णमाला के बार-बार दिखने वाले अक्षरों को पहचानते हैं और इस ज्ञान का उपयोग सरल शब्दों और वाक्यों को पढ़ने-लिखने के लिए करते हैं।

2.4.5 कार्यक्षेत्र—सौंदर्य बोध और सांस्कृतिक विकास

C.G.-12 बच्चे दृश्य और प्रदर्शन कलाओं में क्षमताएँ और संवेदनशीलता विकसित करते हैं और कला के माध्यम से अपनी भावनाओं को अर्थपूर्ण और आनंदपूर्ण तरीके से अभिव्यक्त करते हैं।	**C-12.1**	विभिन्न आकारों की द्विआयामी और त्रिआयामी कलाकृतियाँ बनाने के लिए तरह-तरह की सामग्रियों और उपकरणों की खोज करते हैं और उनसे खेलते हैं।
	C-12.2	संगीत, रोल-प्ले, नृत्य और गतिविधियाँ निर्मित करने के लिए अपनी आवाज़, शरीर, स्थानों और तरह-तरह की चीज़ों की खोज करते हैं, उनसे खेलते हैं।
	C-12.3	कला के माध्यम से विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने के लिए नए तरीकों की खोज करते हैं और कल्पनाशीलता के साथ कार्य करते हैं।
	C-12.4	कला में सहयोगात्मक ढंग से कार्य करते हैं।
	C-12.5	कला, स्थानीय संस्कृति और विरासत के विभिन्न रूपों की रचना और अनुभव करते हुए विभिन्न तरह की प्रतिक्रियाएँ संप्रेषित करते हैं और इनकी सराहना करते हैं।

2.4.5.1 सीखने की सकारात्मक आदतें

C.G.-13 बच्चे सीखने की आदतें विकसित करते हैं जो उन्हें स्कूल की कक्षा जैसे सीखने के औपचारिक परिवेश में सक्रिय रूप से संलग्न रहने में मदद करता है।	**C-13.1**	ध्यान व सुविचारित कर्म— विशिष्ट लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए योजना बनाने, ध्यान केंद्रित करने तथा गतिविधियाँ निर्देशित करने के कौशल हासिल करते हैं।
	C-13.2	स्मृति और मानसिक लचीलापन— समुचित कार्यकारी स्मृति, मानसिक लचीलापन (समुचित तरीके से ध्यान बनाए रखने या बदलने के लिए) और आत्म-नियंत्रण (आवेगी क्रियाओं और प्रतिक्रियाओं के प्रतिरोध के लिए) विकसित करते हैं जो संरचित परिवेश में सीखने में उसकी मदद करेगा।
	C-13.3	अवलोकन, आश्चर्य, जिज्ञासा और अन्वेषण— वस्तुओं के सूक्ष्म विवरणों का अवलोकन करते हैं, आश्चर्य करते हैं और विभिन्न इंद्रियों का उपयोग करते हुए अन्वेषण करते हैं, वस्तुओं के साथ छेड़छाड़ करते हैं, सवाल पूछते हैं।
	C-13.4	कक्षा के नियम— प्रतिनिधित्व और समझ के साथ नियमों को अपनाते हैं और उनका पालन करते हैं।

खंड 2.5
उदाहरण के साथ सीखने के प्रतिफल

इस खंड में प्रत्येक कार्यक्षेत्र की एक दक्षता को सीखने का प्रतिफल के रूप में समझाया गया है। यह मार्गदर्शन हेतु एक नमूना है कि बुनियादी स्तर के लिए सीखने के प्रतिफलों को कैसे व्यक्त किया जा सकता है।

(क) कार्यक्षेत्र— शारीरिक विकास

i. पाठ्यचर्या का उद्देश्य (C.G.-2)– बच्चे संवेदी अनुभूतियों में कुशाग्रता विकसित करते हैं।

(1) दक्षता (C-2.1)– आकार, रंग और उनके शेड्स के बीच अंतर करते हैं।

तालिका 2.5 क

	A	B	C	D	E
	C-2.1: आकृतियों, रंगों और उनके शेड्स के बीच अंतर करते हैं				
	← आयु 3–8 वर्ष →				
1	• अपने परिवेश में प्राथमिक रंगों (लाल, नीला, पीला) और अन्य सामान्य रंगों (काले, सफ़ेद, भूरे) में अंतर करते हैं और उनके नाम बताते हैं।	• प्राथमिक रंगों और द्वितीयक रंगों के प्रकारों (जैसे– हल्का नीला, गहरा नीला, हल्का हरा, गहरा हरा) के बीच अंतर करते हैं।	• दो रंगों के मिलने पर कौन-सा रंग बनेगा, इसका अनुमान लगाने का प्रयास करते हैं (जैसे– नीला और पीला मिलाने पर हरा बनता है, या लाल और सफ़ेद मिलाने पर गुलाबी बनता है)।	• दो रंगों के मिलने पर कौन-सा रंग बनेगा, इसका अनुमान लगाते हैं।	• कला रूपों, रेखांकनों, सजावट और प्रदर्शन में प्रयोग करते हैं और रंगों का उपयोग करते हैं।
2	• रंग के आधार पर चीज़ों के समूह बनाते हैं (जैसे– सभी लाल चीज़ें एक साथ)।	• आयाम— लंबाई, चौड़ाई व ऊँचाई के आधार पर चीज़ों के समूह बनाते हैं (जैसे– सभी लंबी चीज़ें एक साथ)।	• रंगों और आकृतियों की दृश्य विशेषताओं के संयोजन के आधार पर चीज़ों के समूह बनाते हैं (जैसे– सारे लाल त्रिभुज एक साथ, सभी बड़ी हरी पत्तियाँ एक साथ)।	• पैटर्न बनाते हैं, पहेलियाँ सुलझाते हैं, विभिन्न आकृतियों, रंगों और उनके शेड्स की पहचान करते हुए और उनका समूह बनाते हुए खेल खेलते हैं।	

(ख) कार्यक्षेत्र— सामाजिक-भावनात्मक और नैतिक विकास

i. पाठ्यचर्या का उद्देश्य (C.G.-5)– बच्चे उत्पादक कार्य और 'सेवा' के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करते हैं।

(1) दक्षता (C-5.1)– स्कूल या घर पर आयु-उपयुक्त काम करते हैं।

तालिका 2.5 ख

	A	B	C	D	E
	C-5.1: दूसरों की मदद के लिए अपनी आयु के उपयुक्त शारीरिक कार्य करने की इच्छा और भागीदारी प्रदर्शित करते हैं				
	आयु 3–8 वर्ष				
1	• उपयोग के बाद सामग्रियों और खिलौनों को उनके उचित स्थानों पर वापस रखते हैं।	• शिक्षक की मदद करते हैं और कक्षा को व्यवस्थित करते हैं।	• खाने के बाद स्वयं की प्लेट या टिफिन साफ़ करते हैं। • घर या स्कूल में उपयुक्त काम करते हैं (जैसे– सही जगह खिलौने रखना, पौधों को पानी देना)।	• स्थानीय पेड़ों की और बीजों को अंकुरित करते हैं।	• टी.एल.एम. बनाने में शिक्षक की मदद करते हैं। • रसोई में सफ़ाई और सब्ज़ी काटने के काम में मदद करते हैं।

(ग) कार्यक्षेत्र—संज्ञानात्मक विकास

i. पाठ्यचर्या का उद्देश्य (C.G.-8)– बच्चे मात्राओं, आकृतियों और मापों के माध्यम से गणितीय समझ और दुनिया को पहचानने की क्षमता विकसित करते हैं।

(1) दक्षता (C-8.4)– 99 तक की संख्याओं को आरोही और अवरोही क्रम में व्यवस्थित करते हैं।

तालिका 2.5 ग

	A	B	C	D	E
	C-8.4: 99 तक की संख्याओं को आरोही और अवरोही क्रम में व्यवस्थित करते हैं				
	आयु 3–8 वर्ष				
1	परिचित प्रसंगों या घटनाओं या वस्तुओं को क्रम से व्यवस्थित करते हैं (जैसे– दिनचर्या, कहानी, आकृतियाँ, 2 से 3 आकार)।	वस्तुओं को तीन स्तरों तक के आकार के आधार पर व्यवस्थित करते हैं और इन स्तरों को मौखिक रूप से बताते हैं (बड़ा-छोटा-उससे छोटा; लंबा-छोटा-उससे छोटा; ऊँचा-नीचा-उससे नीचा)।	आकार या लंबाई या वज़न के आधार पर पाँच वस्तुओं तक को बढ़ते या घटते क्रम में व्यवस्थित करते हैं।	वस्तुओं के विभिन्न गुणों (उदाहरण के लिए, आकार या लंबाई या वज़न या रंग) के आधार पर वस्तुओं के एक ही समूह को अलग-अलग क्रम में व्यवस्थित करते हैं।	संख्याओं के दिए गए समूह से उन्हें आरोही और अवरोही क्रम में व्यवस्थित करते हैं।

(घ) कार्यक्षेत्र—भाषा और साक्षरता विकास

i. पाठ्यचर्या का उद्देश्य (C.G.-10)– बच्चे भाषा 1 को पढ़ने और लिखने में धाराप्रवाहिता विकसित करते हैं।

(1) दक्षता (C-10.5)– कहानियाँ पढ़ते हैं और पात्र, कथानक और लेखक क्या कहना चाहता है, इसकी पहचान करके स्वयं से ही उनके अर्थ को समझते हैं।

तालिका 2.5 घ

C-10.5: छोटी कहानियाँ पढ़ते हैं और पात्र, कथानक और लेखक क्या कहना चाहता है, इसकी पहचान करके स्वयं से ही उनका अर्थ समझते हैं (L1)

आयु 3–8 वर्ष

	A	B	C	D	E
1	• 'बोल कर पढ़े गए' को सुनते हैं और शिक्षक द्वारा पूछे गए सवालों के जवाब देते हैं।	• शिक्षक के साथ 'साझा पठन' में भाग लेते हैं और पाठ के बारे में चर्चा करते हैं।	• शिक्षक के साथ 'निर्देशित/मार्गदर्शित पठन' में भाग लेते हैं और पाठ के बारे में चर्चा करते हैं।	• समान पाठ्य और दृश्य सामग्री वाली पुस्तकों का 'स्वतंत्र पठन' शुरू करते हैं।	• दृश्य सामग्री की तुलना में अधिक पाठ्य सामग्री वाली पुस्तकों का 'स्वतंत्र पठन' शुरू करते हैं।
2	• चित्रयुक्त पुस्तकें पढ़ते हैं और वस्तुओं तथा क्रियाओं की पहचान करते हैं।	• चित्रयुक्त पुस्तकें पढ़ते हैं, पात्रों और कथानक की पहचान करते हैं और कहानी को छोटे-छोटे क्रमों में बताते हैं।	• छोटे सरल वाक्य वाली पुस्तकों को बोलकर पढ़ते हैं, सटीक अनुक्रम और विस्तार के साथ कहानी का अनुमान लगाने और उसे फिर से कहने के लिए दृश्य संकेतों और वाक्य का उपयोग करते हैं।	• अपरिचित कहानी की पुस्तकें पढ़ना शुरू करते हैं और शिक्षक के मार्गदर्शन से उन्हें समझते हैं। • कथानक और पात्रों की पहचान करते हैं।	• पात्रों, कथानकों, अनुक्रमों और लेखक के दृष्टिकोण को पढ़ते और पहचानते हैं।

(ङ) कार्यक्षेत्र—सौंदर्य और सांस्कृतिक विकास

i. पाठ्यचर्या का उद्देश्य (C.G.-12)– बच्चे दृश्य और प्रदर्शन कलाओं में क्षमताएँ और संवेदनशीलता विकसित करते हैं और कला के माध्यम से अपनी भावनाओं को अर्थपूर्ण और आनंदपूर्ण तरीके से अभिव्यक्त करते हैं

(1) दक्षता (C-12.1)– विभिन्न आकारों में द्वि-आयामी और त्रि-आयामी कलाकृतियाँ बनाने के लिए तरह-तरह की सामग्रियों और उपकरणों की खोज करते हैं और उनसे खेलते हैं।

तालिका 2.5 ङ

	A	B	C	D	E
	C-12.1: विभिन्न आकारों की द्वि-आयामी और त्रि-आयामी कलाकृतियाँ बनाने के लिए तरह-तरह की सामग्रियों और उपकरणों की खोज करते हैं और उनसे खेलते हैं				
	← आयु 3–8 वर्ष →				
1	• आवश्यक कला सामग्रियों, उपकरणों और औजारों को पकड़ते हैं।	• कला सामग्रियों, औजारों और उपकरणों (जैसे– डंडे, बीज, कंकड़, पत्थर, चाक, धागे, पेंसिलें, कूचियाँ, क्रेयॉन्स, पाउडर, कैंचियाँ) का उपयोग करते हुए विभिन्न प्रकार की पकड़ों का पता लगाते हैं।		• गाढ़े और हल्के अंकनों/चिह्नों/रेखाओं को बनाने के लिए दबाव में बदलाव करने में सक्षम होते हैं।	
2	• दृश्य कलाकृतियों में चिह्न, रेखाएँ, आड़ी-तिरछी करते हुए बड़े और छोटे आकार को तथा अन्य द्वि-आयामी और त्रि-आयामी आकृतियों को समझते हैं।	• साथियों, सुगमकर्ताओं और स्थानीय समुदाय के सहयोग से बड़े पैमाने के काम (जैसे– फर्श पर रंगोली, भित्ति चित्र, मूर्ति) बनाते हैं।		• उपलब्ध जगह या सामग्री के आधार पर स्वयं के काम को बड़े और छोटे आकारों में मापने में सक्षम होते हैं (जैसे– मिट्टी की एक छोटी गुड़िया या कागज़ की एक बड़ी गुड़िया बनाना)।	
3	• सामग्रियों (जैसे– मिट्टी और पानी, रेत और पानी, आटा और पानी, पेंट और पानी) को मिलाकर आकृतियाँ और ठप्पे बनाते हैं।	• मिट्टी या आटे जैसी सामग्री को बेलकर और थपथपाकर त्रि-आयामी आकृतियाँ बनाते हैं।		• अपनी व्यवस्था के लिहाज से अलग-अलग गाढ़ेपन, रंग और गठन की सामग्रियों को मिलाकर कोलाज बनाते हैं। • विभिन्न प्रकार की प्राप्त सामग्रियों और वस्तुओं को मिलाकर त्रि-आयामी व्यवस्था/संयोजन बनाते हैं।	
4	• ब्लॉक, स्टेंसिल, प्राप्त वस्तुओं और प्राकृतिक सामग्री का उपयोग करके ठप्पे बनाते हैं।	• ब्लॉक, स्टेंसिल, प्राप्त वस्तुओं और प्राकृतिक सामग्री का उपयोग करके सरल नमूने बनाते हैं।		• सामग्रियों को विभिन्न आकारों, आकृतियों, बनावटों और रंगों के लिहाज से मिलाकर और व्यवस्थित करके नमूना बनाते हैं।	• किसी सामग्री के साथ जोड़-तोड़ करके तरह-तरह के गठन बनाते हैं (जैसे– मिट्टी, कपड़ा, कागज़, रबड़, लकड़ी)।

(च) कार्यक्षेत्र— सीखने की सकारात्मक आदतें

i. पाठ्यचर्या का उद्देश्य C.G.-13)– बच्चे सीखने की आदतें विकसित करते हैं जो उन्हें स्कूल की कक्षा जैसे औपचारिक सीखने के परिवेश में सक्रिय रूप से संलग्न रहने में मदद करता है।

(1) दक्षता (C-13.4)– प्रतिनिधित्व और समझ कक्षा के नियमों के साथ को अपनाते हैं और उनका पालन करते हैं।

तालिका 2.5 च

	A	B	C	D	E
	C-13.4: कक्षा के नियम– प्रतिनिधित्व और समझ के साथ नियमों को अपनाते और उनका पालन करते हैं				
	आयु 3–8 वर्ष				
1	कक्षा नियमों के प्रति वयस्कों के व्यवहार का अवलोकन करते हैं और उनका अनुसरण करते हैं।	शिक्षक के संकेतों के साथ कक्षा नियमों का अनुसरण करते हैं।	कक्षा नियमों का पालन करते हैं और इसमें दूसरों की मदद करते हैं। शिक्षकों की मदद से 'स्वयं करें' कक्षा कार्य चार्ट या पोस्टर बनाते हैं और उनका अनुसरण करते हैं।	कक्षा नियमों पर चर्चा में भाग लेते हैं और नियमों के अनुरूप व्यवहार करते हैं। 'स्वयं करें' कक्षा कार्य चार्ट या पोस्टर बनाते हैं और उनका अनुसरण करते हैं।	कक्षा नियम स्थापित करने में भाग लेते हैं और उनके अनुसार व्यवहार करते हैं। 'स्वयं करें' कक्षा कार्य चार्ट या पोस्टर बनाते हैं, उन्हें दर्शाते हैं और जिम्मेदारी से उनका अनुसरण करते हैं।

सीखने के प्रतिफलों का अधिक व्याख्यात्मक विस्तृत सेट अनुलग्नक 1 में है।

जैसा कि इस अध्याय के प्रारंभ में खंड 2.2 में उल्लेख किया गया है, सीखने के प्रतिफल जो अंततः उपयोग किए जाने हैं, उन्हें प्रासंगिक पाठ्यचर्या विकासकर्ताओं और संस्थानों द्वारा सावधानीपूर्वक विकसित किया जाना चाहिए जिसमें एस.सी.ई.आर.टी., रा.शै.अ.प्र.प. और अन्य संस्थान शामिल होंगे।

अध्याय 3

भाषा शिक्षा और साक्षरता के प्रति दृष्टिकोण

भाषा सीखने के मामले पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी. 2020) की संस्तुतियाँ, भाषा अर्जित करने संबंधी नवीनतम शोधों पर आधारित थीं। एन.ई.पी. 2020 का अनुसरण करते हुए भाषा शिक्षा पर राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.) के व्यापक लक्ष्य के पीछे यह दृष्टि है कि बच्चे भाषा इस तरीके से सीखें, जिससे उनके सीखने को (सभी डोमेन और क्षेत्रों में), उनकी संप्रेषण क्षमता को (मौखिक और लिखित दोनों) तथा उनके सामाजिक-भावनात्मक कौशल को उनके जीवन के प्रारंभिक वर्षों और उनके पूरे जीवन में भी अधिकतम बढ़ाया जा सके।

खंड 3.1
सिद्धांत

भाषा शिक्षा के बारे में, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी. 2020) पर आधारित, एन.सी.एफ के दृष्टिकोण के पीछे मुख्य सिद्धांत निम्नांकित हैं—

(क) बच्चे 0–8 वर्ष की आयु के बीच मौखिक भाषा बहुत शीघ्रता से सीखते हैं।

सब जानते हैं कि बच्चे मौखिक भाषा को प्रारंभिक 8 वर्षों में बहुत शीघ्रता से सीखते हैं। ये वर्ष भाषा अर्जित करने के लिहाज से संवेदनशील समय होता है जिसे खोना नहीं चाहिए। प्रारंभिक वर्षों में भाषा सीखने में देरी के कारण, बच्चों को बाद में नई भाषा अर्जित करने में बहुत मुश्किल आती है (यह असंभव तो नहीं, पर बेहद कठिन हो जाता है)।

(ख) बहुभाषिकता के संज्ञानात्मक और सामाजिक/सांस्कृतिक दोनों लाभ हैं।

शोध स्पष्ट दर्शाते हैं कि मौखिक रूप में कई भाषाओं के संपर्क से महत्वपूर्ण संज्ञानात्मक और सामाजिक-भावनात्मक प्रेरणा मिलती है, जो बच्चों के विकास के लिए बहुत फायदेमंद है। बच्चे प्रारंभिक वर्षों में कई मौखिक भाषाएँ सीखने में सक्षम होते हैं। वे आसानी से भाषाओं के बीच अंतर कर पाते हैं और यह भी तय कर पाते हैं कि किससे किस भाषा में बात करनी है।

अगर बच्चों के इर्द-गिर्द भाषा के प्रयोग का अर्थवान और सोद्देश्य, समृद्ध एवं सहज परिवेश हो तो वे बहुत अच्छी तरह से बहुभाषा कौशल सीख पाते हैं। छोटे बच्चे औपचारिक शिक्षा के माध्यम से भाषा सीखने में बहुत सक्षम नहीं होते। पाठ्यचर्या निर्माताओं, शिक्षक-प्रशिक्षकों और शिक्षकों को यह महत्वपूर्ण अंतर ध्यान में रखना चाहिए ताकि वे बुनियादी स्तर पर छोटे बच्चों के लिए उपयुक्त प्रारंभिक भाषा शिक्षण अनुभव का ढाँचा तैयार कर सकें और उसे बच्चों को उपलब्ध करा सकें।

भारत में बहुभाषिकता व्यापक है और अधिकतर बच्चे अपने जीवन के प्रारंभिक वर्षों से ही एक से अधिक भाषाओं के संपर्क में होते हैं। हमारे बहुभाषी देश और विश्व में प्रारंभिक दिनों से ही बहुभाषिक होना जीवन में विभिन्न समुदायों के बीच हमारे संप्रेषण को आसान बना देता है। इसलिए एन.सी.एफ के एक मुख्य भाग का लक्ष्य है कि एकदम प्रारंभ से ही बच्चे में उनके विकास के अनुरूप बेहतरीन मौखिक बहुभाषिक कौशलों की नींव मज़बूत की जाए।

(ग) छोटे बच्चे स्वाभाविक रूप से मौखिक भाषा सीख जाते हैं पर लिखित भाषा उतनी स्वाभाविक नहीं होती, इसलिए पढ़ने और लिखने की अवधारणा को ज़रूर ही सिखाया जाना चाहिए।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है, प्रारंभ से ही बच्चों को कई मौखिक भाषाओं से गहराई से जोड़ना एन.सी.एफ. का एक मुख्य पहलू है। यद्यपि पढ़ने और लिखने की अवधारणा, जिसमें स्वनिम (फोनीम)— ध्वनि की छोटी

इकाइयाँ और लेखिम (ग्राफिम)— लिखित व्यवस्था की सबसे छोटी इकाइयों की अवधारणा और उनका आपसी संबंध शामिल है, को पहले केवल एक भाषा के माध्यम से ज्ञात किया जाना चाहिए। आदर्श रूप में यह भाषा, अगर संभव हो तो गृह भाषा होनी चाहिए।

बच्चों में जब एक बार पढ़ने और लिखने की अवधारणा और बुनियादी साक्षरता कौशल विकसित हो जाएँ, तब आगे उनका परिचय लिपियों से कराया जाना चाहिए जिन्हें वे अधिक आसानी से सीख सकेंगे। यद्यपि प्रारंभिक वर्षों में एक से अधिक लिपियों के साथ दृश्यात्मक परिचय को लाभकारी माना जाता है, पर साक्षरता के प्रारंभिक कौशल सिखाना, पहले एक भाषा के माध्यम से करना ज़्यादा बेहतर होगा। साक्षरता के बुनियादी कौशल में डिकोडिंग शामिल है। उदाहरणार्थ, अनजाने शब्दों के उच्चारण के लिए स्वनिम (फोनिम) का संबद्ध लेखिम (ग्राफिम) (स्वर, व्यंजन और उनके संयोजन) से जुड़ाव। पढ़ना और लिखना पहले एक परिचित भाषा में सिखाया जाना चाहिए, ऐसी भाषा में जिसे बच्चा समझता और ठीक से बोलता हो। प्रारंभिक साक्षरता कौशल, एक मज़बूत मौखिक भाषा कौशल के आधार पर बेहतर और जल्दी विकसित होते हैं।

(घ) छोटे बच्चे जटिल अवधारणाओं को गृह भाषा या मातृभाषा या परिचित भाषा में सबसे जल्दी और गहराई से सीखते और समझते हैं।

शोध के प्रमाण इस बात को पुख्ता करते हैं कि बुनियादी स्तर और उसके बाद बच्चों को उनकी मातृभाषा में शिक्षण देना महत्वपूर्ण है। इसके निम्नांकित कारण हैं—

i. बच्चे प्री-स्कूल या स्कूल में 3 साल की आयु के बाद दाखिला लेते हैं। इस समय तक वे गृह भाषा में पर्याप्त क्षमता अर्जित कर लेते हैं जिससे कि वे सुनने, समझने, दूसरे के साथ सहानुभूति व्यक्त करने, बोलने, अपने विचारों व भावनाओं को अभिव्यक्त करने और दूसरों के साथ अर्थपूर्ण तरीके से बात करने में सक्षम हो जाते हैं। इन 3 वर्षों में 'भाषा अर्जित करने' के साथ बच्चे स्वत: स्फूर्त तरीके से दूसरे बुनियादी कौशल, विशेष रूप से संप्रेषण, सूचनाओं को समझना, सामाजिक बातचीत करना सीखते हैं। साथ ही वे रचनात्मकता, आलोचनात्मक चिंतन, साक्षरता और संख्या ज्ञान के आधारभूत कौशल और अवधारणाएँ भी सीखते हैं। बच्चे इन बुनियादी कौशलों को साथ लेकर प्री-स्कूल या स्कूल पहुँचते हैं। अगर बच्चे को उसके बुनियादी स्तर पर और बाद में भी अन्य विषय गृह भाषा या मातृभाषा में पढ़ाए जाएँ तो ये आधारभूत कौशल नींव का काम करते हैं, जिनके आधार पर बच्चे की संज्ञानात्मक और सामाजिक-भावनात्मक क्षमता को और निखारा जा सकता है। इसलिए गृह भाषा, सभी तरह के सीखने में सहायता करती है। साथ ही यह भाषा घर पर तथा पहले सीखे गए के साथ संबंध स्थापित करने में बच्चे को सक्षम बनाती है।

ii. दूसरी तरफ अगर बच्चे को नई या अपरिचित भाषा में पढ़ाया जाए तो बच्चे जिन 3–4 वर्षों का अनुभव लेकर स्कूल आते हैं, उसे पूरी तरह भुला देना होगा। बच्चे द्वारा अर्जित बुनियादी अनुभव, कौशल और सीखने को नकारते हुए शुरू से ही नई भाषा पढ़ाने का मतलब सीखने की पूरी प्रक्रिया को उलट देना होगा। भारत समेत पूरी दुनिया में इस बात के पर्याप्त प्रमाण मिलते हैं कि जो बच्चे मातृभाषा, गृह भाषा या

परिचित भाषा में सीखते हैं, वे विज्ञान और गणित जैसे विषयों में भी अपने उन सहपाठियों से बेहतर प्रदर्शन करते हैं, जिन्हें अपरिचित भाषा में पढ़ाया गया।

iii. शोध स्पष्टत: दिखाते हैं कि बच्चे अगर साथ-साथ या बाद में दूसरी भाषा भी सीख रहे हों, तब भी उनके द्वारा गृह भाषा में सीखे गए किसी कौशल या अवधारणा को फिर से नहीं पढ़ाना पड़ता।

iv. मातृभाषा या गृह भाषा बच्चे के लिए सिर्फ़ संप्रेषण का माध्यम भर नहीं है, इसका गहरा संबंध बच्चे की निजी, सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान से होता है। शिक्षण के माध्यम के रूप में नई भाषा को डालकर या स्वीकार कर, इस समृद्ध अनुभव को नकारना न तो बच्चों के लिए उचित है और न ही प्रारंभिक वर्षों में उनकी शिक्षा के लिए वांछनीय है। क्योंकि इसी समय बच्चों में आत्मविश्वास के विकास, सकारात्मक स्वाभिमान, क्षमता और स्वायत्तता का बोध आदि बेहद आवश्यक उद्‌देश्यों के लिए शिक्षकों को काम करने की ज़रूरत होती है।

v. अध्ययन दिखाते हैं कि छोटे बच्चों के सीखने के लिए सकारात्मक तथा सहयोगात्मक रिश्ते और संवेदनात्मक रूप से सुरक्षित परिवेश बेहद आवश्यक है, जिसे परिचित भाषा को शिक्षण की भाषा बनाते हुए प्रोत्साहित किया जा सकता है।

vi. छोटे बच्चे सुनने, बोलने और दूसरों से बातचीत के माध्यम से भाषा सीखते हैं। सिर्फ़ एक परिचित भाषा (जिसे वे अच्छी तरह समझते हों और बोलते हों) ही स्वाभाविक बातचीत का परिवेश बना सकती है जो बच्चों के समग्र विकास के लिए आवश्यक है। इसलिए बुनियादी स्तर के दौरान बातचीत की भाषा बच्चे की मातृभाषा या गृह भाषा या परिचित भाषा होनी चाहिए।

vii. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने रटने की बजाय अंतर्क्रियात्मक रूप से सीखने, रचनात्मकता और खोज पर ज़ोर देने के प्रतिमान परिवर्तन को चिह्नित किया है। इसके अनुसार बुनियादी स्तर के दौरान अपरिचित भाषा को शिक्षण का माध्यम बनाने को हतोत्साहित करना होगा।

बच्चे की गृह भाषा का सम्मान, गृह भाषा में बातचीत और उस भाषा में सीखने के लिए प्रोत्साहित करना और अधिकतम संभव स्तर पर बच्चे की गृह भाषा में शिक्षण, एन.सी.एफ. का एक और केंद्रीय पहलू है। प्रारंभिक वर्षों में द्विभाषिक या बहुभाषिक भाषा दृष्टिकोण— जिसमें बच्चे की गृह भाषा मुख्य हो— बच्चे को भाषाओं के बीच सफल आवाजाही में सक्षम बनाता है।

(ङ) भाषा सांस्कृतिक जागरूकता और अभिव्यक्ति के महत्वपूर्ण आयाम निर्मित करती है, जो कि बच्चे में विकसित की जाने वाली मुख्य क्षमताओं में से एक है।

सांस्कृतिक जागरूकता और अभिव्यक्ति में सक्षमता बच्चे में पहचान और अपनेपन का एक बोध देती है, साथ ही दूसरी संस्कृतियों और पहचानों के लिए भी सराहना का बोध देती है। पिछले दशक में किए गए अंतर्राष्ट्रीय अध्ययनों ने दिखाया है कि बच्चों में सांस्कृतिक जागरूकता या अभिव्यक्ति और सकारात्मक सांस्कृतिक पहचान, उन्हें बेहतर सामाजिक व्यवहार, आत्मसम्मान, आत्मविकास तथा सहिष्णुता व दूसरी संस्कृतियों की सराहना की तरफ आगे ले जाती है। अपने सांस्कृतिक इतिहास, भाषाओं, कलाओं और परंपराओं के दृढ़ बोध

के माध्यम से बच्चे एक सकारात्मक सांस्कृतिक पहचान और आत्मसम्मान विकसित कर सकते हैं। साथ ही उनमें इसके माध्यम से संप्रेषण और रचनात्मकता जैसी संबद्ध क्षमताओं का भी विकास होता है। इसलिए सांस्कृतिक जागरूकता और अभिव्यक्ति समाज तथा व्यक्ति, दोनों की बेहतरी के लिए महत्वपूर्ण हैं। इस कारण से भी अपने मौखिक व लिखित साहित्य और परंपराओं के साथ गृह भाषाएँ, स्थानीय भाषाएँ और अन्य भारतीय भाषाएँ बच्चे के संपूर्ण समग्र विकास और भले के लिए, उनके सीखने के अनुभव का महत्वपूर्ण पहलू बन जाती हैं।

खंड 3.2
बुनियादी स्तर में भाषा शिक्षा और साक्षरता पर एन.सी.एफ. का दृष्टिकोण

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा रेखांकित भाषा शिक्षा के सिद्धांतों और उद्देश्यों से सामंजस्य बिठाते हुए बुनियादी स्तर में भाषा शिक्षण को लेकर एन.सी.एफ का दृष्टिकोण निम्नवत है—

(क) चूँकि बच्चा गृह भाषा में ज़्यादा तेजी और गहराई से अवधारणाएँ सीखता है, इसलिए बुनियादी स्तर में शिक्षण की प्राथमिक भाषा बच्चे की गृह भाषा या मातृभाषा या परिचित भाषा ही होनी चाहिए (इसे आगे भाषा 1 (L1) कहा गया है)।

सरकारी और निजी दोनों तरह के स्कूलों का यही दृष्टिकोण होना चाहिए। हर बच्चा बुनियादी स्तर के प्रारंभ से ही अपनी भाषा (L1) का पूरा उपयोग करे, इसे सुनिश्चित करने के लिए ऐसे शिक्षक (उदाहरणार्थ, स्थानीय समुदाय से) आवश्यक हैं जो न सिर्फ़ उस भाषा की अपितु स्थानीय संस्कृति और परंपराओं की भी समझ रखते हों। बुनियादी स्तर के शिक्षक को बच्चे की भाषा 1 में किसी दूसरे स्तर की अपेक्षा अधिक प्रवीण होना चाहिए।

बच्चे की शैक्षिक प्रक्रिया में अभिभावकों को भी जोड़ा जाना चाहिए। इससे बच्चों के लिए स्कूली प्रक्रिया अधिक रोचक और सुरक्षित बन सकती है। इसके माध्यम से घर और स्कूल के करीबी संबंध को प्रोत्साहित किया जा सकता है एवं उसे मजबूत बनाया जा सकता है जो कि बच्चे के सर्वांगीण विकास और सीखने में बहुत महत्वपूर्ण है। 3 से 6 वर्ष की आयु वाले बच्चों का सीखना अधिकांशत: खेलने, सुनने और बोलने के दौरान होता है। यह सब अनिवार्य रूप से बच्चे की भाषा 1 में होना चाहिए।

बच्चे की भाषा 1 को बुनियादी स्तर पर अंतर्क्रिया और शिक्षण की प्राथमिक भाषा बनाने के लिए इन भाषाओं में अच्छे बाल साहित्य का प्रकाशन और विकास आवश्यक है। मुख्यत: उन भाषाओं में यह और भी आवश्यक है जिनमें ऐसे साहित्य की कमी है। उन भाषाओं के लिए जो अभी शिक्षण के माध्यम के रूप में उपयोग की जाती हैं और उन अन्य भाषाओं के लिए भी जो आगे शिक्षण की भाषा बनेंगी या उन सभी भाषाओं के लिए जिनका बुनियादी स्तर पर शिक्षण और सीखने में विस्तृत व औपचारिक उपयोग होता है, में अच्छे बाल साहित्य के प्रकाशन और विकास को राष्ट्रीय कार्यक्रम के रूप में लिया जाना चाहिए। कई राज्य सरकारें और गैर-सरकारी संगठन भी गृह भाषाओं में बच्चों के लिए सामग्री के विकास और प्रकाशन में लगे हुए हैं जिनमें बड़ी संख्या में कहानियों की किताबें, कविता पोस्टर और बड़ी किताबें शामिल हैं।

यद्यपि शिक्षण के लिए भाषा के रूप में भाषा 1 (L1) सबसे बेहतर विकल्प है, पर संबद्ध भाषा में दक्ष शिक्षक उपलब्ध न होने जैसे विभिन्न कारणों से यह सामान्यत: संभव नहीं हो पाता है। जगह-जगह बिखरे हुए समुदायों और सुदूर क्षेत्रों समेत कई परिस्थितियों में ऐसा दिखता है। ऐसी परिस्थिति में जिस भाषा में शिक्षा दी

जानी है, बच्चे को उस तक पहुँचाने के लिए भाषा 1 (L1) को सहयोगी भाषा के रूप में उपयोग किया जाना चाहिए। इस प्रक्रिया में ध्यान रखना होगा कि बच्चा अपना पुराना सीखा हुआ भूले नही। इसके लिए शिक्षकों को बच्चे की भाषा से परिचय बढ़ाने के लिए प्रोत्साहन और सहयोग दिया जाना चाहिए।

यह भी संभव हो सकता है कि ऐसे पूरक विकल्प खोजे जाएँ, जो बच्चे को उस नई भाषा जो शिक्षण का माध्यम है, को सीखने में सहायता कर सकें; साथ ही इस दौरान उन्हें पहले से सीखी गई भाषा से भी वंचित न होना पड़े। इसके लिए उन्हें लगातार सहयोग करने वाले किसी व्यक्ति की सहायता की भी आवश्यकता पड़ेगी। उदाहरण के लिए, बारी-बारी से कोई एक अभिभावक स्कूल आए; समुदाय के युवाओं को शिक्षकों के सहयोग में लगाया जाए; पंचायतें स्कूल के बाद होने वाले कार्यक्रम के रूप में खेल आधारित गतिविधियों के लिए सामुदायिक केंद्र संगठित करें। किसी समुदाय के लिए इनमें से क्या सबसे अच्छा होगा, इस आधार पर इन विकल्पों में से किसी को चुना जा सकता है। एकदम अलग भाषा पृष्ठभूमि से आए शिक्षक भी भाषाओं के बीच संक्रमण को सहज व सामंजस्ययुक्त बनाने के लिए बच्चे की भाषा के आधारभूत शब्दज्ञान और संप्रेषण क्षमता को हासिल करने का लक्ष्य ले सकते हैं। ऐसी सभी कक्षाओं में जहाँ शिक्षक बच्चे की भाषा में संतोषजनक दक्षता रखते हों, शिक्षण और सीखने के लिए औपचारिक रूप से बच्चे की भाषा 1 (L1) का उपयोग किया जाना चाहिए।

जहाँ कहीं भी बच्चे की भाषा 1 (L1) आधिकारिक रूप से अन्य विषयों को पढ़ाने के लिए उपयोग नहीं की जा रही हो, वहाँ भी कम-से-कम मौखिक रूप से इन L1 भाषाओं का उपयोग औपचारिक ढंग से किया जाना चाहिए। इनका उपयोग पढ़ने, लिखने और दूसरे विषयों को पढ़ाने में उपयोग हो रही भाषा से जोड़ने के लिए किया जाना चाहिए। इससे सुनिश्चित किया जा सकेगा कि कक्षा में शिक्षक और बच्चे, दोनों सोचने, तर्क करने, समझ के उच्च स्तर पर जाने, अभिव्यक्ति और संप्रेषण में हमेशा L1 का उपयोग कर रहे हैं।

अंतिम बात यह कि किसी बच्चे को अपनी गृह भाषा में बोलने के लिए कभी भी, किसी भी हालत में हतोत्साहित नहीं किया जाना चाहिए और न ही उसे इस बात के लिए कभी शर्मिंदा किया जाना चाहिए। इसके विपरीत, शिक्षकों, सहपाठियों, अभिभावकों और स्कूल पदाधिकारियों द्वारा गृह भाषा के उपयोग को विचार और व्यवहार में (अधिकतम संभव स्तर पर) हमेशा प्रोत्साहन, प्रशंसा और सराहना मिलनी चाहिए। जहाँ तक संभव हो शिक्षकों को बच्चों को उनकी भाषा 1 (L1) में प्रतिक्रिया देने और बातचीत करने की अनुमति देनी चाहिए और इसे प्रोत्साहित करना चाहिए। उन्हें बच्चे की भाषा 1 (L1) में सरल कहानियाँ सुनानी चाहिए और कठिन शब्दों व अवधारणाओं को भाषा 1 (L1) में ही समझाना चाहिए। भाषाओं को अलग-अलग समयों में बंद विषयों के रूप में न तो पढ़ाया जाना चाहिए, न सिखाया जाना चाहिए। भाषाओं का मिश्रण हो सकता है और बच्चे को अपनी भाषा 1 (L1) को आधार बनाते हुए नई अवधारणाएँ व भाषाएँ सीखने का अवसर मिल सकता है।

(ख) प्रारंभिक आयु से ही बच्चे का कई मौखिक भाषाओं (जिन्हें नीचे L2 और L3 कहा गया है) से गहरा संपर्क होना चाहिए। बच्चे के सामने नियमित रूप से कम-से-कम दो या अच्छा हो कि तीन भाषाएँ रहें, इसके लिए स्कूलों को शिक्षकों और अभिभावकों की उपस्थिति सुनिश्चित करना होगा।

आयु के प्रारंभिक 6 से 8 सालों में बच्चों का संपर्क अगर नई भाषाओं से कराया जाए तो वे इन भाषाओं को, मुख्यत: अर्थपूर्ण संदर्भों में मौखिक संप्रेषण को, तेजी से सीखने में सक्षम होते हैं। इसलिए प्रारंभिक कक्षाओं में द्विभाषिक या बहुभाषिक दृष्टि अपनाते हुए भाषा 1 (L1) का शिक्षण की मुख्य भाषा के रूप में उपयोग बच्चों को भाषाओं के बीच सफल आवाजाही में सक्षम बनाता है। मौखिक रूप में कई भाषाओं तक पहुँच बच्चे को महत्वपूर्ण संज्ञानात्मक प्रेरणा भी प्रदान कर सकती है, जो कि सामाजिक-भावनात्मक कौशलों के साथ रचनात्मकता के विकास और आलोचनात्मक चिंतन की क्षमताओं के विकास के लिए लाभकारी है क्योंकि शिक्षकों, अभिभावकों, सहपाठियों और अन्य द्वारा उपयोग की गई ध्वनियाँ और इशारे बच्चे के दिमाग में शब्दों, वाक्यांशों और वाक्यों में बदल जाते हैं।

अगर एक अपरिचित भाषा औपचारिक पढ़ाई के लिए उपयोग की जा रही हो, तब बच्चों के संदर्भों, अनुभवों और उसकी रूचि के विषयों का उपयोग मौखिक भाषा और साक्षरता के विकास के लिए अति आवश्यक है। गीत, कविताएँ, खेल, नाटक, संपूर्ण शारीरिक प्रतिक्रिया (टी.पी.आर.) और अन्य रचनात्मक अंतर्क्रियाएँ, उदाहरणार्थ– अनुभवों, जगहों और पसंदीदा चीज़ों या खिलौनों का विवरण (और उन पर बातचीत), सौंदर्यात्मक व रचनात्मक बोध का विकास भाषा-शिक्षण को ज़्यादा रोचक और इसलिए ज़्यादा प्रभावी बना देती हैं।

बुनियादी स्तर पर उपयोग की जा सकने वाली कुछ दक्षताएँ हैं— बच्चे की भाषा 1 (L1) और भाषा 2 (L2) या भाषा 3 (L3) का संतुलित व युक्तिपूर्ण उपयोग जो कि हर समय बच्चे की भाषा दक्षता के विकास से सरेखित हो; भाषा 2 (L2) या भाषा 3 (L3) के लिए, बातचीत व अन्य मौखिक भाषा विकास गतिविधियों हेतु एक सहज परिवेश उपलब्ध कराना; शिक्षण व सीखने में बच्चे की संस्कृति और उसके संदर्भगत ज्ञान के उपयोग सहित भाषा 1 (L1) और भाषा 2 (L2) या भाषा 3 (L3) के मिश्रित उपयोग की स्वीकृति और प्रोत्साहन; पढ़ना और लिखना सिखाने में बच्चे की भाषा 1 (L1) की मदद लेना। बच्चे की भाषा 1 (L1) में उच्च गुणवत्ता वाली शैक्षिक सामग्री उत्पादित करने के लिए प्रयास किए जाने चाहिए।

छोटे बच्चों के लिए उनकी भाषा 2 (L2) या भाषा 3 (L3) (जो अंग्रेजी भी हो सकती है) में धाराप्रवाह ढंग से बोलने का कौशल हासिल करने के लिए एक स्वाभाविक, संप्रेषण केंद्रित पद्धति अपनाई जाने की ज़रूरत होती है जो उनकी भाषा 1 (L1) पर आधारित हो। इसके लिए कुछ कार्यनीतियाँ निम्नवत हैं— अभिनय, गीतों, धुनों, रोचक खेलों, वाक्यांशों व सरल वाक्यों में छोटी बातचीत (असली वस्तुओं या तस्वीरों के आधार पर) का उपयोग; बहुभाषिक पद्धति अपनाना, जिसमें बच्चे की भाषा 1 (L1) में परिचित कहानियाँ पहले शिक्षक द्वारा कई बार सुनाई जाएँ और फिर उन्हें भाषा 2 (L2) या भाषा 3 (L3) में सुनाया जा सकता है; लक्षित शब्दों और संरचनाओं का उपयोग, कहानियों का उपयोग और उन्हें वाक्य विन्यास के दोहराव के साथ बोलकर पढ़ना।

बुनियादी स्तर के समाप्त होते-होते कम-से-कम दो भाषाओं में बच्चों को मज़बूत मौखिक भाषा कौशल, (जिसमें सुनने का बोध, समुचित शब्द भंडार और मौखिक अभिव्यक्ति शामिल है) विकसित करना चाहिए। ये मौखिक कौशल, बुनियादी स्तर के अंत तक, कम-से-कम एक भाषा (और लिपि) में स्वतंत्र रूप से पढ़ना और लिखना सीखने का महत्वपूर्ण पहलू निर्मित करते हैं।

(ग) पढ़ने और लिखने की अवधारणा को प्रारंभ में R1 भाषा के माध्यम से विकसित किया जाना चाहिए, जहाँ तक संभव हो, यह भाषा बच्चे की गृह भाषा L1 को होना चाहिए। (R1 वह भाषा है जिसमें बच्चा सबसे पहले पढ़ने और लिखने की अवधारणा सीखता है, R2 इसी तरह की दूसरी और R3 इसी तरह की तीसरी भाषा है)

पढ़ने और लिखने की अवधारणा (उदाहरणार्थ– उद्गामी साक्षरता, समझकर पढ़ना और लेखन अभिव्यक्ति) को मौखिक भाषा के विकास, अर्थ निर्माण (जिसमें चित्रों व अन्य प्रतीक व्यवस्थाओं, जैसे– इशारे, चेहरे के भाव, कला, संगीत, नृत्य, नाटक व खेल का मतलब समझना और व्याख्या करना शामिल है) और छपी हुई सामग्री के माध्यम विकसित किया जाता है। इसलिए बुनियादी स्तर पर मौखिक भाषा कौशलों के प्रारंभिक विकास पर ज़ोर के साथ प्रारंभ में ही मुख्यत: R1 (अच्छा हो कि वह भाषा L1 हो, पर कुछ स्थितियों में वह L2 भी हो सकती है, जैसा कि ऊपर बिंदु (क) में बताया गया है) में पर्याप्त छपी हुई सामग्री से भी बच्चे का संपर्क कराया जाना चाहिए। यह छपी हुई सामग्री चित्र या कहानी की किताब होनी चाहिए। R1 या R2 की वर्णमाला के अक्षर, हर भाषा के सरल शब्द और वाक्यांश, जिनके साथ चित्र, आकृतियाँ और संख्याएँ भी हों, को बच्चों की आँख के अनुरूप ऊँचाई पर स्कूल की दीवारों पर प्रदर्शित किया जाना चाहिए। कुछ मामलों में R1 और R2, दोनों में अक्षर समान हो सकते हैं, पर कुछ में वे भिन्न हो सकते हैं।

चूँकि पढ़ना और लिखना उस तरह स्वाभाविक रूप से नहीं आता जैसे मौखिक भाषा आती है, इसलिए अर्थपूर्ण संदर्भों के माध्यम से बच्चों की पर्याप्त मदद की जानी चाहिए। बच्चे पहले लिखे हुए शब्दों वाली चित्र पुस्तकों (लिखित शब्दों के दृश्य प्रदर्शन के लिए) से गुज़रते हैं, फिर बोलकर पढ़ने वाली पुस्तकों से (जिन्हें बोलकर इसलिए पढ़ा जाता है ताकि बच्चे स्वनिम (फोनीम) और लेखिम (ग्राफिम) के बीच संबंध बना सकें)। फिर वे साझा रूप से पढ़ते हैं, फिर निर्देशित रूप से पढ़ने तक पहुँचते हैं। आखिर में वे पहले सरल और फिर बाद में जटिल कहानियों और पाठों (उदाहरणार्थ कक्षा की किताबों) के अपेक्षाकृत ज़्यादा स्वतंत्र पाठ की ओर बढ़ते हैं। बच्चों की अधिकतम रुचि के लिए चित्र और कहानी वाली पुस्तकों को रोचक, रंगीन, दिलचस्प होना चाहिए। उन्हें ऐसा होना चाहिए जिससे बच्चे अपने को जोड़ सकें, उनकी जड़ें स्थानीय और भारतीय संदर्भ में होनी चाहिए।

फोनिक्स/डिकोडिंग के शिक्षण को खेलों और बातचीत के माध्यम से अधिक रोचक बनाया जा सकता है (उदाहरणार्थ– तुम और कौन-से शब्द जानते हो जिनमें 'ब' ध्वनि का उपयोग होता है, अपने होठों से 'ब' के अलावा और कौन-सी ध्वनि निकाल सकते हो, कौन-सा शब्द आगे और पीछे से एक जैसा है)।

लिखने के प्रति दृष्टिकोण यह होना चाहिए कि यह अभिव्यक्ति का एक रूप है, कोई चुनौती नहीं। बच्चे का पहला कदम चित्र बनाना होता है, फिर वह अपने चित्र का नाम लिखता है (प्रारंभ में वह स्व-वर्तनी

(inventive spelling) का उपयोग कर सकता है, जो अर्थपूर्ण साक्षरता में एक महत्वपूर्ण कदम है), फिर उसे यह बोध होता है कि कई शब्दों (वाक्यांशों) के ज़रिये वह ज़्यादा अभिव्यक्त कर सकता है और आखिर में वह पूरे वाक्यों की ओर बढ़ता है। इसलिए अभ्यास पुस्तिकाओं, कुछ लिखने की ज़रूरत वाले खेलों और लिखने के अन्य निर्देशित रूपों के माध्यम से बच्चों को अभ्यास कराया जाना चाहिए।

कक्षा 1 और 2 में जब बच्चे पढ़ना और लिखना सीख रहे हों, अर्थ-केंद्रित और कौशल-केंद्रित, दोनों तरह की गतिविधियों की ज़रूरत होती है। शिक्षकों को निजी कौशलों (उदाहरणार्थ– डिकोडिंग, प्रवाह, वर्तनी, सही तरीके से लिखना आदि) और समूची भाषा के अर्थपूर्ण उपयोग के लिए पढ़ने, लिखने व मौखिक भाषा विकास की गतिविधियों का अवसर उपलब्ध कराने के बीच बेहतर संतुलन स्थापित करने की ज़रूरत है।

स्कूल में ऐसी कार्यपुस्तिकाएँ होनी चाहिए जो बच्चों को पढ़ने और लिखने के नियमित अभ्यास का अवसर दें। इनमें दिए कार्यपत्रक ग्रेडवार भी होने चाहिए।

(घ) एक बार जब बच्चे की R1 में पढ़ने और लिखने की अवधारणा विकसित हो जाए, तब अतिरिक्त लिपियों से उन्हें धीरे-धीरे परिचित कराया जाना चाहिए। लक्ष्य यह होना चाहिए कि आठ वर्ष की आयु (कक्षा 3) तक वे R1 में स्वतंत्र रूप से पढ़ और लिख सकें।

सीखने को बढ़ाने के लिए प्रचुर मात्रा में कविताओं, गानों, साहित्य, नाटक, खेलों और दूसरी रचनात्मक अंतर्क्रियाओं के साथ R2 और R3 में भी पढ़ने और लिखने को लेकर यही पद्धति चाहिए— बोलकर पढ़ने से शुरू करना, खेल, फिर फोनिम-ग्राफिम के संबंधों को समझने के लिए गतिविधियाँ, साझा रूप से पढ़ना, फिर निर्देशित पठन और लिखने के अभ्यास। यह अभ्यास बच्चों को अंततः स्वतंत्र लेखन तक ले जाएगा।

चूँकि पढ़ने और लिखने की अवधारणा R1 के माध्यम से सीखी जा चुकी है, इसलिए R2 और R3 के लिए नई लिपि सीखना अवधारणात्मक रूप से ज़्यादा आसान होगा।

अगर R1, R2 व R3 से L1 अलग है तो R1, R2 और R3 की संवादात्मक भाषा के रूप में कक्षाएँ L1 की मदद से चलती रहेंगी, जैसा कि ऊपर बताया गया है। सभी भाषाओं में बच्चे की बोलने, पढ़ने और लिखने की क्षमता में प्रगति के साथ ही बुनियादी स्तर और उसके बाद भी उद्देश्य यह होना चाहिए कि शिक्षण उच्चस्तरीय चिंतन वाले प्रश्नों पर केंद्रित हो।

बॉक्स 3.2 क

बुनियादी स्तर में भाषा से संबंधित मुख्य विचारों का सारांश

जहाँ तक संभव हो, बुनियादी स्तर पर शिक्षण की भाषा गृह भाषा (L1) होनी चाहिए। जहाँ यह संभव न हो, शिक्षण और सीखने की गतिविधियों में बच्चे के L1 के औपचारिक उपयोग की मदद के लिए और L1 व स्कूल की भाषा के बीच पुल बनाने के लिए कदम उठाए जाने चाहिए।

बच्चों को कई मौखिक भाषाओं से जितनी जल्दी हो सके, गहन संपर्क कराया जाना चाहिए और इसे अंतर्क्रियात्मक गतिविधियों (उदाहरणार्थ– बातचीत, टी.पी.आर., कविता, गानें, नाटक, अनुभव-वर्णन) के माध्यम से बढ़ाया जाना चाहिए। उद्देश्य यह हो कि बच्चा कक्षा 3 तक दो भाषाओं में मौखिक भाषा दक्षता (भले ही समान स्तर की नहीं) हासिल कर ले।

मौखिक भाषा विकास से प्रारंभिक संपर्क, अर्थ निर्माण गतिविधियों और छपी हुई सामग्री के पढ़ने और लिखने की अवधारणा शुरू में R1 के माध्यम विकसित की जाती है, जो अधिकतम संभव रूप में L1 होती है। स्वनिम (फोनीम) और लेखिम (ग्राफिम) तथा उनके बीच के संबंध (डिकोडिंग) को समझना खेलों और अंतर्क्रिया वाले अभ्यासों के माध्यम से किया जाएगा।

- *R1 में पढ़ने का कौशल पहले चित्र और कहानी पुस्तकों, फिर बोलकर पढ़ी जाने वाली पुस्तकों, फिर साझा रूप से पढ़ने, फिर निर्देशित रूप से पढ़ने और फिर कक्षा पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से अधिक स्वतंत्र पठन के द्वारा विकसित किया जाएगा। साथ ही कविता, गाने, साहित्य, नाटक, खेल जैसी अंतर्क्रियात्मक गतिविधियों के माध्यम से सीखने को बढ़ाया जाएगा। जहाँ R1, L1 नहीं होगी, वहाँ L1 के साथ अधिकतम संभव सहयोग किया जाएगा।*
- *चित्रकारी, नाम लेखन, स्व-वर्तनी (inventive spelling), कार्यपुस्तिका लेखन, लिखने की ज़रूरत वाले खेलों के माध्यम से R1 में लेखन कौशल विकसित किया जाएगा जो आगे चलकर शब्दों व वाक्यांशों के अधिक स्वतंत्र लेखन से होते हुए अर्थपूर्ण व रचनात्मक संदर्भों वाले पूरे वाक्यों तक जाएगा।*

बाद में R2 और R3 में पढ़ने और लिखने का कौशल विकसित करने की भी यही पद्धति रहेगी। उद्देश्य यह होगा कि कक्षा 3 तक बच्चे साक्षरता कौशल हासिल कर लें।

नोट– इस अध्याय में हमने अवधारणात्मक रूप से स्कूल में बच्चे द्वारा पढ़ने और लिखने के लिए सीखी गई भाषा (R1 और R2) तथा बच्चा जिन भाषाओं से मौखिक रूप से परिचित होता है (L1 और L2), के बीच अंतर किया है।

चूँकि L1 और L2 को आमतौर पर स्कूलों में सीखने की भाषा समझा जाता है, हमने बाकी दस्तावेज़ में L1 और L2 को R1 और R2 के पर्याय के रूप में उपयोग किया है।

अध्याय 4

शिक्षणशास्त्र

एक सकुशल, सुरक्षित, आरामदायक और आनंदमय कक्षा वातावरण बच्चों को बुनियादी स्तर पर बेहतर सीखने एवं अधिक हासिल करने में मदद कर सकता है। इस स्तर में अनुभव, प्रयोग और अन्वेषण के पर्याप्त अवसरों के साथ देखभाल व जवाबदेही शिक्षणशास्त्र की पहचान है।

खंड 4.1 बुनियादी स्तर के लिए शिक्षणशास्त्र के सिद्धांतों की रूपरेखा तैयार करता है, जिसके आधार पर शेष अध्याय को स्पष्ट किया गया है। योजना बनाना अच्छे शिक्षण की ओर पहला कदम है, जिसे खंड 4.2 में बताया गया है। जब बच्चों के साथ शिक्षक का रिश्ता अच्छे से विकसित होता है, तब बच्चे फलते-फूलते हैं। इस स्थिति को किस तरह हासिल किया जा सकता है, इस पर खंड 4.3 में ध्यान केंद्रित किया गया है। इस आयु के बच्चे खेल के माध्यम से सीखते हैं। खंड 4.4 में खेल के माध्यम से सीखने के विभिन्न तरीकों का विवरण दिया गया है। खंड 4.5 साक्षरता और संख्या ज्ञान के शिक्षण पर केंद्रित है। संपूर्ण शैक्षणिक प्रक्रिया एक सकारात्मक कक्षा-संस्कृति से निर्मित होती है, जिसे खंड 4.6 में बताया गया है। खंड 4.7 कक्षा के वातावरण की बात करता है, जो इस तरह के शिक्षणशास्त्र को आधार प्रदान कर सकता है।

खंड 4.1
शिक्षणशास्त्र के सिद्धांत

बुनियादी स्तर के लिए उपयुक्त कक्षा में शिक्षण रणनीतियों से जुड़े सभी निर्णयों में शिक्षणशास्त्र के सिद्धांत काम आते हैं। नीचे दिए गए सिद्धांत कक्षा संबंधी योजना के बारे में बताते हैं—

(क) इस स्तर पर विकास और सीखने के लिए एक सुरक्षित और उत्साहवर्द्धक परिवेश मूल आधार होता है।

i. गतिविधियाँ आनंददायक होती हैं और बच्चे को सभी इंद्रियों के उपयोग के लिए प्रोत्साहित करती हैं।
ii. कक्षाएँ विविधता और चुनौतियों के अवसर प्रदान करती हैं।
iii. शैक्षणिक विकल्प चुनते वक्त शारीरिक और भावनात्मक सुरक्षा सर्वोपरि है।
iv. कक्षा-कक्ष स्वच्छ, आनंददायक, हवादार और अच्छी तरह से प्रकाशित शिक्षण स्थान है।

(ख) इस स्तर पर सीखने और विकास के लिए खेल केंद्रीय होता है।

i. खेल मुक्त, मार्गदर्शित या संरचित हो सकता है।
ii. बातचीत, कहानियाँ, संगीत, गतिविधि, कला, शिल्प और खिलौने खेल का हिस्सा और बच्चों को खेल में शामिल करने के तरीके हैं। अन्य तरीकों को निर्मित किया जा सकता है।
iii. मैदानी खेलों को सक्रिय रूप से प्रोत्साहित किया जाता है।

(ग) शिक्षक और बच्चे के बीच स्वस्थ संबंधों को बढ़ावा देना सीखने-सिखाने का आधार है।

i. बच्चों की बात ध्यान से सुनना और पूरी तरह से 'उनके साथ रहना' महत्वपूर्ण है।

(घ) इस स्तर में शारीरिक विकास बहुत महत्वपूर्ण होता है।

i. कक्षा की गतिविधियाँ सूक्ष्म गत्यात्मक कौशलों को बेहतर करती हैं और शारीरिक गति को बढ़ावा देती हैं।
ii. यह सामाजिक-भावनात्मक और संज्ञानात्मक विकास में भी मदद करता है।

(ङ) हर बच्चा अपनी गति से सीखता है और सीखने की ज़रूरतों पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान दिया जाता है।

i. एक ही स्थिति पर अलग-अलग बच्चे अलग-अलग प्रतिक्रिया देते हैं।
ii. समान स्थितियों के लिए एक ही बच्चा अलग-अलग समय पर, अलग-अलग प्रतिक्रिया दे सकता है।
iii. सभी बच्चों को कक्षा में इस तरह से भाग लेने के अवसर प्रदान किए जाते हैं जो हर एक बच्चे के लिए सबसे बेहतर हों।

(च) बुनियादी स्तर में बच्चे गृह भाषा में सबसे अधिक सहज होते हैं और सबसे अच्छा सीखते हैं।

i. शिक्षण और आपसी संवाद की भाषा (the language of instruction and transaction) बच्चे की गृह भाषा/मातृभाषा/परिचित भाषा है।

ii. कक्षा में गृह भाषा के उपयोग को प्रेरित और प्रोत्साहित किया जाता है।

iii. जब गृह भाषा स्कूल की भाषा से अलग होती है और बच्चे को स्कूल की भाषा की तरफ आगे बढ़ाया जाता है, तब यह परिवर्तन सौम्य ढंग से होता है और इसे गृह भाषा का संबलन (scaffolded) दिया जाता है।

iv. जितना संभव हो सके, बच्चों को अभिव्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है और जिस भी भाषा में वे बोलते हैं, उसके लिए उन्हें कभी आँका या डाँटा नहीं जाता है।

(छ) कक्षा में सीखने के अनुभव बच्चों के जीवन और उनके संदर्भों से गहराई से जुड़े हुए हैं।

i. स्थानीय कहानियों, गीत, बालगीत, खेल, शिल्प, सामग्री का व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है।

ii. कक्षा में बच्चों की गृह भाषा के उपयोग का स्वागत और दरअसल इसे प्रोत्साहित किया जाता है।

(ज) सीखने के अनुभव बच्चों की पहले की समझ के आधार पर तैयार किए जाते हैं।

i. इस सिद्धांत के आधार पर योजना सरल से जटिल विचारों और अवधारणाओं की ओर बढ़ती है।

ii. गृह भाषा का उपयोग करने से यह आसान हो जाता है।

(झ) कक्षा प्रक्रिया विकास के सभी क्षेत्रों को संबोधित करती है।

i. शारीरिक, सामाजिक-भावनात्मक और नैतिक विकास, संज्ञानात्मक, सौंदर्यबोध और सांस्कृतिक विकास से संबंधित गतिविधियों के बीच संतुलन बनाए रखा जाता है।

खंड 4.2
शिक्षण के लिए योजना

शिक्षण सोच-समझकर किया गया कार्य है जो बच्चों के सीखने के उद्देश्य से किया जाता है। सोच-समझकर किए गए इस कार्य की अच्छी तरह से योजना बनाना आवश्यक है। अच्छे शिक्षण के लिए योजना बनाना महत्वपूर्ण है।

योजना में दक्षताओं व प्राप्त किए जाने वाले प्रतिफलों के अनुसार कक्षा कार्यों का निर्माण एवं उसकी व्यवस्था, अनुकरण किए जाने वाले शिक्षणशास्त्र (पेडागॉजी), उपयोग किए जाने वाले संसाधन और किए जाने वाले आकलन शामिल हैं। योजना में बच्चों के लिए सहायक गतिविधियाँ, गृहकार्य और जो पढ़ाया जा रहा है, उससे संबंधित सामग्री को कक्षा में प्रदर्शित करना भी शामिल है।

योजना पूरे शैक्षणिक वर्ष, अवधि, सप्ताह, दिन और एक पाठ के लिए बनाई जाती है। राज्य/जिला/विद्यालय की वार्षिक और आवधिक योजनाओं में अलग-अलग जिम्मेदारियाँ हो सकती हैं। इसलिए शिक्षकों को सप्ताह, दिन और पाठ के लिए योजना बनानी चाहिए।

4.2.1 शिक्षण योजना के घटक

बेहतरीन योजना के लिए पाठ्यचर्या के उद्देश्यों, दक्षताओं और सीखने के प्रतिफलों की समझ की आवश्यकता होती है, साथ ही जिन बच्चों के लिए योजना बनाई जा रही है, उनके पूर्व-ज्ञान और उपलब्ध सीखने-सिखाने की सामग्री और उपयोग की जाने वाली विषयवस्तु को ध्यान में रखना आवश्यक होता है।

शिक्षण योजना के प्रमुख घटक हैं—

(क) दक्षता, सीखने के प्रतिफल और लक्षित पाठ उद्देश्य;

(ख) उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए शिक्षक-निर्देशित, शिक्षक-मार्गदर्शित और/या बच्चों द्वारा संचालित गतिविधियाँ;

(ग) गतिविधियों की अवधि और क्रम;

(घ) गतिविधियों में उपयोग की जाने वाली विषयवस्तु और सामग्री;

(ङ) कक्षा की व्यवस्था, जैसे– बैठने, प्रदर्शित करने, सामग्री की व्यवस्था;

(च) जिन बच्चों को अतिरिक्त मदद की ज़रूरत है, उनके लिए खास रणनीतियों की आवश्यकता;

(छ) आकलन के तरीके;

बॉक्स 4.2 क

पाँच चरणों वाली सीखने की प्रक्रिया—'पंचादि'—उस क्रम को तैयार करने के लिए एक अच्छा मार्गदर्शक है जिसे एक शिक्षक, शिक्षण-योजना बनाने में अपना सकता है।

चित्र 4.2 क – पंचादि— पाँच चरणों वाली सीखने की प्रक्रिया

- **अदिति (परिचय)**– बच्चे के पूर्व-ज्ञान से जोड़कर एक नई अवधारणा (टॉपिक) का परिचय देना पहला स्तर है। बच्चे सवाल पूछकर, खोजबीन करके और विचारों व सामग्री के साथ प्रयोग करके शिक्षक की मदद से नई अवधारणा के बारे में आवश्यक जानकारी एकत्र करते हैं।
- **बोध (अवधारणात्मक समझ)**– दूसरे स्तर में बच्चे खेल, पूछताछ, प्रयोग, चर्चा या पढ़ने के माध्यम से मूल अवधारणाओं को समझने की कोशिश करते हैं। शिक्षक प्रक्रिया को देखता है और बच्चों का मार्गदर्शन करता है। शिक्षण योजना में बच्चों द्वारा सीखी जाने वाली अवधारणाओं की सूची होती है।
- **अभ्यास**– तीसरा स्तर कई दिलचस्प गतिविधियों के माध्यम से समझ और कौशल को मज़बूत करने के लिए अभ्यास के बारे में है। अवधारणात्मक समझ और दक्षताओं की प्राप्ति को सुदृढ़ करने के लिए शिक्षक समूह कार्य या छोटी परियोजनाओं (प्रोजेक्ट) का आयोजन कर सकते हैं।
- **प्रयोग (अनुप्रयोग)**– चौथा स्तर बच्चे के दैनिक जीवन में अर्जित समझ को लागू करने के बारे में है। यह विभिन्न गतिविधियों और छोटी परियोजनाओं के माध्यम से पूरा किया जा सकता है।
- **प्रसार (विस्तार)**– पाँचवाँ स्तर दोस्तों के साथ बातचीत के माध्यम से अर्जित समझ को अभिव्यक्त करने के बारे में है, जैसे– एक-दूसरे को नई कहानियाँ सुनाना, नए गाने गाना, साथ में नई किताबें पढ़ना और एक-दूसरे के साथ नए खेल खेलना। सीखे गए प्रत्येक नए विषय के लिए, हमारे मस्तिष्क में एक तंत्रिका मार्ग का निर्माण होता है। ज्ञान बाँटने से हमारा ज्ञान मज़बूत होता है। यदि हम सीखे हुए को नहीं सिखाते हैं तो तंत्रिका मार्ग अधूरा है। शिक्षण सीखने को स्पष्ट और दीर्घकालिक बनाता है।

4.2.2 योजना के लिए अन्य महत्वपूर्ण विचार

(क) विविधतापूर्ण या अलग-अलग शिक्षण के लिए योजना

एक शिक्षक अपनी कक्षा की योजना इस तरह से कैसे बना सकता है जो अलग-अलग रुचियों और क्षमताओं वाले बच्चों को अर्थपूर्ण ढंग से जोड़े और बेहतर अधिगम को प्रोत्साहित करे?

इसके बारे में सोचने का एक तरीका अलग-अलग शिक्षण (differentiated instruction) है, यानी बच्चों की व्यक्तिगत ज़रूरतों के अनुसार शिक्षण प्रक्रिया को तैयार करना। अलग-अलग बच्चों के लिए सामग्री, सीखने के तरीके, सामग्री और आकलन अलग-अलग हो सकते हैं।

किसी एक बच्चे के लिए ऐसा करना अक्सर मुश्किल होता है, मुख्यत: एक बड़ी कक्षा में। उस स्थिति में शिक्षक समान आवश्यकताओं वाले बच्चों के छोटे समूहों की पहचान कर सकता है और उन्हें एक समूह के रूप में अलग-अलग तरीके से संबोधित कर सकता है।

इसके लिए योजना बनाने से पहले शिक्षक के लिए आवश्यक है कि वह बच्चों का ध्यानपूर्वक निरीक्षण करे और उनके बारे में अधिक-से-अधिक जानकारी जुटाए (जैसे– वे एक-दूसरे के साथ कैसे बातचीत करते हैं, वे किसी खास खेल को ही क्यों चुनते हैं, वे आपस में किस तरह की बातचीत करते हैं, वे सामग्री के साथ कैसे काम करते हैं, वे मौखिक भाषा का उपयोग कैसे करते हैं और लिखित शब्द पर उनकी प्रतिक्रिया क्या होती है)।

योजना के लिए कुछ संभावनाएँ इस प्रकार हो सकती हैं—

i. यदि शिक्षक ब्लॉकों के साथ खेलने पर एक सत्र की योजना बना रहे हैं, तो वह अलग-अलग बच्चों के लिए अलग-अलग काम करने की योजना बना सकते हैं। कुछ बच्चे मीनारों का निर्माण करते हैं और शिक्षक उनसे पूछ सकते हैं कि वे मीनार क्यों बना रहे हैं, उन्होंने कितने ब्लॉकों का उपयोग किया है, उन्होंने किन रंगों का उपयोग किया है और क्यों। कुछ बच्चों को एक ही रंग या एक ही आकार के ब्लॉकों की पहचान करने और विभिन्न आकारों और रंगों के ब्लॉकों की तुलना करने के लिए कहा जा सकता है। अन्य बच्चों को कुछ बनाने के लिए ब्लॉक का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है, उदाहरणार्थ बिस्तर, घर, या खेलने के लिए व्यक्तिगत रूप से उनकी ज़रूरत की चीज़ें, जैसे– मोबाइल फोन या कार।

ii. अगर शिक्षक बच्चों को बगीचे में पौधे या कक्षा में ही गमले में लगे पौधे दिखाने की योजना बनाते हैं, तो कुछ बच्चों को पौधों के बीच आकार, बनावट, गंध और रंग का अंतर बताने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। अन्य बच्चों को पौधों को छूने और उनके अंगों के नाम बताने के लिए कहा जा सकता है। दूसरे कुछ बच्चों को पौधों के चित्र बनाने के लिए कहा जा सकता है। जो बच्चे पढ़ सकते हैं, वे चित्र तैयार होने के बाद अन्य बच्चों को उस पर उपयुक्त लेबल लगाने में मदद कर सकते हैं।

iii. तितलियों के बारे में एक सत्र की योजना बनाते समय, शिक्षक बच्चों के एक समूह के लिए तितलियों पर एक कहानी की किताब, दूसरे के लिए एक छोटी ऑडियो-विज़ुअल क्लिप, तीसरे समूह के लिए एक दिलचस्प तितली पहेली और चौथे के लिए एक तितली मॉडल का उपयोग कर सकते हैं।

iv. जो बच्चे पढ़ने के विभिन्न स्तरों पर हैं, उनके लिए शिक्षक विभिन्न पाठों या पठन सामग्री का उपयोग करने की योजना बना सकते हैं।

v. शिक्षक विभिन्न स्तरों के कार्यपत्रकों का उपयोग करने की योजना बना सकते हैं। सरल कार्यपत्रक से शुरू करके और कक्षा में बच्चों के विभिन्न समूह क्या करने में सक्षम हैं, इसके अनुसार अधिक जटिल कार्यपत्रक बनाए जा सकते हैं।

(ख) संबलन और जिम्मेदारी से क्रमिक मुक्ति (Scaffolding and Gradual Release of Responsibility)

अनुभवी बच्चों या वयस्कों से व्यवस्थित मदद मिलने पर बच्चे आसानी से नए ज्ञान सीख सकते हैं। नए ज्ञान सीखना एक चुनौती होनी चाहिए, लेकिन चुनौती बच्चों की पहुँच के भीतर होनी चाहिए— कुछ ऐसा जो उनके मौजूदा ज्ञान से संबंधित हो और एक अनुभवी व्यक्ति के सहयोग से किया जा सके। इसलिए बच्चों को सीखने के लिए व्यवस्थित संबलन की ज़रूरत होती है। संबलन का मतलब शिक्षण के दौरान सहायता, संरचना और मार्गदर्शन देना है। यह संबलन 'जिम्मेदारियों से क्रमिक मुक्ति' (Gradual Release of Responsibility; GRR) को ध्यान में रखकर प्रदान किया जा सकता है। इसमें शिक्षक पहले मॉडल या विचारों या कौशलों की व्याख्या करते हैं, उसके बाद बच्चे और शिक्षक उन्हीं विचारों और कौशलों पर एक साथ काम करते हैं जहाँ शिक्षक मार्गदर्शित सहयोग प्रदान करते हैं; और अंत में, बच्चे व्यक्तिगत रूप से और स्वतंत्र रूप से अभ्यास करते हैं।[10]

गतिविधियों की योजना बनाई जा सकती है और उसे जिम्मेदारी से क्रमिक मुक्ति का पालन करने के लिए डिज़ाइन किया जा सकता है।

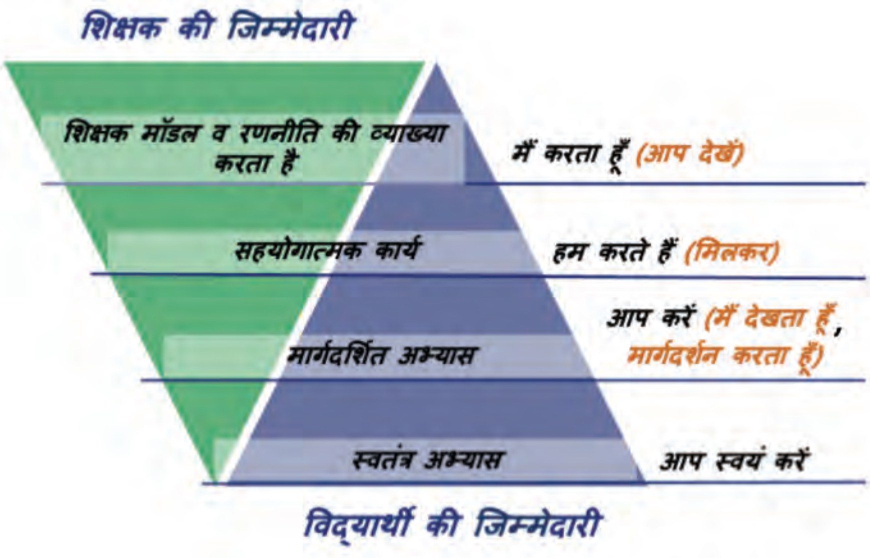

चित्र 4.2 क– जिम्मेदारी से क्रमिक मुक्ति

जिम्मेदारी से क्रमिक मुक्ति की प्रक्रिया—

- पहला स्तर : मैं करता हूँ— शिक्षक मुख्य विचारों या कौशलों का प्रदर्शन/व्याख्या/मॉडल करता है।
- दूसरा स्तर : हम करते हैं— शिक्षक और बच्चे विचारों या कौशलों पर एक साथ काम करते हैं।
- तीसरा स्तर : आप कीजिए— बच्चे स्वतंत्र रूप से विचारों या कौशलों पर अभ्यास या काम करते हैं।

साक्षरता और संख्या ज्ञान सीखने के लिए यह तरीका अच्छी तरह से काम करता है, लेकिन यह भी याद रखना आवश्यक है कि साक्षरता या संख्या ज्ञान का हर कौशल इस तरह से नहीं सीखा जा सकता है। उनकी कक्षा में कौन-सा तरीका सबसे बेहतरीन ढंग से काम कर सकता है, इसका निर्णय लेकर शिक्षक इसे अपनी शिक्षण योजना में शामिल कर सकते हैं।

(ग) गृहकार्य

जब हम 'गृहकार्य' शब्द कहते हैं, तो हमारे दिमाग में तुरंत एक बच्चे की तस्वीर आती है जो घंटों एक कॉपी पर पृष्ठ-दर-पृष्ठ लिखे जा रहा है।

बुनियादी स्तर पर बच्चों के लिए यह बिल्कुल नहीं होना चाहिए!

गृहकार्य मज़ेदार हो सकता है और एक अलग तरह की दिलचस्प चुनौती प्रदान करता है। यह स्कूल को बच्चे के घर से जोड़ने में भी मदद कर सकता है। बच्चे घर पर क्या कर सकते हैं, इसके कुछ उदाहरण नीचे दिए गए हैं—

i. अपने दादा-दादी से उनके नाम और उनके माता-पिता के नाम पूछें, इसके बारे में स्कूल में बात करें।

ii. अपने घर या अपने पड़ोसी के घर के बाहर बनाई गई रंगोली को देखें, इसे स्कूल में बनाने का प्रयास करें।

iii. अपने माता या पिता या चाची या पड़ोसी की मदद करें, स्कूल में इसके बारे में बात करें।

iv. अपने घर के आस-पास चारों ओर अवलोकन करें और फूलों के विभिन्न रंगों को देखें, स्कूल में इसके बारे में बात करें।

v. कक्षा पुस्तकालय से एक कहानी की किताब उधार लें, घर पर उसके साथ समय बिताएँ, चित्रों को देखें, शब्दों को पढ़ने और कहानी को समझने की कोशिश करें।

शिक्षक इसके लिए योजना तभी बना सकता है, जब बच्चे स्कूल में अच्छी तरह से रच-बस गए हों और एक सुविधाजनक दिनचर्या में आ गए हों। ऐसा करते समय, शिक्षक को यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि बच्चे इन कार्यों को स्वयं कर सकें और माता-पिता या अन्य लोगों को उनके लिए कुछ करने की ज़रूरत न हो।

योजना पर दृष्टांतों के लिए कृपया अनुलग्नक 2 देखें।

खंड 4.3
शिक्षकों और बच्चों के बीच सकारात्मक संबंध का निर्माण

जब हम अपनी कक्षाओं में जाते हैं, तो हम क्या देखते हैं? ये आँखें फैलाए बैठे बच्चे कौन हैं?

वे बुद्धिमान हैं, देखने में तेज हैं और अपने आस-पास की हर चीज़ में रुचि रखते हैं। वे लगातार सवाल पूछते हैं। कभी-कभी वे चुपचाप किसी चीज़ का लंबे समय तक अवलोकन कर सकते हैं, तो कई बार वे कुछ ही मिनटों में रुचि खो देते हैं। कभी-कभी उन्हें कूद-फाँद करने और घूमने की ज़रूरत होती है, तो कभी वे खामोशी से कहानी का आनंद लेते हैं। कभी-कभी रोते-बिलखते हुए घर जाने की जिद करते हैं। साथ ही, वे दिलासा और खुशामद पसंद करते हैं और रुकने को लेकर आश्वस्त होने के लिए तैयार रहते हैं! वे जिज्ञासु और विचारशील, प्रफुल्लित और दृढ़ निश्चयी, स्नेही और साहसी, मज़ाकिया और निडर हो सकते हैं।

इस अवस्था में अपने घर से दूर इतना लंबा समय बिताने का बच्चों का यह पहला अनुभव हो सकता है। बच्चों को कोमलता, पोषण और प्यार की ज़रूरत होती है। उनके साथ काम करना, उनके साथ रहना, उनकी देखभाल करने का अर्थ है, उन सभी अलग-अलग व्यक्तित्वों का आनंद लेना!

एक शिक्षक को प्यार और देखभाल करने वाला, स्नेही, सच्चा, धैर्यवान, शांत, समझदार और समानुभूति से युक्त होना चाहिए; साथ ही हमें अपने बच्चों पर बिना जल्दबाजी किए समय और ध्यान देने की ज़रूरत है।

बच्चों को शिक्षकों से जुड़ा हुआ महसूस होना चाहिए, वे भरोसा कर सकें, नई चीज़ों को सीखने में बेझिझक कोशिश कर सकें, इन सबसे वे बेहतर सीखने का प्रयास करते रहें।

4.3.1 शिक्षक किस तरह बच्चों के साथ सकारात्मक संबंध निर्माण कर सकते हैं

एक शिक्षक के रूप में हमारा काम यह सुनिश्चित करना है कि स्कूल में बच्चे रचे-बसें और अपने समय का आनंद लें। शिक्षक और बच्चे के बीच एक सुरक्षित, सकारात्मक संबंध भावनात्मक और संज्ञानात्मक विकास दोनों को समृद्ध करने वाला होता है।

ऐसे सकारात्मक संबंध बनाने के कुछ महत्वपूर्ण तरीके हैं—

(क) **प्रत्येक बच्चे को व्यक्तिगत रूप से जानना**– उनका घर-परिवार, उनकी रुचियाँ, वे चीज़ें जो वे स्कूल के बाहर करते हैं, उनके पालतू जानवर, उनके पसंदीदा लोग; यह प्रत्येक बच्चे को समझने और उनमें से प्रत्येक के लिए सीखने के अनुभवों की योजना बनाने में मदद करता है।

(ख) **बच्चों को सुनना**– उनकी कहानियाँ, घर पर होने वाली घटनाएँ, अपने बारे में उनकी राय, अपनी रुचि की विभिन्न चीजों पर उनकी राय और उनके विचार; यह देखभाल और सम्मान के भाव को प्रकट करता है, परस्पर विश्वास पैदा करता है, बच्चों को सोचने और संवाद करने तथा आत्मविश्वास हासिल करने में मदद करता है।

(ग) **बच्चों का अवलोकन करना–** बच्चों के साथ लगातार बातचीत करते हुए सप्रयास अवलोकन करना। इससे यह पता लगाने में मदद मिलती है कि प्रत्येक बच्चा विभिन्न स्थितियों के बारे में कैसे सोचता है, क्या तर्क करता है और क्या प्रतिक्रिया करता है, जो शिक्षण और सीखने की योजना बनाने के लिए महत्वपूर्ण है।

(घ) **बच्चों की सहज प्रतिक्रियाओं को प्रोत्साहित करना–** शब्द, कार्य, छोटी-छोटी समस्याओं को सुलझाना, घटना का विश्लेषण करना। यह बच्चों की स्वाभाविक रूप से रचनात्मक और साधन संपन्न प्रतिभा को सार्थक रूप से सक्षम बनाने में मदद करता है।

(ङ) **बच्चों की भावनाओं और मनोदशाओं को पहचानना और उन पर प्रतिक्रिया देना–** बातचीत, संगीत, कहानी सुनाने, कला, एक साथ खेलने के माध्यम से। यह बच्चों को बेहतर तरीके से व्यवस्थित करने, बेहतर सीखने, अपनी भावनाओं को धीरे-धीरे संचालित करने और दूसरों की भावनाओं को समझने और प्रतिक्रिया करने में मदद करता है।

(च) **नियमित रूप से उनके घरों का दौरा करना–** बच्चों और उनके घर के परिवेश को समझने और उनके साथ आपसी विश्वास और सकारात्मक संबंध बनाने के लिए यह महत्वपूर्ण है।

4.3.2 शिक्षक बच्चों को बेहतर तरीके से सीखने में कैसे मदद कर सकते हैं

प्रारंभिक कक्षाओं का उद्देश्य गतिविधियों और खेल के माध्यम से बच्चों के सीखने और विकास को बढ़ावा देना होता है। इसके माध्यम से बच्चों की मदद करने में शिक्षक कई तरह से महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जिनमें सबसे महत्वपूर्ण तरीके हैं—

(क) **सुनना–** शिक्षकों को दुनिया के बारे में छोटे बच्चों की बातचीत, पूछताछ, प्रश्नों और सिद्धांतों को ध्यान से सुनना और उनमें भाग लेना आवश्यक है। जैसे अगर कोई बच्चा कहता है, "एक मकड़ी की कई आँखें होती हैं", तो शिक्षक को इसे दोहराने और ज़ोर देकर फिर से कहने की आवश्यकता है कि "हाँ, तुम सही हो एक मकड़ी की कई आँखें होती हैं। तुम्हें यह कैसे पता चला?" इससे बच्चे को यह पता चलता है कि उसकी बात सुनी जा रही है और साथ ही यह बातचीत के विषय आगे बढ़ाने में मदद करता है। शिक्षक आगे उन्हें कीड़ों पर एक किताब देखने के लिए मार्गदर्शन कर सकते हैं, तथ्य साझा कर सकते हैं या एक वीडियो दिखा सकते हैं, जो उनकी जिज्ञासा और सीखने का विस्तार करे।

(ख) **मॉडलिंग–** अवलोकन और अनुकरण बच्चों के सीखने के तरीकों में से एक है। नई अवधारणाओं और कौशलों को सिखाने के लिए शिक्षकों को बच्चों हेतु विभिन्न व्यवहारों को सचेत रूप से मॉडल के रूप में प्रदर्शित करने की आवश्यकता है। जैसे संख्या-पूर्व कार्य में एकैक संगति सिखाने के लिए शिक्षक पाँच सिक्के और पाँच पत्थर लेकर यह दर्शा सकते हैं कि कैसे हर एक सिक्के की एक पत्थर के साथ संबद्धि बन रही है और बच्चों को संबंधित संख्या बता सकते हैं। वह बता सकता है कि एक पत्थर – एक सिक्का, दो पत्थर – दो सिक्के और आगे इसी तरह गिनती और इशारा करते जाएँ, जिसे बच्चे देखेंगे और दोहराएँगे। इसी तरह की मॉडलिंग गीत, अभिनय, मिट्टी के काम, शब्द उच्चारण जैसे सभी तरह के व्यवहारों में की जा

सकती है। इसलिए शिक्षकों को बच्चों की उपस्थिति में वे जो कह रहे हैं और कर रहे हैं, उसके प्रति सतर्क रहना चाहिए।

(ग) **समस्याएँ सुलझाना–** बच्चे जिज्ञासु होते हैं। वे लगातार आजमाने और गलतियाँ करने में लगे रहते हैं और नई चीज़ों की खोज करते हैं। जब बच्चे ब्लॉक, कार्डबोर्ड या रेत से खेलते हैं, तो वे साधारण समस्याओं को हल करने की कोशिश कर रहे होते हैं। रेत का एक अच्छा मॉडल बनाने के लिए रेत में कितना पानी मिलाना चाहिए? कार्डबोर्ड को इस तरह कैसे चिपकाएँ कि वह एक कर्व बना सके या खुला न रहे? ब्लॉक या डोमिनोज़ कैसे रखें ताकि टावर या डोमिनोज़ का अनुक्रम टूट न जाए? शिक्षक इस तरह के सवालों से बच्चों के सोचने-समझने के लिए संबलन प्रदान करते हैं (जैसे– क्या आप इससे अलग कुछ सोच सकते हैं?) या फिर शारीरिक मदद कर सकते हैं (जैसे– जब बच्चा गोंद लगा रहा हो, तब कार्डबोर्ड को थामना) या फिर पहेली सुलझाते समय सुझाव देना (जैसे– लाल टुकड़ा पहले रखने से शायद आसानी होगी)। इस तरह से संबलन या सहायता प्रदान करने से बच्चा अपने दम पर सोचने और समाधान ढूँढ़ने की कोशिश करता है, जिससे उसे सोचने-समझने में मदद मिलती है।

(घ) **प्रश्न पूछना–** बच्चे अपने विचारों को मौखिक रूप से बोलते हुए सोचते हैं। शिक्षक के सवाल उन्हें जवाब देते समय किसी खास विषय के बारे में गहराई से सोचने में मदद करेंगे। इससे भाषा के विकास में भी आधार मिलता है। उदाहरण के लिए, “आपने बड़े ब्लॉक को सबसे नीचे क्यों रखा?” पूछने से बच्चों को उनके द्वारा किए गए चुनाव के पीछे के कारण को मौखिक रूप से बताने में मदद मिलेगी। शिक्षक के लिए यह महत्वपूर्ण है कि बच्चे अपनी खेल गतिविधियों में क्या कर रहे हैं, इस पर ध्यान दें और आवश्यक सवाल पूछें।

(ङ) **सोचने को प्रेरित करना–** बच्चों के जानने, सोचने और करने के तरीकों को चुनौती देने से आस-पास की दुनिया के बारे में उनकी समझ गहरी होती है। बच्चे अपने आस-पास जो देखते और सुनते हैं, उसके आधार पर बनी-बनाई धारणाओं को अपनाते हैं। शिक्षक को सवाल करने, सोचने के लिए प्रेरित करने और वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रदान करने के लिए सक्रिय होना आवश्यक है। उदाहरण के लिए, एक ऐसी कहानी चुनना जो बस चालक या पायलट के रूप में महिलाओं या विशेष आवश्यकता वाले बच्चे की क्षमताओं के बारे में बात करती हो।

(च) **शोध करना–** शिक्षकों को बच्चों को यह सीखने के लिए उपकरण और कौशल प्रदान करने की आवश्यकता है कि किसी विषय में उनकी जाँच-पड़ताल/पूछताछ को कैसे समझा जाए, जैसे– कहाँ देखना है, किससे पूछना है, सवालों को हल करने और कुछ समझ हासिल करने के लिए क्या उपयोग करना है। बच्चों को बेहतर ढंग से समझने, उनके सवालों का जवाब देने और बच्चों के सीखने को बढ़ाने के लिए नई गतिविधियों को विकसित करने और संचालित करने के लिए शिक्षकों का स्वयं शोध करना आवश्यक है।

(छ) **बच्चों को स्वतंत्र बनाना–** अच्छी तरह से योजना बनाने से शिक्षकों को बच्चों को स्वतंत्र बनाने के लिए सक्रिय कदम उठाने में मदद मिलती है। पहले, उनके साथ मिलकर काम करें, फिर उन्हें एक नए कौशल या एक नई समझ में आत्मविश्वासपूर्ण बनाने के लिए धीरे-धीरे सहयोग को कम करते जाएँ।

4.3.3 शिक्षकों, परिवारों और समुदाय के बीच संबंध

परिवार बच्चों का पहला शिक्षक होता है। इसलिए, बच्चों के सीखने और उनके विकास में सहयोग देना स्कूलों और परिवारों की साझा जिम्मेदारी होती है।

बच्चे के सीखने और विकास में परिवार भागीदार होते हैं। परिवारों के लिए यह समझना और तदनुसार सहयोग करना महत्वपूर्ण है कि स्कूल में क्या होता है और इसी प्रकार शिक्षक के लिए घर पर बच्चे की स्थिति को समझना महत्वपूर्ण है।

शिक्षक और घर के बीच लगातार संवाद होते रहना चाहिए– इस काम को परिवार नियमित रूप से स्कूल आकर या शिक्षक नियमित रूप से बच्चे के घर जाकर कर सकते हैं।

बच्चे को बेहतर ढंग से समझने के लिए शिक्षकों और परिवार को मिलकर काम करना चाहिए और बच्चों के लिए अधिक सकारात्मक अनुभव का निर्माण करना चाहिए। जब परिवार सवाल पूछते हैं और अपने मन की शंकाओं को अभिव्यक्त करते हैं, तो वे स्कूली प्रक्रियाओं के बारे में अधिक जानने लगते हैं। जब शिक्षक बच्चे के घर के परिवेश को समझते हैं, तो वे बच्चे के लिए बेहतर सीखने के अनुभवों की योजना बनाने में सक्षम होते हैं। साझा करने और एक साथ काम करने से, शिक्षक और परिवार सभी क्षेत्रों में बच्चे के विकास के लिए आधार प्रदान करते हैं। इस तरह की भागीदारी से परिवारों को घर पर भी अच्छी प्रक्रियाओं के माध्यम से स्कूल में होने वाली शिक्षा में सहयोग करने में मदद मिलती है। परिवार बच्चे की प्रगति और ज़रूरत के क्षेत्रों का आकलन करने में भी योगदान दे सकते हैं। इस प्रक्रिया के माध्यम से वे अपनी खुद की पालन-पोषण क्षमताओं में और अधिक आत्मविश्वास हासिल करेंगे।

परिवार और स्थानीय समुदाय के सदस्यों को स्कूल के कामकाज में भी कई तरीकों से शामिल किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, अपने ज्ञान और अनुभवों को साझा करना, विशेष दिवसों की योजना बनाना और उन्हें एक साथ मनाना, बच्चों की नियमित उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए संयुक्त मंच, विशिष्ट परिस्थितियों जैसे कि स्कूल में सामान्य संसाधनों की आवश्यकताओं पर प्रतिक्रिया देना।

(स्कूलों, परिवारों और समुदाय के बीच संबंधों के बारे में अधिक जानकारी के लिए कृपया अध्याय 10, खंड 10.4 देखें।)

खंड 4.4
खेलों के माध्यम से सीखना— बातचीत, कहानियाँ, खिलौने, संगीत, कला और शिल्प

छोटे बच्चों के लिए कक्षाएँ स्पंदनशील और जीवन से भरपूर होती हैं। बच्चे कई तरीकों से सीखने का आनंद लेते हैं, जैसे– बात करना, सुनना, खिलौनों से खेलना, सामग्री को काम में लेना, पेंटिंग और ड्रॉइंग, गायन, नृत्य, दौड़ना और कूदना। शिक्षक के रूप में हम अपने बच्चों के साथ काम करने के लिए इन सभी तरीकों का उपयोग करते हैं।

4.4.1 बातचीत

बच्चे भाषा के माध्यम से आपस में और दूसरों से बात करते हैं। शब्दों के माध्यम से ही वे अपनी समझ निर्मित करना और उस पर पकड़ बनाना शुरू करते हैं। सीखने के लिए स्पष्ट भाषा और साफ़ तौर पर उसे समझने और उपयोग करने की क्षमता बेहद आवश्यक है।

बच्चों में आस-पास के लोगों और चीज़ों से जुड़ने की क्षमता के लिए बातचीत आवश्यक होती है। कक्षा में बच्चों के साथ निरंतर बातचीत विश्वासपूर्ण संबंध बनाने में मदद करती है।

कक्षा में बातचीत दो प्रकार की हो सकती है—

(क) **खुली बातचीत**– खुली बातचीत के दौरान शिक्षक कुछ बच्चों को इकट्ठा करते हैं और उन्हें दिन-भर में हुई दिलचस्प चीज़ों या स्कूल आते समय देखी किसी घटना के बारे में बात करने के लिए कहते हैं। शिक्षक का कार्य बच्चों से आसान सवाल पूछना है, जो उन्हें अपने अनुभवों के बारे में बात करने में मदद करेंगे।

(ख) **नियोजित बातचीत**– नियोजित बातचीत शिक्षकों द्वारा नियोजित और व्यवस्थित की जाती है। यह आमतौर पर सुबह के समय बच्चों को एक साथ इकट्ठा करने और एक विषय पर बात करने और सोचने के लिए होती है। ये विषय अक्सर बच्चों के दैनिक जीवन की घटनाओं और उनकी भावनाओं के बारे में होते हैं।

जब सभी बच्चे शिक्षक के साथ एक घेरे में बैठकर बात करते हैं, तो इस तरह की बातचीत के समय को घेरा समय (सर्कल टाइम) कहा जाता है। बच्चे एक घेरे में बैठकर आनंद लेते हैं और एक साथ होने की भावना प्राप्त करते हैं। शिक्षक इस अवधि के दौरान हर बच्चे को देख सकते हैं। हर दिन घेरा समय (सर्कल टाइम) का एक सत्र करना अच्छा होता है।

जब कोई विशिष्ट विषय चुना जाता है, तो एक फोकस होता है जो बच्चों की भाषा, जानकारी और उस विषय की समझ को बढ़ाने में मदद करता है।

असली चीज़ों का उपयोग करके किसी खास विषय (जैसे– सब्जियाँ) के बारे में बातचीत की जा सकती है। सब्जियों के बारे में बात करते समय असली सब्जियों का उपयोग किया जा सकता है ताकि बच्चे उन्हें देख सकें; महसूस कर सकें; उनके आकार, रंग, बनावट के बारे में बात कर सकें और उनका स्वाद भी ले सकें। शिक्षक आगे

की व्याख्या करने के लिए चित्र कार्ड का भी उपयोग कर सकते हैं और यहाँ तक कि सब्जियों के इर्द-गिर्द कहानी भी बना सकते हैं।

एक और संभावना यह है कि शिक्षक इस समय छोटे-छोटे प्रयोग प्रदर्शित करें, जैसे गोले के बीच में पानी का कटोरा रखना और छोटी वस्तुओं को यह देखने के लिए रखना कि क्या डूबता है और क्या तैरता है। इससे बच्चों को इस बारे में बात करने में मदद मिलेगी कि ऐसा क्यों होगा और वे वस्तुओं के गुणों की परिकल्पना कर पाएँगे।

यहाँ 'हाँ' और 'ना' में जवाब वाले सवाल बहुत उपयोगी नहीं हैं। ऐसे सवाल उपयोगी होंगे, जो बच्चों को बोलने के लिए प्रेरित करते हैं, जिनमें अधिक शब्दों और वाक्यों का उपयोग करके कुछ वर्णन करना होता है। गलत जवाब देने पर बच्चों को कभी भी डाँटना नहीं चाहिए। सभी बच्चों को बिना किसी भेदभाव के भाग लेने और खुद को व्यक्त करने के समान अवसर मिलने चाहिए।

शिक्षक के मन की बात – 4.4 क

घेरा समय (सर्कल टाइम) के दौरान नियोजित बातचीत

मैं टाइगर रिजर्व के बफर जोन में स्थित एक स्कूल में पढ़ाती हूँ। मेरी कक्षा में 3–6 वर्ष के लगभग नौ बच्चे नियमित रूप से आते हैं। घेरा समय के लिए, मैं आमतौर पर दिलचस्प विषय चुनती हूँ, जैसे– जानवर। चूँकि मेरे गाँव में ज्यादातर परिवारों के पास पशुधन है, इसलिए ये सभी बच्चे मुख्यत: कुत्तों, चूहों, बकरियों, सूअरों, मेंढकों, मछलियों और बत्तखों जैसे जानवरों के आस-पास रहने के आदी हैं। जंगल में हाथी, भालू या बाघ की आवाज़ें सुनना और कभी-कभी उन्हें देखा जाना भी कोई असामान्य बात नहीं है। मैं फ्लैश कार्ड जैसी आवश्यक सामग्री तैयार करती हूँ या पिछले दिन उन्होंने जो देखा या सुना है, उससे संबंधित वीडियो को शॉर्टलिस्ट करती हूँ। उस दिन सबसे पहले मैं उन्हें एक घेरे में ऐसे बैठने के लिए कहती हूँ, जिससे हम सब एक-दूसरे को देख सकें।

चित्र 4.4 क– जानवरों के फ्लैश कार्ड

फिर बात करने के लिए मैं एक-एक करके फ्लैश कार्ड उठाती हूँ। जैसे इस बार हमने बाघ का फ्लैश कार्ड उठाया और उसके बारे में इन बिंदुओं के तहत बात करना शुरू किया— क्या आप जानते हैं कि यह कौन-सा जानवर है? क्या आपने कभी यह देखा है? यह जानवर कैसी आवाज़ें निकालता है? यह क्या खाता है? यह कहाँ रहता है? आदि। मैं सभी बच्चों को प्रतिक्रिया देने के लिए प्रोत्साहित करती हूँ और सभी प्रतिक्रियाओं की

बिना कोई राय बनाए, सराहना करती हूँ। इसके पीछे विचार यह है कि बच्चों को जितना हो सके, उतनी ज़्यादा बातें करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए। कई बार मैं इनमें से कुछ बच्चों को एक-एक कार्ड देती हूँ और उनसे उसके अनुसार भूमिका निभाने के लिए कहती हूँ। एक बाघ बनता है, दूसरा बकरी बनता है और हम सभी जानवरों की आवाज़ों से शोर मचाने लगते हैं! यह मज़ेदार भी होता है! मैं सुनिश्चित करती हूँ कि घेरा समय खत्म होने तक बच्चे कई तरह के जानवरों के नामों, उनकी आवाज़ों, उनके चलने, खाने, दिखने को जान-पहचान सकें।

अगले दिन की बातचीत के लिए मैं कुछ ऐसे जानवर चुनूँगी, जो हमारे आस-पास नहीं पाए जाते हैं, जैसे– ऊँट। अब हम इस पर चर्चा करेंगे कि ऊँट हमारे आप-पास क्यों नहीं रहता है।

बॉक्स 4.4 क

दिखाओ और बताओ सत्र

'दिखाओ और बताओ' की अवधारणा को भारत और दुनिया भर में सार्वजनिक रूप से बोलने और सुनने के कौशल को विकसित करने तथा प्रारंभिक वर्षों में बच्चों के बीच मेलजोल और बातचीत को बढ़ावा देने में एक बड़ी सफलता मिली है। बुनियादी स्तर में सभी बच्चों को (अपने शिक्षकों के साथ) सप्ताह में कम-से-कम एक बार एक मनोरंजक 'दिखाओ और बताओ' सत्र में भाग लेने का अवसर मिलेगा।

इसमें बच्चे और शिक्षक अपने पसंदीदा खिलौने, खेल, पारिवारिक फोटो, फूल, किताबें, मौलिक कहानियाँ और निजी किस्से (जैसे– परिवार के सदस्यों, दोस्तों, त्योहारों, अनुभवों, छुट्टियों, उस सप्ताह के पसंदीदा पाठ, पसंदीदा विषय आदि के बारे में) कक्षा के सामने कुछ मिनटों तक बोलेंगे। ये 'दिखाओ और बताओ' सत्र शुरू में बच्चों की गृह भाषाओं में होंगे, लेकिन अंततः इसमें अन्य भाषाएँ भी शामिल होंगी जो बच्चे सीख रहे हैं।

सत्र को अधिक मज़ेदार और संवादात्मक बनाने के लिए बच्चे और शिक्षक भी प्रत्येक प्रस्तुति के दौरान या आखिर में सवाल पूछेंगे और टिप्पणी देंगे। उदाहरण स्थापित करने के लिए शिक्षक अपनी प्रस्तुतियों के साथ आगे बढ़ सकते हैं। बच्चों के साथ सही मायने में जुड़ने और बच्चों को एक-दूसरे के साथ जोड़ने के लिए, चर्चा को प्रोत्साहित करते हुए उन्हें पूरे समय भाग लेना चाहिए।

4.4.2 कहानी सुनाना

कहानियाँ बच्चों के लिए दुनिया को जानने की खिड़की होती हैं। वे आकर्षक, सुंदर, करामाती होती हैं!! कहानियाँ सुनने में बहुत मज़ा आता है और मुख्यत: छोटे बच्चे उन्हें सुनना पसंद करते हैं। भावनाओं के साथ, इशारों और सच्चे भावों के साथ सुनाई गई कहानियाँ जादुई होती हैं और आपकी साँसें रोक देती हैं। हर शब्द अपने आप में एक अनुभव बन जाता है।

कहानियाँ विशेष रूप से सामाजिक संबंधों, नैतिक चुनावों, भावनाओं को समझने व अनुभव करने और जीवन कौशल के प्रति जागरूकता के बारे में सीखने के लिए एक अच्छा माध्यम हैं। कहानियों को सुनते समय बच्चे नए शब्द सीखते हैं, जिससे उनकी शब्दावली का विस्तार होता है और साथ ही वे वाक्य संरचना एवं समस्या सुलझाने के कौशल भी सीखते हैं। जो बच्चे बहुत ज़्यादा समय तक ध्यान केंद्रित नहीं कर पाते हैं, वे भी कहानी में तल्लीन होकर ज़्यादा समय तक ध्यान केंद्रित करने लगते हैं। सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक कहानियों के माध्यम से हम बच्चों को उनकी संस्कृति, सामाजिक मानदंडों से परिचित करा सकते हैं और उनके परिवेश के बारे में जागरूकता पैदा कर सकते हैं।

बॉक्स 4.4 ख

बहादुर और साहसी कनकलता बरुआ

कनकलता बरुआ का जन्म असम के बरंगाबाड़ी में कई साल पहले हुआ था। वह अपने गाँव की अन्य सभी लड़कियों की तरह खेलती-खिलखिलाती और अपने भाइयों-बहनों की देखभाल करते हुए बड़ी हुई। वह बहुत ही खास थी। वह जानती थी कि उसके परिवार को उसकी ज़रूरत है लेकिन जैसे-जैसे वह बड़ी हुई, उसने महसूस किया कि उसके देश को उसकी और भी ज़्यादा ज़रूरत है।

वह चारों ओर से परेशानियों से घिरी हुई थी। ऐसा इसलिए था, क्योंकि उस समय भारत पर अंग्रेजों का शासन था। उसके गाँव में पुलिस इंस्पेक्टर ने कभी किसी को भारत का झंडा फहराने की इजाज़त नहीं दी। उसने बहादुरी से ऐसा करने की कोशिश की और उन्होंने उसे गोली मार दी।

यह एक बेहद दुखद दिन था लेकिन वह एक ऐसी हीरो बन गई, जिसने अपने देश के लिए लड़ाई लड़ी। हमें उस पर गर्व है।

अब उनके नाम पर एक स्कूल एवं एक बहुत बड़ा जहाज है और उनकी दो मूर्तियाँ हैं। उनकी तस्वीर और नाम का एक डाक टिकट भी है, जिसका हम सब अपने पत्र भेजने के लिए उपयोग करते हैं!

छोटे बच्चे एक ही कहानी को बार-बार सुनना पसंद करते हैं। समय के साथ-साथ वे उसके कथ्य का बेहतर अर्थ निकालते हैं और कोशिश करने पर इसे याद भी रखते हैं। एक ही कहानी को अलग-अलग रूपों में बार-बार सुनने से उन्हें कहानी के पात्रों, घटनाओं और विचारों के साथ बेहतर ढंग से जुड़ने में मदद मिलती है और इससे उनकी कल्पनाशक्ति और शब्दावली का निश्चित रूप से विकास होता है।

मौखिक रूप से कहानियाँ सुनाते समय शिक्षक को कहानी अच्छी तरह से जाननी चाहिए। कहानियों को आवाज़ के उतार-चढ़ावों और भावों के साथ सुनाया जाना चाहिए। एक अच्छी तरह से सुनाई गई कहानी बच्चों को कहानी में आगे आने वाली घटनाओं की कल्पना करने और उनमें भाग लेने में मदद कर सकती है।

कहानियाँ सुनाने के लिए किताबों का भी उपयोग किया जाना चाहिए। किताब को छूने, पन्ने पलटने, चित्रों को देखने, उँगली फेरने का आनंद लेने के लिए बच्चे को अक्षरों को 'पढ़ना' आना आवश्यक नहीं है, इसलिए उन्हें इसके लिए हर समय प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

किताबों में दिए गए चित्र विषयवस्तु को आधार प्रदान करते हैं और बच्चों की रुचि को बनाए रखते हैं। जब बच्चे अपने शिक्षक को किताबों से कहानियाँ पढ़ते हुए देखते हैं, तो वे प्रिंट और किताबों की अहमियत को समझने लगते हैं और पढ़ने को एक कौशल के रूप में महत्व देने लगते हैं। शिक्षक अपनी उंगली से शब्दों की ओर इशारा करते हुए किताबों से कहानियाँ पढ़ सकते हैं, इस प्रकार वे बच्चों का ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित करते हैं कि प्रत्येक बोले गए शब्द का एक रूप होता है। ऊँची आवाज़ में कहानियाँ पढ़ने से बच्चों को यह समझने में भी मदद मिलती है कि औपचारिक लिखित भाषा बोली जाने वाली भाषा से थोड़ी अलग होती है। किताबें चित्रों वाली हो सकती हैं, कहानियों की सचित्र या बिना चित्र वाली हो सकती हैं या फिर कई भाषाओं में कहानी वाली हो सकती हैं।

कहानियों को सुनाने के लिए रेडीमेड कठपुतलियों या फिर बच्चों के साथ मिलकर शिक्षक द्वारा तैयार की गई कठपुतलियों का उपयोग किया जा सकता है। साथ ही छड़ी वाली कठपुतली, दस्ताने वाली कठपुतली, उंगली वाली कठपुतली, बॉक्स की कठपुतली, पेपर बैग वाली कठपुतली या जुराब से बनी कठपुतली का उपयोग किया जा सकता है। बच्चों को साधारण कठपुतली बनाने में शामिल किया जा सकता है। धागे वाली कठपुतलियाँ आकर्षक होती हैं, लेकिन इसके लिए शिक्षक को विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता हो सकती है।

कहानियाँ सुनाने के लिए चित्र बनाए या मुद्रित किए गए फ्लैश कार्डों का उपयोग किया जा सकता है। ये एक किताब से बड़े और पकड़ने में आसान होने चाहिए। फ्लैश कार्ड बच्चों को सही क्रम में व्यवस्थित करने के लिए दिए जाने वाले अनुक्रम कार्ड के रूप में कार्य करते हैं। इनके अलावा कहानी चार्ट, पोस्टर और कहानी कहने की अन्य सामग्रियाँ बाज़ार में उपलब्ध हैं या बनाई जा सकती हैं।

बच्चे और शिक्षक कहानियों को नाटक में प्रस्तुत कर सकते हैं, उसमें अभिनय कर सकते हैं और संवाद बोल सकते हैं और इस तरह कहानी का अनुभव कर सकते हैं। बच्चों को टेलीविज़न या लैपटॉप पर कहानियाँ दिखाई जा सकती हैं। वे कहानियों के ऑडियो टेप भी सुन सकते हैं।

कहानियों को सुनने के अलावा, बच्चों को कहानियाँ सुनाने का भी अवसर मिलना चाहिए। बच्चे पहले सुनी हुई कहानी सुना सकते हैं या फिर अपने द्वारा बनाई गई कहानी भी सुना सकते हैं। शिक्षक कहानी सुनाना शुरू कर सकता है और बच्चों से उसे पूरा करने के लिए कह सकता है।

बच्चों के लिए उपयुक्त कहानी का चुनाव करना मुश्किल काम होता है। कहानियाँ आयु-उपयुक्त, परिचित भाषा में और बच्चों के लिए रुचिकर होनी चाहिए। कहानियों को कक्षा में जो कुछ भी पढ़ाया जा रहा है, जैसे गिनना या आकृतियों या रंगों से जोड़ा जा सकता है। कहानियों का उपयोग महत्वपूर्ण सीखने के उद्देश्यों जैसे दूसरों के प्रति संवेदनशीलता और अच्छे काम करने की आदतों को सुदृढ़ करने के लिए भी किया जा सकता है। प्रासंगिकता और संबद्धता को बढ़ाने के लिए उन्हें जितना संभव हो सके, स्थानीय या भारतीय संदर्भों पर आधारित होना चाहिए।

दरअसल, भारत में लोगों और कहानियों का एक लंबा इतिहास और परंपरा रही है, जो हमें कई आधारभूत मूल्यों और रिश्तों के महत्व के बारे में खूबसूरती से सिखाती हैं। बच्चों को *पंचतंत्र, जातक, हितोपदेश* की मूल कहानियों और भारतीय परंपरा से अन्य रोचक दंतकथाओं और प्रेरक कहानियों को सुनने, पढ़ने और सीखने का अवसर मिलना चाहिए।

कहानी सुनाने के बाद, शिक्षक को यह पता लगाना चाहिए कि बच्चों ने कहानी की विषयवस्तु को समझा है या नहीं। शिक्षक क्या, किससे, क्यों, कहाँ, कैसे और क्या हो अगर जैसे सवाल पूछ सकता है। जैसे-जैसे बच्चे थोड़े बड़े होते हैं, शिक्षक चर्चा कर सकते हैं कि एक चरित्र ने किसी खास तरीके से ही क्यों व्यवहार किया, इसका परिणाम क्या हुआ और साथ ही सही और गलत कामों के बारे में बात कर सकते हैं। एक अन्य फॉलो-अप गतिविधि ड्रॉइंग हो सकती है। बच्चे कहानी में एक दृश्य या पात्र का चित्र बना सकते हैं। इसी तरह अन्य फॉलो-अप गतिविधियाँ रोल प्ले और नाटकीय रूपांतरण हो सकती हैं।

4.4.3 खिलौने आधारित शिक्षा

यह खेल आधारित शिक्षणशास्त्र का एक आवश्यक हिस्सा है। छोटे बच्चे प्रत्यक्ष अनुभवों और वास्तविक वस्तुओं पर काम करने से सीखते हैं। वे कोशिश करते हैं, खोजबीन करते हैं और सीखते हैं। खिलौनों और उसमें जोड़-तोड़ के साथ खेलते हुए कक्षा के परिवेश में अन्वेषण की इस भावना को विकसित करना चाहिए। हर बच्चे के आस-पास कई स्थानीय खिलौने उपलब्ध होते हैं। इनका उपयोग शिक्षण और सीखने के महत्वपूर्ण संसाधनों के रूप में किया जाना चाहिए।

खिलौना चाहे सरल हो या जटिल, इसमें बच्चे के सीखने के लिए एक सबक होता है। जब कोई बच्चा एक खिलौना हाथ में लेता है और उसमें बदलाव करता है, तो वह अपने गतिक कौशलों का अभ्यास और अपने हाथ-आँख के समन्वय को मज़बूत कर रहा होता है। जिन खिलौनों से खेलने के लिए बच्चों को धक्का देना, खींचना, पकड़ना, चुटकी बजाना, मुड़ना या कुछ करने के लिए अपने हाथों और शरीर का उपयोग करना पड़ता है, वे बच्चों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जब कोई बच्चा ब्लॉकों का एक टॉवर बनाता है और अंततः उसे ज़मीन पर गिरते हुए देखता है, तो वह अवधारणाओं को सीखता है और उन्हें गिरने से रोकने के लिए समाधान के बारे में सोचता है। एक पहेली एक बच्चे को पैटर्न का पता लगाने में मदद करती है। जब बच्चे ब्लॉक, गुड़िया, जानवरों के खिलौने, गेंद, मिनी-कार या बनावटी खिलौनों का उपयोग करते हैं, तो वे अपने दिमाग में कहानियाँ बनाना और परिदृश्य को जीना शुरू कर देते हैं। बोर्ड गेम बच्चों को सरल नियमों का पालन करना और भाषा तथा गणित की समझ को बढ़ाना सिखाते हैं।

पहेलियाँ कारण और प्रभाव, रणनीतिक सोच और समस्या समाधान के साथ प्रयोग को प्रोत्साहित करती हैं। मिट्टी, मोतियों, कोलाज सामग्री, पेंट, धोए जा सकने वाले इंक पैड और मुहरें, मार्कर और कैंची जैसी शिल्प सामग्री का उपयोग रचनात्मक अभिव्यक्ति और सौंदर्य जागरूकता को बढ़ावा देता है। चीज़ें कैसे फिट होती हैं और एक साथ कैसे काम करती हैं, यह बच्चों को जटिल निर्माण सेट और सहायक उपकरणों के प्रयोग करने से पता चल सकता है। इससे उनके गत्यात्मक कौशलों को बढ़ावा भी मिलता है और साथ ही रचनात्मकता की अभिव्यक्ति भी होती है। फिटनेस और मज़ेदार सामग्री, जैसे– गेंदें, बीनबैग्स और कूदने की रस्सियाँ, बच्चों को

आत्मविश्वास हासिल करने, व्यायाम करने, तनावमुक्त करने, दूसरों के साथ मौज-मस्ती करने और सूक्ष्म एवं स्थूल गत्यात्मक कौशल विकसित करने में मदद करती हैं।

खिलौने आसानी से उपलब्ध वस्तुओं, जैसे– कपड़े, बोतलें, कार्डबोर्ड बॉक्स, धागा, कुकिंग पैन, चूड़ियाँ, पाइप क्लीनर और पाइनकोन से बनाए जा सकते हैं।

परंपरागत रूप से प्रयुक्त खिलौनों के कुछ उदाहरण हैं—

(क) **रिंग सेट पहेली**– यह लकड़ी से बनी क्रमबद्ध रिंग्स का एक सेट होता है। यह कर्नाटक के चन्नपटना में बनाया जाता है। इसका उपयोग क्रमबद्धता सीखने के लिए किया जा सकता है और यह सूक्ष्म एवं स्थूल गत्यात्मक कौशल, रंग और आकार की समझ के विकास में भी मदद करता है।

(ख) **ढिंगली (कपास की गुड़िया)**– ढिंगली गुजरात के पारंपरिक खिलौनों की गुड़िया में से एक है। यह कपास से बनी होती है और लाल, नीले, हरे, पीले जैसे विभिन्न आकर्षक रंगों में कढ़ाई वाले कपड़ों से सजाई जाती है। ये गुड़िया छोटे व बड़े आकार में उपलब्ध हैं। उनका उपयोग नाटकीय प्रस्तुतियों के लिए किया जा सकता है।

(ग) **रसोई (किचन सेट)**– भारत के कई हिस्सों में रसोई के बर्तनों के सेट का उपयोग खिलौनों के रूप में किया जाता है। यह लकड़ी से बने होते हैं और इन्हें आकर्षक व मनमोहक बनाने के लिए इनकी रंगाई-पुताई की जाती है। खिलौना आधारित शिक्षणशास्त्र के लिए रा.शै.अ.प्र.प. की हस्तपुस्तिका एक बेहतरीन मार्गदर्शिका है।

4.4.4 गीत और तुकबंदियाँ

बच्चों को गीत और तुकबंदियाँ गाना और संगीत पर नृत्य करना पसंद होता है। गीत भी भाषा सीखने का एक अद्‍भुत माध्यम हैं।

गीतों को चुना जा सकता है, ताकि वे उस अवधारणा को आधार दे सकें जिन्हें बच्चों द्वारा सीखे जाने की ज़रूरत है। जैसे– “Five little monkeys, jumping on the bed, one fell off and hurt his head, mama called the doctor and the doctor said, no more monkeys, jumping on the bed.”

इस गीत का उपयोग जानवरों व उनकी हरकतों को समझाने, सावधान रहने, चोट लगने, डॉक्टर के काम और गिनती के बारे में जानने-सीखने के लिए किया जा सकता है। इस गीत को गाने और इस पर अभिनय करने में भी बहुत मज़ा आता है!

बच्चे गीतों के माध्यम से विभिन्न अवधारणाओं को समझते हैं और उनकी शब्दावली का भी विस्तार होता है। गीतों के साथ होने वाली शारीरिक हलचलें स्थूल व सूक्ष्म गत्यात्मक हरकतों को बढ़ाती हैं और शरीर की गति व हाव-भाव बच्चों को अवधारणाएँ समझने में मदद करते हैं। गीत बच्चों के बीच बातचीत को बढ़ावा देते हैं और सहयोग की भावना की ओर ले जाते हैं।

स्थानीय संदर्भों से युक्त विशेष गीत और तुकबंदियाँ (जैसे– मलयालम में ‘पंचरकुंजू’, ‘बंगला’ में ‘घूम परानी माशी पिशी’, हिंदी में ‘मछली जल की रानी है’, कन्नड़ में ‘आने बंता’), शब्दावली, कल्पना और अभिव्यक्ति को

बढ़ाने का एक और अच्छा तरीका है। विभिन्न भाषाओं के गीत बच्चों को अनुमान लगाने, भाषा में समान और भिन्न शब्दों के बीच संबंध बनाने की क्षमता प्रदान करते हैं। भारत में हममें से अधिकांश बहुभाषी हैं और यह महत्वपूर्ण है कि गीत और तुकबंदियाँ बच्चों के बहुभाषी बने रहने की क्षमता को बढ़ावा देती हैं।

शिक्षक दो या तीन स्थानीय भाषाओं में कुछ तुकबंदियों या गीतों का चयन कर सकते हैं, उनका अभ्यास कर सकते हैं और बच्चों के साथ गा सकते हैं। दादा-दादी, माता-पिता और समुदाय के सदस्य इसके लिए अद्‌भुत स्रोत हो सकते हैं। शिक्षक उन गीतों को चुन सकते हैं, जिनमें तुकबंदी वाले शब्द हों, जिनमें कुछ पंक्तियाँ हों और जो स्थानीय समुदाय में लोकप्रिय और ज्ञात हों। गीत हास्यप्रद भी हो सकते हैं। बच्चों को मज़ेदार गीत पसंद आते हैं।

बॉक्स 4.4 ग

संगीत की समझ विकसित करने के लिए समूह के साथ मिलकर गाना उपयोगी और मज़ेदार गतिविधि हो सकती है। शिक्षक 'सा रे ग म प ध नि सा' (सरगम) गाते हैं, फिर समूह को दोहराने के लिए कहते हैं। एक बार जब बच्चे इस सरगम को सही क्रम में गाने में माहिर हो जाते हैं, तो शिक्षक कहते हैं, "क्या आप इसे उल्टे क्रम में गा सकते हैं?— सा नि ध प म ग रे सा।" एक बार जब बच्चे इसमें महारत हासिल कर लेते हैं, तो समूह गायन (और व्यक्तिगत गायन) के साथ और अधिक जटिल अभ्यास किए जा सकते हैं— 'सा रे ग, रे ग म, ग म प, म प ध, प ध नि, ध नि सा'; 'सा नि ध, नि ध प, ध प म, प म ग, म ग रे, ग रे सा' (तिकड़ी), 'सा रे ग म, इसके बाद रे ग म प,...' (चौकड़ी)। तब शिक्षक बच्चों को 'सा रे ग ग ग ग ग ग ग ग ग रे ग म' गाने के लिए कह सकते हैं और उनसे पूछ सकते हैं कि क्या वे धुन को पहचानते हैं!

इसी तरह, लय विकसित करने के लिए समूहों में ताली बजाने के अभ्यास का उपयोग किया जा सकता है। हाथ के संगीत वाद्ययंत्र भी इन सामूहिक और व्यक्तिगत गतिविधियों को बढ़ाने के लिए उपयोग किए जा सकते हैं, क्योंकि बच्चे स्वर-माधुर्य/राग और लय/ताल दोनों को सीखते-समझते करते हैं।

बॉक्स 4.4 घ

बच्चों के साथ तुकबंदियाँ कैसे कराएँ

तुकबंदी और उसके साथ किए जाने वाले अभिनय या क्रियाओं से परिचित हों। तुकबंदी को एक चार्ट पेपर पर बड़े अक्षरों में लिखकर उसके साथ कोने में इससे जुड़े चित्र भी चिपकाएँ और इन्हें बच्चों की नज़र की ऊँचाई पर प्रदर्शित करें। बच्चों को तुकबंदी देखने दें।

नोट–

- *सभी तुकबंदियों को कम-से-कम तीन से चार बार गाया जाना चाहिए।*
- *तुकबंदी का परिचय दें और उन्हें समझाएँ कि यह किस बारे में है।*
- *जब बच्चे सुन रहे होते हैं, तब लय, अभिनय और स्वर के साथ पूरी तुकबंदी को गाएँ।*
- *बच्चों से कहें कि वे हर एक पंक्ति को आपके बाद दोहराएँ और चित्र दिखाकर उन्हें प्रत्येक पंक्ति का अर्थ समझाएँ।*

- *शब्दों को अभिव्यक्त करने वाली क्रियाएँ करें और बच्चों को उनका अनुसरण करने के लिए कहें।*
- *अब बच्चे आपके साथ अभिनय करते हुए गाएँगे।*
- *बच्चों को समूहों में या व्यक्तिगत रूप से गाने के लिए प्रोत्साहित करें।*

4.4.5 संगीत और शारीरिक हलचल

संगीत आनंददायी होता है। बच्चे अपनी दादी-नानी की लोरी और गुनगुनाना सुनते हुए बड़े होते हैं। हमारे आस-पास संगीत के बहुत सारे स्रोत हैं— खेतों में गाते किसान, मधुमक्खियों की भिनभिनाहट, कोयल की कूक या खिड़की पर बारिश की पड़पड़ाहट।

मस्तिष्क के विकास और सिनैप्टिक कनेक्शन (मस्तिष्क की कोशिकाओं को संगठित कर मज़बूत करने की क्षमता) के निर्माण के लिए संगीत भी एक प्रभावशाली उद्दीपन है। अतः लय का अनुसरण करने और सरल वाद्ययंत्र बजाने और गायन को प्रोत्साहित करना चाहिए। टिन के डिब्बे या खंजरी (तंबूरा) या मँजीरे (झाँझ) पर बजने वाली ताली या ताल के साथ शरीर की हरकतें एक संगत में हो सकती हैं।

गीत का उपयोग करने के कई तरीके हैं। शिक्षक पहले गीत गाकर बच्चों को दोहराने के लिए कह सकते हैं। यह अभिनय, इशारों और शारीरिक गतिविधियों के साथ किया जा सकता है। बच्चे समूह में, जोड़ियों में या अकेले भी गीत गा सकते हैं। शिक्षक एक लोकप्रिय गीत की धुन गा सकते हैं और बच्चों को इसे पहचानने के लिए कहकर एक छोटा-सा खेल भी खेल सकते हैं। बच्चे विभिन्न गीतों की धुन बिना शब्दों के गुनगुना सकते हैं। शिक्षक और बच्चे अलग-अलग धुनों में सीखे गए गीतों को गा सकते हैं। बच्चों को सरल गीत बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।

संगीत और शारीरिक हलचल की गतिविधियों को कई अलग-अलग तरीकों से किया जा सकता है। बच्चे चुपचाप वाद्य संगीत सुन सकते हैं या लय में स्वतंत्र रूप से नृत्य कर सकते हैं या लय के साथ शरीर की हरकत कर सकते हैं। बच्चे उपलब्ध सामग्री से साधारण वाद्ययंत्र भी बना सकते हैं, जैसे– ढोल के रूप में बर्तन, रिबन पर छोटी-छोटी घंटियाँ लगाकर उसे घुँघरू जैसा बनाना। वे तंबूरा, मँजीरा, लेझिम (lyziums) बजा सकते हैं और एक साथ ताली बजा सकते हैं और इस तरह वे एक ऑर्केस्ट्रा बना सकते हैं। बच्चे रिबन, पत्तों वाली छोटी शाखाओं या दुपट्टे जैसे प्रॉप्स का उपयोग करके भी नृत्य कर सकते हैं।

बच्चे संगीत वाद्ययंत्रों की आवाज़ से स्वाभाविक रूप से आकर्षित होते हैं और ड्रम, घंटियाँ, ताल की छड़ें और तंबूरा बजाने का आनंद लेते हैं। बच्चों को शरीर की ताल और संगीत वाद्ययंत्रों के माध्यम से और शारीरिक हलचल और संगीत के खेल खेलकर संगीत बनाने में शामिल किया जा सकता है। बच्चों को ध्वनियों का अन्वेषण और संगीत बनाने के प्रत्यक्ष अनुभव के लिए घर पर बने हुए या स्थानीय स्तर पर उपलब्ध या फिर खरीदकर संगीत उपकरणों की रेंज उपलब्ध कराई जानी चाहिए।

शिक्षक कक्षाओं में बच्चों को सुनने व प्रदर्शन करने के लिए विभिन्न प्रकार के संगीत, नृत्य, ध्वनि स्रोत, बालगीत, मंत्र और विभिन्न मनोदशाओं, संदर्भों और भाषाओं के गीत शामिल कर सकते हैं। नृत्य, गायन, बालगीत, लोकगीत, अभिनय गीत और फिंगर प्ले बच्चों को संगीत की अवधारणाओं को सीखने के अवसर प्रदान करते हैं।

शिक्षक के मन की बात – 4.4 ख

अभिनय गीत— When you are happy and you know it!

मैं सभी बच्चों से अनुरोध करता हूँ कि वे खड़े हो जाएँ और मेरी तरह अलग-अलग लय में ताली बजाएँ। फिर मैं उनसे पूछता हूँ, "क्या आप हमें दिखा सकते हैं कि और कौन-से तरीके हैं, जिनसे आप अपने शरीर को हिला सकते हैं और आवाज़ें निकाल सकते हैं?" कुछ अपनी उंगलियाँ फँसा लेते हैं, अपने पैरों पर धीरे से मारते हैं आदि। मैं उनसे यह भी पूछता हूँ, "जब आप खुश होते हैं, तो आप क्या करते हैं?" कोई कहता है कि वे खुशी से ताली बजाते हैं और कुछ कहते हैं कि वे खुशी से चिल्लाते हैं।

फिर मैं उनसे कहता हूँ, "आइए, हम इन सभी आवाज़ों को मिलाकर एक गीत बनाएँ।" मैं पहले गाता हूँ और फिर अपनी आवाज के साथ उन्हें मेरे साथ जुड़ने के लिए कहता हूँ।

When you are happy and you know it, clap your hands!
When you are happy and you know it, clap your hands!
When you are happy and you know it and you really want to show it,
clap your hands!

When you are happy and you know it, stamp your feet!
When you are happy and you know it, stamp your feet!
When you are happy and you know it and you really want to show it,
stamp your feet!

When you are happy and you know it, say hurray!
When you are happy and you know it, say hurray!
When you are happy and you know it and you really want to show it,
say hurray!

इस तरह के अभिनय गीत मेरे बच्चों को व्यस्त रखने में कभी असफल नहीं होते और वे खूब मस्ती करते हैं।

(चित्र स्रोत – सिक्किम की कक्षा 1 की पाठ्यपुस्तक)

4.4.6 कला और शिल्प

बच्चों को रंगों के साथ खेलने और अपनी रुचि का कुछ बनाने में मज़ा आता है। कला और शिल्प बच्चों को अपने विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने का एक और माध्यम प्रदान करते हैं।

(क) **चित्रकारी (ड्रॉइंग)**– इसके लिए कागज़, क्रेयॉन, स्केच पेन, रंगीन या काली पेंसिल या चारकोल का उपयोग किया जा सकता है। बच्चे स्लेट, ब्लैकबोर्ड या फ़र्श पर भी चित्र बना सकते हैं। ब्लैकबोर्ड और फ़र्श का लाभ यह है कि इसमें बच्चों को बड़े चित्र बनाने के लिए अधिक जगह मिल जाती है। कागज़ भी विभिन्न आकार और रंग का हो सकता है। सफेद कागज़ और विभिन्न रंगों के क्रेयॉन के बजाय, यदि बच्चों को काला कागज़ और पीले या सफेद क्रेयॉन दिए जाते हैं तो जो चित्र निकलते हैं, वे अलग और अनोखे होते हैं। छोटे बच्चे जो पहली बार क्रेयॉन पकड़ना सीखते हैं, वे लिखना शुरू करते हैं और धीरे-धीरे मन मुताबिक आकार बनाते हुए आगे बढ़ते हैं और आखिर में वे खास आकार और डिजाइन बनाने में सक्षम होते हैं। चित्रकला अभिव्यक्ति के साथ-साथ सूक्ष्म गतिक समन्वय के लिए एक मूल्यवान गतिविधि है।

चित्र 4.4 ख– चित्रकारी

(ख) **रंगाई (पेंटिंग)**– कागज़, फ़र्श या कपड़े पर गीले रंग के उपयोग से पेंटिंग बनाने के प्रयास किए जा सकते हैं। बच्चे बाज़ार में उपलब्ध कूची (ब्रश) का उपयोग कर सकते हैं या शिक्षक लकड़ी और कपड़े या कपास से ब्रश बना सकते हैं। गीले रंग से अलग-अलग तरह से रंगाई की जा सकती है— अंगूठे की छपाई, हथेली की छपाई, सब्ज़ी के कचरे के साथ छपाई, अन्य सामग्रियों जैसे बोतल के ढक्कन, ब्लॉक, सब्जियों (जैसे आलू या भिंडी) के साथ छपाई। बच्चे धागों और उँगलियों की छपाई के साथ-साथ उँगलियों से पेंटिंग का भी आनंद लेते हैं।

चित्र 4.4 ग– पेंटिंग

(ग) **चिपकाना–** कागज़ या कपड़े पर चिपकाने के लिए गोंद या इसी तरह की चीज़ों का उपयोग शामिल है। शिक्षक या बच्चे एक आकृति बना सकते हैं, जिस पर बच्चे माचिस या रंगीन कागज़ चिपकाते हैं या यह चिपकाने की स्वतंत्र गतिविधि हो सकती है। विभिन्न सामग्रियों, जैसे– रेत, पेंसिल की छीलन, लकड़ी का बुरादा, सूखी मिट्टी, रंगीन या अख़बार के प्रिंट वाले कागज़ को भी चिपकाया जा सकता है। अलग-अलग चीज़ों का उपयोग करके एक कोलाज भी बनाया जा सकता है। इसके लिए आसानी से उपलब्ध गोंद के साथ-साथ शिक्षक द्वारा बनाए गए गोंद का उपयोग भी किया जा सकता है।

चित्र 4.4 घ– चिपकाना

(घ) बर्तन बनाने वाली या गीली मिट्टी में थोड़ा-सा गोंद मिलाकर इसका उपयोग **मिट्टी की ढलाई** (clay moulding) के लिए किया जा सकता है। खाद्य रंग मिलाकर या बिना रंग मिला गूँथा गया आटा भी शिक्षक द्वारा उपलब्ध कराया जा सकता है। बच्चों के खेलने के लिए इस तरह का आटा बाज़ार में उपलब्ध है। बच्चों को इस माध्यम से विभिन्न आकृतियों व वस्तुओं को बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। गतिविधि के विस्तार के रूप में, बच्चों द्वारा बनाई गई मिट्टी की वस्तुओं को बाद में सुखाया और पेंट किया जा सकता है।

चित्र 4.4 ङ– मिट्टी की ढलाई

(ङ) बच्चे विभिन्न आकारों और मोटाई के कागज़ों को **फाड़ने** से शुरू करते हुए कैंची से **काटते** हुए आगे बढ़ सकते हैं। 4+ और 5+ साल के बच्चों को कागज़ काटने के लिए और बाद में कटे हुए आकार और डिजाइन बनाने के लिए भोंथरी कैंची दी जा सकती है। कटे और फटे टुकड़ों का उपयोग चिपकाने की गतिविधियों के लिए किया जा सकता है।

(च) बच्चों को पेपर **फोल्ड करने** का कौशल सिखाया जा सकता है, इसे दबाकर पेपर फोल्ड मॉडल बनाया जा सकता है। वे कागज़ को आधा मोड़कर शुरू कर सकते हैं और बाद में कई तरह के फोल्ड सिखाए जा सकते हैं। यह सूक्ष्म मांसपेशीय समन्वय और रचनात्मकता को बढ़ावा देता है।

(छ) बच्चे काटने व चिपकाने के कौशल का उपयोग खाली गत्ते के बक्से, रेत, मिट्टी आदि से वाहन, जानवर, भवन जैसी चीज़ों का **निर्माण करने** के लिए कर सकते हैं।

4.4.6.1 कला और शिल्प कार्य के दौरान ध्यान रखने योग्य बातें

ये सभी ओपन-एंडेड गतिविधियाँ होनी चाहिए। शिक्षक की ओर से न्यूनतम दिशा-निर्देश देना बेहतर होगा। बच्चों को अपने बारे में और अलग तरह से सोचने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

अगर कोई बच्चा एक पेड़ बनाना चाहता है, तो सबसे अच्छा यह है कि शिक्षक-शिक्षिका पेड़ बनाकर उसे बच्चे को नकल करने के लिए न कहें। इसके बजाय वह सवाल पूछ सकते हैं (जैसे– पेड़ कैसा दिखता है ऊँचा या छोटा? उसके तने की आकृति कैसी होती है? शाखाएँ कैसे फैली हुई होती हैं? क्या कई शाखाएँ होती हैं या केवल दो या तीन होती हैं? पत्तों की आकृति और रंग कैसा होता है?) और इस तरह बच्चों को अपना देखा हुआ पेड़ बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। बेशक, शिक्षक विचारों में योगदान दे सकते हैं और चीज़ों को करने के बेहतर तरीके सुझा सकते हैं (जैसे कटिंग और पेपर फोल्डिंग)।

छोटे बच्चों का कला और शिल्प बनाने की प्रक्रिया में शामिल होना, उससे निकलने वाले उत्पाद से अधिक महत्वपूर्ण है।

(क) बेहिचक कलात्मक अभिव्यक्ति– बच्चों को अपनी कल्पना के साथ ही शिक्षक द्वारा दिशा-निर्देशित अभ्यासों के माध्यम से दृश्य व्यवस्था, कलाकृतियाँ, धुन, गीत, अभिनय, नाटकीय खेल, नृत्य और रचनात्मक कलाकृतियों के निर्माण की अनुमति दी जानी चाहिए। **कलात्मक अभिव्यक्ति के संदर्भ में 'सही' और 'गलत', 'अच्छा' और 'बुरा' की धारणाओं से बचना चाहिए। इसके बजाय विभिन्न दृष्टिकोणों, अनुभवों, अभिव्यक्ति और कल्पना को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए और शाबाशी दी जानी चाहिए।**

(ख) सामग्रियों, माध्यमों और उपकरणों की खोज– विभिन्न प्रकार की सामग्रियों की खोज कर अपनी जिज्ञासा को विकसित करना और उनका उपयोग करते हुए कला उपकरण व माध्यम के रूप में कई तरीकों से उपयोग करने की संभावना का विस्तार करना बच्चों के लिए महत्वपूर्ण है। **ब्रश का उपयोग दृश्य कला में उपकरण के रूप में किया जा सकता है, लेकिन इसे संगीत वाद्ययंत्र या नाट्य सामग्री के रूप में उपयोग किए जाने की संभावना भी हो सकती है। बच्चों को पारंपरिक रूप से स्वीकृत विधियों के अलावा, कला के प्रत्येक क्षेत्र में भी उपकरणों और सामग्रियों के उपयोग की अपनी विधियों और तकनीकों की खोज करने के लिए प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है।**

(ग) अवलोकन– बच्चों को न केवल अपने आप-पास की दुनिया को अपने माध्यम से देखना आवश्यक है, अपितु स्वयं के विचारों, संवेदनाओं, भावनाओं, अभिव्यक्ति, कामों और पूरे व्यवहार का सूक्ष्म

अवलोकनकर्ता बनने की भी आवश्यकता है। बच्चों को कला के मूल तत्वों से परिचित कराने से उन्हें बहु-संवेदी उद्दीपनों को व्यवस्थित करने और समझने तथा उनकी सौंदर्य संबंधी संवेदनाओं को विकसित करने के लिए कई रूपरेखाएँ मिलती हैं। ध्वनि, रंग या गति के तत्वों पर आधारित सरल अभ्यासों को भावनाओं, विचारों और कार्यों के साथ जोड़ने के लिए इन्हें बच्चों के दैनिक संदर्भों पर लागू किया जा सकता है।

(घ) **बातचीत और संवाद**– शिक्षक को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि कला कक्षा परिवेश हमेशा समावेशी हो। शिक्षक को बच्चों के मौखिक और गैर-मौखिक संप्रेषण पर गहन ध्यान देना चाहिए, उनकी दृश्य और प्रदर्शन कलाकृति की सराहना करनी चाहिए और ऐसे प्रश्न पूछने चाहिए, जो प्रत्येक बच्चे से व्यक्तिगत प्रतिक्रियाओं के योग्य हों।

(ङ) **सौंदर्य संबंधी प्रशंसा**– कला वर्ग में नियमित रूप से बातचीत और चर्चा शामिल होनी चाहिए, जिसमें हम व्यक्तिगत रूप से क्या पसंद करते हैं, सामूहिक रूप से क्या सराहा जाता है और सौंदर्य की दृष्टि से क्या अत्यंत आवश्यक है, यह सब शामिल हो। ये बातचीत कक्षा में किए गए व्यावहारिक कार्य व सौंदर्य संबंधी अनुभवों पर आधारित होनी चाहिए, जिसे बच्चे अपने दैनिक जीवन से जोड़ सकते हैं (जैसे– रंग, कपड़े, भोजन, नृत्य, त्योहारों, प्रदर्शनों में उनकी प्राथमिकताएँ आदि)। इस बातचीत में शिक्षक की भूमिका सहभागी की और गैर-निर्णयात्मक होनी चाहिए। कला वर्ग के दौरान चर्चाओं के लिए 8 से 10 मिनट से अधिक समय नहीं लगना चाहिए।

कक्षा 1 और 2 के लिए कला और शिल्प के समय-ब्लॉक (blocks of time) की योजना बनाना उपयोगी हो सकता है। चूँकि कला को विभिन्न प्रकार की सामग्रियों की खोज के लिए समय और अवसरों की आवश्यकता होती है, इसलिए उनकी तैयारी, व्यवस्था, वितरण और सफ़ाई के लिए, कला बनाने पर केंद्रित एक घंटे के ब्लॉक को वैकल्पिक दिनों (ब्लॉक 2) पर तय किया जा सकता है। प्रदर्शन, प्रस्तुति, बातचीत और प्रशंसा से संबंधित कला प्रक्रियाओं को हर दिन 20 मिनट के छोटे समय के ब्लॉक में व्यवस्थित किया जा सकता है (ब्लॉक 1)।

तालिका 4.4 क

ब्लॉक्स	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
1	संगीत का अभ्यास	नाटक का अभ्यास	नृत्य / शारीरिक गतिविधियों का अभ्यास	संगीत का अभ्यास	नाटक का अभ्यास	नृत्य / शारीरिक गतिविधियों का अभ्यास
2	कलाकृति बनाना और उसकी सराहना करना	–	कलाकृति बनाना और उसकी सराहना करना		कलाकृति बनाना और उसकी सराहना करना	

4.4.7 आंतरिक खेल

जिस तरह शरीर को फिट और स्वस्थ रखने के लिए व्यायाम करना आवश्यक है, उसी तरह दिमाग का व्यायाम भी आवश्यक है। रणनीतिक खेल, तर्क व शब्द पहेलियाँ और मनोरंजक गणित बच्चों को गणित के बारे में उत्साहित करने और तार्किक कौशल विकसित करने के सबसे अच्छे तरीके हैं, जो उनके पूरे स्कूल के वर्षों के साथ-साथ असल में पूरे जीवन के दौरान बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

जिग्सॉ पहेलियाँ, ब्लॉक के साथ खेलना और भूलभुलैया को हल करना एक बच्चे के कल्पनात्मक तर्क को विकसित करने में मदद करते हैं; रणनीति के खेल (जैसे– टिक-टैक-टो और इससे आगे शतरंज जैसे गहरे दिमागी खेल तक जाना) रणनीतिक सोच और समस्या-समाधान कौशल विकसित करते हैं।

खेल खेलना (जैसे– चौपड़, साँप-सीढ़ी, लूडो) मज़ेदार होता है, यह गिनती, रणनीति, सहयोग, स्वस्थ प्रतिस्पर्धा, साथियों के साथ संबंध बनाना भी सिखाता है।

बॉक्स 4.4 ङ

कंकड़ों वाला सरल अंकगणितीय खेल

कुछ खेलों में न्यूनतम सामग्री की आवश्यकता होती है, लेकिन ऐसे खेल अक्सर सबसे मज़ेदार, आदत पड़ जाने वाले और शिक्षाप्रद हो सकते हैं। नीचे दिए गए '10 कंकड़ खेल' को कई स्तरों पर अपनाया जा सकता है। यह सबसे कम आयु के बच्चों द्वारा खेला जा सकता है, फिर भी गहरी गणितीय अवधारणाओं के कारण इसे बार-बार फिर से खेला जा सकता है और आगे बढ़ाया जा सकता है।

10 कंकड़ों के ढेर से शुरू करें (कंकड़ों की जगह 10 सिक्के, पत्थर या मोती या कुछ और भी उपयोग किया जा सकता है)। दो खिलाड़ी बारी-बारी से ढेर से एक या दो कंकड़ निकालते हैं। ढेर में आखिरी कंकड़ निकालने वाला खिलाड़ी जीत जाता है!

इस खेल को दो खिलाड़ियों के साथ कई बार खेला जा सकता है, जिसमें दोनों में से खेल शुरू करने वाला पहला खिलाड़ी बारी-बारी से बदल सकता है। बच्चे इस खेल को तब तक बार-बार खेल सकते हैं, जब तक कि वे जीतने के लिए अलग-अलग रणनीतियाँ न चुनना शुरू कर दें। कुछ खेलों के बाद शिक्षक एक बच्चे से पूछ सकता है, "क्या आप पहला खिलाड़ी या दूसरा खिलाड़ी बनना पसंद करते हैं? क्यों?" जब बच्चा रणनीति के बारे में सोचना शुरू करता है, तो यह मज़ेदार खेल अंकगणितीय तर्क सिखाता है।

खेल में विविधता भी लाई जा सकती है, जैसे 10 या 21 चीज़ें ली जा सकती हैं और खिलाड़ी को अपनी हर बारी में 1, 2 या 3 चीज़ लेने की अनुमति मिल सकती है।

एक बार जब बच्चे गिनना और छोटी संख्याएँ जोड़ना सीख लेते हैं, तो खेल खेलने के लिए किसी चीज़ की आवश्यकता नहीं होती है। पहला खिलाड़ी संख्या 1 या 2 कहकर शुरू करता है; फिर दूसरा खिलाड़ी पहले खिलाड़ी की संख्या में 1 या 2 जोड़ता है और वह संख्या बोलता है; फिर पहला खिलाड़ी कही गई अंतिम

संख्या में 1 या 2 जोड़ता है और उस संख्या को बोलता है। वे एक के बाद एक चुनते हैं और जो खिलाड़ी पहले 10 बोलता है, वह जीत जाता है। शिक्षक बच्चों से पूछ सकते हैं, "यह खेल 10 कंकड़ के खेल के समान क्यों है?" यह अभ्यास बच्चों को संख्या नामों और वस्तुओं की मात्रा के बीच संबद्धि की अवधारणा के बारे में सोचने के लिए प्रेरित करता है।

पहेलियाँ और चुटकुले ऐसे प्रश्न या कथन हैं, जिन्हें जान-बूझकर इस तरह से तैयार किया जाता है ताकि उत्तर या अर्थ को समझने के लिए लीक से हटकर (आउट-ऑफ-द-बॉक्स) सोचने की आवश्यकता हो, इन्हें आमतौर पर खेल के रूप में भी पेश किया जाता है। पहेलियों और चुटकुलों को संज्ञानात्मक रूप से लाभकारी माना जाता है, क्योंकि वे बच्चों और वयस्कों को समान रूप से सोचने के मानक तरीकों से बाहर निकालने में मदद करते हैं तथा इस प्रकार रचनात्मकता और नवीनता को प्रोत्साहित करते हैं।

बॉक्स 4.4 च

एक प्रसिद्ध संगीत पहेली

तीतर के दो आगे तीतर

तीतर के दो पीछे तीतर

आगे तीतर पीछे तीतर

बोलो कितने तीतर

पहले इसे कक्षा में सामूहिक रूप से गाया जा सकता है, फिर पहेली के उत्तर पर चर्चा की जा सकती है— एक तीतर के सामने दो तीतर हैं; एक तीतर के पीछे दो तीतर हैं; तीतर के आगे और पीछे तीतर हैं; मुझे बताओ कितने तीतर हैं!

शब्द और तर्क पहेली निगमनात्मक तर्क सिखाने का एक और मज़ेदार तरीका है। सरल पहेलियाँ जैसे कि ऊपर दिए गए बॉक्स में बच्चों के तार्किक व रचनात्मक चिंतन के कौशल को मनोरंजक तरीके से विकसित करने में मदद करते हैं। जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते जाते हैं, पहेलियाँ अधिक चुनौतीपूर्ण हो सकती हैं और इसमें अंकगणित व अन्य तत्वों को शामिल किया जा सकता है। अंकगणित पहेलियाँ और खेल, संख्याओं के साथ सहजता विकसित करने और मात्रात्मक तर्क विकसित करने में मदद कर सकते हैं।

मज़ेदार अभ्यास, खेल और पहेलियों के माध्यम से बच्चों को व्यस्त रखने के साथ-साथ मानसिक क्षमता व रचनात्मकता को विकसित करने के लिए सीखने को मनोरंजक बनाना सुनिश्चित किया जाता है। पहेलियाँ और समस्या-समाधान जैसी गतिविधियाँ— जिनमें स्थानिक तर्क, वर्ड-प्ले, रणनीति, तर्क और अंकगणित शामिल हैं— चिंतन, तार्किक निगमन, गणितीय तर्क और रचनात्मकता के लिए लगाव विकसित करने हेतु बुनियादी स्तर पर कक्षा

का हिस्सा होना चाहिए। भारत के लिए प्रासंगिक उदाहरणों, जिनमें भारत की पहेलियों और समस्या-समाधान की समृद्ध स्थानीय और राष्ट्रीय परंपराएँ आती हैं, उन्हें भी व्यापक रूप से शामिल किया जाना चाहिए।

4.4.8 बाह्य खेल

चलना, दौड़ना, कूदना, पीछा करना, लात मारना और गेंद फेंकना, पानी या रेत या कीचड़ में खेलना, पोखर में कूदना, सुरंगों से रेंगना, गिरे हुए पेड़ों पर चढ़ना या छोटे पेड़ों पर चढ़ना बच्चों को स्थूल मांसपेशीय कौशल विकसित करने में मदद करता है। प्रकृति की सैर पर जाना और उनके द्वारा सुनी जाने वाली विभिन्न ध्वनियों का नामकरण, पक्षियों या कीड़ों या पौधों की तलाश करना और उनका नामकरण करना भी एक अलग तरह की बाहरी गतिविधि का हिस्सा है।

खेलने के उपकरण बनाने के लिए पुराने टायरों का रचनात्मक उपयोग किया जा सकता है। शिक्षक ईंटों का उपयोग बच्चों को स्वयं को संतुलित करने और चलने के लिए कर सकते हैं तथा बड़ी गेंदें, रिंग्स, हूला-हूप और रस्सी-कूद जैसी खेल सामग्री प्रदान कर सकते हैं। बाँस जैसी स्थानीय सामग्री का उपयोग खेल की संरचना बनाने के लिए किया जा सकता है। नियंत्रित ऊँचाई का एक छोटा पेड़ बाहरी खेल का एक बड़ा स्रोत हो सकता है।

छोटे बच्चे बिना किसी नियम या सरल नियमों के साथ समूह में खेल सकते हैं (जैसे– पकड़म-पकड़ाई, फेंकना और पकड़ना, गेंद को छेद में फेंकना)। जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते हैं, वे सरल नियमों का पालन करते हुए समूह खेलों का आनंद लेते हैं (जैसे– पिठ्ठू, गिट्टे, जंजीर, आँखमिचौली, स्टैचू, लुक-अप और लुक-डाउन)।

शिक्षक के मन की बात – 4.4 ग

जंगल में आग लगी! भागो बच्चों, भागो!

यह बहुत पुराना और लोकप्रिय खेल है। मैं सभी बच्चों को एक घेरे में मेरे चारों ओर धीमे-धीमे घूमने के लिए कहकर शुरू करती हूँ, तब मैं गाती हूँ “जंगल में आग लगी, भागो, बच्चों भागो!” ऐसा कई बार कहने के बाद, मैं अचानक कोई संख्या कहती हूँ, जैसे “नंबर 3”। तीन के समूह बनाने के लिए सभी बच्चों को तुरंत रुककर घेरे से अलग हो जाना चाहिए। कम-से-कम समय में उन्हें रुक जाना चाहिए, निर्देशों का पालन करना चाहिए, यह समझना चाहिए कि किस समूह में तीन बच्चे हैं या किसमें अभी कुछ लोगों की आवश्यकता है और उस हिसाब से किसी समूह को छोड़ना या उसमें जुड़ना चाहिए।

(अंजलि शेखावत द्वारा चित्रित)

इसके लिए स्थिति (समूह में प्रतिभागियों की बदली हुई संख्या) और लचीलेपन (हर बार समूह में अलग-अलग बच्चों को ढूँढ़ना) के अनुकूल ढलने की आवश्यकता होती है। यह सकारात्मक सीखने की आदतों को विकसित करने का एक मज़ेदार तरीका है जैसे कि निर्देशों को याद रखने के लिए विभिन्न रणनीतियों को लागू करना, बच्चों का चौकस और धैर्यवान होना।

बाहर खेलते समय सुरक्षा का ध्यान रखना आवश्यक है। बच्चे जब खेल रहे हों, तब शिक्षक को उन पर नज़र रखनी चाहिए और सुनिश्चित करना चाहिए कि किसी को चोट न लगे।

अगर बाहर कोई सुरक्षित स्थान नहीं है, तो बच्चे भीतर ही शारीरिक खेल खेल सकते हैं जो स्थूल मांसपेशीय विकास को बढ़ावा देते हैं, लेकिन इसे दूसरे विकल्प के रूप में रखे जाने का सुझाव दिया जाता है। इस आयु में बच्चों को विकसित होने और अच्छी तरह से बढ़ने में मदद करने के लिए धूप में रहने की आवश्यकता है।

बॉक्स 4.4 छ

जापानियों की शिनरिन-योकू नामक एक प्रथा है। जापानी में शिनरिन का अर्थ है 'जंगल' और योकू का अर्थ है 'स्नान', तो शिनरिन-योकू का शाब्दिक अर्थ वन-स्नान है। यह दृष्टि, श्रवण, स्वाद, गंध और स्पर्श की इंद्रियों के माध्यम से प्रकृति से जुड़ने का एक साधन है।

बच्चों को प्रकृति में और उसके साथ समय बिताने में सक्षम बनाने के लिए इस गतिविधि को आयोजित किया जा सकता है। जबकि ग्रामीण क्षेत्र जंगल या तालाबों या जंगलों या खेतों तक पहुँच सुनिश्चित कर देंगे; शहरी क्षेत्रों में स्कूल के बगीचे या स्थानीय पार्क या झीलें, बेहतरीन विकल्प हो सकते हैं।

4.4.9 प्रकृति में और उसके साथ समय बिताना

मछली के बारे में कोई किताब पढ़ने या कहानी सुनने की बजाय उसे सामने से देखकर समझना आसान होता है, और इसमें बड़ा मज़ा भी आता है!

शिक्षक के मन की बात – 4.4 घ

कुछ बच्चों के घर में बगीचे हैं। जब हमने पौधों पर चर्चा की, तो अन्य बच्चों की दिलचस्पी बढ़ गई और उन्होंने पौधे कैसे बढ़ते हैं, उन्हें क्या चाहिए और हमें कैसे पता चलेगा कि उन्हें कब खाना चाहिए जैसे कई सवाल पूछे।

इसलिए, मैंने स्कूल के छोटे से खुले क्षेत्र के एक हिस्से को सब्ज़ी के बगीचे के रूप में उपयोग करने का निर्णय किया। कुछ बच्चे घर से बीज ले आए और मैंने उनकी मदद से उन्हें बो दिया। बच्चों ने बगीचे की देखभाल और ध्यान रखने की जिम्मेदारी ली। हमने टमाटर और कद्दू की 'फसलों' की कटाई की और बच्चों के बीच उपज को उनके परिवारों के साथ साझा करने के लिए घर ले जाकर वितरित किया।

इसके बाद, हमने कुछ धनिया और पुदीना उगाने की कोशिश की। मैं कुछ गमले में लगे फूलों के पौधे लेकर आया। फिर से बच्चों ने 'बगीचे' की देखभाल की!

जैसे-जैसे बच्चों की पौधों में अधिकाधिक रुचि विकसित होने लगी, हमने अपने स्कूल के पास के बगीचों और हरित क्षेत्रों को देखने का फैसला किया। हमने प्रकृति की कई सारी सैर की। बच्चे और मैं सड़क के किनारे की दरारों में फूलों और खरपतवारों, तितलियों के साथ-साथ कीड़े, मधुमक्खियों, चींटियों और मकड़ियों की 'खोज' करते हुए कई बार आश्चर्यचकित हुए।

मेरा उद्देश्य बच्चों को उनके आस-पास की प्रकृति का अवलोकन, अन्वेषण, प्रश्न और सम्मान करने के लिए प्रोत्साहित करना था। मेरी इच्छा उनमें प्राकृतिक दुनिया के साथ एक आत्मीयता विकसित करने की थी, जो उन्हें बड़े होने पर अच्छी स्थिति में रखे।

वहाँ बहुत सारी उज्ज्वल, सुंदर और दिलचस्प चीज़ें हैं, जो एक बच्चे में कौतूहल निर्मित करती हैं, उसकी जिज्ञासा को प्रोत्साहित करती हैं। स्थानीय जंगल या छोटे जंगल या स्थानीय पार्क की यात्रा और आस-पास के सभी पक्षियों को देखकर एक बच्चा अचंभित हो जाएगा।

पेड़-पौधों, पक्षियों और जानवरों के साथ समय बिताना या चारों ओर से घिरी प्रकृति में सिर्फ़ शांत रहना पर्यावरण के लिए जीवन शैली का आधार विकसित कर सकता है।

प्राचीन भारतीय ग्रंथों में कहा गया है कि चाहे मानव शरीर हो या विशाल ब्रह्मांड, यह अनिवार्य रूप से पंचतत्वों या पंचभूतों— पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश से बने हैं। उदाहरण के तौर पर अष्टांग आयुर्वेद के आठ वर्गों में से एक, बाल चिकित्सा कहती है कि पंचभूत हमारे शरीर के विभिन्न हिस्सों में प्रकट होते हैं। इसलिए इस अवस्था में जल, वायु और पृथ्वी के साथ प्रत्यक्ष अनुभव का परिचय देना महत्वपूर्ण है ताकि बच्चे तत्वों के साथ इस गहरे संबंध का अनुभव कर सकें।

शिक्षक के मन की बात – 4.4 ङ

जब मैं बच्चों को बाहर बगीचे में ले जाती हूँ; जब मैं उनके पास रहती हूँ; जब वे कक्षा के बाहर खेल रहे होते हैं या उनके माता-पिता द्वारा उन्हें लेने के लिए आने की प्रतीक्षा कर रहे होते हैं; तब मैं उनके द्वारा पूछे गए प्रश्नों पर आश्चर्य करती हूँ।

एक दिन शिरीन ने सड़क के किनारे पड़े निर्माण कार्य से बची एक छोटी-सी चट्टान की ओर इशारा करते हुए पूछा, "उस चट्टान के नीचे क्या है?"

सुषमा ने स्कूल प्रार्थना के दौरान पक्षियों के एक छोटे झुंड को स्कूल में उतरते देखकर पूछा, “वे पक्षी ज़मीन से क्या उठा रहे हैं?”

हरप्रीत का ध्यान पक्षियों की ओर गया और उसने कहा, “पक्षी इतने सारे रंगों से क्यों बने हैं?”

मैंने देखा कि डोमा एक दीवार के पास बैठकर किसी चीज़ को करीब से देख रही है। यह चींटियों की एक पंक्ति थी, जो दीवार में एक दरार में जा रही थी। जब मैंने जानना चाहा तो उसने पूछा, “वे कहाँ जा रही हैं? वे अपना रास्ता कैसे खोजेंगी?” अक्सर मुझे पक्के तौर पर पता नहीं होता कि उनके सवालों से कैसे निपटा जाए। यद्यपि मैं चाहती हूँ कि बच्चे इस तरह के सवाल पूछते रहें, क्योंकि मैं समझती हूँ कि यह बच्चों को प्रकृति और उसके संपूर्ण सौंदर्य के प्रति सम्मान और प्रशंसा विकसित करने में मदद कर सकते हैं।

मैं इस बात को भी समझती हूँ कि प्रकृति के साथ उनका जुड़ाव सुनिश्चित करने के लिए मुझे उनके जैसी ही जिज्ञासा और उत्साह प्रदर्शित करना चाहिए।

मैं सबसे आवश्यक बात इसे समझती हूँ कि उनके सवालों के लिए मेरा जवाब, “मैं उत्तर के बारे में निश्चित नहीं हूँ, लेकिन हम मिल-जुलकर कोशिश करते हैं और पता लगाते हैं” होना चाहिए।

4.4.10 क्षेत्र भ्रमण

स्थानीय सब्ज़ी बाज़ार नई और ध्वनियों से भरी एक रोमांचक जगह हो सकती है! दवाखाना, बस अड्डा, डाकघर और पुलिस स्टेशन बच्चों को एक अपरिचित लेकिन दिलचस्प दुनिया से परिचित करा सकते हैं, उन्हें कई नई चीज़ें सिखा सकते हैं। **सीखने की प्रक्रिया के हिस्से के रूप में छोटी, स्थानीय क्षेत्र अध्ययन यात्राएँ कक्षा में बच्चों द्वारा प्राप्त ज्ञान को मज़बूत करती हैं और उन्हें अधिक सवाल और उन पहले से ज्ञात चीज़ों के साथ संबंध बनाने के लिए प्रेरित करती हैं। इन अनुभवों के माध्यम से बच्चे स्वयं का प्रबंधन करना और दूसरों के साथ रहना सीखते हैं।**

शिक्षक के मन की बात – 4.4 च

प्रकृति में टहलते हुए गणित सीखना!

मैं अक्सर अपनी पूरी कक्षा को ‘प्रकृति की सैर’ के लिए नजदीकी पार्क में ले जाता हूँ। मैं आमतौर पर बच्चों से अपनी आँखें बंद करने और सभी आवाज़ों को सुनने के लिए कहता हूँ और देखता हूँ कि क्या वे उनका नाम ले सकते हैं। ऐसे कई संभावित तरीके हैं, जिनसे मैं बच्चों को यहाँ जोड़ सकता हूँ। उदाहरणार्थ, हम उनमें बड़ी पाँच चीज़ें खोजने की कोशिश करते हैं (जैसे– पेड़, झूले, कार, गेट, फव्वारा) और फिर ऐसी पाँच चीज़ें खोजने की कोशिश करते हैं, जो उनसे छोटी हों (जैसे– कंकड़, पत्ते, लाठी, कीड़े, तितली)। जैसे-जैसे हम घूमते हैं, मैं बच्चों से इन चीज़ों के नाम और वे कैसे दिखते हैं आदि को याद रखने के लिए कहता हूँ, ताकि जब हम कक्षा में वापस जाएँ, तो हम इसे अपने कार्यपत्रक में भर सकें।

मुझे लगता है कि यह कक्षा में बैठने की एकरसता को तोड़ने तथा सीखने को और अधिक मज़ेदार बनाने के साथ ही आकार जैसे विभिन्न गुणों के अनुसार अपने आस-पास की वस्तुओं को तुलना करने जैसी महत्वपूर्ण अवधारणाओं से जोड़ने की एक बहुत ही उपयोगी गतिविधि है।

वस्तुएँ हैं	
मुझसे छोटी	मुझसे बड़ी

खंड 4.5
साक्षरता और संख्या ज्ञान के लिए रणनीतियाँ

विशेष रूप से कक्षा 1 व 2 के लिए साक्षरता और संख्या ज्ञान को संरचित रूप से सीखने का एक महत्वपूर्ण घटक जोड़ा जाएगा। यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि 3–6 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए पाठ्यक्रम की योजना इस तरह से बनाई जानी चाहिए जो उस विशेष आयु के बच्चों की क्षमताओं का निर्माण करे और कक्षा 1 से पाठ्यक्रम के नीचे की ओर विस्तार के बजाय उन्हें औपचारिक शिक्षा की ओर ले जाए।

4.5.1 भाषा और साक्षरता शिक्षण

वर्तमान में, आरंभिक भाषा की कक्षाओं में मुख्य रूप से वर्णमाला एवं मात्राएँ पढ़ाने, शिक्षक या बच्चों द्वारा पढ़े जा रहे पाठ की समवेत पुनरावृत्ति व नकल या हस्तलेखन अभ्यास पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। अर्थ-उन्मुख कार्य पर बहुत कम बल दिया जाता है और बच्चों को पाठक और लेखक के रूप में विकसित करने के लिए कुछ ही अवसर प्रदान किए जाते हैं।

आरंभिक वर्षों में भाषा और साक्षरता के शिक्षण से बच्चों को पाठक और लेखक के रूप में स्वयं को तलाशने के पर्याप्त अवसर प्रदान करने चाहिए, साथ ही 'निम्न-क्रम' कौशल (जैसे– ध्वनि जागरूकता, डिकोडिंग, अक्षरों और शब्दों को सही ढंग से लिखना) और अर्थ-केंद्रित 'उच्चस्तरीय' कौशल (जैसे– मौखिक भाषा का विकास, पुस्तकों से जुड़ाव, ड्रॉइंग और मौलिक लेखन) सीखने का संतुलन प्रदान करना चाहिए।

4.5.1.1 उद्गामी साक्षरता

उद्गामी साक्षरता को उन कौशलों, ज्ञान और अभिवृत्तियों के रूप में परिभाषित किया जाता है जिन्हें बच्चे पारंपरिक या धारा प्रवाह पाठक और लेखक बनने से पहले पढ़ने और लिखने को लेकर विकसित करते हैं। प्रिंट और पढ़ने-लिखने के पर्याप्त अवसरों के साथ बच्चे बहुत कम आयु से पढ़ना और लिखना सीखना शुरू कर सकते हैं, इससे पहले भी, जब वे पारंपरिक रूप से (अक्षरों और शब्दों का उपयोग करके) डिकोड करने और लिखने में सक्षम होते हैं।

उद्गामी साक्षरता स्तर छोटे बच्चों के लिए पढ़ना और लिखना सीखने की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। उद्गामी साक्षरता में शुरूआती पढ़ना और लिखना दोनों शामिल है—

(क) **प्रारंभिक पठन कौशल** में प्रिंट जागरूकता तथा प्रिंट अवधारणाओं को सीखना, पढ़ने का अभिनय करना और शब्दों को चित्रों के रूप में पढ़ना (लॉगोग्राफिक रीडिंग) शामिल है। प्रिंट अवधारणा से तात्पर्य इस बारे में जागरूकता है कि प्रिंट कैसे काम करता है— यह अर्थ बताता है, इसका उपयोग विभिन्न उद्देश्यों के लिए किया जाता है और लिखित ग्रंथों व पुस्तकों में इसकी अलग-अलग विशेषताएँ, रूप और परंपराएँ होती हैं।

(ख) **प्रारंभिक लेखन कौशल** में कुछ व्यक्त करने के लिए ड्रॉइंग और अस्पष्ट घसीटकर लिखना या आड़ी-तिरछी रेखाएँ खींचना शामिल है। बच्चे अपने आप को लेखन में अभिव्यक्त करते हैं और इसके बाद जो उन्होंने लिखा है, उसके बारे में बात करते हैं। छोटे बच्चों का लेखन उनकी बात, अनुभव, ड्रॉइंग, पढ़ने और नाटक-खेल से संबंधित होता है। बाद के चरणों में बच्चे धीरे-धीरे ध्वनि और प्रतीकों के बीच के संबंध को समझने और पारंपरिक वर्तनी और लेखन की ओर बढ़ने से पहले अक्षर जैसी आकृतियों का उपयोग करते हैं और अपनी वर्तनी (जैसे– Cat को Kat, बिंदु के लिए बनद) बना लेते हैं।

बच्चे घर और बाहर प्रिंट के संपर्क के माध्यम से प्रारंभिक पढ़ने और लिखने के कौशल हासिल करते हैं (जैसे– लेबल को पहचानना, उन्हें पढ़कर सुनाई जाने वाली कहानी की किताबें देखना, लोगों को लिखते या चित्र बनाते हुए देखना)। बहुत से बच्चे प्रिंट के संपर्क में नहीं आ पाते हैं और प्रिंट के बारे में कम जागरूकता के साथ स्कूल में दाखिला ले सकते हैं। उन्हें स्कूल में प्रिंट-समृद्ध परिवेश और पुस्तकों के साथ जुड़ाव के माध्यम से प्रिंट को समझने की पहल कराने की आवश्यकता है। अक्षर पढ़ना और लिखना सिखाने से पहले बच्चों को यह समझने की आवश्यकता है कि साक्षरता उनके लिए कैसे उपयोगी है।

4.5.1.2 उद्‌गामी साक्षरता के लिए सहयोगी रणनीतियाँ

उद्‌गामी साक्षरता के लिए सहयोगी कुछ रणनीतियों में शामिल हैं—

(क) बच्चों को किताबों के साथ जुड़ने के लिए प्रोत्साहित करना और '*पढ़ने का नाटक*' करने देना (देखना और बोलना), शिक्षक द्वारा पढ़कर सुनाई जा रही सचित्र कहानी की किताबें ऊँचे स्वर में पढ़ना शामिल है।

(ख) बच्चों को स्वयं को व्यक्त करने के लिए फ़र्श पर, अपनी तख्ती या नोटबुक पर चित्र बनाने और लिखने या आड़ी-तिरछी रेखाएँ खीचने के लिए प्रोत्साहित करना (उदाहरण के लिए, कहानी सुनाने के सत्र के बाद)।

(ग) प्रिंट संसाधनों (उदाहरण के लिए, बड़ी किताबें, चित्र पुस्तकें, कहानी-पोस्टर, कविता-पोस्टर, बच्चों की पत्रिकाओं) के उपयोग से कक्षा में प्रिंट-समृद्ध परिवेश बनाना या उन्हें बच्चों की पहुँच के भीतर कक्षा में रखना और प्रदर्शित करना।

(घ) कक्षा में 'पढ़ने का कोना' और 'लिखने का कोना' स्थापित करना।

4.5.1.3 आरंभिक भाषा और साक्षरता के घटक

प्रारंभिक वर्षों में आरंभिक भाषा और साक्षरता के विकास के लिए कौशलों, ज्ञान और अभिवृत्तियों की एक विस्तृत रेंज विकसित करने की आवश्यकता होती है। कुशलतापूर्वक पढ़ने और लिखने के लिए बच्चे को बोले गए शब्दों में विभिन्न ध्वनियों को अलग करने, अक्षर-ध्वनि संबंधों को पहचानने, ध्वनियों को मिलाकर शब्द बनाने, शब्दावली विकसित करने, जो लिखा गया है उसे समझने और पढ़ने का प्रवाह विकसित करने की आवश्यकता होती है।

इसके लिए साक्षरता के शिक्षण की आवश्यकता होती है जिसमें कई प्रक्रियाएँ शामिल होती हैं जो समझ, शब्दावली, प्रवाह, शब्द पहचान, अक्षर ज्ञान और ध्वनि जागरूकता का निर्माण करती हैं।

आरंभिक भाषा और साक्षरता के घटकों में शामिल हैं—

(क) **उद्गामी साक्षरता कौशल—** प्रिंट के बारे में जागरूकता विकसित करना, पढ़ने का नाटक करना (चित्र पढ़ना), लोगोग्राफिक पढ़ना (शब्दों को चित्रों के रूप में पढ़ना), कुछ प्रस्तुत करने और व्यक्त करने के लिए ड्रॉइंग और आड़ी-तिरछी रेखाएँ खीचना। प्रिंट संबंधी अवधारणाओं में शामिल हैं—

i. मुद्रित शब्द बोली जाने वाली भाषा के शब्दों के प्रतीक होते हैं। ये बोली जाने वाली ध्वनियाँ मौखिक और लिखित भाषा के बीच अंतर्संबंध को देखने में मदद करती हैं।

ii. प्रिंट के विभिन्न कार्यों और रूपों से परिचित होना, जैसे– कहानी की किताब में, नोटिस और विज्ञापनों में, पोस्टरों में, पत्र लेखन और दूसरों को विचार संप्रेषित करने के लिए।

iii. यह जानना कि लेखन में अधिकतर बाएँ से दाएँ की ओर लिखा जाता है (उर्दू जैसे अपवादों के साथ); साथ ही एक शब्द के बाद एक खाली स्थान होता है; मुद्रित पाठ में अक्षर, शब्द और वाक्य होते हैं; विराम चिह्नों को जानना और शब्द लंबाई में कैसे भिन्न होते हैं आदि को जानना।

iv. पुस्तक संबंधी जागरूकता और पुस्तक को संभालने के तरीके।

(ख) **मौखिक भाषा का विकास —** बेहतर ढंग से सुनकर समझना, मौखिक शब्दावली का विकास और साथियों व जानकार अन्य लोगों (जैसे बड़े विद्यार्थी, शिक्षक, माता-पिता) के साथ बातचीत और चर्चा का उपयोग सीखने के लिए करना।

(ग) **ध्वनि जागरूकता—** ध्वनि जागरूकता भाषा की ध्वनि संरचना अर्थात वाक्य जिन शब्दों, शब्दांशों और ध्वनि की छोटी इकाइयों से बने होते हैं, की समझ है। यह ज्ञान पहले मौखिक रूप से विकसित होता है। ध्वनि जागरूकता और प्रिंट की अवधारणाएँ, डिकोडिंग सीखने के दो सबसे महत्वपूर्ण मूलभूत कौशल हैं।

(घ) **डिकोडिंग—** प्रतीकों और उनकी संबद्ध ध्वनियों के बीच के संबंध को समझने के आधार पर, लिखित शब्दों का उच्चारण करके उन्हें समझना। यह ध्वनियों को अलग-अलग अक्षरों और अक्षर संयोजनों (अक्षरों) के साथ जोड़ने और ध्वनियों को एक साथ मिलाकर पूरे शब्द का उच्चारण (या पढ़ने) और अर्थ की पहचान करने की क्षमता है (यदि शब्द ज्ञात हैं)।

(ङ) **समझ के साथ पढ़ना—** लिखित पाठ से अर्थ का निर्माण करना और इसके बारे में आलोचनात्मक/ समीक्षात्मक ढंग से चिंतन करना।

(च) **धाराप्रवाह पढ़ना—** शब्दों की सटीक, स्वत: स्फूर्त पहचान और हाव-भाव के साथ पढ़ना।

(छ) **लेखन—** तार्किक और व्यवस्थित तरीके से विचारों या सूचनाओं की प्रस्तुति के साथ-साथ शब्दों को सही ढंग से लिखने की क्षमता।

(ज) **पढ़ने की इच्छा या आदत विकसित करना—** विभिन्न प्रकार की पुस्तकों और अन्य पठन सामग्री के साथ जुड़ना और साहित्य के लिए एक प्रशंसा का भाव विकसित करना।

4.5.1.4 संतुलित साक्षरता पद्धति

शोध दिखाते हैं कि भाषा और साक्षरता के उपरोक्त घटकों को विकसित करने के लिए एक व्यापक और व्यवस्थित पद्धति की आवश्यकता होती है जिसे संतुलित साक्षरता पद्धति के रूप में जाना जाता है। संतुलित पद्धति शब्द पहचान कौशल विकसित करने के साथ-साथ अर्थ-निर्माण पर ध्यान केंद्रित करती है। यह डिकोडिंग कार्य को समग्र-भाषा (वाक्यों) के उपयोग से संतुलित करती है; साथ ही मौखिक भाषा और पढ़ने व लिखने के बीच संतुलन करती है।

प्रारंभिक वर्षों में भाषा और साक्षरता का शिक्षण दो व्यापक श्रेणियों से संबंधित कौशल प्राप्त कर रहे बच्चों पर केंद्रित होना चाहिए—

(क) **शब्द की पहचान और शब्दों को लिखने में सटीकता (निम्न स्तर कौशल)**— इनमें प्रिंट जागरूकता और ध्वनि जागरूकता (डिकोडिंग के शिक्षण से पहले के मूलभूत कौशल), डिकोडिंग, अक्षरों और शब्दों को सही ढंग से लिखना शामिल है।

(ख) **भाषा समझ और अभिव्यक्ति (उच्च स्तर कौशल)**— मौखिक भाषा विकास, शब्दावली, समझ के साथ पढ़ना (पढ़ने हेतु सक्रिय प्रतिक्रिया सहित) और मौलिक लेखन या रचना शामिल हैं।

निम्न स्तर और उच्च स्तर कौशल के बीच संतुलन की योजना मौखिक खेलों, ध्वनि जागरूकता गतिविधियाँ, वर्ण पहचान के लिए स्पष्ट निर्देश, डिकोडिंग व शब्द-कार्य, सूक्ष्म माँसपेशीय गतिविधियाँ, पढ़कर सुनाना, साझा पठन, निर्देशित या मार्गदर्शित पठन, स्वतंत्र पठन, आदर्श (modelled) लेखन, निर्देशित या मार्गदर्शित लेखन और स्वतंत्र लेखन जैसी विभिन्न गतिविधियों के उपयोग के माध्यम से की जाती है।

(क) **मौखिक भाषा का विकास**— इसके लिए रणनीतियों में कहानी सुनाना व चर्चा करना, चित्रों व विषयों पर बातचीत करना, बच्चों के लिए स्वतंत्र और निर्देशित बातचीत के माध्यम से बात करने और अपने अनुभव साझा करने के अवसर देना, भूमिका निवर्हन की गतिविधियाँ शामिल हो सकती हैं।

(ख) **डिकोडिंग निर्देश और शब्द पहचानना**— यह अक्षर-ध्वनि संबंध स्थापित करने के लिए स्पष्ट निर्देशों से संबंधित है। डिकोडिंग शिक्षण को ध्वनि जागरूकता की गतिविधियों का पालन करना चाहिए, जहाँ शब्दों में ध्वनियों (शुरुआत, मध्य, अंत की ध्वनियों) पर ध्यान देने की आवश्यकता होती है। अक्षरों और शब्दों को एक साथ प्रस्तुत किया जाना चाहिए ताकि अर्थ निकालना भाषा और साक्षरता शिक्षण के केंद्र में रहे (क्योंकि शब्द अर्थ की मूलभूत इकाइयाँ हैं)।

भारतीय लिपियों में कई अक्षर होते हैं और इसलिए अक्षर समूहों को सावधानी से चुनने और क्रम में लगाने की आवश्यकता होती है ताकि बच्चे अपने हाल ही में प्राप्त अक्षर ज्ञान के साथ सार्थक शब्द निर्माण कर सकें। शब्दों के टुकड़े करने और अक्षरों को मिलाने से शब्द डिकोडिंग और वर्तनी के लिए स्पष्ट निर्देश दिए जाने की आवश्यकता है। अंग्रेज़ी भाषा में वर्ण ध्वनि निर्देश का मतलब वर्णमाला के क्रमिक परिचय के बजाय अंग्रेज़ी में ध्वनियों को दर्शाने वाले विशिष्ट अक्षर संयोजनों पर ध्यान देने से है।

(ग) पढ़ने की रणनीतियाँ

i. **पढ़कर सुनाना—** शिक्षक सूझ-बूझ से चुने गए बाल साहित्य (पाठ्यपुस्तक नहीं) को बच्चों को पढ़कर सुनाता है। इसका उद्देश्य बच्चों द्वारा शिक्षक के बाद दोहराने मात्र का नहीं है, अपितु उनकी भाषा क्षमताओं और शब्दावली को विकसित करने का है। पढ़कर सुनाना बच्चों को अच्छे साहित्य से परिचित कराने और उन्हें शब्दावली, भाषा के उपयोग और अर्थ-निर्माण से परिचित होने का अवसर देना है। चर्चाएँ और बातचीत इस गतिविधि का एक अनिवार्य हिस्सा हैं, जहाँ बच्चे पढ़कर सुनाए जा रहे पाठ से सक्रिय रूप से जुड़ते हैं।

ii. **साझा पठन—** शिक्षक दूर से दिखाई देने वाले बड़ी छपाई वाले पाठ को चुनता है और बच्चों को अपने साथ-साथ पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करता है। जैसे-जैसे बच्चे ऊँची आवाज़ में कहानियाँ पढ़ते हैं और साथ-साथ पढ़ने में भाग लेने लगते हैं, तब वे अपने वर्तमान स्तर से आगे बढ़ सकते हैं और पढ़ने की अपनी क्षमताओं के बारे में आत्मविश्वास हासिल कर सकते हैं।

iii. **निर्देशित या मार्गदर्शित पठन—** निर्देशित या मार्गदर्शित पठन में पढ़ने की जिम्मेदारी शिक्षक से बच्चों पर स्थानांतरित हो जाती है। यह साझा पठन से अलग है, जहाँ शिक्षक पढ़ने में आगे होता है जबकि बच्चे कभी-कभार योगदान देते हैं। निर्देशित या मार्गदर्शित पठन में बच्चे पढ़ते हैं, जबकि शिक्षक आवश्यकतानुसार उन्हें आधार प्रदान करता है। इस प्रक्रिया में पढ़कर सुनाने और साझा पठन के दौरान शिक्षक द्वारा अपनाई गई रणनीतियों और तकनीकों का पुनर्बलन और अभ्यास किया जाता है।

iv. **स्वतंत्र पठन—** बच्चों को स्वतंत्र रूप से या एक साथी के साथ पढ़ने के अवसर दिए जाने चाहिए। स्वतंत्र रूप से पढ़ते समय, वे धीरे-धीरे पढ़ने की आदत विकसित करते हैं, पढ़ने और उस पर चिंतन के कार्य को महत्व देने लगते हैं और आनंद के लिए किसी पुस्तक को अनुभव करने लगते हैं। इसमें बच्चों को वह पुस्तक चुनने की स्वतंत्रता होनी चाहिए जिसे वे स्वतंत्र रूप से या अपने साथी के साथ पढ़ना चाहते हैं।

(घ) लेखन की रणनीतियाँ

i. **मॉडल लेखन—** जो छोटे बच्चे लिखना सीख रहे हैं, उनके लिए शिक्षक को लिखने की प्रक्रिया का मॉडल बनाना होगा। यदि हम अर्थ को भाषा शिक्षण के केंद्र में रखना चाहते हैं, तो कॉपी लेखन बच्चों के लिए बहुत सार्थक गतिविधि नहीं है, भले ही यह लेखन प्रवाह को विकसित करने में मदद करता हो। शिक्षक, लेखन प्रक्रिया की मॉडलिंग करके छोटे बच्चों को बोलने के साथ-साथ लेखन को एक अभिव्यक्ति की गतिविधि के रूप में देखना शुरू करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

ii. **साझा लेखन—** साझा पठन की तरह ही साझा लेखन भी एक सहयोगी प्रक्रिया है, जिसमें शिक्षक बच्चों को मिलकर साथ लिखने के काम में सहायता करता है। उदाहरण के लिए, वे बोर्ड पर "मैंने नाश्ते में ... खाया" वाक्य लिखकर शुरू कर सकते हैं और एक बच्चे को आकर इसे पूरा करने के लिए कह सकते हैं। चर्चा करना, बातचीत करना व लिखना साथ-साथ चलता है और शिक्षक लगातार बच्चों को लेखन प्रक्रिया में मॉडलिंग के जरिए प्रेरित एवं मार्गदर्शित कर रहे होते हैं।

iii. **निर्देशित या मार्गदर्शित लेखन—** बच्चों द्वारा मुक्त या स्वतंत्र लेखन वांछित होने पर भी वह बच्चों को केवल लेखन कार्य देने से अपने आप उभरकर नहीं आता। साझा लेखन से जिम्मेदारी आंशिक रूप से

बच्चे पर स्थानांतरित कर दी जाती है, जबकि शिक्षक लेखन को प्रवाहित रखने के लिए लगातार प्रतिक्रिया, सुझाव और संकेत देता है। लेखन के लिए सोद्देश्यता, क्रियाशीलता और कल्पनाशीलता के तत्वों को जोड़ने वाले उपयुक्त कार्य निर्धारण करने से छोटे बच्चों की लिखने की रुचि बनी रहती है। निर्देशित या मार्गदर्शित लेखन में बच्चों द्वारा मिल-जुलकर लिखना (peer writing) और शिक्षक के फीडबैक के साथ लेखन के कई प्रारूप शामिल हो सकते हैं।

iv. **स्वतंत्र लेखन**— बच्चों को स्वयं से लिखने का समय दिया जाना चाहिए। कहानियों, कविताओं, संदेशों, निर्देशों तथा व्यंजनों को लिखने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करने से उन्हें अपनी रचनात्मकता और कल्पना का उपयोग करने के साथ-साथ साक्षरता के व्यावहारिक पहलुओं से जुड़ने का अवसर मिलता है।

बुनियादी स्तर पर संतुलित भाषा और साक्षरता शिक्षण का एक अन्य आयाम यह है कि मौखिक भाषा का विकास, डिकोडिंग संबंधी कार्य, पढ़ने और लिखने की गतिविधियाँ एक साथ और हर दिन होनी चाहिए। इन्हें शिक्षण समय के चार ब्लॉकों के रूप में उपयोग करने के लिए एक पद्धति आगे प्रस्तुत की गई है।

4.5.1.5 साक्षरता शिक्षण के लिए चार-ब्लॉक पद्धति

भाषा और साक्षरता शिक्षण में चार प्रमुख घटक हैं— मौखिक भाषा, शब्द पहचान, पढ़ना और लिखना। चार ब्लॉकों के लिए गतिविधियों को एकीकृत तरीके से कार्यान्वित किया जा सकता है, साथ ही यह भी आवश्यक है कि बच्चे नियमित रूप से हर एक ब्लॉक पर काम करने में समय व्यतीत करें।

जब बच्चे डिकोडिंग सीख रहे होते हैं तो उन्हें कहानी की किताबों से भी जुड़े रहना चाहिए, जिसमें पढ़ी जा रही कहानी को सुनना और प्रतिक्रिया देना और पढ़े जा रहे पाठ को सुनकर प्रतिक्रिया में लिखना या चित्र बनाना आदि शामिल है। साथ ही वर्णों व अक्षरों के शिक्षण को समूहबद्ध तरीके से व्यवस्थित किया जा सकता है, ताकि बच्चे कुछ प्रतीकों को सीखने के तुरंत बाद सरल शब्दों और अर्थपूर्ण वाक्यों को पढ़ना और लिखना शुरू कर सकें, बजाय इसके कि वे सभी वर्णों और मात्राओं को एक साथ सीखने के लिए प्रतीक्षा करते रहें। चार-ब्लॉक मॉडल [11] में शामिल हैं—

चित्र 4.5 क– चार ब्लॉक मॉडल— भाषा

कक्षा 1 और 2 के अंत तक, उन बच्चों को अतिरिक्त सहायता के लिए समय देने की आवश्यकता होगी, जिन्होंने बुनियादी शब्द पहचान कौशल हासिल नहीं किया है। ऐसे बच्चों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए शिक्षण की एक अलग पद्धति (कृपया इस अध्याय में खंड 4.2 देखें) सभी चार ब्लॉकों में गतिविधियों का हिस्सा होना चाहिए।

4.5.1.6 अपरिचित भाषा सिखाने के लिए कुछ रणनीतियाँ

शिक्षक अपनी कक्षा में ऐसे बच्चों से मिल सकता है, जो सिखाई जा रही भाषा से परिचित नहीं हैं। किसी अपरिचित भाषा को पढ़ाने के शिक्षणशास्त्र को संपूर्ण भौतिक प्रक्रिया (भाषा सीखने की एक रणनीति) गतिविधियों, विस्तारित मौखिक व संप्रेषण संबंधी कार्य, शब्दावली विकास, सरल वाक्यांशों एवं वाक्यों पर नियंत्रण, बातचीत और कहानियों के रूप में उपयोग की जाने वाली रणनीतियों के साथ बेहतर ढंग से समझने की आवश्यकता है।

किसी अपरिचित भाषा को पढ़ाने की कुछ रणनीतियाँ नीचे दी गई हैं—

(क) आरंभ में ही बहुत सारी मस्ती-भरी और संवादात्मक गतिविधियों के साथ मौखिक भाषा के विकास को बढ़ावा दें; जैसे– टी.पी.आर. (उदाहरण के लिए क्रियात्मक शब्दों का शारीरिक रूप से प्रदर्शन 'कूदना' शब्द बोलते समय वास्तव में कूदना), विस्तारित मौखिक और संप्रेषण संबंधी कार्य, शब्दावली विकास, सरल वाक्यांश और आदेश के रूप में उपयोग किए जाने वाले वाक्य (जैसे– दरवाजा बंद करें, बाहर देखें) और बातचीत तथा कहानियाँ आदि।

(ख) अपरिचित भाषा में बोधगम्य इनपुट प्रदान करें। इसमें भाषा को सुनने और इसे ऐसे रूप में पढ़ने के कई अवसर प्रदान करना शामिल है जो बच्चों की समझ के क्षेत्र के भीतर है, जिसे 'बोधगम्य इनपुट' भी कहा जाता है। शिक्षक द्वारा उपयोग की जाने वाली भाषा सरल होनी चाहिए और इशारों, चित्रों, क्रियाओं एवं बच्चों की गृह भाषाओं के शब्दों के उपयोग द्वारा समर्थित होनी चाहिए। बेहतर समझ के लिए बच्चों द्वारा आसानी से संबंध स्थापित करने योग्य परिचित संदर्भ का उपयोग करना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

(ग) एक सार्थक और उद्देश्यपूर्ण संदर्भ बनाएँ। इसका अर्थ है कि बच्चों को भाषा की शुद्धता और सटीकता में उलझाने के बजाय प्रभावी संप्रेषण के लिए एक अपरिचित भाषा का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इससे अपरिचित भाषा में बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति में सुधार होगा।

(घ) अपरिचित भाषा को पर्याप्त रूप से परिचित कराएँ। यह सुनने के अवसर प्रदान करके, संप्रेषण के लिए भाषा का उपयोग करके और पर्याप्त प्रिंट सामग्री प्रदान करके किया जा सकता है।

(ङ) तनावमुक्त और सुरक्षित परिवेश बनाएँ। एक अपरिचित भाषा के लिए जल्दी से प्रस्तुति (early production) या बोलने और सीखने के औपचारिक आकलन पर कोई ज़ोर नहीं होना चाहिए। एक सकारात्मक एवं सहायक कक्षा-कक्ष परिवेश जहाँ बच्चे प्रेरित होते हैं और उनमें उच्च आत्म-सम्मान और चिंता का स्तर निम्न होता है, बच्चों को बेहतर और आराम से सीखने में मदद करता है।

4.5.2 गणित शिक्षण

बच्चे कक्षा में अपने परिवेश और संस्कृति से विविध गणितीय कौशल लाते हैं, जो गणित सीखने का आधार होना चाहिए।

गणित सीखने के उद्देश्यों को उच्चतर उद्देश्यों में वर्गीकृत किया जा सकता है, जैसे कि बच्चे की विचार प्रक्रियाओं का गणितीकरण (जैसे– अमूर्त चिंतन को संभालने की क्षमता, समस्या-समाधान, सादृश्यीकरण या मानस चित्रण, निरूपण, तर्क करना और अन्य क्षेत्रों के साथ गणित की अवधारणाओं का संबंध बनाना) और विषयवस्तु संबंधी उद्देश्यों (जो गणित में विभिन्न अवधारणाओं से संबंधित हैं, जैसे– संख्याएँ, आकृतियाँ, पैटर्न आदि) को समझना।

जब बच्चे इसमें गणितीय रूप से कुशल हो जाते हैं तो वे विषयवस्तु संबंधी उद्देश्यों को प्राप्त कर लेते हैं। इसलिए प्रारंभिक वर्षों में शिक्षण और सीखने को दो तरह के लक्ष्यों को पाने पर बल देना चाहिए— उच्चतर उद्देश्य और विषयवस्तु संबंधी उद्देश्य, क्योंकि दोनों उद्देश्य परस्पर निर्भर और जुड़े हुए हैं।

गणितीय कौशल सिखाने में सरल से जटिल की ओर जाने वाले तरीके का उपयोग करना चाहिए। इसका मतलब है कि प्रारंभिक वर्षों में बच्चे गणितीय शब्दावली (जैसे– मिलान करना, छाँटना, जोड़े बनाना, क्रम में लगाना, पैटर्न, वर्गीकरण करना, एक-से-एक की संबद्धि) और संख्याओं, आकृतियों, स्थान व मापों से संबंधित गणितीय अवधारणाओं को सीखते हैं। बाद के समय में ये कौशल धीरे-धीरे अधिक जटिल और उच्चतर कौशलों (जैसे– मात्रा, आकृति एवं स्थान, मापन) की ओर बढ़ते हैं। गणित सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में उन गणितीय कौशलों जो समझने, हल करने, तर्क करने, संवाद करने और निर्णय लेने के लिए वास्तविक जीवन की स्थिति में गणितीय कौशलों को लागू करने पर अधिक ध्यान केंद्रित करते हैं, पर बल देने की आवश्यकता है।

ऐसी कई विविध गणितीय प्रक्रियाएँ हैं जो बच्चों को उच्चतर और विषयवस्तु संबंधी दोनों उद्देश्यों को प्राप्त करने में मदद करती हैं। ये हैं, समस्या-समाधान यानी वास्तविक और 'शुद्ध (pure)' दोनों तरह की गणितीय समस्याओं को हल करना; संबंध बनाना यानी एक अवधारणा और दूसरी अवधारणा के बीच संबंध बनाना; निरूपण यानी गणितीय अवधारणाओं और विचारों को निरूपित करने के लिए ठोस चीज़ों, दृश्य वस्तुओं या आरेखों का उपयोग करना; संप्रेषण यानी गणितीय विचारों को समझाना और संप्रेषित करना; और अनुमान लगाना यानी मात्रा या परिमाण निर्धारित करने और हल करने के लिए सन्निकटन का उपयोग करना।

कक्षा में इन प्रक्रियाओं को शामिल करने से बच्चों को एक व्यापक गणितीय अनुभव प्राप्त करने तथा अवधारणात्मक समझ, प्रक्रियात्मक समझ, अनुप्रयोग, अनुकूली तर्क और गणित के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण के रूप में गणितीय निपुणता हासिल करने में मदद मिलती है।

4.5.2.1 गणित शिक्षण संबंधी पद्धतियाँ

कार्यों एवं कौशल की प्रकृति और संज्ञानात्मक माँग पर विचार करते हुए बच्चों को व्यापक गणितीय अनुभव देने के लिए निम्नलिखित दृष्टिकोणों को गणित सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं में एकीकृत किया जा सकता है।

(क) ठोस अनुभव के माध्यम से गणितीय अमूर्त अवधारणाओं का विकास करना (ELPS)

गणितीय अवधारणाएँ अमूर्त होती हैं, जैसे– संख्याओं को समझना, संक्रियाएँ करना और 2D आकृतियाँ बनाना सीखना। इसलिए बच्चों का इन अमूर्त अवधारणाओं को ठोस अनुभव के माध्यम से सीखना और धीरे-धीरे ठोस से चित्रात्मक और चित्रात्मक से अमूर्त धारणाओं की ओर बढ़ना महत्वपूर्ण है।

बच्चे जब ठोस अनुभव से जुड़ते हैं तो वे गणितीय अवधारणाओं का अर्थ आसानी से समझ सकते हैं। अमूर्त गणितीय अवधारणाओं के शिक्षण के लिए निम्नलिखित अनुक्रम का पालन किया जा सकता है।

ELPS के माध्यम से संख्याओं को सीखने का एक उदाहरण—

- **E – Experience (अनुभव)—** ठोस वस्तुओं के माध्यम से गणितीय अवधारणा सीखना, उदाहरण के लिए, संख्याओं को सीखने हेतु ठोस वस्तुओं को गिनना।
- **L – Spoken Language (बोली जाने वाली भाषा)—** भाषा में अनुभव का वर्णन करना, उदाहरण के लिए, क्या गिना जा रहा है, कितनों को गिना गया है।
- **P – Pictures (चित्र)—** गणितीय अवधारणाओं को चित्र रूप में प्रदर्शित करना, उदाहरण के लिए, यदि 3 गेंदों की गणना की गई है तो इन्हें गेंद के 3 चित्रों के माध्यम से दर्शाया जा सकता है।
- **S – Written Symbols (लिखित प्रतीक)—** ठोस अनुभव और चित्र के माध्यम से सीखी गई गणितीय अवधारणा को लिखित प्रतीक रूप में सामान्यीकृत किया जा सकता है, जैसे कि तीन गेंदों के लिए संख्या 3 लिखना।

(ख) गणित सीखने को बच्चों के वास्तविक जीवन और पूर्व-ज्ञान से जोड़ना

गणित सीखना बच्चों के वास्तविक जीवन और उनके पूर्व-ज्ञान से संबंधित होना चाहिए। वास्तविक जीवन के उदाहरण बच्चों को गणितीय अवधारणा समझने में मदद करते हैं तथा वास्तविक जीवन में गणितीय कौशल को लागू करने की क्षमता विकसित करते हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वे गणित को सीखने और कर पाने योग्य के रूप में देखने लगते हैं। इसलिए गणितीय कौशल सिखाते समय शिक्षकों को वास्तविक जीवन के उदाहरणों का उपयोग अवधारणात्मक और समस्या-समाधान क्षमताओं के निर्माण के लिए करना चाहिए।

(ग) समस्या-समाधान के साधन के रूप में गणित

समस्या-समाधान गणित सीखने का एक महत्वपूर्ण उच्चतर उद्देश्य है। बच्चों को जल्दी समझ में आ जाना चाहिए कि गणित को वास्तविक जीवन की गणितीय समस्या को हल करने के लिए समस्या-समाधान के साधन के रूप में उपयोग किया जा सकता है। इसलिए सीखने को न केवल अवधारणाओं के विकास पर अपितु समस्या-समाधान कौशलों पर भी ध्यान केंद्रित करना चाहिए। समस्या-समाधान क्षमताएँ बच्चों को कौशलों और ज्ञान के अर्थ-निर्माण के साथ-साथ यह समझने का अवसर प्रदान करती हैं कि वे अपने ज्ञान या कौशलों को कहाँ लागू कर सकते हैं। बच्चों में समस्या-समाधान क्षमताओं के निर्माण में मदद करने के लिए समृद्ध गणितीय कार्यों को स्थापित करना, समस्या को समझना, रणनीतियाँ तैयार करना, हल करना और हल की जाँच करना व औचित्य देना (justification) महत्वपूर्ण चरण हैं।

निम्नलिखित कदम बच्चों में समस्या-समाधान की क्षमताओं को विकसित करने में मदद कर सकते हैं—

i. समस्या को समझना— क्या जानते हैं? क्या नहीं जानते हैं?

ii. एक रणनीति या योजना तैयार करना— क्या मुझे संबंधित समस्या का पता है? इसे हल करने के लिए कौन-सी रणनीतियाँ उपयोगी हो सकती हैं?

iii. समस्या का समाधान करना— इसे हल करने के लिए मैं क्या कदम उठा रहा हूँ? क्या मैं सही कदम उठा रहा हूँ? क्या मैं इस बारे में बहस कर सकता हूँ कि मैंने इस समस्या को क्यों और कैसे हल किया?

iv. पीछे मुड़कर देखना या समाधान की जाँच करना— क्या मैंने सही काम किया? क्या मैंने सवाल का जवाब दिया?

v. लचीली सोच को प्रोत्साहित करना और समस्या-समाधान के लिए कई रणनीतियों का उपयोग करना।

बच्चों को समस्या-समाधान के एक से अधिक तरीके सीखने चाहिए। उदाहरण के लिए 8 + 7 को हल करने के लिए कौन-सी अलग-अलग रणनीतियाँ हो सकती हैं? कुछ बच्चे 8 के आगे 7 को गिन सकते हैं, तो कुछ बच्चे पहले 7 को 5+2 में बाँटकर फिर उससे 8 में 2 जोड़कर 10 बना सकते हैं और फिर बचे हुए 5 को 10 में जोड़कर 15 तक पहुँच सकते हैं। इसलिए सीखने-सिखाने में बच्चों की मदद करने पर ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए, जिससे वे समस्या-समाधान के एक नहीं, अपितु कई तरीके ढूँढ़ सकें। बच्चों को अपनी रणनीतियों का आविष्कार करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए लेकिन इन रणनीतियों के लिए बच्चों को गणितीय अवधारणाओं और प्रक्रियाओं की एक मज़बूत समझ की आवश्यकता होती है।

(घ) गणितीय चर्चा, संप्रेषण और तर्क का उपयोग करना

गणित की अपनी भाषा होती है, जो कई मायनों में दैनिक जीवन की भाषा से अलग होती है। इसकी अपनी अनूठी शब्दावली, प्रतीक और संकेत प्रणालियाँ हैं, जो अक्सर दैनिक जीवन में उपयोग नहीं की जाती हैं, जैसे– जोड़, गुणा , +, –, = आदि।

बच्चा गणित की कक्षा में पहली बार इनका सामना कर रहा होगा। शिक्षकों एवं बच्चों के बीच गणितीय अवधारणाओं, प्रक्रियाओं, अनुप्रयोगों और तर्क के आस-पास समृद्ध बातचीत होना आवश्यक है। इस चर्चा में उस गणित पर भी ध्यान केंद्रित करना चाहिए जो बच्चों को उनके वास्तविक जीवन में मिलता है और बच्चों को उनकी गणितीय सोच को समझाने, तर्क करने, औचित्य देने एवं अन्य गणितीय विचारों, साथ ही शिक्षक के स्पष्टीकरण, तर्क और औचित्य को सुनने का अवसर प्रदान करना चाहिए। इसलिए लिखित कार्यों में चुपचाप शामिल होने के बजाय कक्षा में मौखिक गणितीय चर्चा को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

(ङ) गणित सीखने के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना

कई व्यापक शोध बताते हैं कि बच्चों में कक्षा 3 से ही गणित के प्रति प्रबल नापसंदगी और नकारात्मक मनोवृत्तियाँ विकसित हो सकती हैं। प्रारंभिक शिक्षा न केवल गणितीय दक्षताओं को विकसित करने, अपितु एक डोमेन के रूप में गणित के साथ सकारात्मक संबंध विकसित करने के लिए बच्चों की सहायता करने पर भी केंद्रित होनी चाहिए। गणित एक विषय के रूप में सशक्त भावनात्मक प्रतिक्रियाओं को उत्पन्न कर सकता है, सिस्टम को इस बारे में जागरूकता फैलाने की आवश्यकता है, जिससे कई लोगों में इस विषय के संबंध में मौजूद नकारात्मक छवि को निकालकर शुरुआत में ही गणित की पक्की नींव का निर्माण किया जा सके। बच्चों को गणित का आनंद लेना सीखना चाहिए।

4.5.2.2 आरंभिक वर्षों में गणित सीखने के घटक या क्षेत्र

(क) **संख्या और उसके संबंध** से तात्पर्य विभिन्न संदर्भों में संख्या अवधारणाओं (ध्वनि, प्रतीक और मात्रा) को समझने, गिनने, निरूपण और इनके आपसी संबंध से है।

(ख) **बुनियादी गणित संक्रियाओं** से तात्पर्य गणना की अवधारणाओं को समझना और उनका उपयोग करके समस्याओं को हल करने के लिए रणनीतियाँ विकसित करना है।

(ग) **आकृति एवं स्थानिक समझ** से तात्पर्य आकृतियों की समझ विकसित करने और आकृतियों को बनाने और वर्गीकृत करने के साथ-साथ स्थानिक बोध व समझ विकसित करने से है।

(घ) **पैटर्न से** तात्पर्य संख्याओं, आकृतियों और डिज़ाइनों की आवर्ती व्यवस्था की समझ और कुछ नियमों एवं संरचना के आधार पर सामान्यीकरण करने से है।

(ङ) **मापन से** तात्पर्य वस्तुओं को मापने की इकाइयों को समझना और परिमाण निर्धारित करने के लिए इसका उपयोग करना है।

(च) **आँकड़ों के प्रबंधन** से तात्पर्य आँकड़ों के संग्रहण, एकत्रीकरण और उसके विश्लेषण से है।

4.5.2.3 गणितीय निर्देश के लिए शिक्षण के ब्लॉक्स

गणितीय रूप से कुशल बनने के लिए बच्चों को अवधारणात्मक समझ, प्रक्रियात्मक समझ, रणनीतियों की क्षमता या अनुप्रयोग, संप्रेषण और तर्क तथा गणित के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने की आवश्यकता है।

गणितीय प्रवीणता के इन सभी पहलुओं को दैनिक कक्षा-कक्षीय प्रक्रिया के लिए निम्नलिखित चार ब्लॉकों में डिजाइन किया जा सकता है। किसी गणितीय पद्धति या प्रक्रिया को कार्य की प्रकृति का आधार और इस प्रकृति पर ही आधारित होना चाहिए।

चित्र 4.5 क– चार ब्लॉक मॉडल— गणित

(क) **ब्लॉक 1 – मौखिक गणित संबंधी बातचीत**— कक्षा की शुरुआत में 5–10 मिनट के लिए बच्चे संख्याओं वाली कविता गा सकते हैं या गणित के बारे में अपने अनुभवों या अपने जीवन में आने वाली समस्याओं पर चर्चा कर सकते हैं। मौखिक गणना, अवधारणा, रणनीतियों और तर्क पर भी चर्चा हो सकती है। यह औपचारिक शिक्षण प्रक्रिया में जाने से पहले आनंददायी गतिविधि के रूप में काम करता है।

(ख) **ब्लॉक 2 – कौशल सिखाना (प्रवीणता के सभी पहलुओं को एकीकृत करना)**— यह गणितीय अवधारणाओं, समस्या-समाधान एवं संप्रेषण को ठोस अनुभव, व्यवस्थित गतिविधियों व निर्देश के माध्यम से सिखाया जाना है, जो 'जिम्मेदारी से क्रमिक मुक्ति' (कृपया इस अध्याय का खंड 4.2 देखें) पद्धति का पालन करता है, यद्यपि हर गतिविधि या गणितीय कार्य के लिए समान क्रम होना आवश्यक नहीं है। शिक्षक गणित के किसी कार्य को सोच सकते हैं और मार्गदर्शित सहायता प्रदान करने से पहले बच्चों को इसे स्वतंत्र रूप से हल करने दे सकते हैं। प्रत्येक बच्चे को सीखने, समझने और प्रतिक्रिया देने का अवसर मिलना चाहिए।

(ग) **ब्लॉक 3 – कौशलों का अभ्यास**— गणितीय कौशल का अभ्यास करने के लिए बच्चों को अवधारणाओं, प्रक्रियाओं, समस्या-समाधान, तर्क और संप्रेषण पर आधारित विभिन्न प्रकार के समृद्ध गणितीय कार्य प्रदान करना। यह कार्यपुस्तिका, पाठ्यपुस्तक या शिक्षक-निर्मित कार्यों के समूह के माध्यम से हो सकता है।

(घ) **ब्लॉक 4 – सीखने या समस्या-समाधान को सशक्त करने के लिए गणित खेल**— बच्चों को खेल खेलने में आनंद आता है। कई तरह के गणितीय खेल हो सकते हैं, जो बच्चों के सीखने को कई तरह से सशक्त करने में मदद करते हैं। ये खेल समस्या-समाधान, अवधारणाओं के साथ-साथ तर्क पर आधारित होने चाहिए। बच्चों के सीखने के स्तर के अनुसार समूहवार खेलों की भी योजना बनाई जा सकती है।

गणित के लिए दिन में कुल सुझाया गया समय 60 मिनट है।

तालिका 4.5 क

ब्लॉक		उद्देश्य	प्रस्तावित रणनीतियाँ और पद्धतियाँ	प्रस्तावित समय
ब्लॉक 1 और 2	मौखिक गणित संबंधी बातचीत	मौखिक गणित को प्रोत्साहित करने के लिए शुरुआती आनंददायी गतिविधियों के रूप में	ओपन-एंडेड या बड़े समूह में चर्चा, गाना, कविता, बच्चों के वास्तविक जीवन में गणित से जुड़े अनुभव, अवधारणा, मौखिक गणना, तर्क	5–10 मिनट
	कौशल सिखाना (प्रवीणता के सभी पहलुओं को शामिल करें)	संरचित शिक्षण या गतिविधियों के माध्यम से बच्चों को गणितीय कौशल प्राप्त करने में मदद करना	GRR/ ELPS/ समस्या-समाधान पद्धति अवधारणाओं, प्रक्रियाओं, अनुप्रयोग, रणनीतियों और तर्क के निर्माण के लिए गतिविधियों का संचालन करना	20–25 मिनट
ब्लॉक 3 और 4	कौशलों का अभ्यास	कौशल अभ्यास के माध्यम से बच्चों को कौशल में प्रवीणता प्राप्त करने में मदद करना	कार्यपुस्तिकाओं या कार्यपत्रकों के माध्यम से गणित के कार्य प्रदान करना	15 मिनट
	सीखने को सशक्त करने के लिए गणित का खेल	सीखने को मज़बूत करने के लिए गणित का खेल समस्या-समाधान पर ध्यान केंद्रित करना	व्यक्तिगत, उप-समूह, समूह अभ्यास	15 मिनट

खंड 4.6
सकारात्मक कक्षा-कक्ष परिवेश बनाना

जैसे ही बच्चे स्कूल में प्रवेश करते हैं, उनकी दुनिया का विस्तार होता है। वे दोस्त बनाते हैं, परिवार से परे वयस्कों के साथ जुड़ना शुरू करते हैं और अधिक क्रियाशील एवं मुखर होते हैं। वे हर वस्तु के बारे में जानना और पता लगाना चाहते हैं। बच्चों को उनके व्यवहार में मार्गदर्शन करने और सशक्त सकारात्मक संबंध बनाने में शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

इसलिए शिक्षकों को बच्चों की आवश्यकताओं के प्रति विचार-संपन्न और उत्तरदायी होना चाहिए। बच्चों की देखभाल एक जटिल और महत्वपूर्ण काम है। यह जटिल है, क्योंकि बच्चों और उनके परिवारों के साथ संबंध स्थापित करने में कई भाग शामिल होते हैं।

4.6.1 कक्षा-कक्ष परिवेश

परिवेश शब्द का तात्पर्य कक्षा-कक्ष में भौतिक स्थान और 'वातावरण' या मनोवैज्ञानिक परिवेश दोनों से है। भौतिक परिवेश एक संरचना प्रदान करता है जो सुरक्षित अन्वेषण, संज्ञानात्मक विकास और चुनौतियों के अवसर उपलब्ध कराता है। वातावरण या मनोवैज्ञानिक परिवेश कक्षा में होने वाले सभी संबंधों और सामाजिक अंतर्क्रियाओं से बना होता है।

एक सुरक्षित, आरामदायक व खुशहाल कक्षा-कक्ष परिवेश बच्चों को बेहतर सीखने और अधिक अर्जित करने में मदद कर सकता है। इसके लिए यह आवश्यक है कि प्रत्येक बच्चे को बेहतर ढंग से सीखने में मदद करने के लिए सीखने की सामग्री, सहायक उपकरण और गतिविधियों को करने, एक साथ काम करने और खेलने के लिए जगह जैसी आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध करायी जाएँ। **कक्षा-कक्ष एक समावेशी, सीखने के लिए अनुकूल परिवेश वाला होना चाहिए जो हर बच्चे को स्वतंत्रता, खुलापन, स्वीकृति, सार्थकता, अपनापन और चुनौती प्रदान करे।**

बुनियादी स्तर पर कक्षा-कक्ष का परिवेश देखभाल केंद्रित होना चाहिए। समानुभूति और सम्मान देखभाल के केंद्र में हैं। यह बच्चों और रिश्तों के लिए चिंता और जिम्मेदारी का मनोभाव है।

4.6.2 बच्चों के साथ कक्षा-कक्ष के मानदंड बनाना

बच्चों को कक्षा-कक्ष में एक साथ रहने के मान्य मानदंडों से धीरे-धीरे, लेकिन स्पष्ट रूप से जितना जल्दी हो सके, परिचित कराया जाना चाहिए। यह उन्हें स्पष्ट दिशा और कक्षा में अच्छी तरह से व्यवस्थित होने का एक तरीका सिखाता है।

बच्चों के साथ बातचीत करना और उनके साथ मानदंडों पर सहमत होना सबसे बेहतर होता है। यह सकारात्मक कक्षा-कक्ष संस्कृति के पोषण और निर्माण में मदद करते हुए स्वामित्व और जिम्मेदारी की एक बढ़ी हुई भावना की ओर जाता है। सकारात्मक वाक्यांशों के साथ मानदंड छोटे, स्पष्ट और समझने में आसान होने चाहिए। एक बार मानदंडों पर सहमति हो जाने के बाद, हर एक को उदाहरणों के साथ विस्तार से समझाया जाना चाहिए।

एक पोस्टर पर प्रत्येक बच्चे के लिए एक समान मानदंडों को दृश्यों के रूप में सूचीबद्ध करना और इसे बच्चों की नज़र के स्तर के बराबर पर लटका देना बच्चों को बेहतर ढंग से समझने और उनका पालन करने में मदद करेगा। कुछ सामान्य मानदंड हो सकते हैं—

(क) जब कोई दूसरा व्यक्ति अपनी बात रख रहा हो, तो उसे सुनें।

(ख) समूह में बोलने से पहले हाथ उठाएँ।

(ग) अपने सहपाठियों और अपने शिक्षक से सम्मानपूर्वक बात करें।

(घ) अपने हाथ-पैर इधर-उधर न चलाएँ और किसी भी वस्तु को अपने पास ही रखें।

मानदंडों को सकारात्मक तरीके से लागू किया जाना चाहिए। जब नियम तोड़े जाएँ, तो बच्चों को दीवार पर लगे 'मानदंडों' के पोस्टर की ओर धीरे से इशारा करें और इसके बारे में बात करें।

शिक्षक के मन की बात – 4.6 क

उपस्थिति डलिया !

5 से 6 साल के बीच के 20 बच्चों की मेरी कक्षा में हमने तय किया है कि हमारे पास सामान्य उपस्थिति अंकन प्रणाली नहीं होगी। इसके बजाय हमने कक्षा में बच्चों की नाम पट्टिकाएँ बनाई हैं। मेरे लिए भी एक पट्टिका है और हम उन्हें एक डलिया में डालते हैं। जो लोग कक्षा में आते हैं, वे अपने नाम वाली पट्टिका उठाकर अपने अन्य सामान के बगल में अपने शेल्फ़ में रख देते हैं। वापस जाते समय हम इन पट्टियों को वापस डलिया में रख देते हैं।

4.6.3 कठिन व्यवहार का प्रबंधन

कई कारणों से बच्चे अनुपयुक्त व्यवहार करते हैं। व्यवहार अक्सर वह भाषा है, जिसके माध्यम से बच्चे भावनाओं और विचारों को व्यक्त करते हैं। ऐसा इसलिए भी है क्योंकि वे सार्वजनिक व्यवहार मानदंडों या व्यवहार के वैकल्पिक तरीकों से अनजान रह जाते हैं और इसलिए नहीं कि वे 'बुरे' हैं या वे हमें 'परेशान करना' चाहते हैं।

कभी-कभी वे अपनी ओर ज़्यादा ध्यान आकर्षित करवाने के लिए इस तरह के व्यवहार का उपयोग करते हैं। वे क्रोधित या असहाय हो सकते हैं और इसे व्यक्त करने का कोई अन्य तरीका नहीं जानते हैं। बच्चों को सुरक्षित और नियंत्रित महसूस करने की आवश्यकता है— जब वह नियंत्रण हटा लिया जाता है, तो वे इस तरह के व्यवहार के माध्यम से इसे वापस पाने की कोशिश कर सकते हैं। कभी-कभी यह व्यवहार नींद की कमी, खराब पोषण, स्वास्थ्य कारणों अथवा विकासात्मक विलंब या कमी, पारिवारिक शिथिलता या तनाव के कारण हो सकता है।

कक्षा को बाधित या नुकसान पहुँचाने वाले कठिन व्यवहार के कुछ उदाहरण हैं—

(क) आक्रामक व्यवहार (जैसे– दूसरों को चोट पहुँचाना— मारना, काटना, चिकोटी काटना, वस्तुओं को फेंकना)

(ख) असामाजिक व्यवहार (जैसे– अनुचित भाषा का उपयोग करना, नाम-पुकार करना, साझा करने से इनकार करना)

(ग) बाधाकारी व्यवहार (जैसे– सर्कल टाइम को बाधित करना, कक्षा-कक्ष में चारो ओर दौड़ना, कक्षा में चिल्लाना, वस्तुओं को गिराना, किताबें फाड़ना, खिलौने तोड़ना, दूसरों के काम को नुकसान पहुँचाना)

(घ) अनुचित अभिव्यक्ति (जैसे– अत्यधिक रोना, चिल्लाना, मुँह फुलाना)

4.6.3.1 बच्चों को स्थिर होने में सहायता करना, उनके व्यवहार को सकारात्मक रूप से मार्गदर्शन देना

बच्चों की देखभाल करने वाले प्रत्येक वयस्क की जिम्मेदारी है कि वह बच्चों को उचित व्यवहार के लिए मार्गदर्शन, सुधार और समाजीकरण करें। सकारात्मक मार्गदर्शन महत्वपूर्ण है, क्योंकि वे बच्चों के आत्म-नियंत्रण को बढ़ावा देते हैं, बच्चों को जिम्मेदारी सिखाते हैं और बच्चों को सुविचारित विकल्प चुनने में मदद करते हैं।

देखभाल करने वाले और सम्माननीय बुज़ुर्ग छोटे बच्चों को वैकल्पिक व्यवहारों का पता लगाने, सामाजिक कौशल विकसित करने और समस्याओं को हल करना सीखने में मदद के लिए एक सहायक परिवेश बनाते हैं। इसे मार्गदर्शन का सकारात्मक दृष्टिकोण कहा जाता है। एक प्रभावी मार्गदर्शन दृष्टिकोण परस्पर संवादात्मक होता है। वयस्क और बच्चे दोनों बदलना सीखते हैं, क्योंकि वे एक-दूसरे के साथ एक समान उद्देश्य को ध्यान में रखकर बातचीत करते हैं।

बच्चे के विकास को समझने से हमें बच्चों से व्यवहार/अपेक्षाओं के उचित मानकों को स्थापित करने, बेहतर विकल्पों के बारे में सोचने, साथ ही आयु के अनुसार स्पष्टीकरण या बच्चे को समझाने के तरीकों में मदद मिलेगी। इससे बच्चे का स्वाभिमान और गरिमा भी बनी रहेगी।

अपमान या नीचा दिखाने वाले कार्यों के कारण बच्चे अपने शिक्षकों, माता-पिता और अन्य देखभाल करने वालों को नकारात्मक रूप से देखना शुरू कर सकते हैं, जिससे सीखने की प्रक्रिया बाधित हो सकती है और बच्चे दूसरों के प्रति निर्दयी होना सीख सकते हैं।

यद्यपि बिना इस बात को ध्यान में रखे कि बच्चों द्वारा किए जाने वाले काम छोटे हैं या उनकी गति धीमी है, उनकी प्रगति को स्वीकार करने से उनमें स्वस्थ विकास को प्रोत्साहन मिलता है।

4.6.3.2 शिक्षक द्वारा सकारात्मक मार्गदर्शन के उदाहरण

(क) बच्चों को बताएँ कि उनसे क्या उम्मीद की जाती है। नकारात्मक की बजाय, सकारात्मक कथनों में दिशानिर्देश और सुझाव दें। उदाहरण के लिए "झूले के पास मत जाओ" कहने के बजाय "शुभा, घास के किनारे पर चलो, ताकि आप झूले की चपेट में न आ जाओ" कहें।

(ख) बच्चे जो काम ठीक से करते हैं और शिक्षक जो बार-बार देखना चाहते हैं, उसे पुनर्बलन दें। यह सकारात्मक आधार पर संबंध बनाने में मदद करता है, जैसे– "बहुत बढ़िया जैकब! आपने उन ब्लॉक्स को बनाने के लिए कड़ी मेहनत की है।"

(ग) आप बच्चों से क्या करवाना चाहते हैं, इस पर ज़ोर देते हुए सीधे सुझाव दें या उन्हें याद दिलाएँ। बिना किसी झिझक या टकराव के काम पर फिर से ध्यान केंद्रित करने में उनकी मदद करें, जैसे– "जल्दी करो और अपने सैंडल बाँधों ताकि हम जा सकें" की बजाय "नेमी, मुझे पता है कि आप प्रकृति की सैर को लेकर उत्साहित हैं। ऐसा लगता है कि आपने अपनी सैंडल पहन ली है ताकि हम जा सकें।"

(घ) जब भी संभव हो, सकारात्मक पुन:निर्देशन का प्रयोग करें, जैसे– "चलो सेल्वा, उन गेंदों को उछालने के लिए एक टोकरी लाते हैं। कुछ इस तरह जिससे पास में खेल रहे बच्चों को कोई भी परेशानी न हो।"

(ङ) प्रोत्साहन का समुचित उपयोग करें, सफलता प्राप्त करने में बच्चों को मदद करने पर ध्यान दें और समझें कि आप उन्हें क्या सिखाना चाहते हैं। उदाहरण के लिए, "तेनजिंग, अब जब आपने दो पहेलियाँ सुलझा ली हैं, तो क्या आप तीसरी पहेली को भी सुलझा सकते हैं?"

(च) जब भी बच्चों से किसी काम को करने का अनुरोध करें तो उनसे सरल, सीधे-सादे शब्दों में अनुरोध की वजह भी बताएँ। बच्चे जब इन वजहों को समझते हैं तो उनमें सहयोग करने की संभावना बढ़ जाती है, जैसे– "पल्लवी, कुर्सियाँ हटाइए" की बजाय "पल्लवी, अगर आप उन कुर्सियों को हटा देती हैं, तो आपके और अब्दुल के पास नृत्य करने के लिए और ज़्यादा जगह होगी।"

शिक्षक के मन की बात – 4.6 ख

सच बताना

बुनियादी स्तर में ज़्यादातर बच्चे स्वाभाविक रूप से ईमानदार और निष्कपट होते हैं। इसे विकसित करना और इसे हर तरह से प्रोत्साहित करना महत्वपूर्ण है।

कई शिक्षक सच बोलने वाले बच्चों को पहचानने और उनकी सराहना करने के सरल तरीके खोजते हैं और इस प्रकार इसे सही काम के रूप में पुष्ट करते हैं। यह शिक्षक और बच्चे के बीच के संबंध को मज़बूत करने में भी मदद करता है।

नीचे दो शिक्षकों की अभिव्यक्तियाँ दी गई हैं—

हर दिन स्कूल की शुरुआत मेरे जैसे शिक्षकों के लिए एक व्यस्त समय होता है।

आज जब मैं अपनी कक्षा के लिए मानसिक रूप से तैयार हो रहा था और अपने बच्चों को छोड़ने आए माता-पिता और बच्चों के साथ बातचीत कर रहा था, तभी मुझे एक फोन आया। दूसरी तरफ की आवाज़ ने कहा, "मैं गुरप्रीत की माँ बोल रही हूँ। गुरप्रीत स्कूल में आने से इनकार कर रहा है। क्या आप कृपया उससे बात कर सकते हैं?"

मैं मान गया और गुरप्रीत से पूछा कि क्या बात है। उसने जवाब दिया, "मेरे जूते काफ़ी खराब हो गए हैं। माँ मेरे लिए नए जूते खरीदने के लिए तैयार हो गई हैं और मैं उनके साथ खरीददारी करने जाना चाहता हूँ।"

मैंने इस तथ्य की सराहना की कि उसने मुझे सच बताया और कोई बनावटी कारण देने की कोशिश नहीं की। मैंने इसके बारे में कुछ पल सोचा और फिर उससे कहा, "आपको नए जूते लेने चाहिए, लेकिन आप स्कूल में लंबे ब्रेक के दौरान दुकान पर जा सकते हैं और फिर अपने नए जूते पहनकर वापस आ सकते हैं। इस तरह आपकी कोई क्लास भी मिस नहीं होगी।"

वह मान गया। जब गुरप्रीत अपने नए जूतों में कक्षा में वापस आया तो उसके चेहरे पर मुस्कान थी, जो मुझे बच्चों के साथ इस तरह के ईमानदार जुड़ाव के मूल्य के बारे में आश्वस्त करने के लिए आवश्यक थी।

हर दिन के अंत में मैं बच्चों को उनकी छोटी-सी (कार्य-पुस्तिका) में कार्य (task) देती हूँ। एक दिन मैंने देखा कि मुमताज़ के पास उसकी कार्य-पुस्तिका में कोई कार्य नहीं था। जब मैंने पूछा कि क्या मैं उसे कार्य देने से चूक गई तो वह चुप रही। मैंने उसे जाने दिया। अगले कुछ हफ़्तों तक ऐसे ही चलता रहा।

जब मैंने उससे दोबारा पूछा, तो उसने जवाब दिया, "आप मुझे कार्य दे रही हैं। लेकिन मैं पृष्ठों को फाड़ रही हूँ, क्योंकि मेरे लिए उन्हें पूरा करना मुश्किल हो रहा है। मुझे अफ़सोस है।"

मैं उसकी ईमानदारी से प्रभावित थी। मैंने उसे डाँटा नहीं। मैंने उससे कहा कि मैं वास्तव में उसकी ईमानदारी की सराहना करती हूँ और उसे सरल कार्य दूँगी और उसने उन्हें करने का वादा किया और इस तरह अगले कुछ हफ़्तों में यह समस्या खत्म हो गई।

4.6.4 अनुशासन

अनुशासन मार्गदर्शन रणनीतियों का एक हिस्सा है, जिसका उपयोग बच्चों को उनके कार्यों के प्रति जिम्मेदार बनाने, आत्म-नियंत्रण सीखने और उचित व्यवहार करने में मदद करने के लिए वयस्क करते हैं। अनुशासन का अर्थ सज़ा देना और व्यवहारों को रोकना नहीं है।

एक अच्छी मार्गदर्शन प्रक्रिया का एक प्रमुख उद्देश्य बच्चों को आत्म-अनुशासन प्राप्त करने में मदद करना है। यह तभी होता है जब वयस्क उन तरीकों को लेकर आगे बढ़ते हैं, जो बच्चों में स्व-नियंत्रण की विकासशील

क्षमता को आधार प्रदान करते हैं। धीरे-धीरे बच्चों को अपने कार्यों को नियंत्रित करने का अवसर देकर, वयस्क उनके साथ परस्पर विश्वास का निर्माण करते हैं।

इन शुरुआती पहलों के साथ छोटे बच्चों के लिए यह एक महत्वपूर्ण कदम है। अतिरिक्त जिम्मेदारी और विश्वास के साथ आत्म-सम्मान और आत्मविश्वास का एक अतिरिक्त आयाम आता है। ऐसे बच्चे सक्षम और सार्थक महसूस करते हैं। उदाहरण के लिए, प्रकृति की सैर पर बच्चों को उस टोकरी को संभालने दें, जिसमें आप चाहते हैं कि वे कंकड़ इकट्ठा करें। आंतरिक (इनडोर) खेलों के दौरान बच्चों को अलमारियों/बक्सों से सामग्री लाने और उन्हें वापस रखने के लिए प्रोत्साहित करें। बड़े बच्चों को सभी को भोजन परोसने के लिए प्रोत्साहित करें।

आत्मसम्मान के साथ-साथ बच्चे को वयस्कों के सीमित नियंत्रण के साथ आने वाली स्वतंत्रता का स्वाद लेना चाहिए। हर समय क्या करना है, यह बताने से बच्चे आज़ादी को संभालना नहीं सीखते। केवल जब उन्हें खुद को परखने और कुछ निर्णय लेने का अवसर मिलेगा, तभी वे अपनी क्षमताओं को जान पाएँगे। छोटे बच्चों को इसे वयस्कों के साथ सुरक्षित स्थानों पर सीखना चाहिए, जो उन्हें उतनी ही स्वतंत्रता दें, जितनी वे जिम्मेदारी से संभाल सकते हैं।

शिक्षक के मन की बात – 4.6 ग

आज जैसे ही मैं कक्षा में गया, मेरा स्वागत कुछ असामान्य चीज़ों से हुआ। कक्षा के एक कोने में मोइते रो रही थी और सियामा उसके पास खड़ी थी। सियामा मेरी कक्षा के सबसे शरारती बच्चों में से एक है और मेरा पहला विचार यह था कि उसने मोइते के साथ कुछ किया है।

मैंने पूछा कि क्या हो रहा था और जवाब में कई आवाज़ें सुनीं, “मोइते ने सांगतेई को मारा और वह अपने घाव की दवा लेने गई है।”

मैं हैरान था। मोइते और सांगतेई अच्छे दोस्त थे और मोइते ने पहले कभी ऐसा कुछ नहीं किया था।

मैंने मोइते से पूछा कि वह क्यों रो रही है, लेकिन कोई जवाब नहीं मिला। जल्द ही, सांगतेई कक्षा में वापस आ गई। उसके माथे पर एक छोटा-सा घाव था, जो पट्टी से ढका हुआ था। उसने भी कहा, “मोइते ने मुझे मारा।”

मैंने बच्चों को अपनी-अपनी जगह बैठने और यह बताने के लिए कहा कि क्या हुआ था। सबने एक जैसी बातें कहीं। हुआ यह था कि मोइते ने कक्षा में रखी अधिगम-शिक्षण सामग्री में से लकड़ी के मोतियों की एक डोरी ली और उसे चारों ओर घुमाया। इस दौरान वह सांगतेई के सिर में लग गई। सांगतेई ने घटना के विवरण की पुष्टि की।

मैंने बच्चों के साथ इस घटना पर चर्चा जारी रखी। अंत में सांगतेई सहित वे सभी इस बात पर सहमत हो गए कि मोइते ने गलती से सांगतेई को मारा था। मोइतेई और सांगतेई दोनों शांत हो गए। फिर मैंने मोइते और बाकी बच्चों की मदद करने और उन्हें यह समझाने के लिए कि मोतियों की डोरी एक अलग उद्देश्य के लिए है तथा मोतियों की डोरी के साथ खेलना खतरनाक था, बातचीत जारी रखी। मोइते ने ऐसा करने के लिए माफ़ी माँगी।

अगर मैं शुरू में ही आई राय पर जवाब देता तो यह गलत होता कि सियामा के मोइते को चोट पहुँचाई है। यह भी गलत होता अगर मैं यह मान लेता कि मोइते ने सांगतेई को मारा है। लेकिन सभी बच्चों के लिए यह समझना आवश्यक था कि कार्यों के परिणाम होते हैं, अभीष्ट या अलग भी। जिस तरह से मैंने इस स्थिति को संभाला, उससे और उसके परिणाम से मैं संतुष्ट था।

4.6.5 शिक्षक द्वारा उपयोग की जाने वाली भाषा

जैसे-जैसे शिक्षक समस्यायुक्त व्यवहारों को संभालने का अनुभव प्राप्त करते हैं, वे सही प्रकार की भाषा का उपयोग करना सीखते हैं। शिक्षकों को पता चल जाता है कि आवाज़ कितनी सख्त हो सकती है और कौन-से शब्द सबसे अच्छा काम करेंगे और कब काम में लाए जा सकते हैं। वे चेहरे के भावों से अवगत हो जाते हैं और इस बात से भी कि एक स्पर्श या एक नज़र बच्चों को क्या महसूस करा सकती है। वे अपने शरीर का उपयोग कैसे करते हैं, यह भी उनके अनुशासन के प्रति एक अलग दृष्टिकोण और मनोभावों को दर्शाता है। नए शिक्षक अनुभव के माध्यम से इन तरीकों का उपयोग करना सीखते हैं, जो उनके और बच्चों के लिए सबसे अच्छा काम करेगा।

(क) आवाज़– बच्चों से उसी तरह बात करें, जैसे आप दूसरे लोगों से करते हैं। आवाज़ को नियंत्रित करना सीखें और बच्चे आपका अनुसरण करें, इसके लिए अच्छे स्पीच पैटर्न का उपयोग करें। सामान्य स्वर में बोलने के लिए बच्चों के पर्याप्त निकट पहुँचें और उनके शारीरिक स्तर तक नीचे झुकें ताकि वे आसानी से सुन सकें। अक्सर, आवाज को धीमा और पिच कम करना प्रभावी होता है।

(ख) शब्द– जितने कम शब्द, उतना अच्छा। एक बार बोले गए सरल, स्पष्ट कथनों का अधिक प्रभाव पड़ता है। इससे बच्चा वाक्यों से उभरने वाले वास्तविक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करने में सक्षम होगा। क्या हुआ, इसका एक संक्षिप्त विवरण, क्या व्यवहार स्वीकार्य है और क्या नहीं है, इस पर एक या दो शब्द और संभावित समाधान के लिए एक सुझाव, ये सभी आवश्यक हैं।

शिक्षकों को शब्दों का चयन सावधानी से करना चाहिए। उन्हें बच्चे को जो अपेक्षित है, ठीक वही बताना चाहिए। उदाहरण के लिए, "किन्नरी, ब्लॉक बिल्डिंग को आनंद के ट्रक से दूर ले जाओ, ताकि आनंद फिर से उससे न टकराए।" यह किन्नरी को सकारात्मक, ठोस तरीके से बताता है कि वह अपनी ब्लॉक बिल्डिंग की सुरक्षा के लिए क्या कर सकती है। अगर उसे कहा जाता, "किन्नरी, देखो कि तुम ब्लॉक बिल्डिंग कहाँ बना रही हो" तो उसे समझ नहीं आता कि समस्या को हल करने के लिए क्या कदम उठाना है।

(ग) **देह-भाषा (Body Language)–** छोटे बच्चों के साथ काम करते समय, शिक्षक को शरीर की ऊँचाई व स्थिति के बारे में पता होना चाहिए और बच्चे के स्तर तक आना चाहिए। बच्चे के सिर से दो या तीन फीट ऊपर या कमरे के दूसरे छोर से चिल्लाकर गर्मजोशी से देखभाल और चिंता करना मुश्किल है।

जिस तरह से शिक्षक अपने शरीर का उपयोग करते हैं, वह घनिष्ठ संबंधों और मेल-जोल को आमंत्रित या अस्वीकार करता है। एक बच्चा शिक्षकों को अधिक सुलभ पाएगा, यदि वे नीचे बैठे हों, उनके कंधे झुके हों, बजाय इसके कि वे हाथ बाँधे खड़े हुए हों।

इंद्रियों का पूर्ण उपयोग शब्दों के प्रभाव को नरम कर सकता है। किसी चोट खाए बच्चे के हाथ पर एक मज़बूत पकड़ या उसके कंधे पर एक कोमल स्पर्श, बच्चे को यह एहसास कराता है कि वयस्क उन्हें दूसरों से बचाने के लिए है। आँखों का संपर्क आवश्यक है। शिक्षक किसी स्थिति की गंभीरता को आँखों और चेहरे के भावों के माध्यम से संप्रेषित करना सीखते हैं। वे इस तरह आश्वासन, चिंता, उदासी और स्नेह भी दिखाते हैं। शारीरिक उपस्थिति से बच्चे को एक संदेश देना चाहिए कि शिक्षक वहीं है, उसके लिए उपलब्ध है और उसका ध्यान रख रहा है।

(घ) **अभिवृत्ति (Attitude)–** अभिवृत्ति बच्चों का मार्गदर्शन करने की अनकही भाषा का हिस्सा है। अभिवृत्ति अनुभव से उत्पन्न होती है। शिक्षक को अपने अनुशासित होने के तरीके की जाँच करनी होगी और इसके बारे में अपने अनुभवों और भावनाओं को स्वीकार करना होगा, विशेष रूप से उनके अपने संदर्भ और पृष्ठभूमि के आधार पर, उनकी अपनी धारणाएँ हो सकती हैं कि बच्चे कैसे होते हैं। जैसे-जैसे शिक्षकों को समस्या व्यवहार से निपटने का अनुभव प्राप्त होता है, वे भाषा के सही प्रकार का उपयोग करना सीख जाते हैं। शिक्षकों को पता चल जाता है कि आवाज़ कितनी शक्तिशाली हो सकती है और कौन-से शब्द सबसे अच्छा कार्य करेंगे और कब करेंगे। वे बच्चों के चेहरे के भावों और कौन-सा स्पर्श या नज़र क्या संदेश देगी आदि से अवगत हो जाते हैं। वे अपने शरीर का उपयोग कैसे करते हैं, यह अनुशासन के प्रति एक विशिष्ट अभिवृत्ति और दृष्टिकोण को दर्शाता है। अनुभव के माध्यम से नए शिक्षक सीखेंगे कि उन उपकरणों का उपयोग कैसे करें, जो उनके और बच्चों के लिए सबसे अच्छा कार्य करेंगे।

4.6.6 क्या नहीं करना चाहिए

(क) बच्चों को लगातार यह बताने से बचें कि वे क्या नहीं कर सकते। यदि वयस्क कई नकारात्मक शब्दों का उपयोग करते हैं, जैसे कि 'नहीं', 'इसे रोको', 'इसे बंद करो', या 'चुप रहो', तो बच्चे शिक्षक, माता-पिता या देखभाल करने वाले की नकल कर सकते हैं। बहुत अधिक 'क्या न करें' भी बच्चों में नकारात्मकता का कारण बनता है।

i. उदाहरण के लिए, "विजय, अंडा मत गिराओ" की बजाय आप कह सकते हैं "अंडे को अपने दोनों हाथों में इस तरह लो विजय, ताकि वह टूटे या आपके हाथों से गिरे नहीं।"

ii. उदाहरण के लिए, "चित्रा, अपनी पोशाक में कीचड़ मत लगने दो" की बजाय आप कह सकते हैं, "अपनी पोशाक को अपनी कमर के चारों ओर इस तरह बाँधो ताकि यह गंदा न हो।"

(ख) बच्चों के स्वाभिमान को ठेस पहुँचाने से सावधान रहें।

i. उदाहरण के लिए, जब पावनी टेबल पर ले जाते समय दूध को गिराती है, तब यह कहने की बजाय कि "क्या आप कुछ भी सही नहीं कर सकतीं" यह कहें, "यह एक कठिन काम है, हम इसे साफ़ कर देंगे और आप सावधानी से एक बार फिर कोशिश कर सकती हैं।"

(ग) जब कोई बच्चा गलती करता है, तो ईमानदारी से प्रतिक्रिया करें और कटाक्ष करने से बचें।

(घ) कोशिश करें कि बच्चे की उपेक्षा न करें, चाहे उसका व्यवहार जैसा भी हो।

(ङ) किसी बच्चे की दूसरों के सामने कभी भी आलोचना न करें।

मार्गदर्शन के सबसे प्रभावी तरीके स्पष्ट, सुसंबद्ध और निष्पक्ष नियम हैं, जिन्हें मानवीय तरीकों से लागू किया जाता है। नियम तोड़ने पर बच्चों को इसके परिणामों के बारे में पता होना चाहिए। अच्छे मार्गदर्शन की प्रक्रियाएँ बच्चे के व्यवहार के सकारात्मक पहलुओं पर बल देती हैं, न कि केवल समस्यायुक्त व्यवहार पर। अगर बच्चों को अपने कार्यों की जिम्मेदारी लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है और समस्या-समाधान प्रक्रिया का हिस्सा बनाया जाता है, तो मार्गदर्शन उपायों का उनके लिए अधिक अर्थ होता है।

बॉक्स 4.6 क

नैतिक चुनाव करना और पर्यावरण के प्रति संवेदनशील होना सीखना

बुनियादी स्तर पर बच्चों के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वे अपने रोज़मर्रा के हिस्से के रूप में सही काम करना सीखें। उन्हें सभी प्राणियों और प्रकृति की देखभाल करना भी सीखना चाहिए।

यद्यपि, इस आयु में जिस तरह से वे सीखते हैं, उसे देखते हुए यह सब उनके रोज़मर्रा के हिस्से के रूप में किया जाना चाहिए, जैसे– उनकी रोज़मर्रा की बातचीत और खेल गतिविधियों के माध्यम से, उनके द्वारा सुनी-सुनाई जाने वाली कहानियों के माध्यम से और किसी भी चीज़ से अधिक, उनकी क्रियाओं पर शिक्षक की प्रतिक्रियायों के माध्यम से।

इस पूरे अध्याय में विशेष रूप से 'शिक्षक के मन की बात' में इसके उदाहरण हैं। यह वह तरीका है, जिससे शिक्षक सही संकेत चुनते हैं और तात्कालिक स्थिति का उपयोग करके उन सही चुनावों को सुदृढ़ और प्रोत्साहित करते हैं जिनसे बच्चे सबसे अधिक सीखते हैं।

खंड 4.7
परिवेश का आयोजन

4.7.1 बैठना

एक साथ बैठना सरल और स्वाभाविक तरीके से एक साथ रहना सीखने का एक अच्छा तरीका है। एक साथ बैठना दोस्ती, संबंध बनाने और अन्य बच्चों के साथ रहने को प्रोत्साहित करता है, जो 'मुझसे अलग' हो सकते हैं। एक साथ बैठना, उदाहरण के लिए, छोटे समूहों में या एक बड़े घेरे में, एक साथ सीखने, सहयोग करने और विविधता की स्वाभाविक स्वीकृति को प्रोत्साहित करता है।

बुनियादी स्तर पर कक्षा-कक्ष में बैठने की व्यवस्था लचीली होनी चाहिए और इसे कक्षा में प्रयोग किए जा रहे शिक्षणशास्त्र को प्रतिबिंबित करना चाहिए। कभी-कभी बच्चों को शांत व्यक्तिगत समय की आवश्यकता होती है, कभी-कभी वे जोड़े या छोटे समूहों में काम करते हैं और कभी-कभी वे पूरे समूह के साथ मिलकर काम करते हैं।

बैठने की व्यवस्था अलग-अलग तरीकों से की जा सकती है। शैक्षणिक आवश्यकताओं को सुनिश्चित करते हुए बच्चों को विविधता और विकल्प दिए जा सकते हैं। इस स्तर में प्रत्येक को तय जगह पर बैठने की आवश्यकता नहीं है। असल में यह शिक्षक और बच्चों दोनों को बाधा पहुँचा सकता है।

4.7.2 प्रदर्शित करना और प्रिंट-समृद्ध परिवेश

कक्षा में प्रदर्शित सामग्री सीखने की प्रक्रिया का हिस्सा बनती है। कक्षा में प्रदर्शित सामग्री अनिवार्य रूप से बच्चों द्वारा बनाए गए 'तैयार' उत्पादों तक सीमित नहीं है, अपितु इसमें वह सामग्री भी शामिल है जिस पर अभी काम हो

रहा है, जैसे कंकड़ या पौधों का संग्रह जो किसी विशेष अध्ययन के लिए उपयोग किए जा रहे हैं। सभी बच्चों का काम प्रदर्शित होना चाहिए, न कि केवल हर बार चुने गए 'सर्वश्रेष्ठ' काम।

शिक्षकों को प्रदर्शनों के आयोजन में आयु-उपयुक्त भाषा और शैली सुनिश्चित करनी चाहिए ताकि वह सभी बच्चों के लिए सुलभ और बोधगम्य हो। प्रदर्शनों को बच्चों की नज़र के स्तर पर रखना सबसे अच्छा होगा।

बच्चों को समय-समय पर अपने काम को प्रदर्शित करने और उन्हें बदलने में शामिल किया जा सकता है। तैयार और उपयोग किए गए चुनिंदा डिस्प्ले अलग-अलग बच्चों के पोर्टफ़ोलियो में जोड़े जा सकते हैं।

इन आरंभिक वर्षों में भाषा सीखने पर ध्यान केंद्रित करते हुए, पढ़ने और लिखने को प्रोत्साहित करने के लिए एक प्रिंट-समृद्ध परिवेश (जैसे– दीवार पर शब्द, शब्द कार्ड, कक्षा में वस्तुओं पर शब्द लेबल और आसानी से सुलभ कक्षा पुस्तकालय) की उपलब्धता महत्वपूर्ण है।

4.7.3 कक्षा-कक्ष में जीवंत पठन कोने बनाना

पठन कोने रिक्त स्थान को इस तरह से व्यवस्थित करने में मदद करते हैं जो बच्चों को आकर्षित करता है, बच्चों को विचारशील बनाता है तथा उनकी रुचि और जिज्ञासा को बढ़ाता है। ये स्वतंत्र और सहयोगी खेल के अवसरों के साथ-साथ विभिन्न गतिविधियों में भाग लेने के लिए लचीलापन और स्वतंत्रता प्रदान करते हैं। ये सक्रिय खेल से अलग किसी स्थान पर शांत खेल को भी संभव करते हैं। वे स्वतंत्र शिक्षण और शिक्षक-निर्देशित बातचीत दोनों को बढ़ावा देते हैं, विभिन्न पठन कोनों में प्रोत्साहित विभिन्न प्रकार के खेल के माध्यम से ये समग्र विकास के अवसर प्रदान करते हैं। पठन कोनों में नाटकीय खेल, ब्लॉक्स/पहेली, गणित, कला/चित्रकला और किताबें शामिल हैं।

पठन कोनों की स्थापना और रख-रखाव में शिक्षक सक्रिय भूमिका निभाते हैं। वे इन कोनों को आकर्षित बनाए रखने व जीवंत रखने के लिए जिम्मेदार होते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि ये कोने सभी बच्चों की सीखने की ज़रूरतों को पूरा करें।

(क) शिक्षक को बच्चों के विभिन्न समूहों के लिए उपयुक्त सामग्री का चयन करना चाहिए। सामग्री ऐसी होनी चाहिए कि कोई भी बच्चा, चाहे वह जिसने अभी-अभी एक अवधारणा को सीखना शुरू किया है या चाहे कोई अन्य जिसने इसके बारे में अधिक सीखा है, अपने लिए कुछ उपयुक्त पाए।

(ख) बच्चों को, जो भी सामग्री वे चाहते हैं, उन्हें देखने की अनुमति दी जानी चाहिए। प्रारंभ में बच्चे अक्सर एक कोने से दूसरे कोने में जा सकते हैं। एक बार जब वे टिक जाते हैं, तो वे लंबी अवधि के लिए अपनी पसंद की गतिविधियों और सामग्री के साथ गंभीरता से जुड़ना शुरू कर देते हैं।

(ग) शिक्षक को चाहिए कि वह बच्चों को सप्ताह के दौरान सभी कोनों में जाने के लिए प्रोत्साहित करे। यदि सीमित सामग्री है, तो शिक्षक प्रतिदिन प्रत्येक कोने में बच्चों की संख्या पर निर्णय ले सकता है। कुछ सामग्री को हर 15 दिनों में बदला जा सकता है। इससे बच्चों को नई चीज़ों की खोज करने के लिए प्रोत्साहन मिलेगा। शिक्षक उस अवधि के सीखने के प्रतिफलों के अनुसार सामग्री को संकेंद्रित भी कर सकता है।

(घ) जब बच्चे इन कोनों में खेल रहे हों, तब शिक्षक को बच्चों के एक समूह से दूसरे समूह के पास जाना, उनके साथ बातचीत करना और उनके साथ खेलना आवश्यक है। वह बच्चों के आधे समूह को अपने समय का उपयोग मुक्त खेल के रूप में करने दे सकता है और समूह के दूसरे आधे हिस्से के लिए मार्गदर्शित या संरचित खेल पर ध्यान केंद्रित कर सकता है, जिससे उन्हें कुछ विशिष्ट सीखने में मदद मिलती हो।

(ङ) जब भी बच्चे कोनों का उपयोग करते हैं, तब शिक्षक को बच्चों का निरीक्षण करना चाहिए। वह सवाल पूछ सकता है, किसी विचार का परिचय या उसका विस्तृत वर्णन कर सकता है, पहेली हल करने के लिए सुराग दे सकता है, कहानी में कुछ स्पष्ट कर सकता है, बच्चों की प्रतिक्रियाओं को रिकॉर्ड कर सकता है और बच्चे क्या कर रहे हैं, इसे संक्षिप्त में नोट कर सकता है। यह प्रक्रिया अवलोकनों के आधार पर अगले दिन, अगले सप्ताह या महीने की योजना बनाते समय शिक्षक को सुविचारित निर्णय लेने में मदद करती है।

(च) कोनों का उपयोग करते समय बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित की जानी चाहिए।

(अधिक विवरण के लिए, कृपया अधिगम परिवेश पर अध्याय 5, खंड 5.6 देखें।)

अध्याय 5

शिक्षण के लिए विषयवस्तु का चयन, संगठन और संदर्भीकरण

शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में उपयोग की जाने वाली विषयवस्तु में सीखने के परिवेश, शिक्षण-अधिगम सामग्री (टी.एल.एम.) और पुस्तकें शामिल हैं। विषयवस्तु का चयन काफ़ी हद तक दक्षताओं और सीखने के प्रतिफलों के साथ-साथ अपनाई जाने वाली शैक्षणिक पद्धति से निर्धारित होता है।

बुनियादी स्तर के लिए सीखने के परिवेश की व्यवस्था और आयोजन बहुत महत्वपूर्ण है। बुनियादी स्तर में बच्चे सबसे प्रभावी ढंग से अपने आस-पास की भौतिक दुनिया के साथ सभी इंद्रियों का उपयोग करके उलट-पलट करते हुए और उससे सक्रिय रूप से जुड़कर सीखते हैं। इस समृद्ध संवेदी अनुभव को सुनिश्चित करने में सावधानीपूर्वक चुनी गई शिक्षण-अधिगम सामग्री (टी.एल.एम.) कक्षाओं में एक आवश्यक भूमिका निभाती है।

बुनियादी स्तर के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.) पर आधारित पाठ्यक्रम विकसित करने की प्रक्रिया के विषय में खंड 5.1 में विस्तार से बताया गया है। खंड 5.2 बुनियादी स्तर के सभी आयु समूहों में विषयवस्तु चयन के सिद्धांतों और विचारों की रूपरेखा का वर्णन करता है। विषयवस्तु चयन को भाषा, गणित और कला आदि अपनी विशिष्ट माँग के अनुरूप निर्धारित करते हैं। खंड 5.3 सामग्री को व्यवस्थित करने के विभिन्न तरीकों की रूपरेखा बताता है। खंड 5.4 बुनियादी स्तर के लिए उपयुक्त प्रासंगिक शिक्षण-अधिगम सामग्री (टी.एल.एम.) को सूचीबद्ध करता है। खंड 5.5 बुनियादी स्तर के लिए उपयुक्त पुस्तकों के चयन और उनके डिज़ाइन के लिए दिशानिर्देश देता है। खंड 5.6 घर के अंदर और बाहर, दोनों जगह सीखने के परिवेश को व्यवस्थित करने के लिए दिशानिर्देश और सुझाव देता है।

खंड 5.1
पाठ्यक्रम का विकास

पाठ्यचर्या की यह रूपरेखा, पाठ्यचर्या के उद्देश्यों और प्राप्त की जाने वाली दक्षताएँ निर्धारित करती है तथा विषयवस्तु चयन, बुनियादी स्तर के लिए प्रासंगिक शैक्षणिक पद्धतियाँ (pedagogical approaches) और उपयुक्त आकलन प्रक्रियाओं के लिए मार्गदर्शक सिद्धांत देती है। यह रूपरेखा विभिन्न पाठ्यचर्या क्षेत्रों के लिए समय के आवंटन और उसके अनुरूप अभीष्ट सीखने के प्रतिफलों के बारे में सुझाव भी देती है।

पाठ्यक्रम डिज़ाइन करने वालों को इन सुझावों के अनुरूप स्थानीय संदर्भों— सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश और अभ्यासों, शिक्षकों की क्षमता, स्कूलों के बुनियादी ढाँचे और भौतिक परिवेश आदि पर विचार करने के बाद पाठ्यक्रम विकसित करना चाहिए।

(क) पाठ्यक्रम को राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.) में उल्लिखित प्रत्येक दक्षता के लिए अभीष्ट सीखने के प्रतिफलों को दोहराना चाहिए। यह ऊपर वर्णित स्थानीय संदर्भों को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए। एन.सी.एफ. में व्यक्त किए गए सीखने के प्रतिफल इस उद्देश्य के लिए उपयोगी उदाहरण हो सकते हैं।

(ख) **पाठ्यक्रम को स्थानीय संदर्भ के लिए विचारों के साथ-साथ सीखने के प्रतिफलों, एन.सी.एफ. के सिद्धांतों और दिशानिर्देशों के आधार पर विषयवस्तु का चयन करना चाहिए।** विषयवस्तु चयन के सिद्धांत, विषयवस्तु को संगठित करने की पद्धतियाँ, शिक्षण-अधिगम सामग्रियों में से चुनाव आदि के बारे में इस अध्याय के आगे के हिस्सों में विस्तार से बताया गया है।

(ग) सीखने के प्रतिफलों और विषयवस्तु चयन के आधार पर, पाठ्यक्रम को उन गतिविधियों के अनुक्रम और सीखने के अनुभवों को स्पष्ट करना चाहिए, जिन्हें शिक्षकों द्वारा सुगम बनाया जाना है। इस अनुक्रम के लिए विभिन्न सीखने के प्रतिफलों को प्राप्त करने हेतु समय आवंटन को उचित रूप से संतुलित करने की आवश्यकता है। शिक्षणशास्त्र पर अध्याय 4 में दिए गए दिशानिर्देश और दृष्टिकोण, पाठ्यक्रम निर्माताओं को गतिविधियों और सीखने के अनुभवों के निर्माण में सहायता करेंगे।

(घ) **बुनियादी स्तर हेतु शिक्षकों के लिए गतिविधि पुस्तकें और अन्य पुस्तिकाएँ विकसित करना उचित होगा। ये पुस्तकें पाठ्यक्रम और उसमें नियोजित अनुक्रम के बारे में शिक्षकों का मार्गदर्शन करेंगी।** इस अध्याय का खंड 5.5 पुस्तकों और पाठ्यपुस्तकों के बारे में है। यह पाठ्यक्रम निर्माताओं के लिए आगे का मार्गदर्शन करता है।

(ङ) **पाठ्यक्रम को आकलन हेतु व्यापक दिशानिर्देश तैयार करने चाहिए, जो पाठ्यक्रम में अभिव्यक्त सीखने के प्रतिफलों की उपलब्धि का आकलन करते हों** (कृपया आकलन अध्याय 6 देखें)। इन दिशानिर्देशों से शिक्षकों को विद्यालय में आयोजित किए जाने वाले विशिष्ट आकलन विकसित करने में सहायता मिलेगी। इस स्तर के लिए उपयुक्त दक्षताओं और सीखने के प्रतिफलों के आधार पर पाठ्यक्रम को समग्र प्रगति कार्ड का एक विशिष्ट प्रारूप तैयार करना चाहिए।

खंड 5.2
विषयवस्तु चयन के सिद्धांत

यद्यपि दक्षताएँ और सीखने के प्रतिफल स्पष्ट निर्देश देते हैं कि बच्चों के लिए सीखने के अनुभवों का निर्माण करने के लिए किस विषयवस्तु का उपयोग किया जाना है, फिर भी यह रेखांकित करना आवश्यक है कि विषयवस्तु चयन के लिए कई अन्य बातों को भी ध्यान में रखा जाना चाहिए। इनमें से कुछ विचार निम्नलिखित हैं—

(क) बुनियादी स्तर में गठित अवधारणाएँ अधिकांशत: संवेदी बोधात्मक (जैसे– रंगों की अलग-अलग पहचान) या फिर व्यावहारिक (जैसे– टिन के ढक्कन को खोलने के लिए चम्मच का लीवर के रूप में उपयोग या किसी दुकान से चीज़ें खरीदने के लिए पैसे का उपयोग) होती हैं। ये अवधारणाएँ सैद्धांतिक नहीं होती हैं (जैसे– रंग को प्रकाश के स्पेक्ट्रम के रूप में समझना, लीवर को एक साधारण मशीन के रूप में या मुद्रा को विनिमय के माध्यम के रूप में समझना।) संवेदी बोधात्मक और व्यावहारिक अवधारणाओं के पीछे के सिद्धांतों की खोज स्कूली शिक्षा के बाद के चरणों में ही अपेक्षित है। **अत: चुनी गई विषयवस्तु संवेदनात्मक रूप से आकर्षक होनी चाहिए (उदाहरण के लिए, जो बच्चे की इंद्रियों को सक्रिय करें, जिसमें सौंदर्यात्मक अनुभूति हो) एवं उन्हें बच्चे के अनुभवों के संदर्भ में व्यावहारिक रूप से प्रासंगिक होना चाहिए।**

(ख) **विषयवस्तु को बच्चों के जीवन के अनुभवों से प्राप्त किया जाना चाहिए और इसे उन सांस्कृतिक, भौगोलिक और सामाजिक संदर्भों को प्रतिबिंबित करना चाहिए, जिनमें बच्चों का पालन-पोषण हो रहा है।** किसी समुदाय या समूह में काम करने, खाना पकाने, यात्रा करने, लोक गीतों और कहानियों, त्योहारों और अनुष्ठानों की दिन-प्रतिदिन की गतिविधियाँ भी व्यवस्थित रूप से जानने और अनुभव करने योग्य हैं।

(ग) विषय-वस्तु को परिचित से अपरिचित, सरल से जटिल और स्वयं से दूसरों तक जाना चाहिए। छोटे बच्चे अपने आस-पास के परिवेश में वस्तुओं और घटनाओं को समझ सकते हैं और उनमें रुचि रखते हैं। ऐसी चीज़ों से वे स्वयं को जोड़ सकते हैं और ये उनके लिए आसान होती हैं। धीरे-धीरे विषयवस्तु अधिक जटिल हो सकती है और इसमें ऐसे विषय भी शामिल हो सकते हैं, जो बच्चों के अपने आस-पास के परिवेश में नहीं मिलते हैं।

(घ) चूँकि संज्ञानात्मक विकास का लक्ष्य आस-पास की दुनिया के बारे में जानना और उसके अनुकूल बनना है, **इसलिए विषयवस्तु उन विषय-क्षेत्रों से संबद्ध होनी चाहिए जो बच्चों को प्राकृतिक और मानवीय परिवेश से उनके आस-पास की सामाजिक और भौतिक दुनिया, लोगों, स्थानों, जीवित और निर्जीव चीज़ों से परिचित कराएँ।**

(ङ) विषयवस्तु को उभरते हुए कौशलों यानी बच्चों की व्यक्तिगत विशेषताओं से जोड़ा जाना चाहिए। सभी बच्चे अलग हैं और अपनी गति से सीखते हैं। अलग-अलग बच्चों की विविध रुचियों को समायोजित करने के लिए सामग्री विविध और समावेशी होनी चाहिए। इसमें गतिविधियों और अनुभवों के कई स्तर होने चाहिए ताकि यह हर बच्चे के लिए उसकी क्षमताओं और कौशलों के संदर्भ में चुनौतियाँ पेश कर सकें।

(च) **इस बात का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए कि रूढ़िवादिता (स्टीरियोटाइप) को बढ़ावा न मिले।** जैसे उल्लू और बिल्ली को अशुभ के रूप में या माँ हमेशा रसोई ही सँभालती है, जैसी रूढ़िवादी बातों को बढ़ावा नहीं देना चाहिए।

5.2.1 भाषा के लिए विषयवस्तु

भाषा के लिए विषयवस्तु में स्थानीय, प्राकृतिक और मानवीय परिवेश, संबंधित विषयों के साथ-साथ कहानियों और कविताओं का एक अच्छा संतुलन होना चाहिए। जहाँ कहानियाँ और कविताएँ छोटे बच्चों की कल्पनाशीलता और भाषायी क्षमताओं को बढ़ाती हैं, वहीं वनस्पतियों और जीवों के साथ-साथ सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं पर विषयवस्तु बच्चों को उनके आस-पास के परिवेश को समझने में मदद करती है।

पाठ्यपरक विषयवस्तु

(क) प्रारंभिक स्तर की पाठ्यपरक विषयवस्तु में चित्रों के संदर्भ में पर्याप्त दृश्य संकेत होने चाहिए ताकि उनका अर्थ समझने में प्रारंभिक स्तर के पाठक की मदद की जा सके।

(ख) फॉण्ट ऐसे होने चाहिए, जो सौंदर्य बढ़ाने की बजाय दृश्य जटिलता को कम करने में सहायक हों।

(ग) फॉण्ट कम-से-कम 14-पॉइंट का होना चाहिए।

(घ) प्रयोग में आने वाली शब्दावलियों में मानक लिखित रूप की तुलना में परिचित और अपरिचित शब्दों का एक विवेकपूर्ण मिश्रण होना चाहिए, जो भाषा के बोले जाने वाले रूप के करीब हो (कई भारतीय भाषाओं में बोले जाने वाले और लिखित रूपों में बहुत ही अलग शब्दावलियाँ होती है)।

विषयवस्तु के स्वरूप

(क) पाठ्यपुस्तकें या कार्यपुस्तिकाएँ– पाठ्यपुस्तकें कक्षा 1 में आ सकती हैं लेकिन वे ऐसी होनी चाहिए कि बच्चे उनके साथ सक्रिय संवाद कर सकें।

(ख) बाल साहित्य– किसी व्यापक साक्षरता कक्षा के लिए प्रचुर मात्रा में बाल साहित्य तक बच्चों की पहुँच आवश्यक है। इसमें स्थानीय संस्कृति की कहानियाँ, गीत और साहित्य के अन्य रूप शामिल होने चाहिए। उदाहरण के लिए, बंगाली में इस लोरी को कक्षाओं में गीत के साथ गाने के रूप में शामिल किया जा सकता है।

घूम परानी माशी पिशी, मोदेर बारी एशो खाट नाईं पलंग नाईं चोख पेते बोशो बाटा भोरा भात देबो गाल भोरे खेओ खोकर चोखे घूम नाईं घूम दिए जेयो।	*सुलाने वाली चाची, हमारे घर आओ। कोई खाट नहीं, कोई पलंग नहीं। हमारी आँखों में नींद ले आओ। मैं तुम्हें चावल से भरा कटोरा दूँगा, तब तक खाएँ जब तक आपके गाल भर न जाएँ। लड़के की आँखों में नींद नहीं आती, उसे सुला दो।*

कक्षा-कक्ष में आकर्षक बाल साहित्य से भरी हुई किताबों की अलमारी होनी चाहिए, जिसमें किताबें दिखाई दें। शिक्षक को अपनी साप्ताहिक योजना के अनुसार पुस्तकों को अदल-बदल कर रखने में सक्रिय रुचि लेनी चाहिए।

(ग) **कार्यपत्रक**– ऐसे सरल कार्यपत्रक, जिन्हें बच्चे स्वयं चुनें और स्वयं उन पर काम पूरा कर सकें। यह साक्षरता में बच्चों के कार्य-अभ्यास और रचनात्मक आकलन, दोनों में ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

(घ) **सामग्री**– कार्डबोर्ड या सैंडपेपर में फ्लैशकार्ड, अक्षर फॉर्म, खेल, पहेली और अन्य गतिविधियों के लिए सामग्री भाषा और साक्षरता गतिविधियों को आकर्षक और आनंददायक बनाए रखती है।

(ङ) **ऑडियो-विजुअल सामग्री**– स्मार्टफोन जैसे डिजिटल उपकरणों की सर्वव्यापकता के साथ, अच्छी गुणवत्ता वाली ऑडियो सामग्री कक्षा 1 और 2 के लिए बहुत प्रभावी हो सकती है। कविताएँ, कहानियाँ और अन्य कथाएँ बच्चों के लिए मौखिक भाषा इनपुट का एक अच्छा स्रोत हो सकती हैं।

शिक्षक के मन की बात – 5.2 क

रोल करें, पढ़ें और लिखें!

मैं कक्षा 1 में पढ़ाती हूँ और मेरे बच्चों को एक जगह बैठना पसंद नहीं है। इसलिए बार-बार उपयोग होने वाले तीन अक्षरों वाले शब्दों को पहचानने, पढ़ने और लिखने का अभ्यास करने के लिए मैंने 'रोल करें, पढ़ें और लिखें' के इस खेल को बनाया। इसके लिए मुझे बस एक कार्यपत्रक, पासा और पेंसिल चाहिए। बच्चे बारी-बारी से पासा पलटते हैं, पासे में संख्या से मेल खाने वाले शब्द को पढ़ते हैं और उसे कार्यपत्रक में संबंधित बॉक्स में लिखते हैं। हम तब तक खेलना जारी रखते हैं, जब तक या तो एक पूरा कॉलम या पूरा बोर्ड भर नहीं जाता। इस गतिविधि के साथ, मैं पासों और उनकी पिन्सर ग्रिप पर संख्याओं की पहचान करने की उनकी क्षमता पर भी काम करने में सक्षम हूँ। यह एक सरल, आनंददायी और आकर्षक गतिविधि है।

'the, is, at, and, he, she' का अभ्यास करने के लिए मैंने जिस कार्यपत्रक का उपयोग किया, वह नीचे दी गई है—

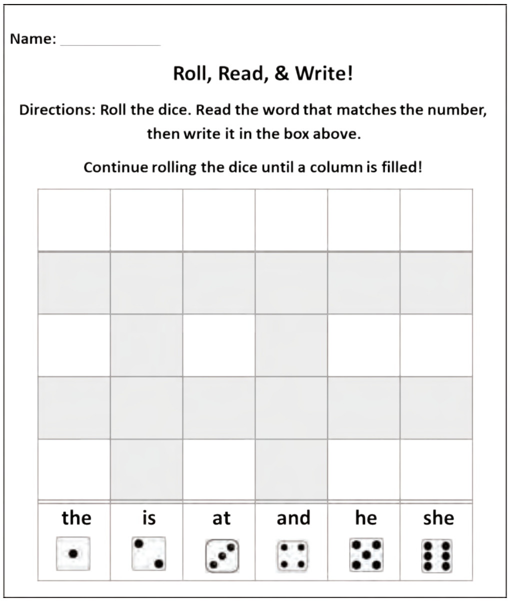
Name: ____________

Roll, Read, & Write!

Directions: Roll the dice. Read the word that matches the number, then write it in the box above.

Continue rolling the dice until a column is filled!

the	is	at	and	he	she

5.2.2 गणित के लिए विषयवस्तु

भाषा के समान गणित की विषयवस्तु स्थानीय परिवेश के साथ जुड़ाव दर्शा सकती है। आकृतियों को समझने या गिनने जैसी गणितीय गतिविधियों को प्राकृतिक और मानवीय परिवेश के साथ जोड़ा जा सकता है।

(क) पाठ्यपुस्तकों और कार्यपुस्तिकाओं में कक्षा 1 और 2 में गणित के लिए अवधारणात्मक विषयवस्तु को एक ऐसी कहानी में पिरोने की आवश्यकता है, जो बच्चों के लिए आकर्षक और दिलचस्प हो। उदाहरण के लिए बड़े और छोटे की अवधारणा को चित्र (5.2 क) में एक साधारण कहानी के माध्यम से दर्शाया गया है।

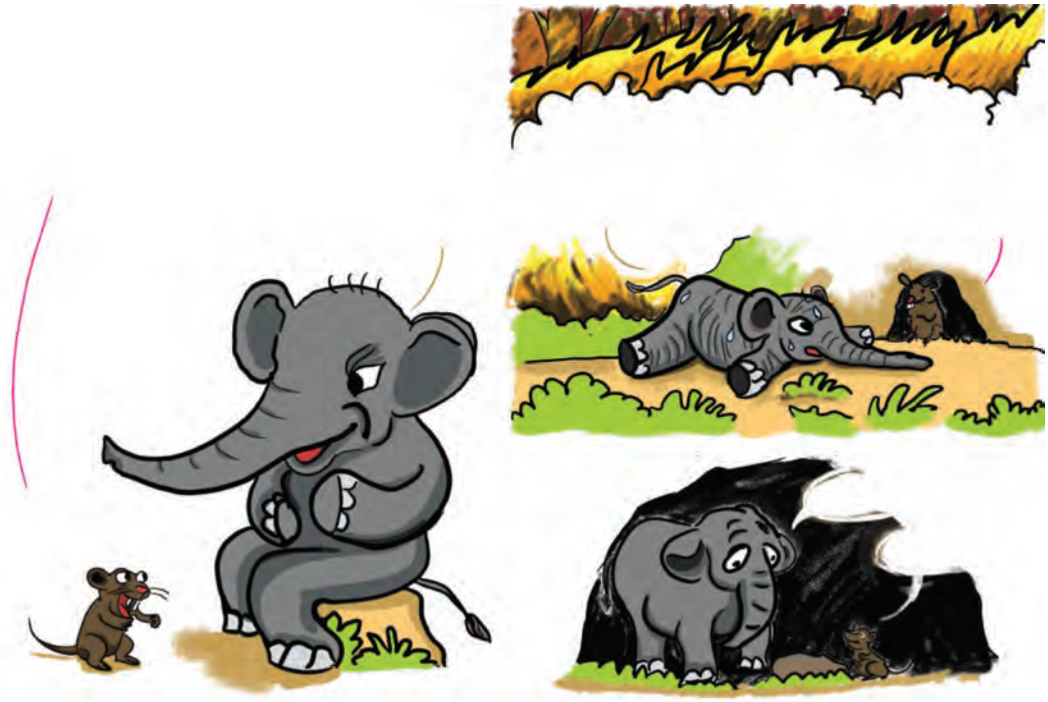

चित्र 5.2 क– सिक्किम की गणित पाठ्यपुस्तक में एक चित्रांकन

(ख) पाठ्यपुस्तकों और कार्यपुस्तिकाओं की विषयवस्तु के साथ कक्षा में उपयुक्त सूझ-बूझ के साथ जोड़-तोड़ भी किया जाना चाहिए। गिनना, आकृतियाँ और क्रम में लगाना, इन्हें ठोस रूप में जोड़-तोड़ के साथ-साथ कलम और कागज़ के माध्यम से भी सिखाने की आवश्यकता है।

शिक्षक के मन की बात – 5.2 ख

हत्तीरा हत्तु

20 तक संख्याओं को जोड़ने का अभ्यास करने के लिए हमने यह खेल हत्तीरा हत्तु शुरू किया, जिसका अर्थ है 10 के पास। इसके लिए हमें 1 से 10 तक लिखे हुए ताश के पत्तों का एक डेक, बच्चों के प्रत्येक जोड़े के लिए 10 कंकड़ों का सेट, कुछ चॉक के टुकड़े और एक चॉकबोर्ड चाहिए। हम बच्चों की जोड़ी बनाकर

शुरू करते हैं। प्रत्येक जोड़ी को ताश के पत्तों का एक डेक दिया जाएगा, जिसे नीचे की ओर रखा जाएगा और गणना करने के लिए 10 कंकड़ों का एक सेट दिया जाएगा। प्रत्येक बच्चा 2 कार्ड उठाएगा। उनमें से प्रत्येक दो कार्डों पर संख्याओं को जोड़ देगा और हम देखेंगे कि कौन-सा 10 के सबसे पास है। उदाहरण के लिए, हीरा 8 और 1 वाले कार्ड उठाती है, जिसका कुल मूल्य 9 है। रोहन कार्ड 6 और 7 उठाता है, जिनका कुल मूल्य 13 है। इस क्रम को हीरा जीतेगी क्योंकि 9, 13 की अपेक्षा 10 के अधिक पास है। दोनों जोड़ने और घटाने के लिए कंकड़ों के सेट का उपयोग करते हैं। इस गतिविधि को विभिन्न अवधारणाओं का अभ्यास कराने के लिए संशोधित किया जा सकता है, जैसे– 3 कार्ड चुनना, यह देखने के लिए कि कौन-सी संख्या 30 के पास है; या 0 के सबसे पास की संख्या जानने के लिए 2 कार्डों को घटाना।

(ग) कार्यपत्रक– कार्यपत्रक का प्राथमिक उद्देश्य बच्चों को गणितीय कौशल का पर्याप्त अभ्यास कराना और उनके सीखने को बेहतर करना है। यह अभ्यास सार्थक संदर्भ में और इसका केंद्र-बिंदु विशेष तरह के गणितीय कार्य होना चाहिए। कार्यपत्रक में स्पष्ट निर्देशों के साथ पर्याप्त जगह भी होनी चाहिए।

नमूना कार्यपत्रक नीचे दिया गया है—

5.2.3 कला के लिए विषयवस्तु

कला सीखने के अनुभवों को सीखने के विशिष्ट प्रतिफलों पर केंद्रित गतिविधियों के रूप में नियोजित किया जाना चाहिए और विषयवस्तु विद्यालय के स्थानीय संदर्भ से ली जानी चाहिए। शिक्षक को अपने स्कूल में बच्चों के जीवन के आस-पास के रंगों और पैटर्नों पर ध्यान देना चाहिए और उन्हें कला की कक्षा में उपयोग करना चाहिए। इसी तरह गायन, धुन, नृत्य और कहानियों (लोक और समकालीन दोनों) के स्थानीय रूपों का उपयोग संगीत, गतिविधि और रंगमंच की प्रदर्शन कला के संदर्भ में किया जा सकता है।

चित्र 5.2 ख– रंगोली कला

चित्र 5.2 ग– कोलाज कला

खंड 5.3
विषयवस्तु को संगठित करने के तरीके

प्रारंभिक वर्षों में सीखने के लिए विषयवस्तु को कई तरह से संगठित किया जा सकता है, इसमें 'खेल' बालक का प्राथमिक अनुभव होता है। सबसे अधिक उपयोग की जाने वाली कुछ पद्धतियों का वर्णन निम्निलिखित है—

5.3.1 परियोजना आधारित पद्धति

प्रारंभिक शिक्षा में करके सीखना महत्वपूर्ण है। विशेष रूप से अपने साथियों के सहयोग से जुड़ी परियोजनाएँ बच्चों को कौशलों की एक विस्तृत शृंखला विकसित करने में सक्षम बनाती हैं। बच्चे परियोजनाओं के आस-पास सीखने के परिवेश में ज्ञान और कौशल प्राप्त करते हैं, क्योंकि वे एक विशिष्ट प्रश्न, समस्या या चुनौती पर एक अवधि में लगातार काम करने में सक्षम होते हैं। परियोजनाओं में समय की अवधि में स्वाभाविक लचीलापन और निरंतरता होती है। इससे प्रत्येक बच्चे को अन्वेषण और खोज करने के अवसर प्राप्त होते हैं, जिससे बच्चों में आलोचनात्मक चिंतन और समस्या-समाधान की क्षमता विकसित होती है। बच्चों को एक-दूसरे के साथ सहयोग करने, स्वयं को संभालने, प्रश्न पूछने, पूछताछ करने और इस तरह सीखने के अवसर भी मिलते हैं। ये सभी न केवल स्कूली शिक्षा के लिए, बल्कि बाद में युवा वयस्कों के रूप में सफलता के लिए भी महत्वपूर्ण जीवन कौशल हैं।

इस चरण के लिए परियोजनाएँ छोटे बच्चों की समझ में आने के लिहाज से छोटी और सरल हो सकती हैं। प्रामाणिकता परियोजना बुनियादी शिक्षा की कुंजी है। बच्चे वास्तविक दुनिया के संदर्भ से जुड़ते हैं और उन्हें अपनी रुचियों और प्रश्नों को आगे बढ़ाने दिया जाता है। बच्चों को अन्वेषण, खोज और आलोचना के लिए स्थायी और वास्तविक दुनिया के अवसर प्रदान किए जाते हैं, जो उनके विकास और सीखने में योगदान करते हैं।

किसी परियोजना को पूर्ण करने की प्रक्रिया के दौरान या उसके परिणामों में कोई सही या गलत उत्तर नहीं होता है। निहितार्थ यह है कि एक बच्चा असफलता के डर के बिना अपने रचनात्मक चिंतन को विस्तार दे सकता है। इस तरह, परियोजनाएँ बच्चों की प्राकृतिक जिज्ञासा का पोषण करती हैं और अन्वेषण तथा खोज की अनुमति देती हैं। बच्चों के विचारों को महत्व देते हुए और उनकी रुचियों व रचनात्मकता को पोषित करते हुए बच्चों की सीखने की आवश्यकताओं को पूरा किया जाता है।

परियोजना कार्य का एक लाभ यह है कि यह विद्यार्थियों को पाठ्यपुस्तक से विषयवस्तु को केवल पढ़ने और याद करने की जगह उन्हें विषयवस्तु की एक विस्तृत शृंखला के साथ काम करने देता है। इस तरह, शिक्षक विषयवस्तु को नाममात्र हेतु पूर्ण नहीं करते, बल्कि विद्यार्थियों को विषयवस्तु खोजने, अनेक विषयों और वास्तविक जीवन के अनुभवों से जोड़ने के अवसर प्रदान करते हैं। इस अंतर्क्रिया में कौशलों को हासिल करना और उससे जुड़ना, उनका अनुप्रयोग करना शामिल है, जिस पर बाद में और अधिक विस्तार से चर्चा की गई है। स्वभाव से, परियोजनाएँ अंतर-अनुशासनात्मक हैं जिसमें भाषा, कला, सामाजिक अध्ययन, गणित, विज्ञान, नाटक, नृत्य और स्वास्थ्य जैसे कई विषयों के साथ-साथ वास्तविक जीवन के अनुभव भी शामिल हैं। इसके अलावा परियोजनाएँ अकादमिक विषयों और वास्तविक जीवन परिदृश्यों में उपयोग किए जाने वाले कौशलों को प्राप्त करने, उनका अभ्यास करने और उन्हें लागू करने के अवसर प्रदान करती हैं।

5.3.2 कहानी आधारित पद्धति

अच्छी कहानियाँ सभी को पसंद होती हैं, विशेष रूप से बच्चों को। कहानियाँ संप्रेषण के सबसे पुराने माध्यमों में से एक हैं। हमारी संस्कृति में कहानियाँ परिवारों और समुदायों को एक साथ जोड़ने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। कहानियों का उपयोग बच्चों के साथ दुनिया-भर के बारे में बात करने के लिए किया जा सकता है, जैसे– उन्हें प्रकृति, जानवर, लोगों और अपनी समृद्ध परंपरा की समृद्धि के बारे में बताएँ; उन्हें कार्यों को करने के विभिन्न तरीकों से परिचित कराएँ और आचार नैतिकता के सवालों में व्यस्त रखें। कहानियाँ पारिवारिक और सामुदायिक संबंधों को बनाए रखने का एक प्रभावी माध्यम भी रही हैं। भावनात्मक जुड़ाव के कारण कहानियाँ बच्चों के ध्यान और स्मृति को उद्दीप्त करने में सक्षम होती हैं। कहानियाँ दैनिक जीवन की बातचीत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, जिनके माध्यम से जीवन के विभिन्न पहलुओं को संप्रेषित किया जाता है। चूँकि, अधिकांश बच्चे अपनी घरेलू भाषा में कहानियों से पहले ही परिचित हो चुके होते हैं, इसलिए स्कूल में उनका उपयोग एक सार्थक संदर्भ में नई भाषाओं से परिचय कराने के लिए किया जा सकता है।

कहानियाँ बच्चों को सीधे सीखने की प्रक्रिया में शामिल करती हैं और उन्हें अपनी शब्दावलियाँ बनाने में मदद करती हैं। भाषा सीखने और सिखाने का एक समृद्ध संसाधन होने के अलावा, कहानियाँ बच्चों को उनके तात्कालिक परिवेश से बाहर की दुनिया से परिचित कराती हैं। इससे बच्चों को शब्दों से कहीं अधिक सीखने में मदद मिलती है।

कहानियाँ अनंत हैं, उनमें से कुछ चुनी जा सकती हैं। साथ ही ऐसी कहानियों का चुनाव करना चाहिए, जो बच्चे की वास्तविकता को दर्शाती हैं। ये कहानियाँ न केवल 'प्रामाणिक इनपुट' का एक समृद्ध स्रोत प्रदान करती हैं, बल्कि प्रेरक और चुनौतीपूर्ण होती हैं। बच्चों के लिए प्रत्येक शब्द को समझना आवश्यक नहीं है क्योंकि चित्र, हाव-भाव और स्वर, उन्हें कहानी के सार को समझने में मदद करते हैं और उन्हें उपलब्धि की भावना प्रदान करते हैं।

कहानियाँ बच्चों के समग्र विकास के लिए एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में भी काम करती हैं। वे भाषा सीखने के साथ-साथ भावनात्मक, सामाजिक और बौद्धिक विकास को बढ़ावा देती हैं।

शिक्षक, बाल साहित्य के समृद्ध भंडार में से कहानियाँ चुन सकते हैं। ऐसी कहानियों का चुनाव किया जाए जिनसे बच्चे अपनी घरेलू भाषा में पहले से ही परिचित हैं, उदाहरण के लिए पारंपरिक कहानियाँ और किस्से। अन्य प्रकारों में चित्र पुस्तकें, मिथक, किंवदंतियाँ, लोककथाएँ, दंतकथाएँ, कविताएँ, गीत, तुकबंदी, वर्णमाला और गिनती की किताबें, जानवरों की कहानियाँ, हास्य-कहानियाँ आदि भी चुनी जा सकती हैं।

कहानी आधारित पद्धति की योजना बनाते समय शिक्षकों को इस पर विचार करना चाहिए कि वे इनके माध्यम से क्या प्राप्त करना चाहते हैं। उन्हें संभावित गतिविधियों, आवश्यक समय, पाठ्यचर्या से संबंध, बच्चों द्वारा बोली जाने वाली भाषा आदि के बारे में विचार कर लेना चाहिए। इसी आधार पर सामग्री की तैयारी व पाठ योजना का निर्माण किया जाना चाहिए।

कहानी आधारित पद्धति को आमतौर पर तीन चरणों के आधार पर विकसित किया जाता है— कहानी से पहले की गतिविधियाँ, कहानी पढ़ने के दौरान की गतिविधियाँ और कहानी पढ़ने के बाद की गतिविधियाँ।

(क) पहला कदम शिक्षण उद्देश्यों और बच्चों की आवश्यकताओं के आधार पर कहानियों का चयन करना है। इसके बाद कहानियों पर आधारित गतिविधियों पर विचार-मंथन करना चाहिए, जिससे पाठ योजना तैयार की जा सके।

(ख) कहानी-पूर्व पढ़ने की गतिविधियाँ निम्नलिखित हो सकती हैं— पुस्तक का आवरण और शीर्षक दिखाएँ और इसके बारे में बात करें; बच्चों से कहानी के नाम और उपयोग किए जा रहे चित्र के बारे में प्रश्न पूछें, पढ़ी जाने वाली कहानी के बारे में प्रश्न पूछें; कहानी के इर्द-गिर्द छोटा खेल खेलें।

(ग) कहानी पढ़ते समय निम्नलिखित गतिविधियों में शामिल हो सकते हैं— शब्दावली दोहराएँ और मूक अभिनय करें; कार्ड पकड़ें; अनुमान लगाएँ कि आगे क्या होने वाला है; कहानी के कुछ हिस्सों को क्रम दें; हाँ/नहीं वाले प्रश्न पूछें; अंत का अनुमान लगाएँ।

(घ) पढ़ने के बाद की गतिविधियों में निम्नलिखित शामिल हो सकते हैं— कहानी का एक और शीर्षक चुनें; चित्रों या घटनाओं को क्रम दें; एक छोटी-पुस्तक या पोस्टर बनाएँ; कहानी पढ़ें या अभिनय करें; कहानी के बारे में खेल खेलें; कहानी के बारे में एक गाना गाएँ; कठपुतली या मुखौटे बनाएँ; कहानी को फिर से सुनाएँ आदि।

शिक्षक के मन की बात – 5.3 क

कहानियों का उपयोग करना

मैं 3–6 साल के बच्चों को पढ़ाती हूँ, जहाँ कहानियाँ उन सभी को जोड़े रखने का एक महत्वपूर्ण तरीका हैं। कहानियाँ उनकी कल्पना और शब्दावली का निर्माण करने के साथ-साथ सकारात्मक शिक्षा पर बात करने और संवाद का आवश्यक माध्यम हैं। मैं कहानी का चयन बच्चों की पसंद के आधार पर या फिर इस आधार पर करती हूँ कि मैं उन्हें किन मूल्यों को सिखाना चाहती हूँ। मेरे पास पहले से ही बच्चों के आयुवर्ग के लिए उपयुक्त कहानियों का संग्रह है। आमतौर पर कक्षा से पहले, मैं संदर्भ जोड़ने के लिए एक कहानी-पूर्व गतिविधि फिर कहानी की गतिविधि (जिसे मैं कभी-कभी सुनाती हूँ, कभी-कभी एक एनिमेटेड वीडियो चलाती हूँ और कभी-कभी उसके प्रदर्शन में भूमिका निभाती हूँ) और इसके बाद कहानी के बाद की गतिविधि की योजना बनाती हूँ। मैं उन नए शब्दों को भी ध्यान में रखती हूँ, जिन्हें इस अवधि के अंत तक उन्हें सीखना चाहिए। उदाहरण के लिए, मैंने अपनी कक्षा के समय में कहानी-पूर्व गतिविधि के रूप में पहले से ही जानवरों के फ्लैश कार्ड पर एक गतिविधि की है। अब, मैं हाथियों और चूहों पर *पंचतंत्र* की एक कहानी पर काम करने की योजना बना रही हूँ।

कहानी कुछ इस प्रकार है—

एक बार की बात है, एक पेड़ के नीचे चूहों का एक समूह शांतिपूर्ण तरीके से रहता था। एक बार उस रास्ते से हाथियों का एक समूह गुजरा और उसने चूहों के घरों को नष्ट कर दिया। कई चूहे कुचलकर मर गए। तब चूहों के राजा ने हाथियों के राजा के पास जाने का निर्णय लिया और उससे अनुरोध किया कि वह अपने झुंड को दूसरे रास्ते से जाने के लिए मार्गदर्शन करे। हाथी राजा इस पर सहमत हो गया और उसने अपने झुंड के साथ पानी पीने के लिए जाने का दूसरा रास्ता अपनाया। इससे चूहों की जान बच गई। एक

दिन हाथी-शिकारियों का एक दल वहाँ आया और उसने बहुत-से हाथियों को एक बड़े से जाल में फँसा लिया। तभी हाथी राजा को अचानक चूहों के राजा की याद आई। उन्होंने अपने झुंड के हाथियों में से एक हाथी को बुलाया। हाथी राजा ने उस हाथी को चूहों के राजा से संपर्क करने के लिए भेजा। उस हाथी की बात सुनते ही चूहों का राजा अपने पूरे समूह को लेकर वहाँ गया और उन सबने मिलकर हाथियों के झुंड को फँसाने वाले जाल को काट दिया। इस तरह से चूहों ने हाथियों के झुंड को पूरी तरह से मुक्त कर दिया।

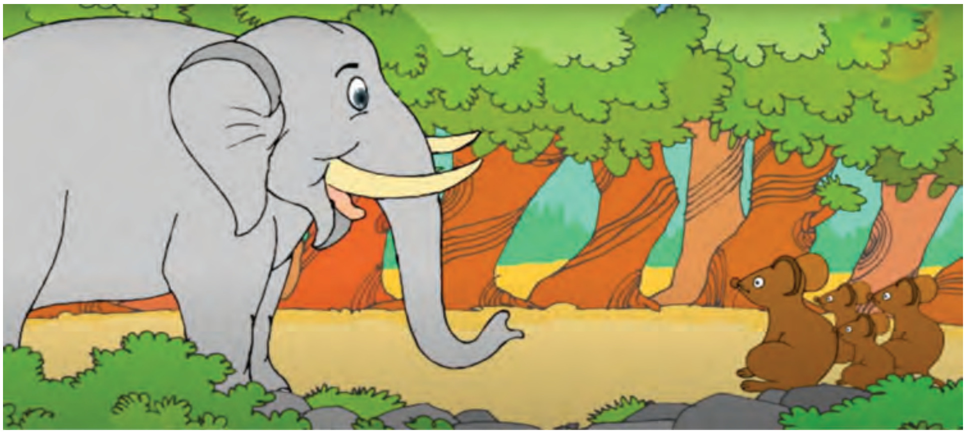

(स्रोत– यूट्यूब चैनल— मैजिक बॉक्स इंग्लिश स्टोरीज

मित्र वही जो मुसीबत में काम आए!

हमने जिन नए शब्दों पर ध्यान केंद्रित किया, वे थे— 'शांतिपूर्ण', 'पास जाना', 'मार्गदर्शन', 'बुलाना' और दोस्ती के बारे में चर्चा आदि।

कहानी के बाद मैंने प्रश्न पूछकर चर्चा शुरू की, जैसे– "आपने क्या देखा? कहानी में क्या हो रहा था? जब चूहों ने मदद माँगी तो हाथियों ने क्या किया? हाथियों ने चूहों की मदद क्यों की? जब हाथियों ने मदद माँगी तो चूहों ने क्या किया? चूहों ने हाथियों की मदद क्यों की? क्या आपके पास दोस्त हैं? आपके कितने दोस्त हैं? क्या आप हमें उनके नाम बता सकते हैं? आप अपने दोस्तों के साथ क्या करते हैं?" और इसी तरह के अन्य प्रश्न।

ऐसी किसी भी गतिविधि में, मैं सभी उत्तरों को स्वीकार करती हूँ, बिना किसी निर्णय के उनकी सराहना करती हूँ और अपने सभी बच्चों को उत्तर देने और भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करती हूँ।

कहानी के बाद की गतिविधि के रूप में, हम 'मेरे मित्र' के बारे में एक चित्र बनाएँगे।

5.3.3 विषय आधारित पद्धति

विषय आधारित पद्धति सीखने-सिखाने का एक तरीका है, जहाँ पाठ्यचर्या के कई क्षेत्रों को एक साथ जोड़ा जाता है और एक विषय के भीतर एकीकृत किया जाता है। इसमें अलग-अलग समय पर अलग-अलग कौशलों या अलग-अलग विषयों को सीखने के बजाय, बच्चों को एक विषय के माध्यम से सार्थक संबंधों को बनाने और एक विषय में मौजूद विभिन्न विषयों या पहलुओं का पता लगाने में मदद मिलती है।

विषय को एक व्यापक विचार के रूप में परिभाषित किया जाता है, जो सीखने के विशिष्ट अनुभवों के विकास का मार्गदर्शन करता है। बच्चे छोटी अवधि के लिए अलग-अलग विषयों को सीखने के बजाय लंबी अवधि के लिए अलग-अलग तरीकों से एक विषय को विस्तार से समझते-करते हैं। हम इसे एक ऐसे माध्यम के रूप में देख सकते हैं, जिसका उपयोग सीखने के अनुभवों के रूप में किया जाता है।

इसमें बच्चे विषयों को अलग-थलग अवधारणाओं के रूप में नहीं, बल्कि वास्तविक जीवन की स्थितियों में होने वाली प्रक्रियाओं के रूप में समझते हैं। यह अनुभवों को बच्चों के लिए प्रासंगिक, संदर्भगत और ठोस बनाता है। यह बच्चों में विषय के बारे में एक एकीकृत समझ विकसित करने में मदद करता है।

विषय ऐसी परिचित स्थितियों का निर्माण करते हैं, जिन पर नए ज्ञान का निर्माण किया जा सके। प्रत्येक विषय बच्चों के सीखने की अपार संभावनाओं को तराशता है। विषय के भीतर किसी भी घटना, विचार, वस्तु, संबंध या अनुभव की कल्पना, सीखने के अनुभव के निर्माण के लिए आधार के रूप में की जा सकती है।

विषय के भीतर बच्चे अपने रिश्तों के बारे में, अपनी रुचियों, लोगों के साथ अपने संबंधों और अंतर्क्रिया के बारे में, अपने आस-पास के पर्यावरण से संबंधित अवधारणाओं के बारे में पता लगाते हैं। वे इन्हें बेहतर ढंग से समझने, अन्वेषित करने, प्रयोग करने, अनुभव करने के लिए प्रश्न पूछते हैं और इस प्रकार अपने पहले से मौजूद ज्ञान में नई चीज़ें जोड़ते हैं।

कुछ विषय इस प्रकार हो सकते हैं— मेरा घर, मेरा पड़ोस, मेरा बगीचा, मेरा स्कूल, बाज़ार, मैदान और जंगल, पहाड़ और पर्वत, नदियाँ और सागर, वाहन आदि। सभी विषयों में कई उप-विषय होते हैं ताकि बच्चे विषय के भीतर विभिन्न पहलुओं का पता लगा सकें।

(क) विषय के केंद्र में बच्चे होते हैं। जब बच्चों को केंद्र में रखा जाएगा, तो पाठ्यचर्या के साथ-साथ शिक्षक भी बच्चों के सीखने के अनुभवों को उनके जीवन से जोड़ने में मदद करेंगे।

(ख) ज्ञान और सीखने को अलग-थलग नहीं रखा जाएगा, बल्कि इसे बच्चों के दैनिक जीवन के अनुभवों से जोड़ा जाएगा।

(ग) संदर्भों की विविधता और बच्चों के व्यक्तिगत अनुभव विषय के अंतर्गत सीखने के अनुभवों की योजना बनाने के लिए बहुत आवश्यक हैं।

(घ) सीखने की इस यात्रा में उत्पाद की तुलना में प्रक्रिया अधिक महत्वपूर्ण है।

(ङ) शिक्षक की भूमिका एक सुगमकर्ता की होती है, जो सीखने की प्रक्रिया में मध्यस्थता करता है। कुछ अनुभव बच्चों की रुचि से निकलकर आ सकते हैं और शिक्षक द्वारा सुगम बनाए जाते हैं। अन्य अनुभव शिक्षक

द्वारा शुरू किए गए हो सकते हैं लेकिन उनमें बच्चों के लिए निर्णय लेने और अन्वेषण के पर्याप्त अवसर होने चाहिए। बच्चों और शिक्षकों को उप-विषयों के भीतर विभिन्न विचारों या पहलुओं का पता लगाने की रचनात्मक स्वतंत्रता है।

विषय और उप-विषय बच्चों को अनुभवों की समझ बनाने के लिए एक ठोस आधार प्रदान करते हैं ताकि वे अन्य अनुभवों के साथ आपसी संबंध बना सकें, सामान्यीकरण कर सकें और अंततः अधिक अमूर्त विचारों का निर्माण कर सकें। बच्चे प्रत्येक उप-विषय में नई अवधारणाएँ विकसित करते हैं, नए कौशलों का अभ्यास करते हैं, अपनी प्रवृत्तियाँ निर्मित करते हैं और भावनात्मक अनुभव प्राप्त करते हैं।

बॉक्स 5.3 क

विषय— घर

उप-विषय— रसोई में क्या हो रहा है?

छोटे बच्चे रसोई को लेकर काफ़ी आकर्षित रहते हैं। भोजन की गंध, विभिन्न बर्तन और खाना पकाने की प्रक्रिया उन्हें आकर्षित करती है। सामान्यतः माता-पिता या दादा-दादी खाना पकाने के दौरान रसोई में बच्चों से बात करते हैं। रसोई के आस-पास काफ़ी आदान-प्रदान होता है। हम देख सकते हैं कि रसोई पहले से ही बच्चों के लिए एक बड़ी महत्वपूर्ण जगह है। वे बहुत कुछ सीख भी रहे होते हैं। वे रसोई में मौजूद विभिन्न वस्तुओं के भौतिक गुणों के बारे में सीखते हैं। इन वस्तुओं के बारे में ज्ञान प्राप्त करने के लिए अपनी सभी इंद्रियों का उपयोग करते हैं। वस्तुओं के बीच संबंध बनाने के लिए अलग-अलग कौशल लागू करते हैं जैसे कि क्रम में लगाने के कौशल का उपयोग करके सबसे बड़े से सबसे छोटे चम्मच को रखना या विभिन्न खाद्य पदार्थों को वर्गीकृत करना। ऐसा करते हुए वे पूछताछ और प्रयोग के माध्यम से वैज्ञानिक और गणितीय अवधारणाओं का निर्माण भी कर रहे होते हैं। वे ठोस अनुभव के माध्यम से जेंडर भूमिकाओं के बारे में भी सीखते हैं और प्रश्न करते हैं कि ये खाना पकाने और देखभाल करने वाली भूमिकाएँ उनके परिवारों में कैसे ली जाती हैं। वे प्रवृत्तियों का निर्माण भी कर रहे होते हैं और भावनात्मक रूप से इन अनुभवों से जुड़ रहे होते हैं।

5.3.4 चयनशील पद्धतियाँ

उपर्युक्त सभी पद्धतियों की अलग-अलग विशेषताएँ हैं। हम प्रारंभिक वर्षों के लिए किसी एक विशेष पद्धति की अनुशंसा नहीं करते हैं। यह स्कूलों और शिक्षकों पर छोड़ दिया गया है कि वे अपने संदर्भ और आवश्यकताओं के आधार पर सीखने हेतु विषयवस्तु डिज़ाइन करने के लिए सही प्रकार की पद्धति चुनें।

विद्यालय और शिक्षक सामान्यतः विशेष तरह की दक्षताओं के लिए विषयवस्तु को संगठित करने हेतु विशेष तरह की पद्धतियों का उपयोग करते हैं। सीखने के अनुभवों को व्यक्तिगत सीखने के प्रतिफलों को ध्यान में रखकर

विषयवस्तु, शिक्षणशास्त्र और आकलन के विशेष तरह के संयोजन में नियोजित किया जा सकता है। संभव है कि यह किसी विशेष 'पद्धति' में समावेशित न हो। हालाँकि, इस तरह की योजना में असंगत दिखने का जोखिम होता है। किसी विशिष्ट पद्धति का पालन किए बिना भी सीखने के अनुभवों का एक अच्छी तरह से डिज़ाइन किया गया अनुक्रम सीखने के प्रतिफलों को प्राप्त करने में समान रूप से आकर्षक और प्रभावी हो सकता है।

खंड 5.4
शिक्षण-अधिगम सामग्री (टी.एल.एम.)

(क) बुनियादी स्तर में बच्चों के अधिक सीखने की संभावना तब सर्वाधिक होती है, जब वे कई इंद्रियों का उपयोग करते हैं और सक्रिय रूप से अपने हाथों का उपयोग करते हैं। खेलने के लिए साधारण खिलौनों से लेकर गिनने और संख्या ज्ञान के लिए जोड़-तोड़ वाली सामग्री तक, इस चरण में विभिन्न प्रकार की शिक्षण-अधिगम सामग्री (टी.एल.एम.) आवश्यक हैं।

सामान्य रूप से किताबें और विशेष रूप से बाल साहित्य, बचपन के सीखने के माहौल को समृद्ध बनाने और पढ़ने के उत्साह को बढ़ावा देने के लिए अनिवार्य हैं। जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते हैं, कार्यपुस्तकें और कार्यपत्रकों का उपयोग भी ठीक रहता है। शिक्षण-अधिगम सामग्री (टी.एल.एम.) के चुनाव के लिए कुछ महत्वपूर्ण सिद्धांत हैं—

(ख) इस आयु वर्ग के बच्चों द्वारा उपयोग की जाने वाली सामग्री आकर्षक और सुरक्षित होनी चाहिए। चूँकि तीन वर्ष की आयु के बच्चे चीज़ों को अपने मुँह में डालते हैं, इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि सामग्री और रंगों को उचित रूप से चुना जाए और इनमें ऐसे रंग न हों, जो विषाक्त हो सकते हैं।

(ग) चुनी गई सामग्री के साथ बच्चों को अन्वेषण और प्रयोग करने के पर्याप्त अवसर मिलने चाहिए। टिकाऊ और अच्छी तरह से बनाई गई सामग्री 'रफ़' उपयोग की अनुमति देगी और भविष्य में उपयोग के लिए भी उपलब्ध होगी।

(घ) जहाँ तक संभव हो, चुनी गई सामग्री स्थानीय रूप से निर्मित या स्थानीय रूप से उपलब्ध होनी चाहिए। इससे इसे आसानी से बदला जा सकेगा।

(ड.) शिक्षण-अधिगम सामग्री में खरीदी गई सामग्री, स्थानीय रूप से निर्मित सामग्री, शिक्षकों द्वारा बनाई गई सामग्री और यहाँ तक कि बच्चों द्वारा बनाई गई सामग्री भी शामिल होनी चाहिए।

भाषा और साक्षरता के विकास में सामग्री के साथ-साथ पुस्तकें बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। बुनियादी स्तर में बच्चों के साहित्य का एक छोटा लेकिन अच्छा संग्रह होने से शिक्षण-अधिगम सामग्री का सेट पूरा होता है।

5.4.1 शिक्षक द्वारा तैयार की जा सकने वाली सामग्री

बुनियादी स्तर के लिए आवश्यक अधिकांश शिक्षण-अधिगम सामग्री स्थानीय रूप से उपलब्ध और कम लागत वाली सामग्रियों का उपयोग करके बनाई जा सकती है। **शिक्षकों को स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्री से सरल शिक्षण-अधिगम सामग्री बनाने की क्षमता विकसित करनी चाहिए।** कार्डबोर्ड, स्ट्रॉ, पैकेजिंग सामग्री, पुराने कपड़े, बोतल के ढक्कन/बीज/कंकड़ (गिनने के लिए), माचिस की तीली (रसायन हटाकर), पुराने टायर, प्लास्टिक की बोतलें व कंटेनर (मापने के लिए), नारियल के खोल, उपयोग किया हुआ कागज़, उपयोग किया हुआ अंडा कार्टन (छाँटने के लिए), सभी शिक्षण-अधिगम सामग्री विकसित करने के स्रोत बन जाते हैं।

5.4.2 बच्चों द्वारा तैयार की जा सकने वाली सामग्री

बच्चे अपनी कला और शिल्प कार्य के रूप में सरल शिक्षण-अधिगम सामग्री बना सकते हैं। शिक्षक उपयोग किए गए कपड़े को नरम कपड़े के गोले, कठपुतली और खेलने के लिए खिलौने बनाने के लिए ला सकते हैं। **छोटे बच्चों के लिए साधारण खिलौने, पहेलियाँ और बोर्ड गेम बनाना बहुत ही आकर्षक गतिविधियाँ हो सकती हैं और वे इन सामग्रियों को डिज़ाइन करने और बनाने में विकास के सभी क्षेत्रों को नियोजित कर सकते हैं।**

5.4.3 बाज़ार से खरीदी जा सकने वाली सामग्री

कुछ शिक्षण-अधिगम सामग्री ऐसी सामग्रियों से निर्मित होती है, जो शायद स्थानीय रूप से उपलब्ध न हों। उन्हें बनाने के लिए अधिक परिष्कृत उपकरणों और औज़ारों की आवश्यकता हो सकती है। ये सामग्री बाज़ार से मँगवाई जा सकती हैं। ऐसी सामग्री की एक उदाहरण सूची नीचे दी गई है—

तालिका 5.4 क

बिल्डिंग ब्लॉक सेट (आधारभूत आकृतियाँ जो रंग, आकार और मोटाई में भिन्न हों)	
रंगीन मोती और तार	मॉडलिंग सामग्री (जैसे– लोई, क्ले)
लेसिंग बोर्ड	अलग-अलग आकार की गेंदें
सरल पहेलियाँ (जैसे– पहेली, रंग पहेली, शरीर के अंगों की पहेली और आकृति पहेली)	
मैग्निफाइंग ग्लास	अलग-अलग क्षमता के चुंबक
डॉट और नंबर डोमिनोज़	वर्णमाला और संख्या कार्ड
चित्र कार्ड या फ्लैश कार्ड	एक या दो पंक्तियाँ लिखी हुई चित्र पुस्तकें
कहानी की किताबें	डफली या छोटा ड्रम
चित्र वार्तालाप चार्ट	नरम खिलौने (जैसे– गुड़िया)
रसोई सेट	डॉक्टर सेट
फल और सब्ज़ियों के मॉडल	प्लास्टिक का तराज़ू
विभिन्न आकारों के मापन कप	चटाइयाँ
चिपकाने की चीज़ें, गोंद, टेप	रस्सियाँ
कुंद कैंचियाँ	
अनेक तरह के कंटेनर (जैसे– कटोरे, बाल्टी, जग)	
विभिन्न प्रकार के उपकरण (जैसे– चम्मच, कुप्पी, मापने वाले कप, चम्मच/कप, पेंट ब्रश)	
विभिन्न प्रकार के कागज़ विभिन्न (जैसे– अखबारी कागज़, चमकीला कागज़, पुनर्चक्रण से निर्मित कागज़)	
क्रेयॉन, मार्कर, रंगीन पेंसिल, रंगीन चॉक	

5.4.4 कक्षा 1 और 2 के लिए गणित की शिक्षण-अधिगम सामग्री

यहाँ कुछ बुनियादी शिक्षण-अधिगम सामग्री दी गई है, जिन्हें स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्रियों से बनाना आसान है। ये सामग्रियाँ गणित सीखने में बच्चों के लिए अधिक ठोस अनुभव बनाती हैं।

काउंटर्स— कुछ भी हो सकते हैं जिन्हें गिना जा सके जैसे– कंकड़, बीज, बटन, फलियाँ, अनाज, दालें, मोतियाँ। पुरानी कार्डबोर्ड पैकिंग सामग्री का उपयोग करके भी साधारण काउंटर्स बनाए जा सकते हैं।

तीली-बंडल— तीली-बंडल मोटे तौर पर एक ही आकार के किसी भी स्टिक से बनाए जा सकते हैं। टहनियाँ, पुआल, घास, नारियल की झाड़ू की तीलियाँ (लगभग 10 से.मी. लंबे टुकड़ों में कटी हुई), टूथपिक्स, सूखे स्केच पेन, इन सभी का उपयोग रबर बैंड के साथ बंडल बनाने के लिए किया जा सकता है। यह महत्वपूर्ण है कि इन्हें तब करवाया जाए, जब बच्चे 0–100 की संख्याएँ सीख रहे हों और उन्हें 10 तीलियों के बंडल बनाने का बहुत अभ्यास हो। 10 बंडलों को मिलाकर 100 का एक बड़ा बंडल बनाया जा सकता है। ये स्थानीय मान (दाशमिक या दस आधारित प्रणाली) की समझ के लिए आवश्यक हैं और संख्याओं की तुलना करने के लिए भी इनका उपयोग किया जा सकता है। ये जोड़ और घटाव के लिए मानक एल्गोरिदम को समझने में भी बहुत उपयोगी हैं।

गणितमाला— दो रंगों में 100 मोतियों की माला को पूर्ण संख्याओं और संक्रियाओं (या अन्य चीज़ों) को सीखने के लिए उपयुक्त पूर्णांकों के लिए चार रंगों वाली माला तक बढ़ाया जा सकता है।

एरोकार्ड— संख्या कार्ड, जो स्थानीय मान को समझने में मदद करते हैं।

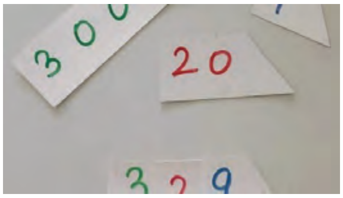

फ्लैट्स-लॉंग्स यूनिट्स— पूर्ण, संख्याओं के लिए द्वि-आयामी दस सामग्रियाँ।

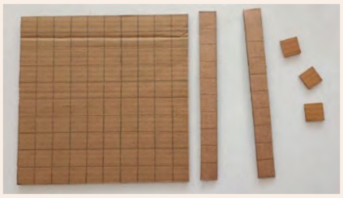

कट-आउट आकृतियाँ— कार्डबोर्ड से कटी हुई ज्यामितीय आकृतियाँ, जो आकृतियों की समझ विकसित करने में मदद करती हैं।

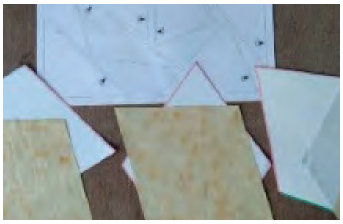

स्ट्रॉ मॉडल— कोणों और बहुभुजों के लिए मॉडल।

पॉलीओमिनी— यह एक लोकप्रिय पहेली है, जहाँ प्रत्येक टुकड़ा समरूप वर्ग या वर्गों से बना होता है और इसे विभिन्न तरीकों से उपयोग किया जा सकता है।

टैनग्राम— यह एक लोकप्रिय 7 टुकड़ों वाली पहेली है और इसे विभिन्न तरीकों से उपयोग किया जा सकता है।

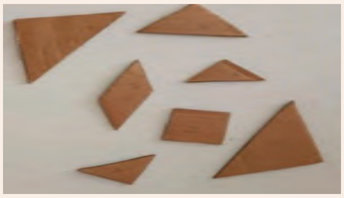

5.4.5 पुस्तकालय और बाल साहित्य

पुस्तकालय वह स्थान है, जहाँ पुस्तकों का संग्रह होता है। भारतीय संदर्भ में पुस्तकें देखना-पढ़ना बहुत आवश्यक है क्योंकि यहाँ किसी विषयवस्तु को पुस्तकों से पढ़ने की संस्कृति अभी भी बरकरार है। पढ़ना, सीखने के लिए पुस्तकालय एक बड़ी प्रेरणा हो सकते हैं और आसानी से सुलभ बाल साहित्य इस प्रेरणा और पढ़ने में रुचि पैदा करने में मददगार हो सकता है।

पुस्तकालय केवल पुस्तकों का संग्रह नहीं है। पुस्तकों का आकर्षक प्रदर्शन बच्चों का ध्यान आकर्षित करता है। पुस्तकालय को पढ़ने की एक सक्रिय जगह बनाए रखने के लिए समय-समय पर इसमें किताबों के प्रदर्शन को बदलना आवश्यक है। पुस्तकालय को केवल पुस्तकों के भंडारण स्थान के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए, बल्कि इसे पुस्तकों के साथ जुड़ाव के लिए एक सक्रिय परिवेश के रूप में देखा जाना चाहिए। पढ़कर सुनाना और किताबों के साथ अन्य जुड़ाव पुस्तकालय में सबसे बेहतर किए जा सकते हैं। शिक्षक और अन्य वयस्क भी पुस्तकालयों में पढ़ने के व्यवहार का मॉडल बन सकते हैं।

बच्चों को पुस्तकालय से किताबें 'उधार' लेने, उन्हें घर ले जाने और समय पर पुस्तकालय में वापस जमा करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। यदि स्कूल में पुस्तकालय के लिए जगह है, तो शिक्षक को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि कक्षा-कक्ष में किताबों की प्रदर्शनी में अच्छी गुणवत्ता वाले बाल साहित्य तक बच्चों की पहुँच हो सके। यह काम समय-समय पर पुस्तकालय से पुस्तकें 'उधार' लेकर और कक्षा में उनकी प्रदर्शनी लगाकर किया जा सकता है। जहाँ स्कूलों में एक अलग पुस्तकालय के लिए पर्याप्त जगह नहीं है, वहाँ पढ़ने के कोने कक्षा में ही बनाए जा सकते हैं।

बॉक्स 5.4 क

पंचतंत्र

पंचतंत्र की हर कहानी से कुछ-न-कुछ सीखने को मिलता है। महान विद्वान विष्णु शर्मा ने चार राजकुमारों को जीवन का ज्ञान सिखाने के लिए, बहुत समय पहले पंचतंत्र की कहानियाँ लिखी थीं। सुंदर और एक-दूसरे से जुड़ी हुई दंतकथाओं, जादुई कहानियों और जानवरों की कहानियों के संग्रह पंचतंत्र ने सदियों से युवाओं और वृद्धों को मंत्रमुग्ध किया है। ये दंतकथाएँ समय की कसौटी पर खरी उतरी हैं और आज भी प्रासंगिक हैं।

पंचतंत्र ने मौखिक लोक कथाओं और अनुवादों के माध्यम से भारत के बाहर भी अपना रास्ता बनाया है। इसने दुनिया-भर के अन्य दंतकथा लेखकों को प्रभावित किया। यह विश्व साहित्य में भारत के सबसे प्रभावशाली योगदानों में से एक है।

भारत में लोक कथाओं और स्थानीय किंवदंतियों की एक विविध और समृद्ध परंपरा है। इनका उच्च गुणवत्ता वाले बाल साहित्य में अनुवाद किया जा सकता है और इन्हें विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध कराया जा सकता है।

साधारण चित्र पुस्तकों से लेकर प्रत्येक पृष्ठ पर छोटे पैराग्राफ वाली पुस्तकें सचित्र बुनियादी स्तर के श्रेणीबद्ध पाठकों के लिए उपयुक्त हैं। L1 और L2 दोनों की सूची में अन्य भाषाओं की पुस्तकों के साथ विशेष रूप से बच्चों की घरेलू भाषाओं में पुस्तकें होनी चाहिए। संभव है कि उनकी घरेलू भाषाएँ, L1 और L2 भिन्न हों। भाषाओं की विभिन्न बोलियों में लिखी गई पुस्तकें भी भाषायी विविधता के विचार को बढ़ावा देंगी और सभी प्रकार की भाषा के उपयोग को वैधता और गरिमा प्रदान करेंगी। मुद्रित हुई पुस्तकों के अलावा ऑडियो पुस्तकें और छोटे बच्चों की स्पर्श क्षमताओं से जुड़ी पुस्तकें विविध शिक्षार्थियों के लिए पुस्तकों को अधिक सुलभ बनाती हैं।

5.4.6 उपयोग संस्कृति

विद्यालय में सामग्री और पुस्तकों का भंडारण जितना आवश्यक है, उतना ही आवश्यक है इन सामग्रियों के उपयोग में देखभाल और रख-रखाव की संस्कृति पर बल देना। शिक्षकों को इसे अपने शैक्षणिक अभ्यास के हिस्से के रूप में देखना चाहिए और सामग्री का सावधानीपूर्वक उपयोग करना चाहिए। सामान्यत: विद्यालय सामग्री को अलमारी में बंद करने से लेकर सामग्री का लापरवाही से प्रयोग करने तक के बीच फँसे रहते हैं, दोनों ही मामलों में बच्चों के

पास सार्थक रूप से काम करने के लिए कोई सामग्री नहीं रह जाती है। सामग्री का उपयोग करने और साझा करने के दौरान देखभाल और जिम्मेदारी की संस्कृति को इस चरण के लिए एक आवश्यक सीखने के प्रतिफल के रूप में देखा जाना चाहिए। ये आदतें शीघ्र विकसित होती हैं और स्कूली शिक्षा के बाद के चरणों में भी जारी रहती हैं।

पुस्तकालय से पुस्तकें जब उधार ली जाती हैं और घर ले जाई जाती हैं, तो उन्हें नियत तारीख तक और अच्छी स्थिति में वापस कर देना चाहिए। इस उपयोग संस्कृति के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण है, कक्षा में शिक्षण-अधिगम सामग्री (टी.एल.एम.) का वास्तविक और प्रभावी उपयोग।

5.4.7 तकनीकी, डिजिटल और ऑडियो-विजुअल सामग्री

(क) इस स्तर पर तकनीकी का उपयोग कैसे किया जाना चाहिए?

i. **बच्चे के लिए प्रासंगिक विषयवस्तु और सामग्री की विविध रेंज तक उनकी पहुँच सुनिश्चित करना। यह उनकी आयु के उपयुक्त हो और कई भाषाओं में हो।**

ii. **दिव्यांग बच्चों समेत सभी बच्चों की इस सामग्री तक समान रूप से पहुँच और समावेशन सुनिश्चित करने के लिए विविध रूपों, स्थानों और प्रारूपों में विषयवस्तु तक पहुँच सुनिश्चित करना।**

iii. **यह सुनिश्चित करना कि सामग्री का मुख्य उद्देश्य शिक्षार्थी के लिए एक सुखद अनुभव का निर्माण करना और बच्चे की सहज जिज्ञासा और प्रतिनिधित्व को जगाना है।**

iv. **शिक्षकों, माता-पिता और समुदाय की क्षमता के विकास में सहयोग करना।**

(ख) विषयवस्तु, प्रारूप और पहुँच में विविधता

i. बहुरूपात्मक (Multimodal) पहुँच के लिए विषयवस्तु के विविध प्रारूप

(1) ऑडियो— सुनने के कौशल को बढ़ाएगा और भाषा के विकास में सहायता करेगा।

(2) वीडियो— आकर्षक दृश्यों और लिखित भाषांतर (सब टाइटल) के साथ दी गई सामग्री भाषा उपलब्धि को बढ़ाएगी; संकेत भाषा में वीडियो सामग्री व्यापक पहुँच सुनिश्चित करेगी।

(3) सुलभ डिजिटल स्वरूपों में पाठ।

(4) चित्रों के साथ टेक्स्ट (जैसे– चित्र पुस्तकें)

(5) संवादात्मक विषयवस्तु (जैसे– खेल, पहेलियाँ, क्विज़)

(6) संवर्द्धित वास्तविकता या आभासी वास्तविकता आधारित विषयवस्तु, जो बच्चों और वयस्कों को किसी घटना, स्थान या अनुभव का एक आभासी अनुभव दे सकती है, जिसका अनुभव करना मुश्किल है, उदाहरण के लिए मानव शरीर के अंदर, चंद्रमा की सतह पर, सागर के भीतर।

ii. बहुरूपात्मक (Multimodal) पहुँच

(1) रेडियो एवं लाउडस्पीकर

(2) टी.वी. एवं प्रोजेक्टर

(3) इंटरैक्टिव वॉइस रिसपॉन्स (IVR)– संदेश सेवाएँ

(4) स्मार्टफोन (ऑडियो, वीडियो, टेक्स्ट और संवादात्मक)

(5) टैबलेट (ऑडियो, वीडियो, टेक्स्ट और संवादात्मक विषयवस्तु)

(6) कंप्यूटर/लैपटॉप (ऑडियो, वीडियो, टेक्स्ट और संवादात्मक विषयवस्तु)

(7) स्मार्टबोर्ड (ऑडियो, टेक्स्ट, वीडियो और संवादात्मक विषयवस्तु)

(8) सहायक तकनीकियाँ

(ग) तकनीकी आधारित शिक्षण-अधिगम सामग्री के विभिन्न प्रकार क्या हो सकते हैं?

i. **विषयवस्तु संपदा भंडार (रिपॉजिटरी)– विस्तृत और विविध पहुँच को सुनिश्चित करना**

(1) वीडियो विषयवस्तु और दृश्य-श्रव्य (ऑडियो-विजुअल) विषयवस्तु से अलग आयु-उपयुक्त और संबंधित ऑडियो विषयवस्तु शिक्षकों, अभिभावकों और समुदाय के लिए एक उपयोगी सहायता होगी। उन्हें बालवाटिका, आँगनवाड़ियों और स्कूलों तक पहुँचाना चाहिए।

(2) मनोरंजक तरीके से समझाए गए अपरिचित विचार (जैसे– डायनासोर, ग्रह, रेगिस्तान में रहने वाले बच्चों के लिए समुद्र या समुद्र किनारे रहने वाले बच्चों के लिए रेगिस्तान का परिचय) बच्चों में शब्दावली और ज्ञान-पृष्ठभूमि के निर्माण में सहायता करेंगे। ये उनके भविष्य में सीखने के लिए भी अत्यंत उपयोगी सिद्ध होंगे।

(3) परिवार, जानवर, ब्रह्मांड एवं ग्रह, भोजन, प्राकृतिक तत्व जैसे कई अन्य विषयों का पता लगाया जा सकता है।

(4) एक दिन में एक कहानी सुनना या एक साथ एक वीडियो देखना और उसी के बारे में बात करना बच्चों के बीच जीवंत बातचीत करने में सहायक होगा।

(5) यदि शिक्षक या माता-पिता के पास कहानी की किताबों की एक श्रृंखला तक डिजिटल पहुँच होगी, तो वे अपने बच्चों को 'पढ़कर सुनाने' में सक्षम होंगे; विशेषकर उन माता-पिता के लिए जो शिक्षा की भाषा से अपरिचित हैं या पढ़ने में पारंगत नहीं हैं।

(6) डिजिटल पहेलियों और खेलों के अलावा, छाँटने, गिनने या आंतरिक (इनडोर) और बाह्य (आउटडोर) शारीरिक खेलों के लिए 'कैसे खेलें' विषय पर वीडियो का उपयोग, छोटे बच्चों के दिमाग और शरीर के लिए बहुत फ़ायदेमंद होता है।

(7) स्क्रीन पर ज्यादा समय बिताने के जोखिम से बचते हुए बच्चों के बीच उनकी आयु के लिए उपयुक्त डिजिटल साक्षरता विकसित करने में शिक्षक की केंद्रीय भूमिका होती है।

ii. **डिजिटल संरचना और मंचों का लाभ उठाना**

(1) पारिस्थितिकी तंत्र के योगदानों से विषयवस्तु जुटाना– विषयवस्तु निर्माताओं के जीवंत पारिस्थितिकी तंत्र को एन.डी.ई.ए.आर. (NDEAR) (ndear.gov.in) और विद्यादान (vdn.diksha.gov.in) का उपयोग करके बच्चों, शिक्षकों, माता-पिता और समुदाय के लिए विषयवस्तु का निर्माण करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। इन मंचों पर शिक्षकों के

पास विभिन्न प्रारूपों में विषयवस्तु उपलब्ध होती है ताकि वे अपनी कक्षा की आवश्यकताओं के आधार पर डिजिटल सामग्री का विवेकपूर्ण तरीके से उपयोग कर सकें।

(2) पाठ्यचर्या से जुड़ी संदर्भगत विषयवस्तु तक आसान पहुँच के लिए क्यू. आर. कोड का उपयोग करते हुए शिक्षक और विद्यार्थी हेतु सामग्री को 'जीवंत' बनाना। क्यू. आर. कोड का उपयोग यह भी सुनिश्चित करता है कि लिंक की गई सामग्री को किसी भी समय अपडेट या संशोधित किया जा सकता है।

(3) बहुभाषी स्थितियों में तकनीकी, शिक्षकों की सहायता करती है ताकि वे प्रत्येक बच्चे की मातृभाषा में सीखने की उसकी आवश्यकता का ध्यान रख सकें। स्थानीय या क्षेत्रीय भाषाओं में शिक्षण-अधिगम सामग्री के अनुवाद के लिए भाषिनी (https://bhashini.gov.in/en/ और उल्का (ULCA) (https://bhashini.gov.in/ulca) कार्यक्रमों का लाभ उठाया जा सकता है।

iii. बच्चों के लिए डिजिटल इंफोटेनमेंट

(1) इस वास्तविकता को स्वीकार करते हुए कि सभी आयु और पृष्ठभूमि के बच्चे डिजिटल विषयवस्तु के उपभोक्ता और इंटरनेट के उपयोगकर्ता बन गए हैं, मनोरंजन उद्देश्यों के लिए भी जिम्मेदार तरीके से विषय सामग्री का निर्माण आवश्यक है। यह देश-भर में बच्चों की विविध आवश्यकताओं को पूरा करने वाली गुणवत्तापूर्ण सामग्री में निवेश करने और विकसित करने का भी एक अवसर है। गाने, तुकबंदी, पहेलियाँ, कहानियाँ, फिल्में, लघु फिल्में और एनिमेशन सीरीज़ शुरुआती वर्षों में बहुत आवश्यक हैं।

(2) टी.वी. और ओ.टी.टी. शो बच्चों के लिए शैक्षिक और मनोरंजक रहे हैं। विश्व के कई हिस्सों में शुरुआती वर्षों के लिए विशेष चैनलों और कार्यक्रमों के उदाहरण मौजूद हैं। भारत अपने विशाल मनोरंजन और रचनात्मक प्रतिभा के साथ प्रारंभिक वर्षों में बच्चों के विकास के वैज्ञानिक ज्ञान के आधार पर कई भाषाओं में अद्वितीय सामग्रियों का उत्पादन कर सकता है।

(3) रेडियो— सार्वजनिक प्रसारण मीडिया, साथ ही सामुदायिक रेडियो पहल, प्रारंभिक वर्षों के बच्चों के लिए विषय सामग्री वितरित करने में बहुत बड़े स्तर पर सहयोगी बन सकते हैं।

(4) इंटरनेट— बच्चों को उनके मनोरंजन की सामग्री को ढूँढ़ने के दौरान अल्प समय के लिए डिजिटल उपकरण दिए जा सकते हैं। इसके लिए अत्यंत संक्षिप्त सामग्री जैसे कि 90 सेकंड की कहानियाँ तैयार करना बहुत उपयोगी है। इसे सोशल मीडिया पर आसानी से साझा किया जा सकता है।

(5) किसी चित्र पुस्तक से पढ़कर सुनाई जाने वाली कहानी या यहाँ तक कि ऑडियो पुस्तक तक बच्चों की पहुँच बहुत उपयोगी होगी। स्वयं पढ़कर सुनाना बेहद कारगर है लेकिन एक विशेषज्ञ वाचक (नैरेटर) द्वारा पढ़ी गई कहानियों का वीडियो भी उतना ही उपयोगी होगा। बच्चों के प्रारंभिक वर्षों के लिए पुस्तकों और विषय सामग्री के प्रकाशकों के तंत्र को ऐसे विचारों पर विषय सामग्रियों के विकास एवं निर्माण के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

(6) बच्चों को संज्ञानात्मक विकास के लिए उन्हें पढ़ने में मदद करने वाले ऐप, मुफ़्त डिजिटल किताबें, पहेलियाँ और खेल जैसे उपकरण उपयोगी होंगे।

(घ) समावेशी पहुँच के लिए तकनीकी (दिव्यांग)

i. **डिजिटल विषयवस्तु—** सभी डिजिटल विषय सामग्री सुलभ, समावेशी और प्रयोग करने योग्य होनी चाहिए। तकनीकी समाधानों में उपयोगिता पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। सीखने के लिए किसी भी डिजिटल माध्यम का उपयोग करने वाले सभी दिव्यांग बच्चों के लिए भाषा और संख्या ज्ञान कौशल विकसित करने की आवश्यकता महत्वपूर्ण है।

ii. **उपकरणों की सुलभ पहुँच बनाने हेतु प्रारूप तैयार करना—** ऐसे कई शब्दों, जिन्हें बच्चा पढ़ता है एवं पहचानने और पढ़ने लगता है, को शीघ्रता से समझने के लिए, सुलभ प्रारूपों में डिज़ाइन किए गए उपकरण, श्रवण-बाधित बच्चे के पढ़ने के स्तर और उसके संख्या ज्ञान में स्तर का आकलन करने के लिए शिक्षकों हेतु उपकरण डिजिटल रूप से उपलब्ध हैं, जो उनके लिए सहायक हो सकते हैं। सामान्यत: स्क्रीनिंग और आकलन उपकरण विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए डिज़ाइन नहीं किए जाते हैं।

iii. **विषय सामग्री के निर्माण और संग्रहण को प्रोत्साहित करने वाले प्लेटफॉर्म** सभी प्रकार के बच्चों के अनुरूप होने चाहिए। दिव्यांग बच्चों को ध्यान में रखकर डिजिटल रूप से बनाई गई कहानियों, गीतों, कविताओं और नाटकों की भी आवश्यकता है ताकि हाशियाकरण या संलग्नता की कमी का सामना किया जा सके।

iv. दिव्यांग विद्यार्थियों की सीखने की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए **विशेष रूप से ई-सामग्री** ऑडियो, वीडियो, आई.एस.एस. और अन्य डिजिटल प्रारूपों, जैसे– ई.पब, फ्लिप बुक्स, इंटरैक्टिव, डिजिटल रूप से सुलभ सूचना प्रणाली (डेज़ी) आदि पर उपलब्ध होनी चाहिए।

(ङ) प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ई.सी.सी.ई.) में डिजिटल तकनीकी का उपयोग करने में सावधानियाँ

बच्चों के डिजिटल अधिकार— समानता के लिए आवश्यक है कि प्रत्येक बच्चे को तकनीकी की भागीदारी और उपयोग का अधिकार हो और उस तक उसकी पहुँच हो। सुरक्षा और भागीदारी के बीच एक संतुलित दृष्टिकोण सुनिश्चित किया जाना चाहिए। बच्चों को सूचना, स्वतंत्रता और गोपनीयता का अधिकार है और दुर्व्यवहार व नुकसान से सुरक्षा का अधिकार है। बिना किसी भेदभाव के उनकी डिजिटल परिवेश तक पहुँच बनाने में सक्षम होने के साथ ही उनकी गोपनीयता, सुरक्षा और दुर्व्यव्हार से सुरक्षा सुनिश्चित की जानी चाहिए। बाल अधिकारों पर संयुक्त राष्ट्र आयोग ने 2021 में बच्चों के डिजिटल अधिकारों पर सामान्य टिप्पणी 25 को स्वीकार किया और निम्नलिखित दिशानिर्देश जारी किए। बाल अधिकारों के चार सिद्धांत हैं—

i. **भेदभाव रहित—** बच्चों को भेदभाव से बचाया जाना चाहिए और उनके साथ उचित व्यवहार किया जाना चाहिए, चाहे वे कोई भी हों।

ii. **उत्तरजीविता और विकास—** बच्चे हानिकारक हस्तक्षेप के बिना बड़े होकर जैसा भी बनना चाहते हैं, उसके लिए उनका समर्थन किया जाना चाहिए। इस संदर्भ में, बच्चों की निजता और उनकी जानकारियों की गोपनीयता को संभालकर रखना चाहिए।

iii. **बच्चे का सर्वोत्तम हित—** कोई भी निर्णय लेते समय वयस्कों (सरकारों और व्यवसायों सहित सभी) को वही करना चाहिए, जो बच्चों के लिए सबसे अच्छा हो, न कि उनके स्वयं के लिए।

iv. **बच्चों के विचारों का सम्मान**— बच्चों के भी विचार होते हैं। उनके विचारों को उन सभी चीज़ों के संबंध में ध्यान में रखा जाना चाहिए, जिनकी उन्हें परवाह है।

(च) यूनिसेफ द्वारा अनुशंसित और राष्ट्रीय डिजिटल शिक्षा ढाँचे (एन.डी.ई.ए.आर.) द्वारा स्वीकृत—

"एक डिजिटल दुनिया में, जहाँ उनके कार्य और बातचीत उन्हें वयस्क अवस्था में प्रभावित कर सकते हैं, बच्चों की रक्षा करने का कर्तव्य सरकारों, निजी संगठनों और नागरिक समाज का है।

i. बच्चों को निजता और अपनी व्यक्तिगत सूचनाओं की सुरक्षा का अधिकार है।

ii. बच्चों को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और विविध स्रोतों से जानकारी प्राप्त करने का अधिकार है।

iii. बच्चों को अपनी प्रतिष्ठा बनाए रखने का अधिकार है।

iv. बच्चों की निजता और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को उनकी विकसित होती क्षमताओं के अनुसार संरक्षित और सम्मानित किया जाना चाहिए।

v. बच्चों को निजता और स्वतंत्र अभिव्यक्ति के अपने अधिकारों के उल्लंघन एवं दुर्व्यवहार और अपनी प्रतिष्ठा पर हमलों के लिए उपचार प्राप्त करने का अधिकार है।"

(छ) अन्य चिंताएँ

बच्चों द्वारा डिजिटल तकनीक का उपयोग करने में लगने वाले समय और उनकी शारीरिक गतिविधि और मानसिक स्वास्थ्य पर इसके प्रभाव के बारे में कई चिंताएँ भी उठाई गई हैं। साक्ष्य बताते हैं कि डिजिटल तकनीक का धीमा और नियंत्रित उपयोग बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य के लिए लाभकारी हो सकता है, जबकि अत्यधिक उपयोग हानिकारक हो सकता है।

भारतीय डाटा संरक्षण बिल और बाल संरक्षण संबंधी कानून के सिद्धांतों को डिजिटल संदर्भों में भी लागू किया जाना चाहिए। बच्चों को ट्रैकिंग, ट्रेसिंग और शैक्षिक दृष्टि स्तरीकरण और भेदभाव की भावना से सुरक्षा मिलनी चाहिए।

खंड 5.5
पुस्तकें और पाठ्यपुस्तकें

बुनियादी स्तर पर बच्चों को विषयवस्तु के विभिन्न रूपों (जैसे– चित्र पुस्तकें, कहानी पुस्तकें, सरल से जटिल होती पुस्तकें और कार्यपत्रकों) के साथ जुड़ने की आवश्यकता है। हालाँकि, वर्तमान धरातलीय वास्तविकता को देखते हुए, कक्षा 1 और 2 के शिक्षक पाठ्यपुस्तकों के उपयोग के विचार से अधिक परिचित हैं। पाठ्यपुस्तकें कक्षा 1 और 2 के लिए विकसित की जा सकती हैं, लेकिन इस राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.) के शिक्षणशास्त्रीय विचारों के अनुसार, उन्हें अपनी कल्पना और उपयोग में पूरी तरह से अलग होना चाहिए। यह खंड बुनियादी स्तर के लिए उपयुक्त पाठ्यपुस्तकों सहित सभी प्रकार की पुस्तकों के विकास और उपयोग का वर्णन करता है।

5.5.1 बच्चों की पुस्तकें

पिछले खंड में बुनियादी स्तर पर कक्षा-कक्ष के परिवेश के लिए आवश्यक खिलौनों और अन्य जोड़-तोड़ के लिए ठोस सामग्री की प्रासंगिकता के बारे में बात की गई थी। बच्चों को विभिन्न प्रकार की पुस्तकों और अन्य पठन सामग्री तक पहुँच प्रदान करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। मानव विरासत की संपदा किताबों में कैद है और छोटे बच्चों को इस दुनिया में प्रवेश करने के लिए प्रोत्साहित करना स्कूली शिक्षा का एक महत्वपूर्ण कार्य है। जैसा कि खंड 4.5 में उल्लेख किया गया है, अच्छी गुणवत्ता युक्त बाल साहित्य बच्चे की भाषा और साक्षरता के विकास में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

3 साल के बच्चों सहित सभी बच्चों के लिए उपयुक्त विभिन्न प्रकार की पुस्तकें स्कूलों को उपलब्ध कराई जानी चाहिए। बड़ी चित्र पुस्तकें, रंग-बिरंगे ग्रेड वाले रीडर, दिलचस्प कहानियों और कविताओं वाली किताबें, ये सभी बच्चों के पढ़ने के लिए एक रोमांचक और आकर्षक अनुभव प्रदान करेंगे। हमारे देश में कहानियों, लोककथाओं और किंवदंतियों की एक समृद्ध विरासत है, जो एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में भिन्न होती है। इन कहानियों का सभी भाषाओं में अनुवाद करने की आवश्यकता है और इन स्रोतों से अच्छे बाल साहित्य का निर्माण किया जा सकता है और उसे सभी के लिए उपलब्ध कराया जा सकता है। कई भाषाओं में दक्षताओं को बढ़ावा देने के लिए अच्छी तरह से डिज़ाइन की गई द्विभाषी पुस्तकों का उपयोग किया जा सकता है। द्विभाषी विषयवस्तुएँ कुछ संदर्भों में उपयोगी रही हैं जब शिक्षकों में उन्हें प्रभावी ढंग से उपयोग करने की क्षमता होती है। विद्यालयों में विभिन्न प्रकार की पुस्तकें उपलब्ध कराकर बाल मन में साहित्य बोध और इसमें रुचि को प्रोत्साहित किया जा सकता है।

5.5.2 6–8 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए पाठ्यपुस्तकों का महत्व

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने पाठ्यपुस्तकों के संबंध में विशेष अनुशंसा की है। एन.ई.पी. 2020 (4.31) में कहा गया है कि "विषय सामग्री में कमी और स्कूली पाठ्यचर्या के लचीलेपन में वृद्धि और रटने की बजाय

रचनात्मकता पर नए सिरे से ज़ोर देना चाहिए। यह स्कूली पाठ्यपुस्तकों में समानांतर परिवर्तनों के साथ होना चाहिए। सभी पाठ्यपुस्तकों का उद्देश्य, राष्ट्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण समझी जाने वाली आवश्यक मूल सामग्री (चर्चा, विश्लेषण, उदाहरण और अनुप्रयोगों) के साथ-ही-साथ स्थानीय संदर्भों और आवश्यकताओं के अनुसार किसी भी वांछित बारीकियों और पूरक सामग्री को शामिल करना होगा। जहाँ संभव हो, स्कूलों और शिक्षकों के पास राष्ट्रीय और स्थानीय सामग्री वाली पाठ्यपुस्तकों के एक समूह में से पाठ्यपुस्तकें चुनने के विकल्प होंगे, ताकि वे अपने विद्यार्थियों और समुदायों की आवश्यकताओं के अनुसार अपनी शैक्षणिक शैली के लिए सबसे उपयुक्त पाठ्यपुस्तकों का चुनाव कर सकें।"

बुनियादी स्तर के लिए पाठ्यपुस्तकों की भूमिका बहुत स्पष्ट होनी चाहिए—

(क) बुनियादी स्तर के पहले तीन वर्षों में, 3 से 6 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए कोई निर्धारित पाठ्यपुस्तक नहीं होनी चाहिए। सीखने का माहौल, शिक्षण-अधिगम सामग्री (टी.एल.एम.) और जहाँ उपयुक्त हो, पाठ्यचर्या के उद्देश्यों और शैक्षणिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सरल कार्यपत्रक ही पर्याप्त हैं।

इस आयु वर्ग के बच्चों पर पाठ्यपुस्तकों का बोझ नहीं डाला जाना चाहिए। जहाँ 3 से 6 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए पाठ्यपुस्तकें अनुपयुक्त हो सकती हैं, वहीं गतिविधि पुस्तकें शिक्षकों का मार्गदर्शन कर सकती हैं। पाठ्यचर्या बनाने वाले इस आयु वर्ग के लिए कक्षा के अनुभवों की योजना बनाने और व्यवस्थित करने हेतु शिक्षकों के लिए हस्तपुस्तिका के साथ गतिविधि पुस्तकों को तैयार करना चाहिए।

(ख) प्रारंभिक चरण के अंतिम दो वर्षों में 6 से 8 वर्ष की आयु के लिए सरल और आकर्षक पाठ्यपुस्तकों पर विचार किया जा सकता है। **इस चरण के लिए पाठ्यपुस्तकों में न केवल कक्षा-कक्षीय शिक्षण के लिए विषयवस्तु होनी चाहिए बल्कि बच्चों को स्वयं काम करने के अवसर देने के लिए और उनके काम के रिकॉर्ड के रूप में भी कार्यपुस्तिका होनी चाहिए।**

(ग) **यह सुनिश्चित करने के लिए अत्यधिक सावधानी बरतने की आवश्यकता है, विशेष रूप से भाषा और साक्षरता विकास के लिए कि कक्षा में विषयवस्तु और गतिविधियाँ केवल जो पाठ्यपुस्तक में हैं, उस तक ही सीमित न रहें।** अच्छे बाल साहित्य सहित विषयवस्तु के विभिन्न स्रोतों को कक्षा में लाने की आवश्यकता है। जहाँ आवश्यक और उपयुक्त हो, शिक्षकों को पाठ्यपुस्तकों के साथ कार्यपत्र का उपयोग करना चाहिए।

(घ) पाठ्यपुस्तकों को उपयुक्त क्यू.आर. कोड के माध्यम से डिजिटल और ऑडियो-विजुअल सामग्री संदर्भों के साथ उचित रूप से संवर्द्धित किया जा सकता है।

गुणवत्तायुक्त डिज़ाइन की गई पाठ्यपुस्तकें शिक्षक को कक्षा-कक्षीय प्रक्रियाओं— मुख्य विषयवस्तु, शिक्षण-विधि और आकलन के मामले में दिशा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। आगे की खोज के क्षेत्रों को पाठ्यपुस्तकों में भी दर्शाया जा सकता है। शिक्षकों को उनकी पसंद की सामग्री का उपयोग करने के अवसर दिए जाने चाहिए और पाठ्यपुस्तक में भी इसे इंगित किया जा सकता है। ऐसी पाठ्यपुस्तकें क्रमिक, सुसंगत और सार्थक सीखने के अनुभवों को व्यवस्थित करने के लिए एक तैयार संसाधन होती हैं और अपेक्षित सीखने के प्रतिफलों को लक्षित करने में सहायक होती हैं। पाठ्यपुस्तकें अक्सर ऐसी किताबें होती हैं, जिनसे कई बच्चे जुड़ते हैं। अपने आस-पास के परिवेश से परे की दुनिया के बारे में उनकी समझ पाठ्यपुस्तकों के दृष्टांतों के माध्यम से निर्मित होती है, गतिविधियाँ और आकलन उन्हें उनकी अपेक्षाओं से परिचित कराते हैं और पाठ्यपुस्तक की भाषा और सामग्री उन्हें प्रेरित करती है।

शिक्षक के काम और बच्चों के सीखने की प्राथमिकता को देखते हुए, पाठ्यपुस्तकें सामान्यत: कक्षाओं में बदलाव लाने का साधन होती हैं। यह बात और भी अधिक संगत हो जाती है, जब हम मानते हैं कि पाठ्यपुस्तकों के महत्वपूर्ण माध्यम से शिक्षा के लक्ष्य, पाठ्यचर्या के उद्देश्यों, दक्षताओं, सीखने के प्रतिफलों, शिक्षणशास्त्र से संबंधित सिद्धांतों, विषयवस्तु, जैसा कि इस एन.सी.एफ. में व्यक्त किया गया है, को कक्षा-कक्षीय प्रक्रियाओं में लागू किया जाता है।

दक्षताओं पर ध्यान केंद्रित करने के साथ, पाठ्यपुस्तकों को विशिष्ट दक्षताओं की उपलब्धि को सुनिश्चित करने की दिशा में विषयवस्तु की सुसंगत मैपिंग को भी प्रतिबिंबित करना चाहिए।

5.5.3 पाठ्यपुस्तक डिज़ाइन के सिद्धांत

पाठ्यपुस्तक के डिज़ाइन के लिए निम्नलिखित सिद्धांत उपयोगी और मार्गदर्शक हैं[12]—

(क) **पाठ्यचर्या सिद्धांत**– पाठ्यपुस्तक को विशेष रूप से बुनियादी स्तर के लिए बताई गई दक्षताओं को प्राप्त करने के लिए डिज़ाइन किया जाना चाहिए। पाठ्यपुस्तक बनाने वालों और डिज़ाइनरों को न केवल उस विशेष आयाम या विषय क्षेत्र की दक्षताओं के बारे में पता होना चाहिए जिसके लिए पाठ्यपुस्तक विकसित की जा रही है, बल्कि पूरे चरण की दक्षताओं के बारे में भी पता होना चाहिए। यह उन्हें बुनियादी स्तर में विभिन्न आयामों के बीच क्षैतिज संबंध बनाने में मददगार होगा।

(ख) **अनुशासन या विषय सिद्धांत**– पाठ्यपुस्तक निर्माताओं को प्रायोगिक भाषाविज्ञान और गणित का अच्छा ज्ञान होना चाहिए। पाठ्यपुस्तक में शामिल विषयवस्तु और अनुक्रम को इन विषयों के कुछ मूल सिद्धांतों का खंडन न करने के प्रति सावधानी रखनी होगी।

(ग) **शिक्षणशास्त्र सिद्धांत**– पाठ्यपुस्तक निर्माताओं को दक्षता और विषयवस्तु के लिए उपयुक्त शिक्षणशास्त्र की स्पष्ट समझ होनी चाहिए (उदाहरण के लिए, भाषा में मौखिक भाषा, फोनिक्स और शब्द समाधान निर्देश तथा अर्थ निर्माण के संतुलित दृष्टिकोण को एक साथ शामिल करने की आवश्यकता है)।

(घ) **तकनीकी सिद्धांत**– पाठ्यपुस्तक निर्माताओं को बच्चों के सीखने के अनुभव को बढ़ाने के लिए उपलब्ध वर्तमान तकनीकी और ऑडियो-विजुअल सामग्री के बारे में पता होना चाहिए। ऐसी गतिविधियाँ, जिनमें

चित्र 5.5 क– स्रोत— कक्षा 2 के लिए सिक्किम की ई.वी.एस. पाठ्यपुस्तक

डिजिटल तकनीकी और बाह्य सामग्री के संदर्भ शामिल हैं, को पाठ्यपुस्तक में उचित रूप से शामिल किया जाना चाहिए।

(ङ) **संदर्भ सिद्धांत–** पाठ्यपुस्तक में विषयवस्तु के चयन के लिए बच्चे का स्थानीय संदर्भ और परिवेश एक बहुत ही महत्वपूर्ण विचार होना चाहिए। परिचित से अपरिचित की ओर बढ़ना, सीखने का एक महत्वपूर्ण पहलू है और पाठ्यपुस्तक में दोनों तरह के संदर्भों का संतुलन होना चाहिए। परिचित संदर्भ बच्चों के लिए सुखद होते हैं और अपरिचित संदर्भों को उनके विचारों और प्राथमिकताओं के लिए जिज्ञासा व चुनौती पैदा करनी चाहिए।

(च) **प्रस्तुति सिद्धांत–** पाठ्यपुस्तकों को आकर्षक होना चाहिए और उन्हें छोटे बच्चों का ध्यान आकर्षित करना चाहिए। बुनियादी स्तर के लिए, दृश्य सामग्री और विषयवस्तु के बीच संतुलन को दृश्य सामग्री की ओर झुकाया जाना चाहिए। रंग-योजना (कलर स्कीम) और डिज़ाइन आकर्षक और सुसंगत होनी चाहिए। छोटे बच्चे समझ सकें, इसलिए विषयवस्तु सामग्री के फॉन्ट और आकार दोनों देखने में स्पष्ट और न्यूनतम भ्रम पैदा करने वाले होने चाहिए।

(छ) **विविधता और समावेशन–** भारतीय संदर्भ में, पाठ्यपुस्तकों के लिए विषयवस्तु के चुनाव में एक महत्वपूर्ण सिद्धांत के रूप में विविधता और समावेशन को बनाए रखना महत्वपूर्ण है। यहाँ तक कि राज्यों के भीतर भी क्षेत्रीय भिन्नताएँ हैं और पाठ्यपुस्तकों में इनका पर्याप्त प्रतिनिधित्व होने की आवश्यकता है। जेंडर और सामुदायिक प्रतिनिधित्व (उदाहरण के लिए, कहानियों, पात्रों, चित्रों के उपयोग के माध्यम से) का संतुलन सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

5.5.4 पाठ्यपुस्तक विकास की प्रक्रिया

पाठ्यपुस्तक विकास के सिद्धांतों को लागू करने की प्रक्रिया निम्नलिखित हो सकती है—

(क) **पाठ्यक्रम दस्तावेज़ का निर्माण**– पाठ्यचर्या के मार्गदर्शक सिद्धांतों को अमल में लाते हुए दक्षताओं, सीखने के प्रतिफलों, किसी विषय की प्रकृति, शिक्षणशास्त्र और आकलन, विषय को पढ़ाने के उद्देश्य, शामिल की जाने वाली विषयवस्तु के लिए दृष्टिकोण (अवधारणा या विषय), पाठ्यक्रम दस्तावेज़ की संरचना (प्रश्नों, प्रमुख अवधारणाओं, सुझाई गई रणनीतियों या गतिविधियों के रूप में), विषयवस्तु का चयन जो संज्ञानात्मक, सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक हो, आदि पाठ्यक्रम दस्तावेज़ में शामिल हो सकते हैं। पाठ्यक्रम दस्तावेज़ विषयवस्तु की सीमा और गहराई तय करने के लिए शोध अध्ययनों, नीतिगत दस्तावेज़ों, शिक्षक के अनुभवों, विषय-विशेषज्ञ की रायों आदि का उपयोग कर सकता है।

(ख) **पाठ्यपुस्तक लेखकों, समीक्षकों और डिज़ाइनरों या चित्रकारों का पैनल**– पाठ्यपुस्तक के विकास में निम्नलिखित लोग शामिल हो सकते हैं—

i. **पाठ्यपुस्तक लेखक और समीक्षक**– शिक्षकों को इस समूह का हिस्सा अवश्य होना चाहिए। उनके अलावा विषय विशेषज्ञ, विश्वविद्यालयों के अध्यापक व शोधार्थी भी शामिल हो सकते हैं।

ii. **डिज़ाइनर या चित्रकार**– ऐसे लोग या संगठन, जिनके पास स्थानीय संदर्भ और डिज़ाइन दोनों की समझ हो, मुख्य रूप से स्थानीय विशेषज्ञों को प्रक्रिया की शुरुआत से शामिल किया जाना चाहिए।

iii. **तकनीकी विशेषज्ञ**– डिजिटल मीडिया के माध्यम से पाठ्यपुस्तक के पूरक के रूप में बहुत सारी विषयवस्तु उपलब्ध कराई जा सकती है। तकनीकी विशेषज्ञ के लिए शुरू से ही पाठ्यपुस्तक निर्माण टीम का हिस्सा होना महत्वपूर्ण है। मीडिया विषयवस्तु पर बाद में विचार नहीं किया जाना चाहिए।

प्रक्रिया की एक सामान्य समझ बनाने के लिए समूह को शुरुआत से एक साथ काम करना चाहिए और प्रतिक्रियाओं, सुझावों और कई पुनरावृत्तियों के लिए पाठ्यपुस्तक को खुला होना चाहिए।

(ग) **विषयवस्तु, शिक्षणशास्त्र और आकलन का चुनाव**– चुने गए विषय में शिक्षार्थी के संदर्भ (पिछले अनुभवों, भाषा सहित) और आगे के अन्वेषण के लिए गुंजाइश को शामिल करने की आवश्यकता होगी। उदाहरण के लिए, कुमाऊँ में इस लोकप्रिय लोरी का उपयोग कक्षाओं में बातचीत शुरू करने के लिए किया जा सकता है।

घुघुती बसूति क्या खान्दि दुध भाती? के उन्दा कांसै थकुली! कू देली ब्वे मेरी!	*कहे कबूतर गुटर-गूँ क्या खाओगे? दूध और चावल? काँसे की थाली में! कौन देगा? माँ मेरी!*

प्रत्येक कक्षा की विषयवस्तु अगली कक्षा के लिए अग्रगामी होनी चाहिए। विषयवस्तु और सीखने के प्रतिफलों के साथ शिक्षणशास्त्र और आकलन के संरेखण को सुनिश्चित करना आवश्यक है।

(घ) **पाठ्यपुस्तक की संरचना और प्रयुक्त भाषा**– यह देखते हुए कि पाठ्यपुस्तक शिक्षक और बच्चे के बीच जुड़ाव का एक महत्वपूर्ण बिंदु है, इसे दोनों के लिए उपयोगी होना चाहिए। विषयवस्तु के अलावा, पाठ्यपुस्तक में शिक्षकों और अभिभावकों के लिए एक नोट शामिल हो सकता है। यह नोट शिक्षक को सुझाए गए शिक्षणशास्त्र की ओर बढ़ने में सहायक होगा। साथ ही पाठ्यपुस्तक में शिक्षक नोट्स भी होने चाहिए जिनमें पाठ्यपुस्तक के हर अध्याय का संक्षिप्त वर्णन हो, शिक्षणशास्त्रीय तरीके हों और विशिष्ट उदाहरणों के साथ आकलन के अवसर दिए गए हों।

(ङ) **प्रस्तुति और डिज़ाइन**– पाठ्यपुस्तक की प्रस्तुति फॉण्ट आकार, छवियों, रेखाचित्रों, उपयोग किए गए रंगों और इन तीनों के सही संतुलन पर निर्भर करती है। उदाहरण के लिए, प्रारंभिक कक्षा में मूल विषयवस्तु सीमित और बड़ी संख्या में छवियाँ हो सकती हैं। फॉण्ट का आकार बड़ा होना चाहिए और उपयोग किए गए चित्र संवेदनशील व समावेशी होने चाहिए। उपयोग की जाने वाली भाषा कक्षा के लिए उपयुक्त और विषय के लिए प्रासंगिक होनी चाहिए।

(च) **लेखन, समीक्षा और प्रायोगिक संचालन**– पाठ्यपुस्तक के लेखन के लिए पर्याप्त समय, नियमित सहकर्मी समीक्षा और पैनल समीक्षा की आवश्यकता होती है। जिस विषयवस्तु पर काम किया जा रहा है, उसकी आवश्यकता को परिभाषित करने और दोहराने के लिए चित्रकारों के साथ नियमित बैठकें आवश्यक हैं। यह पाठ्यपुस्तक निर्माण के प्रयासों की गहनता को बढ़ाता है और सभी विषयों में विषय सामग्री, छवियों, विचारों की पुनरावृत्ति से बचने में सहायता करता है क्योंकि चित्रकार सभी लेखकों के साथ काम करते हैं। समीक्षा को रचनात्मक और उत्साहजनक होने की आवश्यकता होगी। फीडबैक में सुझाव और वैकल्पिक विचार शामिल होने चाहिए। लेखकों को कई पुनरावृत्तियों के लिए तैयार रहना चाहिए और विषयवस्तु लेखन के सिद्धांतों से परिचित होना चाहिए। समीक्षा प्रक्रिया को अध्यायवार और फिर समग्र रूप से पाठ्यपुस्तक के लिए पूर्ण किया जाना चाहिए। पाठ्यपुस्तक की सावधानीपूर्वक प्रूफ़ रीडिंग आवश्यक है, यह उसकी गुणवत्ता में योगदान देता है। पाठ्यपुस्तकों के प्रायोगिक संचालन के लिए चयनित स्कूलों की पहचान की जानी चाहिए। पाठ्यपुस्तकों के प्रायोगिक संचालन के दौरान, लेखकों को स्कूलों का दौरा करना चाहिए और कक्षा के अवलोकन, शिक्षकों, बच्चों, अभिभावकों के साथ बातचीत और पाठ्यपुस्तक के बारे में प्रतिक्रिया प्राप्त करनी चाहिए।

(छ) **पाठ्यपुस्तकों पर शिक्षकों का उन्मुखीकरण**– पाठ्यपुस्तक की उत्पत्ति, उसके तर्क, शिक्षणशास्त्र और आकलन के दृष्टिकोण, कक्षा में इसके उचित उपयोग को सुनिश्चित करने के लिए इसके बारे में शिक्षकों का उन्मुखीकरण करने का प्रावधान होना चाहिए। पाठ्यपुस्तकों के उपयोग में आने वाली चुनौतियों को समझने के लिए स्कूल के दौरों, वेबिनार, अच्छे अभ्यासों को साझा करने और शिक्षकों के साथ नियमित बातचीत के माध्यम से इस उन्मुखीकरण को किया जाना चाहिए।

5.5.5 पाठ्यपुस्तकें और आकलन

पाठ्यपुस्तक में शिक्षकों को शिक्षण-अधिगम के साथ आकलन को एकीकृत करने के ठोस तरीके होने चाहिए। कुछ संभावित विचार, जो पाठ्यपुस्तक में ऐसी आकलन प्रक्रियाओं का मार्गदर्शन कर सकते हैं, नीचे सूचीबद्ध हैं—

(क) पाठ्यपुस्तक में स्पष्ट रूप से उन दक्षताओं और सीखने के प्रतिफलों का उल्लेख होना चाहिए, जो पूरी पुस्तक और संबंधित अध्यायों से प्राप्त किए जाने हैं। यदि आवश्यक हो, तो इन प्रतिफलों को सरल बनाया जा सकता है और शिक्षकों व अभिभावकों के लिए पढ़ने में आसान तरीके से प्रस्तुत किया जा सकता है।

(ख) शिक्षक को सीखने का आकलन करने के लिए पाठ्यपुस्तक में कई अवसर प्रदान किए जा सकते हैं। ये प्रश्नों और आकलन कार्यों के रूप में हो सकते हैं।

(ग) संपूर्ण पाठ्यपुस्तक में आकलन अभ्यासों को शामिल किया जा सकता है। पाठ्यपुस्तकों में इन अभ्यासों के संचालन के लिए दिशानिर्देश और सुझाए गए आकलन उपकरण और रूब्रिक दिए जा सकते हैं।

(घ) समय पर, विश्वसनीय और व्यक्तिगत फीडबैक देना प्रभावी आकलन का एक प्रमुख घटक है। पाठ्यपुस्तक के भीतर, शिक्षकों को विशिष्ट आकलन कार्यों पर फीडबैक देने के लिए संकेत दिए जा सकते हैं।

(ङ) कार्यपत्रक और गतिविधि पत्रक में सरल अभ्यास होने चाहिए, जिन्हें बच्चे स्वतंत्र रूप से कर सकें। आमतौर पर आकर्षक दृश्यों के साथ न केवल आकलन में, बल्कि सीखने में भी विशेष सहायता मिलती है।

5.5.6 पाठ्यपुस्तकों के सार्थक उपयोग के लिए शिक्षक सहायता

पाठ्यपुस्तक में शिक्षक के लिए शिक्षण-अधिगम के व्यापक दृष्टिकोण को इंगित करने के साथ-साथ पाठ्यपुस्तक का सर्वोत्तम उपयोग करने के लिए दिशानिर्देश शामिल होने चाहिए। यह इंगित करना चाहिए कि पाठ्यपुस्तक में सुझाई गई सामग्री या गतिविधियों के सेट के उपयोग के परिणामस्वरूप प्रत्येक अध्याय या इकाई या पाठ के लिए किन दक्षताओं और सीखने के प्रतिफलों को प्राप्त करना है।

पाठ्यपुस्तक में सीखने के कार्यों, गतिविधियों, परियोजनाओं, क्षेत्र यात्राओं, सरल प्रयोगों के साथ-साथ आकलन जैसी प्रक्रियाओं पर शिक्षकों के लिए दिशानिर्देश भी प्रदान करने चाहिए। इसमें तालिकाएँ, आँकड़े, फ्लोचार्ट, कार्टून व चित्र शामिल होने चाहिए जो सीखने के प्रतिफलों को प्राप्त करने में सहयोग करें। साथ ही शिक्षक को उन मिलती-जुलती सामग्रियों के बारे में बताएँ जिन्हें स्थानीय रूप से प्राप्त किया जा सकता है। शिक्षक को विषयवस्तु या गतिविधि के औचित्य की व्याख्या करने वाले और सुझावों के नोट्स, पाठ्यपुस्तक में रणनीतिक बिंदुओं के लिए समर्पित पृष्ठ व व्यावहारिक सुझाव देने वाले पृष्ठ, जो शिक्षक के कक्षा अध्यापन के दायरे के अलावा भी हो सकते हैं, कुछ ऐसे उपकरण हैं जिनका उपयोग पाठ्यपुस्तक में किया जा सकता है।

यदि व्यावहारिक हो, तो पाठ्यपुस्तक के सहयोगी के रूप में एक शिक्षक मैनुअल भी बनाया जा सकता है। इसे पाठ्यपुस्तक के दृष्टिकोण और विषयवस्तु, दोनों के अनुरूप होना चाहिए। यद्यपि शिक्षक मैनुअल मुख्य रूप से शिक्षक के लिए है लेकिन इसके उपयोग से बच्चों को भी लाभ होगा। उदाहरण के लिए, शिक्षक मैनुअल में कक्षा में विविधता को समायोजित करने, राज्य स्तर पर चुनी गई सामग्री को प्रासंगिक बनाने और अन्य विषयों के साथ जुड़ाव पर सुझाव शामिल हो सकते हैं। यह बच्चों की विकासात्मक आवश्यकताओं की व्याख्या कर सकता है। यह बता सकता है कि किसी विशेष विषय में सीखना कैसे होता है। यह सब शिक्षक को इनके अनुरूप शिक्षण और आकलन करने में मदद करेगा।

खंड 5.6
सीखने का परिवेश

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.) में उल्लिखित दक्षताओं को प्राप्त करने के लिए हर बच्चे की भागीदारी का समर्थन करने वाला एक समावेशी, स्वागत करने वाला, रंगीन और आनंदमय परिवेश बहुत महत्वपूर्ण है।

(क) आंतरिक परिवेश में अच्छी रोशनी होनी चाहिए और उसे अच्छी तरह हवादार होना चाहिए।

(ख) यहाँ बच्चों को सुरक्षित और आमंत्रित महसूस करना चाहिए।

(ग) इसे समावेशी बनाने की आवश्यकता है।

(घ) इसमें बच्चे के लिए परिचित और नए, दोनों तरह के अनुभवों का संतुलन होना चाहिए।

(ङ) इसमें ऐसी सामग्री का संतुलन होना चाहिए, जो विकास के विभिन्न क्षेत्रों को प्रोत्साहित करे।

(च) इसे व्यक्तिगत कार्य और सहकारी कार्य, दोनों के लिए अनुमति देनी चाहिए।

(छ) इसमें बच्चों के काम का प्रदर्शन शामिल होना चाहिए और बच्चों की कार्य-प्रगति को संरक्षित करने की अनुमति भी देनी चाहिए।

5.6.1 आंतरिक परिवेश को व्यवस्थित करना

उपर्युक्त सिद्धांतों के आधार पर कक्षा-कक्ष को व्यवस्थित करने का एक तरीका अगले पृष्ठ पर दिखाया गया है। यह व्यवस्था ई.सी.सी.ई. के कुछ मूलभूत सिद्धांतों का उपयोग करके बनाई गई है। शिक्षकों को कक्षा-कक्ष के आयामों और आकार, स्थानीय परिस्थितियों और उपलब्ध सामग्री के आधार पर अपने कक्षा के परिवेश को व्यवस्थित करने की स्वायत्तता है। चित्र में फर्श और दीवार, दोनों को दिखाया गया है और विभिन्न स्थानों और उनके उपयोगों को क्रमांकित करके नीचे उनका विवरण दिया गया है—

(क) **रनिंग ब्लैकबोर्ड**– रनिंग ब्लैकबोर्ड को कक्षा की तीन दीवारों के निचले भाग पर, दीवार के नीचे से आधा फुट जगह छोड़ने के बाद बनाया जा सकता है क्योंकि बच्चे उस स्थान पर लिख नहीं सकते हैं। प्रत्येक बच्चे को ब्लैकबोर्ड पर कम-से-कम 3 फीट की जगह चाहिए। कला के साथ-साथ साक्षरता और संख्या ज्ञान की गतिविधियों में बच्चों को स्वयं को अभिव्यक्त करने के लिए रनिंग ब्लैकबोर्ड का उपयोग कई तरीकों से किया जा सकता है। इस व्यवस्था का लाभ यह है कि बच्चों का काम शिक्षक और अन्य बच्चों को तुरंत दिखाई देता है।

(ख) **वृत्त**– बच्चों के लिए घेरा समय में बैठने के लिए फ़र्श पर सकेंद्रित वृत्तों का एक सेट बनाना अच्छा होगा। बच्चों के लिए फ़र्श की जगह को साफ़ और व्यवस्थित रखना बहुत महत्वपूर्ण है।

(ग) **कोनों की स्थापना**– कक्षा के अंदर के कोनों की योजना बनाई जा सकती है। यह स्थान एक समय में लगभग चार बच्चों को समायोजित कर सकता है। कोनों को गत्ते के बक्से या कम ऊँचाई वाली अलमारियों द्वारा सीमांकित किया जा सकता है और उनके भीतर उपयुक्त सामग्री रखी जा सकती है। यह कोने विभिन्न प्रकार के हो सकते हैं। उदाहरण के लिए—

i. **नाटक का कोना**— इस कोने को दो तरफ़ से पारदर्शी पर्दों से ढँका जा सकता है। कोने में मुखौटों और कठपुतलियों के साथ-साथ विभिन्न प्रकार की सामग्रियों के सेट रखे जा सकते हैं। इन सामग्रियों को कम लागत और स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्री से इकट्‌ठा या तैयार किया जा सकता है। इस कोने में बच्चों को बिना किसी हिचकिचाहट के खेलने का मौका मिलता है और वे वयस्कों को जो करते हुए देखते हैं, उसका अनुकरण करते हैं।

ii. **ब्लॉक या पहेली और गणित का कोना**— इस कोने में ब्लॉक्स, पहेलियाँ, मोतियाँ, पेगबोर्ड, मिलान करने, वर्गीकरण की सामग्री आदि की व्यवस्था कर सकते हैं। इन सामग्रियों को समय-समय पर बदलना भी होगा। संवेदी विकास के साथ-साथ संख्या ज्ञान के लिए ऐसी सामग्री का उपयोग करते हुए गतिविधियाँ बहुत प्रभावी होती हैं। बच्चे अपनी कल्पना और मौखिक अभिव्यक्तियों को विकसित करने के लिए मॉडल बनाने और इन मॉडलों के बारे में बात करने के लिए ब्लॉक और अन्य सामग्रियों का भी उपयोग कर सकते हैं।

iii. **कला का कोना**— इस कोने में कागज़, क्रेयॉन, पेंसिल, रंग, ब्रश, पत्ते और डंडे हो सकते हैं। यह कोना बच्चों को मुक्त ड्राइंग तथा अपने विचार और भावनाओं को व्यक्त करने का अवसर देगा। कपड़ा,

धागा, ओरिगेमी पेपर, कार्डबोर्ड शीट और शिल्प कार्यों के माध्यम से वे त्रिविमीय अभिव्यक्तियों में भी सक्षम बनेंगे।

iv. **पुस्तकों या भाषा का कोना**— इस कोने में चित्र पुस्तकें, चित्र चार्ट, चित्र कार्ड और बाल साहित्य हो सकता है। इस कोने के माध्यम से बच्चों को पुस्तकों के माध्यम से चीज़ें देखने, चुपचाप किताबें पढ़ने, चित्र कार्ड के बारे में बात करने और समूह में अन्य बच्चों के साथ अपने विचार साझा करने आदि का अवसर मिलेगा। इन गतिविधियों के माध्यम से बच्चे मौखिक भाषा की क्षमता, छपे हुए पाठ के प्रति जागरूकता और पढ़ने की क्षमता हासिल करते हैं।

स्थान की उपलब्धता के आधार पर अतिरिक्त कोनों को जोड़ा जा सकता है। छोटे बच्चों के लिए सुरक्षित घरेलू उपकरणों को अलग करने और उन्हें एक साथ रखने के लिए एक टिंकरिंग कॉर्नर, बच्चों के मस्तिष्क को चुनौती देने के लिए आदर्श होगा।

(घ) **कक्षा प्रदर्शनी**— कक्षा को जीवंत और गतिशील रखने के लिए बच्चों और शिक्षकों दोनों के काम को प्रदर्शित करने के लिए कमरे में एक विशिष्ट स्थान महत्वपूर्ण है। डिस्प्ले को कार्डबोर्ड के टुकड़े के उपयोग से व्यवस्थित किया जा सकता है, जिस पर एक सफेद शीट चिपकाई जाती है। डिस्प्ले को दीवार पर टाँगने की आवश्यकता है, बहुत अधिक ऊँचाई पर नहीं, बल्कि बच्चों की आँखों की ऊँचाई पर। यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि बच्चों के सभी कार्य एक के बाद एक प्रदर्शित किए जाएँ।

i. मौसम चार्ट— इस स्थान पर दैनिक और साप्ताहिक मौसम के साथ-साथ सप्ताह के दिन की जानकारी प्रदर्शित की जा सकती है। एक चार्ट पेपर के साथ एक कार्डबोर्ड का टुकड़ा पृष्ठभूमि में हो सकता है और दिन के मौसम को चित्र से और लिखकर दर्शाया जा सकता है।

ii. समय-सारणी— यह महत्वपूर्ण है कि समय-सारणी कक्षा में स्पष्ट रूप से प्रदर्शित हो। यह शिक्षक के साथ-साथ बच्चों का भी मार्गदर्शन करती है। इस आयु के बच्चे संरचना और क्रम को अच्छा समझते हैं।

iii. शिक्षक द्वारा तैयार किए गए चार्ट— कक्षा में यह स्थान शिक्षक द्वारा तैयार किए गए चार्ट प्रदर्शित कर सकता है। इसमें प्रासंगिक कहानियाँ या स्कूल के आस-पास या बच्चों के घरों में पाई जाने वाली वस्तुओं की तस्वीर हो सकती है। इसे उस समय सीखे जा रहे विषय के लिए प्रासंगिक होना चाहिए। शिक्षक और बच्चे इन चार्टों को एक साथ तैयार कर सकते हैं।

iv. नियम चार्ट— कक्षा के नियमों को प्रमुखता से प्रदर्शित करना महत्वपूर्ण है। इन्हें केवल नियमों का क्रम नहीं होना चाहिए, बल्कि नियमों को चित्रों और कहानियों के माध्यम से रचनात्मक रूप से व्यक्त किया जाना चाहिए।

(ङ) **पोर्टफोलियो बैग**— बच्चों के काम को रिकॉर्ड और सुरक्षित करना आवश्यक है। इसे अन्य बच्चों के लिए सुलभ और दिखने में स्पष्ट बनाना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। यह आकलन के लिए भी प्रासंगिक होता है। पोर्टफोलियो बैग को तार या रस्सी पर लटकाया जा सकता है। इसे प्रत्येक बच्चे के नाम के साथ बड़े करीने से लेबल किया जाना चाहिए। इन प्रदर्शन क्षेत्रों के साथ, प्रत्येक कक्षा में एक आइना और घड़ी होनी चाहिए। जूते और कूड़ेदान रखने के लिए बाहर निर्धारित स्थान होना चाहिए। इन स्थानों की लेबलिंग, डिस्प्ले में विषयवस्तु और पठन कोने आदि के उपयोग से माहौल को समृद्ध, रंगीन और खुशहाल बनाना चाहिए।

5.6.2 बाहरी उपकरण और सामग्रियाँ

(क) **रेत का गड्ढा**— यदि पर्याप्त जगह उपलब्ध हो, तो रेत का गड्ढा बच्चों के लिए एक उत्कृष्ट खेल की जगह होगी। जहाँ ऐसी जगह उपलब्ध न हो, वहाँ ईंटों और रेत का उपयोग करके ऐसा गड्ढा बनाया जा सकता है। पत्थरों और अन्य धारदार या नुकीली वस्तुओं को हटाने के लिए रेत के गड्ढे या बॉक्स को समय-समय पर साफ़ किया जाना चाहिए। खेल के दौरान बच्चे रेतीले क्षेत्र का उपयोग कर सकते हैं।

(ख) **मिट्टी का डिब्बा**— ईंटों से बना छोटा डिब्बा जिसमें मिट्टी भरी हो, बच्चों के लिए आकर्षक होता है। वे इसमें मिट्टी को मिलाने, उसे गूँथने और मिट्टी की आकृतियाँ व खिलौने बनाने का काम कर सकते हैं। यह उनकी सूक्ष्म व स्थूल मांसपेशियों की क्षमता को विकसित करने का बहुत अच्छा अभ्यास है।

(ग) **पानी**— बहुत से छोटे बच्चों को पानी में खेलने से सुकून मिलता है। बिना छलकाए पानी डालने से कई मांसपेशियों के समन्वय में मदद मिलती है और ध्यान में वृद्धि होती है। पानी मापन के लिए भी उपयोगी है। रेत और मिट्टी के क्षेत्रों के साथ पानी की गतिविधियों के लिए बाल्टी, मग और एक टब की सामान्य व्यवस्था रखी जानी चाहिए।

(घ) **किचन गार्डन**— विभिन्न प्रकार के पौधों (जैसे– फूल, लताएँ, जड़ें, सब्ज़ियाँ, पत्तेदार सब्ज़ियाँ) के साथ भीतरी परिवेश से सटा एक छोटा किचन गार्डन बच्चों को संवेदी अनुभव, अपने हाथों से काम करने के अवसर और प्राकृतिक पर्यावरण के बारे में अवधारणाएँ देता है। सामूहिक कार्य, शारीरिक श्रम और कार्य के प्रति ऐसे ही अन्य सकारात्मक दृष्टिकोण भी किचन गार्डन में काम करने वाले बच्चों द्वारा प्राप्त किए जा सकते हैं।

(ङ) **बाहरी खेल उपकरण**— स्लाइड, झूमा-झूमी और झूले कुछ आवश्यक आउटडोर खेल उपकरण हैं। यदि स्लाइड में चढ़ने के लिए सीढ़ी है, तो बहुत छोटे बच्चे भी उस पर चढ़ पाते हैं। यह उन बच्चों के लिए बहुत महत्वपूर्ण विकास गतिविधि है, जिनके पास चढ़ने के लिए छोटे पेड़ नहीं हैं। स्लाइड पर चढ़ने के लिए बाहरी क्षेत्र में छोटी सीढ़ियाँ रखी जा सकती हैं। बाद के वर्षों में, अधिक श्रम करके चढ़ाई का अनुभव लेने के लिए रस्सी की सीढ़ी टाँगी जा सकती है। पुराने टायरों का उपयोग करके झूले बनाए जा सकते हैं।

अध्याय 6

सीखने में संवर्धन के लिए आकलन

आकलन सीखने-सिखाने की प्रक्रिया का एक हिस्सा है। इसमें बच्चों के सीखने के बारे में अलग-अलग स्रोतों से जानकारी को व्यवस्थित कर इकट्ठा किया जाता है। हालाँकि विषयवस्तु और शिक्षणशास्त्र बच्चों के लिए सीखने के अनुभवों को व्यवस्थित करने में मदद करते हैं, पर आकलन से शिक्षक, माता-पिता और स्वयं बच्चों को भी उनकी उपलब्धियों के बारे में जानकारी पाने में मदद मिलती है। शिक्षक बच्चों के लिए सीखने के अनुभवों की योजना बनाने और उन्हें व्यवस्थित करने के लिए नियमित रूप से चल रहे आकलन से मिलने वाली जानकारी का उपयोग कर सकते हैं।

प्रत्येक बालक अद्वितीय होता है और उसके सीखने के तरीके और सीखने की गति अलग होती है। आकलन इस तरह की विविधता को समायोजित करने के लिए डिज़ाइन किया जाना चाहिए। आकलन के परिणामों से शिक्षक उन बच्चों की भी पहचान कर सकते हैं, जिन्हें अतिरिक्त मदद और अधिक ध्यान की आवश्यकता है। खंड 6.1 में आकलन के कुछ मार्गदर्शक सिद्धांत बताए गए हैं, जो बुनियादी स्तर के लिए प्रासंगिक हैं। खंड 6.2 में आकलन के उन तरीकों और साधनों का ब्यौरा दिया गया है, जो बुनियादी स्तर के लिए आवश्यक हैं। शिक्षक द्वारा बच्चों की प्रतिक्रियाओं के विश्लेषण करने के तरीकों को खंड 6.3 में बताया गया है। खंड 6.4 उन तरीकों का विस्तार है, जिनसे बच्चे के सीखने के आकलन और प्रगति को दर्ज और संप्रेषित किया जाता है।

खंड 6.1
आकलन के कुछ मार्गदर्शक सिद्धांत

6.1.1 आकलन की प्रकृति और उद्देश्य

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.) द्वारा प्रस्तावित दक्षता-आधारित पाठ्यचर्या में आकलन बच्चों की सीखने की उपलब्धियों का प्रमाण एकत्र करने का आसान तरीका और साधन है।

बुनियादी स्तर पर आकलन नीचे दिए गए उद्देश्यों को पूरा कर सकता है—

(क) बच्चे की आवश्यकताओं, प्राथमिकताओं और रुचियों की पहचान करना— यह जानकारी शिक्षक को विषयवस्तु और शैक्षणिक पद्धतियों के चयन में मार्गदर्शन कर सकती है।

(ख) शिक्षक को बच्चे की सीखने की उपलब्धि के बारे में जानकारी देना और आगे के कामों के लिए शिक्षक को राह दिखाना— आकलन कार्य में बच्चों की प्रतिक्रियाएँ जानकारी का भंडार हैं, जिस पर शिक्षक आगे कार्य कर सकते हैं। ये प्रतिक्रियाएँ बच्चे की सोच और सीखने की प्रक्रिया को समझने का एक मार्ग प्रदान करती हैं। बच्चों की प्रतिक्रियाओं का सावधानीपूर्वक विश्लेषण करना शिक्षक का उतना ही महत्वपूर्ण कार्य है, जितना कि सोच-समझकर आकलन कार्य को डिज़ाइन करना।

(ग) सीखने का समेकन करना— जब आकलन कार्य अच्छी तरह से डिज़ाइन किया गया हो, तो यह बच्चों को सार्थक गतिविधियों और अभ्यासों के माध्यम से उनके सीखने को सुदृढ़ करने में मदद करता है। हाल ही में अर्जित ज्ञान और कौशल के अनुप्रयोग के माध्यम से बच्चे अपनी समझ और क्षमताओं को और प्रभावी करते हैं।

(घ) बच्चों के लिए सीखने के उपयुक्त अवसर देने की कोशिशों में मदद और समन्वय संभव बनाना— आकलन के माध्यम से जमा की गई जानकारी को बच्चों के सीखने को बढ़ावा देने में रुचि रखने वाले सभी हितधारकों के साथ साझा किया जा सकता है।

(ङ) प्रत्येक बच्चे के लिए एक समयावधि में प्रगति की दर देना— यह न केवल दक्षताओं की उपलब्धि है, बल्कि इन दक्षताओं को प्राप्त करने में लगने वाला समय भी है जो सीखने की प्रक्रिया के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी देता है।

(च) कक्षा में बच्चों के सीखने की उपलब्धि का समग्र स्तर पर एक संपूर्ण दृष्टिकोण देना— यह जानकारी सभी बच्चों के लिए पाठ्यचर्या के उद्देश्यों को लक्षित करने के लिए विषयवस्तु एवं शिक्षणशास्त्र की योजना बनाने और इन्हें संगठित करने में शिक्षक और विद्यालय दोनों के लिए सहायक है।

(छ) बच्चों की अलग-अलग सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि और सीखने की गति में अंतर को देखते हुए, एक ही कक्षा में बच्चों के बीच सीखने में अंतर जल्दी दिखने शुरू हो जाते हैं और यदि समय पर इसे सुलझाया नहीं जाए, तो दूसरी कक्षा तक इसके प्रभाव निष्पादित होते हैं। बेहतर ढंग से डिज़ाइन किया गया आकलन कार्य पर्याप्त रूप से नहीं सीख पा रहे बच्चों के बारे में अतिरिक्त सीखने के अनुभव तैयार करने में शिक्षकों की मदद कर सकता है।

(ज) बच्चों द्वारा सामना किए जाने वाली संभावित विकासात्मक चुनौतियों या सीखने की कठिनाइयों के बारे में शुरुआती संकेत देना— यह विशेष रूप से बुनियादी स्तर में आवश्यक है कि सभी बच्चों की समान रूप से देखभाल की जाए। साथ ही बच्चों को खराब तरीके से डिज़ाइन किए गए आकलन कार्य के आधार पर अन्य बच्चों से अलग नहीं समझा जाना चाहिए।

इसके बारे में अधिक जानकारी के लिए कृपया अध्याय 8 देखें।

6.1.2 बुनियादी स्तर के लिए आकलन के बारे में कुछ विचार

बुनियादी स्तर में बच्चे बहुत छोटे होते हैं। आकलन की प्रक्रिया के कारण से होने वाला कोई भी अनावश्यक भावनात्मक तनाव किसी भी अच्छी शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के विरुद्ध है। नीचे दी गई बातों का ध्यान रखना आवश्यक है—

(क) आकलन से बच्चों पर आवश्यकता से अधिक बोझ नहीं पड़ना चाहिए। आकलन उपकरण और प्रक्रियाओं को इस तरह से डिज़ाइन किया जाना चाहिए कि वे बच्चों के लिए सीखने के अनुभव का एक स्वाभाविक हिस्सा हों। इस चरण के लिए निश्चित परीक्षण और परीक्षा पूरी तरह से अनुपयुक्त आकलन उपकरण हैं।

(ख) आकलन सूचना का एक भरोसेमंद स्रोत होना चाहिए। चूँकि यह बच्चे के सीखने का इतना महत्वपूर्ण प्रमाण है, इसलिए इसमें दक्षता और सीखने के प्रतिफलों की उपलब्धि के आकलन के उद्देश्य को सटीकता से प्रतिबिंबित होना चाहिए। अपेक्षित सीखने के प्रतिफल और आकलन के बीच संबंध को स्पष्ट और सटीक होना चाहिए।

(ग) बच्चों और उनके सीखने में विविधता को आकलन में स्वीकार्यता दी जानी चाहिए। बच्चे अलग-अलग तरह से सीखते हैं और अपने सीखने को तरह-तरह से व्यक्त भी करते हैं। किसी सीखने के प्रतिफल या दक्षता की उपलब्धि का आकलन करने के कई तरीके हो सकते हैं। एक ही सीखने के प्रतिफल के लिए अलग-अलग तरह के आकलन कार्य को डिज़ाइन करने और प्रत्येक आकलन का सही उपयोग करने की क्षमता शिक्षक में होनी चाहिए।

(घ) आकलन को अभिलेख-संधारण और प्रलेखन में सहयोगी होना चाहिए। प्रमाणों के व्यवस्थित संग्रह के माध्यम से बच्चों की प्रगति का वर्णन और विश्लेषण किया जाना चाहिए।

(ङ) आकलन को शिक्षक पर आवश्यकता से अधिक बोझ नहीं बनना चाहिए। शिक्षक के पास आकलन के लिए उचित उपकरणों के विवेकपूर्ण चयन और आकलन से जुड़े रिकॉर्ड बनाने और रखने की अवधि तय करने में स्वायत्तता होनी चाहिए। हालाँकि ऐसी स्वायत्तता महत्वपूर्ण है, लेकिन बच्चों के आकलन का व्यवस्थित रिकॉर्ड रखना शिक्षक की पेशेवर जिम्मेदारियों के एक आवश्यक हिस्से के रूप में देखा जाना चाहिए।

खंड 6.2
आकलन के तरीके और उपकरण

बुनियादी स्तर के लिए उपयुक्त आकलन के दो व्यापक तरीके हैं— बच्चों का अवलोकन और बच्चों द्वारा अपने सीखने के अनुभव के हिस्से के रूप में प्रस्तुत किए गए कार्यों का विश्लेषण। यह खंड विस्तार से बताता है कि इन विधियों और उपकरणों का बुनियादी स्तर पर कैसे उपयोग किया जा सकता है। अन्य उपकरण और तरीके जो सृजित किए गए हैं, उन्हें पिछले खंड में दिए गए आकलन के सिद्धांतों का पालन करना चाहिए।

6.2.1 बच्चों का अवलोकन

समय-समय पर किया जाने वाला अवलोकन शिक्षक को बच्चे के सीखने की व्यापक समझ प्रदान करता है। ऐसे कई प्रसंग हो सकते हैं, जहाँ बच्चे अपने व्यवहार, दृष्टिकोण और अपनी सीख को अभिव्यक्त करते हैं।

बच्चे अपनी समझ को करके, दिखाकर और बताकर व्यक्त करते हैं। बच्चों की विभिन्न दक्षताओं की उपलब्धि, जिन्हें बच्चे कई संभावित तरीकों से प्रदर्शित कर सकते हैं, को समझने में अवलोकन शिक्षकों की मदद कर सकता है। इसे प्रभावित करने वाले कारकों को भी शिक्षक नोट कर सकते हैं। कभी-कभी कुछ विशेष स्थितियाँ या चीज़ें बच्चे को कुछ विशेष तरीके से काम करने के लिए प्रोत्साहित कर सकती हैं। उदाहरण के लिए, यदि शिक्षक बच्चे की अपने खिलौने को दूसरे बच्चों को देने और वापस लेने की क्षमता का पता लगाना चाहता है, तो एक विशेष परिस्थिति बनाई जानी चाहिए ताकि बच्चा साझा करने या लेने की अपनी क्षमता प्रदर्शित कर सके। शिक्षक एक बच्चे को कक्षा के एक शांत कोने में किसी और बच्चे के साथ बारी-बारी से खेलने के लिए कह सकता है।

आकलन के लिए व्यवस्थित अवलोकन में निम्नलिखित चरण शामिल हैं—

(क) योजना बनाना— कक्षा में अवलोकन के लिए कुछ बच्चों की पहचान करें। तय करें कि आप पाठ्यचर्या के किन उद्देश्यों को देखना चाहेंगे। उन दक्षताओं और सीखने के प्रतिफलों की एक सूची बनाएँ, जिन्हें आप उसके भीतर देखना चाहते हैं। अवलोकनों को रिकॉर्ड करने के लिए आवश्यक उपकरण का निर्धारण और तैयारी करें।

(ख) प्रमाण इकट्ठा करना— एक समय चुनें, जहाँ चयनित दक्षताएँ या सीखने के प्रतिफल बच्चों द्वारा प्रदर्शित किए जा सकते हों। उदाहरण के लिए, अगर यह स्थूल गत्यात्मक विकास के बारे में है, तो बाह्य खेल अवलोकन के लिए एक अच्छी अवस्था होगी। अगर यह सामाजिक विकास के बारे में है, तो बच्चों से सामूहिक गतिविधियाँ या नाटकीय खेल करवाएँ जा सकते हैं। आप जो देखते हैं, उसे ठीक से रिकॉर्ड करते रहें। उदाहरण के लिए, यदि आप देखते हैं कि कोई बच्चा स्वतंत्र रूप से खेल में अपनी बारी लेने में सक्षम है, तो आप अपनी चेकलिस्ट पर एक टिक चिह्नित कर सकते हैं और प्रमाण के रूप में सटीक अवलोकन को नोट कर सकते हैं।

(ग) विचार और आकलन करना— प्रत्येक बच्चे की प्रगति को समय-समय पर ट्रैक करने के लिए प्रमाण और रिकॉर्ड का अध्ययन करें। प्रत्येक ठोस प्रमाण शिक्षक को सूचित करेगा कि बच्चों के लिए भविष्य में शिक्षण की योजना कैसे बनाई जाए और उसे कैसे संशोधित किया जाए।

सामान्य शैक्षणिक प्रक्रियाओं के दौरान अवलोकन के लिए कुछ उदाहरणात्मक संकेत नीचे दिए गए हैं—

(क) कहानी सुनाना—

i. क्या बच्चा कहानी में शामिल हो रहा है?
ii. क्या बच्चा चित्रों का वर्णन कर रहा है?
iii. क्या बच्चा कहानी के विभिन्न पात्रों के बारे में सवाल पूछ रहा है?
iv. क्या बच्चा व्यक्तिगत अनुभवों को कहानी की घटनाओं से जोड़ रहा है?
v. क्या बच्चा कहानी से परिचित शब्द याद कर रहा है?
vi. क्या बच्चा कहानी के बारे में पसंद या नापसंद व्यक्त कर रहा है?

(ख) निर्देशित बातचीत—

i. क्या बच्चा घेरा समय (सर्कल टाइम) के दौरान दूसरों की बात सुन रहा है?
ii. क्या बच्चा बोलने के लिए अपनी बारी का इंतज़ार कर रहा है?
iii. क्या बच्चा दूसरों की बात सुनकर अपनी खुशी या नाराज़गी व्यक्त कर रहा है?
iv. आगे क्या होने वाला है, क्या बच्चा इसे पहचान पाने में सक्षम है?

(ग) खेल— स्वतंत्र, मार्गदर्शित या संरचित—

i. क्या बच्चा साधारण समस्याओं को हल कर रहा है?
ii. क्या बच्चा खेल सामग्री के साथ जुड़ने के लिए बड़ी और छोटी मांसपेशियों का उपयोग करने में सक्षम है?
iii. क्या बच्चा विभिन्न भावनाओं को व्यक्त करने में सक्षम है?
iv. क्या बच्चा दूसरों की भावनाओं के प्रति उचित प्रतिक्रिया देने में सक्षम है?

6.2.1.1 अवलोकन दर्ज करने के उपकरण

शिक्षक अपने अवलोकन को दर्ज करने के लिए उपाख्यानात्मक रिकॉर्ड (एनेक्डॉटल रिकॉर्ड), चेकलिस्ट और दृष्टांत प्रतिदर्श (इवेंट सैंपलिंग) जैसे उपकरणों का उपयोग कर सकते हैं।

(क) उपाख्यानात्मक रिकॉर्ड (एनेक्डॉटल रिकॉर्ड)

उपाख्यानात्मक रिकॉर्ड विशेष रुचि या चिंता के विशेष प्रकरण या घटना को विस्तार से रिकॉर्ड करने का एक प्रयास है।

जब कोई विशेष घटना शिक्षक का ध्यान आकर्षित करती है, तो वे जितनी जल्दी हो सके, घटना का वर्णनात्मक विवरण लिख लें। रिकॉर्ड इस बात का अवलोकन है कि बच्चे किसी विशेष गतिविधि में लगे रहने के दौरान क्या कहते हैं और क्या करते हैं।

शिक्षक के मन की बात – 6.2 क

उपाख्यानात्मक अवलोकन रिकॉर्ड का एक नमूना	
प्रसंग— मैं 4–5 साल के बच्चों की एक कक्षा को पढ़ाता हूँ। जब मैं अपनी कक्षा के बच्चों के साथ 'कहानी सुनने-सुनाने' पर काम कर रहा था, तब मैंने कुछ ऐसी चीज़ों का अवलोकन किया, जिन्होंने मेरा ध्यान अपनी तरफ़ खींचा।	
नाम– देवी	उम्र– 4.5 साल
अवलोकन की दिनांक और समय – DDMMYY, HH:MM	स्थान– कक्षा
अवलोकन का उद्देश्य– भावनात्मक नियमन	
अवलोकन— मैंने अपनी कक्षा में 'राजेश ने अपनी बहन को गले लगाया' कहानी पढ़ी। देवी गुस्सा हो गई और बगल में बैठे बच्चों को धक्का दे दिया। कहानी पढ़ने के बाद मैंने बच्चों से अपने परिवार का चित्र बनाने को कहा। देवी ने चित्र बनाया लेकिन चित्र में दिख रहे लड़के को क्रेयॉन रंग से काला कर दिया। मैंने उससे इसके बारे में पूछा, तब उसने कहा, "यह मेरा भाई है। मैं उसे पसंद नहीं करती हूँ। वह हमेशा मुझे चिढ़ाता है और मेरा खाना ले लेता है। माता-पिता उसे ही पसंद करते हैं।"	
व्याख्या— • ऐसा लगता है कि देवी को अपने भाई के लिए अपनी भावनाओं का सामना करने में कठिनाई हो रही है। • हो सकता है कि वह अपने माता-पिता से अपनी भावनाओं को जताना न जानती हो। • इसका प्रभाव अन्य बच्चों के साथ उसके व्यवहार पर भी हो रहा था।	
कार्य-योजना— • इस बारे में देवी के माता-पिता से बात करना। इसके लिए उन्हें घर पर कुछ इंतज़ाम करने पड़ सकते हैं, जैसे कि देवी और उसके भाई को एक साथ खेलने की सुविधा देना, दोनों को कुछ काम एक साथ करने के लिए कहना, एक-दूसरे से खाना बाँटने के लिए कहना, साथ ही उसे स्पष्ट रूप से जताना कि किस तरह वे उसके भाई और उससे समान रूप से प्यार करते हैं। • माता-पिता और भाइयों के पात्रों वाली कहानियों और रोल-प्ले के प्रति कक्षा में देवी की प्रतिक्रियाओं और दृष्टिकोण पर अधिक ध्यान देना; प्रगति का निरीक्षण करना और दर्ज करना।	

(ख) चेकलिस्ट

चेकलिस्ट, बच्चे ने सूचीबद्ध सीखने के प्रतिफलों को पूरा किया है या नहीं, यह पहचानकर दर्ज़ करने का उपकरण है। आमतौर पर इसमें बच्चे के प्रदर्शन परिणाम को 'हाँ' या 'नहीं' के रूप में दर्ज किया जाता है। चेकलिस्ट सामान्य रूप से सीखने के लिए एक अनुक्रमिक दृष्टिकोण पर आधारित होती है और इसमें यह माना जाता है कि सभी बच्चे एक ही व्यवस्थित क्रम में अनुक्रम से होते हुए आगे बढ़ेंगे। जब कई तरह के परिणामों को देखना होता है, तब चेकलिस्ट का उपयोग किया जाता है। इनका उपयोग जल्दी और आसानी से किया जा सकता है। शिक्षकों को चेकलिस्ट और प्रश्नावली का उपयोग सुधार के उद्देश्य से

करना चाहिए, न कि बच्चों की उपलब्धि के 'रिपोर्ट कार्ड' के रूप में। चेकलिस्ट का उपयोग करते समय, एक '*मिक्स एंड मैच*' दृष्टिकोण को प्राथमिकता दी जाती है, जो चेकलिस्ट को किसी और आँकड़ा संग्रहण विधि के साथ जोड़ता है (जैसे–निर्णय लेने के लिए अवलोकन दर्ज करने वाली चेकलिस्ट)।

भाषा और साक्षरता के कौशल के अवलोकन के लिए एक नमूना चेकलिस्ट नीचे दी गई है। इसका उपयोग एक बच्चे के लिए और बच्चों के समूह के लिए किया जा सकता है।

तालिका 6.2 क – अवलोकन के लिए नमूना चेकलिस्ट

	सुनना और बोलना	**तिमाही 1**	**तिमाही 2**	**तिमाही 3**
1	बातचीत और कहानियों को ध्यान से सुनना			
2	छोटी कविताओं, अभिनय गीतों को सुनाना, दोहराना और संगीत एवं लयबद्ध गतिविधियों में भाग लेना			
3	2 या 3 चरणों के निर्देशों का पालन करने में सक्षम होना			
4	उचित रूप से प्रयुक्त वाक्यों के माध्यम से प्रश्नों के उत्तर देना			
5	उपयुक्त शब्दावली का प्रयोग करना और किसी विचार या वस्तु या चित्र या अनुभव के बारे में पूर्ण वाक्य बोलना			
	आरंभिक पठन			
6	प्रिंट जागरूकता और अर्थ निर्माण– कक्षा और परिवेश में छपी हुई सामग्री (प्रिंट) के बारे में जागरूकता प्रदर्शित करता है।			
7	अपने नाम और बोले गए शब्दों व लिखित शब्दों के समूह को जोड़ने और पहचानने में सक्षम होना			
8	पुस्तकों के साथ जुड़ाव–यह आयु उपयुक्त पुस्तकों (जैसे–चित्र पुस्तकें, कविता पुस्तकें, कहानी पुस्तकें) की श्रृंखला को जानने-समझने की क्षमता प्रदर्शित करता है।			
9	पढ़ने का नाटक करना– यह किताबों में रुचि, किताबों को देखना और उन्हें पढ़ने की कोशिश करना प्रदर्शित करता है।			
10	चित्र पुस्तकों या कहानी की किताबों में छपी हुई सामग्री (प्रिंट) के अर्थ को समझने और व्याख्या करने में सक्षम होना।			

(ग) दृष्टांत प्रतिदर्श

उपाख्यानात्मक रिकॉर्ड विस्तृत गुणात्मक अवलोकन होते हैं और चेकलिस्ट संक्षिप्त किस्म का अवलोकन होती है, वहीं दृष्टांत प्रतिदर्श में दोनों का मिला-जुला रूप हो सकता है। हर बार जब कोई लक्षित घटना होती है, तो शिक्षक लिखित रूप में घटना की शुरुआत से लेकर अंत तक जितना संभव हो, उतना विवरण दर्ज कर सकते हैं।

जब शिक्षक बच्चों के अस्वीकार्य व्यवहार या कार्य को पुनर्निर्देशित करना चाहते हैं, तब दृष्टांत या आवृत्ति प्रतिदर्श विशेष रूप से उपयोगी होता है। इसे एक साधारण तालिका के रूप में दर्ज किया जा सकता है, जहाँ शिक्षक अस्वीकार्य व्यवहारों या कार्यों की संख्या की जाँच करता है। इसमें व्यवहार के कारणों के पीछे की घटना, समय, दिनांक, अन्य व्यक्तियों की उपस्थिति और स्थिति जैसे विवरणों को शामिल किया जा सकता है।

इसी तरह, अगर शिक्षक समस्या की तीव्रता को समझने के लिए नियमित अंतराल पर कुछ व्यवहार या कार्यों का आकलन करना चाहते हैं, तो वे इसे समय प्रतिदर्श (टाइम सैंपलिंग) में कर सकते हैं, जैसे दो दिनों तक सुबह के सत्रों में एक-एक घंटे की गतिविधि में 10-10 मिनट की अवधि में एक कार्य दर्ज करना (उदाहरण के लिए, अगर शिक्षक किसी बच्चे के आक्रामक व्यवहार का निरीक्षण करना चाहते हैं, तो वह खेलने के समय पर हर 10 मिनट में एक ही गतिविधि को दो दिनों तक दर्ज कर सकते हैं, इससे उन्हें बच्चे की शरारतों और संघर्षों की स्पष्ट समझ मिलेगी और साथ ही वे किसी विशेष स्थिति में बच्चे के सामाजिक-भावनात्मक व्यवहार की समझ भी बना सकेंगे)।

शिक्षक के मन की बात – 6.2 ख

दृष्टांत प्रतिदर्श – अवलोकन रिकॉर्ड	
प्रसंग— यह 4–5 साल के बच्चों की कक्षा थी। मैंने अपने बच्चों को समूह कार्य दिया था और अपनी टिप्पणियों को दर्ज किया। इससे मुझे आगे के कार्यों के लिए उपयोगी अंतर्दृष्टि मिली।	
बच्चों के नाम– मुथु, चंद्री, सूर्यन, कार्तिक	उम्र– 4.5 साल
अवलोकन का समय और दिनांक– DDMMYY, HH:MM	स्थान– रचनात्मक गतिविधि, आउटडोर
अवलोकन का उद्देश्य– बच्चों का समूह कार्य	
घटना का विवरण	व्याख्या
• मैंने उन्हें 3 या 4 के छोटे समूहों में टहनियों और पत्तियों का उपयोग करके चित्र बनाने का काम दिया था। उन्हें ये बाहर से इकट्ठा करना था और फिर अंदर आकर काम खत्म करना था। • मुथु, चंद्री, सूर्यन और कार्तिक एक समूह में थे। कार्तिक ने टहनियों और पत्तियों को छुआ, लेकिन कार्य को पूरा करने में योगदान नहीं दिया। वह अन्य बच्चों को बाधित करने के लिए इधर-उधर भागता रहा। • मुथु और चंद्री ने एक-दूसरे का सहयोग किया और अपनी टहनियों और पत्तियों से एक पेड़ का मॉडल बनाया। • सूर्यन इस प्रक्रिया का आनंद लेते दिखा, लेकिन उसने अधिक योगदान नहीं दिया।	• ये बच्चे अलग-अलग स्तरों पर हैं। • कार्तिक काम बिगाड़ने वाला व्यवहार प्रदर्शित करता है और काम पर ध्यान केंद्रित करने में सक्षम नहीं है। मुझे उसके साथ मिलकर इस पर काम करना होगा। • हालाँकि सूर्यन काम बिगाड़ने वाला नहीं है, लेकिन उसे उचित सामाजिक व्यवहार प्रदर्शित करने के लिए सहयोग की आवश्यकता होगी। • मुथु और चंद्री समूहों में अच्छा काम कर सकते हैं और काम को पूरा कर सकते हैं।

मैं विशेष रूप से कार्तिक के काम बिगाड़ने वाले व्यवहार के बारे में चिंतित थी। इसे और अधिक समझने के लिए, मैंने कार्तिक का आवृत्ति-प्रतिदर्श अवलोकन करने का निर्णय किया। उदाहरण के लिए, हर दूसरे दिन 30 मिनट की अवधि में हर 5 मिनट पर उसका अवलोकन करना और उसके व्यवहार की व्याख्या करना, जिसमें वह किसी दिए गए काम पर कितना समय केंद्रित कर पाता है और उसके व्यवहार के कारण को समझना शामिल है। मैंने इसे एक साधारण चेकलिस्ट के रूप में दर्ज कर लिया है।

इसके बाद मैं उसके परिवार के साथ मिलकर इस मुश्किल को सुलझाने की कोशिश कर सकती हूँ। परिवार उसकी रुचि के अनुसार उसे कुछ काम देगा और उसे पूरा करने पर उसे कुछ पुरस्कार या प्रशंसा मिलेगी।

6.2.2 कलाकृतियों का विश्लेषण

प्रारंभिक बाल्यावस्था की कक्षा में एक कलाकृति का अर्थ सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के दौरान एक बच्चे द्वारा बनाई गई वस्तु से है। कलाकृतियों का उपयोग बच्चे के काम को देखकर, यह देखने के लिए किया जा सकता है कि किसी विशेष सीखने के प्रतिफल में उसकी समझ के स्तर ने उसके द्वारा बनाई वस्तु (उत्पाद) को कैसे प्रभावित किया। कलाकृतियाँ बच्चे की सामर्थ्य एवं क्षमताओं के बारे में जानकारी का एक समृद्ध स्रोत उपलब्ध कराती हैं।

6.2.2.1 कलाकृतियों के कुछ उदाहरण

शिक्षक बच्चों के पूरे किए गए कार्य या उनकी कलाकृति की तस्वीरें 'प्रगति एवं विकास' नाम के एक फोल्डर में रख सकते हैं। बच्चे यह फोल्डर सत्र के अंत में अपने घर ले जा पाएँगे। कलाकृतियों और गतिविधियों के इस संकलन से कलाकृतियों का संग्रह, विभिन्न गतिविधियाँ करते हुए बच्चों की तस्वीरें, वीडियो या ऑडियो रिकार्डिंग (अगर संभव हो) के साथ-साथ शिक्षकों की टिप्पणियों और अवलोकन नोट्स के व्यवस्थित रिकॉर्ड से बच्चों की संपूर्ण अधिगम प्रक्रिया की जानकारी मिल सकती है।

बच्चों की प्रगति का प्रमाण मानकर इन्हें दस्तावेज़ के रूप में व्यवस्थित तरीके से बच्चों के पोर्टफोलियो में संग्रहित किया जा सकता है।

पोर्टफोलियो बच्चों के महत्वपूर्ण कार्यों के नमूनों और अभिलेखों का संग्रह है, जो विशिष्ट सीखने के प्रतिफलों से संबंधित प्रयासों और उपलब्धियों का प्रमाण प्रस्तुत कर आकलन को बेहतर बनाता है। शिक्षक को कुछ विशेष प्रतिफलों को ध्यान में रखकर बच्चे के पोर्टफोलियो का विश्लेषण करना चाहिए और बच्चे की क्षमताओं के सामने उसकी प्रगति को दर्ज़ करना चाहिए। बच्चे के पोर्टफोलियो के संगठन को प्राप्त किए जाने वाले परिणामों को स्पष्ट रूप से इंगित करना चाहिए। कलाकृतियों को संग्रहित करने के लिए प्रत्येक बच्चे का अपना अलग फोल्डर होना चाहिए।

(क) कलाकृति के रूप में बच्चों के काम के नमूने

शिक्षक के मन की बात – 6.2 ग

प्रमाण के रूप में विद्यार्थी का कार्य

मैं जिन 3–4 साल के बच्चों के साथ काम कर रहा हूँ, उनके सीखने के प्रतिफलों में गत्यात्मक कौशल विकसित करना कई सीखने के प्रतिफलों में से एक है। बच्चों के इन कौशलों को विकसित करने में मदद करने के लिए मैं जिन प्रमुख तरीकों का उपयोग कर रहा हूँ, उनमें से कलाकृति भी एक है। बच्चों ने सत्र के आरंभ और अंत में जो कलाकृतियाँ बनाई हैं, उनमें स्पष्ट अंतर दिखाई देता है। ये कलाकृतियाँ उनकी प्रगति का स्पष्ट प्रमाण हो सकती हैं। नीचे दिया गया चित्र इनमें से एक बच्चे के काम का नमूना है, जिसमें आप स्पष्ट रूप से देख सकते हैं कि इस अवधि में हाथ और आँख के समन्वय और गत्यात्मक कौशल में प्रगति हुई है।

सत्र के आरंभ में	***सत्र के अंत में***

(ख) कार्यपत्रक

बच्चों द्वारा किए जाने वाले काम और लिखित जवाब कार्यपत्रक में दर्ज होते हैं। इन कामों को किन्हीं विशेष सीखने के प्रतिफलों को प्राप्त करने के लिए डिज़ाइन किया जा सकता है।

कार्यपत्रक शिक्षकों के लिए बहुत प्रभावी आकलन उपकरण हो सकता है। कार्यपत्रकों में विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण करने से शिक्षक को बच्चे के सीखने के स्तर की एक स्पष्ट समझ मिल सकती है।

विशिष्ट साक्षरता और संख्या ज्ञान की दक्षताओं को ध्यान में रखते हुए, कक्षा 1 और 2 के बच्चों के लिए इन आकलन कार्यपत्रकों को कार्यपुस्तिका के भाग के रूप में शामिल करना उपयोगी हो सकता है।

एक नमूना कार्यपत्रक और विद्यार्थी प्रतिक्रियाओं के विश्लेषण से प्राप्त की जा सकने वाली अंतर्दृष्टि अनुलग्नक 2 में उदाहरण के रूप में दी गई हैं।

खंड 6.3
प्रभावी शिक्षण-अधिगम के लिए बच्चों की प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण

आकलन से हमें बच्चों के सीखने के बारे में कई अंतर्दृष्टियाँ मिलती हैं। इन अंतर्दृष्टियों से हमें बच्चों की आवश्यकताओं और रुचियों को ध्यान में रखकर कक्षा-कक्ष के शिक्षणशास्त्र की योजना बनाने और डिज़ाइन करने में काफ़ी मदद मिलती है। किसी भी कक्षा में आकलन के उद्देश्य को पूरा करने के लिए चक्रीय और पुनरावृत्तीय प्रक्रिया का पालन करना चाहिए जैसा कि नीचे दिखाया गया है—

चित्र 6.3 अ — प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण करने के लिए प्रवाह

6.3.1 प्रमाणों का विश्लेषण

सीखने की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के लिए शिक्षक को इन प्रमाणों का विश्लेषण और व्याख्या कैसे करनी चाहिए? विद्यार्थियों के कार्य का विश्लेषण करने के लिए कौन-सी पूर्व-शर्तें और सामान्य सिद्धांत हैं?

6.3.1.1 आकलन से मिले प्रमाण का विश्लेषण करने के लिए सावधानियाँ

(क) शिक्षक जिन बच्चों को पढ़ा रहे हैं, उनके प्रति उनका व्यवहार निष्पक्ष और विचार उदार होने चाहिए। बच्चों और उनकी क्षमताओं या योग्यताओं के बारे में उनकी राय जाति, लिंग, धर्म, सामाजिक-आर्थिक स्थिति जैसे कारकों से प्रभावित नहीं होनी चाहिए।

(ख) आकलन को अच्छी तरह से डिज़ाइन किया जाना चाहिए और यह बुनियादी स्तर के सीखने के प्रतिफलों और दक्षताओं के अनुरूप होना चाहिए। तभी वे बच्चों की पढ़ाई के बारे में सटीक औरउपयोगी जानकारी देंगे।

(ग) आकलन को औपचारिक और अनौपचारिक रूप से कक्षा-कक्ष में और कक्षा-कक्ष से बाहर की गतिविधियों में एकीकृत किया जाना चाहिए। इन आकलन उदाहरणों का उपयोग बच्चों के सीखने के प्रमाण के रूप में किया जाना चाहिए। शिक्षकों को बच्चों के व्यवहार, प्रतिक्रियाओं, मनोदशा, पसंद और नापसंद से ऐसे प्रमाण इकट्ठा करने में सक्षम होना चाहिए।

(घ) विभिन्न आकलनों (जैसे–अवलोकन, कार्यपत्रक, कलाकृति) से बच्चों के सीखने के साक्ष्य एकत्र करने और उनका अभिलेखन करने की एक प्रणाली होनी चाहिए।

6.3.1.2 आकलन से मिले प्रमाणों के विश्लेषण के लिए सिद्धांत

(क) शिक्षकों को इस बात पर ध्यान नहीं देना चाहिए कि बच्चे क्या नहीं जानते और क्या नहीं कर सकते। उनके आकलन के निष्पक्ष और सटीक होने के लिए, उन्हें इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि बच्चे क्या जानते हैं और क्या कर सकते हैं।

(ख) शिक्षकों को प्रमाणों का विश्लेषण करना चाहिए ताकि यह पता लगाया जा सके कि बच्चों ने किस हद तक कौशल की समझ और उपलब्धि का प्रदर्शन किया है— पूरी तरह से, आंशिक रूप से या गलत तरीके से।

(ग) ऐसे प्रमाणों का विश्लेषण करते समय शिक्षकों को भ्रांतियों या वैकल्पिक अवधारणाओं या बच्चों के सीखने में अंतराल की पहचान करने में सक्षम होना चाहिए।

(घ) बच्चे के सीखने के विषय में निष्कर्ष निकालने से पहले शिक्षकों को प्रमाणों के कई स्रोतों का उपयोग करना चाहिए। उदाहरण के लिए, उन्हें बच्चे के सीखने की एक विश्वसनीय और सुसंगत व्याख्या के लिए कक्षा में बच्चे की प्रतिक्रियाओं, लिखित कार्य और देखे गए व्यवहार से प्राप्त जानकारी को एकीकृत करना चाहिए।

(ङ) आकलन से एकत्र किए गए प्रमाणों का उपयोग बच्चों की सीखने की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए शिक्षण योजना बनाने या उसमें कुछ बदलाव करने के लिए किया जाना चाहिए। इस तरह का शिक्षण लक्षित गतिविधियों, क्षमतानुसार समूहीकरण और स्वतंत्र गृहकार्य नियतकार्य असाइनमेंट का रूप ले सकता है।

6.3.2 विश्लेषण पर कार्य करना

सीखने के इन प्रमाणों पर शिक्षक को कैसे कार्य करना चाहिए? आकलन के सबसे आवश्यक और निर्णायक पहलुओं में से प्रत्येक अवलोकन या बच्चों के काम से मिली जानकारी का उपयोग उनके सीखने हेतु मंच प्रदान करने के लिए करना है।

नीचे दी गई कुछ रणनीतियों का उपयोग किया जा सकता है—

(क) अधिकतर बच्चों द्वारा नहीं सीखे गए कौशलों का दोहराव या अभ्यास करना।

(ख) अलग तरह की रणनीतियों और विधियों के माध्यम से सीखने के अनुभवों को व्यवस्थित करना (यदि पहले की शिक्षण विधि प्रभावी नहीं थी)।

(ग) ऐसे बच्चों की पहचान करना, जिन्हें विशिष्ट दक्षताओं के विकास के लिए अतिरिक्त ध्यान और आधार देने की आवश्यकता है। इसके लिए उनको अलग से समय देना आवश्यक है।

खंड 6.4
आकलन का प्रलेखन और संप्रेषण

जब बुनियादी स्तर पर दैनिक आकलन भी चल रहा हो, तब विशेष अवधि के दौरान सभी आकलनों से प्राप्त जानकारी को समय-समय पर एकत्र करना, सार निकालना और विश्लेषण करना महत्वपूर्ण है। स्कूल को प्रत्येक बच्चे के लिए एक फोल्डर रखना चाहिए। फोल्डर में बच्चे के बारे में सभी सूचनाएँ और प्रत्येक सत्र या वर्ष के दौरान शिक्षक द्वारा दर्ज किया गया विवरण रखा जा सकता है।

इस तरह के विश्लेषण का सारांश 'समग्र प्रगति कार्ड' (एच.पी.सी.) में दर्ज़ किया जा सकता है और इसे बच्चे के माता-पिता और परिवार से साझा किया जा सकता है।

6.4.1 पारिवारिक पृष्ठभूमि की सामान्य जानकारी

बच्चे के प्रोफाइल के केंद्र में सामान्य जानकारी होती है। यह बच्चों के व्यवहार, भागीदारी और प्रगति की व्याख्या करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। बच्चे का नाम, जन्म-तिथि, परिवार के बारे में जानकारी, बच्चे की पसंद और नापसंद जैसे बुनियादी विवरण; बच्चे के स्वास्थ्य के बारे में जानकारी जैसे– ऊँचाई, वज़न, वृद्धि, टीकाकरण को दर्ज किया जाना चाहिए और समय-समय पर अपग्रेड किया जाना चाहिए।

6.4.2 शिक्षक द्वारा वृत्तांत सार

वृत्तांत सार में सूचना के कई स्रोतों (जैसे– उपाख्यानात्मक रिकॉर्ड, दृष्टांत प्रतिदर्श, चेकलिस्ट, पोर्टफोलियो, कार्यपत्रक) की व्याख्या के आधार पर बच्चे की प्रगति के बारे में गुणात्मक जानकारी के साथ बच्चे के सीखने का विवरण होता है। यह बच्चे के सीखने की प्रगति के बारे में माता-पिता और अन्य शिक्षकों को गहराई से जानने में मदद करता है। वृत्तांत सार में नीचे दी गई बातें शामिल हैं—

(क) बच्चे की क्षमताएँ और चुनौतियाँ, विकास और सीखने की प्रगति

(ख) बच्चे की रुचियाँ

(ग) सुदृढ़ करने की आवश्यकता वाले क्षेत्र

अगर वृत्तांत सार को दर्ज करना और बनाए रखना बोझिल लगता है, तो इसे वैकल्पिक अतिरिक्त इनपुट के रूप में माना जा सकता है, लेकिन अगले भाग में वर्णित समग्र प्रगति कार्ड बच्चे की प्रगति का एक महत्वपूर्ण दस्तावेज़ है और इसलिए इसे प्रत्येक शैक्षणिक वर्ष के लिए बनाए रखना आवश्यक होता है। शिक्षक को समग्र प्रगति कार्ड बनाने के लिए पर्याप्त जानकारी दर्ज करना और उसे बनाए रखना आवश्यक होता है।

6.4.3 समग्र प्रगति कार्ड (एच.पी.सी.)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में संकेत किया गया है कि समग्र प्रगति कार्ड (एच.पी.सी.) एक 'बहु-आयामी कार्ड होगा, जिसमें प्रत्येक विद्यार्थी की विशिष्टताओं के साथ-साथ संज्ञानात्मक, भावनात्मक, गत्यात्मक आयाम में विकास के सूक्ष्म विश्लेषण का विस्तृत विवरण दिया जाएगा।' (परिच्छेद 4.35)

समग्र प्रगति कार्ड में न केवल शिक्षक द्वारा किए गए आकलन शामिल हो सकते हैं, बल्कि माता-पिता द्वारा की गई टिप्पणियाँ व अवलोकन और स्वयं बच्चों द्वारा किए गए सरल स्व-आकलन भी शामिल हो सकते हैं।

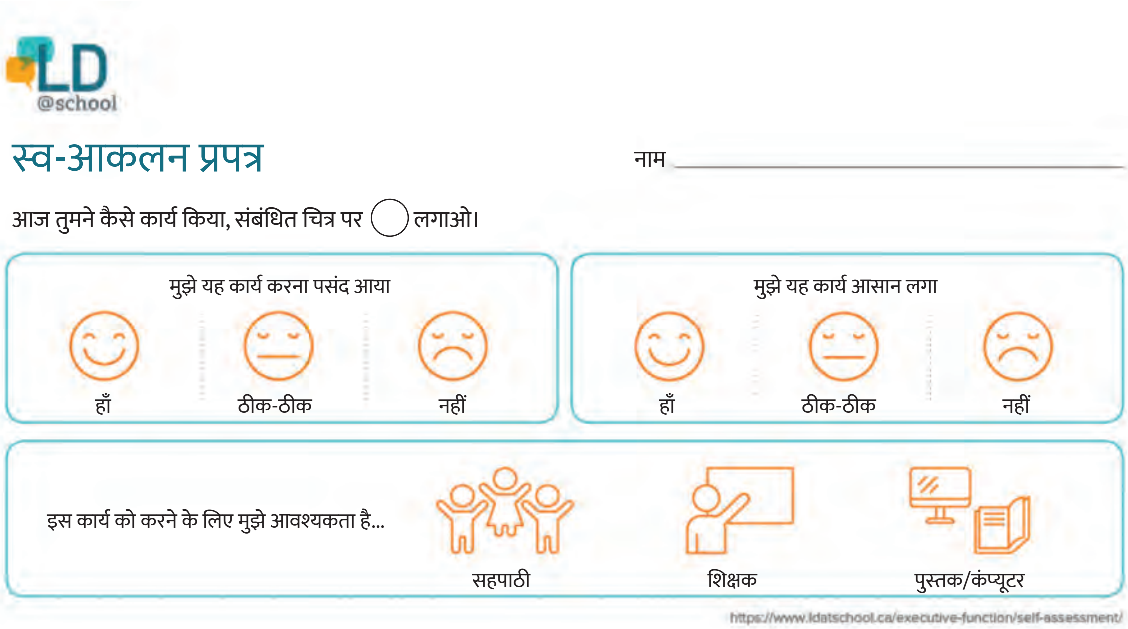

चित्र 6.4क– बच्चों के लिए एक नमूना स्व-आकलन प्रपत्र

समग्र प्रगति कार्ड एक निश्चित समय में कक्षा की गतिविधियों के माध्यम से जमा किए गए प्रमाणों के आधार पर एक बच्चे की प्रगति की व्यक्तिगत और व्यापक रिपोर्टिंग है। इसमें माता-पिता के आकलन और बच्चे के सीखने के बारे में समझ को भी दर्ज करना महत्वपूर्ण है।

कई हितधारकों के लिए समग्र प्रगति कार्ड प्रासंगिक हो सकता है। यह वह माध्यम है, जिससे स्कूल बच्चे के सीखने की प्रगति को परिवारों तक पहुँचाता है। इसका विश्लेषण करके शिक्षक बच्चे की बहुत अच्छी समझ प्राप्त कर सकते हैं। यह सूचना का प्राथमिक स्रोत है, जिस पर अभिभावक-शिक्षक बैठकें प्रभावी ढंग से आयोजित की जा सकती हैं।

व्यवस्थित रूप से लगातार तैयार किए गए समग्र प्रगति कार्ड स्कूली व्यवस्था के अधिकारियों के लिए महत्वपूर्ण स्रोत हैं। इससे जमा किए गए आँकड़ों का उपयोग बड़े पैमाने पर बच्चों की सीखने की उपलब्धियों को प्रभावी ढंग से समझने के लिए किया जा सकता है। इस समझ का उपयोग जहाँ उपयुक्त हो, वहाँ प्रभावी और प्रासंगिक हस्तक्षेप प्रदान करने के लिए किया जा सकता है।

6.4.3.1 समग्र प्रगति कार्ड में दक्षताएँ

समग्र प्रगति कार्ड में एक ऐसा खंड होना चाहिए, जो दक्षता आधारित हो। इस खंड में पाठ्यचर्या के विशिष्ट उद्देश्यों के लिए परिभाषित हर एक दक्षता के आगे बच्चे की प्रगति को लगातार दर्ज किया जाना चाहिए।

इन दक्षताओं को आगे सीखने के प्रतिफलों में एक निर्धारित पथ पर विकास के पाँच चरणों (A, B, C, D, E) में बाँटा जा सकता है। ये चरण लगभग एक आयु समूह को इंगित करते हैं, लेकिन आवश्यक नहीं कि वे एक विशिष्ट आयु समूह से ही जुड़े हों। बच्चे विकास के एक चरण से दूसरे चरण में उस गति से आगे बढ़ सकते हैं, जिसमें वे सहज महसूस करते हैं। उनमें से कुछ इसे तेज गति से प्राप्त कर सकते हैं और कुछ को अधिक समय लग सकता है। इन पाँच चरणों में दर्शाए गए सारे संकेतक सीखने के प्रतिफल होते हैं, जो उपलब्धि के आकलन के लिए एक रूब्रिक के रूप में कार्य करते हैं।

शिक्षक सीखने के निर्धारित पथ में बच्चे के वर्तमान चरण के आधार पर हर एक दक्षता को चिह्नित कर सकता है। इसके अलावा, हर एक चरण को नीचे दी गई तालिका के अनुसार उपलब्धि के विभिन्न स्तरों (I, II, III, IV) के लिए चिह्नित किया जा सकता है—

तालिका 6.4 क

बच्चों को ग्रेड देना	स्तर I	स्तर II	स्तर III	स्तर IV
बच्चों को उनके सीखने और विकास में सहयोग करने के लिए उनके ग्रेडेशन का विवरण	दी गई समय-सीमा में शिक्षक की मदद से सीखने के प्रतिफलों को हासिल करने का प्रयास करता है।	दी गई समय-सीमा में शिक्षकों की मदद से सीखने के प्रतिफलों को हासिल करता है।	स्वयं से ही सीखने के प्रतिफलों को प्राप्त करता है।	सीखने के प्रतिफलों को हासिल करता है। सीखने के प्रतिफलों को प्राप्त करने में दूसरों को मदद करता है और सहारा देता है। अधिक चुनौतीपूर्ण कार्यों की आवश्यकता है।
विवरण	**आरंभिक**	**प्रगतिशील**	**प्रवीण**	**उन्नत**

वास्तव में, प्रत्येक दक्षता में A-I हो सकता है जो कि उपलब्धि का निम्नतम स्तर है और E-IV जो कि उपलब्धि का उच्चतम स्तर है। उदाहरण के लिए "**सरल गीतों, तुकबंदियों और कविताओं को सुनता है और उनकी सराहना करता है**", दक्षता के सीखने के प्रतिफल आगे दिए गए हैं—

तालिका 6.4 ख

	A	B	C	D	E
	दक्षता— सरल गीतों, तुकबंदियों और कविताओं को सुनता है और उनकी सराहना करता है				
	आयु 3–8 वर्ष				
1	• अलग-अलग तरह के गीतों और कविताओं को सुनना	• नियमित रूप से आस-पास सुने जाने वाले अलग-अलग भाषाओं के तरह-तरह के गीतों को सुनना और उन्हें आनंद लेते हुए गुनगुनाना	• लंबे (परिचित) गीत या कविताएँ ध्यान से सुनना और उनके बारे में बातचीत करना	• लंबे (अपरिचित) गीत या कविताएँ ध्यान से सुनना और उनके बारे में बातचीत करना	• किसी विशेष तरह के गीतों और कविताओं को सुनने में पसंद दिखाना और अपनी पसंद का कारण बताना
2	• किसी गीत या तुकबंदी को दोहराना	• स्वर और हाव-भाव के साथ गीत और तुकबंदी गाना या सुनाना	• स्मृति के सहारे छोटे-छोटे (4–5 वाक्य के) गीत गाना या कविता सुनाना	• स्मृति के सहारे छोटे-छोटे (10 वाक्य के) गीत गाना या कविता सुनाना	• स्मृति से कई छंदों वाले गीत गाना या कविता सुनाना

अगर बच्चा गीत और कविताओं को सुनने में अपनी पसंद व्यक्त करता है और अपनी स्मृति से कई छंदों वाली कविता पढ़ता या गाता है, तो इस योग्यता के लिए समग्र प्रगति कार्ड में E-IV के रूप में दर्ज किया जाएगा। यह अंकन मानता है कि बच्चे ने पिछले चरणों (A से D) के सीखने के प्रतिफलों के लक्ष्य को प्राप्त कर लिया है।

अध्याय 7

समय का नियोजन

बच्चों के लिए एक सरल और सुव्यवस्थित दिनचर्या बहुत महत्वपूर्ण है। ऐसी दिनचर्या बच्चों को सुरक्षा का एहसास दिलाती है, क्योंकि वे जानते हैं कि दिन-भर में क्या-क्या होगा। यह एहसास उन्हें किसी भी जगह पर अच्छी तरह से रमने में भी मदद करता है।

इस अध्याय का मुख्य उद्देश्य समय का उपयुक्त नियोजन करना है, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि बच्चे सुगमतापूर्वक विकास के सभी क्षेत्रों में उपयुक्त अवसर और सीखने के अनुभव प्राप्त कर सकें।

खंड 7.1
दिन का नियोजन

बच्चों को अपने आस-पास के वातावरण की जाँच-पड़ताल में मज़ा आता है। हालाँकि, जैसे-जैसे वे बड़े होते हैं, उनके लिए निर्देशित व संरचित खेल आधारित गतिविधियाँ आयोजित करने की आवश्यकता होती है।

पूरे दिन के लिए ध्यानपूर्वक योजना बनाने की आवश्यकता होती है, ताकि बच्चों के विकास के सभी क्षेत्रों पर पर्याप्त समय और ध्यान दिया जा सके। विकास के प्रत्येक क्षेत्र की गतिविधियाँ प्राय: दूसरे क्षेत्रों के विकास से भी जुड़ी होती हैं (उदाहरण के लिए, एक अच्छी कहानी भाषा के विकास में तो मदद करेगी ही, पर साथ-ही-साथ सामाजिक-भावनात्मक और नैतिक विकास में भी योगदान देगी)। तय की गई दिनचर्या से यह सुनिश्चित होना चाहिए कि बच्चों को ऐसे अधिक-से-अधिक अवसर मिलें, जहाँ वे प्रत्येक क्षेत्र में अलग-अलग तरह के अनुभव प्राप्त कर सकें।

(क) प्रतिदिन की दिनचर्या के लिए ध्यान रखने योग्य बातें

दिन का नियोजन संस्था के नियम-कायदों और काम करने के लिए उपलब्ध दिनों एवं प्रत्येक कार्यदिवस हेतु निर्धारित घंटों के आधार पर आधारित होगा।

हर गतिविधि की योजना बनाते समय बच्चे की ध्यान अवधि (attention span) को मद्देनज़र रखना होगा। बच्चे द्वारा शुरू की गई गतिविधियों और शिक्षक द्वारा निर्देशित गतिविधियों, सामूहिक (पूरा समूह या छोटा समूह) तथा व्यक्तिगत गतिविधियों तथा एक के बाद एक होने वाली गतिविधियों के बीच एक संतुलन रखना होगा (मसलन, खेलकूद की गतिविधि के बाद शांत गतिविधि, सामूहिक गतिविधि के बाद व्यक्तिगत गतिविधि, बाहर की गई गतिविधि के बाद कमरे के अंदर की कोई गतिविधि)।

इसी तरह ध्यान रखना होगा कि कला और शिल्प, बाहर खेले जाने वाले खेल, स्वतंत्र खेल (फ्री प्ले) आदि सभी को पूरे दिन में पर्याप्त समय और ध्यान मिले।

(ख) 3 से 6 वर्ष की उम्र के बच्चों के लिए प्रतिदिन की दिनचर्या का चित्रण

3 से 6 वर्ष की उम्र के बच्चों की दिनचर्या को सुनियोजित करने के कई तरीके हो सकते हैं।

इसके दो उदाहरण नीचे दिए गए हैं—

पहला उदाहरण उन संदर्भों के लिए उपयुक्त है, जहाँ बच्चे घेरा समय (Circle time), कहानी समय, अवधारणा के लिए समय/ संख्या ज्ञान जैसी शिक्षक निर्देशित गतिविधियों से अनुभव प्राप्त करते हैं। इसके साथ ही, जहाँ बच्चों के लिए स्वतंत्र खेल और कोना समय (Corners time) इनसे अलग और स्वतंत्र गतिविधियाँ होती हैं।

तालिका 7.1 क

कब से	कब तक	अवधि	गतिविधि
सुबह की दिनचर्या / स्वतंत्र खेल / कोना समय			
09:30	10:15	45 मिनट	घेरा समय / बातचीत
10:15	10:30	15 मिनट	नाश्ता
10:30	10:45	15 मिनट	कविता / गीत / संगीत / उछल-कूद (मूवमेंट)
10:45	11:45	1 घंटा	अवधारणा पर काम / संख्या पूर्व अवधारणाएँ
11:45	12:15	30 मिनट	कला / शिल्प / स्वतंत्र खेल
12:15	13:00	45 मिनट	कोना समय
13:00	13:45	45 मिनट	भोजनावकाश (3–4 साल के बच्चों की छुट्टी)
13:45	14:30	45 मिनट	शुरुआती पढ़ना-लिखना / कहानी समय
14:30	15:00	30 मिनट	खेलकूद और छुट्टी की तैयारी

दूसरा उदाहरण उन संदर्भों में ज़्यादा उपयुक्त है, जहाँ कम बच्चे हैं और उनके पास काफ़ी अलग-अलग प्रकार की उपयुक्त सामग्री भी अंतर्क्रिया के लिए उपलब्ध है। यहाँ ज़्यादा ज़ोर खुद से सीखने पर होता है और बच्चे खुद ही ध्यानपूर्वक सामग्री का उपयोग करना सीखते हैं।

बच्चों को 'कार्य-समय' (Work Time) दिया जाता है और इस दौरान वे जो गतिविधि करना चाहते हैं, उसका चयन वे खुद कर सकते हैं। वे बच्चे अपनी पसंद की गतिविधि का चयन करते हैं और उस गतिविधि के लिए उपलब्ध सामग्री का वे अपनी मर्जी से उपयोग करते हैं। शिक्षक बच्चों की गतिविधियों को ध्यानपूर्वक देखते रहते हैं और ज़रूरत के अनुसार मदद करते हैं। कार्य-समय के दौरान बच्चों द्वारा किए गए काम के आधार पर शिक्षक प्रत्येक बच्चे के लिए आगे की गतिविधियाँ तय करते हैं। विकास के विभिन्न क्षेत्रों (उदाहरण के लिए, शारीरिक, संज्ञानात्मक, भाषा, कला) को ध्यान में रखते हुए गतिविधियाँ और इन गतिविधियों के लिए ज़रूरी सामग्री को व्यवस्थित किया जाता है। इस पूरी व्यवस्था से बच्चों को भी परिचित करवाया जाता है।

तालिका 7.1 ख

कब से	कब तक	अवधि	गतिविधि
सुबह की दिनचर्या + खामोशी से खेले जाने वाले खेल			
09:30	10:15	45 मिनट	घेरा समय (बातचीत, गीत, कविताएँ)
10:15	10:30	15 मिनट	नाश्ता
10:30	12:15	1 घंटा 45 मिनट	कार्य-समय
12:15	13:00	45 मिनट	कला/ शिल्प/ खेल /स्वतंत्र खेल
13:00	13:45	45 मिनट	भोजनावकाश (3–4 वर्ष के बच्चों की छुट्टी)
13:45	15:00	1 घंटा 15 मिनट	भाषा और शुरुआती पढ़ना-लिखना (उम्र 4–6)

इन दोनों उदाहरणों में विद्यालय का कुल समय साढ़े पाँच घंटे है। इसमें लगभग साढ़े चार घंटे 4 से 6 साल के बच्चों को सक्रिय रूप से निर्देशित सीखने-सिखाने के लिए हैं।

(ग) 6 से 8 साल के बच्चों के लिए दैनिक/साप्ताहिक दिनचर्या का चित्रण

6 से 8 साल के बच्चों के लिए उनकी दिनचर्या थोड़ी लंबी होगी और कुछ हद तक ज़्यादा व्यवस्थित भी। जहाँ 3–6 साल के बच्चों के साथ सभी भाषाओं पर एक साथ काम किया जा सकता है; वहीं इस उम्र के बच्चों के लिए हर भाषा के लिए कुछ निश्चित समय देना ज़रूरी है। साक्षरता, संख्या ज्ञान और कला के लिए विशेष खंड शामिल किए जा सकते हैं। पहली भाषा (L1) के लिए 90 मिनट और द्वितीय भाषा (L2) के लिए 60 मिनट का समय चाहिए। गणित और संख्या ज्ञान के लिए पूरे दिन में 60 मिनट का समय ज़रूरी होगा। जैसा कि अध्याय 4 के खंड 4.5 में विवरण दिया गया है, ये समयावधियाँ विभिन्न कालांशों में भी व्यवस्थित की जा सकती हैं।

तालिका 7.1 ग

कब से	कब तक	अवधि	गतिविधि
09:00	09:30	30 मिनट	घेरा समय – गीत / उछल-कूद
09:30	10:00	30 मिनट	L1 – मौखिक भाषा
10:00	10:30	30 मिनट	L1 – शब्द पहचान
10:20	10:35	15 मिनट	नाश्ता
10:35	11:35	1 घंटा	गणित
11:35	12:05	30 मिनट	कला और शिल्प
12:05	12:45	40 मिनट	L1 – पढ़ना / लिखना
12:45	13:30	45 मिनट	भोजनावकाश
13:30	14:30	1 घंटा	L2 – मौखिक भाषा, शब्द पहचान
14:30	15:00	30 मिनट	खेल

ज़्यादा समय होने से विभिन्न गतिविधियों जैसे कला, खेलकूद, बागवानी आदि के लिए भी अधिक समय मिल पाएगा। उदाहरण के लिए, नीचे दी गई साप्ताहिक समय-सारणी को देखिए, जो इस तरह की संभावनाओं को दर्शाती है। जैसा कि पहले भी बताया गया है, गणित और पहली भाषा (L1) के लिए एक से अधिक कालांशों को मिलाकर गतिविधियाँ आयोजित करनी होंगी।

तालिका 3.1 घ

कब से	कब तक	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार
09:00	10:00	गणित	गणित	L2	गणित	L2
10:00	10:45	L1	L1	L1	L1	L1
10:45	11:00	नाश्ता				
11:00	12:00	L1	L1	L1	L1	L1
12:00	13:00	L2	L2	गणित	L2	कला
13:00	13:45	भोजनावकाश				
13:45	14:45	कला	गणित	कला	कला	गणित
14:45	15:30	पुस्तकालय	बागवानी	खेल	बागवानी	खेल

(घ) विद्यालय का वार्षिक कैलेंडर

विद्यालय का कैलेंडर एक वार्षिक योजना होती है, जो वर्ष भर में कौन-कौन से विशेष कार्यक्रम होंगे, वर्ष में कब, कौन खास कार्यक्रम होंगे, इस बारे में बताता है। शिक्षक इस कैलेंडर के अनुसार अपनी कक्षा की गतिविधियों की योजना बना सकते हैं। यह विद्यार्थियों और उनके परिवारों को भी सूचित करता है कि विद्यालय में कब क्या होने वाला है, ताकि वे भी उसकी तैयारी कर सकें। विद्यालय का यह कैलेंडर अभिभावकों और परिवारों सहित सभी की पहुँच में होना चाहिए।

विद्यालय का यह कैलेंडर, जिसमें विद्यालय के सभी खास कार्यक्रमों और उनके समय का विवरण हो, विद्यालय का अकादमिक वर्ष शुरू होने के साथ ही बना लिया जाना चाहिए। इसे स्थानीय ज़रूरतों को ध्यान में रखते हुए बनाया जाना चाहिए। किसी विद्यालय की खास परिस्थिति को देखते हुए आवश्यकता के अनुसार इसमें कुछ छोटे-मोटे परिवर्तन भी किए जा सकते हैं।

कैलेंडर में वर्षभर में होने वाले विद्यालय के सभी महत्वपूर्ण कार्यक्रमों का विवरण हो (उदाहरण के लिए, विद्यालय की अवधि, छुट्टियाँ, वार्षिक उत्सव, खेल दिवस, विद्यालय के अन्य कार्यक्रम, प्रदर्शनी/फील्ड ट्रिप, अभिभावक-शिक्षक बैठक, शिक्षक की पेशेवर तैयारी के लिए होने वाले कार्यक्रम, विद्यालय की बैठकें आदि)।

पढ़ाए जाने वाले विषयों का एक वार्षिक कैलेंडर विद्यालय द्वारा बनाया जाए, इस पर भी विचार किया सकता है। इससे शिक्षकों को अपनी कक्षा के लिए गतिविधियाँ बनाने और पाठ्यचर्या में वे कितना आगे बढ़ पाए हैं, इसका विवरण रखने में मदद मिलेगी।

अध्याय 8

अतिरिक्त महत्वपूर्ण क्षेत्र

सीखने और विकास के लिए बुनियादी स्तर महत्वपूर्ण है। हमारा उद्देश्य एक सुरक्षित, सहायक और उत्तरदायी वातावरण प्रदान करना है, जो हमारे साथ सीखने वाले हर बच्चे की गरिमा को बनाए रखता है।

खंड 8.1 उन बच्चों की बात करता है, जो जोखिम में (children at risk) हैं। शिक्षकों और शैक्षणिक संस्थानों के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वे ऐसे जोखिमों की जल्द-से-जल्द पहचान करें और उनका समाधान करें ताकि सभी बच्चे अपने सीखने के उद्देश्यों को प्राप्त कर सकें।

सीखने के दौरान हमारे बच्चों को सुरक्षित होना चाहिए। खंड 8.2 उन सुरक्षा पहलुओं को रेखांकित करता है, जो उस संस्था की ज़िम्मेदारी है जिसमें हमारे बच्चे हैं।

खंड 8.1
विकासात्मक विलंब और दिव्यांगता/अक्षमता को संबोधित करना

दीप्ति छह साल की एक सक्रिय बच्ची है, जिसे बोर्ड-गेम खेलना और कहानियाँ पढ़ना पसंद है। दीप्ति इधर-उधर जाने के लिए व्हीलचेयर का उपयोग करती है और विद्यालय में काम करने के लिए अपने हाथों का उपयोग करती है। उसका विद्यालय कक्षा तक ले जाने वाली तीन सीढ़ियों को उसके लिए रैंप में बदल देता है। उसकी शिक्षिका कक्षा को इस प्रकार व्यवस्थित करती है कि दीप्ति अपनी व्हीलचेयर में आसानी से घूम सके। वह दीप्ति को ऐसी गतिविधियाँ देती है, जिन्हें टेबल पर ही पूरा किया जा सकता है और उसकी व्हीलचेयर उस टेबल के नीचे जा सकती है। दीप्ति के दोस्त उसे धैर्यपूर्वक सुनते हैं, यद्यपि दीप्ति धीरे-धीरे बोलती है। शिक्षक दीप्ति की प्रगति को समझने के लिए उसके माता-पिता और डॉक्टर के साथ लगातार संपर्क में रहते हैं और उसके अनुसार स्कूल में गतिविधियों की योजना बनाते हैं।

इस्माइल पाँच साल का एक हँसमुख बच्चा है, जिसे अपने सभी सहपाठियों के साथ बात करना और मस्ती करना पसंद है। एक सप्ताह से अधिक समय से वह बहुत शांत है और सुस्त रहता है। शिक्षक उसे देखते हैं, उससे आराम से बात करते हैं, उसके परिवार से मिलते हैं और उन्हें पता चलता है कि उसके पेट में लगातार दर्द हो रहा है, जिससे वह पर्याप्त भोजन नहीं कर रहा और कुपोषित हो रहा है। शिक्षक यह सुनिश्चित करते हैं कि उसका परिवार उसे स्वास्थ्य केंद्र ले जाए और वह अपना भोजन अच्छी तरह से खाए। कुछ सप्ताह के चिकित्सा उपचार और नियमित भोजन के बाद, इस्माइल अपने हँसमुख, खुशमिज़ाज स्वभाव में वापस आ जाता है।

सेल्वी तीन साल की खुशमिज़ाज बच्ची है, जिसे पानी और रेत से खेलना पसंद है। वह अधिक नहीं बोलती है। शिक्षक ने गौर किया कि अगर कोई पीछे से उसका नाम पुकारता है, तो सेल्वी जवाब नहीं देती है। वह यह भी देखते हैं कि सेल्वी को एक साधारण कहानी को समझने में समय लगता है, जब कहानी केवल शब्दों के साथ सुनाई जाती है। वह इस ओर उसके परिवार का ध्यान खींचते हैं और सेल्वी की माँ को भी यही चीज़ें नज़र आने लगती हैं। वे जल्दी से स्थानीय डॉक्टर से मिलने और सलाह लेने का फैसला करते हैं। सेल्वी अब श्रवण यंत्र पहनती है, उसने कुछ शब्दों का उपयोग करना शुरू कर दिया है और अब वह कक्षा की गतिविधियों में बेहतर तरीके से भाग लेने में सक्षम है।

हर बच्चा अनोखा होता है। हम जानते हैं कि कोई भी दो बच्चे बिल्कुल एक तरह से नहीं सीखते हैं। दीप्ति, इस्माइल और सेल्वी की तरह, कई बच्चों को कई कारणों से स्कूल की गतिविधियों में भाग लेने में कठिनाई हो सकती है। कुछ कारण अस्थायी हो सकते हैं (इस्माइल जैसे) और कुछ लंबे समय तक चलने वाले हो सकते हैं (दीप्ति और सेल्वी जैसे)।

यद्यपि बच्चों का विकास एक सुसंगत निर्धारित पथ का अनुसरण करता है और हर व्यक्ति प्रत्येक प्रमुख अवस्थाओं से गुज़रता है, सभी में विभिन्न क्षेत्रों के विकास में व्यक्तिगत अंतर होते हैं। सभी बच्चे एक ही समय पर विकासात्मक मुख्य पड़ावों को हासिल नहीं करते हैं। ये व्यक्तिगत अंतर विभिन्न कारकों के कारण होते हैं।

बच्चे के जीवन के पहले आठ वर्ष वृद्धि और विकास के लिए सबसे महत्वपूर्ण वर्ष होते हैं। ये वर्ष उन रास्तों को निर्धारित करते हैं, जिन पर भविष्य की शिक्षा आधारित है। जितनी जल्दी हम सीखने और विकास में आने वाली किसी भी चुनौती को पहचानते और उसका समाधान करते हैं, उसके निवारण और सफलता की संभावना उतनी ही बेहतर होती है। सर्वोत्तम पोषण और देखभाल करने वाला और उत्प्रेरक वातावरण इस स्तर पर सीखने और विकास के लिए महत्वपूर्ण होता है।

हमें बच्चों को इस तरह से सहारा देने की आवश्यकता है कि प्रारंभिक और बाद की स्कूली शिक्षा के बीच अंतर के बजाय एक सेतु बन सके।

8.1.1 विकासात्मक विलंब और दिव्यांगता को पहचानना

विकासात्मक विलंब उस स्थिति को बताता है, जब कोई बच्चा सामान्य विकास के प्रमुख पड़ावों को प्राप्त करने में स्पष्ट रूप से पीछे रहता है। यह विलंब उस स्वाभाविक अंतर से अलग होता है, जो बच्चों के व्यक्तिगत विकास में देखा जाता है। विकासात्मक विलंब किसी भी विकास क्षेत्र में हो सकता है— शारीरिक, भाषायी, सामाजिक–भावनात्मक, संज्ञानात्मक या इन सभी के मिले-जुले क्षेत्र में। उदाहरण के लिए, चार साल की आयु में तीन सीढ़ियों से उतरने और चढ़ने के लिए संघर्ष करने वाला बच्चा या पाँच साल की आयु में एक परिचित भाषा में तीन शब्दों के वाक्यों को समझने के लिए संघर्ष करने वाला बच्चा या तीन साल की आयु में आराम से बैठने के लिए संघर्ष करने वाला बच्चा।

विकासात्मक दिव्यांगता जैसे– ऑटिज्म, स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर, सेरेबल पाल्सी, बौद्धिक दिव्यांगता, दृष्टिबाधित, श्रवणबाधित आमतौर पर शैशवावस्था या बचपन के दौरान स्पष्ट हो जाती है। इसे सीखने, भाषा, संप्रेषण, संज्ञान, व्यवहार, समाजीकरण या गतिशीलता में विलंबित विकास और कार्यात्मक सीमाओं (functional limitation) द्वारा चिह्नित किया जाता है।

कभी-कभी विकासात्मक विलंब और दिव्यांगता के बीच अंतर को जानना कठिन होता है। कभी-कभी इन शब्दों को एक-दूसरे के स्थान पर उपयोग किया जाता है। बच्चे अक्सर निरंतर सहयोग और प्रोत्साहन से विकासात्मक विलंब को दूर कर लेते हैं या उससे आगे निकल जाते हैं। जबकि, दिव्यांगता लंबे समय तक बनी रह सकती है। हालाँकि, बच्चे उचित सहयोग से उन्हें भी प्रबंधित करने में काफ़ी प्रगति कर सकते हैं।

समय पर हस्तक्षेप के लिए, विकासात्मक विलंब और दिव्यांगता के 'जोखिम में (at risk)' बच्चों की जल्दी पहचान बहुत महत्वपूर्ण है। समय पर हस्तक्षेप विकासात्मक विलंब और दिव्यांगता, दोनों को दूर करने में मदद कर सकता है।

8.1.2 बुनियादी स्तर के संस्थानों को क्या करना चाहिए?

शैक्षणिक संस्थान और शिक्षक विकासात्मक विलंब और दिव्यांगता का निदान करने के लिए अधिकृत नहीं हैं। यह अधिकृत चिकित्सा पेशेवरों का काम है।

हालाँकि, शिक्षक विकासात्मक विलंब और दिव्यांगता के जोखिम वाले बच्चों की पहचान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बच्चों के लिए जल्द-से-जल्द सही प्रकार की सहायता प्राप्त करना महत्वपूर्ण है, ताकि भविष्य की कठिनाइयों को यथासंभव कम किया जा सके।

(क) शिक्षकों को इस धारणा से शुरुआत करनी चाहिए कि प्रत्येक बच्चा अपनी गति से सीखता है। सीखने और विकास के स्तरों में अंतर हर बच्चे की बढ़ती आयु का सामान्य हिस्सा होता है।

(ख) लेकिन अगर उन्हें कोई ध्यान देने योग्य या सतत समस्या दिखाई देती है, तो पहला कदम है कि सभी विकासात्मक क्षेत्रों में बच्चे की गतिविधियों को समझने के लिए बच्चे का ध्यानपूर्वक अवलोकन किया जाए।

(ग) **दूसरा कदम** कुछ बुनियादी सवालों के आधार पर बच्चे के दैनिक या साप्ताहिक अवलोकन का रिकॉर्ड रखना होगा। नीचे दी गई विश्व स्वास्थ्य संगठन की 10 प्रश्नों वाली सूची का उपयोग जोखिम वाले बच्चों की पहचान करने और उनका अवलोकन करने के लिए एक 'गाइड' के रूप में किया जा सकता है।

बॉक्स 8.1 क

विश्व स्वास्थ्य संगठन की 10 प्रश्नीय जाँच सूची

- *अन्य बच्चों की तुलना में, क्या बच्चे को बैठने, खड़े होने या चलने में कोई गंभीर विलंब हुआ?*
- *अन्य बच्चों की तुलना में, क्या बच्चे को दिन में या रात में देखने में कठिनाई होती है?*
- *क्या बच्चे को सुनने में कठिनाई होती है?*
- *जब आप बच्चे को कुछ करने के लिए कहते हैं, तो क्या वह समझ नहीं पाता कि आप क्या कह रहे हैं?*
- *क्या बच्चे को चलने या हाथ हिलाने में कठिनाई होती है या उसके हाथ या पैर में कमज़ोरी और/या अकड़न है?*
- *क्या बच्चे को कभी-कभी दौरे पड़ते हैं, उसका शरीर कठोर हो जाता है या होश खो बैठता है?*
- *क्या बच्चा अपनी आयु के अन्य बच्चों की तरह काम करना सीखता है?*
- *क्या बच्चा बोल पाता है (क्या वह स्वयं के शब्दों में समझा सकता है, क्या वह कोई पहचानने योग्य शब्द कह सकता है)?*

- *तीन से नौ साल के बच्चों के लिए पूछें—क्या बच्चे का बोलना किसी भी तरह से सामान्य से अलग है (उसके परिवार के अलावा अन्य लोगों द्वारा समझने के लिए पर्याप्त स्पष्ट नहीं है)? दो साल के बच्चों के लिए पूछें—क्या वह कम-से-कम एक वस्तु (उदाहरण के लिए, एक जानवर, एक खिलौना, एक कप, एक चम्मच) का नाम बता सकता है?*
- *अपनी आयु के अन्य बच्चों की तुलना में क्या बच्चा किसी भी तरह से सुस्त या धीमा दिखाई देता है?*

(घ) यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि सभी बच्चों को उचित पोषण और देखभाल की आवश्यकता होती है, चाहे उनकी गतिविधि या विकास का स्तर कुछ भी हो। शिक्षक को जोखिम वाले बच्चे के साथ वैसे ही खेलना और काम करना चाहिए जैसे वे अन्य बच्चों के साथ करते हैं। कभी-कभी चीज़ों को व्यवस्थित करने के लिए बच्चों के दैनिक कार्यक्रम में अतिरिक्त ध्यान, समायोजन, अकेले में कुछ समय या आहार में थोड़े बदलाव की आवश्यकता होती है।

(ङ) यदि समस्या बनी रहती है और रोज़मर्रा की कोशिशों से ठीक नहीं होती है, तो **तीसरा कदम** माता-पिता और परिवार के साथ इस समस्या को साझा करना होगा। बातचीत यथासंभव सौम्यता से होनी चाहिए और इसमें बच्चे की स्थिति पर कोई निर्णय या अंतिम निष्कर्ष नहीं होना चाहिए— यह सिर्फ़ एक साझा चिंता होनी चाहिए।

(च) यदि परिवार सहमत है, तो **चौथा कदम** होगा कि बच्चे को एक उपयुक्त पेशेवर चिकित्सक के पास ले जाया जाए ताकि यह जाँचा जा सके कि क्या समस्या वास्तविक है और क्या बच्चे को वास्तव में विकासात्मक विलंब और दिव्यांगता का खतरा है। एक विकासात्मक बाल रोग विशेषज्ञ से परामर्श लेना सबसे अच्छा होगा। संस्था के पास ऐसे संदर्भों के लिए स्थानीय संस्थानों/संगठनों और पेशेवरों की एक सूची होनी चाहिए, ताकि शिक्षक परिवार को उसके अनुसार मार्गदर्शन कर सके।

(छ) यदि पेशेवर चिकित्सक जोखिम की पुष्टि करता है, तो परिवार, शिक्षक और चिकित्सा पेशेवर को मिलकर अगले चरणों की योजना बनानी चाहिए। इसमें एक दिव्यांगता रिहैबिलिटेशन पेशेवर (जैसे फिजियोथेरेपिस्ट, स्पीच थेरेपिस्ट, विशेष शिक्षक) से परामर्श लेना, दवाएँ शुरू करना, सहायक उपकरणों जैसे श्रवण यंत्र या बैसाखी का उपयोग करना, सरल बातचीत और भाषा की गतिविधियाँ या चिकित्सा (therapy), साधारण शारीरिक गतिविधियाँ या चिकित्सा (therapy), संज्ञानात्मक व्यायाम और कक्षा के लिए निर्देश या कुछ और जो बच्चे के लिए आवश्यक है, शामिल हैं।

(ज) **पाँचवाँ कदम** विद्यालय में बच्चे को केंद्र में रखकर उसके साथ काम शुरू करना होगा।

i. शिक्षक को बच्चे का एक प्रोफ़ाइल बनाना चाहिए, जिसे नियमित रूप से अपडेट किया जाता है।

ii. चिकित्सक या रिहैबिलिटेशन पेशेवर द्वारा सुझाई गई उपयुक्त चेकलिस्ट या उपकरण के आधार पर नियमित आकलन करना होगा।

iii. शिक्षक को माता-पिता और देखभाल करने वालों के परामर्श से बच्चे के लिए एक व्यक्तिगत शिक्षण योजना तैयार करने की आवश्यकता है। कृपया इस खंड के अंत में उसका नमूना देखें।

iv. यदि बच्चे की दिव्यांगता गंभीर है, जिसके लिए स्कूल के पास पर्याप्त संसाधन नहीं हैं, तो वैकल्पिक समाधान खोजने के लिए परिवार, संबंधित शिक्षा अधिकारियों और चिकित्सा/रिहैबिलिटेशन पेशेवर के साथ इस पर विस्तार से चर्चा करना महत्वपूर्ण होगा।

बॉक्स 8.1 ख

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की प्रशस्त (PRASHAST) एक चेकलिस्ट है, जो जोखिम वाले बच्चों की पहचान करने में सक्षम बनाती है। इस चेकलिस्ट के दो भाग हैं। पहला भाग, प्रथम स्तर की स्क्रीनिंग के लिए नियमित शिक्षकों द्वारा उपयोग के लिए है और दूसरा भाग, दूसरे स्तर की स्क्रीनिंग के लिए विशेष शिक्षकों और अन्य लोगों द्वारा उपयोग के लिए है। यह अवैज्ञानिक निदान और बच्चों को अनावश्यक वर्गीकृत (लेबलिंग) करने से बचाती है। यह दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम 2016 (RPWD) के अनुरूप है।

8.1.3 शिक्षक दैनिक कक्षा में क्या कर सकते हैं?

सभी बच्चे अलग-अलग तरीकों से शिक्षक को सुनकर, देखकर और जुड़कर सीखते हैं। इस बात पर ध्यान दिए बिना कि जोखिम वाले बच्चे को अन्य पेशेवरों से सहयोग मिलता है या नहीं, शिक्षक निम्नलिखित सरल रणनीतियों का उपयोग करके बच्चों की मदद कर सकते हैं—

(क) जितना संभव हो, बच्चे के बारे में जानें।

i. उदाहरण के लिए, बच्चा क्या कर सकता है और क्या नहीं, बच्चे को क्या करना पसंद है और क्या करना पसंद नहीं है।

ii. वे कौन-से विभिन्न तरीके हैं, जिनसे बच्चा सर्वोत्तम रूप से सीखता है, बच्चे के घर का वातावरण, परिवार और समुदाय के बारे में जाने।

(ख) बच्चे के लिए यथार्थवादी और प्राप्त करने योग्य लक्ष्य निर्धारित कीजिए।

i. उदाहरण के लिए, यदि अमित की शब्दावली में केवल 30 शब्द हैं और वह दो शब्दों को संयोजित करने के लिए संघर्ष कर रहा है, 'तो अमित एक महीने में 3–4 शब्दों वाले वाक्यों में बोलना शुरू करेगा', यह अवास्तविक लक्ष्य होगा। एक यथार्थवादी लक्ष्य होगा, 'अमित एक महीने में लगभग 50 अर्थपूर्ण शब्द बोल सकेगा और दो शब्दों को जोड़कर वाक्यांश बनाने का प्रयास करेगा।'

(ग) बच्चे को कक्षा में जितना हो सके, अपने पास बैठाएँ।

(घ) सरल, परिचित भाषा का प्रयोग करें तथा स्पष्ट रूप से और धीरे-धीरे बोलें।

(ङ) बच्चे की सफलता पर उदारतापूर्वक प्रशंसा और उसे प्रोत्साहित करें।

(च) एक बहुसंवेदी दृष्टिकोण का उपयोग करें।

i. उदाहरण के लिए, ऐसे बालगीत का उपयोग करें, जिसमें बोलना और अभिनय एक साथ हो।

ii. चित्र के माध्यम से दिखाते हुए एक अवधारणा सिखाएँ, उसके बारे में बात करें और चित्र में दिख रही वस्तु को बनाने के लिए बच्चों को प्रेरित करें।

(छ) जानकारी को यथासंभव पुख्ता बनाएँ।

i. उदाहरण के लिए, पैटर्न सिखाने हेतु उपलब्ध वस्तुओं जैसे– लकड़ी, पत्थरों, खिलौनों और ब्लॉकों का उपयोग करें और फिर कागज़-पेंसिल से संबंधित कार्यों पर आगे बढ़ें।

(ज) किसी कार्य को पूरा करने के लिए बच्चों को पर्याप्त अभ्यास और समय दें।

(झ) जब भी आवश्यकता हो, कार्यों के दौरान छोटे विश्राम दें।

(ञ) किसी भी कार्य को दिखाना, प्रदर्शित करना और मॉडल बनाना, इस चक्र को जितनी बार संभव हो, दोहराएँ।

(ट) बच्चों के बीच परस्पर संवाद को बढ़ावा दें।

(ठ) अन्य बच्चों को स्थिति के प्रति संवेदनशील बनाएँ।

i. इस विषय पर प्रश्न-उत्तर सत्र आयोजित करें, जैसे– क्या आपको लगता है कि सुरेश अलग दिखता है? क्या आपको लगता है कि जब आप अश्विनी से बात करते हैं, तो उसे समझने में कठिनाई होती है? आपको क्यों लगता है कि अहमद आपसे बात नहीं करता है?

ii. जब बच्चे अधीर हों, तो उन्हें समझाएँ। उदाहरण के लिए, क्या आप नरेंद्र की बात खत्म होने तक इंतज़ार कर सकते हैं? मुझे पता है कि उसे कुछ शब्द बोलने में बहुत समय लगता है और वह बहुत-से शब्दों को दोहराता भी है, लेकिन क्या आप उसे सुनने में धैर्य रख सकते हैं?

(ड) विभिन्न क्षमताओं को उजागर करने वाली कहानियों, अभिनयात्मक गतिविधि (role play) का उपयोग करें। (*इसके कुछ उदाहरण अनुलग्नक 2, खंड 2.10. में उपलब्ध हैं।*)

(ढ) अन्य बच्चों को, जोखिम वाले बच्चे के साथ संवाद करने और खेलना सिखाएँ और इसके लिए उन्हें प्रोत्साहित करें।

(ण) जोखिम वाले बच्चे के लिए बाकी कक्षा में से एक मेंटर/दोस्त चुनें (इस चयन को एक बड़े सम्मान के रूप में प्रस्तुत करें)।

(त) जोखिम वाले बच्चे के प्रति आहत करने वाली भाषा या व्यवहार के प्रयोग को सक्रिय रूप से हतोत्साहित करें।

(थ) जोखिम वाले बच्चे की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए 'क्या करें' और 'क्या न करें' कि एक स्पष्ट सूची बनाएँ और अन्य सभी बच्चों को इसके बारे में समझाएँ।

(द) हमेशा बच्चे को प्रोत्साहित करें, उसका समर्थन और सम्मान करें।

i. ऐसे लेबल/शब्दों का उपयोग न करें, जो आहत करने वाले और अपमानजनक हों; न दूसरों को ऐसा करने की अनुमति दें (जैसे– लंगड़ा लड़का, अंधी लड़की, गूँगा लड़का, बेवकूफ़ लड़की)।

ii. जोखिम वाले बच्चे के बारे में नकारात्मक टिप्पणी न करें और न ही दूसरों को ऐसा करने दें।

शिक्षक के मन की बात – 8.1 क

व्यक्तिगत शिक्षा योजना (Individualised Education Plan- IEP)— नमूना

शशांक, साढ़े पाँच साल का बच्चा है। उससे जो कुछ कहा जाता है, वह पूरी तरह समझ सकता है और लगभग 20 शब्द अर्थपूर्ण ढंग से बोल सकता है। वह एक बार में एक शब्द बोलता है। यद्यपि वह स्वतंत्र रूप से नहीं चल सकता, लेकिन कुछ मदद से वह खड़ा हो सकता है और कुछ कदम आगे चलने की कोशिश करता है। ज़्यादातर समय उसकी लार बहती रहती है।

यह एक तीन महीने की व्यक्तिगत शिक्षा योजना है, जिसे मैंने उसके लिए तैयार किया है।

उद्देश्य	सीखने के प्रतिफल	विशिष्ट कक्षा गतिविधियाँ
शारीरिक विकास	बिना सहारे के खड़े रहना सहारे के साथ 10 कदम आगे चलना	एक रेखा खींचें और एक लाल गेंद (जो उसकी प्रिय है) को अंतिम बिंदु पर रखें। गेंद तक चलने के लिए उसे सहारा दें। जब वह सहारे के साथ कदम उठाता है, तो उसके कदम एक से दस तक गिनें। ऐसा करते समय उसे लगातार प्रोत्साहित करें।
भाषा विकास	50 अर्थपूर्ण शब्द बोलना दो शब्दों का उपयोग करके आवश्यकताओं को इंगित करना मुँह की मांसपेशियों को मज़बूत करके लार आना कम करना	उसके पास एक रंगीन बॉक्स में विभिन्न वस्तुएँ, जैसे– गेंद, कप, प्लेट आदि रखें। एक बार में एक वस्तु निकालने में उसकी मदद करें और उसे उनका नाम बताने के लिए कहें। वस्तुओं या लोगों की स्पष्ट तस्वीर का उपयोग करके यही गतिविधि की जा सकती है। गीत और कविता गाते या सुनाते समय उसे जानवरों की आवाज़ निकालने और गतिविधि दर्शाने वाले शब्द कहने के लिए प्रोत्साहित करें। खेल गतिविधियों का उपयोग करें, जैसे कि गुड़िया को खाना खिलाना, नहलाना और सुलाना। उसे इन सभी गतिविधियों को शब्दों में वर्णित करने के लिए कहें। मुँह के आकार और जीभ के स्थान को निर्दिष्ट करते हुए प्रत्येक ध्वनि को कैसे निकालना है, यह दिखाने के लिए एक दर्पण का उपयोग करें। मुँह की मांसपेशियों के विशिष्ट व्यायाम दिन में चार बार करवाएँ।

स्वयं-सहायता	अपने दाँतों को स्वयं ब्रश करना और अपने हाथों से स्वयं खाना शब्दों और इशारों का उपयोग करके शौचालय संबंधित आवश्यकताओं को इंगित करना	प्रत्येक गतिविधि को सरल चरणों में बाँटें और उसे प्रत्येक चरण से गुजरने में मदद करें। वह यह कैसे कर रहा है, यह दिखाने के लिए एक दर्पण का प्रयोग करें। वह जो कर रहा है, उसे इंगित करने में उसकी मदद करने के लिए चित्रों का उपयोग करें। प्रत्येक गतिविधि के लिए आरंभिक ध्वनियों का प्रयोग करें, जैसे– शौचालय की ज़रूरतों के लिए 'सु', ब्रश करने के लिए 'ईई', खाने के लिए 'उम' आदि।
संज्ञानात्मक विकास	श्रेणियों के आधार पर वस्तुओं को छाँटना चित्रों से वस्तुओं का मिलान करना और एक से दस तक अर्थपूर्ण ढंग से गिन पाना	विभिन्न श्रेणियों की वस्तुओं को एक साथ मिलाएँ, जैसे– जानवर और फल। उसके सामने दो कटोरे रखें और उन वस्तुओं को दो कटोरों में छाँटने या अलग करने में उसकी मदद करें। मेज़ पर उसकी परिचित तस्वीरें (जैसे गेंद, कप, गुड़िया) रखें। उसे तस्वीर के अनुरूप वस्तुओं का मिलान करने के लिए कहें। इस दौरान तस्वीरों का नाम भी बताएँ। बिल्डिंग ब्लॉक्स या कपड़े सुखाने वाली चिमटी क्लिप्स का उपयोग करें और उन्हें सही तरीके से फिट करने में उसकी मदद करें। एक बार हो जाने के बाद, अर्थपूर्ण ढंग से गिनने में उसकी मदद करें और जो संख्या मौजूद है, उसे बताएँ। संख्याओं में बदलाव करें और बच्चे को गिनने में मदद करें।
सामाजिक-भावनात्मक विकास	एक समूह में बैठना, साथियों की उपस्थिति को स्वीकार करना, अभिवादन करना और अपने दोस्तों को नाम से बुलाना	बच्चों के एक समूह को शशांक के साथ एक घेरे में बैठकर पासिंग बॉल खेलने के लिए कहें। जैसे ही वह गेंद को पास करता है, उसे अपना और दूसरों का नाम बोलने के लिए प्रोत्साहित करें। उसे चिक्की का एक सेट दें। उसे समूह में प्रत्येक बच्चे को नाम से बुलाने और प्रत्येक को एक चिक्की देने के लिए कहें। इस प्रक्रिया में दूसरों द्वारा धन्यवाद देना भी सीखा जा सकता है।

खंड 8.2
विद्यालय में सुरक्षा और संरक्षण

हमारी सभी शैक्षणिक व्यवस्थाएँ एक ऐसा वातावरण प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध हैं, जो न केवल प्रेरणादायक और आनंदमय हों, बल्कि सुरक्षित और संरक्षित भी हों।

8.2.1 शारीरिक सुरक्षा

(क) शिक्षकों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि बच्चे हर समय शारीरिक रूप से 'दिखाई' दें। ब्रेक और खेल के दौरान एक ज़िम्मेदार व्यक्ति को बच्चों की निगरानी करनी चाहिए।

(ख) सभी भवनों और उपकरणों को सुरक्षा मानकों का पालन करना चाहिए। उदाहरण के लिए, खिड़कियों पर जाली, बॉलकनियों पर रेलिंग और विद्युत कनेक्शन सुरक्षित एवं मानक के अनुसार वाले विद्युत उपकरण होने चाहिए। साथ ही कुएँ ढके होने चाहिए।

(ग) सुरक्षा उपकरण (जैसे अग्निशामक यंत्र) तुरंत उपलब्ध होने चाहिए और उन्हें अच्छी स्थिति में बनाए रखना चाहिए।

(घ) कक्षाओं में खिड़कियाँ अंदर की ओर नहीं खुलनी चाहिए, क्योंकि वे अक्सर दुर्घटनाओं की वजह बनती हैं (उदाहरण के लिए, बच्चे जब खड़े होते हैं या घूमते हैं, तो उनका सिर अक्सर खिड़की के पल्ले से टकरा जाता है)।

(ङ) सभी वस्तुएँ, जो संभावित रूप से खतरनाक हो सकती हैं, उन्हें सावधानीपूर्वक बच्चों की पहुँच से दूर किसी स्थान पर संग्रहित किया जाना चाहिए, उनका उपयोग किसी वयस्क की देखरेख में किया जाना चाहिए (जैसे— चाकू, कैंची, ब्लेड, सफ़ाई के तरल पदार्थ आदि)।

(च) आपात स्थिति हेतु विद्यालय में एक प्राथमिक उपचार किट होनी चाहिए। सभी शिक्षकों को बुनियादी प्राथमिक उपचार करने में प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।

(छ) पौष्टिक मध्याह्न भोज (मिड डे मिल) को सुरक्षित और साफ़-सुथरी परिस्थितियों में परोसा जाना चाहिए।

(ज) दुर्घटना या चिकित्सा आपात स्थिति के मामले में, पर्यवेक्षण करने वाले वयस्क (जैसे शिक्षक या प्रधान शिक्षक) को निर्णय लेना चाहिए और माता-पिता को तुरंत सूचित करना चाहिए।

(झ) यदि कोई बच्चा विद्यालय में अस्वस्थ महसूस करता है, लेकिन यह कोई चिकित्सीय आपात स्थिति नहीं है, तो शिक्षक माता-पिता से संपर्क कर सकता है और उन्हें बच्चे को घर ले जाने के लिए कह सकता है। यदि संभव हो, तो विद्यालय से कोई ज़िम्मेदार व्यक्ति, यह सुनिश्चित करने के बाद कि घर में कोई ज़िम्मेदार व्यक्ति मौजूद होगा, बच्चे को घर ले जा सकता है। वैकल्पिक रूप से, यदि आराम करने के लिए कोई जगह है, तो बच्चा विद्यालय में आराम कर सकता है और सामान्य समय पर घर जा सकता है।

8.2.2 भावनात्मक सुरक्षा

(क) विद्यालय में किसी भी वयस्क द्वारा बच्चों के साथ शारीरिक हिंसा या दंड का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए।

(ख) वयस्कों को बच्चों को डराना-धमकाना, परेशान या भयभीत नहीं करना चाहिए। उनके प्रति अपमानजनक या नीचा दिखाने वाली भाषा का प्रयोग या बच्चों को लेबल नहीं किया जाना चाहिए।

(ग) शिक्षकों को सभी बच्चों को समान अवसर प्रदान करना चाहिए और दैनिक गतिविधियों में सभी की समान भागीदारी सुनिश्चित करनी चाहिए।

(घ) शिक्षकों को हर समय बच्चों के साथ सकारात्मक भाषा का प्रयोग करना चाहिए और कक्षा में तथा कक्षा के बाहर सकारात्मक व्यवहार को प्रोत्साहन देना चाहिए।

(ङ) शिक्षकों को उस स्थिति मे हस्तक्षेप ज़रूर करना चाहिए, जब वे कोई ऐसा अनुचित व्यवहार होता देखें जो दूसरों को चोट पहुँचाता है। यदि कोई बच्चा कोई ऐसी सीमा लाँघता है, तो पहला कदम इसके तात्कालिक या अंतर्निहित कारणों को समझने और उन्हें संबोधित करने का प्रयास करना होगा।

(च) संवेदनशील जानकारी (जैसे बच्चे की विशेष परिस्थितियों के संबंध में) की गोपनीयता बनाए रखी जानी चाहिए।

बॉक्स 8.2

विद्यालय सुरक्षा पर शिक्षा मंत्रालय के दिशानिर्देश स्पष्ट रूप से उन उपायों को परिभाषित करते हैं, जिन्हें स्कूलों और अन्य संबंधित हितधारकों को सभी बच्चों के लिए एक सुरक्षित वातावरण सुनिश्चित करने के लिए करने चाहिए। वे सभी शैक्षणिक संस्थानों और व्यवस्थाओं के लिए एक उत्कृष्ट संसाधन हैं।

8.2.3 बाल यौन शोषण

(क) यौन अपराधों से बच्चों का संरक्षण अधिनियम (POCSO), 2012 के अनुसार, बाल यौन शोषण के प्रति किसी भी तरह की उदारता नहीं होनी चाहिए।

(ख) शिक्षकों और अन्य सभी वयस्कों को बाल यौन शोषण और पॉक्सो अधिनियम के बारे में पता होना चाहिए। उन्हें यौन शोषण के संभावित संकेतकों को पहचानना आना चाहिए (उदाहरण के लिए, चेहरे, पैर या शरीर पर आगे या पीछे खरोंचे या चोट, स्वयं को अलग-थलग कर लेना, आक्रामक होना या आत्मघाती होना)।

(ग) कहानियों और नाटकों (जैसे कठपुतली का उपयोग) के माध्यम से शिक्षक बच्चों को सुरक्षित स्पर्श और असुरक्षित स्पर्श से परिचित करा सकते हैं।

(घ) यदि शिक्षक बच्चे के व्यवहार में निश्चित बदलाव देखते हैं, तो उन्हें इसकी सूचना तुरंत प्रधानाध्यापक या प्राचार्य या पर्यवेक्षक को देनी चाहिए।

(ङ) ऐसी घटनाओं से निपटने के लिए सभी प्रक्रियाओं से बच्चे की सुरक्षा सुनिश्चित करनी चाहिए। सभी मामलों में बच्चों की सुरक्षा, सबसे महत्वपूर्ण है।

(च) हर समय गोपनीयता बनाए रखने की आवश्यकता है। संभावित बाल शोषण के बारे में जानकारी केवल आवश्यकता के आधार पर साझा की जानी चाहिए।

8.2.4 अन्य समग्र सुरक्षा उपाय

(क) माता-पिता के पते और फोन नंबर नियमित रूप से अपडेट किए जाने चाहिए और उन्हें पहुँच के अंदर रखा जाना चाहिए। सभी बच्चों/वयस्कों के लिए आपातकालीन संपर्क नंबर उपलब्ध होने चाहिए।

(ख) किसी विशेष चिकित्सा स्थिति के बारे में जानकारी, साथ ही संबंधित दवाएँ या निवारक उपायों को प्रवेश के समय लिया जाना चाहिए और नियमित रूप से अपडेट किया जाना चाहिए। यह जानकारी सभी को उपलब्ध कराई जानी चाहिए। यह सभी बच्चों और विशेष रूप से जोखिम वाले बच्चों के लिए महत्वपूर्ण है।

(ग) विशेष रूप से विद्यालय में प्रत्येक कर्मचारियों को अस्थमा, मिर्गी या ज्ञात एलर्जी वाले बच्चों के बारे में पता होना चाहिए। इन बच्चों का इलाज करने वाले डॉक्टर द्वारा बताई गई मिर्गी-रोधी या एलर्जी-रोधी दवाएँ विद्यालय में उपलब्ध होनी चाहिए। इनका उपयोग करने के लिए विद्यालय के पास माता-पिता या देखभाल करने वालों की लिखित सहमति होनी चाहिए।

(घ) किसी भी भावनात्मक उथल-पुथल या आघात, जिससे बच्चा अस्थायी रूप से गुजर रहा हो, के बारे में जानकारी सभी संबंधित शिक्षकों को उपलब्ध कराई जानी चाहिए।

(ङ) निकटतम चिकित्सा केंद्र, अस्पताल, डॉक्टर, एम्बुलेंस, फायर स्टेशन और पुलिस स्टेशन के फोन नंबर आसानी से उपलब्ध होने चाहिए या ऐसे केंद्रीय स्थान पर लगाए जाने चाहिए, जहाँ उन्हें सभी देख सकें।

अध्याय 9

आरंभिक स्तर तक संयोजन

जब बच्चा बुनियादी स्तर से आरंभिक स्तर पर जाता है, तब स्कूल के चरणों की 5+3+3+4 व्यवस्था में निरंतरता और परिवर्तन दोनों की आवश्यकता होती है।

सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन बुनियादी स्तर पर विकासात्मक कल्पना से उन क्षमताओं और कौशलों के विकास पर ध्यान केंद्रित करना है, जो हमारे आस-पास की दुनिया की एक व्यवस्थित समझ हासिल करने के लिए आवश्यक है। मोटे तौर पर ये क्षमताएँ हैं— साक्षरता, संख्या ज्ञान तथा परिकल्पना करना, अवलोकन करना, आँकड़ों को एकत्रित करने और उनका विश्लेषण करने की क्षमता। इन शैक्षिक क्षमताओं के साथ, कला और खेल में संलग्नता आरंभिक स्तर का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन जाती है। साथ ही मूल्यों, विश्वासों और सामाजिक क्षमताओं का विकास भी होता है। बच्चों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे कक्षा 3 के अंत तक मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान प्राप्त कर लें, जो कि आरंभिक स्तर का हिस्सा है।

खंड 9.1
विकासात्मक क्षेत्रों से पाठ्यचर्या के क्षेत्रों तक

बुनियादी स्तर पर, पाठ्यचर्या के उद्देश्यों को निम्नलिखित विकासात्मक क्षेत्रों के आधार पर व्यवस्थित किया जाता है— शारीरिक, सामाजिक–भावनात्मक–नैतिक, संज्ञानात्मक, भाषा और साक्षरता, सौंदर्यबोध और सांस्कृतिक तथा सकारात्मक सीखने की आदतें। आरंभिक स्तर पर, पाठ्यचर्या के उद्देश्यों को निम्नलिखित पाठ्यचर्या क्षेत्रों में संगठित किया जाएगा— भाषाएँ, गणित, हमारे आस-पास की दुनिया, कलाएँ, शारीरिक शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा।

(क) **भाषाएँ**– पहली भाषा L1 और दूसरी भाषा L2 का विकास आरंभिक स्तर पर जारी रहेगा। बच्चे आरंभिक स्तर पर अपने पहले वर्ष में L1 में मूलभूत साक्षरता प्राप्त करेंगे। उनसे आरंभिक स्तर के अंत तक L2 में यह साक्षरता प्राप्त करने की उम्मीद की जाएगी। इसलिए, आरंभिक स्तर के अंत तक बच्चों को L1 और L2 दोनों में स्वतंत्र पाठक और लेखक बनाने का लक्ष्य होगा।

(ख) **गणित**– बुनियादी स्तर पर गणितीय क्षमताओं को संज्ञानात्मक विकास के भाग के रूप में देखा जाता है। आरंभिक स्तर पर पाठ्यचर्या के क्षेत्र के रूप में गणित पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। आरंभिक स्तर पर पहले वर्ष के अंत तक बच्चों से बुनियादी संख्या ज्ञान प्राप्त कर लेने की उम्मीद की जाएगी।

(ग) **हमारे आस-पास की दुनिया**– आरंभिक स्तर पर यह पाठ्यचर्या का क्षेत्र बुनियादी स्तर पर संज्ञानात्मक क्षेत्र से विस्तार पाता है। बच्चे अपने आस-पास के प्राकृतिक और मानवीय वातावरण के साथ व्यापकता और गहराई से जुड़ेंगे। वे परिकल्पना बनाने और सत्यापित करने के लिए अवलोकन, आँकड़ों का संग्रह और विश्लेषण के अपने कौशल को और विकसित करेंगे। वे अपने आस-पास की मानव दुनिया की सामाजिक-सांस्कृतिक समझ भी हासिल करेंगे।

(घ) **कला**– आरंभिक स्तर की बुनियादी स्तर से एक निरंतरता है। जहाँ बुनियादी स्तर अपनी प्रकृति में स्वतंत्र और अधिक खोजपूर्ण है, वहीं आरंभिक स्तर पर बच्चे कला के विभिन्न रूपों में विशिष्ट कौशल प्राप्त करना शुरू कर देंगे। यह उन्हें स्वयं को अधिक व्यापक तरीकों से व्यक्त करने में सक्षम करेगा।

(ङ) **शारीरिक शिक्षा**– आरंभिक स्तर पर शारीरिक शिक्षा के रूप में शारीरिक विकास पर विशेष ध्यान दिया जाता है, जबकि बुनियादी स्तर पर खोजपूर्ण और मुक्त खेल पर ज़ोर दिया जाता है। आरंभिक स्तर पर खेल का परिचय और शारीरिक गतिविधि में अधिक औपचारिक जुड़ाव पर ज़ोर दिया जाएगा।

(च) **व्यावसायिक शिक्षा**– बुनियादी स्तर पर पाठ्यचर्या का उद्देश्य 'सेवा' की भावना को प्रोत्साहित करना है। इसमें और अधिक विस्तार किया जाएगा, ताकि बच्चे आरंभिक स्तर पर उत्पादक कार्य में संलग्न हों। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 शिक्षा को समग्रता में देखती है। यह बच्चों में न केवल दुनिया की समझ बनाने, बल्कि उस समझ के आधार पर सार्थक और उत्पादक रूप से कार्य करने पर ज़ोर देती है। सब्ज़ियों को उगाने और खाना पकाने जैसी साधारण गतिविधियों से लेकर सिलाई जैसे अधिक कुशल काम तक, बच्चों को प्रोत्साहित किया जाएगा ताकि वे अपने दिमाग और शरीर का उपयोग उत्पादक गतिविधियों में करें।

(छ) **सामाजिक-भावनात्मक-नैतिक शिक्षा और सीखने की सकारात्मक आदतें**– बुनियादी स्तर पर यह उपयुक्त है कि बचपन में विकास की ज़रूरतों को देखते हुए इन दोनों क्षेत्रों के पाठ्यचर्या के उद्देश्यों को स्पष्ट करने के संदर्भ में विशेष बल दिया जाए। विभिन्न पद्धतियों के माध्यम से उद्देश्यों को प्राप्त करने के साथ, आरंभिक स्तर पर यह बल जारी रहेगा।

खंड 9.2
विषयवस्तु, शिक्षणशास्त्र और आकलन में निरंतरता और परिवर्तन

दूसरा महत्वपूर्ण बदलाव कक्षा में प्रयुक्त विषयवस्तु के रूप में है। आरंभिक स्तर पर बच्चे केवल ठोस अनुभवों की बजाय अधिक सारगर्भित विषयवस्तु का उपयोग करने के लिए तैयार होते हैं। पाठ्यपुस्तकें और कार्यपुस्तिकाएँ सीखने को व्यवस्थित करने में बड़ी भूमिका निभा सकती हैं। विषयवस्तु बच्चे की समझ के संदर्भ का विस्तार भी कर सकती है, लेकिन यह आवश्यक है कि यह उसके अनुभवों से जुड़ी हुई हो। बच्चों की कल्पना देशकाल (space and time) दोनों के संदर्भ में विस्तार लेती है, ऐसे में उपयोग की जाने वाली विषयवस्तु को इस विस्तार को प्रतिबिंबित करना चाहिए। विषयवस्तु का चुनाव परिचित और अपरिचित के विवेकपूर्ण संतुलन को प्रतिबिंबित कर सकता है, जो बच्चों को आश्वासन और चुनौती दोनों देता है।

तीसरा बदलाव कक्षा के संचालन और शिक्षणशास्त्र में है। जहाँ बच्चों को अपने स्वयं के अन्वेषण और जिज्ञासा के माध्यम से सीखने की अनुमति जारी रखने की आवश्यकता है, वहीं अब बच्चे एक अधिक औपचारिक कक्षा के वातावरण में प्रवेश करेंगे और सीखने के अनुभव अधिक समूह आधारित हो जाएँगे। बच्चों से समूह के वातावरण में सीखने और सीखने में अधिक स्वतंत्र होने की अपेक्षा की जाती है। आरंभिक स्तर पर बच्चों से अधिक स्व-निर्देशित कार्य की अपेक्षा की जा सकती है। कौशल को मज़बूत और गहन करने के लिए अधिक दोहराव और अभ्यास की आवश्यकता हो सकती है। आरंभिक स्तर पर वातावरण अधिक औपचारिक हो जाता है, लेकिन बुनियादी स्तर के शिक्षार्थी-केंद्रित दृष्टिकोण को यहाँ भी जारी रखना महत्वपूर्ण है। कुछ बच्चों को अधिक व्यक्तिगत ध्यान देने की आवश्यकता हो सकती है। यह महत्वपूर्ण है कि आरंभिक स्तर पर शैक्षणिक रणनीतियों को इस तरह चुना जाए ताकि सभी बच्चे मध्य स्तर तक समझ के विभिन्न रूपों के साथ अधिक औपचारिक जुड़ाव की तैयारी में बुनियादी क्षमता प्राप्त कर सकें।

अंतत: आकलन के तरीकों में भी बदलाव होगा। जहाँ बुनियादी स्तर पर अधिकांश आकलन मुख्यत: विद्यार्थी के काम के बारे में शिक्षक 'अवलोकन' पर आधारित होते हैं, लेकिन आरंभिक स्तर पर अधिक स्पष्ट आकलन कार्य शुरू किए जा सकते हैं। अभी भी निरंतरता इस अर्थ में होगी कि आकलन को 'कम महत्व' का रखा जाएगा, भले ही वे अधिक स्पष्ट व ठोस हों। आरंभिक स्तर पर बच्चों के लिए यह उपयोगी होता है कि वे अपने स्वयं के सीखने के कुछ पहलुओं के बारे में अधिसंज्ञानात्मक तौर पर जागरूक हों। यह जागरूकता और अधिक स्पष्ट आकलन कार्यों द्वारा प्रदान की जा सकती है। वर्कशीट के अलावा, बच्चों को लिखित आकलन कार्य दिए जा सकते हैं, जिन्हें उन्हें एक निश्चित समय के भीतर पूरा करने की आवश्यकता होगी।

अध्याय 10

एक सहायक पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.), राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 की परिवर्तन करने वाली केंद्रीय शक्तियों में से एक है। जैसा कि पिछले अध्यायों से स्पष्ट है, एन.सी.एफ. की पाठ्यचर्या को लागू करने के लिए विषयवस्तु, शिक्षणशास्त्र और आकलन के स्तर पर कई प्रयास आवश्यक हैं। इन सभी प्रयासों के लिए एक सहयोगी परिवेश की आवश्यकता होगी। इसे संभव बनाने के लिए इस हिस्से में अध्यापकों, पदाधिकारियों, अभिभावकों और समुदाय की भूमिका पर चर्चा की गई है।

एन.ई.पी. 2020 के अनुरूप, खंड 10.1 विभिन्न तरीकों से शिक्षकों को सशक्त बनाने की बात करता है। इस पाठ्यचर्या को लागू करने के लिए आवश्यक ढाँचे और सीखने के सहयोगी संसाधनों का उल्लेख खंड 10.2 में किया गया है। खंड 10.3 अकादमिक और प्रशासनिक पदाधिकारियों की भूमिका को रेखांकित करता है। खंड 10.4 बुनियादी स्तर पर विद्यार्थियों के सीखने में अभिभावकों और समुदाय के सहयोग के महत्व पर प्रकाश डालता है। सक्षम बनाने में तकनीकी की महत्वपूर्ण भूमिका है। खंड 10.5 उन तरीकों का वर्णन करता है, जिनसे बुनियादी स्तर पर शिक्षण और सीखने में तकनीकी सहयोगी भूमिका निभा सकती है।

खंड 10.1
शिक्षकों को सक्षम और सशक्त बनाना

शिक्षण, बौद्धिक और नैतिक रूप से बहुत अधिक अपेक्षाओं से भरा पेशा है। बुनियादी स्तर पर पढ़ाने वाले शिक्षकों में देखभाल करने, ऊर्जा, मेहनत, धैर्य और रुचिकर तरीके से काम करने जैसे विशिष्ट गुण होने चाहिए ताकि वे छोटे बच्चों के साथ प्रभावी ढंग से काम कर सकें।

10.1.1 शिक्षकों के लिए अनुकूल वातावरण सुनिश्चित करना

एक अच्छे विद्यालय के लिए ऐसी संस्कृति की आवश्यकता होती है, जो परस्पर विश्वास और सम्मान पर आधारित हो और जो लोगों को सीखने और साथ काम करने के लिए प्रोत्साहित कर सके। यह ऐसे खुले परिवेश में संभव है, जिसमें एक-दूसरे की देखभाल की जाए, जहाँ के कामकाज में संवाद, सहयोग, जाँच-पड़ताल और विचार-विमर्श घुले-मिले हों।

शिक्षकों को संसाधन संपन्न और प्रेरक परिवेश की आवश्यकता होती है। उन्हें पेशेवर तरीके से सीखने और अंतर्क्रिया के अवसरों की लगातार आवश्यकता होती है। एक सुयोग्य, संगठित और जीवंत पेशेवर समूह से जुड़े होने के कारण शिक्षकों में गर्व का भाव होना चाहिए।

10.1.2 सहायक सुविधाएँ और काम परिवेश

सुरक्षित पेय जल, पानी के साथ सुचारू शौचालय और हाथ धोने की मूलभूत सुविधाओं के साथ विद्यालय में समुचित और सुरक्षित भौतिक ढाँचे, सुविधाएँ और सीखने के संसाधन उपलब्ध कराए जाने चाहिए।

विद्यार्थियों को प्रभावी ढंग से पढ़ाने के लिए आवश्यक संसाधन सुचारू कक्षा बोर्ड, कला या शिल्प के लिए सामग्री, सीखने का कोना बनाने के लिए सामग्री और तरह-तरह के बाल साहित्य और शिक्षण सामग्री उपलब्ध कराई जानी चाहिए।

10.1.3 सेवा-पूर्व शिक्षक शिक्षा

बुनियादी स्तर के लिए शिक्षकों की माँग और आपूर्ति का आकलन करना पहला कदम है। विशिष्ट स्तरों के लिए शिक्षकों की माँग और आपूर्ति से संबंधित उपलब्ध अध्ययनों को आधार बनाते हुए राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद् (एन.सी.टी.ई.) को इसे प्राथमिकता देनी चाहिए।

इस आकलन से यह सुनिश्चित करने में मदद होगी कि सही संख्या और विशिष्टता वाले विश्वविद्यालय बुनियादी स्तर पर विशेषज्ञता वाले चार वर्षीय समेकित शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम चला सकें।

आई.टी.ई.पी. में बुनियादी स्तर की विशेषज्ञता वाले कार्यक्रम की पाठ्यचर्या एन.सी.एफ. के बुनियादी स्तर की पाठ्यचर्या और शिक्षणशास्त्र पर आधारित होनी चाहिए। इस पाठ्यचर्या में बुनियादी स्तर के सभी तरह के परिवेशों, उदाहरणस्वरूप आँगनवाड़ी, बालवाटिका, अकेले चल रहे पूर्व-प्राथमिक, बड़े स्कूलों की पूर्व-प्राथमिक कक्षाओं और कक्षा 1 व 2 के स्तर पर विद्यार्थी शिक्षकों के लिए समुचित अभ्यास के अवसर सुनिश्चित किए जाने चाहिए।

विद्यालयी स्तरों का पुनर्गठन पूरा होने के बाद बुनियादी स्तर पर सभी शिक्षकों को शिक्षक योग्यता परीक्षा के दायरे में ले आना चाहिए। एन.ई.पी. 2020, बुनियादी स्तर सहित शिक्षा के सभी स्तरों को शिक्षक योग्यता परीक्षा (TET) के दायरे में लाने की परिकल्पना करता है। पढ़ाने की योग्यता का यह प्रमाण सभी तरह के स्कूलों के शिक्षकों को अपने दायरे में ले लेगा।

जैसा कि एन.ई.पी. 2020 में उल्लेखित है, शिक्षकों की भर्ती की प्रक्रिया कठोर होनी चाहिए, जिसमें न सिर्फ़ लिखित परीक्षा बल्कि साक्षात्कार और कक्षा में पढ़ाने का प्रदर्शन भी शामिल होना चाहिए।

10.1.4 सेवारत या सेवाकालीन शिक्षक शिक्षा, मार्गदर्शन और सहयोग

शिक्षकों का पेशेवर विकास एक सतत् यात्रा है, जिसमें हर शिक्षक अपनी व्यक्तिगत गति के अनुसार विकास करता है। अपनी विकास यात्रा में शिक्षक अलग-अलग चरण में हो सकता है और इस लिहाज से विकास के लिए उसकी अलग-अलग आवश्यकता हो सकती है। विकास के हर चरण के लिए अलग विषयवस्तु की आवश्यकता होती है। शिक्षण के हर चरण में सीखने का अनुभव इतना व्यापक और सार्थक होना चाहिए कि शिक्षक अपनी शिक्षण प्रक्रियाओं में सतत एवं सुस्थिर बदलाव ला सके और विकास के अगले चरण तक जा सके।

शिक्षकों का पेशेवर विकास इस तरह होना चाहिए कि वे शैक्षिक सुधारों का संचालन करने की योग्यता हासिल करते हुए सक्षम और चिंतनशील व्यक्ति बन सकें। शिक्षकों के काम को सुगम बनाने वाले और उनके सीखने में मददगार सहायता ढाँचे और उन्हें सक्षम बनाने वाले साधन उपलब्ध होने चाहिए।

शिक्षकों को अपने पेशेवर विकास में तरह-तरह के साधनों के जरिए लगातार जुटे रहना चाहिए। विषयवस्तु व्यापक, संपूर्ण, प्रासंगिक, कक्षा से जुड़ी और शिक्षकों के सामने आने वाली चुनौतियों को संबोधित करने वाली होनी चाहिए। मार्गदर्शन और कोचिंग सहयोग के साथ आपस में सीखने (peer learning) के मंच आवश्यक ही उपलब्ध कराए जाने चाहिए।

बुनियादी स्तर के शिक्षकों को छोटे बच्चों को सीखने का सुरक्षित, प्रेरक और रुचिकर परिवेश मुहैया कराना होगा, जिसका ज़ोर खेलने और खोजने पर हो। इसके लिए सहायक सामग्री विकसित करने, क्षमता संवर्धन सत्र आयोजित करने, कार्यस्थल का निरीक्षण करने व गुणवत्ता की निगरानी और देखभाल करने के माध्यम से रा.शै.अ.प्र.प., एस.सी.ई.आर.टी., डाइट, बाइट, बी.आर.सी., सी.आर.सी. शिक्षकों और स्कूलों को अकादमिक मार्गदर्शन व सहयोग प्रदान करते हैं। ये अकादमिक संसाधन संस्थान यह सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं कि शिक्षकों को पेशेवर विकास के अवसर हमेशा मुहैया हों।

शिक्षकों के लिए पेशेवर विकास— उदाहरणात्मक घटक और मोड्स

तालिका 10.1 क

पेशेवर विकास के घटक	
वैश्विक शोध	मस्तिष्क का विकास विकासात्मक अवस्थाएँ, विकासात्मक पड़ाव (milestones) बच्चे कैसे सीखते हैं, खेलना महत्वपूर्ण क्यों है परिवारों और समुदायों को समझना विद्यालय में सीखने का मतलब
विषयवस्तु की समझ	विकास के सभी क्षेत्र, प्रारंभिकी भाषा और साक्षरता, प्रारंभिक गणित
पाठ्यचर्या के उद्देश्य, दक्षताएँ, सीखने के प्रतिफल	पाठ्यचर्या के उद्देश्यों को समझना – उनका तर्क और शिक्षा के लक्ष्य, विकासात्मक क्षेत्रों के साथ संबंध दक्षताओं और सीखने के प्रतिफलों की समझ हासिल करना कक्षा-कक्ष के लिए इनका निहितार्थ
शिक्षणशास्त्र	विद्यार्थियों को सुरक्षा, आराम, सम्मान और प्रोत्साहन महसूस कराना खिलौनों, कहानियों, कला, खेलों, संगीत और बातचीत का उपयोग कक्षा-कक्ष में पढ़ना, लिखना और बुनियादी गणना करना
विषयवस्तु और सामग्री	उपयुक्त विषयवस्तु की पहचान करना – चयन का औचित्य उपयुक्त विषयवस्तु का चुनाव स्थानीय संसाधनों का उपयोग करते हुए उपयुक्त सामग्री तैयार करना तकनीकी का उपयोग करना
आकलन	आकलन के सिद्धांत आकलन के लिए उपयुक्त उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग शिक्षण और सीखने को बेहतर बनाने के लिए आकलन के आँकड़ों का उपयोग करना
जोखिम में बच्चे (Children at risk)	बच्चे के विकास में विलंब और भिन्न प्रकार की क्षमता (डिसेबिलिटी) के चिह्नों को पहचानना उपयुक्त कक्षा-कक्षीय प्रक्रियाएँ पेशेवरों के साथ काम करना
योजना	सीखने के सभी क्षेत्रों में विद्यार्थियों की आवश्यकता के अनुसार बहु-स्तरीय शिक्षण योजना बनाना
अभिभावकों और समुदाय के साथ काम करना	सकारात्मक संबंध बनाना विद्यालय में अभिभावकों और समुदाय की भागीदारी

शिक्षक अधिगम समुदाय का निर्माण	शिक्षक संलग्नता के लिए मंच फेस-टू-फेस, तकनीकी का उपयोग
शोध और दस्तावेज़ीकरण	शोध साहित्य का उपयोग केस स्टडी लिखना

तालिका 10.1 ख

पेशेवर विकास के मोड्स	
विद्यालय के भीतर प्रक्रियाएँ	योजना बनाना, साप्ताहिक चर्चा, साझा करने की बैठकें, एक-दूसरे की कक्षा का अवलोकन और प्रतिपुष्टि।
विद्यालय में संबलन (scaffolding) और सहयोग	सी.आर.सी., बी.आर.सी., डाइट और अन्य सहायक संस्थाएँ स्कूलों में नियमित तौर पर दौरा कर सकती हैं। इन दौरों के दौरान वे शिक्षकों का अवलोकन कर सकती हैं, उनके साथ विचार-विमर्श कर सकती हैं, शिक्षण विधि को प्रदर्शित कर सकती हैं, सामग्री विकास में शिक्षकों के साथ काम कर सकती हैं और आगामी कार्यक्रमों व गतिविधियों के बारे में उन्हें जानकारी प्रदान कर सकती हैं।
औपचारिक कार्यशालाएँ	ये सीखने और विकास के सभी क्षेत्रों पर फेस-टू-फेस किए गए सत्र हैं। शिक्षकों के बड़े समूहों के लिए तीन दिवसीय आवासीय कार्यशालाओं से लेकर शिक्षकों के छोटे समूहों के लिए विशेष विषयों पर आधे दिन के सत्र तक, ये कार्यशालाएँ विभिन्न अवधियों और प्रारूपों की हो सकती हैं।
सामग्री विकसित करने के लिए कार्यशालाएँ	प्रारंभिक वर्षों में शिक्षा के लिए बहुत सारी शिक्षण अधिगम सामग्री की आवश्यकता होती है। अगर शिक्षकों के समूह (मसलन किसी बड़े विद्यालय के भीतर या क्लस्टर या ब्लॉक स्तर पर) साथ मिलकर ये सामग्री विकसित कर सकें, तो यह उन सबके लिए सीखने का बेहतरीन अवसर बन सकता है।
शिक्षक मंच (forums)	बुनियादी स्तर (उदाहरण के लिए क्लस्टर स्तर पर) के शिक्षकों के लिए मंच पर कामकाज पर बातचीत के लिए मासिक बैठकें कर सकते हैं। किसी विशेष विषय के लिए शिक्षण ज़िम्मेदारी ले सकते हैं और उस विषय पर शिक्षण योजना और संसाधन बना सकते हैं, जिन्हें सबके साथ साझा किया जा सकता है। इससे तैयारी का भार घटेगा और शिक्षक इन संसाधनों को अपने-अपने विद्यार्थियों के अनुकूल बना सकेंगे।
सोशल मीडिया समूह	शिक्षक सोशल मीडिया मंचों पर समूह बना सकते हैं, जो अनुभव और शिक्षण संसाधनों को साझा करने में मदद करें, समान विचारधारा वाले शिक्षकों के बीच संवाद स्थापित करें और विशेष विषय पर विचार-विमर्श और सहयोग कर सकें।

हस्त-पुस्तिकाएँ ‘दीक्षा’ का उपयोग	ऐसी हस्त-पुस्तिकाएँ तैयार की जा सकती हैं, जो शिक्षकों को सीखने के प्रतिफल हासिल करने की योजना बनाने के लिए मार्गदर्शित करें। ऐसी अतिरिक्त सामग्री के संदर्भ इन हस्त-पुस्तिकाओं को और मूल्यवान बना सकते हैं, जिन्हें शिक्षक पढ़ सकें और इन तक उनकी पहुँच हो सके। प्रारंभिक वर्षों की शिक्षा के लिए ‘दीक्षा’ पर मौजूद सामग्री का उपयोग किसी एक शिक्षक या शिक्षकों के समूह द्वारा किया जा सकता है।
मेंटर शिक्षक	प्रत्येक क्लस्टर के लिए अनुभवी और समर्पित शिक्षक चिह्नित किए जा सकते हैं। वे दूसरे विद्यालयों में विजिट कर सकते हैं और दूसरे शिक्षकों की मदद कर सकते हैं। सहयोग चाहने वाले शिक्षक इन मेंटर शिक्षकों के पास स्वतंत्र रूप से भी पहुँच सकते हैं।
वार्षिक शिक्षक संगोष्ठियाँ	बड़े स्तर पर कम समयावधि वाले कार्यक्रम, जो विशेष विषयों पर केंद्रित हों, जिनमें शिक्षक अपने विचारों, अभ्यासों या सामग्री की प्रस्तुति कर सकें और विशेषज्ञ वक्ताओं को सुन सकें। शिक्षकों को शिक्षण संबंधी नए और अलग विचारों से शिक्षण के प्रारंभिक वर्षों में परिचित कराया जा सकता है।

कृपया कुछ उदाहरण संलग्नक 2 में देखें।

10.1.5 करियर की प्रगति के सोपान और पेशेवर विकास की संभावनाएँ

विद्यालयी शिक्षा के प्रारंभिक चरण अत्यंत महत्वपूर्ण हैं और इसके लिए बच्चों की प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा में दक्ष सुयोग्य शिक्षकों की आवश्यकता होगी।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 विद्यालयी शिक्षा के सभी स्तरों पर सेवा शर्तों में बराबरी की बात करती है। इसका अर्थ यह है कि आगामी समय में जल्द-से-जल्द और भी शिक्षकों का वेतन और सेवा शर्तें उनकी सामाजिक और पेशेवर ज़िम्मेदारियों के अनुरूप होंगी। वेतन और सेवा शर्तें प्रतिभाशाली शिक्षकों को शिक्षण के पेशे में बनाए रखने और आकर्षित करने के लिहाज से तय की जानी चाहिए। बुनियादी से लेकर माध्यमिक स्तर तक सभी शिक्षकों को काम की आवश्यकतानुसार मानक सेवा शर्तों और समान वेतन ढाँचे पर नियुक्त किया जाएगा।

सभी शिक्षकों के पास अपने करियर में प्रगति करने (वेतन व पदोन्नति आदि के लिहाज़ से) के अवसर होंगे, भले ही वे शिक्षा के समान स्तर पर शिक्षक बने रहेंगे (उदाहरण के लिए, बुनियादी, आरंभिक, मध्य या माध्यमिक स्तर)। इस नज़रिए से यह तय होगा कि किसी एक विद्यालय स्तर के भीतर शिक्षक के लिए करियर (वेतन और पदोन्नति) का विकास सुनिश्चित किया जा सके। इससे यह भी सुनिश्चित किया जा सकेगा कि प्रारंभिक स्तर से बाद के स्तरों में जाने का करियर विकास संबंधी प्रोत्साहन नहीं होगा (यद्यपि अगर शिक्षक की इच्छा हो और उसके पास यथोचित योग्यताएँ हों, तो विभिन्न शिक्षा स्तरों के बीच करियर बदलने की अनुमति दी जाएगी)।

10.1.6 शिक्षक की स्वायत्तता और जवाबदेही

विद्यार्थियों के सीखने के लिए शिक्षक ज़िम्मेदार हैं और इसके लिए उन्हें ज़रूर ही जवाबदेह ठहराया जाना चाहिए। हालाँकि, इस जवाबदेही की पूर्व शर्त शिक्षक का सशक्तीकरण और उसकी स्वायत्तता है। जवाबदेही महत्वपूर्ण तो है, पर उतनी ही महत्वपूर्ण स्वायत्तता है। स्वायत्तता पर आधारित सशक्त बनाने वाली संस्कृति, जवाबदेही की अनिवार्य शर्त है।

सीखने की गुणवत्ता को बेहतर बनाने के लिए सक्षम और योग्य शिक्षक महत्वपूर्ण हैं। विद्यालयों के भीतर सहयोगी परिवेश और पारिस्थितिकी तंत्र शिक्षक के प्रभाव को बढ़ा देते हैं। शिक्षक विशिष्ट व्यक्ति होते हैं, जिनके विद्यार्थियों के बारे में सीखने और शिक्षा के बारे में अपने विश्वास और अपने सिद्धांत होते हैं।

एक रचनात्मक और विवेकशील शिक्षक के लिए सीखने का प्रत्येक अवसर आनंददायी और स्वाभाविक होता है, जो उसे सीखने को प्रोत्साहित करता है और इस प्रक्रिया में सहायता प्रदान करता है। कभी-कभी ऐसे विशेष अवसरों पर शिक्षक पूर्व निर्धारित पाठ्यक्रम को छोड़कर नए और अप्रत्याशित सीखने के अनुभवों को अपनाते हैं।

विषयवस्तु की योजना बनाने, उसे संगठित करने, क्रम निर्धारित करने, परिस्थितियों के अनुसार बच्चों के लिए शिक्षण विधियों और बच्चों के सीखे हुए आकलन करने के तरीकों के मामलों में शिक्षकों को शिक्षणशास्त्रीय स्वायत्तता अवश्य होनी चाहिए। यह सब बुनियादी स्तर पर निर्धारित पाठ्यचर्या के उद्देश्यों, दक्षताओं, सीखने के प्रतिफलों, शिक्षणशास्त्रीय पद्धतियों व सिद्धांतों पर आधारित होना चाहिए।

खंड 10.2
सीखने का समुचित परिवेश सुनिश्चित करना

10.2.1 डिज़ाइन की कल्पना

ऐसा भौतिक स्थान जो सुरक्षित, रुचिकर और आरामदेह परिवेश प्रदान करे तथा बुनियादी स्तर पर सीखने को सुचारू बनाए, बहुत महत्वपूर्ण है। बुनियादी स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रारंभिक बाल्यावस्था की देखभाल और शिक्षा (ई.सी.सी.ई.) पर पर्याप्त ज़ोर को ध्यान में रखते हुए ऐसी जीवंत शिक्षण स्थानों को विकसित किया जाना चाहिए।

इन स्थानों का डिज़ाइन तैयार करने और इनके क्रियान्वयन के लिए तथा उच्च गुणवत्ता वाली ई.सी.सी.ई. को सुनिश्चित करने में अपनी भूमिका अदा करने के लिए बेहद रचनात्मक कल्पना की आवश्यकता है। यह काम व्यावहारिक स्तर पर लागत, संचालन की संभावना और लागू किए जाने की क्षमता को ध्यान में रखते हुए किया जाना चाहिए।

इस रचनात्मक कल्पना के दायरे में न सिर्फ़ बुनियादी स्तर की शिक्षा को लागू करने वाले संस्थान बनाने के सभी पहलू शामिल होंगे, बल्कि उनका तात्कालिक परिवेश भी शामिल होगा। चाहे नए बने भवन (या कक्ष) हों या मौजूदा अवसंरचनाओं को फिर से सुधार कर बनाया गया हों, इसी कल्पना से संचालित होने चाहिए। ऐसी कल्पना के फलने-फूलने और ठोस रूप ग्रहण करने के लिए ज़्यादा प्रभावी उपागम यह होगा कि विविध विषयों, विविध क्षेत्रों के समूह बनाए जाएँ, जो इन विचारों, रूपरेखा और दिशा-निर्देशों को विकसित करने के लिए ज़िम्मेदार हों। इन विषयों या क्षेत्रों में ई.सी.सी.ई. बाल विकास, अभियांत्रिकी और स्थापत्य, समाजशास्त्र और मानवशास्त्र आदि शामिल किए जा सकते हैं। स्थानीय संदर्भों व आवश्यकतानुसार पूरे देश में ऐसे कई समूहों की आवश्यकता हो सकती है। ये समूह राज्यों में उपयुक्त संस्थाओं, जैसे– डी.डब्ल्यू.सी.डी., एस.सी.ई.आर.टी. आदि के द्वारा बनाए जा सकते हैं।

ई.सी.सी.ई. में निवेश समुचित तरीके से संचालित हो सके, इसके लिए आवश्यक है कि इस कार्ययोजना का क्रियान्वयन जल्दी किया जाए।

10.2.2 बुनियादी ढाँचा और सीखने के संसाधन

सीखने के अनुभव को बेहतर बनाने के लिए समुचित और उपयुक्त बुनियादी ढाँचा और शिक्षण सामग्री हर बच्चे को उपलब्ध कराई जानी चाहिए। समुचित और उपयुक्त ढाँचागत सुविधाएँ और सीखने के संसाधन सीखने में सहायक परिवेश पर महत्वपूर्ण असर डालते हैं। अभिभावकों और समुदाय की दृष्टि में एक सामान्य और अच्छे विद्यालय के बीच मुख्य अंतरों में से एक बुनियादी ढाँचे की गुणवत्ता, संपूर्णता और रख-रखाव होता है। बच्चों के लिए उच्च गुणवत्ता वाले कार्यक्रम उन्हें अपनी जिज्ञासा को संतुष्ट करने, परिवेश को खंगालने की स्वतंत्रता देने, सामूहिक अंतर्क्रिया के अवसर मुहैया कराने और उनका अधिकतम समग्र विकास करने वाले होने चाहिए। बच्चों को प्रतिदिन शिक्षण सामग्री से जुड़ने, बाहर खेलने, एक-दूसरे से और शिक्षक से अंतर्क्रिया करने का अवसर मिलना चाहिए।

सीखने का सहयोगी शिक्षण परिवेश बच्चे को सीखने और विकास का एक समग्र अनुभव प्रदान करेगा। बच्चे का विकास केवल शिक्षक और उसके बीच की अंतर्क्रिया पर निर्भर नहीं करता, बल्कि उन संवेदी अनुभवों पर भी निर्भर करता है, जिसे बच्चे कक्षा के भीतर और बाहर के भौतिक परिवेश से पाते हैं।

निर्धारित मानकों के अनुसार सुरक्षित, बाधा-मुक्त और समुचित भौतिक ढाँचा उपलब्ध कराया जाना चाहिए। भवन और उपकरण कानून और सुरक्षा मानकों के अनुसार होने चाहिए। ढाँचे के विकास व देखरेख और शिक्षण-अधिगम सामग्री के लिए समुचित बजट और उसका समुचित उपयोग अवश्य होना चाहिए।

इसमें शामिल हैं—

(क) साफ़, सुरक्षित और क्रियाशील शौचालय और स्वच्छ पेयजल।

(ख) सुरक्षित और पोषक भोजन (तय मानकों के अनुसार) और सभी बच्चों के लिए स्वास्थ्य सेवाएँ।

(ग) साफ़, हवादार और अच्छी रोशनी वाली कक्षाएँ, जिनमें प्राकृतिक रोशनी और हवा का अधिकतम उपयोग हो।

(घ) शिक्षण स्थान, दूसरी जगहों (जैसे खाना बनाने की) से अलग रखे जाएँ, ताकि सुरक्षा और शिक्षा में कोई व्यवधान न हो।

(ङ) कक्षा 1 और 2 के लिए अलग-अलग कक्ष हों।

(च) बच्चों के खेलने के लिए बाहर सुरक्षित स्थान हो या खेलने के लिए छोटे बगीचे हों।

(छ) भवन और दीवारें आकर्षक रंगों में रंगी हों (बच्चे इस पेंटिंग कार्य में भाग ले सकते हैं)।

(ज) उपयुक्त उच्च गुणवत्ता वाले सीखने के संसाधन, सामग्री और पुस्तकें हों।

(झ) उपयुक्त सुरक्षा प्रक्रिया के साथ चीज़ें अपनी नियत जगहों पर व्यवस्थित तरीके से रखी हों (जैसे साफ़-सफ़ाई की सामग्री या चाकू सुरक्षित स्थानों पर रखे जाएँ)।

(ञ) अधिगम कोने (लर्निंग कॉर्नर) और उपयुक्त प्रदर्शनी बच्चों की आँखों के स्तर पर हों।

(ट) स्थान और सामग्री का नियमित परीक्षण करते हुए स्वच्छता का ध्यान रखा जाए।

(अधिक जानकारी के लिए कृपया अध्याय 5, खंड 5.4, 5.5 और 5.6 देखें।)

10.2.3 विद्यार्थी-शिक्षक अनुपात

बड़े स्तर पर यह समझा और माना जाता है कि उचित विद्यार्थी-शिक्षक अनुपात शिक्षक को विद्यार्थियों पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान देने में सक्षम बनाता है, जिसमें विद्यार्थियों की भागीदारी और उपलब्धियों को सुधारा जा सकता है। महत्वपूर्ण है कि विद्यार्थी-शिक्षण अनुपात को सिर्फ़ आँकड़ों के रूप में न देखा जाए, बल्कि इसे ऐसे उपाय की तरह देखा जाए, जो बच्चों के लिए सीखने के परिणामों को बेहतर बनाता है। अगर विद्यार्थी-शिक्षक अनुपात शिक्षक के अनुकूल हो, तो बहुत-सी कक्षा-कक्षीय प्रक्रियाएँ बेहतर तरीके से लागू की जा सकती हैं। शिक्षणशास्त्र के विशेषज्ञों का तर्क है कि कम विद्यार्थी-शिक्षक अनुपात का विद्यालयी शिक्षा के आरंभिक वर्षों में बहुत गहरा असर पड़ता है। अनुसंधान में यह पाया गया है कि कम विद्यार्थी-शिक्षक अनुपात वाले विद्यालयों में विद्यार्थियों में शिक्षा छोड़ने की संभावना कम होती है।

विद्यार्थी-शिक्षक अनुपात को कम करने का अर्थ यह नहीं है कि स्कूलों में संविदा पर कम योग्यता वाले शिक्षकों की नियुक्ति की जाए। विद्यार्थी-शिक्षक अनुपात को योग्य शिक्षकों की नियुक्ति और उनके पेशेवर विकास के माध्यम से ही संतुलित किया जाना चाहिए। विद्यार्थी-शिक्षक अनुपात को सुधारने के साथ ही, कम विद्यार्थी-शिक्षक अनुपात की स्थिति में भी पूरा फ़ायदा उठाने के लिए बुनियादी ढाँचे संबंधी मुद्दों और शिक्षकों की अकादमिक व शिक्षणशास्त्रीय क्षमताओं का भी ध्यान रखना होगा। बुनियादी स्तर पर सभी बच्चों के लिए पर्याप्त शिक्षक होने चाहिए।

10.2.4 प्रवेश की आयु

नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम (RTE 2009), राष्ट्रीय नीति 2013 और एन.ई.पी. 2020 जैसे नीतिगत दस्तावेज़ों ने इस बात पर ज़ोर दिया है कि तीन से छह साल तक के बच्चों को आँगनवाड़ी या पूर्व-प्राथमिक (प्री-स्कूल) जाना चाहिए, इसके बाद ही उन्हें कक्षा 1 या प्राथमिक विद्यालय में प्रवेश लेना चाहिए।

एन.ई.पी. 2020 के अनुसार शिक्षा का बुनियादी स्तर तीन साल की आयु से शुरू और आठ साल पर समाप्त होता है, अर्थात पूर्व-प्राथमिक से लेकर कक्षा 2 तक का विद्यालय शिक्षण। इसलिए बच्चों को कक्षा 1 में छह साल की आयु में प्रवेश लेना चाहिए। यद्यपि बहुत से राज्यों की नीतियों में आयु और विकास के इस मापदंड की झलक नहीं दिखती।

मस्तिष्क विकास की त्वरित गति और प्रारंभिक वर्षों में बच्चे के समग्र विकास के लिए कुछ महीनों तक का अंतर भी बहुत महत्वपूर्ण होता है। कक्षा 1 के लिए बनाई गई पाठ्यचर्या इस आधार के साथ बनाई गई है कि नव प्रवेशित बच्चे की आयु छह वर्ष से अधिक होगी। कक्षा 1 में प्रवेश की आयु को आधिकारिक रूप से घटाने का चलन इस मान्यता को नकारता है और इससे बच्चों की सीखने की प्रक्रिया पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

खंड 10.3
अकादमिक और प्रशासनिक पदाधिकारियों की भूमिका

10.3.1 प्रधानाध्यापक

विद्यालय के नेतृत्वकर्ता के रूप में प्रधानाध्यापक का मुख्य काम, स्वायत्तता देने वाली और जवाबदेही सुनिश्चित कराने वाली प्रक्रियाओं के जरिए विद्यालय में सहयोगी और सशक्त बनाने वाले परिवेश का निर्माण है।

प्रधानाध्यापकों या निरीक्षकों को शिक्षकों की हर तरह से मदद करनी चाहिए, ताकि वे ठीक से शिक्षण कर सकें। इसके लिए उपयुक्त संसाधनों तक उनकी पहुँच बनानी होगी; कक्षाओं की योजना बनाने में उनकी मदद करनी होगी; कक्षाओं का अवलोकन करना होगा तथा उन्हें रचनात्मक प्रतिपुष्टि देनी होगी; और ऐसे परिवेश का निर्माण करना होगा जहाँ शिक्षक शिक्षण और बच्चों के सीखने के बारे में सोच सकें और बात कर सकें।

बच्चों के साथ संपर्क व घनिष्ठता बनाने, नेतृत्व का उदाहरण प्रस्तुत करने, शिक्षकों के साथ संपर्क में रहने और उनके दृष्टिकोण व समस्याओं को समझने के लिए यह अच्छा होगा कि प्रधानाध्यापक बुनियादी स्तर पर समय-समय पर कक्षा का संचालन करें। इससे यह भी दिखेगा कि पूरे विद्यालय के लिए बुनियादी स्तर कितना महत्वपूर्ण है और इससे शिक्षकों में आत्मविश्वास भी बढ़ेगा।

विद्यालय में छोटे बच्चों की नियमित उपस्थिति और उनके सीखने की प्रक्रिया में अभिभावक या परिवार की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए प्रधानाध्यापक को अभिभावकों, परिवार के लोगों और समुदाय के संपर्क में रहना चाहिए। इससे विद्यालय को प्रासंगिक मुद्दों और चुनौतियों पर उपयुक्त प्रतिक्रिया देने में भी मदद मिलेगी, जैसे अगर किसी बच्चे के विकास में विलंब हो रहा है या उसके व्यवहार को लेकर चिंता है, तो संवेदनशील ढंग से अभिभावकों या परिवार के लोगों तक यह सूचना पहुँचाई जा सकेगी।

10.3.2 अकादमिक पदाधिकारी

विद्यालय भ्रमण, कक्षा अवलोकन और शिक्षकों को रचनात्मक प्रतिपुष्टि के लिए क्लस्टर और ब्लॉक स्तर के पदाधिकारियों की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका है। क्लस्टर और ब्लॉक स्तर पर काम करने वाले पदाधिकारियों को नियमित तौर पर उस शिक्षण पद्धति का प्रदर्शन करना चाहिए, जिसे शिक्षकों को उपयोग में लाना है। इससे शिक्षकों को बेहतर समझ बनाने और पदाधिकारियों को शिक्षण तथा बच्चों के संपर्क में रहने में मदद मिलेगी।

क्लस्टर स्तर की बैठकों में कक्षा प्रक्रियाओं पर विचार-विमर्श होना चाहिए और कुछ महीनों के अंतराल पर बैठकें बुनियादी स्तर पर कक्षा अनुभवों के बारे में बातचीत के लिए नियत होनी चाहिए। आरंभिक वर्षों में सीखने के विकास के महत्व, विद्यालय में बच्चों की नियमित उपस्थिति तथा भागीदारी पर अभिभावकों और समुदाय के साथ होने वाली बातचीत में भी उन्हें शामिल रहना चाहिए। स्कूलों द्वारा चलाई जाने वाली गतिविधियों, जैसे सीखने

के कोने का निर्माण, बाल साहित्य इकट्ठा करना आदि में पूरी तरह मदद की जानी चाहिए और इसे प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

'डाइट' (जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान) में अकादमिक पदाधिकारियों को इस बात पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए कि स्थानीय भाषाओं और संदर्भों में बच्चों और शिक्षकों के लिए आकर्षक, रोचक और नई-नई सामग्री विकसित करें। इस सामग्री का उपयोग करने के लिए एक समग्र शिक्षक सहयोग योजना इसमें शामिल की जा सकती है। प्रत्येक 'डाइट' को जिले के हर ब्लॉक में बुनियादी स्तर पर शिक्षकों को सहयोग देने के लिए विशेषज्ञ अकादमिक विद्वानों का एक समूह भी विकसित करना चाहिए।

एस.सी.ई.आर.टी. के अकादमिक पदाधिकारियों का ज़ोर बुनियादी स्तर के लिए पाठ्यचर्या, कक्षा 1 व 2 के लिए पाठ्यपुस्तकों व कार्यपुस्तिकाओं के निर्माण पर होना चाहिए। उनका ज़ोर अतिरिक्त सामग्री के नमूने जुटाने पर होना चाहिए, जिसे डाइट आगे संदर्भीकृत कर सके और जिसके आधार पर सामग्री तैयार कर सके। इसके अलावा उनका ज़ोर आकलन चेकलिस्ट्स व प्रक्रियाओं पर होना चाहिए, जिन्हें शिक्षक उपयोग कर सकें। बुनियादी स्तर के लिए उपयोग होने वाली सामग्री के अनुवाद के लिए एस.सी.ई.आर.टी. को स्रोत, संदर्भ और समन्वयन संबंधी ज़िम्मेदारी उठानी चाहिए।

10.3.3 प्रशासनिक पदाधिकारी

प्रशासनिक पदाधिकारियों के लिए बुनियादी स्तर पर पाठ्यचर्या को लागू करने के लिए शिक्षकों की उपलब्धता सुनिश्चित कराना, शिक्षण-अधिगम संसाधनों (जैसे– खेल सामग्री, पुस्तकें, अभ्यास पुस्तिकाएँ) की आपूर्ति और वितरण को समय से उपलब्ध कराना महत्वपूर्ण है। पाठ्यचर्या की ज़रूरतों और शिक्षक के पेशेवर विकास के लिए नियमित निगरानी और प्रक्रिया की समीक्षा के साथ समुचित बजट का प्रावधान किया जाना चाहिए।

सावधानी से योजनाबद्ध और सोच-विचार कर एकत्र किए गए आँकड़े सामाजिक व आर्थिक रूप से लाभ वंचित समूहों (एस.ई.डी.जी.) की शिक्षा तक पहुँच को सुनिश्चित कराने में सहयोगी हो सकते हैं। खासकर 3-8 साल की आयु वाले बच्चों की जनसंख्या का सही आकलन आवश्यक है, जिससे कि समुचित योजना बनाई जा सके। इसके लिए आगे की योजना और निगरानी, दोनों की आवश्यकता होगी। जहाँ संभव हो, न्यूनतम प्रयास और अधिकतम जवाबदेही के साथ सटीक आँकड़े इकट्ठा करने में तकनीकी का उपयोग किया जाना चाहिए ताकि ये आँकड़े सप्ताह और महीनों में नहीं, कुछ दिनों में निर्णयकर्ताओं को उपलब्ध हो सकें।

बुनियादी स्तर पर शिक्षा की गुणवत्ता को सीखने के प्रतिफलों की उपलब्धि, खासकर कक्षा तीन में बुनियादी साक्षरता एवं संख्यात्मकता (एफ.एल.एन.) से संबंधित प्रतिफलों की उपलब्धि होनी चाहिए। राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण (एन.ए.एस.) ने इसकी निगरानी संभव बना दी है। राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण के अलावा, राज्य इस पर केंद्रित अपने राज्य अधिगम उपलब्धि सर्वेक्षण (एस.एल.ए.एस.) बना सकते हैं।

जन सेवा संदेशों और मीडिया अभियानों के माध्यम बड़े स्तर पर प्रचार-प्रसार, अभिभावकों से सीधी बातचीत और बड़े पैमाने पर उन सहज विधियों और सामग्रियों को प्रसारित करने की योजना भी बनानी चाहिए, जिनसे अभिभावक अपने बच्चों की आरंभिक शिक्षा की ज़रूरतों में मदद करने में स्वयं को सक्षम बना सकें।

खंड 10.4
अभिभावकों और समुदाय की भूमिका

10.4.1 अभिभावक और परिवार

बच्चे के सीखने और विकास में अभिभावक और परिवार विद्यालय के महत्वपूर्ण सहयोगी होते हैं। प्रारंभिक वर्षों में यह और भी महत्वपूर्ण है कि अभिभावक विद्यालय में जो कार्य होता है, उसे समझें और मदद करें। इसी तरह शिक्षक के लिए भी यह समझना महत्वपूर्ण है कि घर पर बच्चे की क्या स्थिति है, जिससे कि बच्चे से बातचीत में वे इसका ध्यान रख सकें।

अभिभावकों और परिवारों से संबंध मुद्दों को ध्यान में रखते हुए बनाए और रखने चाहिए। अभिभावकों के साथ बातचीत बार-बार होनी चाहिए और चलती रहनी चाहिए। बातचीत में अभिभावकों से प्रक्रिया में बराबर के भागीदार की तरह व्यवहार होना चाहिए। उन्हें ऐसे लोगों की तरह नहीं समझना चाहिए, जिन्हें बातचीत करके समझा दिया जाना है या उन्हें सिर्फ़ रिपोर्ट करना है। अभिभावकों को बच्चे की प्रगति के बारे में बताना होगा। यह काम अभिभावक को बच्चे के सीखने के बारे में बातचीत के लिए नियमित रूप से विद्यालय में आमंत्रित करके और शिक्षकों द्वारा उनके घर जाकर किया जा सकता है। इन बैठकों में विद्यालय संचालन पर अभिभावकों की राय व्यक्त करने का अवसर भी दिया जाना चाहिए। अभिभावक भी आवश्यकता के अनुसार शिक्षक से मिलने का समय माँग सकते हैं।

बच्चे के समग्र विकास के लिए यह आवश्यक है कि घर का वातावरण सहायक और सुरक्षित हो, जहाँ सीखने के प्रति रुचि और प्रोत्साहन मिले। साथ ही अभिभावकों को यह समझना होगा कि बच्चे के विकास में पोषण, स्वास्थ्य और भावनात्मक सुरक्षा कितनी महत्वपूर्ण है। इसके अलावा वंचना और बाल शोषण के प्रभावों के प्रति जागरूकता और परिवार व शिक्षक की बच्चे के विकास में भूमिका के आधार पर एक साझा समझ बच्चे के विकास में उपयोगी हो सकती है।

अभिभावक और परिवार स्कूलों को अपने स्तर पर मदद कर सकते हैं। उदाहरण के लिए विद्यालय के मुख्य उत्सवों, महत्वपूर्ण दिवसों व कार्यक्रमों में भागीदारी करना, विद्यालय के क्षेत्र भ्रमणों का आयोजन करना और उनकी निगरानी करना, पढ़ाए जा रहे विषय के बारे में अपने ज्ञान और अनुभव को साझा करना (जैसे पेड़ उगाना, कीड़ों को नियंत्रित करना, छोटी चोटों का प्राथमिक उपचार करना, सरल स्वास्थ्यकर भोजन बनाना, लकड़ी के प्रारंभिक काम का प्रदर्शन करना, वाहनों और पशुओं के बारे में बातचीत करना, आदि); स्कूली अभ्यासों को स्थानीय संदर्भ से जोड़ने में शिक्षक की मदद करना (जैसे स्थानीय त्योहार, स्थानीय खाना, स्थानीय कला रूप); और नियत दिनों पर अवलोकनकर्ता या सह-शिक्षक के रूप में कक्षा में भागीदारी करना। अभिभावक विद्यालय प्रबंधन समिति के सदस्य भी हो सकते हैं और अभिभावकों, स्कूल, समुदाय और शिक्षकों के बीच पुल का काम कर सकते हैं। वे अन्य अभिभावकों और विद्यालय के बीच सभी मुद्दों पर साफ़ और पारदर्शी संवाद सुनिश्चित कराने की ज़िम्मेदारी ले सकते हैं, अतिरिक्त संसाधन या सीखने की सामग्री जुटाने में मदद कर सकते हैं, उन अभिभावक समूहों का हिस्सा बन सकते हैं जो शिक्षक दिवस या खेल दिवस जैसे आयोजनों की योजना बनाएँ तथा उनका संयोजन व प्रबंधन करें।

10.4.2 समुदाय

स्थानीय समुदाय में अभिभावक, परिवार, पड़ोस के लोग, युवा समूह, समुदाय के नेता और स्थानीय सरकारी संस्थान शामिल होते हैं। समुदाय को विद्यालयों की सहायता में कई तरीकों से शामिल किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, सभी छोटे बच्चों के नामांकन और उनकी नियमित उपस्थिति सुनिश्चित कराने, शिक्षक के साथ अपने अवलोकन के अनुभव साझा करने, अतिरिक्त ढाँचागत संसाधन, सीखने की सामग्री, बच्चों के भोजन के लिए बेहतर पोषण स्रोत उपलब्ध कराने या अन्य सेवाओं में (जैसे ग्राम पंचायत दूसरी योजनाओं के तहत पानी आपूर्ति जैसी व्यवस्था के लिए पैसा आवंटित कर सकती है), सभी अभिभावकों और समुदाय के सदस्यों को विद्यालय का सक्रिय भागीदार बनाने को प्रेरित करने में और विद्यालय को समुदाय का अभिन्न हिस्सा बनाने के लिए मदद करने में।

शिक्षक के मन की बात – 10.4 क

बाल मेला

मेरा हमेशा से विश्वास रहा है कि बच्चों के सीखने में अभिभावकों और व्यापक समुदाय को शामिल करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसके लिए बाल मेले बहुत प्रभावी होते हैं। बाल मेले में मेरे बच्चों को अपनी सीखी हुई चीज़ें अपने अभिभावकों और स्थानीय समुदाय को दिखाकर ख़ुशी होती है। इस तरह के आयोजन समुदाय और विद्यालय के बीच बेहतर संबंध बनाने में मददगार होते हैं। इससे बुनियादी स्तर के बारे में अभिभावकों और समुदाय के बीच जागरूकता पैदा करने में मदद मिलती है।

हमारे गाँव में सभी शिक्षक और दूसरे पदाधिकारी इसके लिए साथ मिलकर काम करते हैं। यद्यपि हम हर बार विवरण बदलते रहते हैं, पर आमतौर पर एक बाल मेला कुछ ऐसा होता है—

- हम शिक्षक आयोजन स्थल को सजाते हैं और इन चीज़ों को प्रदर्शित करते हैं—
    - नाम, आयु और बनाने की तारीख के साथ बच्चों के बनाए हुए चित्र
    - हमारे द्वारा तैयार की गई सीखने-सिखाने की सामग्री
    - बच्चों के काम के साथ उनके पोर्टफोलियो
    - शिक्षा के आरंभिक वर्षों के महत्व, दिमाग के विकास, बच्चे कैसे सीखते हैं, उनके अनुकूल सीखने का माहौल कैसा होना चाहिए आदि को दर्शाते चार्ट और पोस्टर। हम इन सबको चित्र के माध्यम से दिखाते हैं ताकि हर कोई आसानी से समझ सके।
- जब तक दूसरे भागीदार आयोजन स्थल तक नहीं पहुँचते, बच्चे कलाकारी करने और चित्र बनाने में खुश रहते हैं।

- जब दूसरे भागीदार पहुँच जाते हैं, तब हम (कुछ बड़े बच्चों के साथ) अपना उद्देश्य, कार्यक्रम की समय-सारणी उन्हें बताते हैं। हम उनसे खूब प्रोत्साहन की उम्मीद करते हैं।
- गतिविधियाँ शुरू होती हैं— कुछ में बच्चे होते हैं, कुछ में बच्चे और अभिभावक होते हैं और कुछ सिर्फ़ अभिभावकों के साथ की जा सकती हैं।
- प्रत्येक गतिविधि के अंत में संबद्ध शिक्षक और कुछ बड़े बच्चे गतिविधि का उद्देश्य बताते हैं। वे यह भी बताते हैं कि इस गतिवधि से कैसे बच्चे के विकास में मदद मिलेगी या कैसे यह गतिविधि विकास को बढ़ाएगी। वे यह भी बताते हैं कि घर पर मौजूद संसाधनों से भी यह गतिविधि कैसे की जा सकती है।
- हम माता-पिता की भागीदारी की विशेष तौर पर कोशिश करते हैं और उन्हें अपने बच्चे के विकास के बारे में स्वयं के विचार साझा करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।
- गतिविधियों के बाद हम महत्वपूर्ण विषयों, जैसे– मस्तिष्क का विकास, प्रारंभिक वर्षों का महत्व, बच्चे के विकास में अभिभावक की भूमिका आदि पर चार्ट और पोस्टर का उपयोग करते हुए बात करते हैं।
- अपने बच्चों को कक्षा में नियमित भेजने के बारे में अभिभावक अपने अनुभव साझा करते हैं।

अंत में, शिक्षक अभिभावकों और समुदाय से अपनी अपेक्षाएँ, खासकर नामांकन और बच्चों की उपस्थिति के बारे में विचार साझा करते हैं और उनकी भागीदारी के लिए उन्हें धन्यवाद देते हैं। बाल मेला वास्तव में उत्सव है, जहाँ सारा गाँव बच्चे के सीखने में भागीदार बनता है।

खंड 10.5
तकनीकी का लाभ उठाना

शिक्षण के लिए विषयवस्तु के स्रोत की तरह तकनीकी का उपयोग करने (कृपया अध्याय 5, खंड 5.4 देखें) के अलावा बुनियादी स्तर पर तकनीकी एक सहयोगी पारिस्थितिकी तंत्र विकसित करने के लिए बेहद मददगार हो सकती है।

मौजूदा तकनीकी का लाभ उठाने और डिजिटल ढाँचे व खाके के उपयोग से क्षमता संवर्धन को तेज करने में मदद मिल सकती है, इससे भागीदारी, संलग्नता और साथ काम करने की प्रवृत्ति को बढ़ाया जा सकता है। इसका एक उदाहरण राष्ट्रीय डिजिटल शिक्षा ढाँचा (एन.डी.ई.ए.आर.) है, जिसे राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के एक साल पूरा होने के मौके पर शुरू किया गया है। एन.ई.पी. को लागू करने में इसकी मुख्य सहयोगी भूमिका है। इसकी योजना 'एक समेकित राष्ट्रीय डिजिटल ढाँचा बनाने और पारिस्थितिकी क्षमताओं का आपस में लाभ उठाने के लिए बेहतरीन संयोजक की तरह काम करने' की है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा प्रारंभिक वर्षों में तकनीकी के उपयोग के लिए कुछ विचार सुझा सकती है, पर भविष्य की सभी संभावनाओं और प्रासंगिक समाधानों को सोच पाना असंभव है। एन.डी.ई.ए.आर. जैसे लाभकारी तकनीकी ढाँचों का उपयोग दूरदर्शिता होगी, जो समय के अनुरूप अलग-अलग तरह के और आदर्श समाधान विकसित करने में मददगार होगा।

10.5.1 क्षमता संवर्धन के लिए तकनीकी

प्रारंभिक वर्षों के बच्चे के बारे में समझ बढ़ाने के लिए छोटे बच्चों की मदद और उन्हें समृद्ध करने से संबंधित कई विषयों पर छोटी मार्गदर्शिकाएँ 'कैसे करें', नवाचारों का प्रदर्शन, शिक्षण की योजना जैसे डिजिटल पाठ्यक्रम शिक्षकों और अभिभावकों के लिए भारतीय भाषाओं में उपलब्ध हैं, पर इन्हें और बेहतर बनाए जाने की आवश्यकता है।

इसमें काम करने के कुछ तरीकों में सूचनात्मक और शैक्षिक विषयवस्तु (जैसे– बातचीत का मूल्य, विकास के पड़ावों के बारे में जानकारी), अच्छे अभ्यासों (जैसे– स्थानीय स्तर पर उपलब्ध सामग्री का छोटे बच्चों के लिए उपयोग करना), गतिहीन पाठ योजना को संवादात्मक बनाने, व्यक्तिगत शिक्षण योजना बनाने, जो शिक्षक को लचीलेपन और चुनने का मौका दे आदि को शामिल किया जा सकता है।

तकनीकी उल्लेखनीय तरीके से एक-दूसरे से सीखने, विषयवस्तु और प्रक्रियाओं को साझा करने, मदद माँगने और उन दूसरे लोगों के साथ समुदाय का बोध बनाने में सक्षम बनाती है, जो इन्हीं संदर्भों में काम कर रहे होते हैं। यह तब बहुत अच्छे तरीके से काम करता है, जब सामग्री स्थानीय भाषाओं में हो और तकनीकी यह करने में सक्षम बनाती है।

'निष्ठा' एक राष्ट्रीय मिशन है, जिसका उद्देश्य ऑनलाइन मोड में चलाए जा रहे डिजिटल रूप से सक्षम शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम के द्वारा विद्यार्थियों के सीखने के प्रतिफलों को बेहतर बनाना है। इससे लाभ उठाना चाहिए और इसे लगातार बेहतर बनाना चाहिए।

शिक्षक स्वयं की बनाई हुई विषयवस्तु 'दीक्षा' जैसे मंचों पर अपलोड कर सकते हैं और वे राष्ट्रीय डिजिटल शिक्षा ढाँचा समर्थित मुक्त स्रोत विषयवस्तु लेखन उपकरण का उपयोग तरह-तरह की विषयवस्तु निर्मित करने के लिए कर सकते हैं।

10.5.2 डिजिटल ढाँचों, मंचों और उपकरणों से लाभ उठाना

विषयवस्तु निर्माताओं के जीवंत पारिस्थितिकी तंत्र को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, जिससे वे एन.डी.ई.ए.आर. (ndear.gov.in) और विद्यादान (vdn.diksha.gov.in) की क्षमताओं का उपयोग करते हुए बच्चों, शिक्षकों, अभिभावकों और समुदाय के लिए विषयवस्तु निर्माण में योगदान दें।

शिक्षक और बच्चे, जो क्यू.आर. कोड का उपयोग प्रासंगिक पाठ्यचर्या से संबंधित विषयवस्तु तक आसान पहुँच के लिए करते हैं, उनके लिए 'स्फूर्तिदायक' (energizing) सामग्री बहुत अच्छे से काम करती है। क्यू. आर. कोड का उपयोग यह भी सुनिश्चित करता है कि इससे जुड़ी हुई विषयवस्तु को किसी समय भी नवीकृत या संशोधित किया जा सकता है।

विकासात्मक चुनौतियों को दर्ज और चिह्नित करने वाले उपकरणों और प्रारंभिक जाँच के उपकरण शिक्षक को बच्चे के लिए आवश्यक मदद की सिफ़ारिश करने में सहयोग देते हैं, जैसे प्रशस्त (PRASHAST) जो कि अक्षमता जाँच की परीक्षण चेकलिस्ट है।

व्यावहारिक और प्रभावी तकनीकी सक्षम उपकरण प्रशासनिक कामकाज को आसान बनाते हुए शिक्षक का समय बचाते हैं और उनको कार्यकुशल बनाते हैं। शिक्षक और प्रशासक सीखने की जगहों में छोटे-छोटे सुधारों के विचार और कार्यक्रम की योजना बनाने और उसके क्रियान्वयन में मदद के लिए सक्षम बनाने वाले उपकरणों की सहायता ले सकते हैं। तकनीकी अभिभावक-शिक्षक समुदायों को जोड़ने में भी मददगार है। मुख्यत: जहाँ विशेष आवश्यकताओं या देरी से सीखने वाले बच्चों को सहारे की जरूरत होती है, वहाँ विशेषज्ञ और कुशल संसाधनों की खोज करने वाले उपकरणों को भी ध्यान में रखना चाहिए। बहुभाषिक स्थितियों में तकनीकी उपकरण शिक्षकों के सहयोगी हो सकते हैं। शिक्षक इनकी मदद से हर बच्चे की आवश्यकता का ध्यान रख सकते हैं।

कृत्रिम बुद्धिमता (Artificial Intelligence, AI) और मशीन लर्निंग (ML) का उपयोग कुछ चुनौतियों का हल निकालने में किया जा सकता है, जैसे अनुवाद के लिए (भाषिनी https://bhashini.gov.in/en/ और ULCA https://bhashini.gov.in/ulca) और शिक्षकों के द्वारा आवश्यकता पड़ने पर और उनके लिए प्रासंगिक सामग्री खोज सकने में सक्षम बनाने और खोजी गई विषयवस्तु का समाधान (जैसे चैटबोट्स) करने में। लेकिन ए.आई. और मशीन लर्निंग को बच्चों के संबंध में किसी भी समाधान के लिए उपयोग करने से बचना चाहिए।

10.5.3 अभिभावकों और समुदाय के लिए तकनीकी

रेडियो, टी.वी., ओ.टी.टी. मंचों जैसे प्रसार मीडिया माध्यमों और आई.वी.आर. तथा ऐसे ही अन्य तरीकों से संदेश भेजकर उत्तरदायी परवरिश को प्रोत्साहित किया जा सकता है। कई राज्य, नागरिक समाज की संस्थाओं के साथ मिलकर कुछ नए कार्यक्रम चला रहे हैं, जिन्हें आगे बढ़ाया जा सकता है।

सामुदायिक रेडियो स्टेशनों का उपयोग करते हुए 'एक दिन, एक कहानी' कार्यक्रम, खेलने और सीखने की गतिविधियाँ, साथ-साथ पढ़ने और सुनने तथा कार्यपुस्तिका पर अभ्यास करने के अवसर अभिभावकों को बच्चों के साथ जोड़ने के लिए उपलब्ध कराए गए हैं। बहुत से अभिभावक अब संदेश सेवाओं का उपयोग लोगों से जुड़ने और विषयवस्तु के उपभोग के लिए करते हैं। इसका लाभ उठाया जाना चाहिए।

अनुलग्नक 1

सीखने के प्रतिफलों के उदाहरणात्मक विवरण

यहाँ हर दक्षता के लिए सीखने के प्रतिफलों के उदाहरण दिए गए हैं। ये बुनियादी स्तर के पाँच वर्षों में सीखने के निर्धारित पथ हैं, जो संबंधित दक्षता हासिल करने की तरफ आगे ले जाते हैं।

- *जिस तरह पाठ्यचर्या के उद्‌देश्य विकासात्मक हैं, उसी तरह दक्षताएँ और सीखने के प्रतिफल भी विकासात्मक हैं।*
- *इस चरण पर, हर आयु वर्ग के लिए, अधिगम के सभी प्रतिफलों के विकासात्मक पथ निर्धारित होते हैं। विशेष आयु में प्राप्त किए जाने वाले उद्‌देश्यों के बजाय, इन्हें एक नियमित और निश्चित पथ के रूप में देखा जाना चाहिए।*
- *3–8 वर्ष की आयु विकासात्मक होती है। अलग-अलग बच्चों में यह विकास अलग-अलग गति से होता है। एक समय में सभी बच्चे समान आयु अनुरूप सीखने के प्रतिफल प्राप्त नहीं कर पाएँगे।*
- *नीचे दिया गया आयुवार वर्गीकरण निर्देशात्मक है और यह कक्षा में हर बच्चे के सीखने के अनुभवों को व्यवस्थित करने में शिक्षकों की मदद करेगा।*
- *प्रत्येक सीखने का प्रतिफल अवलोकनीय है, इनका आकलन हो सकता है। सीखने के प्रतिफलों का उपयोग करते हुए शिक्षक बच्चे की दक्षताओं का अवलोकन कर आकलन कर पाएँगे।*
- *सीखने के प्रतिफलों को व्यापक रूप में समझा जाना चाहिए। पिछले आयु समूहों के बच्चे की सीख को बाद के स्तरों पर भी निरंतर देखते रहना चाहिए। उदाहरण के लिए, यदि 4–5 वर्ष के लिए सीखने का प्रतिफल 'बिना बिखराए खाना' है, तो यह माना जाता है कि यह 5–6 वर्ष और उसके बाद के वर्षों में भी जारी रहेगा।*

नीचे के हिस्से में **पाठ्यचर्या के लक्ष्यों** को CG-1, CG-2, CG-3... और **योग्यताओं** को C-1.1, C-2.1, C-3.1... की तरह लिखा गया है। **सीखने के प्रतिफल** दक्षताओं के अनुसार हैं।

जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, सीखने के प्रतिफलों को एक निरंतरता में देखा जाना चाहिए। नीचे दी गई तालिका में उन्हें रीडिंग ग्रिड में रखा गया है। खड़ी सूची में 1, 2, 3,... और आड़ी सूची में A, B, C,... केवल संदर्भ की आसानी के लिए रखा गया है। जैसे पाठक इस उदाहरण सूची के भीतर एक विशिष्ट सीखने के प्रतिफल को इंगित करने के लिए दक्षता C-2.1 के आगे सीखने का प्रतिफल D.1 का उल्लेख कर सकते हैं।

1.1.1 शारीरिक विकास

स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क रहता है। इसी स्तर पर बच्चे सक्रिय गतिविधियों में शामिल होने के लिए अपनी समस्त इंद्रियों और पूरे शरीर का उपयोग सीखते हैं, इसलिए यहाँ स्वास्थ्यवर्द्धक भोजन करने, स्वच्छता संबंधी आदतें विकसित करने, सुरक्षा के प्रति जागरूक होने, संवेदी ध्यान को बेहतर बनाने, कसरत करने और विभिन्न मांसपेशी समूहों को समन्वित करने पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

CG-1: बच्चों में स्वस्थ एवं सुरक्षित रखने वाली आदतों का विकास

बच्चे, स्वस्थ भोजन की आदत और पोषण की समझ, दोनों विकसित करते हैं। खाने की विविधता में स्वाद विकसित करने के लिए उन्हें शुरू से ही विभिन्न तरह के भोजन-समूहों से परिचय कराया जाना आवश्यक है। स्वच्छता की कमी के कारण अक्सर स्वास्थ्य खराब होता है और बच्चे खाने से प्राप्त पोषण की कमी से स्वास्थ्य खराब कर लेते हैं, इसलिए स्कूल के प्रारंभिक वर्षों में बेहतर स्वच्छता व्यवहार विकसित करना महत्वपूर्ण है। इस दृष्टिकोण से प्रारंभिक बचपन बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि तब बच्चे की प्रतिरोधक क्षमता विकसित हो रही होती है। बच्चे समूह में स्कूल आते हैं, इसलिए स्कूल के दृष्टिकोण से कुछ बुनियादी स्वच्छता व्यवहार महत्वपूर्ण हो जाते हैं।

स्कूल सार्वजनिक स्थान हैं, इसलिए उनको तैयार करने में सुरक्षा और संरक्षण पर विशेष ध्यान अनिवार्य रूप से आवश्यक है। सुरक्षा और संरक्षण के विशेष व्यवहार को प्राप्त करने के बाद बच्चे स्कूल में सीखने के लिए बेहतर ढंग से तैयार हो पाते हैं। स्कूल उनके घर से भौगोलिक और सांस्कृतिक, दोनों तरह से दूर है। दक्षताएँ प्राप्त करने में समय लगता है, इसलिए सीखने की उपलब्धियों का 'अंतरिम चिह्नक' आवश्यक है। ये अंतरिम चिह्नक, सीखने के प्रतिफल हैं। नीचे तालिका मे दिए गए उदाहरण दक्षता के लिए सीखने के प्रतिफलों को दर्शाते हैं। तालिका में प्रत्येक कॉलम (A–E) आवश्यक है। आवश्यकता का यह क्रम किसी दक्षता को हासिल करने के लिए सीखने के निर्धारित पथ को दर्शाता है।

C-1.1: सीखने के प्रतिफल

तालिका 1

C-1.1: पौष्टिक भोजन को पसंद एवं उसको बर्बाद न करने की समझ दर्शाते हैं

आयु 3–8 वर्ष

	A	B	C	D	E
1	• उन वस्तुओं को पहचानते हैं, जिन्हें खाया जा सकता है और जिन्हें नहीं खाया जा सकता है। • खाने की शुरुआत करते हैं और वयस्कों के कहने पर तरह-तरह के खाद्य पदार्थों का नाम लेते हैं।	• वयस्कों के सहयोग से अलग-अलग खाद्य समूहों, अनाज, सब्जियाँ, फल से तरह-तरह का खाना खाते हैं (जैसे– दाल, बीन्स, मेवे और दूध से बने खाद्य)।	• अलग-अलग खाद्य समूहों को स्वतंत्र रूप से खाते हैं।	• अलग-अलग खाद्य समूहों से खाने की विविधता का आनंद लेते हैं।	• पोषण की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए भोजन की आवश्यकता को समझते हैं।
2	• कुछ स्वास्थ्यकर और कुछ अस्वास्थ्यकर खाद्य पदार्थों के नाम बताते हैं।	• किसी दुकान पर स्वास्थ्यकर और अस्वास्थ्यकर खाद्य पदार्थों को पहचानते हैं। • तर्क देते हैं कि कुछ खाने की चीज़ें स्वास्थ्य के लिए क्यों अच्छी हैं?	• अलग-अलग खाद्य समूहों से खाने की वस्तुएँ पहचानते और उनके लाभ/हानि बताते हैं। • अच्छे पोषक खाद्य पदार्थों के कुछ गुण बताते हैं (जैसे– अंडे और दाल से ताकत मिलती है, पालक से खून साफ़ होता है, दूध से दाँत मज़बूत होते हैं)।	• मदद के साथ परिचित खाने की मुख्य सामग्री को पहचानते हैं (जैसे– सांभर में दाल या चटनी में मूँगफली) • सामग्री और पोषण के बीच के संबंध को बताते हैं (जैसे– चिक्की में गुड़ और मूँगफली स्वास्थ्य के लिए अच्छे हैं)।	• पके भोजन की सामग्रियों का अनुमान लगाते हैं और बताते हैं कि वे स्वास्थ्य के लिए अच्छे हैं या बुरे। • डिब्बाबंद खाने जंक फूड की सामग्रियों को पहचानते हैं (जैसे– बिस्कुट, नूडल्स) और बताते हैं कि वे स्वास्थ्य के लिए अच्छे हैं या बुरे।
3		• आसानी से नाश्ता बनाने के लिए चित्रों द्वारा खाना बनाने की विधि का अनुसरण करते हैं।	• वयस्कों की मदद से पोषक नाश्ता बनाने में भागीदारी करते हैं (जैसे– उबले चने, अंकुरित सलाद, भेलपुरी को मिलाना)।	• खाना बनाने की विधि का उपयोग करते हुए स्वतंत्र रूप से पोषक नाश्ता बनाते हैं।	
4		• बिना बिखराए खाते हैं।	• उचित मात्रा में परोसे गए भोजन को बिना बर्बाद किए खाते हैं।	• खाने की उचित मात्रा की माँग करते हैं।	• बिना बिखराए अपने लिए खाने की उचित मात्रा लेते हैं।

C-1.2: सीखने के प्रतिफल

तालिका 2

	A	B	C	D	E
	C-1.2: स्वयं की देखभाल और स्वच्छता का बुनियादी व्यवहार करते हैं				
	आयु 3–8 वर्ष				
1	• खाने से पहले और शौच के बाद हाथ धोने और सुखाने के लिए मदद लेते हैं।	• खाने से पहले और बाद में तथा शौच के बाद हाथ धोना और सुखाना शुरू करते हैं।	• खाने से पहले और शौच के बाद हमेशा हाथ धोते और सुखाते हैं।	• शौचालय का समुचित उपयोग प्रदर्शित करते हैं।	• अपनी देखभाल और स्वच्छता के बुनियादी व्यवहार में आत्मनिर्भर हो जाते हैं।
2	• कपड़े पहन सकते हैं (बटन बंद किए बगैर) और वयस्कों की मदद से चप्पल-जूता पहन सकते हैं।	• स्वतंत्र रूप से कपड़े और जूते-चप्पल पहन सकते हैं।	• किसी के निरीक्षण में छोटी-मोटी सिलाई के लिए सुई-धागे का उपयोग शुरू करते हैं।	• किसी की मदद से सुई-धागे से बटन लगा लेते हैं, थोड़ा फटा हुआ कपड़ा सिल लेते हैं।	• स्वतंत्र रूप से सुई-धागे से बटन लगा लेते हैं, थोड़ा फटा हुआ कपड़ा भी सिल लेते हैं।
3		• स्वयं व्यक्तिगत देखभाल की वस्तुओं (कंघी, टूथब्रश) का उपयोग शुरू कर देते हैं।		• व्यक्तिगत देखभाल की वस्तुओं का समुचित उपयोग करने लगते हैं।	

C-1.3: सीखने के प्रतिफल

तालिका 3

	A	B	C	D	E
	C-1.3: स्कूल/कक्षा-कक्ष को स्वच्छ और व्यवस्थित रखते हैं				
	आयु 3–8 वर्ष				
1	• अपने सामानों, जैसे– झोला, बोतल, जूते और रूमाल आदि के बारे में जागरूक रहते हैं।	• अपने निजी सामान को सही जगह पर रखते हैं और वहीं से लेते हैं।	• निजी सामानों को अच्छे हालात में रखते हैं।	• पढ़ने की सामग्री का ध्यान से उपयोग करते हैं।	• स्कूल की संपत्तियों, किताबों, सामग्रियों और फ़र्नीचर का ध्यान रखते हैं।

2	• गंदी प्लेटों और बर्तनों को वयस्कों की मदद से निर्धारित स्थान पर रखते हैं।	• स्वतंत्र रूप से साफ़ गिलासों और प्लेटों की पहचान और उनका उपयोग करते हैं तथा गंदी प्लेटों और बर्तनों को निर्धारित स्थान पर रखते हैं।	• अपनी थाली और बर्तन धोते हैं।	• कक्षाओं, खेल के मैदानों आदि में स्वच्छता बनाए रखना शुरू करते हैं।	• कक्षाओं और खेल के मैदानों की सफ़ाई में भाग लेते हैं।
3	• किसी की सहायता के साथ कूड़ेदान का उपयोग करते हैं।	• कचरे के निपटान के लिए कूड़ेदान का उपयोग करना शुरू करते हैं।	• कचरे के निपटान के लिए हमेशा कूड़ेदान का उपयोग करते हैं।	• कचरे (गीला कचरा और सूखा कचरा) को अलग करना शुरू करते हैं।	• कचरे को उचित तरीके से अलग करते हैं।

C-1.4: सीखने के प्रतिफल

तालिका 4

	A	B	C	D	E
	C-1.4: सामग्रियों और सरल उपकरणों का सुरक्षित उपयोग करते हैं				
	आयु 3–8 वर्ष				
1	• आग, गर्म स्टोव, चाकू, बिजली के प्लग जैसी हानिकारक वस्तुओं को न छूकर खतरे से बचते हैं।	• कैंची, चाकू, माचिस की तीली जैसी हानिकारक या खतरनाक वस्तुओं को सावधानी से उपयोग करते हैं।	• किसी की देखरेख में चाकू, कैंची का उपयोग करते हैं।	• नेल कटर और छोटे चाकू का उपयोग किसी की देखरेख में ध्यान से करते हैं।	• नेल कटर, कैंची और छोटे चाकू का उपयोग स्वतंत्र रूप से करते हैं।

C-1.5: सीखने के प्रतिफल

तालिका 5

	A	B	C	D	E
	C-1.5: गतिक क्रियाओं (चलना, दौड़ना, साइकिल चलाना) में सुरक्षा जागरूकता प्रदर्शित करते हैं और समुचित तरीके से कार्य करते हैं				
	आयु 3–8 वर्ष				
1	• सड़क सुरक्षा के महत्व को पहचानते हैं , वयस्कों का हाथ पकड़कर सड़क पर चलते हैं।	• सड़क पार करने से पहले दोनों तरफ देखते हैं, साथियों या वयस्कों का हाथ पकड़ते हैं और सड़क पर सुरक्षित रूप से चलते हैं।	• स्वतंत्र रूप से सड़क सुरक्षा नियमों (किनारे चलना, सड़क पार करना आदि) का पालन करते हैं। • यातायात संकेतों (सिग्नल लाइट संकेतों को जेब्रा क्रॉसिंग, यू-टर्न, ब्रिज/रेलवे ब्रिज आदि) को पहचानते हैं।	• सार्वजनिक परिवहन के बुनियादी सुरक्षा नियमों का सड़क पर या साइकिल चलाते समय पालन करते हैं।	• साइकिल चलाते समय या सड़क पर चलते हुए यातायात नियमों का पालन करते हैं। • अधिकतर सुरक्षा संकेतों (बिजली, आग, मरम्मत, खुदाई आदि) को पहचानते हैं और खतरे से बचते हैं।

C-1.6: सीखने के प्रतिफल

तालिका 6

	A	B	C	D	E
	C-1.6: असुरक्षित स्थितियों को समझते हैं और मदद माँगते हैं				
	आयु 3–8 वर्ष				
1	• परिचित और अजनबी वयस्कों के बीच अंतर करते हैं।	• पूछे जाने पर विश्वसनीय वयस्कों को असुविधा के बारे में बताते हैं। • अजनबियों से खिलौने, चॉकलेट, पैसे या अन्य वस्तुएँ स्वीकार नहीं करते हैं।	• सुरक्षित और असुरक्षित स्पर्श के बीच अंतर को समझते हैं। • अजनबियों से दूरी बनाए रखते हैं। • भरोसेमंद वयस्कों के साथ स्वयं ही असुविधा के बारे में बात करते हैं।	• वयस्कों और साथियों की मदद लेने के लिए थोड़ी-बहुत भाषा का उपयोग करते हैं।	• किसी भी असुरक्षित स्पर्श/व्यवहार की सूचना देते हैं और उचित दूरी बनाए रखते हैं।

2		• चोट (जैसे– घुटने में खरोंच, जलना, बिजली का झटका आदि) लगने पर वयस्कों से मदद माँगते हैं। • आपात स्थिति में मदद करने वाले समुदाय के लोगों— डॉक्टर, अग्निशामक आदि की पहचान करते हैं।	• बुनियादी सुरक्षा प्रोटोकॉल को समझते हैं और उनका उपयोग करते हैं (जैसे– जलने के बाद ठंडे पानी से धोना)।

CG-2: बच्चे संवेदी अनुभूतियों में कुशाग्रता विकसित करते हैं

हर तरह के सीखने के लिए संवेदी विकास मूलभूत हैं। हमारे संवेदी ग्राही, विकसित होती अनुभूतियों, विचारों और यहाँ तक कि हमारी चेतना के बीच में गहरे तंत्रिका संबंध धीरे-धीरे पता चल रहे हैं। संवेदी विकास के लिए समुचित अनुभवों को सिर्फ़ संज्ञानात्मक विकास के पूर्ववर्ती के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। इसे बच्चे के समग्र विकास के लिए एक स्वतंत्र क्षमता के रूप में भी देखा जाना चाहिए। संवेदी विकास पर ध्यान देने से उन कठिनाइयों का शीघ्र पता लगाने के अवसर भी मिल जाते हैं, जो सीखने को प्रभावित कर सकते हैं।

C-2.1: सीखने के प्रतिफल

तालिका 7

	A	B	C	D	E
	C-2.1: आकृतियों, रंगों और उनके शेड्स के बीच अंतर करते हैं				
	आयु 3–8 वर्ष				
1	• अपने परिवेश में प्राथमिक रंगों (लाल, नीला, पीला) और अन्य सामान्य रंगों (काले, सफ़ेद, भूरे) में अंतर करते हैं और उनके नाम बताते हैं।	• प्राथमिक रंगों और द्वितीयक रंगों के प्रकारों (जैसे– हल्का नीला, गहरा नीला, हल्का हरा, गहरा हरा) के बीच अंतर करते हैं।	• दो रंगों के मिलने पर कौन-सा रंग बनेगा, इसका अनुमान लगाने का प्रयास करते हैं (जैसे– नीला और पीला मिलाने पर हरा बनता है, या लाल और सफ़ेद मिलाने पर गुलाबी बनता है)।	• दो रंगों के मिलने पर कौन-सा रंग बनेगा, इसका अनुमान लगाते हैं।	• कला रूपों, रेखांकनों, सजावट और प्रदर्शन में प्रयोग करते हैं और रंगों का उपयोग करते हैं।
2	• रंग के आधार पर वस्तुओं के समूह बनाते हैं (जैसे– सभी लाल वस्तुएँ एक साथ)।	• आयाम— लंबाई, चौड़ाई व ऊँचाई के आधार पर वस्तुओं के समूह बनाते हैं (जैसे– सभी लंबी वस्तुएँ एक साथ)।	• रंगों और आकृतियों की दृश्य विशेषताओं के संयोजन के आधार पर वस्तुओं के समूह बनाते हैं। (जैसे– सारे लाल त्रिभुज एक साथ, सभी बड़ी हरी पत्तियाँ एक साथ)।	• पैटर्न बनाते हैं, पहेलियाँ सुलझाते हैं, विभिन्न आकृतियों, रंगों और उनके शेड्स की पहचान करते हुए और उनके समूह बनाते हुए खेल खेलते हैं।	

C-2.2: सीखने के प्रतिफल

तालिका 8

	A	B	C	D	E
	C-2.2: प्रतीकों और निरूपणों के लिए दृश्य स्मृति विकसित करते हैं				
	आयु 3–8 वर्ष				
1	• एक जैसे– पैटर्न, अभिविन्यास व आकार वाले दो दृश्य प्रतीकों का मिलान करते हैं (जैसे– + को + से मिलाना, ∞ को ∞ से मिलाना)।	• एक जैसे– पैटर्न पर अलग अभिविन्यास व आकार वाले दो दृश्य प्रतीकों का मिलान करते हैं (जैसे– + को + से मिलाना, ∞ से ∞ को मिलाना)।	• स्मृति से दृश्य प्रतीकों को याद करते हैं और उनका मिलान करते हैं। (जैसे– कार्ड्स का उपयोग करके स्मृति खेल)।		

C-2.3: सीखने के प्रतिफल

तालिका 9

	A	B	C	D	E
	C-2.3: ध्वनियों में उनके उतार-चढ़ाव, आवाज़ और गति के आधार पर उनके उतार-चढ़ाव, आवाज़ और ध्वनि पैटर्न में अंतर करते हैं				
	आयु 3–8 वर्ष				
1	• परिवेश की ध्वनियों को मनुष्यों, जानवरों, वाहनों, ताली की आवाज़, नल, वस्तुओं की आवाज़ आदि के रूप में अलग-अलगकरते हैं।	• पक्षियों व जानवरों की आवाज़, वाद्ययंत्र और मनुष्य की आवाज़ में ऊँचे स्वर और नीचे स्वर के बीच भेद कर पाते हैं।	• पिच में मध्यम स्वर पहचान पाते हैं।	• यदि कोई दो ध्वनि/सुर, उतार-चढ़ाव, हल्केपन-भारीपन के दृष्टि से मेल खाते हैं तो उन्हें पहचानते हैं।	• दिए गए स्केल में संगीत के स्वरों की रेखीय और गैर-रेखीय प्रगति के बीच अंतर कर पाते हैं।
2	• तेज और कोमल ध्वनि में अंतर करते हैं।	• ध्वनि की गति में धीमी और तीव्र गति का अंतर कर पाते हैं।	• हल्केपन-भारीपन और ताल में मध्यम परास को पहचानते हैं।	• संगीत के दिए गए किसी अंश में गति का बदलाव पहचान लेते हैं।	

C-2.4: सीखने के प्रतिफल

तालिका 10

C-2.4: विभिन्न गंधों और स्वादों के बीच अंतर करते हैं

आयु 3–8 वर्ष

	A	B	C	D	E
1	• सुगंध और दुर्गंध (इत्र, फूल, कचरा आदि) की पहचान करते हैं।	• फूल, इत्र और खाद्य पदार्थों आदि की सुगंध में भेद करते हैं।	• स्वास्थ्य के लिए हानिकारक वस्तुओं की गंध पहचानते हैं (जैसे– धुआँ, सड़े हुए अंडे आदि)।		
2	• मीठे, नमकीन, कड़वे, खट्टे और गर्म (मसालेदार) स्वाद की पहचान करते हैं।	• विभिन्न प्रकार के भोजनों से तरह-तरह के व्यंजन और स्वादों की खोज करते हैं।			

C-2.5: सीखने के प्रतिफल

तालिका 11

C-2.5: स्पर्श की अनुभूतियों में विभेद की क्षमता विकसित करते हैं

आयु 3–8 वर्ष

	A	B	C	D	E
1	• कठोर और मुलायम, गर्म और ठंडी, खुरदरी और चिकनी सतहों में अंतर करते हैं।	• कठोर और मुलायम, गर्म और ठंडी, खुरदुरी और चिकनी सतह के आधारों पर दो वस्तुओं की तुलना करते हैं।	• सही शब्दावली के साथ कठोर और मुलायम, गर्म और ठंडी, खुरदुरी और चिकनी सतह के आधार पर 3–5 वस्तुओं को क्रमबद्ध करते हैं (सबसे चिकना, चिकना, कठोर, उससे अधिक कठोर, सबसे अधिक कठोर)।	• सूक्ष्म विविधताओं के आधार पर बनावटों की तुलना को विस्तृत करते हैं, जैसे– गुदगुदा, फर वाला, बुना हुआ, चुभने वाला, गड्ढ़ेदार आदि।	

C-2.6: सीखने के प्रतिफल

तालिका 12

	A	B	C	D	E
	C-2.6: अनुभवों की समग्र जागरूकता प्राप्त करने के लिए संवेदी अनुभूतियों को एकीकृत करना शुरू करते हैं				
	आयु 3–8 वर्ष				
1	• ताकत लगाकर साँस फेंकते हैं।	• हल्की वस्तुएँ जैसे– कागज़ फेंकते हैं।	• लय में साँस लेते-छोड़ते हैं।	• साँस लेने की तुलना में लंबे समय तक धीरे-धीरे साँस छोड़ते हैं।	• अनुलोम-विलोम श्वसन करते हैं।
2		• थोड़ी देर के लिए स्थिर बैठते या लेटते हैं।	• स्थिर बैठते हैं और अपनी साँस पर थोड़ी देर के लिए ध्यान देते हैं।	• स्थिर बैठते हैं और थोड़ी देर के लिए अन्य संवेदी अनुभूतियों पर ध्यान देते हैं।	• स्थिर बैठते हैं और अपने विचारों का प्रवाह देख पाते हैं।

CG-3: बच्चे एक स्वस्थ और लचीले शरीर का विकास करते हैं

विभिन्न मांसपेशी समूहों के लिए व्यायाम और विशेष उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए उनमें समन्वय बनाने के अवसर इस आयु वर्ग के बच्चों के लिए एक महत्वपूर्ण विकासात्मक आवश्यकता है। स्थूल गत्यात्मक विकास (Gross motor development) में बड़ी मांसपेशियों का समन्वय शामिल होता है, जो गति के संतुलन को प्रभावित करता है। सूक्ष्म गत्यात्मक विकास (Fine motor development) में आँखों और हाथों से जुड़ी छोटी मांसपेशियाँ शामिल होती हैं। मांसपेशी समूहों में समन्वयन भी महत्वपूर्ण है।

C-3.1: सीखने के प्रतिफल

तालिका 13

	A	B	C	D	E
	C-3.1: विभिन्न गतिविधियों में संवेदी अनुभूतियों और शरीर संचालन के बीच समन्वय प्रदर्शित करते हैं				
	आयु 3–8 वर्ष				
1	• बहुत ही बुनियादी नियंत्रण के साथ गेंदों को लपकना, फेंकना और गेंद को पैर से मारना शुरू करते हैं।	• बड़ी गेंद लपक लेते हैं, फेंक लेते हैं और ताकत के साथ गेंद को पैर से मारते हैं। • कम दूरी के भीतर निशाना लगाकर फेंकने में थोड़ी सटीकता दिखाते हैं।	• विभिन्न आकार की गेंदों को लपकने, फेंकने और पैर से मारने में पहले से बेहतर प्रदर्शन करते हैं।	• खेल की स्थितियों में गेंदों को लपक लेते हैं। फेंक लेते हैं और पैर से मार लेते हैं।	

C-3.2: सीखने के प्रतिफल

तालिका 14

	A	B	C	D	E
	C-3.2: विभिन्न शारीरिक गतिविधियों में संतुलन, समन्वय और लचीलापन दिखाते हैं				
	आयु 3–8 वर्ष				
1	• सहारे/मदद के साथ एक पैर पर खड़े होते हैं।	• बिना सहारे के एक पैर पर अपेक्षाकृत देर तक खड़े रहते हैं। • 4–5 कदम कूदते हैं।	• आराम से 10–15 कदम कूदते हैं।	• कूदते हैं और पूरा खेल खेलते हैं।	• आराम से रस्सी कूदते हैं।
2	• एक पैर पर थोड़ी देर के लिए संतुलन बनाते हैं।	• अलग-अलग सतहों (जैसे– ईंट, सीढ़ी) पर संतुलन बनाते हैं।	• सिर/हाथ पर वस्तुओं को संतुलित करते हैं (जैसे– सिर पर किताब रखकर चलना)। • बेहतर शारीरिक संतुलन प्रदर्शित करते हैं (जैसे– बिना सहारे के साथ साइकिल चलाना)।	• अच्छे संतुलन और तकनीक के साथ भारी वस्तुएँ, कुर्सियाँ मेज़/झोला उठा लेते हैं। • रफ़्तार के साथ अच्छा शारीरिक संतुलन प्रदर्शित करते हैं (जैसे– रफ़्तार के साथ साइकिल चलाना)।	• फुर्ती और संतुलन प्रदर्शित करते हैं (जैसे– पेड़ों पर चढ़ना, पार्क के ढाँचों पर उतरना-चढ़ना)। • दूसरे पैर को मोड़कर एक पैर के सहारे एक मिनट तक खड़े रह सकते हैं (जैसे– ध्रुवासन करना)।

C-3.3: सीखने के प्रतिफल

तालिका 15

	A	B	C	D	E
	C-3.3: हाथों और अँगुलियों से काम करने में सटीकता और नियंत्रण दिखाते हैं				
	आयु 3–8 वर्ष				
1	• सरल गतिविधियों (जैसे– आड़ी-तिरछी रेखाएँ खींचने, कागज़ फाड़ने, चिपकाने, मुक्त तरीके से रंगने और मिट्टी के काम) में बेहतर गतिक कौशल, आँख व हाथ के समन्वयन और मांसपेशियों का सामर्थ्य प्रदर्शित करते हैं।	• उन कामों के लिए गतिक नियंत्रण (motor control) प्रदर्शित करते हैं जिनमें मध्यम सटीकता के साथ सही गतिक (motor) और आँख-हाथ समन्वयन की आवश्यकता होती है (जैसे– बड़े आकार काटना, बड़े मोतियों को पिरोना, बटन लगाना, बोतलों का ढक्कन खोलना-बंद करना, क्रेयॉन से चित्र बनाना)।	• उन गतिविधियों पर काम करने के लिए उचित गतिक मांसपेशियों के समन्वित संचालन का उपयोग करते हैं, जिनमें कुछ सहायता के साथ अधिक सटीकता की आवश्यकता होती है (जैसे– पेंसिल से चित्र बनाना, सीधी या घुमावदार रेखा के आधार पर काटना, छोटे मोती पिरोना, अक्षरों का सुपाठ्य लेखन, फूलों की माला बनाना, बंद आकृति के भीतर रंग भरना)।	• शिल्प और कलाकृति का निर्माण करते हैं, जिसमें बिना किसी मदद के छोटी मांसपेशियों के आँख और हाथ की गति में समन्वयन की सटीकता की आवश्यकता होती है (जैसे– अनुरेखण (ट्रेसिंग) स्पष्ट लेखन और चित्र बनाना, छोटी गेंद को पकड़ना, ज्यामितीय आकृतियों की नकल करना, पैटर्न बनाना)।	• उन गतिविधियों में सटीकता और बारीकी के साथ काम करते हैं, जिनमें लंबी अवधि के लिए सही गतिक नियंत्रण की आवश्यकता होती है (जैसे– सुई में धागा डालना, सुई से काम करना, चित्रकारी, रेखांकन)।

अन्य उदाहरण

आयु 3–4 वर्ष	आयु 4–6 वर्ष	आयु 6–8 वर्ष
• एक हाथ से गिलास पकड़ते हैं। • अँगूठे और अँगुलियों से क्रेयॉन पकड़ते हैं। • स्वयं से चित्रकारी करते हैं– रगड़ना/घसीटना, कलाइयों का उपयोग करते हुए रंगना। • मिट्टी का गोला बनाते हैं या उसे टेढ़ी-मेढ़ी लाइनों जैसा बनाते हैं। • चम्मच पकड़ते हुए उसमें से कम द्रव छलकाते हैं। • कागज़ का एक स्तरीय सरल मोड़ मोड़ लेते हैं।	• बिना मदद के स्वयं को भोजन परोसते हैं। • खाना खाते समय चम्मच का सही तरीके से उपयोग करते हैं। • विभिन्न ड्रॉइंग और कला सामग्रियों (क्रेयॉन, ब्रश, फिंगर पेंट आदि) का उपयोग करते हैं। • ब्लॉकों वाली किताब में दिखाई गई आकृतियों की नकल करते हैं। • सीधी या घुमावदार रेखा में काट लेते हैं। • जटिल कामों को पूरा करने के लिए समन्वित संचालन का उपयोग करते हैं, जैसे कि एक रेखा के साथ काटना, उड़ेलना, बटन लगाना, बड़े जिपर का उपयोग करना आदि।	• फ़र्श से उछलती गेंद पकड़ लेते हैं। • मनचाहे पैटर्न पर फूल और मोती गूँथ लेते हैं। • पेंसिल को सही ढंग से पकड़ते हैं, काटने, पकड़ने, सिलाई, बटन लगाने आदि के दौरान अँगुलियों और हाथ की गतिविधियों का सहज व नियंत्रित उपयोग करते हैं। • लिखने/रंगने के उपकरणों का उपयोग करते समय समन्वित संचालन प्रदर्शित करते हैं।

• मोती पिरोने, छेदों में छोटी वस्तुएँ घुसाने, बड़े बटन कसने, कम धारवाली कैंची से कागज़ काटने, बड़े कागज़ पर छोटे कागज़ के टुकड़े चिपकाने आदि में समन्वित संचालन प्रदर्शित करते हैं। • छोटे ब्लॉकों से सरल संरचना बनाते हैं।	• छोटे ब्लॉकों से टावर बनाते हैं। (8–10 ब्लॉक) • स्ट्रिंगिंग बोर्ड पर माला बनाते हैं। फूलों की माला बनाते हैं। (संभव है कि किसी एक पैटर्न का अनुसरण न करें)। • वस्तुओं को बनाने के लिए स्वतंत्र रूप से दोनों हाथों का उपयोग करते हैं। • कुछ अक्षर या अंक लिखते हैं, जिसे पहचाना जा सकता है। • चित्र बनाने या लिखने के लिए लगातार एक हाथ का उपयोग करते हैं।	• लेखन और चित्रकला के उपकरणों का उपयोग करते समय नियंत्रण और उचित दबाव प्रदर्शित करते हैं। • ब्लॉकों (2”× 2” ब्लॉक) की आउटलाइन को ट्रेस कर लेते हैं। • सरल ज्यामितीय आकृतियों और डिज़ाइनों की नकल करते हैं।

C-3.4: सीखने के प्रतिफल

तालिका 16

C-3.4: ढोने, चलने और दौड़ने में ताकत तथा सहनशक्ति प्रदर्शित करते हैं

आयु 3–8 वर्ष

	A	B	C	D	E
1	• सीधी रेखा में चलते हैं। • पीछे की ओर चलने में सक्षम होते हैं। • पंजों पर चल सकते हैं (छह से अधिक कदम)। • दिशा और गति को आराम से बदलते हुए चलते हैं और आसानी से दौड़ते हैं।	• सीधी और घुमावदार/ टेढ़ी-मेढ़ी रेखा में आराम से चलते हैं। • संतुलन के साथ छह इंच चौड़े रास्ते पर चलते हैं। • पैर बदलते हुए ऊपर-नीचे आराम से चलते हैं। • सुरंगों में रेंग सकते हैं।	• शरीर की गतिविधियों में सामंजस्य बिठाते हुए आसानी से चलते और दौड़ते हैं। • सिर के ऊपर हाथ उठाकर पंजों के बल 10 मीटर तक चलते हैं (जैसे– ताड़ासन)।	• अलग-अलग रास्तों पर आसानी से एक कि.मी. या उससे अधिक पैदल चलते हैं। • सिर के ऊपर हाथ स्थिर करके एक मिनट तक रहते हैं (जैसे– ताड़ासन)।	• अलग-अलग रास्तों पर लंबी दूरी (2–3 कि.मी.) चलने में ताकत और सहनशक्ति प्रदर्शित करते हैं।
2	• एक जगह पर कूदते हैं, एक छोटी बाधा पार कर लेते हैं। • कूदकर अपने पैरों पर उतर पाते हैं (ऊँचाई ढाई से तीन फीट)।	• दोनों पैरों को उठाते हुए बिना सहारे/या थोड़े सहारे के कूदते हैं और छोटी वस्तुओं के ऊपर से कूद पाते हैं।	• ठीक-ठाक ऊँचाई से आसानी से कूद पाते हैं (जैसे– 2 या 3 कदम, 3 फीट ऊँची बेंच)।	• आसानी से चढ़ते और कूदते हैं (जैसे– छोटे पेड़)।	• चारों ओर दौड़ते हैं और वस्तुओं के ऊपर से आसानी से कूद पाते हैं।
3	• छोटे भार उठाकर चल पाते हैं (जैसे– मग या बालू उठाकर एक जगह से दूसरी जगह ले जा पाते हैं)।	• बड़े मांसपेशी समूहों के उपयोग की आवश्यकता वाले कामों के लिए ताकत लगाने की इच्छा दिखाते हैं (जैसे– कक्षा में छोटे फ़र्नीचर को इधर-उधर करने में मदद करते हैं)।	• खेलने में ताकत की आवश्यकता वाले काम आराम से करते हैं (जैसे– रस्साकशी खेलना)।	• काम और खेलने की स्थितियों में ताकत और सहनशक्ति प्रदर्शित करते हैं (जैसे– बगीचे में छोटे बर्तन उठाना, पानी की बाल्टी रखना, 15 मिनट तक दौड़ना)।	

1.1.2 सामाजिक-भावनात्मक और नैतिक विकास

शारीरिक और संज्ञानात्मक विकास के साथ-साथ बच्चे के भावनात्मक विकास पर भी ध्यान देना आवश्यक है। यह स्थापित तथ्य है कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता, भावनाओं को समझने और उनका प्रबंधन करने की क्षमता का, संज्ञानात्मक बुद्धिमत्ता से यदि अधिक नहीं, तो बराबर का महत्व है। अपनी भावनाओं को समझने और उनका प्रबंधन करने के साथ-साथ दूसरों की भावनात्मक स्थिति को समझना हमें समानुभूति और करुणा निर्मित करने में मदद करता है। सीखने के प्रतिफलों के माध्यम से इस चरण में भावनात्मक और सामाजिक बुद्धिमत्ता के लिए एक दृढ़ बुनियाद की बात स्पष्ट रूप से कही गई है।

CG-4: बच्चे भावनात्मक बुद्धिमत्ता अर्थात अपनी भावनाओं को समझने एवं उनका प्रबंधन करने और सामाजिक मानदंडों के प्रति सकारात्मक रूप से प्रतिक्रिया देने की क्षमता विकसित करते हैं

इसमें शामिल हैं—

- सकारात्मक 'स्व-अवधारणा'— 'स्व' के विचार में परिवर्तन और निरंतरता को पहचानने और जागरूक रहने की क्षमता पर निर्देशित ढंग से ध्यान देने की आवश्यकता है।
- भावनात्मक जागरूकता और नियमन— अपनी भावनाओं के बारे में जागरूक होने और उनका उचित तरीके से नियमन करने की क्षमता विकसित करना महत्वपूर्ण है। इसे पहले से ही विकसित किया जाना चाहिए। यह समझना चाहिए कि इस तरह का नियमन स्वैच्छिक अभ्यास के माध्यम से विकसित कौशल है। इसे किसी खतरे की भयपूर्ण प्रतिक्रिया की तरह नहीं होना चाहिए। भावनात्मक विकास वास्तव में करुणामय वातावरण में ही हो सकता है।
- सामाजिक विकास— सामाजिक बुद्धिमत्ता नैतिक, मानवतावादी और संवैधानिक मूल्यों के विकास की बुनियाद है। इसका विकास दूसरों के साथ अंतर्क्रिया और इन अंतर्क्रिया के माध्यम से दूसरों की आवश्यकताओं और भावनात्मक अवस्थाओं को पहचानने से होता है। पृष्ठभूमि की विविधता और दूसरों की ज़रूरतों की पहचान के साथ यह 'अन्य/दूसरों के बारे में' छोटे बच्चों में मूल्यवान क्षमताएँ विकसित करता है।

C-4.1: सीखने के प्रतिफल

तालिका 17

C-4.1: परिवार और समुदाय से संबंधित व्यक्ति के रूप में 'स्व' को पहचानने लगते हैं

आयु 3–8 वर्ष

	A	B	C	D	E
1	• एक व्यक्ति के रूप में स्व के बारे में जागरूकता प्रदर्शित करते हैं (जैसे– पसंदीदा शर्ट या बैग या वस्तुएँ बताते हैं)।	• स्व को परिवार, पड़ोस, स्कूल, शहर के सदस्य के रूप में पहचानते हैं, जहाँ अलग-अलग लोग अलग-अलग भूमिकाएँ निभाते हैं।		• समाज में योगदान करने के लिए अपनी क्षमताओं और रुचियों को व्यक्त करना शुरू करते हैं, जैसे– बड़ा होकर मैं किसान, डॉक्टर, पायलट, सैनिक आदि बनना चाहता हूँ।	

2	• अपना पहला और पारिवारिक (आखिरी) नाम बताते हैं।	• दूसरों की पहचान वाली सूचनाएँ साझा करते हैं (जैसे– अभिभावकों का नाम)।	• व्यक्तिगत पहचान संबंधी जानकारियाँ साझा करते हैं (जैसे– घर का पता, परिवार के सदस्यों का विवरण, स्कूल आदि)।	• परिवार के सदस्यों के व्यवसाय और उनके काम की जगह के निजी विवरण साझा करते हैं। • परिवार के वयस्क सदस्यों के काम को महत्व देते हैं (जैसे– मेरी माँ किसान हैं और उनके काम से हम सभी को अच्छा भोजन करने में मदद मिलती है)।

C-4.2: सीखने के प्रतिफल

तालिका 18

C-4.2: अलग-अलग भावनाओं को पहचानते हैं और उनका उपयुक्त तरीके से नियमन करने के लिए सुविचारित प्रयास करते हैं

आयु 3–8 वर्ष

	A	B	C	D	E
1	• अपनी चाहतों और भावनाओं की पहचान करते हैं (जैसे– मैं आज रंग भरना नहीं चाहता, मैं बाहर जाना चाहता हूँ)। • सरल भावनाओं (भय, खुशी, उदासी) को पहचानते हैं।	• भावनाओं को शब्दों और चेहरे के भावों से जोड़ते हैं। • मौखिक और गैर-मौखिक के माध्यम से भावनाएँ व्यक्त करते हैं (जैसे– इशारे, चित्रकारी आदि)।	• अपनी भावनाओं और उनके कारणों का वर्णन करते हैं (जैसे– मैं गुस्सा हूँ, क्योंकि उसने मेरा ब्लॉक टॉवर तोड़ दिया)। • दूसरे लोगों (दोस्तों व परिचित वयस्कों) के साथ भावनाएँ साझा करते हैं।	• सामाजिक रूप से स्वीकृत तरीकों से अपनी भावनाओं का वर्णन करते हैं (जैसे– रोना बंद करके बताते हैं कि क्यों रो रहे थे)।	
2			• परेशान या गुस्सा होने पर स्वयं को शांत करने में मदद के लिए गतिविधियों में बदलाव हेतु सहमत होते हैं।	• समुचित भावनाओं के साथ प्रतिक्रिया देते हैं (जैसे– सर्कल टाइम के समय सुनाए गए चुटकुलों पर हँसते हैं, परेशान होने पर चुपचाप बैठ जाते हैं)। • स्वयं को शांत करने के लिए सचेत रूप से रणनीतियों का उपयोग करते हैं (जैसे– साँस लेना, गतिविधि बदलना)।	

C-4.3: सीखने के प्रतिफल

तालिका 19

C-4.3: अन्य बच्चों और वयस्कों के साथ आराम से बातचीत करते हैं

आयु 3–8 वर्ष

	A	B	C	D	E
1	• परिवार के करीबी सदस्यों/खास वयस्कों को पहचान लेते हैं/उनका नाम लेते हैं। • परिचित वयस्कों के साथ आराम से बातचीत करते हैं।		• कम परिचित वयस्कों के साथ आराम से बातचीत करना शुरू करते हैं।	• परिचित और कम परिचित वयस्कों के साथ ससम्मान बातचीत करते हैं (जैसे– नमस्ते, कृपया, धन्यवाद, क्षमा करें आदि)।	
2	• माता-पिता या परिचित वयस्कों के बिना कक्षा में आराम से रह पाते हैं।	• परिचित बच्चों के साथ खेलने में स्वत: स्फूर्तता और वरीयता प्रदर्शित करते हैं, यदि आवश्यकता हो तो वयस्कों की मदद से खेलने वाले बच्चों के समूह में शामिल हो जाते हैं।	• दूसरे बच्चों के साथ खेलने और काम करने में रणनीतियों का प्रदर्शन करते हैं (जैसे– उन्हें खेलने के लिए आमंत्रित करते हैं, आपसी नियमों, बातचीत और खेलने में भूमिकाओं को समायोजित करते हैं)।	• दूसरे बच्चों के साथ समन्वित तरीके से खेलते हैं, मित्रों के साथ परस्पर रुचियों को पहचानते हैं।	• दूसरे बच्चों के साथ खेलने में विशिष्ट (प्रक्रियात्मक) नियमों को समझते हैं और अपनी प्रतिक्रिया देते हैं।
3			• अधिकतर समय साथियों के साथ खेलने के लिए वयस्कों से स्वेच्छा से अलग हो जाते हैं।	• साथियों की संगति में रहना पसंद करते हैं।	• साथियों के साथ लंबा समय बिताते हैं और किसी अजनबी परिवेश में वयस्क की मदद से साथ रह पाते हैं (क्षेत्रीय भ्रमण)।
4			• कम-से-कम किसी एक बच्चे के साथ घनिष्ठ मित्रता बनाते और कायम रखते हैं। • परिचित वयस्कों से मदद माँगते हैं।		• स्कूल में दोस्तों का एक समूह बनाते हैं। • आवश्यकता पड़ने पर कम परिचित वयस्कों से मदद माँगते हैं। • आवश्यकता पड़ने पर वयस्कों या अन्य बच्चों की मदद करते हैं।

C-4.4: सीखने के प्रतिफल

तालिका 20

	A	B	C	D	E
	C-4.4: दूसरे बच्चों के साथ सहयोगात्मक व्यवहार प्रदर्शित करते हैं				
	आयु 3–8 वर्ष				
1	• दूसरे बच्चों के साथ खेलना शुरू करते हैं।	• दूसरे बच्चों के साथ खेलना पसंद करते हैं।	• अन्य बच्चों के साथ खेलना शुरू करते हैं और योजना बनाते हैं (जैसे– क्या, कैसे और कब खेलना है)।	• खेल के दौरान दूसरों के विचारों को शामिल करने की इच्छा प्रदर्शित करते हैं। • दूसरों के साथ खेलते समय खेल के नियमों का पालन करते हैं।	• दूसरों के साथ खेलने के लिए नियम बनाते हैं और उन नियमों का पालन करते हैं।

C-4.5: सीखने के प्रतिफल

तालिका 21

	A	B	C	D	E
	C-4.5: कक्षा और विद्यालय में सामाजिक नियमों को समझते हैं और उन पर सकारात्मक रूप से प्रतिक्रिया देते हैं				
	आयु 3–8 वर्ष				
1	• रोज़मर्रा की गतिविधियों में भाग लेते हैं।	• दूसरे बच्चों के साथ रोज़मर्रा की गतिविधियों का आनंद लेते हैं।	• रोज़मर्रा की गतिविधियों में स्वावलंबन प्रदर्शित करते हैं। • स्वयं का काम पूरा करने की ज़िम्मेदारी लेते हैं। • असुविधाएँ साझा करते हैं और आवश्यकता पड़ने पर मदद माँगते हैं।	• गतिविधि आयोजित करने के लिए पहल करते हैं। • अलग-अलग बच्चों के साथ अलग-अलग काम करने का कौशल प्रदर्शित करते हैं। अन्य बच्चों के साथ ज़िम्मेदारी और काम पर बातचीत करते हैं।	• साथ में खेलते या काम करते समय अपनी बात अभिव्यक्त करते हैं। • एक काम लेते हैं और उसे पूरा करते हैं।
2	• शिक्षक की मदद से सरल निर्देशों का पालन करते हैं।	• अपनी बारी की प्रतीक्षा करते हैं।	• शिक्षक की मदद से सरल निर्देशों का पालन करते हैं।	• निर्देशों/नियमों का पालन करते हैं। • नियमों के उल्लंघन के परिणामों को समझते हैं।	

C-4.6: सीखने के प्रतिफल

तालिका 22

	A	B	C	D	E
	C-4.6: दूसरों (जानवरों, पौधों सहित) के प्रति आवश्यकताओं के समय दयालुता और मदद का भाव प्रदर्शित करते हैं				
	आयु 3–8 वर्ष				
1		• दूसरे बच्चों और वयस्कों के प्रति स्नेह दिखाते हैं।	• वस्तुओं को संभालने में संवेदनशीलता प्रदर्शित करते हैं।	• दूसरे सजीवों के प्रति देखभाल और संवेदशीलता दिखाते हैं।	• समूह में दूसरों के प्रति दया और स्नेह प्रदर्शित करते हुए साझा काम करते हैं।

C-4.7: सीखने के प्रतिफल

तालिका 23

	A	B	C	D	E
	C-4.7: दूसरे बच्चों के विभिन्न विचारों, प्राथमिकताओं और भावनात्मक ज़रूरतों को समझते हैं और उनके प्रति सकारात्मक रूप से प्रतिक्रिया देते हैं				
	आयु 3–8 वर्ष				
1		• पृष्ठभूमि या क्षमता की परवाह किए बिना सभी बच्चों के साथ खेलते और बातचीत करते हैं।	• बच्चों के बीच समानताएँ और अंतर (जैसे– ऊँचाई, जेंडर, त्वचा का रंग, बोलने का तरीका, खाने की प्राथमिकता) चिह्नित करना शुरू करते हैं।	• कक्षा की गतिविधियों के लिए मिले-जुले समूहों में अच्छी तरह से काम करते हैं। • दूसरे बच्चों को विभिन्नताओं के कारण धमकाते या लेबल नहीं करते हैं।	• 'अपने से अलग' लोगों में जिज्ञासा और रुचि प्रदर्शित करते हैं। • लोगों के बीच समानताओं और अंतर पर प्रश्न करते हैं। • समानताएँ और भिन्नताएँ जानने के बावजूद विविध दोस्तों के समूह के साथ आराम से अंतर्क्रिया करते हैं।

CG-5: बच्चे उपयोगी कार्य और 'सेवा' के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित रखते हैं

C-5.1: सीखने के प्रतिफल

तालिका 24

	A	B	C	D	E
	C-5.1: दूसरों की मदद के लिए अपनी आयु के उपयुक्त शारीरिक कार्य करने की इच्छा और भागीदारी प्रदर्शित करते हैं				
	आयु 3–8 वर्ष				
1	• उपयोग के बाद सामग्रियों और खिलौनों को उनके उचित स्थानों पर वापस रखते हैं।	• शिक्षक की मदद करते हैं और कक्षा को व्यवस्थित करते हैं।	• खाने के बाद स्वयं की प्लेट या टिफ़िन साफ़ करते हैं। • घर और/या स्कूल में उपयुक्त काम करते हैं (जैसे– सही जगह खिलौने रखना, पौधों को पानी देना)।	• स्थानीय पेड़ों का अंकुरण करते हैं और उनकी देखभाल करते हैं।	• शिक्षण अधिगम सामग्री (TLM) बनाने में शिक्षक की मदद करते हैं। • रसोई में सफ़ाई और सब्ज़ी काटने के काम में मदद करते हैं।

CG-6: बच्चे अपने आस-पास के प्राकृतिक वातावरण के प्रति सकारात्मक सोच विकसित करते हैं

C-6.1: सीखने के प्रतिफल

तालिका 25

	A	B	C	D	E
	C-6.1: सभी सजीवों के प्रति देखभाल और उनसे जुड़ने में खुशी प्रदर्शित करते हैं				
	आयु 3–8 वर्ष				
1	• पौधों और जानवरों को देखने की उत्सुकता प्रदर्शित करते हैं।	• पौधों और जानवरों को गैर-आवश्यक तरीके से नुकसान नहीं पहुँचाते हैं।	• स्थानीय परिवेश में पौधों और जानवरों के साथ जुड़ने में खुशी प्रदर्शित करते हैं। • प्रकृति के साथ शारीरिक अंतर्क्रिया में कोई असुविधा नहीं दिखाते हैं (जैसे– बगीचे या पार्कों में)।	• विशेष वनस्पतियों और जीवों को पहचानने में जिज्ञासा और रुचि दिखाते हैं। • अंकुरों और पौधों की देखभाल और पालन-पोषण की ज़िम्मेदारी लेते हैं।	• बिल्ली के बच्चों, पिल्लों, मुर्गियों जैसे– जानवरों की देखभाल और पालन-पोषण की ज़िम्मेदारी लेते हैं। • प्रकृति की सैर के लिए बाहर जाने में तथा पौधों और जानवरों को देखने से खुश होते हैं।

1.1.3 संज्ञानात्मक विकास

इस आयु वर्ग के बच्चे अपने अनुभवों के आधार पर आस-पास की दुनिया के बारे में तेजी से अवधारणाएँ विकसित कर रहे होते हैं। समझ के साथ सीखने और औपचारिक शिक्षा में अवधारणाओं के विकास के लिए अनुभव और समझ के विकास को प्राथमिकता देनी चाहिए, केवल तथ्य याद करा देना उद्देश्य नहीं होना चाहिए। यहाँ संज्ञानात्मक विकास को वस्तुओं के ज्ञान के विकास, तार्किक चिंतन और समस्याओं के समाधान की सामान्य क्षमताओं के विकास, गणितीय क्षमताओं और चिंतन के विकास और बच्चे के आस-पास के प्राकृतिक और सामाजिक परिवेश से संबंधित अवधारणाओं के विकास के माध्यम से देखा गया है।

CG-7: बच्चे अवलोकन और तार्किक चिंतन के माध्यम से दुनिया को समझते हैं

बच्चे आस-पास की दुनिया को वस्तुओं और उनके बीच की अंतर्क्रियाओं के माध्यम से पहचानने की गहन, सम्भवतः जन्मजात क्षमता के साथ आते हैं। समुचित ध्यान और अवसर देने पर ये क्षमताएँ और सुदृढ़ होंगी। अगर छोटे बच्चों की तार्किक चिंतन और समस्या-समाधान की क्षमताओं पर ध्यान केंद्रित करें, तो वे लगातार जिज्ञासु और आजीवन सीखने वाले बने रहेंगे।

C-7.1: सीखने के प्रतिफल

तालिका 26

	A	B	C	D	E
	C-7.1: वस्तुओं की विभिन्न श्रेणियों और उनके बीच के संबंधों को देखते-समझते हैं				
	आयु 3–8 वर्ष				
1	• मदद के साथ सामान्य वस्तुओं, लोगों, चित्रों, जानवरों, पक्षियों व घटनाओं आदि को पहचानते हैं और उनका नाम बताते हैं।	• स्वयं से सामान्य वस्तुओं, लोगों, चित्रों, जानवरों, पक्षियों व घटनाओं आदि को पहचानते हैं और उनका वर्णन करते हैं।	• तात्कालिक परिवेश और चित्रों/मॉडलों में आम वस्तुओं, लोगों, चित्रों, जानवरों व पक्षियों के सामान्य विवरण चिह्नित करते हैं और उनका वर्णन करते हैं (जैसे– घर में बड़ा दरवाज़ा)।	• तात्कालिक परिवेश और चित्रों/मॉडलों में वस्तुओं, संकेतों, स्थानों व सामान्य गतिविधियों के बारीक विवरण की पहचान करते हैं और उनका वर्णन करते हैं (जैसे– छोटे हरे घर में बड़ा भूरा दरवाज़ा)।	
2	• परिचित वस्तु की परिचित तस्वीर के गायब हिस्से की पहचान करते हैं।	• परिचित वस्तु की तस्वीर के तीन से पाँच गायब हिस्सों की पहचान करते हैं।	• परिचित वस्तु की तस्वीर के चार से छह गायब हिस्सों की पहचान करते हैं।	• दी गई वस्तुओं/चित्रों की तुलना करते हैं और उनमें समानता और अंतर की पहचान करते हैं।	

3	• श्रेणियों के भीतर श्रेणीबद्ध/क्रमबद्ध संबंधों को पहचानते हैं (जैसे– जानवर और उनके छोटे बच्चे) • श्रेणियों के साथ और उनके बीच तुलना करते हैं। • वस्तुओं को बदलकर उनका उपयोग करते हुए खेलते हैं (जैसे– केले को टेलीफ़ोन के रूप में उपयोग करते हैं)। • वस्तुओं और उनके उपयोग के बीच संबंध बनाते हैं (जैसे– चम्मच खाने के लिए है, बाल्टी नहाने के लिए है, जैसे– मैकेनिक गैराज में होते हैं, डॉक्टर अस्पताल में होते हैं)।

C-7.2: सीखने के प्रतिफल

तालिका 27

C-7.2: प्रकृति में कार्य-कारण संबंधों को सरल परिकल्पनाएँ बनाकर देखते व समझते हैं और परिकल्पनाओं को समझाने के लिए अपने अवलोकनों का उपयोग करते हैं

आयु 3–8 वर्ष

	A	B	C	D	E
1			• एक वस्तु का दूसरी वस्तु पर प्रभाव पहचानते हैं (जैसे– अगर पानी में नमक डालोगे तो घुल जाएगा, अगर धूप में बर्फ़ रखोगे तो वह पिघल जाएगी)। • वस्तुओं पर सरल क्रियाओं के प्रभावों की व्याख्या करते हैं (जैसे– गेंद को जितनी ज़ोर से मारोगे, वह उतनी ही आगे जाएगी)। • आकस्मिक संबंध बनाते हैं (जैसे– अब्दुल स्कूल नहीं आया, क्योंकि वह बीमार था; पौधा मर गया, क्योंकि बारिश नहीं हुई)। • आकस्मिक संबंधों के आधार पर पूर्वानुमान लगाते हैं (जैसे– अगर आसमान में सफ़ेद बादल हैं, तो बारिश नहीं होगी)।		
2	• अवलोकनों के आधार पर विचारों का उपयोग करते हैं (जैसे– खाने से पहले गर्म भोजन को फूँक मारकर ठंडा करने में वयस्कों का अनुकरण करते हैं)।	• ज्ञात जानकारी को नए संदर्भ में लागू करते हैं (जैसे– कहानी की किताब में देखे गए महल को ब्लॉकों से बनाना)।	• अवलोकन करते हैं और फिर सामान्यीकरण करते हैं (जैसे– उन वस्तुओं पर ध्यान देते हैं जो लुढ़कती हैं, टायर, चूड़ियाँ, सब 'गोल' आकृति की होती हैं)।	• सरल परिकल्पनाएँ बनाते और उनका परीक्षण करते हैं (जैसे– प्लेटें तैरती हैं और पिन डूब जाती है, कागज़ का एक टुकड़ा और एक पत्थर, एक साथ गिराकर देखते हैं कि कौन पहले ज़मीन पर पहुँचेगा)। • सरल समस्याओं को हल करने के लिए अपनी समझ का उपयोग करते हैं (जैसे– रेत का घर बनाते समय, उस संरचना को सहारा देने के लिए एक डंडे का उपयोग करना या इसे व्यवस्थित करने के लिए पानी डालना)।	

3	• दिन और रात में अंतर करते हैं।	• गर्मी और सर्दी पहचानते हैं। • आसमान में मौजूद वस्तुओं के नाम लेते हैं (जैसे– सूरज, चाँद, तारे, बादल)।	• गर्मी और सर्दी के लिए कपड़ों और भोजन पर बातचीत करते हैं। • सूर्योदय और सूर्यास्त को दिन और रात से जोड़ते हैं।	• गर्मी, सर्दी और मानसून के मौसम में अंतर करते हैं। • बताते हैं कि सूरज और चंद्रमा कहाँ उदय और अस्त होते हैं।	• दिशाओं का नाम लेते हैं (उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम)।
4	• चयन करते हैं और प्राथमिकताएँ अभिव्यक्त करते हैं।	• अपनी प्राथमिकताएँ और रुचियाँ अभिव्यक्त करते हैं और चयन करते हैं।	• ज़िम्मेदारी लेते हैं और अपनी प्राथमिकताओं और रुचियों के आधार पर चयन करते हैं।	• खेलते हैं/गतिविधियों में भाग लेते हैं और अपनी पसंद, प्राथमिकता व रुचि के आधार पर दोस्त बनाते हैं।	• अपनी पसंद, प्राथमिकता व रुचि के आधार पर खेल / खेल उपकरण चुनते हैं।
5		• शिक्षकों और दोस्तों की मदद से भौतिक परिवेश में घटी घटनाओं तथा परिघटनाओं के बारे में सरल प्रश्नों के उत्तर देते हैं।	• जाँची जा सकने वाली प्राकृतिक परिघटनाओं से संबंधित प्रश्नों का उत्तर देने के लिए दोस्तों के साथ साझेदारी करते हैं (जैसे– क्या तैरता है और क्या डूब जाता है, किन वस्तुओं को चुंबकें आकर्षित करती हैं)।	• प्राकृतिक परिघटनाओं संबंधी बड़े सवालों को समझने के लिए छोटे सवालों की तालिका विकसित करते हैं। • प्राकृतिक परिवेश में नमूनों के बारे में सवाल पूछते हैं (जैसे– अलग-अलग किस्म की पत्तियाँ और फूल, सूर्योदय व सूर्यास्त)।	• प्राकृतिक परिघटनाओं संबंधी 'क्यों' वाले सवाल पूछते हैं, अनसुलझे सवाल पूछते हैं, संवाद और/या खोज के माध्यम इनके जवाब ढूँढ़ते हैं (जैसे– बारिश क्यों होती है, अगर सूरज की रोशनी न हो, तो क्या होगा)।
6	• किसी एक की क्रियाओं/ व्यवहार का दूसरे पर क्या असर पड़ा, इसकी व्याख्या करते हैं (जैसे– कुत्ते को पत्थर से मारना असहाय प्राणी को चोट पहुँचाता है, नल को बंद न करने से पानी बर्बाद होता है)।	• पौधों, पक्षियों और जानवरों की ज़रूरतों पर विचार व्यक्त करते हैं।	• साझा प्राकृतिक संसाधनों की अवधारणा की व्याख्या करते हैं (जैसे– पानी का उपयोग हम, पक्षी और पौधे, सब करते हैं)।	• प्राकृतिक पर्यावरण और मनुष्यों के बीच आपसी निर्भरता पर बातचीत करते हैं (जैसे– घरों में पानी जलाशयों से आता है)।	• मानव समाज की ज़रूरतों और प्राकृतिक पर्यावरण के बीच संतुलन कैसे बनाए रखा जाना चाहिए, इस पर बातचीत करते हैं (जैसे– अगर हम जानवरों के प्रति दयालु होंगे, तो वे हमारे साथ काम करने में सक्षम होंगे, बीमारियों से बचने के लिए कचरे का सही निपटान आवश्यक है)।

C-7.3: सीखने के प्रतिफल

तालिका 28

C-7.3: दैनिक जीवन की परिस्थितियों में और सीखने के लिए उपयुक्त उपकरणों व तकनीकी का उपयोग करते हैं

आयु 3–8 वर्ष

	A	B	C	D	E
1	• चित्र बनाने/रंगने के सरल उपकरणों का उपयोग करने में निपुणता दिखाते हैं।	• खेलते समय सरल उपकरणों के उपयोग के प्रति झुकाव प्रदर्शित करते हैं। • डिजिटल श्रव्य-दृश्य सामग्री के साथ अंतर्क्रिया करते समय ध्यान और नियंत्रण प्रदर्शित करते हैं।	• खेत में काम करते हुए या कला/शिल्प में उचित काम के लिए उचित उपकरण चुनते हैं। • शिक्षक की मदद से डिजिटल तकनीकी जैसे– स्मार्टफ़ोन या टैबलेट से जुड़ते हैं।	• काम की स्थितियों में औज़ारों और उपकरणों का प्रभावी ढंग से उपयोग करते हैं। • सीखने की स्थितियों में डिजिटल तकनीक का सरल उपयोग करते हैं (जैसे– श्रव्य-दृश्य सामग्री को शुरू करना या रोकना)।	• प्रतिदिन की गतिविधियों में उपयोग के लिए सरल औज़ार और उपकरण बनाते हैं। • सीखने की स्थितियों में डिजिटल श्रव्य-दृश्य सामग्री का उपयोग करने में धाराप्रवाहिता और सहजता दिखाते हैं।

CG-8: बच्चे मात्राओं, आकृतियों और मापों के माध्यम से गणितीय समझ और दुनिया को पहचानने की क्षमता विकसित करते हैं

यह आवश्यक है कि प्रतीक रूप में संख्याओं और संक्रियाओं (जोड़, घटाव, गुणा, भाग आदि) के परिचय से पहले बच्चों को गिनना, क्रमबद्ध करना, छाँटना जैसी गणित-पूर्व अवधारणाओं और पैटर्न संबंधी कार्य से जोड़ा जाए। इससे संख्या ज्ञान संबंधी प्रक्रियात्मक प्रवाह के साथ-साथ अवधारणात्मक समझ विकसित करने में बहुत सहायता मिलती है।

C-8.1: सीखने के प्रतिफल

तालिका 29

	A	B	C	D	E
	C-8.1: वस्तुओं को एक से अधिक गुणों के आधार पर समूहों और उप-समूहों में छाँटते हैं				
	← **आयु 3–8 वर्ष** →				
1	• आकार, लंबाई, ऊँचाई और भार के आधार पर वस्तुओं को दो समूहों में छाँटते हैं (बड़ा-छोटा, लंबा-छोटा)।	• आकार, लंबाई, ऊँचाई और भार के आधार पर वस्तुओं को तीन समूहों में छाँटते हैं (छोटा आकार, बड़ा आकार, उससे बड़ा आकार)।	• वस्तुओं को उन विशेषताओं के आधार पर समूहों में छाँटते हैं, जिन्हें वह पहचानते हैं।	• वस्तुओं को उन विशेषताओं के आधार पर समूहों में छाँटते हैं जिन्हें वह पहचानते हैं और छाँटने के नियम बताते हैं, (जैसे– समान परिवेश में रहने वाले जानवरों को छाँटना— कुत्ते, बिल्लियाँ, चूहे, साँप; इन जानवरों में वह घास खाने वाले और माँस खाने वाले जानवरों के बीच छँटनी कर पाते हैं)।	• वस्तुओं को समूहों और उप-समूहों में छाँटते हैं (जैसे– ब्लॉकों के एक समूह में पहले रंग के आधार पर छाँटना, फिर रंग के भीतर आकृति के आधार पर छाँटना, फिर आकार के आधार पर छाँटना। पेड़ों और लताओं के बीच छाँटना, इनमें फलदार और गैर-फलदार को छाँटना, उसके भीतर खाद्य या अखाद्य को छाँटना)।

C-8.2: सीखने के प्रतिफल

तालिका 30

	A	B	C	D	E
	C-8.2: अपने परिवेश, आकृतियों, और संख्याओं में सरल पैटर्न को पहचानते और उनका विस्तार करते हैं				
	← आयु 3–8 वर्ष →				
1	• वस्तुओं, चित्रों व आकृतियों के पैटर्न को जोड़े में पहचानते और दोहराते हैं (जैसे– पत्ती, फूल, पत्ती, फूल, A B A B A B A B A B A B A पैटर्न में)। • ध्वनियों के पैटर्न को पहचानते और दोहराते हैं (दा-मा-गा, दा-मा-गा आदि)। • गतियों के पैटर्न को पहचानते हैं और दोहराते हैं (जैसे– कूदो-खड़े हो, कूदो-खड़े हो)।	• दोहराए जाने वाले पैटर्न को पहचानते हैं और तीन से चार वस्तुओं/चित्रों/आकृतियों को ABC|ABC|ABC (कलम-किताब-पेंसिल, कलम-किताब-पेंसिल) के पैटर्न पर बढ़ाते हैं। • क्रियाओं/ध्वनियों के पैटर्न को पहचानते, दोहराते और बढ़ाते हैं। • तीन अलग-अलग शारीरिक गतिविधियों के पैटर्न को स्पष्ट रूप से पहचानते और दोहराते हैं।	• अलग-अलग विशेषताओं— रंग, आकृति व आकार पर आधारित नए पैटर्न बनाते हैं। • पैटर्न के नियम बताते हुए विभिन्न वस्तुओं में नए पैटर्न बनाते हैं। (जैसे– टहनियों, फूलों के साथ मंडाला आर्ट बनाना)।	• वयस्कों की मदद से विभिन्न रूपों में दोहराए जाने वाले सरल पैटर्न (जैसे– लाल, नीला, लाल, नीला, लाल, __;) के बीच गायब तत्वों को भरते हैं।	• पैटर्न के नियमों को बताते हुए इन्हें संख्या व प्रतीक जैसे– अमूर्त पैटर्नों और समरूप चिंतन वाले पैटर्न पर लागू करते हैं (जैसे– रेखांकन करते हुए या चित्र बनाते हुए रंगों का उपयोग। प्रतीकों या बिंदुओं की समान मात्रा का अलग-अलग पैटर्नों में उपयोग)। 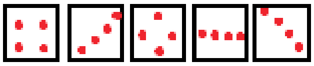 समरूपता 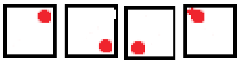

C-8.3: सीखने के प्रतिफल

तालिका 31

	A	B	C	D	E
	C-8.3: सीधी और उल्टी गिनती 10–10 एवं 20–20 के समूहों में 99 तक गिन पाते हैं				
	आयु 3–8 वर्ष				
1	• सही क्रम/संदर्भ के साथ मौखिक रूप से पाँच तक संख्याओं का नाम बोलते/गाते हैं। • तीन तक संख्या नामों और वस्तुओं के बीच एक-से-एक की संगति करते हुए गिनने में वयस्कों की नकल करते हैं। • वस्तुओं को तीन तक गिनते हैं और तीन तक गिनने की समझ विकसित करते हैं (जैसे– एक समूह की तीन वस्तुओं को गिनते हैं और कहते हैं कि वे तीन हैं)। • घालमेल में दी गई या वस्तुओं को गिनते हैं और अधिकतम पाँच वस्तुएँ उठा और छोड़ सकते हैं। • तीन वस्तुओं तक, दो समूहों के बीच मात्रा की तुलना करते हैं और उनमें अंतर कर सकते हैं कि वे बराबर हैं या कम-ज़्यादा।	• संख्याओं को सही क्रम में दस तक बोलते/गाते हैं और पाँच तक संख्या नामों और वस्तुओं के बीच एक-से-एक की संगति करते हैं। • गिनने की समझ के साथ वस्तुओं को पाँच तक गिनते हैं (समूह की मात्रा को 5 तक पहचान पाना)। • संख्या बोध की समझ प्रदर्शित करते हैं (जैसे– 5, अलग-अलग 5 वस्तुएँ— 5 लोग, 5 किताबें, 5 पेंसिलें हो सकती हैं)। • पाँच तक मूर्त और अलग वस्तुओं तथा अमूर्त वस्तुओं को गिनने में प्रवाह दिखाते हैं (जैसे– 5 कदम, 5 तालियाँ)। • स्मृति से सही क्रम में दस तक गिनती करते हैं। • बीस तक गिनती करना शुरू करते हैं।	• संख्याओं को सही क्रम में 20 तक बोलते/गाते हैं और 10 तक संख्या नामों और वस्तुओं के बीच एक-से-एक की संगति करते हैं। • गिनने की समझ के साथ वस्तुओं को 10 तक सही-सही गिनते हैं। • किसी दिए गए समूह में वस्तुओं को किसी भी क्रम में सही-सही गिनते हैं और समझते हैं कि मात्रा समान ही रहती है, चाहे जिस क्रम में वस्तुओं की गिनती की जा रही हो (जैसे– मुट्ठी भर मोती देने पर बच्चे किसी भी क्रम में उन्हें गिन सकते हैं और सही मात्रा बता सकते हैं)। • किसी समूह में वस्तुओं को एक-एक कम करके (उल्टी गिनती) करते हुए शून्य की अवधारणा को एक संख्या के रूप में समझते हैं (जैसे– 3 मोतियों में से एक-एक कम करके उल्टी गिनते करते हुए, 1 मोती के बाद क्या बचा)। • संख्या की कुल मात्रा या मान और क्रम दोनों के रूप में समझ और आरोही क्रम या अवरोही क्रम में उसकी स्थिति को प्रदर्शित करते हैं, जैसे– नीचे दिए गए क्रम में।	• बीस से अधिक वस्तुओं को 99 तक के संख्या नामों का उपयोग करके गिनते हैं और 99 तक की संख्याओं को 10–10 के समूहों के पैटर्न में देखते हैं। • किसी खास संख्या (0–99 के बीच) से सीधी और उल्टी गिनते करते हैं।	• सीधी बढ़ती हुई संख्या रेखा या ब्लॉकों/तस्वीरों में दो या तीन छोड़कर गिन सकते हैं। • दहाई और इकाई के समूहों में स्थानीय मान का उपयोग करके भारतीय संख्याओं को निन्यानवें तक पढ़ते और लिखते हैं। • 10–10, 20–20 और 30–30 के समूहों में 99 तक गिनते हैं।

	A	B	C	D	E
	• दो या तीन वस्तुओं के समूह की संख्या को तुरंत पहचान लेते हैं।	• चार वस्तुओं के समूह की संख्या को तुरंत पहचान लेते हैं (जैसे– 4 बिस्कुट, चाकलेट या बिना गिने ब्लॉक्स)।	 • छह वस्तुओं के समूह की संख्या को तुरंत पहचान लेते हैं (जैसे– 6 बिस्कुट, चाकलेट या बिना गिने ब्लॉक्स)। 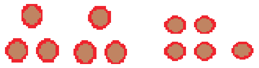	• दो समूहों में मात्राओं को पहचानते हैं (जैसे– 10 के दो समूह मिलकर 20 बन जाते हैं)।	

C-8.4: सीखने के प्रतिफल

तालिका 32

	A	B	C	D	E
	C-8.4: 99 तक की संख्याओं को आरोही और अवरोही क्रम में व्यवस्थित करते हैं				
	आयु 3–8 वर्ष				
1	• परिचित प्रसंगों/घटनाओं/वस्तुओं को क्रम से व्यवस्थित करते हैं (जैसे– दिनचर्या, कहानी, आकृतियाँ, 2–3 आकार)।	• वस्तुओं को आकार के आधार पर तीन स्तरों तक व्यवस्थित करते है और इन स्तरों को मौखिक रूप से बताते हैं (जैसे– बड़ा-छोटा-उससे छोटा; लंबा-छोटा-उससे छोटा; ऊँचा-नीचा-उससे नीचा)।	• आकार/लंबाई/भार के आधार पर पाँच वस्तुओं तक को बढ़ते या घटते क्रम में व्यवस्थित करते हैं।	• वस्तुओं के विभिन्न गुणों (जैसे– आकार/लंबाई/भार/रंग) के आधार पर वस्तुओं के एक ही समूह को अलग-अलग क्रम में व्यवस्थित करते हैं।	• संख्याओं के दिए गए समूह से उन्हें आरोही और अवरोही क्रम में व्यवस्थित करते हैं।

C-8.5: सीखने के प्रतिफल

तालिका 33

	A	B	C	D	E
	C-8.5: दाशमिक स्थानीय मान प्रणाली की समझ के साथ 99 तक की गिनती को दर्शाने के लिए संख्याओं को पहचानते और उनका उपयोग करते हैं				
	आयु 3–8 वर्ष				
1	• 3 तक की दो संख्याओं की (मौखिक रूप से) तुलना करते हैं व अधिक और कम जैसी शब्दावली का उपयोग करते हैं।	• 5 तक के अंकों को पहचानते हैं। • 5 तक की दो संख्याओं की तुलना करते हैं व उससे अधिक और उससे कम जैसी शब्दावली का उपयोग करते हैं।	• 9 तक के भारतीय अंकों को पहचानते हैं। • 9 तक के भारतीय अंकों को आराम से लिख लेते हैं। • 9 तक की दो संख्याओं की तुलना करते हैं व उससे अधिक और उससे कम जैसी शब्दावली का उपयोग करते हैं।	• वस्तु/चीज़ की अनुपस्थिति को दिखाने के लिए शून्य के प्रतीक चिह्न को पहचानते हैं। • 20 तक की संख्याओं को पहचानते और लिखते हैं और 10 तक की संख्याओं को शब्दों में लिखते हैं। • 20 तक की दो संख्याओं की तुलना करते हैं व उससे अधिक और उससे कम जैसी शब्दावली का उपयोग करते हैं।	• स्थानीय मान अवधारणा का उपयोग करके 99 तक के संख्या नामों और संख्या चिह्नों को पहचानते, पढ़ते और लिखते हैं (दी गई संख्याओं के बिना, दोहराव के बिना या दोहराव के साथ)। • दो अंकों की सबसे बड़ी और सबसे छोटी संख्या बनाते हैं और उनकी तुलना करते हैं।

C-8.6: सीखने के प्रतिफल

तालिका 34

C-8.6: संयोजन (composition) और वियोजन (decomposition) की लचीली पद्धति का उपयोग करके आसानी से 2 अंकों की संख्याओं का जोड़ और घटाव करते हैं

आयु 3–8 वर्ष

	A	B	C	D	E
1	• मौखिक जवाब की बजाय समूह बनाने (grouping) और समूह को अलग करने के माध्यम से बहुत ही छोटे समूहों/मात्राओं (कुल 3 तक) को साथ-साथ रखते हैं और अलग रखते हैं।	• पाँच वस्तुओं तक दो समूहों को मिलाते/एकत्र करते हैं और फिर से गिनते हैं (जैसे– मेरे पास 2 चॉकलेट हैं और 3 मेरी बहन के पास हैं, उन्हें एक साथ रखकर व गिनकर मुझे बताओ कि मेरे पास कुल कितनी चॉकलेट हैं)। • किसी समूह से अधिकतम पाँच वस्तुएँ निकालते हैं और उन्हें फिर से गिनते हैं।	• नौ वस्तुओं तक दो समूहों को मिलाते/एकत्र करते हैं और फिर से गिनते हैं (जैसे– मेरे पास 5 चॉकलेट हैं और 3 मेरी बहन के पास हैं, उन्हें एक साथ रखकर व गिनकर बताओ कि मेरे पास कुल कितनी चॉकलेट हैं)। • किसी समूह से अधिकतम नौ वस्तुएँ निकालते हैं और उन्हें फिर से गिनते हैं।	• वास्तविक जीवन की स्थितियों और मूर्त वस्तुओं के उपयोग से, जोड़ तथ्यों का उपयोग करते हुए 18 तक के जोड़ का मॉडल बनाते हैं और हल निकालते हैं। • वास्तविक जीवन की स्थितियों और मूर्त वस्तुओं के उपयोग से, घटाव तथ्यों का उपयोग करते हुए 9 तक के घटाव की समस्याओं का मॉडल बनाते हैं और हल निकालते हैं (जैसे– दी गई चॉकलेटों के समूह से चॉकलेट निकालना)। • संख्याओं के जोड़ और घटाव के बीच संबंध विकसित करते हैं। • जोड़ और घटाव की संक्रियाओं के +/– चिह्नों को पहचानते हैं।	• लचीली रणनीतियों का उपयोग करते हुए संख्याओं के संयोजन (साथ मिलाने) और वियोजन (समूह में से निकाल देने) का मेल हासिल करते हैं (जैसे– 57 + 33 के जवाब के लिए बच्चे 33 में से 3 निकाल सकते हैं, उसे 57 में जोड़कर 60 बना सकते हैं और फिर उसमें 30 जोड़कर 90 तक पहुँच सकते हैं)। • स्थानीय मान की अवधारणा का उपयोग करते हुए दो संख्याओं को जोड़ते हैं (जिनका योग 99 से अधिक न हो) और दैनिक जीवन की सामान्य समस्याओं/परिस्थितियों को हल करने के लिए उन्हें लागू करते हैं। • स्थानीय मान की अवधारणा का उपयोग करते हुए 99 तक की किन्हीं दो संख्याओं को घटाते हैं और दैनिक जीवन की सामान्य समस्याओं/परिस्थितियों को हल करने के लिए उन्हें लागू करते हैं। • संख्याओं के जोड़ और घटाव के बीच संबंध को समझते हैं और उन्हें लागू करते हैं। • परिचित स्थिति/संदर्भ में समस्याओं को हल करने के लिए उपयुक्त संक्रिया (जोड़ या घटाव) की पहचान करते हैं। • सरल शब्द समस्या (word problems) को समझते हैं और हल करते हैं।

C-8.7: सीखने के प्रतिफल

तालिका 35

C-8.7: गुणा को बार-बार जोड़ और भाग को बराबर बँटवारे के रूप में जानते-समझते हैं

आयु 3–8 वर्ष

	A	B	C	D	E
1			• वस्तुओं के छोटे समूह बनाते हैं। वस्तुओं और समूहों की कुल संख्या को गिनते हैं।	• समूहीकरण के द्वारा छोटी संख्याओं के गुणा के सवालों को हल करते हैं। • गुणा संक्रिया के चिह्न को पहचानते हैं।	• 99 तक की संख्या में बार-बार जोड़कर, गुणा के सरल सवालों को हल करते हैं।
2	• दी गई वस्तुओं के समूह को कई प्राप्तकर्ताओं में बाँटते हैं।	• दो प्राप्तकर्ताओं में वस्तुओं (6 तक) को बराबर बाँटते हैं।	• 4–5 प्राप्तकर्ताओं में वस्तुओं (20 तक) को बराबर बाँटते हैं।	• भाग के सवालों को हल करने के लिए गलत करने, सीखना तथा समूहों में बाँटने का तरीका उपयोग करते हैं। • भाग संक्रिया के चिह्न को पहचानते हैं।	• भाग के सवालों को हल करने के लिए कितने समूह बनेंगे, यह पता करने के लिए बार-बार घटाव का उपयोग करते हैं।

C-8.8: सीखने के प्रतिफल

तालिका 36

	A	B	C	D	E
	C-8.8: बुनियादी ज्यामितीय आकृतियों और उनके अवलोकनीय गुणों को पहचानते, बनाते और वर्गीकृत करते हैं तथा किसी स्थान में वस्तुओं के सापेक्ष संबंध को समझते व समझाते हैं				
	आयु 3–8 वर्ष				
1	• किसी एक गुण, आकृति, आकार या रंग द्वारा वस्तुओं का मिलान करते हैं। • आकृति, रंग और आकार जैसे– किसी एक कारक के आधार पर वस्तुओं की तुलना और वर्गीकरण करते हैं। • सरल निर्देशों का पालन करते हैं और आकृति, रंग व स्थिति के आधार पर वस्तुओं को रखते हैं (जैसे– लाल गुब्बारा यहाँ लाओ, मेज़ पर गोल गेंद रखो)।	• विभिन्न आकारों और रंगों की आकृतियों का मिलान करते हैं। • दो कारकों के आधार पर वस्तुओं की तुलना और वर्गीकरण करते हैं (जैसे– आकृति और रंग, रंग और आकार)। • विभिन्न ठोसों/ आकृतियों की भौतिक विशेषताओं का अपनी भाषा में वर्णन करते हैं (जैसे– गेंद लुढ़कती है और इसमें कोई कोना नहीं होता है, एक बॉक्स सरकता है और इसमें कोने होते हैं।) • स्थितिबोधक शब्दों (positional words) को समझते हुए कोई पैटर्न बनाने के लिए अलग-अलग आकृतियों, रंगों व स्थितियों के आधार पर दिए गए कई चरणों वाले निर्देशों को समझते हैं (जैसे– स्थितिबोधक शब्दों— बीच में, ऊपर, नीचे को समझकर कई वस्तुओं से गुच्छों/ मंडलों का निर्माण करते हैं; कोलाज बनाते हैं)।	• विभिन्न आकार और अभिविन्यास की आकृतियों का मिलान करते हैं (जैसे– अलग अभिविन्यास में रखे त्रिभुज और आकार)। • तीन कारकों (जैसे– आकृति, रंग व आकार) के आधार पर वस्तुओं की तुलना और वर्गीकरण करते हैं। • वस्तुओं का वर्णन करने के लिए स्थितिबोधक शब्दों का उपयोग करते हैं (जैसे– बगल में, अंदर, नीचे)। • विभिन्न ठोसों/ आकृतियों की भौतिक विशेषताओं का अपनी भाषा में वर्णन करते हैं। (जैसे– गेंद लुढ़कती है और इसमें कोई कोना नहीं होता है, एक बॉक्स सरकता है और इसमें कोने होते हैं)। • किसी समतल सतह पर त्रिविमीय आकृतियों के फलकों की ट्रेसिंग करके द्विविमीय आकृतियों की पहचान करते हैं। • थोड़ी सटीकता और नियंत्रण के साथ द्विविमीय आकृतियों को अपने हाथों से बना लेते हैं।	• स्थानिक संबंध (जैसे– ऊपरी (top), निचला (bottom), ऊपर, नीचे, अंदर, बाहर, पास, दूर, पहले, बाद) की शब्दावली विकसित करते हैं और उसका उपयोग करते हैं। • परिवेश से अलग-अलग आकार और आकृति वाली वस्तुएँ इकट्ठी करते हैं (जैसे– कंकड़, डिब्बे, गेंद, शंकु, पाइप)। • आकृति और अन्य अवलोकनीय गुणों के आधार पर वस्तुओं को छाँटते व वर्गीकृत करते हैं। और उनका वर्णन करते हैं। • जैसे– विभिन्न ठोस आकृतियों की भौतिक विशेषताओं को देखते हैं और उनका वर्णन अपनी भाषा में करते हैं (जैसे– गेंद लुढ़कती है, बॉक्स सरकता है।) • खास विशेषताओं (जैसे– लंबाई, क्षेत्रफल, आयतन) के आधार पर आकृतियों की तुलना करते हैं।	• त्रिविमीय आकृतियों को उनके नाम (जैसे– घनाभ, बेलन, शंकु और गोला) से पहचानते हैं और उनके अवलोकनीय गुणों के बारे में बताते हैं (जैसे– एक घन के छह फलक होते हैं।) • द्विविमीय आकृतियों को उनके नाम (जैसे– वर्ग, आयत, त्रिभुज और वृत्त) से पहचानते हैं और उनके अवलोकनीय गुणों के बारे में बताते हैं (जैसे– किसी पुस्तक के पृष्ठ आयताकार होते हैं और उनमें 4 भुजाएँ व 4 कोने होते हैं।) • सीधी और घुमावदार रेखाओं के बीच भेद करते हैं और विभिन्न अभिविन्यासों (जैसे– लंबवत, क्षैतिज, तिरछी) में सीधी रेखाएँ खींचते/ प्रदर्शित करते हैं। • त्रिविमीय वस्तुओं की द्विविमीय रूपरेखा (outlines) को ट्रेस करते हैं। • वस्तुओं की छाया देखकर उनकी पहचान करते हैं।

C-8.9: सीखने के प्रतिफल

तालिका 37

C-8.9: अपने आस-पास के परिवेश में वस्तुओं की लंबाई, भार और आयतन का सरल मापन करने के लिए उपयुक्त उपकरणों और इकाइयों का चयन करते हैं

आयु 3–8 वर्ष

	A	B	C	D	E
1	**लंबाई** • कविताओं और कहानियों के माध्यम से लंबाई व्यक्त करने के लिए शब्दावली (लंबाई, चौड़ाई, ऊँचाई व दूरी) का उपयोग करते हैं।	**लंबाई** • दो वस्तुओं की तुलना उनकी लंबाई के संदर्भ में करते हैं कि कौन अधिक लंबी है और कौन अधिक छोटी, कौन अधिक ऊँची है और कौन अधिक छोटी।	**लंबाई** • तीन वस्तुओं की तुलना उनकी लंबाई के संदर्भ में करते हैं कि कौन सबसे अधिक लंबी है और कौन सबसे अधिक छोटी, कौन सबसे अधिक ऊँची है और कौन सबसे अधिक छोटी।	**लंबाई** • पास-दूर, पतला-मोटा, लंबा/बड़ा-छोटा, ऊँचा-नीचा में अंतर करते हैं। • छोटी लंबाइयों को असमान इकाइयों में मापते हैं (खेल के संदर्भ में जैसे– 'गुल्ली-डंडा', कंचों का खेल)। • कम दूरी और लंबाई का अनुमान लगाते हैं, और असमान व अमानक इकाइयों की सहायता से उनकी पुष्टि करते हैं (जैसे– बालिश्त, हाथ, बाँह की कलाई, नक्शे, कदम, अंगुलियाँ)।	**लंबाई** • समान (अमानक) इकाइयों का उपयोग करके लंबाई और दूरी के साथ छोटे और लंबे रास्तों को मापते हैं और इसे बड़ी लंबाइयों तक में उपयोग करते हैं। • छड़ी/पेंसिल, कप/चम्मच/बाल्टी जैसी अमानक इकाइयों का उपयोग करके लंबाई/दूरी और बर्तनों/पात्रों की धारिता का अनुमान लगाते हैं और मापते हैं।
2	**भार** • कविताओं और कहानियों के माध्यम से भार व्यक्त करने के लिए शब्दावली का उपयोग करते हैं।	**भार** • दो वस्तुओं की तुलना उनके भार के संदर्भ में करते हैं कि कौन अधिक भारी है और कौन अधिक हल्की।	**भार** • तीन वस्तुओं की तुलना उनके भार के संदर्भ में करते है कि कौन अधिक भारी है और कौन अधिक हल्की।	**भार** • भारी और हल्की वस्तुओं की तुलना करते हैं और उन्हें भारी से हल्की और हल्की से भारी के क्रम में लगाते हैं।	**भार** • सामान्य तराजू (simple balance) की आवश्यकता को समझते हैं। • सामान्य तराजू (simple balance) का उपयोग करके दी गई वस्तुओं के भार की तुलना करते हैं।
3		**आयतन** • कविताओं और कहानियों के माध्यम से आयतन को व्यक्त करने के लिए शब्दावली का उपयोग करते हैं।	**आयतन** • दो बर्तनों, बोतल, गिलास, बाल्टी आदि के आयतन की तुलना करते हैं।	**आयतन** • कप/चम्मच/मग जैसी समान अमानक इकाइयों का उपयोग करके बर्तनों/पात्रों के आयतन का अनुमान लगाते हैं और उन्हें मापते हैं।	**आयतन** • अपनी धारणा के आधार पर बर्तनों/पात्रों को उनके आयतन के अनुसार क्रमवार लगाते हैं और उड़ेलकर उसकी पुष्टि करते हैं।

C-8.10: सीखने के प्रतिफल

तालिका 38

	A	B	C	D	E
	C-8.10: मिनटों, घंटों, दिनों, सप्ताहों और महीनों में समय का सरल मापन करते हैं				
	आयु 3–8 वर्ष				
1	• दैनिक जीवन में आज और कल जैसी शब्दावली का उपयोग करते हैं।	• शनिवार, रविवार, छुट्टी, जैसे– विशेष दिनों की पहचान करते हैं (जैसे– रविवार को छुट्टी है)।	• सप्ताह के दिनों और साल के महीनों के नाम जानते हैं।	• पहले और बाद में जैसे– शब्दों का उपयोग करते हुए खास समय पर होने वाली घटनाओं के बीच अंतर करते हैं। • स्कूल के दिनों बनाम छुट्टियों की लंबी और छोटी अवधि का गुणात्मक अनुभव हासिल करते हैं। • किसी दिन में होने वाली घटनाओं का क्रम बताते हैं।	• ऋतुओं के क्रम (जो स्थानीय रूप से भिन्न होते हैं) का अनुभव हासिल करते हैं। • मानक इकाइयों– दिन, घंटा का उपयोग करके समय का मापन करते हैं (जैसे– सप्ताह में सात दिन, एक दिन में 24 घंटे)।

C-8.11: सीखने के प्रतिफल

तालिका 39

	A	B	C	D	E
	C-8.11: 100 रुपये तक की मुद्रा का उपयोग करके सरल लेन-देन करते हैं				
	आयु 3–8 वर्ष				
1	• कविताओं और कहानियों के माध्यम से मुद्रा से जुड़ी शब्दावली का उपयोग करते हैं।	• भारतीय सिक्कों को पहचानते हैं।	• भारतीय नोटों को पहचानते हैं।	• नोट और सिक्के जोड़कर बीस रुपये तक गिन लेते हैं।	• नोट और सिक्के जोड़कर एक सौ रुपये तक गिन लेते हैं।

C-8.12: सीखने के प्रतिफल

तालिका 40

C-8.12: मात्राओं, आकृतियों, स्थान और मापन से संबंधित अवधारणाओं और प्रक्रियाओं को समझने और व्यक्त करने के लिए पर्याप्त और उपयुक्त शब्दावली विकसित करते हैं

आयु 3–8 वर्ष

	A	B	C	D	E
1	• आकृतियों के नाम और उनके कुछ गुण बताते हैं।	• संख्या नामों और आकृतियों के नामों का उपयोग करते हुए आसान निर्देशों को सुनते और समझते हैं। • संख्या नामों और आकृतियों के नामों का समुचित उपयोग करते हैं।	• संख्या नामों व संक्रियाओं और आकृतियों के नामों और मापन का समुचित उपयोग करते हैं।	• मात्राओं, आकृतियों, स्थान और मापन से संबंधित गणितीय समस्या बताने के लिए पूरे वाक्यों का निर्माण करते हैं।	• विषयवस्तु (Texts) को समझते हैं और उनमें अंतर्निहित सरल गणितीय समस्याओं को निकाल लेते हैं। • सरल गणितीय पहेलियाँ (riddles and puzzles) बनाते हैं।

C-8.13: सीखने के प्रतिफल

तालिका 41

C-8.13: मात्राओं, आकृतियों, स्थान और मापन से संबंधित सरल गणितीय समस्याओं को निरूपित करते हैं और हल करते हैं

आयु 3–8 वर्ष

	A	B	C	D	E
1	• ज्यामितीय और गैर-ज्यामितीय आकृतियों के सहारे सरल इनसेट पहेलियों को हल कर लेते हैं।	• टैनग्राम (tangram) आकृतियों से विशिष्ट आकृति बना लेते हैं।	• सरल पहेलियों को हल करने के लिए अपने संख्या ज्ञान का उपयोग करते हैं।	• वास्तविक दुनिया की स्थितियों को सरल गणितीय समस्याओं के रूप में पहचानते हैं। • विभिन्न रणनीतियों का उपयोग करके सरल संख्यात्मक समस्याएँ हल करते हैं।	• सामान्य गणितीय समस्या हल करने के विभिन्न तरीकों के बारे में बातचीत करते हैं। • गलती पकड़ने के लिए सवालों के हल को फिर से जाँच करते हैं। • उन खेलों और पहेलियों से जुड़ते हैं, जिनमें मात्रात्मकता की आवश्यकता होती है।

1.1.4 भाषा और साक्षरता विकास

भाषा और साक्षरता विकास, शिक्षा के मूलभूत लक्ष्यों में शामिल हैं। हर तरह की समझ हमारी भाषायी क्षमताओं के द्वारा ही बनती है। हमारी भाषायी क्षमताओं और संज्ञान के बीच बहुत गहरा रिश्ता होता है। चाहे वह संप्रेषण के रूप में हो, समझ के माध्यम के रूप में हो या सौंदर्यात्मक अनुभवों के रूप में हो, मानव में भाषा जन्म से ही अंतर्निहित होती है। चूँकि मानवीय साक्षरता एक सांस्कृतिक उपलब्धि है, इसलिए इसकी तरफ अधिक ध्यान देने की आवश्यकता होती है। साक्षरता सिर्फ़ किसी पाठ को पढ़ लेना नहीं है, बल्कि उससे अर्थ निर्माण करना है, उस दुनिया का अर्थ निकालना है, जिसका ये पाठ प्रतिनिधित्व करते हैं।

CG-9: बच्चे दो भाषाओं में रोज़मर्रा की बातचीत के लिए प्रभावी संप्रेषण कौशल विकसित करते हैं

बच्चे की मौखिक भाषा के विकास के लिए बुनियादी स्तर पर पर्याप्त समय और प्रयास की आवश्यकता है। मौखिक भाषा दक्षताओं की मज़बूत नींव पर ही बुनियादी साक्षरता विकसित होती है। समय से पहले बहुत छोटे बच्चों को, जो अभी मौखिक भाषा हासिल करने के प्रारंभिक स्तर पर हों, लिपि से परिचय कराना उनके साक्षरता विकास पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता है।

C-9.1: सीखने के प्रतिफल

तालिका 42

C-9.1: सरल गीतों, तुकबंदियों और कविताओं को सुनते-सराहते है

आयु 3–8 वर्ष

	A	B	C	D	E
1	• विभिन्न तरह के गीत और कविताएँ सुनते हैं।	• घर और आस-पड़ोस में नियमित रूप से विभिन्न भाषाओं में तरह-तरह के गीत सुनते और गुनगुनाते हुए उनका आनंद लेते हैं।	• बड़े (4–8 वाक्य के) गीत व कविताएँ (परिचित) ध्यान से सुनते हैं और उनके बारे में बातचीत करते हैं।	• बड़े (4–8 वाक्य के) गीत व कविताएँ (अपरिचित) ध्यान से सुनते हैं और उनके बारे में बातचीत करते हैं, सवाल पूछते हैं।	• कुछ खास तरह के गीतों और कविताओं को सुनने की रुचि दिखाते हैं और अपनी पसंद का कारण बताते हैं।
2	• सामान्य गीत या तुकबंदी को दोहराते हैं।	• गीतों और तुकबंदियों को स्वर व हाव-भाव के साथ गाते हैं।	• छोटे गीतों/ कविताओं (4–5 वाक्य वाली) का पाठ करते हैं, गाते हैं।	• बड़े गीतों/कविताओं (10 वाक्य) का पाठ करते हैं और गाते हैं।	• दो या तीन छंदों वाले गीतों/ कविताओं (10 वाक्य) का पाठ करते हैं और गाते हैं।

C-9.2: सीखने के प्रतिफल

तालिका 43

C-9.2: स्वयं सरल गीत और कविताएँ बनाते हैं

आयु 3–8 वर्ष

	A	B	C	D	E
1	• परिचित गीतों और कविताओं का आनंद लेते हैं।	• गानों और कविताओं में तुकांत वाले शब्दों का आनंद लेते हैं।	• परिचित कविताओं से तुकांत वाले शब्दों की पहचान करते हैं और नए तुकांत वाले शब्द बनाते हैं।	• शिक्षक की मदद से छोटी कविताओं/तुकबंदी का विस्तार/निर्माण करते हैं।	• अपने शब्दों में स्वतंत्र रूप से छोटी कविताएँ/तुकबंदियाँ बनाते हैं।

C-9.3: सीखने के प्रतिफल

तालिका 44

C-9.3: धाराप्रवाह और सार्थक बातचीत कर सकते हैं

आयु 3–8 वर्ष

	A	B	C	D	E
1	• ध्यान से सुनते हैं और आस-पास के परिचित लोगों के साथ छोटी-छोटी बातचीत करते हैं।	• स्कूल में तरह-तरह की स्थितियों में हर दिन अपने दोस्तों और शिक्षकों से बातचीत शुरू करते हैं।	• घटनाओं, कहानियों या अपनी ज़रूरतों के आधार पर बातचीत में शामिल होते हैं और सवाल पूछते हैं।	• बातचीत में शामिल होते हैं, बोलने के लिए अपनी बारी का इंतज़ार करते हैं और दूसरों को बोलने देते हैं।	• तरह-तरह के भाषिक आदान-प्रदान में भी बातचीत के सूत्र को बनाए रखते हैं।
2	• छोटे अर्थपूर्ण वाक्यों के माध्यम से अपनी ज़रूरतों और भावनाओं को व्यक्त करते हैं।	• दैनिक अनुभवों को सरल वाक्यों में बताते हैं और क्या/कब/कैसे/किससे आदि का उपयोग करते हुए सरल सवाल पूछते हैं।	• दैनिक अनुभवों का विस्तृत विवरण वर्णन करते हैं और क्यों वाले सवाल भी पूछते हैं।	• कक्षा में पढ़कर सुनाई गई या जिस पर चर्चा हो, ऐसी गैर-कथात्मक सामग्री के साथ जुड़ते हैं, ज्ञान को अपने स्वयं के अनुभवों से जोड़ने में सक्षम होते हैं और इसके बारे में बात करते हैं।	• किसी विषय के बारे में चर्चा में शामिल होते हैं, सवाल उठाते हैं और सवालों के जवाब देते हैं।

C-9.4: सीखने के प्रतिफल

तालिका 45

C-9.4: किसी जटिल कार्य के लिए दिए गए मौखिक निर्देशों को समझते हैं और दूसरों को उसी कार्य के लिए स्पष्ट मौखिक निर्देश देते हैं

आयु 3–8 वर्ष

	A	B	C	D	E
1	• छोटे निर्देशों को सुनते हैं और उनका पालन करते हैं (जैसे– ब्लॉक यहाँ लाओ, अच्छी तरह से हाथ धोना आदि)।	• कई चरण वाले कुछ सरल निर्देशों (एक बार में 2–3) का पालन करते हैं।	• कई चरणों वाले निर्देशों (एक बार में 4–5) का पालन करते हैं।	• कई चरणों वाले निर्देशों (एक बार में 8–9) का पालन करते हैं।	• सशर्त विभाजनों (conditional branching) वाले निर्देशों का पालन करते हैं (जैसे– यदि बारिश हो रही है, तो पौधों को पानी मत दो, बजाय इसके निराई करो; अगर बारिश न हो, तो पौधों को पानी दो)।
2			• छोटे काम पूरे करने के लिए दूसरे बच्चों या वयस्कों को स्पष्ट निर्देश देते हैं।	• कई चरणों वाले स्पष्ट निर्देश (एक बार में 8–9 निर्देश) देते हैं।	• स्पष्ट निर्देश देते हैं जिसमें गणित शामिल हो (जैसे– सटीक दिशाएँ, स्थान और समय संबंधी आयाम)।

C-9.5: सीखने के प्रतिफल

तालिका 46

C-9.5: सुनाई गई/बोलकर पढ़ी गई कहानियों को समझते हैं तथा पात्रों, कथानक और लेखक के आशयों को पहचानते हैं

आयु 3–8

	A	B	C	D	E
1	• थोड़े समय (5–7 मिनट) के लिए कहानियों को ध्यान से सुनते हैं।	• सुनाई गई कहानी के पात्रों और कुछ घटनाओं को याद करते हैं और उसे अपने शब्दों में फ़िर से बताते हैं।	• कहानी में कथानक और पात्रों की पहचान करते हैं और कहानी की शब्दावली का उपयोग करके सही क्रम में फ़िर से कहानी बताते हैं।	• कहानी में पात्रों व कथानक के आशय की व्याख्या करते हैं और कहानी को अलग रूप में फिर से कहते हैं।	• कहानी लिखने के लिए लेखक की प्रेरणाओं की व्याख्या करते हैं और कहानी को फ़िर से बतौर लेखक कहते हैं।

C-9.6: सीखने के प्रतिफल

तालिका 47

	A	B	C	D	E
	C-9.6: स्पष्ट कथानक और पात्रों के साथ छोटी कहानियाँ सुनाते हैं				
	आयु 3–8 वर्ष				
1			• कहानी के अंत की कल्पना स्वयं करते हैं और उसे सुनाते हैं।	• सरल कथानकों और पात्रों के साथ स्वयं की छोटी कहानियाँ सुनाते हैं।	• जटिल कथानकों और कई पात्रों के साथ स्वयं की कहानियाँ बनाते हैं (समूह में)।

C-9.7: सीखने के प्रतिफल

तालिका 48

	A	B	C	D	E
	C-9.7: प्रभावी ढंग से प्रतिदिन की बातचीत करने के लिए पर्याप्त शब्द जानते हैं, उनका उपयोग करते हैं और मौजूदा शब्दावली का उपयोग करके नए शब्दों के अर्थ का अनुमान लगा पाते हैं				
	आयु 3–8 वर्ष				
1	• कुछ सामान्य और परिचित वस्तुओं व अनुभवों के लिए उपयुक्त शब्दावली का उपयोग शुरू करते हैं (जैसे– अपना नाम, दोस्तों के नाम, सामान्य वस्तुएँ, चित्र, मीठा, खट्टा, गोल, बड़ा)।	• खास प्रसंगों और कक्षा में प्रस्तुत विषयों से प्राप्त शब्दावली का अपनी बातचीत में उपयोग करते हैं।	• क्रियाबोधक शब्दों, वर्णनात्मक शब्दों, काल आदि के सायास उपयोग के साथ विस्तृत शब्दावली का प्रयोग करते हैं।	• चित्र और संदर्भ संकेतों का उपयोग करते हुए अनजान शब्दों के अर्थ का अनुमान लगाते हैं।	• पाठ में सामने आए अनजान शब्दों के अर्थ जानने के लिए बच्चे शब्दकोशों का उपयोग करते हैं।

CG-10: बच्चे भाषा 1 (L1) को पढ़ने और लिखने में धाराप्रवाहिता विकसित करते हैं

मौखिक भाषा का विकास भाषायी परिवेश में तल्लीनता और सामाजीकरण के द्वारा स्वाभाविक रूप से होता है। लिखित भाषा एक सांस्कृतिक निर्मिति होती है, जो स्वाभाविक रूप से प्राप्त नहीं होती। बच्चों को अपनी मौखिक भाषा और उस भाषा की लेखन प्रणाली (लिपि) के बीच संबंध बनाने के लिए स्पष्ट निर्देश की आवश्यकता होती है। पहले यह समझना होगा कि हम उन शब्दों का उपयोग करते हैं, जिनमें अर्थ होता है। इन शब्दों को उन ध्वनियों में विभाजित किया जाता है जिन्हें लिपि में प्रतीकों के रूप में दिखाया जाता है। लिपि पढ़ने और लिखने के लिए स्पष्ट निर्देश की आवश्यकता होती है। बच्चा लिपि के सभी वर्ण सीख ले, इसके इंतज़ार में अर्थ-निर्माण को स्थगित नहीं किया जाना चाहिए।

C-10.1: सीखने के प्रतिफल

तालिका 49

C-10.1: L1 में ध्वनि जागरूकता विकसित करते हैं और स्वनिमों (phonemes)/शब्दांशों (syllables) को मिलाकर शब्द बनाते हैं और शब्दों को स्वनिमों/शब्दांशों में विभाजित करते हैं

आयु 3–8 वर्ष

	A	B	C	D	E
1	• तुकबंदी गाते हैं।	• तुकबंदी वाले शब्दों और अनुप्रास की पहचान करते हैं।	• तुकबंदी वाले शब्दों और अनुप्रासों का निर्माण करते हैं।		
2	• शब्दांश (syllables) ध्वनियों की नकल और पुनरुत्पादन करते हैं।	• शब्दों में शुरुआत और अंत के शब्दांशों की पहचान करते हैं।	• शब्दांशों को उनके व्यंजन और स्वर ध्वनियों में तोड़ते हैं।		
3		• 2–3 शब्दांशों को मिलाकर सरल शब्द बनाते हैं।	• परिचित शब्द निर्माण के लिए ध्वनियों (स्वर और व्यंजन) को जोड़ते हैं।		

C-10.2: सीखने के प्रतिफल

तालिका 50

C-10.2: किताब का बुनियादी ढाँचा/प्रारूप, छपे हुए शब्द और उनकी छपाई की दिशा की अवधारणा को समझते हैं और मूलभूत विराम चिह्नों को पहचानते हैं

आयु 3–8 वर्ष

	A	B	C	D	E
1	• सामान्य संकेतों, प्रतीक चिह्नों और लेबलों को पहचानते/जानते हैं (जैसे– ऊपरी आवरण के रंग के आधार पर बिस्कुट का ब्रांड, साबुन का ब्रांड पहचानना)।	• किताब लेकर उसे खोलते और खोजने की जिज्ञासा में पन्ने पलटते हैं।	• सूचना देने वाली छपी हुई सामग्री (किताब, अखबार, पर्चा आदि) का वर्णन करते हैं।		

	A	B	C	D	E
2	• छपे हुए टेक्स्ट और चित्रों के बीच अंतर करते हैं।	• किसी छपे हुए पृष्ठ पर बाएँ से दाएँ और ऊपर से नीचे तक शब्दों का अनुसरण करते हैं।		• सामान्य विराम चिह्नों (पूर्ण विराम, प्रश्न चिह्न) को पहचानते हैं।	• सामान्य विराम चिह्नों (पूर्ण विराम, प्रश्न चिह्न) का उचित उपयोग करते हैं।
3	• कहानी में चित्रों पर आधारित परिचित किताबों को चित्रों के माध्यम से पढ़ते हैं।	• किसी लिखित/मुद्रित पाठ का अनुसरण करते हुए शब्द-जैसी समुचित ध्वनियाँ निकालते हुए पढ़ने का बहाना करते हैं।	• आवरण पृष्ठ को देखकर किताब के बारे में बात करते हैं। (आवरण के संकेतों का उपयोग करके अनुमान लगाते हैं।)		

C-10.3: सीखने के प्रतिफल

तालिका 51

	A	B	C	D	E
	C-10.3: लिपि (L1) की वर्णमाला के सभी अक्षरों को पहचानते हैं और इस ज्ञान का उपयोग शब्दों को पढ़ने-लिखने के लिए करते हैं				
	आयु 3–8 वर्ष				
1	• जानते है कि शब्द अक्षरों से बने होते हैं।	• अक्षरों (मूलाक्षर/बारहखड़ी/कगुनीता) को देखकर पहचानते हैं और उन्हें संगत ध्वनियों से जोड़ना शुरू कर देते हैं।	• अधिक प्रयोग किए जाने वाले अक्षरों (संयुक्ताक्षरों सहित) को पहचानते है और संबंधित ध्वनियों से उन्हें जोड़ते हैं।	• सभी अक्षरों (संयुक्ताक्षरों सहित) को पहचानते हैं और उन्हें संबंधित ध्वनियों से जोड़ते हैं।	
2		• परिचित और पहचाने अक्षरों से बने दो-अक्षरों वाले सामान्य शब्दों को पढ़ लेते हैं।	• परिचित और पहचाने अक्षरों से बने होते हैं, तीन से चार अक्षरों वाले सामान्य शब्दों (ऐसे शब्द भी जिनमें आमतौर पर व्यंजन दो बार आते हैं) को पढ़ लेते हैं।	• कई अक्षरों वाले शब्दों (व्यंजन समूहों सहित) को पढ़ लेते हैं।	• कई अक्षरों वाले शब्दों (व्यंजन समूहों सहित) और गैर-शब्दों को सटीक ढंग से पढ़ते हैं।
3		• अपने परिवेश की वस्तुओं के लेबल और अपना नाम, दृश्य शब्दों (sight words) के रूप में पहचानते हैं।	• आमतौर पर उपयोग होने वाली वस्तुओं, सर्वनामों और जोड़ने वाले शब्दों को दृश्य शब्दों (sight words) के रूप में पहचानते हैं।		

C-10.4: सीखने के प्रतिफल

तालिका 52

C-10.4: कहानियों और गद्यांशों को (L1 में) सटीकता और प्रवाह के साथ, उचित विरामों और आवाज़ में उतार-चढ़ाव के साथ पढ़ते हैं

आयु 3–8 वर्ष

	A	B	C	D	E
1		• अलग-अलग अक्षर ध्वनियों और दृश्य शब्दों (sight words) को पहचानकर ज्ञात शब्दों वाले छोटे वाक्यों को पढ़ते हैं।	• परिचित शब्दों वाले कुछ वाक्यों को सटीक ढंग से पढ़ते हैं।	• उपयुक्त लय और विराम के साथ छोटे गद्यांशों को सटीक तरीके से पढ़ते हैं।	• उपयुक्त लय, विराम और आवाज़ में उतार-चढ़ाव के साथ छोटे गद्यांशों को सटीक और धाराप्रवाह ढंग से पढ़ते हैं।

C-10.5: सीखने के प्रतिफल

तालिका 53

C-10.5: छोटी कहानियाँ पढ़ते हैं और पात्रों, कथानक व लेखक के आशयों की पहचान करके, स्वयं से ही उनका अर्थ समझते हैं (L1)

आयु 3–8 वर्ष

	A	B	C	D	E
1	• बोलकर पढ़े गए को सुनते हैं और शिक्षक द्वारा पूछे गए सवालों के जवाब देते हैं।	• शिक्षक के साथ साझा पठन में भाग लेते हैं और पाठ के बारे में चर्चा करते हैं।	• शिक्षक के साथ निर्देशित/मार्गदर्शित पठन में भाग लेते हैं और पाठ के बारे में चर्चा करते हैं।	• समान पाठ्य और दृश्य सामग्री वाली पुस्तकों का स्वतंत्र पठन शुरू करते हैं।	• दृश्य सामग्री की तुलना में अधिक पाठ्य सामग्री वाली पुस्तकों का स्वतंत्र पठन शुरू करते हैं।
2	• चित्र, पुस्तकें पढ़ते हैं और वस्तुओं तथा क्रियाओं की पहचान करते हैं।	• चित्र पुस्तकें पढ़ते हैं, पात्रों और कथानक की पहचान करते हैं और कहानी को छोटे-छोटे क्रमों में बताते हैं।	• छोटे सरल पाठ वाली पुस्तकों को बोलकर पढ़ते हैं, सटीक अनुक्रम और विस्तार के साथ कहानी का अनुमान लगाने और उसे फिर से कहने के लिए दृश्य संकेतों और पाठ का उपयोग करते हैं।	• कहानी की अपरिचित किताबें पढ़ना शुरू करते हैं और शिक्षक के मार्गदर्शन से उन्हें समझते हैं। • कथानक और पात्रों की पहचान करते हैं।	• पात्रों, कथानकों, अनुक्रमों और लेखक के दृष्टिकोण को पढ़ते और पहचानते हैं।

C-10.6: सीखने के प्रतिफल

तालिका 54

	A	B	C	D	E
	C-10.6: छोटी कविताएँ पढ़ते हैं और शब्दों व कल्पना के चुनाव के लिए कविता की सराहना करना शुरू करते हैं (L1)				
	आयु 3–8 वर्ष				
1				• छोटी कविताएँ पढ़ते हैं और उनका शाब्दिक अर्थ बताते हैं।	• छोटी कविताएँ पढ़ते हैं और कवि की कल्पना का अनुमान लगाते हैं।

C-10.7: सीखने के प्रतिफल

तालिका 55

	A	B	C	D	E
	C-10.7: लघु समाचारों, निर्देशों, व्यंजन विधियों और प्रचार सामग्री को पढ़ते-समझते हैं (L1)				
	आयु 3–8 वर्ष				
1			• लिखित सरल निर्देशों के एक छोटे समूह को पढ़ते हैं और उनका पालन करते हैं।	• खेल खेलने और साथियों के साथ खेलने के लिए सरल निर्देशों को पढ़ते हैं।	• छोटे-छोटे समाचार और प्रचार के पर्चे पढ़ते हैं और उनकी अंतर्वस्तु की व्याख्या करते हैं।

C-10.8: सीखने के प्रतिफल

तालिका 56

C-10.8: अपनी समझ और अनुभव को व्यक्त करने के लिए एक अनुच्छेद लिखते हैं (L1)

आयु 3–8 वर्ष

	A	B	C	D	E
1	• विभिन्न लेखन उपकरणों का उपयोग करते हैं, जैसे– चॉक का टुकड़ा, पेंसिल, रंगीन पेंसिल, रंगने वाली कूंची।	• आसानी और प्रवाह के साथ लेखन/रेखांकन उपकरणों का उपयोग करते हैं।			
2		• ऐसे अक्षर लिखना शुरू करते हैं जिन्हें वे पहचानते हैं और उनका उपयोग सरल शब्द बनाने के लिए करते हैं।	• सटीक ढंग से अक्षरों को लिखते हैं और सरल शब्द व वाक्य बनाते हैं।	• श्रुतलेख कार्य में सटीक तरीके से तीन या चार अक्षरों वाले शब्द लिखते हैं।	• श्रुतलेख कार्य में छोटे वाक्य लिखते हैं।
3	• रेखांकन करते हैं, चित्र बनाते हैं और अपने रेखांकन के आशय को मौखिक रूप से व्यक्त करते हैं।	• अधिक सटीक तरीके से दृश्य रूपों और वस्तुओं को रेखांकित करते हैं, रंगते हैं और मौखिक रूप से रेखांकन/चित्र को समझाते हैं।	• रेखांकन करते हैं/चित्र बनाते हैं और रेखांकन/चित्र में सरल शब्द/वाक्य (अपनी आविष्कृत वर्तनी सहित) जोड़ते हैं।	• चित्रों का एक क्रम बनाते हैं और उनके साथ छोटे वाक्य लिखते हैं।	• चित्रों का एक क्रम बनाते हैं और उनके साथ सटीक ढंग से छोटे वाक्य लिखते हैं।
4				• शब्द और छोटे वाक्य लिखकर चित्र-कार्ड का वर्णन करते हैं।	• चित्र पुस्तक से अनुमान लगाकर एक कहानी लिखते हैं।
5				• सरल प्रक्रियाओं को पूरा करने के लिए सहपाठियों के लिए संक्षिप्त निर्देश लिखते हैं।	• घटनाओं व अनुभवों के छोटे जर्नल और विवरण लिखते हैं।

C-10.9: सीखने के प्रतिफल

तालिका 57

C-10.9: विविध प्रकार की बच्चों की किताबें चुनने और पढ़ने में रुचि दिखाते हैं (L1)

आयु 3–8 वर्ष

	A	B	C	D	E
1	• बोलकर पढ़ी जा रही कहानियों और कविताओं में रुचि दिखाते हैं।	• शिक्षक द्वारा दी गई कई पुस्तकों में से एक को चुनते हैं और बताते हैं कि उन्होंने पुस्तक को क्यों चुना?	• छोटी चित्र पुस्तकों को स्वयं चुनते और पढ़ते हैं, दूसरे बच्चों से पुस्तक के बारे में बात करते हैं।	• पुस्तक चुनने में अपनी पसंद स्पष्ट करते हैं। नियमित आवृत्ति पर छोटी पुस्तकें पढ़ते हैं।	• तरह-तरह की कथात्मक और गैर-कथात्मक, दोनों तरह की किताबों में दिलचस्पी दिखाते हैं और उन्हें पढ़ते हैं।
2	• किताबों का ध्यान रखते हैं।	• किताबों को कक्षा में उनके उचित स्थान पर वापस रखते हैं।			• स्कूल के पुस्तकालय में किताबों का अनुरक्षण करते हैं और उन्हें ठीक करते हैं।

CG-11: बच्चे भाषा 2 (L2) में पढ़ना और लिखना शुरू करते हैं

C-11.1: सीखने के प्रतिफल

तालिका 58

C-11.1: ध्वनि जागरूकता विकसित करते हैं और स्वनिमों (phonemes)/शब्दांशों (syllables) को मिलाकर शब्द बनाते हैं और शब्दों को स्वनिमों (phonemes)/शब्दांशों (syllables) में विभाजित करते हैं

आयु 3–8 वर्ष

	A	B	C	D	E
1			• तुकबंदियाँ गाते हैं।	• तुकबंदी वाले शब्दों और अनुप्रास की पहचान करते हैं।	• तुकबंदी वाले शब्दों और अनुप्रासों का निर्माण करते हैं।
2			• शब्दांश (syllabic) ध्वनियों की नकल और पुनरुत्पादन करते हैं।	• शब्दों में शुरुआत और अंत के शब्दांशों की पहचान करते हैं।	• शब्दांशों को उनके व्यंजन और स्वर ध्वनियों में तोड़ते हैं।
3				• 2–3 शब्दांशों को मिलाकर सरल शब्द बनाते हैं।	• परिचित शब्द निर्माण के लिए ध्वनियों (स्वर और व्यंजन) को जोड़ते हैं।

C-11.2: सीखने के प्रतिफल

तालिका 59

	A	B	C	D	E
	C-11.2: लिपि की वर्णमाला के बार-बार दिखने वाले अक्षरों को पहचानते हैं और इस ज्ञान का उपयोग सरल शब्दों और वाक्यों को पढ़ने-लिखने के लिए करते हैं				
	आयु 3–8 वर्ष				
1				• अक्षरों को देखकर पहचानना और संगत ध्वनियों से जोड़ना शुरू करते हैं।	• वर्णमाला के सभी अक्षरों को पहचानते हैं।
2				• दो अक्षरों वाले सामान्य शब्दों को पढ़ लेते हैं जो परिचित और जाने पहचाने अक्षरों से बने होते हैं।	• तीन या चार अक्षरों वाले परिचित सामान्य शब्दों को पढ़ लेते हैं। • आमतौर पर उपयोग होने वाली वस्तुओं, सर्वनामों और जोड़ने वाले शब्दों को दृश्य शब्दों (sight words) के रूप में पहचानते हैं।
3				• अपने परिवेश की वस्तुओं के लेबल और अपना नाम, दृश्य शब्दों के रूप में पहचानते हैं।	
4				• बोला हुआ सुनकर छोटे शब्द लिख लेते हैं।	

1.1.5 सौंदर्यबोध और सांस्कृतिक विकास

इस आयु वर्ग के बच्चे न केवल कला और सौंदर्य की अभिव्यक्ति का आनंद ले रहे होते हैं, बल्कि वे कला के साथ जुड़ाव के माध्यम से अपनी संवेदी और सूक्ष्म गतिक क्षमताओं का भी विकास कर रहे होते हैं। कलात्मक अभिव्यक्ति, भावनात्मक अभिव्यक्ति और नियमन का भी माध्यम है। कला में बातचीत और काम की मौखिक अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। पैटर्न का अवलोकन, पुनरुत्पादन और उनका विस्तार करना, सभी कला रूपों के लिए केंद्रीय कौशल होता है। इसलिए, दृश्य कला, संगीत, गतिविधि और नाटक के माध्यम से कला के साथ जुड़ाव, बुनियादी स्तर पर विकास के सभी पहलुओं के साथ समग्र जुड़ाव है। याद रखना होगा कि विकास के इस स्तर पर कौशल निर्माण की बजाय बच्चे की मुक्त और रचनात्मक अभिव्यक्ति पर अधिक ज़ोर दिया जाना चाहिए।

CG-12: बच्चे दृश्य और प्रदर्शन कलाओं में क्षमताएँ और संवेदनशीलता विकसित करते हैं और कला के माध्यम से अपनी भावनाओं को सार्थक और आनंदपूर्ण तरीके से अभिव्यक्त करते हैं

C-12.1: सीखने के प्रतिफल

तालिका 60

C-12.1: विभिन्न आकारों की द्वि-आयामी और त्रि-आयामी कलाकृतियाँ बनाने के लिए तरह-तरह की सामग्रियों और उपकरणों की खोज करते हैं और उनसे खेलते हैं

आयु 3–8 वर्ष

	A	B	C	D	E
1	• आवश्यक कला सामग्रियों, उपकरणों और औज़ारों को पकड़ते हैं।	• कला सामग्रियों, यंत्रों और उपकरणों (जैसे– डंडे, बीज, कंकड़, पत्थर, चाक, धागे, पेंसिलें, कूंचियाँ, क्रेयॉनस, पाउडर, कैंची) का उपयोग करते हुए विभिन्न प्रकार की पकड़ों का पता लगाते हैं।		• गाढ़े और हल्के अंकनों/चिह्नों/रेखाओं को बनाने के लिए दबाव में बदलाव करने में सक्षम होते हैं।	
2	• दृश्य कलाकृतियों में चिह्न, रेखाएँ, आड़ी-तिरछी लकीर खींचते हुए बड़े और छोटे आकार को तथा अन्य द्वि-आयामी और त्रि-आयामी आकृतियों को समझते हैं।		• साथियों, सुगमकर्ताओं और स्थानीय समुदाय के सहयोग से बड़े पैमाने के काम (जैसे– फ़र्श पर रंगोली, भित्ति चित्र, मूर्ति) बनाते हैं।	• उपलब्ध जगह या सामग्री के आधार पर स्वयं के काम को बड़े और छोटे आकारों में मापने में सक्षम होते हैं (जैसे– मिट्टी की एक छोटी गुड़िया या कागज़ की एक बड़ी गुड़िया बनाना)।	
3	• सामग्रियों (जैसे– मिट्टी और पानी, रेत और पानी, आटा और पानी, पेंट और पानी) को मिलाकर आकृतियाँ और ठप्पे बनाते हैं।	• मिट्टी या आटे जैसी सामग्री को बेलकर और थपथपाकर त्रि-आयामी आकृतियाँ बनाते हैं।	• अपनी व्यवस्था के अनुसार से अलग-अलग गाढ़ेपन, रंग और गठन की सामग्रियों को मिलाकर कोलाज बनाते हैं। • विभिन्न प्रकार की प्राप्त सामग्रियों और वस्तुओं को मिलाकर त्रि-आयामी व्यवस्था/संयोजन बनाते हैं।		
4	• ब्लॉक, स्टेंसिल, प्राप्त वस्तुओं और प्राकृतिक सामग्री का उपयोग करके ठप्पे (imprints) बनाते हैं।		• ब्लॉक, स्टेंसिल, प्राप्त वस्तुओं और प्राकृतिक सामग्री का उपयोग करके सरल पैटर्न बनाते हैं।	• सामग्रियों को विभिन्न आकारों, आकृतियों, बनावटों और रंगों के अनुसार से मिलाकर और व्यवस्थित करके पैटर्न बनाते हैं।	• किसी सामग्री के साथ जोड़-तोड़ करके तरह-तरह के गठन बनाते हैं (जैसे– मिट्टी, कपड़ा, कागज़, रबड़, लकड़ी)।

C-12.2: सीखने के प्रतिफल

तालिका 61

C-12.2: संगीत, रोल-प्ले, नृत्य और गतिविधियाँ निर्मित करने के लिए अपनी आवाज़, शरीर, स्थानों और तरह-तरह की वस्तुओं की खोज करते हैं और उनसे खेलते हैं

आयु 3–8 वर्ष

	A	B	C	D	E
1	• आवाज़ और शरीर के माध्यम से लय की खोज करते हैं। (ताली बजाते हैं, थपकी देते हैं। हाथ हिलाते हैं, कूदते हैं, उछलते हैं, लय में गीत को पढ़ते हैं।)	• आवाज़, शरीर या दूसरी वस्तुओं के साथ लय खोजते समय तेज़ और धीमी गति को अलग करते हैं।	• आवाज़, शरीर या दूसरे वाद्ययंत्रों के साथ खेलते हुए तेज़, मध्यम और धीमी गति में अंतर करते हैं।	• धीमी और मध्यम गति में सरल लयबद्ध पैटर्न के साथ खेलते हैं।	• गाने और गति में ताल का अनुसरण करते हैं और परिचित ताल पैटर्न के आधार पर स्वयं विविधताओं की खोज करते हैं।
2	• आवाज़, शरीर, वस्तुओं और उपकरणों को बजाकर कई तरह की आवाज़ें पैदा करते हैं।	• भूमिका निर्वहन, एकल या समूह संगीत व्यवस्थाओं, आवाज़ की नकल, शरीर या वाद्ययंत्रों का उपयोग करके संदर्भ/स्थिति के अनुसार विभिन्न प्रकार की ध्वनियाँ पैदा करते हैं।	• अपने गाने और बोलने की आवाज़ के बीच अंतर की खोज करते हैं और दोनों का उपयोग मस्ती से करते हैं। • गायन और वादन के बीच अंतर करते हैं और दोनों को समझते हैं।	• आवाज़, शरीर, यंत्रों और वस्तुओं का उपयोग करके परिचित गीतों या स्थितियों में ध्वनि सुधार करते हैं (जैसे– किसी गीत पर शरीर के विभिन्न अंगों/उपकरणों का उपयोग करते हुए ताल देना, ध्वनियों के माध्यम से किसी नाटकीय दृश्य का परिवेश बनाना)।	
3	• आवाज़ या शरीर का उपयोग करते समय या यंत्रों और वस्तुओं को बजाते हुए आवाज़ (तेज़ और धीमी) और पिच (उतार और चढ़ाव) समझते हैं।		• विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने, संगीत बनाने, चरित्र विकसित करने और स्थितियाँ बनाने के लिए आवाज़ के उतार-चढ़ाव का उपयोग करते हैं।	• संगीत, स्थान, संदर्भ और स्थिति के अनुसार आवाज़ के उतार-चढ़ाव को बदलते हैं।	• आवाज़ या वाद्ययंत्र का उपयोग करके आवाज के उतार-चढ़ाव का मिलान करने की कोशिश करते हैं।
4	• दैनिक जीवन की परिस्थितियों में मौन और स्थिरता की खोज करते हैं।	• संगीत, नाटक और गतिविधियों के द्वारा मौन और स्थिरता के क्षणों से खेलते हैं।		• स्थान, संदर्भ और स्थिति के अनुसार मौन और स्थिरता की अलग-अलग अवधियों की खोज करते हैं।	

C-12.3: सीखने के प्रतिफल

तालिका 62

	A	B	C	D	E
	C-12.3: कला के माध्यम से विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने के लिए नए तरीकों की खोज करते हैं और कल्पनाशीलता के साथ कार्य करते हैं				
	आयु 3–8 वर्ष				
1	• स्वयं की खोज के साथ संबंध बनाने के लिए अपने परिवेश, स्थानीय संस्कृति और कला के उदाहरणों पर ध्यान देते हैं।	• कलाओं के संबंध में अपने विचारों, उपकरणों और काम के तरीकों को साझा करते हैं और परिचित उदाहरणों के आधार पर उनमें बदलाव करते हैं।	• कला के माध्यम से विभिन्न अभिव्यक्तियों, विचारों और भावनाओं की पहचान करते हैं, इनकी व्याख्या करते हैं और इन्हें अपनी कलात्मक खोजों में लागू करते हैं।	• खास विचारों और भावनाओं को व्यक्त करते हुए कई दृष्टिकोणों या विविधताओं की खोज करते हैं (जैसे– शरीर, आवाज़, मुखौटे, कठपुतली या गति संयोजनों का उपयोग करके बिल्ली की भूमिका निभाने के कई तरीको के बारे में सोचना)। • अपने संसाधनों और कई समाधानों की खोज करते हुए चुनौतियों का अनवरत सामना करते हैं।	
2	• वस्तुओं, लोगों और भावनात्मक अनुभवों को प्रतीक के रूप में दिखाने के लिए तरह-तरह के दृश्य विधानों, शारीरिक गतिविधियों और ध्वनियों का निर्माण करते हैं।	• दृश्य और प्रदर्शन द्वारा लोगों, जानवरों, पौधों व वस्तुओं आदि की कुछ पहचानने योग्य भौतिक और व्यावहारिक विशेषताओं की नकल करते हैं।	• अपने विचार और अनुभव व्यक्त करने के लिए रूपों, रंगों, चरित्रों, ध्वनियों, स्थानों व स्थितियों को कल्पना के द्वारा जोड़ते हैं।	• कला बनाते हुए और उसे देखते हुए विषयवार ब्योरों, भौतिक सामग्री (बनावट, रंग, आकार और रूप), स्थान और परिस्थिति पर ध्यान देते हैं।	

C-12.4: सीखने के प्रतिफल

तालिका 63

C-12.4: कला में सहयोगात्मक ढंग से कार्य करते हैं

आयु 3–8 वर्ष

	A	B	C	D	E
1	• व्यक्तिगत और समूह में पैदा होने वाली ध्वनि और गति को समझते हैं।	• दोस्तों के साथ साझेदारी में विभिन्न किस्म की बातें, गतियाँ, आवाज़ें और दृश्य कलाएँ उत्पादित करते हैं।	• जोड़े या समूह में खेलते या प्रदर्शन करते समय बातचीत, गति और ध्वनि का समन्वय करने का प्रयास करते हैं। • किसी जगह पर कला को व्यवस्थित करने या उसके प्रदर्शन में साथियों और सुगमकर्ताओं की मदद करते हैं।	• साथी/समूह के साथ तालमेल बिठाने के लिए स्वयं की आवाज़, उतार-चढ़ाव और गति को बदलते हैं।	• भूमिका निर्वहन, संगीत, नृत्य और गति के चरणों का प्रदर्शन करते समय उनके क्रम पर ध्यान देते हैं।

C-12.5: सीखने के प्रतिफल

तालिका 64

C-12.5: कला, स्थानीय संस्कृति और विरासत के विभिन्न रूपों की रचना और अनुभव करते हुए विभिन्न तरह की प्रतिक्रियाएँ संप्रेषित करते हैं और इनकी सराहना करते हैं

आयु 3–8 वर्ष

	A	B	C	D	E
1	• कलाकृतियों के संबंध में पसंद, नापसंद और अन्य विचारों को मौखिक/गैर-मौखिक रूप से व्यक्त करते हैं।	• कलाकृतियों के विभिन्न पहलुओं या स्थानीय सांस्कृतिक अभिव्यक्ति पर ध्यान देते हैं। (जैसे– किसी चरित्र की आवाज़ बेहद ऊँची और डरावनी थी।)	• विभिन्न कलाकृतियों/व्यवस्थाओं/सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों की तुलना करते हैं और तरह-तरह की प्रतिक्रियाएँ देते हैं।		
2	• कला से संबंधित गतिविधियों के दौरान दूसरों की उपस्थिति को पसंद करते हैं।	• साथियों के समूह से कला प्रक्रियाओं के दौरान प्रतिक्रियाएँ और विचार साझा करते हैं।	• स्वीकार करते हैं कि कला में एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति की निजी प्राथमिकताएँ भिन्न होती हैं।	• कलात्मक विचार और अभिव्यक्ति के संबंध में बहुत-सी प्रतिक्रियाओं को साझा करते हैं और प्रतिक्रियाओं में बहुलता की सराहना करते हैं।	

1.1.6 सीखने की सकारात्मक आदतें

मौजूदा शोध बताते हैं कि विकास के जाने-पहचाने क्षेत्रों के साथ-साथ, प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा में उच्च स्तरीय कार्यकारी कार्यों और स्व-नियमन पर ध्यान देने से; स्कूल के लिए बच्चे की तैयारी पर बहुत असर पड़ता है।

CG-13: बच्चे सीखने की आदतें विकसित करते हैं जो उन्हें स्कूल की कक्षा जैसे सीखने के औपचारिक परिवेश में सक्रिय रूप से शामिल रहने में मदद करती हैं

C-13.1: सीखने के प्रतिफल

तालिका 65

C-13.1 ध्यान व सुविचारित कर्म विशिष्ट लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए, योजना बनाने, ध्यान केंद्रित करने तथा गतिविधियाँ निर्देशित करने के कौशल हासिल करते हैं

आयु 3–8

	A	B	C	D	E
1	• स्वयं शुरू की गई गतिविधियों पर थोड़े समय के लिए ध्यान केंद्रित करते हैं (जैसे– पहेली पर काम करना)। • ऐसे एक या दो कामों में रुचि बनाए रखते हैं जो उन्हें व्यस्त रखते हैं (जैसे– संवेदी तालिका से 5–10 मिनट खेलते हैं)।	• वयस्कों के संकेतों और मदद से गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, (जैसे– रुकावट या विचलन के बावजूद थोड़े वक्त के लिए किसी समूह के लिए पढ़ी जाने वाली कहानियों को सुनना)। • अपनी रुचि वाले विभिन्न प्रकार के कार्यों पर ध्यान केंद्रित करते हैं (जैसे– नाटक में भूमिका निभाते हैं और 10 मिनट के लिए किसी क्षेत्र की सीमा बनाते हैं)।	• बढ़ती हुई स्वतंत्रता के साथ चित्रकारी या ब्लॉक निर्माण जैसे– कामों व गतिविधियों पर लंबे समय तक ध्यान केंद्रित करते हैं। • अपनी रुचि वाले कामों के साथ लंबे समय तक व्यस्त रहते हैं (जैसे– 20 मिनट तक चित्र बनाना)। • वयस्कों द्वारा शुरू किए गए उन कामों में भाग लेना शुरू करते हैं जो उनकी रुचियों पर आधारित नहीं होते हैं (जैसे– शिक्षक द्वारा शुरू किए गए छोटे समूह में भागीदारी)।	• वयस्कों द्वारा शुरू किए गए उन कामों में भाग लेते हैं जो उनकी रुचियों पर आधारित नहीं होते हैं (जैसे– शिक्षक द्वारा शुरू किए गए छोटे समूह में भागीदारी)। • लंबे समय (20 मिनट) तक लगातार किसी काम पर ध्यान केंद्रित करते हैं।	• वयस्कों द्वारा शुरू किए गए उन कामों में भाग लेते हैं जो उनकी रुचियों पर आधारित नहीं होते हैं (जैसे– शिक्षक द्वारा शुरू किए गए छोटे समूह में भागीदारी)। • लंबे समय (30 मिनट) तक लगातार किसी काम पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

C-13.2: सीखने के प्रतिफल

तालिका 66

C-13.2: स्मृति और मानसिक लचीलापन — समुचित कार्यकारी स्मृति, मानसिक लचीलापन (समुचित तरीके से ध्यान बनाए रखने या बदलने के लिए) और आत्म-नियंत्रण (आवेगी क्रियाओं और प्रतिक्रियाओं के प्रतिरोध के लिए) विकसित करते हैं जो संरचित वातावरण में सीखने में उनकी मदद करेगा

आयु 3–8 वर्ष

	A	B	C	D	E
1	• न दिखने वाले चित्र या किसी कहानी को याद करने या मौखिक रूप से वर्णित करने के माध्यम से स्मृति का अभ्यास करते हैं। • याद करते हैं कि परिचित परिवेश में वस्तुएँ कहाँ रखीं हैं (जैसे– अलमारी से अतिरिक्त कपड़े निकालना)।	• अपनी देखभाल या खेलने के लिए आवश्यक वस्तुओं की तालिका को दोहराते हैं। • स्मृति और मिलान करने के सामान्य खेल खेलते हैं। • सरल कामों को पूरा करने के लिए दो चरण वाले निर्देशों को याद रखते हैं और उनका पालन करते हैं (जैसे– अपने हाथ धोना, फिर नाश्ता तैयार करने में मदद करना या नाश्ता करना) • कहानियों या गीतों के साथ होने वाली क्रियाओं को याद रखते हैं।	• बहुत से चरणों वाले निर्देशों को पूरा करने के किए कई चरणों को क्रमवार याद रखते हैं (जैसे– पहेली पूरा करो, फिर से उसे अलमारी पर रखो और वापस समूह में शामिल हो जाओ)। • दी गई गतिविधि के लिए उठाए गए कदमों के बारे में दूसरे बच्चों को सिखाते हैं (जैसे– दोस्त को बताते हैं कि नाश्ता करने से पहले हाथ धोने के लिए साबुन का उपयोग कैसे करें)। • पाँच वाक्यों तक की छोटी कहानियों और गीतों को याद रखते हैं और सुना सकते हैं।	• याद करते हैं और तुरंत सुना सकते हैं (जैसे– एक ही क्रम में दोहराए गए चार अंक)।	• याद कर सकते हैं और सुना सकते हैं, लापता वस्तुओं की पहचान कर सकते हैं (जैसे– दो समान दृश्यों, जिनमें एक या दो महत्वपूर्ण अंतर हों, का अध्ययन करते हैं और अंतर की पहचान करते हैं)।

2	• दिनचर्या में बदलाव के साथ समायोजन करते हैं। • गतिविधियों के बीच बदलाव के संकेतों को पहचानते हैं। • दैनिक कार्यों में एक कार्य से दूसरे कार्य में संक्रमण कर लेते हैं।	• जब कोई चीज़ पहली बार काम नहीं करती हैं, तो किसी वयस्क की मदद से किसी अन्य माध्यम को लागू करने की कोशिश करते हैं और संज्ञानात्मक लचीलापन प्रदर्शित करते हैं (जैसे– किसी संरचना पर चढ़ने का पहला प्रयास जब काम नहीं करता है, तब पहुँच से बाहर की चीज़ को अन्य तरीके, अन्य औज़ार या अन्य इंसान के माध्यम से प्राप्त करने की कोशिश करते हैं)। • आवश्यकता पड़ने पर किसी काम या गतिविधि से दूसरे काम या गतिविधि पर ध्यान केंद्रित करने की क्षमता प्रदर्शित करते हैं।	• खेल या गतिविधि के नए नियमों से अनुकूलित हो जाते हैं (जैसे– पहले रंग और फिर आकृति के आधार पर पत्तों की छँटाई)। • समाधान या रणनीति खोजने के लिए वयस्कों और दूसरे बच्चों के विचारों पर ध्यान देते हैं। • वयस्कों के अधिक प्रोत्साहन के बिना लचीलेपन और अनुकूलन की क्षमता प्रदर्शित करते हैं (जैसे– खिलौने साझा करना या नई वस्तुएँ आज़माना)। • अलग-अलग गतिविधियों को आजमाने के लिए वयस्कों के सुझावों पर लगातार प्रतिक्रिया देते हैं।	• कक्षा की स्थितियों को अपनाते और उनके अनुकूल बनते हैं। • कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं और सुधार के लिए सुझाव लेते हैं।	• सीखने के अनुकूल कक्षा स्थितियों का निर्माण करते हैं, उन्हें अपनाते हैं और उनके अनुकूल बनते हैं। • सभी गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं, सुझावों और प्रतिक्रियाओं का स्वागत करते हैं।
3	• अपनी बारी का इंतज़ार करते हैं और वयस्क की मदद से थोड़े समय के लिए लाइन में इंतज़ार करते हैं।	• किसी दोस्त के व्यवहार या बातचीत से दुखी होने पर वयस्कों की मदद खोजते हैं। • दोस्तों के साथ परेशानी जताने के लिए (काटने या धक्का देने की बजाय) वयस्कों की मदद से शब्दों, संकेतों या इशारों का उपयोग करना शुरू कर देते हैं। • वयस्कों की मदद से आवेगमय व्यवहार को रोकना शुरू करते हैं (जैसे– कहानी सुनते वक्त किसी सवाल का जवाब देने की प्रारंभिक प्रतिक्रिया को शिक्षक के याद दिलाने पर रोक लेते हैं)।	• अधिक स्वतंत्रता के साथ आवेगों को नियंत्रित करते हैं (जैसे– दौड़ने की बजाय चलते हैं, झपटने की बजाय खिलौने के लिए अपनी बारी के लिए पूछते हैं, बीच में बोल पड़ने की बजाय विचार साझा करने के लिए इंतज़ार करते हैं)। • अपने कामों को बार-बार नियंत्रित करने के लिए रणनीतियों का उपयोग करते हैं। (जैसे– शारीरिक दूरी बनाना या कोई दूसरा खिलौना या गतिविधि खोजना)।	• भावनाओं का प्रबंधन करते हैं, अपनी बारी का इंतज़ार करते हैं, नियमों का पालन करते हैं, नियम बनाते हैं, नेतृत्व गुणों का प्रदर्शन करते हैं और गतिविधियों में बदलाव के लिए सुझाव देते हैं।	

C-13.3: सीखने के प्रतिफल

तालिका 67

C-13.3: अवलोकन, आश्चर्य, जिज्ञासा और अन्वेषण— वस्तुओं के सूक्ष्म विवरणों का अवलोकन करते हैं, आश्चर्य करते हैं और विभिन्न इंद्रियों का उपयोग करते हुए अन्वेषण करते हैं, वस्तुओं के साथ छेड़-छाड़ करते हैं तथा सवाल पूछते हैं।

आयु 3–8 वर्ष

	A	B	C	D	E
1	• बगीचे में/ बाहर समय बिताने में खुशी महसूस करते हैं।	• प्राकृतिक वातावरण के प्रति जिज्ञासा और आश्चर्य व्यक्त करते हैं।	• अपनी खुशी और आश्चर्य को व्यक्त करने के लिए रेखांकन करते हैं। चित्र बनाते हैं, गाते हैं और नृत्य करते हैं।	• खेल, संगीत और नृत्य के सहारे दूसरे बच्चों के साथ अपनी खुशी साझा करना पसंद करते हैं।	• अपनी खुशी को अभिव्यक्त और स्पष्ट करने के लिए भाषा का उपयोग करते हैं।
2	• वयस्कों की मदद से तात्कालिक परिवेश (घर के बाहर) की छानबीन में उत्सुकता दिखाते हैं।	• वयस्कों की मदद या उसके बिना तात्कालिक परिवेश (घर के बाहर) की छानबीन में उत्सुकता दिखाते हैं।	• प्रकृति/आस-पास के परिवेश में मौजूद वस्तुओं की छानबीन करने में जिज्ञासा और उत्सुकता दिखाते हैं।	• आस-पास के परिवेश की छानबीन करने की पहल करते हैं और उत्सुकता दिखाते हैं, प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करते हैं (किसी वयस्क के निर्देशन में)।	• दूसरों के साथ निडरता से लेकिन सम्मानपूर्वक अंतर्क्रिया करते हैं। • आस-पास के परिवेश की छानबीन करने की पहल करते हैं और उत्सुकता दिखाते हैं, प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग ज़िम्मेदारी से करते हैं।

C-13.4: सीखने के प्रतिफल

तालिका 68

C-13.4: कक्षा के नियम— प्रतिनिधित्व (agency) और समझ के साथ नियमों को अपनाते और उनका पालन करते हैं।

आयु 3–8 वर्ष

	A	B	C	D	E
1	• कक्षा नियमों के प्रति वयस्कों के व्यवहार का अवलोकन करते हैं और उनका अनुसरण करते हैं।	• शिक्षक के संकेतों के साथ कक्षा नियमों का अनुसरण करते हैं।	• कक्षा नियमों का पालन करते हैं और इसमें दूसरों की मदद करते हैं। • शिक्षकों की मदद से 'स्वयं करें' कक्षा कार्य चार्ट/पोस्टर बनाते हैं और उनका अनुसरण करते हैं।	• कक्षा नियमों पर चर्चा में भाग लेते हैं और नियमों के अनुरूप व्यवहार करते हैं। • 'स्वयं करें' कक्षा कार्य चार्ट/पोस्टर बनाते हैं और उनका अनुसरण करते हैं।	• कक्षा नियम स्थापित करने में भाग लेते हैं और उनके अनुसार व्यवहार करते हैं। • 'स्वयं करें' कक्षा कार्य चार्ट/पोस्टर बनाते हैं और उन्हें दर्शाते हैं तथा ज़िम्मेदारी से उनका अनुसरण करते हैं।

अनुलग्नक 2
उदाहरणात्मक प्रक्रियाएँ

इस अनुलग्नक में बुनियादी स्तर के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF) के विभिन्न महत्वपूर्ण तत्वों की उदाहरणात्मक प्रक्रियाएँ (Illustrative Practices) दी गई हैं। ये नमूने देशभर के शिक्षकों और अन्य हितधारकों से लिए गए हैं। कक्षा अनुभव की समृद्धि को दर्शाने के लिए इनमें से कुछ दृष्टांत शिक्षकों द्वारा उपयोग की जाने वाली विभिन्न भाषाओं से लिए गए हैं, जिससे भारत की भाषा विविधता और भाषाशास्त्रीय विरासत की संपदा की चमक भी दिखाई पड़ेगी।

हम एक दिन, एक सप्ताह और एक वर्ष के लिए योजना और तैयारी के उदाहरणों के साथ शुरू करते हैं, इसमें वे गतिविधियाँ होंगी जो कक्षा में की जा सकती हैं। हम विभिन्न आयोजनों और मंचों के कुछ उदाहरणों के साथ समाप्त करेंगे जिनका उपयोग शिक्षकों को सक्षम और सशक्त बनाने के लिए किया जा सकता है।

इन्हें इसलिए नहीं चुना गया है क्योंकि ये परिपूर्ण हैं, बल्कि इसलिए कि ये इस राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा की भावना के करीब हैं। साथ ही ये विभिन्न संदर्भों में हमारी विद्यालयी शिक्षा व्यवस्था की संभावनाओं को प्रदर्शित करते हैं।

1. सीखने के लिए योजना

इस खंड में दो प्रकार के दृष्टांत शामिल हैं— खंड 1.1 में पूरे शैक्षणिक वर्ष के लिए शिक्षक की शिक्षण योजना है, जिसमें दर्शाया गया है कि इसे दैनिक योजना में कैसे शामिल किया जाए और खंड 1.2 में भाषा शिक्षण के लिए साप्ताहिक और दैनिक योजनाओं के नमूने हैं—एक ओड़िया में और दूसरा हिंदी में।

1.1 लीला की योजना

लीला राजस्थान के टोंक के पास एक गाँव के सरकारी प्राथमिक स्कूल में पहली कक्षा के बच्चों को पढ़ाती हैं। इस गाँव के लोग मुख्य रूप से *हड़ौती* बोलते हैं। इस कक्षा में बच्चों का मिश्रित समूह है, यानी पिछले 3 वर्षों में कुछ बच्चे आँगनवाड़ी जाते रहे, जबकि कुछ के लिए यह किसी भी तरह की स्कूली शिक्षा से यह पहला परिचय है। वे अपनी शिक्षण योजना बनाते और तैयारी करते समय यह बात ध्यान में रखती हैं। उनके रिकॉर्ड, वार्षिक योजना, तिमाही योजना, कम अवधि सप्ताहों, दिनों के लिए नमूना शिक्षण योजनाएँ और सीखने के प्रतिफल से संबंधित नमूना अवलोकन आगे दिए गए हैं।

1.1.1 कक्षा 1 के लिए वार्षिक शिक्षण योजना

तालिका 1

उप-कार्यक्षेत्र	सीखने के प्रतिफल
सुनकर समझना और बोलना	• भाषा की विविध विधाओं, जैसे– गीत, कविता, कहानी, वार्तालाप, संवाद, चित्र, दृश्य पर चर्चा आदि। • ध्यान से एवं धैर्यपूर्वक समझना। • परिवेश एवं संदर्भ से संबंधित सामग्री को समझना। • गति एवं हावभाव के अनुसार बोलना। • परिचित एवं नवीन परिस्थितियों में सहजता से अपने विचार प्रस्तुत करना। • प्रश्न बनाना व पूछना। • घर, परिवेश एवं विद्यालय की भाषा में तालमेल बैठाकर अपने अनुभव व्यक्त करना। • सुनी हुई बात को अपने शब्दों में कहना। • पढ़ी गई सामग्री को अपने शब्दों में कहना। • गीत, कविता, कहानी को अपने विचारों को अकेले तथा समूह में प्रस्तुत करना। • सुने हुए गीत, कविता, कहानी, वार्तालाप आदि में अपने अनुभव को जोड़कर अपनी बात कहना। • अपने अनुभव एवं कल्पनालोक की बातों को सहज ढंग से कहना। • सुनी, पढ़ी सामग्री में क्या, कौन, कब, कैसे, कहाँ जैसे प्रश्न करना एवं पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देना। • कविता, कहानी को अपनी कल्पना से आगे बढ़ाते हुए बोलना। • ध्वन्यात्मक शब्दों के साथ खेलने व गढ़ने के अवसर का लाभ उठाना, जैसे– अक्कड़-बक्कड़।
पढ़कर समझना	• अनुमान लगाकर पढ़ना एवं अर्थ खोजना। • शब्दों और वाक्यों को वर्ण जोड़कर पढ़ने की बजाय इकाई रूप समझकर पढ़ना। • अपने परिवेश में उपलब्ध सामग्री का अनुमान लगाकर समझते हुए पढ़ना। • परिवेश में उपलब्ध संदर्भों, चित्रों व छपी हुई सामग्री को पढ़कर समझना।
लेखन अभिव्यक्ति	• शब्द और वाक्य को स्पष्ट रूप से लिख पाना। • सुनी हुई विषयवस्तु अनुभवों को अपने शब्दों में लिखना। • किसी कविता या कहानी को आगे बढ़ाते हुए लिखना। • प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिखना। • सुनी हुई विषयवस्तु को यथारूप लिखना (श्रुतलेख)। • तार्किक चिंतन के आधार पर सरल रचनाएँ करना एवं अपनी बात लिखना।
व्यावहारिक व्याकरण	(वास्तविक संदर्भ में समझना एवं प्रयोग में लाना)। चंद्रबिंदु, अनुस्वार, विसर्ग, संयुक्ताक्षर, 'र' के रूप, पूर्ण-विराम, अल्प-विराम, प्रश्नवाचक चिह्न, लिंग, वचन आदि को पहचानना तथा प्रयोग में लाना।

1.1.2 तिमाही योजना

तालिका 2

<table>
<tr><th></th><th>महीना</th><th>विषयवस्तु</th><th>अधिगम उद्देश्य</th></tr>
<tr><td>1.</td><td>जुलाई</td><td>• आरंभिक गतिविधियाँ
• मेरा गाँव, हमारा शहर, पक्षी एवं जानवर, जानवर, फल, सब्ज़ी, हमारा शरीर, शरीर के अंग और चित्र पठन
• पुस्तकालय या अन्य संदर्भ पुस्तकें (कहानी)</td><td rowspan="3">• सुनकर समझना और समझकर बोलना
  • सुनी हुई सरल छोटी कविता/बालगीत/कहानी को स्पष्ट शब्दों में दोहरा सकें।
  • कविता, बालगीत को लय, गति और हाव-भाव का तालमेल करते हुए सुना सकें।
• पढ़ना और पढ़कर समझना
  • चित्रों की सहायता से चित्र के नाम की आकृति (शब्द) का पठन कर सकें।
  • चित्र की सहायता से परिचित शब्दों को पढ़कर मिलान कर सकें और परिचित शब्दों को स्वतंत्र रूप से (बिना चित्र की सहायता से) पहचान सकें एवं पढ़ सकें।
  • शब्दों से संबंधित वर्णों को पढ़ सकें।
  • आ और इ की मात्रा की अवधारणा के साथ चित्र व बिना चित्रों की सहायता से शब्दों को पढ़ सकें।
  • संबंधित तुकबंदियों को अनुमान लगाकर पढ़ सकें।
• लिखना
  • दिए गए अक्सर आने वाले शब्दों पर पेंसिल फेर सकें।
  • अक्षर/सरल शब्दों को देखकर लिख सकें।
  • चित्र की मदद से शब्दों को लिख सकें।
  • सीखे गए वर्णों से शब्द बनाकर लिख सकें।
• सृजनात्मक अभिव्यक्ति
  • चित्रों में रंग संयोजन कर सकें।
  • अपने मन से परिचित वस्तु का चित्र बना सकें।</td></tr>
<tr><td>2.</td><td>अगस्त</td><td>• कविता 'सूरज दादा'
• वर्ण पहचान—घ, र, च, ल
• वर्ण पहचान—अ, ब, म, न
• पुस्तकालय या अन्य संदर्भ पुस्तकें</td></tr>
<tr><td>3.</td><td>सितंबर</td><td>• कविता 'आसमान पर बादल'
• वर्ण पहचान— ज, ख, अ और आ की मात्रा
• कविता "तितली और कली"
• वर्ण पहचान— द, त, ई और इ की मात्रा
• पुस्तकालय या अन्य संदर्भ पुस्तकें</td></tr>
</table>

1.1.3 दो सप्ताहों के लिए गतिविधि योजना

पहले 2 सप्ताहों की शिक्षण योजना बच्चों को कक्षाओं में बैठने की आदत डालने, कक्षा के मानदंडों का पालन करने, अपने साथियों को जानने और शिक्षक के साथ-साथ स्कूल के परिवेश के साथ सहज होने के लिए 'स्कूल रेडीनेस' गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित करेगी। इससे पहले, लीला प्रत्येक सीखने के प्रतिफलों के लिए आकलन संकेतकों को परिभाषित करती है, ताकि वह कक्षा में प्रत्येक बच्चे के प्रदर्शन का अवलोकन कर सके और बच्चों की ज़रूरतों के अनुसार अपनी शिक्षण-शैली पर ध्यान केंद्रित कर सके।

(क) आकलन संकेतकों का एक उदाहरण

तालिका 3

	सीखने के प्रतिफल	आकलन संकेतक (स्तर 1 < स्तर 2 < स्तर 3)		
1.	सुनकर समझना और सोचकर बोलना विविध उद्देश्यों के लिए अपनी भाषा/स्कूल की भाषा का उपयोग करते हुए बातचीत करते हैं, जैसे— कविता, कहानी सुनाना, जानकारी के लिए प्रश्न पूछना और निजी अनुभव साझा करना।	**अपनी आपसी बातचीत में घर की भाषा का प्रयोग करते हैं**		
		स्तर 1	स्तर 2	स्तर 3
		आपसी बातचीत में घर की भाषा का उपयोग बहुत कम कर पाते हैं।	आपसी बातचीत में थोड़ा घर की भाषा का उपयोग कर पाते हैं।	आपसी बातचीत में घर की भाषा का उपयोग सहजता से कर पाते हैं।
		अपनी आपसी बातचीत में स्कूल की भाषा का प्रयोग करते हैं		
		स्तर 1	स्तर 2	स्तर 3
		आपसी बातचीत में स्कूल की भाषा का प्रयोग बहुत कम या नहीं कर पाते हैं।	आपसी बातचीत में थोड़ा स्कूल की भाषा का प्रयोग कर पाते हैं।	आपसी बातचीत में स्कूल की भाषा का प्रयोग करते हैं।
		अपनी भाषा में कविता/ कहानी सुना पाते हैं		
		स्तर 1	स्तर 2	स्तर 3
		अपनी भाषा में कविता/ कहानी बहुत कम या सुना नहीं पाते हैं।	अपनी भाषा में कविता/ कहानी सुनाने का प्रयास करते हैं लेकिन पूरी नहीं सुना पाते हैं।	अपनी भाषा में कविता/ कहानी सुना पाते हैं।
		स्कूल की भाषा में कविता/ कहानी सुना पाते हैं		
		स्तर 1	स्तर 2	स्तर 3
		नहीं सुना पाते हैं।	स्कूल की भाषा में कविता/ कहानी थोड़ा-बहुत सुना पाते हैं।	स्कूल की भाषा में कविता/कहानी सुना पाते हैं।

लीला उन सभी गतिविधियों का सारांश बनाती हैं, जिनकी वह किसी विशेष पाठ के लिए योजना बना रही हैं, ताकि वह जान सकें कि इन दो सप्ताहों में उन्हें किस सामग्री की आवश्यकता होगी।

(ख) सप्ताह की योजना का एक उदाहरण

तालिका 4

गतिविधि	उद्देश्य	अवधि
परिचय	• बच्चों से परिचय प्राप्त करना व स्वयं का परिचय देना। • बच्चों के बाद परिवारजनों का परिचय देना व लेना। • अनौपचारिक बातचीत	शिक्षण व अभ्यास हेतु कालांश कक्षा 10+1 कालांश शनिवार गतिविधि एवं बच्चों के काम के फोटो एवं वीडियो साझा करना। दिनांक 4, 5, 6, 7, 8, 9, 10, 11, 12, 13, 14, 15, 16 (2 सप्ताह) 60 मिनट/दिन 20 मिनट सुनकर समझना और समझकर बोलना 20 मिनट पठन 20 मिनट लेखन
बालगीत व कविताएँ गाना	• छोटे परिवेशीय गीत, बालगीत व कविताएँ हाव-भाव के साथ गाना।	
कहानी सुनना–सुनाना	• बच्चों को मौखिक कहानी सुनाना व सुनना। • चित्र आधारित कहानियाँ सुनाना व उन पर चर्चा करना।	
हाथ का संतुलन	• खड़ी-आड़ी, घुमावदार डॉटेड लाइन/चित्र पर पेंसिल या रंग फेरना/मिलान करना। • स्वतंत्र रूप से चित्र बनाकर उसमें रंग भरना।	
ध्वनि पहचान	• शांत बैठकर आस-पास हो रही आवाजों को सुनना और बताना। • अपने नाम में आने वाली अंतिम ध्वनि की पहचान करना व उस ध्वनि से बनने वाले दो-दो शब्द बताना। • अपने नाम में आने वाले अक्षरों, ध्वनियों को अक्षरों में तोड़-तोड़ कर बोलना और उनकी आवाजों को गिनते हुए जानना कि उनके नाम में कितनी ध्वनियाँ हैं? इसी प्रकार से अन्य शब्दों को ध्वनियों में तोड़ते हुए पहचान करना।	
अनुमान लगाना	• एक कपड़े के नीचे या किसी कपड़े के थैले में रखी कुछ खास वस्तुओं को छूकर अनुमान से उनके नाम बताना। • जो छोटे बालगीत और कविताएँ कक्षा में गाए जा चुके हैं, उन्हें एक शीट पर लिखना और बच्चों के सामने उनके शब्दों पर अँगुली रख-रखकर हमारे द्वारा पढ़ना, फिर बच्चों को भी इसी प्रकार से अनुमान के द्वारा कविताएँ पढ़ने के लिए प्रेरित करना।	

अब अंत में, हर दिन से पहले वे पूरे दिन के लिए विस्तृत गतिविधि योजना तैयार करती हैं। इस योजना में वे पिछले दिन से टिप्पणियों को शामिल करने का प्रयास करती हैं।

(ग) मेरी दैनिक गतिविधि योजना का एक उदाहरण

तालिका 5

दिन / अवधि	गतिविधियों का विवरण	उपयोग की गई सामग्री	टिप्पणियाँ
दिन 10 60 मिनट	• खेल से शुरुआत "चूहा दौड़, बिल्ली आई नेता नेता चाल बदल" • प्रश्नोत्तर संवाद • कहानी वाचन हाव-भाव एवं चित्रों के साथ कहानी सुनाना • प्रमुख शब्द बोर्ड पर लिखना • कहानी से संबंधित प्रश्न पूछना *कहानी में कौन-कौन हैं?* *बंदर कहाँ बैठा हैं ?* *बंदर की पूँछ कैसी हैं?* *पूँछ को झूला किसने समझा?* *क्या आपने बंदर और गिलहरी कहीं देखे हैं तो कहाँ?* • कहानी से संबंधित दो-तीन लाइन बोर्ड पर लिखना फिर हमारे द्वारा अँगुली फेरते हुए पढ़ना। • बच्चों को अँगुली फेरते हुए पढ़ने के अवसर देना। • इसके बाद नीचे दी गई, वर्कशीट दी जाए		कविता, राम ने अँगुली फेरते हुए पढ़ने का अच्छा अभ्यास किया और साथ ही किताब पढ़ने को लेकर बेहद उत्सुक लगे और उसे पढ़ने की इच्छा व्यक्त की। कविता ने एक कहानी पूरी पढ़ी और साथ ही और किताब लाने को कहा। आगामी योजना के साथ-साथ पुस्तकालय से चित्रकथा एवं स्तर एक की किताबों का चयन कर कक्षा पुस्तकालय से परिचय कराते हुए पुन: शुरुआत होगी।

हैलो दोस्तो! अपने बारे में कुछ बताओ, कुछ लिखो, चित्र बनाओ।

मेरा नाम विशाल है।
मेरे गाँव का नाम सोयला है।
मैं दूसरी कक्षा में पढ़ता हूँ।
मेरे पापा का नाम श्री रमेश है।
मेरी मम्मी का नाम श्रीमती भावना है।

मेरा नाम .... है।
मेरे गाँव का नाम .... है।
मैं .... कक्षा में पढ़ता हूँ।
मेरे पापा का नाम .... है।
मेरी मम्मी का नाम .... है।

अपनी पसंद / नापसंद के बारे में चित्र भी बना सकते हैं और लिख भी सकते हैं

(घ) दैनिक अवलोकन के कुछ उदाहरण

तालिका 6

	नाम	मुखर/शर्मीला	भागीदारी/सहभागिता/ अन्यमनस्कता विकर्षण	चित्र के साथ अक्षरों की पहचान	हस्त संतुलन/ स्क्रिबलिंग
1.	अमित	मुखर	शामिल रहता है और सहभागिता करता है। निर्देशों को याद दिलाने की आवश्यकता है।	कुछ	हाँ उचित लेखन तथा एक शब्द और दूसरे शब्द के बीच उचित अंतर का अभ्यास करने की आवश्यकता है।
2.	नीता	मुखर	शामिल रहती है और सहभागिता करती है। निर्देशों को याद दिलाने की जरूरत है।	कुछ	हाँ समय पर लिखने के लिए और नियमित कार्य करने के लिए गति की आवश्यकता है।
3.	रानी	शर्मीली (नया प्रवेश)	शामिल रहती है और सहभागिता करती है।	मदद चाहिए	हिंदी नोटबुक में शब्दों को दो पंक्तियों के बीच लिखने की आवश्यकता है।

1.2 भाषा शिक्षण के लिए साप्ताहिक/दैनिक योजना

ओड़िया और हिंदी में भाषा शिक्षण के लिए 15 सप्ताह की योजना के उदाहरण नीचे दिए गए हैं। शिक्षक की योजना में साप्ताहिक योजना शामिल होती है, उसके बाद गतिविधियों के कुछ उदाहरणों के साथ एक दिन की योजना होती है।

1.2.1 ओड़िया भाषा शिक्षण की योजना

(क) साप्ताहिक योजना

तालिका 1

ଦକ୍ଷତା	ଶିକ୍ଷଣ କାର୍ଯ୍ୟ	୧ମ ଦିବସ	୨ୟ ଦିବସ	୩ୟ ଦିବସ	୪ର୍ଥ ଦିବସ	୫ମ ଦିବସ	୬ଷ୍ଠ ଦିବସ
ମୌଖିକ ଭାଷା ବିକାଶ (୪୦ -୪୫ମିନିଟ୍)	କବିତା ଆବୃତ୍ତି	✓	✓	✓	✓	✓	✓
	ଗଳ୍ପ କଥନ ଓ ଗଳ୍ପ ଆଧାରିତ ଆଲୋଚନା	✓			✓		
	ସାମାଜିକ ଓ ଆବେଗିକ ବିକାଶ(ଖେଳ/ ଶିକ୍ଷଣକାର୍ଯ୍ୟ)	✓			✓		
	ମୌଖିକ ଭାଷା ଆଧାରିତ ଖେଳ ଓ ଓଡିଆ ଶବ୍ଦାବଳୀ ବିକାଶ ପାଇଁ କାର୍ଯ୍ୟ					✓	✓
	ଶିକ୍ଷକଙ୍କ ଦ୍ଵାରା ପାଠ୍ୟ ପୁସ୍ତିକରୁ ଗଳ୍ପ ପଠନ ଓ ବିସ୍ତୃତ ଆଲୋଚନା (ଶୁଣିକରି ବୁଝିବା)					✓	✓
	ଚିତ୍ର ଓ ଅନୁଭୂତି ଆଧାରିତ କାର୍ଯ୍ୟ		✓	✓			
	ମୌଖିକ ଭାଷା ସମ୍ପର୍କିତ ଲିଖନ	✓	✓	✓	✓	✓	✓
ଡିକୋଡିଂ (୪୦-୪୫ ମିନିଟ୍)	ଧ୍ଵନି ସଚେତନତା (ସପ୍ତାହ ୧ ରୁ ୧୨)	✓	✓	✓	✓	✓	✓
	ବର୍ଣ୍ଣ ଓ ଅକ୍ଷର ଚିହ୍ନଟ କାର୍ଯ୍ୟ	✓	✓	✓	✓		
	ଶବ୍ଦ ଓ ବାକ୍ୟ ପଠନ	✓	✓	✓	✓		
	କାର୍ଯ୍ୟପୁସ୍ତିକାର ବ୍ୟବହାର	✓	✓	✓	✓	✓	✓
	ମାନ ନିର୍ଦ୍ଧାରଣ ଓ ପୁନରାଲୋଚନା					✓	✓

ପଠନ (୪୦-୪୫ ମିନିଟ୍)	ପିଲାଙ୍କ ଦ୍ଵାରା ବହିର ପୃଷ୍ଠା ଓଲଟାଇବା ଓ ଅଭିନୟ ପଠନ					✓	✓
	ବ୍ୟକ୍ତିଗତ ପଠନ ନିମନ୍ତେ ପିଲାମାନଙ୍କ ଦ୍ଵାରା ପର୍ଯ୍ୟାୟ ଭିତ୍ତିକ ଗପ ଓ ଅନ୍ୟାନ୍ୟ ବହି ସହ ପରିଚୟ ଓ ଅଭିନୟ ପଠନ					✓	✓
	ପିଲାଙ୍କୁ ବଡ଼ ବହିରୁ କାହାଣୀ ପଢିକରି ଶୁଣାଇବା ଓ ତା' ବିଷୟରେ ଆଲୋଚନା କରିବା	✓	✓	✓	✓		
	ପଠନ ପୁସ୍ତିକା ସହ ସାଙ୍କେତିକ ଶବ୍ଦ ପଠନ ଓ ପ୍ରାରମ୍ଭିକ ପଠନ	✓	✓	✓	✓	✓	✓

(ख) 7वें सप्ताह के पहले दिन की योजना

तालिका 2

ମୌଖିକ ଭାଷା ବିକାଶ	
ଶିକ୍ଷଣ କାର୍ଯ୍ୟ -ଗଳ୍ପ କଥନ-	**ସମୟ – ୪୦-୪୫ ମିନିଟ**
ପ୍ରସ୍ତୁତି ଓ ସାମଗ୍ରୀ:	ଶିକ୍ଷକଙ୍କ ପାଇଁ ସୂଚନା:
ଗଳ୍ପ ଓ କବିତା ମାଳା ବହି –"ଗୁଣ୍ଡୁଚି ଖେଳିଲା ଦୋଳି" ବହିରୁ ଗପ ପଢି ଶୁଣାଇବା	• ଗପ କହିବବେଳେ ସ୍ଵରର ଉତ୍ଥାନ ପତନ କରି କହିବେ । • ଗପଟିକୁ ପିଲାଙ୍କ ମାତୃଭାଷାରେ କହି ଶୁଣାଇବେ । • ପିଲାଙ୍କୁ ଗପରେ ଥିବା କଠିନ ଶବ୍ଦର ଅର୍ଥ ବୁଝାଇବେ । • ଗଳ୍ପ ସମ୍ପର୍କରେ ପିଲାଙ୍କ ସହ ଆଲୋଚନା କରିବେ ।
ପ୍ରକ୍ରିୟା :	
• ଶିକ୍ଷକ ପିଲାମନଙ୍କୁ ଅର୍ଦ୍ଧବୃତ୍ତାକାର ରେ ଛିଡା କରାଇବା । • ଶିକ୍ଷକ ମଝିରେ ବସିବେ, ଯେପରି ସମସ୍ତ ପିଲା ତାଙ୍କୁ ଦେଖିପାରୁଥିବେ । • ଶିକ୍ଷକ ଗପଟିକୁ ମନରୁ କହିବେ ,(ବହି ଧରି ପଢିବେ ନହିଁ) । • ଶିକ୍ଷକ କହିବାବେଳେ ଚରିତ୍ର ଯେପରି କହୁଛି, ସେହିପରି ଚରିତ୍ର ଭଳି କହିବେ । ଯଥା -ମାଙ୍କଡ –"ଭଉଣୀ ତଳେ ପଡିଗଲା କି?"ଗୁଣ୍ଡୁଚି -ନା ନା... । • ପିଲାମାନେ ପ୍ରଥମେ ଶୁଣିବେ (୨ ଥର) । • ତାପରେ ପିଲାମାନେ ଶିକ୍ଷକଙ୍କ ସହ ଅଭିନୟ କରି ଗପଟିକୁ କହିବେ । • ଏହିପରି ୩ /୪ ରାଉଣ୍ଡ ଗଳ୍ପ କଥନ ଚାଲିବ । • ତାପରେ ଶିକ୍ଷକ ଦଳରେ ବିଭକ୍ତ କରିବେ । • ପ୍ରତି ପିଲା ତା'ର ସାଙ୍ଗମାନଙ୍କୁ କହିବ । • ପ୍ରତି ଦଳରେ କହିବ ବେଳେ ଶିକ୍ଷକ ତତ୍ତ୍ଵାବଧାନ କରିବେ । • ଗଳ୍ପରେ ଥିବା ଚିତ୍ର ଆଙ୍କି ରଙ୍ଗ ଦେବେ ।	
ଶିକ୍ଷଣ ପ୍ରକ୍ରିୟାର ସମୀକ୍ଷା: -	
• ପ୍ରତି ପିଲା ଗପଟିକୁ ନିଜ ଭାଷାରେ କହି ପାରିଲେ କି ନାହିଁ ଜାଣିବେ । • ଯେଉଁ ପିଲା କହି ନାହାନ୍ତି, ପରବର୍ତ୍ତୀ ଶ୍ରେଣୀରେ ସେହି ପିଲାଙ୍କୁ ଅଧିକ ସୁଯୋଗ ଓ ଧ୍ୟାନ ଦେବେ ।	

तालिका 3

ଡିକୋଡିଙ୍ଗ	
ଶିକ୍ଷଣ କାର୍ଯ୍ୟ : 'ଚ' ବର୍ଣ୍ଣ ଚିହ୍ନଟିକରଣ	୪୦-୪୫ ମିନିଟ୍
ପ୍ରସ୍ତୁତି ଓ ସାମଗ୍ରୀ	ଶିକ୍ଷକଙ୍କ ପାଇଁ ସୂଚନା
• କଳାପଟା, ଚକଖଡ଼ି, କାର୍ଯ୍ୟ ପୁସ୍ତିକା • 'ଚ' ରୁ ଆରମ୍ଭ ହୋଇଥିବା କିଛି ସରଳ ଶବ୍ଦର ସୂଚୀ	• କାର୍ଯ୍ୟପୁସ୍ତିକାରେ କିପରି କାର୍ଯ୍ୟ କରାଯିବ, ପିଲାମାନଙ୍କୁ ତାହାର ସ୍ୱଷ୍ଟ ସୂଚନା ଉଦହରଣ ସହ ଦିଅନ୍ତୁ । • ପିଲାଙ୍କୁ ପରସ୍ପର ମଧ୍ୟରେ କାର୍ଯ୍ୟ କରିବାର ଯଥେଷ୍ଟ ସୁଯୋଗ ଦିଅନ୍ତୁ ।
'ଚ' ବର୍ଣ୍ଣ ଚିହ୍ନଟିକରଣ	
• ଶିକ୍ଷଣ କାର୍ଯ୍ୟ ଆରମ୍ଭରେ କୌଣସି ଏକ ସ୍ଥାନୀୟ କବିତାକୁ ଭାବଭଙ୍ଗୀ ସହ ଶୁଣାନ୍ତୁ । ଏଥିପାଇଁ ୫-୭ ମିନିଟ୍ ସମୟ ଦିଅନ୍ତୁ । • 'ଚ' ରୁ ବନୁଥିବା କିଛି ପରିଚିତ ଶବ୍ଦ ଯେପରି (ଚପଲ)ର ଧ୍ୱନିକୁ ଭାଙ୍ଗି-ଯୋଡ଼ି କୁହନ୍ତୁ । ଉଦାହରଣ - (ଚପଲ - /ଚ/ /ପ/ /ଲ/) (/ଚ/ /ପ/ /ଲ/ - ଚପଲ) ଓ ପିଲାଙ୍କ ଧ୍ୟାନ ପ୍ରଥମ ଧ୍ୱନି ଉପରେ କେନ୍ଦ୍ରିତ କରନ୍ତୁ । ୨-୩ ଟି ଆଞ୍ଚଳିକ ଶବ୍ଦ ସହ ଏହାକୁ କରନ୍ତୁ । • 'ଚପଲ' କୁ ବୋର୍ଡ଼ରେ/କଳାପଟାରେ ଲେଖି ତାହାର ପ୍ରଥମ ଧ୍ୱନିର ପ୍ରତୀକ ଉପରେ ଗୋଲ ବୁଲାନ୍ତୁ । • ତାପରେ 'ଚ' କୁ କଳାପଟାରେ ବଡ଼ ଆକାରରେ ଲେଖନ୍ତୁ ଓ ୩-୪ ଥର ଏହାର ଧ୍ୱନିକୁ ଉଚ୍ଚାରଣ କରନ୍ତୁ । ପିଲାଙ୍କୁ 'ଚ' ଶବ୍ଦରୁ ଆରମ୍ଭ ହେଉଥିବା କିଛି ଶବ୍ଦ ପଚାରନ୍ତୁ । ଏଥିପାଇଁ ଶ୍ରେଣୀରେ ସେହି ପିଲାଙ୍କୁ ହାତ ଉଠାଇବା ପାଇଁ ମଧ୍ୟ କହିପାରନ୍ତି ଯାହାଙ୍କ ନାମ 'ଚ' ରୁ ଆରମ୍ଭ । ଏହି ଶବ୍ଦଗୁଡ଼ିକ କଳାପଟାରେ ଲେଖନ୍ତୁ ଓ କିଛି ଅନ୍ୟ ପିଲାଙ୍କୁ ଡାକି 'ଚ' ଅକ୍ଷରରେ ଗୋଲ ବୁଲାନ୍ତୁ । • ପିଲାଙ୍କୁ ଶ୍ରେଣୀ ଗୃହରେ ପ୍ରଦର୍ଶିତ ଚାର୍ଟ ଓ ଛାପା ସାମଗ୍ରୀ ମଧ୍ୟରୁ 'ଚ' ଖୋଜିବାକୁ କୁହନ୍ତୁ । • ତାପରେ ୫-୭ ପିଲାଙ୍କର ଛୋଟ ଦଳ ବନାନ୍ତୁ । ଏକ (କାହାଣୀ) ବା ପାଠ୍ୟପୁସ୍ତକରୁ 'ଚ' ବର୍ଣ୍ଣ ଖୋଜି ଗୋଲ ବୁଲାଇବାକୁ କୁହନ୍ତୁ । ପିଲାମାନେ କାର୍ଯ୍ୟ କରୁଥିବା ସମୟରେ ଶିକ୍ଷକ ବୁଲିବୁଲି ସମସ୍ତଙ୍କୁ ସହାୟତା ପ୍ରଦାନ କରିବେ । • କାର୍ଯ୍ୟପୁସ୍ତିକାରୁ ଭିନ୍ନଭିନ୍ନ ଉପାୟରେ 'ଚ' ବର୍ଣ୍ଣ ଲେଖାଇବାର ଅଭ୍ୟାସ କରାନ୍ତୁ । ଯେପରି ନିଜ ଅଙ୍ଗୁଳି, ବାୟୁ, ବାଲି ଦ୍ୱାରା ।	
ଲିଖନ	୧୦ – ୧୫ ମିନିଟ୍
• ସମସ୍ତ ପିଲାଙ୍କୁ କାର୍ଯ୍ୟପୁସ୍ତିକାର କାର୍ଯ୍ୟଫର୍ଦ୍ଦ ସଂଖ୍ୟା (___) କରିବାକୁ କୁହନ୍ତୁ ଆବଶ୍ୟକ ମୁତାବକ ସାହାଯ୍ୟ ପ୍ରଦାନ କରନ୍ତୁ ।	• ଶିକ୍ଷକ ପିଲାଙ୍କ କାର୍ଯ୍ୟର ନିରୀକ୍ଷଣ ବୁଲିବୁଲି କରିବେ ।
ଶିକ୍ଷଣ ପ୍ରକ୍ରିୟାର ସମୀକ୍ଷା :	
• କ'ଣ ସବୁପିଲାମାନେ କାର୍ଯ୍ୟପୁସ୍ତିକାରେ ଦିଆଯାଇଥିବା କାର୍ଯ୍ୟକୁ କରିଛନ୍ତି । • ଯେଉଁ ପିଲାମାନଙ୍କୁ କାର୍ଯ୍ୟ କରିବାରେ ସମସ୍ୟା ହେଲା, ସେମାନଙ୍କୁ ଚିହ୍ନିତ କରି, ସେମାନଙ୍କ ସହ କଥାବାର୍ତ୍ତା ଓ ପ୍ରୋତ୍ସାହନ ଦିଅନ୍ତୁ ।	

1.2.2 हिंदी भाषा शिक्षण की योजना

(क) साप्ताहिक योजना

तालिका 4

सप्ताह			
दिन	मौखिक भाषा विकास एवं संबंधित लेखन (25–30 मिनट)	डिकोडिंग एवं संबंधित लेखन (40–45 मिनट)	दिन
1.	• कविता/बालगीत 'तरिया के दर्पण' • मौखिक रूप से कहानी सुनाना–कछुआ और खरगोश (तरिया के दर्पण) • चित्र बनाना	• 'ग' वर्ण पर कार्य • डिकोडिंग का खेल • अभ्यास पुस्तिका पर कार्य–पाठ-37	• बड़ी पुस्तक से कहानी पढ़कर सुनाना व सामान्य चर्चा– 'पाँच चिया गिन, बाज़ार'
2.	• कविता/बालगीत (पाठ्यपुस्तक पाठ-3) • चित्र चार्ट पर चर्चा– पार्क • स्वतंत्र लेखन	• 'ग' वर्ण पर कार्य • डिकोडिंग का खेल • अभ्यास पुस्तिका पर कार्य–पाठ-38	• बड़ी पुस्तक से कहानी पढ़कर सुनाना व विस्तृत चर्चा– 'पाँच चिया गिन, बाज़ार'
3.	• कविता/बालगीत (तरिया के दर्पण) • चित्र चार्ट पर चर्चा–पार्क • स्वतंत्र लेखन	• 'म' वर्ण पर कार्य • डिकोडिंग का खेल • अभ्यास पुस्तिका पर कार्य–पाठ-39	• बड़ी पुस्तक से साझा पठन– 'पाँच चिया गिन, बाज़ार'
4.	• कविता/गाना–जूँ (कविता पोस्टर) • कहानी पढ़कर सुनाना (पुस्तकालय की किताबें) • साझा लेखन	• 'म' वर्ण पर कार्य • डिकोडिंग का खेल • अभ्यास पुस्तिका पर कार्य–पाठ-40	• शब्द चिल (लोगोग्राफिक पठन)– बड़ी पुस्तक (पाँच चिया गिन, बाज़ार)
5.	• कविता/गाना–जूँ (कविता पोस्टर) • सामाजिक एवं भावनात्मक विकास की गतिविधि-7 • कविता में आए मुख्य शब्दों को लिखना	• अभ्यास पुस्तिका पर कार्य–पाठ-41 (साप्ताहिक पुनरावृत्ति) • डिकोडिंग का खेल	• बच्चों को कहानी की किताबें उलटने-पलटने के लिए देना और उन पर चर्चा करना।

6	• कविता/बालगीत (तरिया के दर्पण) • मौखिक खेल गतिविधि-5– अजीब कहानी हमने बनाई • पाठ्यपुस्तक से गतिविधि	• अभ्यास पुस्तिका–'मैंने सीख लिया-1' (साप्ताहिक आकलन) • सीखने में पीछे छूटे बच्चों के साथ योजनाबद्ध तरीके से समूह में कार्य)	• बच्चों को कहानी की किताबें उलटने-पलटने के लिए देना और उन पर चर्चा करना।
अभ्यास पुस्तिका में सप्ताह के अंत में दिए गए 'स्वतंत्र कार्य' पत्रक पर कार्य।			

(ख) सप्ताह 7 के पहले दिन की योजना

खंड–1

कहानी सुनकर, समझना और सरल प्रश्नों के उत्तर देना

तालिका 5

मौखिक भाषा (25–30 मिनट)	
तैयारी और सामग्री	**शिक्षक के लिए मुख्य बातें**
• अद्दक-बद्दक (तरिया के दर्पण) • कहानी— 'कछुआ और खरगोश' (तरिया के दर्पण) • कहानी पर खुले और बंद छोर के प्रश्नों की सूची पहले से तैयार रखें।	• सभी बच्चों को गतिविधि में शामिल करें। • बच्चों को अपनी भाषा में अलग-अलग श्रेणियों से जुड़े नामों को बताने के लिए प्रोत्साहित करें। • कक्षा का परिवेश रोचक बनाए रखें।
कविता पर कार्य– अद्दक-बद्दक	
• शिक्षक पहले बच्चों को कविता लय के साथ गाकर सुनाएँ। • शिक्षक कविता गाएँ व बच्चों को साथ दोहराने के लिए कहें। • ऐसा 2–3 बार करें, ताकि बच्चे कविता की लय और शब्दों को अच्छे से पकड़ पाएँ। • सुनाई गई कविता के विषय से जुड़ी कोई और कविता की याद दिलाएँ और उन्हें सुनाने को कहें। अगर कोई ऐसी कविता नहीं है तो पिछली सुनी हुई कविता उनसे सुनें।	
मौखिक कहानी सुनाना	
• अब बच्चों को गोल घेरे में बैठाएँ और शिक्षक स्वयं भी बच्चों के साथ बैठ जाएँ और कहें–आज मैं आप सभी को एक कहानी सुनाऊँगा/सुनाऊँगी, जिसका नाम है–'कछुआ और खरगोश' अब बच्चों से कहानी के नाम से अनुमान लगाने के लिए कहें, जैसे–बच्चों के अनुसार कहानी में कौन-कौन होगा? क्या हुआ होगा? आदि। • अब शिक्षक 'कछुआ और खरगोश' कहानी को अपनी आवाज़ में उतार-चढ़ाव और हाव-भाव का उपयोग करते हुए कहानी को मौखिक रूप से सुनाएँ। • कहानी सुनाते समय अधिक चर्चा करने से बचें, बीच-बीच में 1–2 अनुमान लगाने वाले प्रश्नों को पूछकर यह सुनिश्चित करें कि बच्चों का पूरा ध्यान सुनने पर है या नहीं, जैसे क्या खरगोश जीत जाएगा? खरगोश क्यों बीच में रुका होगा? अब कछुआ क्या करेगा? आदि।	

- कहानी सुनाने के दौरान यदि कोई कठिन या अनजान शब्द आता है तो बच्चों को उनका अर्थ संदर्भ के साथ समझाएँ, जैसे–जीत, गति, रेस आदि। कहानी सुनाते समय या चर्चा के लिए छत्तीसगढ़ी भाषा का ही प्रयोग करें।
- कहानी सुनाने के बाद बच्चों से कहानी से संबंधित बंद छोर (तथ्यात्मक) और खुले छोर (उच्च स्तरीय चिंतन) दोनों तरह के प्रश्न पूछें, जैसे–कहानी में कौन-कौन था? दौड़ लगाने की बात किसने कही थी? दौड़ में जीत किसकी हुई? अगर खरगोश आराम नहीं करता तो कौन दौड़ जीतता? कहानी में कछुए की जगह अगर लोमड़ी होती तो कौन दौड़ जीतता? इस कहानी को आगे कैसे बढ़ाया जा सकता है? आदि।

लेखन कार्य

- सुनाई गई कहानी पर बच्चों को चित्र बनाने को कहें।
- बच्चों द्वारा बनाए गए चित्र सभी को दिखाने और उसके बारे में बताने को कहें।

शिक्षण प्रक्रिया की समीक्षा

- क्या सभी बच्चों ने इस गतिविधि में प्रतिभाग किया?
- यदि नहीं, तो उन बच्चों को पहचानकर, अगले खंड में उन्हें थोड़े और मौके दें और उन्हें प्रतिभागिता करने के लिए प्रोत्साहित करें।

खंड–2

'ग' वर्ण पहचानना और लिख पाना

तालिका 6

डिकोडिंग (40–45 मिनट)

तैयारी और सामग्री	शिक्षक के लिए मुख्य बातें
• बोर्ड, चॉक, बच्चों का नाम, चार्ट। • 'ग' से शुरू होने वाले कुछ सरल शब्दों की सूची बनाकर रख लें।	• अभ्यास पुस्तिका पर कार्य करने के लिए बच्चों को उदाहरण सहित निर्देशित करें। • बच्चों को आपस में मिलकर कार्य करने के पर्याप्त मौके दें।

'ग' वर्ण की पहचान

- कक्षा की शुरुआत स्थानीय कविता या गीत को हाव-भाव के साथ गाकर करें। इसमें सभी बच्चों को हिस्सा लेने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करें। इस खेल गतिविधि के लिए 5–7 मिनट का ही समय दें।
- बच्चों को गोल घेरे में बैठाएँ और शिक्षक स्वयं भी बच्चों के साथ बैठ जाएँ।
- शिक्षक बच्चों के साथ किसी परिचित शब्द, जैसे– गमला को मौखिक रूप से तोड़कर-जोड़कर बोलें, जैसे– गमला- 'ग', 'म', 'ला' और 'ग', 'म', 'ला'– गमला। अब बच्चों से शब्द की पहली आवाज़ 'ग' पहचानने को कहें। इस प्रक्रिया को 3–4 सरल एवम परिचित शब्दों के साथ करें।
- अब 'गमला' शब्द को बोर्ड पर लिखें और उसकी पहली आवाज़ के प्रतीक 'ग' पर घेरा लगाएँ और बच्चों को 'ग' का उच्चारण करके बताएँ।
- फिर बच्चों को 'ग' वर्ण का कार्ड दिखाएँ और 3–4 बार 'ग' वर्ण का उच्चारण करें, अब बच्चों से 'ग' वर्ण से शुरू होने वाले अन्य शब्द या नाम बताने को कहें और आप उन्हें बोर्ड पर लिखते जाएँ, जैसे– गमला, गर्मी, गधा, गला आदि। शिक्षक लिखे हुए सभी शब्दों को बच्चों के साथ मिलकर पढ़ें और उनकी पहली आवाज़ के प्रतीक 'ग' वर्ण पर गोला लगवाएँ।

- बच्चों को 'ग' वर्ण कक्षा में प्रदर्शित सामग्री और पाठ्यपुस्तक से ढूँढ़कर बताने को कहें, शिक्षक पाठ्यपुस्तक में 'ग' वर्ण पर गोला लगाने को भी कह सकते हैं।
- बच्चों को डिकोडिंग के खेल के माध्यम से 'ग' वर्ण लिखने का अभ्यास करवाएँ। सभी बच्चों को गोल घेरे में खड़े होने को कहें। अब शिक्षक हवा में अँगुली से 'ग' वर्ण लिखें और सभी बच्चों को दोहराने के लिए कहें। अब यही प्रक्रिया अलग-अलग प्रकार से करें और करवाएँ, जैसे–'ग' को पैर से, सिर से, कंधे से, कमर से, कोहनी से, घुटने से, ज़मीन पर चलकर आदि लिखने का प्रयास करवाएँ।
- अंत में, 'ग' वर्ण लेखन से संबंधित अभ्यास कार्य को अभ्यास पुस्तिका में पूरा करवाएँ।
- सभी बच्चों को अभ्यास पुस्तिका से पाठ-37 पर कार्य करने को कहें और आवश्यकता अनुसार उनकी सहायता करें।
- आप बच्चों के कार्य का अवलोकन घूम-घूमकर करें।

शिक्षण प्रक्रिया की समीक्षा

- क्या सभी बच्चों ने अभ्यास पुस्तिका का कार्य पूरी तरह से किया है?
- जिन बच्चों को कार्य करने में परेशानी हो रही है, उनकी पहचान करें, उनसे बातचीत करें और कार्य पूरा करने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करें।

खंड–3

बड़ी पुस्तक की कहानी सुनकर समझना

तालिका 7

पठन (15–20 मिनट)	
तैयारी और सामग्री	**शिक्षक के लिए मुख्य बातें**
• बड़ी पुस्तक—'पाँच चिया गिन, बाज़ार' • शिक्षक बड़ी पुस्तक की कहानी को पहले से पढ़ लें।	• सभी बच्चों को गतिविधि में शामिल करें। • सभी बच्चों की बातों को ध्यान से सुनें और सकारात्मक प्रतिक्रिया दें।
बड़ी पुस्तक पर सामान्य चर्चा	
• कालांश की शुरुआत छोटी कविता से करें और बच्चों को चलने-फिरने और उठने-बैठने के मौके दें। • बड़ी पुस्तक का मुख्य पृष्ठ सभी बच्चों को दिखाएँ और बड़ी पुस्तक के मुख्य पृष्ठ में दिख रहे चित्र और कहानी के शीर्षक के बारे में बातचीत करें एवं अनुमान लगाने को कहें। • बड़ी पुस्तक के सभी पृष्ठों को एक-एक करके पलटते जाएँ और बच्चों से पृष्ठों पर बने चित्रों के आधार पर कहानी का अनुमान लगाने को कहें। बड़ी पुस्तक का आदर्श रूप से पठन कम से कम 2–3 बार करें। • बच्चों को यह भी समझने का मौका दें कि इस किताब के हर पृष्ठ पर जो चित्र बने हैं, वहाँ कहानी में क्या हो रहा है, उससे संबंधित है। अंत में, बच्चों ने चित्रों को देखकर जो अनुमान लगाए, उन पर बातचीत करें।	
शिक्षण प्रक्रिया की समीक्षा	
• क्या सभी बच्चों ने कहानी समझी है? • यदि नहीं, तो ऐसे बच्चों की पहचान करें, तब उन पर थोड़ा अधिक ध्यान दें।	

दिन 2, 3 और 4 पर दैनिक योजना के अनुसार इसी तरह कार्य करें।

2. कक्षा-कक्ष में

इस खंड में कक्षा-कक्ष में चल रहे दृश्य को प्रस्तुत किया गया है। हम उस दिन का वर्णन करने वाली एक 'शिक्षक पत्रिका' के एक अंश से शुरू करते हैं और फिर आगे बढ़ते हैं कि शिक्षक विभिन्न गतिविधियों को कैसे चुनते और संचालित करते हैं।

2.1 शिक्षक-विद्यार्थी संबंध— दीपा की डायरी

यह नोट एक शिक्षिका, दीपा की डायरी से है। यह उन तरीकों पर प्रकाश डालता है जिसमें एक शिक्षिका अपनी कक्षा में सीखने की जगह बनाती व बच्चों का लालन-पालन करती है। वह पालन-पोषण करने वाली शिक्षिका, परामर्शदाता और मित्र जैसी कई भूमिकाएँ निभाती है।

----

29 जुलाई, 2014

आज वही दिन था, जब मुझे लगा कि एक शिक्षक के पास कम से कम 4 जोड़ी हाथ और 3 जोड़ी आँखें होनी चाहिए! दिन की शुरुआत हमेशा की तरह बच्चों के साथ एक गोल घेरे में आकर गाने के साथ हुई थी। मैंने बुनियादी संख्यात्मक गतिविधियों को निरंतर रखने की योजना बनाई थी जो हमने कल ब्लॉकों के साथ की थी। यह अच्छी गतिविधि थी, बच्चों ने इसे पूरी तरह से पसंद किया और चूँकि उनकी इस बारे में यादें ताज़ा थीं, इसलिए मुझे अगले स्तर की अवधारणाओं को पढ़ाने के लिए इसे जारी रखने की उम्मीद थी। जैसे ही हम अपने घेरा समय के लिए तैयार होने वाले थे, मैंने देखा कि अरुण बाहर निकल रहा है और अपने मुँह के बल गिर गया है। मैं उसकी तरफ़ दौड़ी और उसे उठा लिया। वह फूट-फूट कर रोने लगा था। उसकी कोहनी छिल गई थी और खून बहने लगा था। उसने मुझे कसकर पकड़ रखा था। मैंने उसे अपनी बाँहों में उठाया, उसे शांत करने की कोशिश की और घाव को साफ़ करने और मरहम लगाने के लिए उसे अंदर ले गई। मैंने बड़े बच्चों में से एक, लक्ष्मी से कक्षा में रखे पानी के बर्तन से थोड़ा पानी लाने के लिए कहा, ताकि उसे पानी पिला सकूँ। प्राथमिक चिकित्सा पेटी अलमारी में रखी थी। मैंने अरुण को नीचे बैठाया, प्राथमिक चिकित्सा किट ली, उसके घाव को ध्यान से साफ़ किया, पट्टी बाँधी और उसे अपनी गोद में बैठा लिया। आखिरकार उसने रोना बंद कर दिया। दूसरे बच्चे कनखियों से मुझे देख रहे थे। मैंने मन-ही-मन सोचा, आज का दिन चला गया और कक्षा आज नहीं चल सकेगी। फिर भी मैंने कोशिश की। अरुण को सँभालते हुए, मैंने जिस गतिविधि की योजना कक्षा के लिए बनाई थी, उसके लिए विद्यार्थियों को वापस बुलाया। मुझे आश्चर्य हुआ। बहुत जल्दी प्रतिक्रिया देते हुए वे अपने समूहों में वापस चले गए। उन्होंने विभिन्न प्रकार और ब्लॉक के रंगों को वर्गीकृत करना शुरू कर दिया। अरुण अभी भी मेरी बाँहों में था, मैं उनके बीच जाकर बैठ गई और उन्हें रंगों के अँग्रेज़ी नामों से परिचित कराना शुरू कर दिया। हमने चार रंगों के नाम सीखे— लाल, पीला, नीला और हरा। अरुण अब पहले से अधिक शांत था और मेरे पास से जाने के लिए तैयार था। मैंने उसे 'खिलौनों का कोना' के पास बैठाया। मैं 'घेरा समय गतिविधि' (जो अंतहीन की तरह महसूस हो रही थी) को समाप्त करने वाली थी, तभी मैंने देखा कि हर्ष और शोभा, लाल ब्लॉक को किस ढेर पर जाना चाहिए, पर बहस कर रहे हैं। मैं रुक गई और इंतज़ार करने लगी कि वे इसे आपस में सुलझा लें, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। मैंने थोड़ी देर बाद बीच-बचाव किया और उनसे पूछा कि क्या समस्या है। जब दोनों एक साथ बोलने लगे तो मैंने मुस्कराते हुए उन्हें रोका और कहा, 'क्या, यह अच्छा नहीं होगा

कि एक बार में एक ही बच्चा बोले।' मैंने उन्हें लाल और हरे रंग के ब्लॉक दिखाए और उनके रंग फिर से दोहराए। जिसकी तरफ़ मैंने इशारा किया, उन्होंने उन ब्लॉकों के रंगों को दोहराया।

इस डायरी प्रविष्टि से कुछ विचार—

(क) अरुण के गिरने पर दीपा को उसकी माँ बनना पड़ा। उसे उसकी शारीरिक और भावनात्मक ज़रूरतों का भी ध्यान रखना था। बच्चे बहुत चौकस और संवेदनशील होते हैं। उन्हें जो कुछ हुआ था, उसके प्रति उसकी प्रतिक्रिया देखी और देखा कि वह उनकी परवाह करती है। इससे शिक्षक के प्रति सम्मान और प्रेम की भावना पैदा होती है (उन्होंने अपनी गतिविधि में वापस आने के लिए उसके निर्देशों का जवाब दिया)।

(ख) घाव को साफ़ करने की प्रक्रिया भी बच्चों के लिए एक महत्वपूर्ण सीख है। कच्चे घाव में बाहर से आने वाली गंदगी और कीटाणुओं को रोकने के लिए घावों को अंदर से लेकर बाहर तक साफ़ करने की आवश्यकता होती है। दीपा को अरुण के घाव को सही तरीके से साफ़ करते हुए देखकर बच्चे एक महत्वपूर्ण कौशल से परिचित हुए।

(ग) बेशक, उसे एक शिक्षिका भी रहना था! उसने पिछले दिन शुरू की गई गतिविधि को जारी रखा, नए आयामों का निर्माण करने के साथ-साथ पिछले आयामों को मज़बूत किया। एक शैक्षिक दृष्टिकोण से अनुक्रमण पर ध्यान देना और ज्ञात से अज्ञात की ओर बढ़ना महत्वपूर्ण है।

(घ) हर्ष और शोभा को अपने मुद्दे को सुलझाने के लिए समय देकर, वह उन्हें अपने दम पर चीज़ों को समझने का मौका दे रही थी। यह बच्चों में स्वायत्तता विकसित करने के लिए दीपा की एक महत्वपूर्ण प्रतिक्रिया थी। जब उसने देखा कि बात आगे बढ़ रही है तो उसने बच्चों के लिए एक सुगम विकल्प भी सुझाया। दीपा ने यह भी सुनिश्चित किया कि एक बार में एक ही बच्चा बोले। इससे दो उद्देश्य पूरे हुए। एक, उसने बच्चों को अपनी बारी का इंतज़ार करना सिखाया और दूसरा, वह उनकी भाषा-दक्षताओं का आकलन करने में सक्षम थी। इसलिए, आकलन के एक तत्व को बातचीत में एकीकृत किया गया। दीपा ने बच्चों को रंगों के नाम स्पष्ट करने के लिए व्यक्तिगत रूप से ध्यान दिया।

2.2 खेल के माध्यम से सीखना— कमल का रसोई कोना (किचन कॉर्नर)

कमल को खाना बनाना बहुत पसंद है और वे चाहते हैं कि खाना पकाने के लिए जो प्यार उनमें है, वही प्यार बच्चों में भी विकसित हो! इसलिए उन्होंने सचेत रूप से 3–6 वर्षीय बच्चों की अपनी कक्षा के साथ एक गतिविधि की योजना बनाई, जिसे अवसर मिलने पर किया जाना था। उन्होंने संक्षेप में इन सारी गतिविधि को साझा किया है।

सीता बहुत शर्मीली लड़की है और आम-तौर पर अपने-आप तक ही सीमित रहती है। एक दिन वह उदास चेहरे के साथ स्कूल आई, उसे कुछ भी करने में कोई दिलचस्पी नहीं थी। कुछ देर उसे देखने के बाद कारण जानने के लिए मैं उसके पास गया। सीता धीरे-धीरे मेरे साथ अपनी भावनाएँ साझा करने लगी। उसने बताया कि उसकी माँ की तबीयत ठीक नहीं थी, इसलिए वह रसोई में उसकी मदद करना चाहती थी, लेकिन उसकी माँ ने उसे अपने पास

से दूर जाने के लिए कहा। उन्होंने कहा कि उसके लिए आग, धारदार चाकुओं और खाना पकाने के गर्म बर्तनों के आस-पास रहना बहुत खतरनाक था। मैंने सोचा, बच्चों को 'किचन कॉर्नर' से परिचित कराने का आज सही दिन है।

2.2.1 शिक्षण योजना और आकलन

नीचे दी गई गतिविधियाँ बच्चों को एक गोले में बैठाकर की गईं। कक्षा में 24 बच्चे हैं; जिनमें से 4-4 बच्चों को एक-एक गतिविधि दी गई। ये गतिविधियाँ मौखिक, तार्किक, दृश्य-संबंधी, शारीरिक गतिसंवेदी, अंतर्वैयक्तिक (interpersonal), अंतःव्यक्ति (intrapersonal) और संगीतात्मक जैसी कई तरह की बुद्धिमत्ता को ध्यान में रखकर बनाई गई हैं। इस गतिविधि के लिए छह रसोई सेट और दाल, राजमा, चना, मूँगफली (कोई अन्य मोटा अनाज), सब्ज़ियाँ, पानी, नमक, चीनी जैसी खाना पकाने की सामग्रियों की आवश्यकता होती है।

(क) समूह गतिविधि 1— दाल पकाने का अभिनय करना

बच्चों के लिए निर्देश– एक छोटा भगोना लें और उसे अपने सामने खिलौने के चूल्हे पर रखें। अब भगोने में एक कप दाल डालें। दाल को बाएँ से दाएँ सावधानी से चलाने के लिए करछुल/चम्मच (स्पैचुला) का प्रयोग करें, सुनिश्चित करें कि यह गिरे नहीं।

साथ में गाएँ—

भूनो, भूनो, भूनो दाल
भूनो, भूनो, भूनो चना
भूनो तब तक जब तक भुन ना जाए

आकलन– देखें कि क्या बच्चा उचित संतुलन के साथ भून रहा है? दाल नहीं फैलनी चाहिए। यदि आवश्यक हो तो बच्चे को दोहराने के लिए कहें। देखें कि क्या बच्चा भगोना, भुनना और करछुल/चम्मच जैसे नए शब्द याद कर सकता है?

(ख) समूह गतिविधि 2– रोटी बेलने का अभिनय करना

बच्चों के लिए निर्देश– लोई से अपनी हथेलियों के बीच गोल-गोल लड्डू बनाकर चपाती के पट्टे पर रख दीजिए। इसे बेलन से बेल लें। गोल-गोल चपाती बना लीजिए।

रोटी चपाती रोल-रोल
मम्मी की बिंदी गोल-गोल
पापा का पैसा गोल-गोल
दादू का चश्मा गोल-गोल
...सारी दुनिया गोल-गोल

(परिचित वस्तुओं के साथ गोल आकार का परिचय)

आकलन– चपाती के आकार और फैलाव को देखें। जाँचें कि क्या बच्चा चीज़ों को साफ-सुथरा रख सकता है? यद्यपि यह वास्तव में अपेक्षित नहीं है, इसके अपवाद हो सकते हैं। देखें कि क्या बच्चा कविता में आए नए शब्दों को याद कर सकता है?

(ग) समूह गतिविधि 3– निश्चित मात्रा में दाल डालना

बच्चों के लिए निर्देश– कंटेनर को मेज़ पर रखें। कंटेनर पर निशान देखें। अंकों की संख्या गिनें। तीन अँगुलियों की सहायता से दाल को नीचे से कंटेनर के पहले निशान तक डालें। इसे एक अलग कंटेनर में रख दें। अब दाल को दूसरे निशान तक डालें।

डालो, डालो, डालो अनाज
निशान तक भरो इसे

...

आकलन– देखें कि क्या बच्चा दाल को एक कंटेनर से दूसरे कंटेनर में स्थानांतरित कर सकता है? ध्यान से देखें कि दाल दिए गए निशान से ऊपर है या नहीं। देखें कि क्या बच्चा मात्राओं की तुलना कर सकता है (प्रत्येक मामले में कम या अधिक)? देखें कि क्या बच्चा डालता है और अनाज जैसे नए शब्द याद कर सकता है?

(घ) समूह गतिविधि 4– चना, राजमा और मूँगफली जैसे अनाजों को छाँटना

बच्चे निगल न पाएँ, ऐसा मोटा अनाज चुनें। बच्चों को केवल तीन अँगुलियों का उपयोग करके मिश्रित अनाज को अलग-अलग कटोरे में छाँटना चाहिए। बालगीत इन सभी गतिविधियों का हिस्सा हो सकते हैं। उपलब्ध बालगीतों का प्रयोग करें या ऊपर बताए अनुसार सरल बालगीत बनाएँ। बच्चों को धुन के साथ गाना पसंद होता है।

बच्चों के लिए निर्देश– बच्चों, तुम्हें तीन तरह के अनाज दिए गए हैं। वे एक-दूसरे से अलग दिखते हैं। ये हैं चना, राजमा और मूँगफली। अब आप इन्हें अलग-अलग करके एक अलग बर्तन में निकाल लें।

(बच्चे समानता और अंतर की अवधारणा को सीखेंगे। यह गतिविधि उनकी एकाग्रता में सुधार करने में भी मदद करती है)।

आकलन– देखें कि क्या बच्चा समान अनाज की पहचान कर सकता है? ध्यान दें कि क्या बच्चा अलग किए गए अनाज को अपने से संबंधित कंटेनरों में स्थानांतरित कर सकता है? देखें कि क्या बच्चा अनाज, चना, राजमा, सूखी मटर और मूँगफली जैसे नए शब्द याद कर सकता है?

(ङ) समूह गतिविधि 5– सब्ज़ियों से खेलना

बच्चे सब्ज़ियाँ लेंगे, उन्हें धोएँगे और कपड़े से पोछेंगे। मटर की फली छीलना, हाथ से फलियों को तोड़ना और एक गाजर को एक कुंद छिलनी से छीलना, गतिविधि में शामिल किया जा सकता है।

बच्चों के लिए निर्देश– बच्चों को सब्ज़ियाँ पकाने के अभिनय से पहले उन्हें धोना, पोंछना और काटना चाहिए। स्वस्थ रहने के लिए खूब सारी सब्ज़ियाँ खाएँ। सब्ज़ियाँ हमें तंदुरुस्त रखती हैं। मटर की फली लें और उन्हें छील लें। मटर को एक-एक करके निकाल लें। इन्हें कटोरे में रखे पानी से धो लें। फिर बीन्स लें और उन्हें धो लें। अपनी पहली तीन अँगुलियों का उपयोग करके बीन्स को तोड़ लें। सभी टुकड़े एक ही आकार के होने चाहिए। गाजर लें, धोकर पोंछ लें। छिलनी से छीलें। छिलनी का उपयोग सावधानी से करें।

बाज़ार जाओ, गाजर खरीदो
गाजर धोओ, गाजर पोंछो
गाजर छीलो, गाजर खाओ
कैसा इसका स्वाद?
गाजर मीठी और कुरकुरी सेहतमंद
रोज़ एक गाजर खाओ, डॉक्टर को दूर भगाओ।

देखें कि क्या बच्चा फली को छील सकता है और सब्ज़ियों को लगभग समान आकार में तोड़ सकता है। ध्यान दें कि क्या बच्चा गाजर छील सकता है। देखें कि क्या बच्चा फली, बीन्स, गाजर, धोने, पोंछने और छिलनी जैसे नए शब्द याद कर सकता है।

(च) समूह गतिविधि 6– मीठा, नमकीन और खट्टा

मेज़ पर चीनी व नमक के कटोरे और नींबू का एक टुकड़ा रखा जाता है। पानी का एक मग और तीन गिलास दिए जाते हैं।

बच्चों के लिए निर्देश– छोटे टोंटीदार पात्र (beakers) का प्रयोग कर तीन पारदर्शी गिलासों में पानी डालें। पहले गिलास में एक चम्मच चीनी डालें और मिलाएँ। देखें कि चीनी का क्या होता है। घुलाने के बाद पानी का स्वाद चखें। दूसरे गिलास में एक चम्मच नमक डालें और मिलाएँ। ध्यान से देखिए कि नमक का क्या होता है। घुलाने के बाद पानी का स्वाद चखें। तीसरे गिलास में नींबू का टुकड़ा निचोड़ें और मिलाएँ। देखें कि नींबू की बूँदों का क्या होता है। घुलने के बाद पानी का स्वाद चखें। अब नीचे दिए गए सवालों का जवाब दीजिए—

कौन-सा तेजी से घुलता है, चीनी, नमक या नींबू के रस की बूँदे?
पहले गिलास में पानी का स्वाद कैसा था?
दूसरे गिलास में पानी का स्वाद कैसा था?
तीसरे गिलास में पानी का स्वाद कैसा था?

(बच्चे पानी डालना और संतुलन बनाना सीखेंगे। वे पानी में नमक, चीनी और नींबू के रस को घुलते हुए देखते हैं और एक निष्कर्ष पर आते हैं तथा बाद में वे स्वाद से अवगत हो जाते हैं)।

आकलन– देखें कि क्या बच्चा प्रत्येक घोल के स्वाद को पहचानने में सक्षम है? जाँचें कि क्या बच्चा यह देख सकता है कि पहले क्या घुला? देखें कि क्या बच्चा नमक, चीनी, नींबू और निचोड़ जैसे नए शब्दों को याद कर सकता है?

सत्र के अंत में सीता के साथ-साथ सभी बच्चे बहुत खुश थे। मैं भी खुश था क्योंकि मैं अपने सभी बच्चों के लिए रसोई को सकारात्मक तरीके से पेश करने में सक्षम था।

2.3 कक्षा-कक्षीय गतिविधियाँ

2.3.1 कहानी सुनाना (कन्नड़)

ನಾನು 3-6 ವರ್ಷದ ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಕಲಿಸುತ್ತೇನೆ. ನನ್ನ ಮಕ್ಕಳು ಕಥೆಗಳನ್ನು ಬಹಳ ಇಷ್ಟ ಪಡುತ್ತಾರೆ. ಅದರಲ್ಲೂ ಪ್ರಾಣಿ, ಪಕ್ಷಿಗಳ ಕಾಲ್ಪನಿಕ ಕಥೆಗಳೆಂದರೆ ಅವರಿಗೆ ತುಂಬಾ ಇಷ್ಟ. ಅದಕ್ಕಾಗಿ ಪ್ರತಿದಿನ ನನ್ನ ಪೂರ್ವ ಪ್ರಾಥಮಿಕ ತರಗತಿಯ 20 ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಗಮನದಲ್ಲಿಟ್ಟುಕೊಂಡು ವಿಷಯವಾರು ಕಥೆಯನ್ನು ಹೇಳುತ್ತೇನೆ. 'ಪಕ್ಷಿಗಳು' ಥೀಮ್ ಅಡಿಯಲ್ಲಿ "ಕಾಗೆಯ ಉಪಾಯ" ಎನ್ನುವ ಕಥೆಯನ್ನು ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಮೌಖಿಕವಾಗಿ ಹೇಳಲು ಮೊದಲು ನಾನು ತಯಾರಿಯಾಗುತ್ತೇನೆ. ಅಂದರೆ ಮಿಂಚು ಪಟ್ಟಿಗಳು, ಚಿತ್ರಪಟಗಳು, ಪಕ್ಷಿಯ ಮಾದರಿಗಳನ್ನು ತಯಾರಿಸಿಕೊಂಡು ಸಿದ್ಧವಾಗಿರುತ್ತೇನೆ. ಕಥೆ ಹೇಳುವ ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿ ಎಲ್ಲಾ ಮಕ್ಕಳು ಒಳಗೊಳ್ಳಲು ವ್ಯವಸ್ಥಿತ ಆಸನ ವ್ಯವಸ್ಥೆ ಮಾಡಿಕೊಂಡು, ಅನೌಪಚಾರಿಕ ಮಾತುಕತೆಯ ಮೂಲಕ ಉತ್ತೇಜಿತ ವಾತವರಣವನ್ನು ನಿರ್ಮಿಸುವುದರ ಜೊತೆಗೆ ಮಕ್ಕಳ ಮನಸ್ಸನ್ನು ಕೇಂದ್ರೀಕರಿಸಲು ಚಪ್ಪಾಳೆ ತಟ್ಟುವ, ಜಿಗಿಯುವ, ಕುಣಿಯುವ ಚಟುವಟಿಕೆಗಳನ್ನು ಮಾಡಿಸುತ್ತೇನೆ. ನಂತರ ಕೆಲವು ಪ್ರಶ್ನೆಗಳನ್ನು ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಕೇಳುತ್ತೇನೆ. ಅವುಗಳೆಂದರೆ, ಮಕ್ಕಳೇ, "ನಿಮಗೆ ಕಥೆಗಳೆಂದರೆ ಇಷ್ಟನಾ?", "ನಿಮ್ಮ ಮನೆಯಲ್ಲಿ ಕಥೆಗಳನ್ನು ಯಾರು ಯಾರು ಹೇಳುತ್ತಾರೆ?", "ಯಾರಾದರು ಒಂದು ಕಥೆ ಹೇಳಬಲ್ಲಿರಾ?" ಹೀಗೆ ಮುಂದುವರೆಯುತ್ತದೆ. ನಾನು ಈ ಹಿಂದೆ ತರಗತಿಯಲ್ಲಿ ನಾನು ಹೇಳಿದ್ದ ಕಥೆಗಳನ್ನು ಹೇಳುವಂತೆ ಪ್ರೋತ್ಸಾಹಿಸುವನು. ನಂತರ, ಮಕ್ಕಳೇ, ನಿಮಗೆಲ್ಲ ಇಂದು ನಾನು ಒಂದು ಹೊಸ ಕಥೆಯನ್ನು ಹೇಳುತ್ತೇನೆ ಎಂದು ಪ್ರಾರಂಭಿಸುತ್ತೇನೆ. ಮೊದಲು ಕಥೆಯ ಹೆಸರು, ಸಂದರ್ಭವನ್ನು ವಿವರಿಸಿ, ಅದರಲ್ಲಿ ಬರುವ ಪಾತ್ರಗಳನ್ನು ಪರಿಚಯಿಸುತ್ತೇನೆ. ನಂತರ ಮಕ್ಕಳು ಕಾಲ್ಪನಿಕವಾಗಿ ಊಹಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು ಸಹಾಯವಾಗುವಂತೆ ಧ್ವನಿಯಲ್ಲಿ ಏರಿಳಿತಗಳು, ಪಾತ್ರಕ್ಕೆ ತಕ್ಕ ಹಾವಭಾವಗಳೊಂದಿಗೆ ಕಥೆಯನ್ನು ಹೇಳುವೆನು, ಜೊತೆಗೆ ಮುಕ್ತ ಪ್ರಶ್ನೆಗಳನ್ನು ಕೇಳುತ್ತಾ ಮಕ್ಕಳು ಆಲೋಚಿಸಲು, ಕಲ್ಪಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು, ಪ್ರತಿಕ್ರಿಯಿಸಲು ಅವಕಾಶ ಕೊಡುತ್ತಾ ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಕಥೆಯಲ್ಲಿ ತೊಡಗಿಸಿಕೊಳ್ಳುತ್ತೇನೆ. ಉದಾ: "ಮಕ್ಕಳೇ ಕಾಗೆ ನೀರಿಗಾಗಿ ಎಲ್ಲೆಲ್ಲಿ ತಿರುಗಿತು?", "ಕಾಗೆಗೆ ನೀರು ಸಿಕ್ಕಿತೇ?", "ಕಾಗೆ ಹೂಜಿಯಲ್ಲಿನ ನೀರು ಕುಡಿಯಲು ಏನು ಮಾಡಿತು?" ಹೀಗೆ ಹಲವಾರು ಪ್ರಶ್ನೆಗಳನ್ನು ಮಕ್ಕಳ ಮುಂದಿಡುತ್ತೇನೆ . ಕಥೆ ಹೇಳಿದ ನಂತರ ಪುನರಾವರ್ತಿತ ಪ್ರಶ್ನೆಗಳೊಂದಿಗೆ ಕಥೆಯನ್ನು ಪುನಃ ಹೇಳುವೆನು. ಕಥೆಯನ್ನು ಈ ಒಂದೇ ಪದ್ಧತಿಯಿಂದಲ್ಲದೇ ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ಓದುವುದು, ಚಿತ್ರಪಟಗಳ ಸರಣಿ ಕಾರ್ಡುಗಳ ಬಳಸಿ ಹೇಳುವುದು, ಹಾಗೆಯೇ ಪಾತ್ರಾಭಿನಯ, ಪ್ರಶ್ನೆಗಳು, ನಾಟಕೀಕರಣ ಹೀಗೆ ವಿಭಿನ್ನ ಪದ್ಧತಿಗಳ ಮೂಲಕ ಕಥೆಯನ್ನು ಹೇಳುವುದರಿಂದ ಮಕ್ಕಳಲ್ಲಿ ಆಲಿಸುವ, ಗ್ರಹಿಸುವ, ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿಸುವ, ಭಾಷಾ ಕೌಶಲ್ಯಗಳ ಜೊತೆಗೆ ಕ್ರಿಯಾತ್ಮಕ, ಕಾಲ್ಪನಿಕ, ಸಮಸ್ಯೆ ಪರಿಹಾರದಂತಹ ಕೌಶಲ್ಯಗಳು ಅಭಿವೃದ್ಧಿಯಾಗುತ್ತವೆ.

2.3.2 मार्गदर्शित खेल (कन्नड़)

ಮಕ್ಕಳು ಆಟಗಳನ್ನು ತುಂಬಾ ಇಷ್ಟಪಡುತ್ತಾರೆ. ನಮ್ಮ ಶಾಲೆಗೆ ಬರುವ ಬಹುತೇಕ ಮಕ್ಕಳು ಸಾಮನ್ಯವಾಗಿ ಹಳ್ಳಿಯಲ್ಲಿಯೇ ವಾಸವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಇವರ ಪಾಲಕರು ಕೃಷಿ ಕೆಲಸವನ್ನೇ ಮಾಡುವವರು, ಹಾಗಾಗಿ ಅಂಗನವಾಡಿ ಕಾರ್ಯಕರ್ತೆ / ಶಿಕ್ಷಕಿಯಾದ ನಾನು ನನ್ನ ಅಂಗನವಾಡಿ ಕೇಂದ್ರಕ್ಕೆ ಬರುವ 3 - 6 ವರ್ಷದ ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಕೃಷಿ ಮತ್ತು ಕೃಷಿ ಸಾಮಗ್ರಿಗಳ ಕುರಿತು ತಿಳಿಸಲು ಅನೇಕ ಚಟುವಟಿಕೆಗಳನ್ನು ಮಾಡುವೆನು,

ಆದರಲ್ಲಿ ಮಾರ್ಗದರ್ಶಿತ ಆಟವು ಒಂದಾಗಿದೆ . ಈ ಆಟಗಳನ್ನು ಆಡಿಸುವುದರ ಮೂಲಕ ಮಕ್ಕಳಲ್ಲಿ ದೈಹಿಕ ಬೆಳವಣಿಗೆಗೆ ಅವಕಾಶ ದೊರೆಯುವುದು ಹಾಗೂ ಆಟದ ನಿಯಮಗಳನ್ನು ಅವರು ಅರಿಯುವರು, ಹಾಗಾಗಿ ನಾನು ಮುಂಚಿತವಾಗಿಯೇ ಪೂರ್ವ ತಯಾರಿಯ ಭಾಗವಾಗಿ ಕೃಷಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ ಆಟಿಕೆ ಸಾಮಗ್ರಿಗಳನ್ನು ಸಿದ್ಧಪಡಿಸಿಕೊಳ್ಳುವೆನು, ಆಟದ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಮಕ್ಕಳನ್ನು ವೃತ್ತಕಾರದಲ್ಲಿ ನಿಲ್ಲಿಸುವೆನು. ಒಂದು ಚಿಕ್ಕ ಚಟುವಟಿಕೆಯನ್ನು ಮಾಡಿಸುವುದರ ಮೂಲಕ ಮಕ್ಕಳ ಗಮನವನ್ನು ನನ್ನ ಕಡೆಗೆ ಸೆಳೆಯುವೆನು. ಉದಾ: ಚಪ್ಪಾಳೆ ತಟ್ಟುವುದು, ಚಿಟಕಿ ಹೊಡೆಯುವುದು ಇತ್ಯಾದಿ. ನಂತರ ಆಟದ ಸಾಮಾನುಗಳನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಂಡು ಆಟ ಆಡುವ ವಿಧಾನವನ್ನು ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ತಿಳಿಸುತ್ತಾ ಒಂದು ಬಾರಿ ಪ್ರಾಯೋಗಿಕವಾಗಿ ಆಟ ಆಡಿ ತೋರಿಸುವೆನು, ಮಕ್ಕಳಿಕೆ ಆಟ ಆಡಲು ಅವಕಾಶ ಒದಗಿಸುವೆನು, ಈ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಸ್ಪಷ್ಟ ಸೂಚನೆಯನ್ನು ನೀಡುವೆನು, ಉದಾ: ಒಬ್ಬರಿಗೊಬ್ಬರು ತಳ್ಳಬಾರದು, ಜಗ್ಗಬಾರದು, ಹಾಗೂ ಆಟದ ನಿಯಮಗಳನ್ನು ಪಾಲಿಸಬೇಕು ಇತ್ಯಾದಿ. ನಂತರ ಕಂಜೀರಾವನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಂಡು, ಮಕ್ಕಳೇ , “ನಾನು ಕಂಜೀರಾವನ್ನು ಬಾರಿಸುವುದನ್ನು ನಿಲ್ಲಿಸುವವರೆಗೆ ನೀವು ಓಡುತ್ತಾ ಇರಬೇಕು, ಬಾರಿಸುವುದನ್ನು ನಿಲ್ಲಿಸುವಾಗ ನೀಡುವ ಸೂಚನೆಯಂತೆ ನೀವು ಆಯಾ ಕೃಷಿ ಸಾಮಗ್ರಿ ಬಳಸಿ ಅಭಿನಯ ಮಾಡಬೇಕು” ಎಂದು ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ತಿಳಿಸುವೆನು. ಕಂಜೀರಾ ಬಾರಿಸುವುದನ್ನು ನಿಲ್ಲಿಸುವಾಗ ‘ತೊಗರೆ ಕೊಯ್ಯುವುದು’, ‘ಬಿತ್ತುವುದು’ , ‘ನೇಗಿಲು ಹೊಡೆಯುವುದು’ ಇತ್ಯಾದಿ ಸೂಚನೆ ನೀಡುತ್ತೇನೆ . ಆಗ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ ಕೃಷಿ ಸಾಮಾಗ್ರಿ ಬಳಸಿ ಮಕ್ಕಳು ಆಬಿನಯಿಸುವರು. ಇದೇ ರೀತಿಯಾಗಿ ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಆಸಕ್ತಿಯಿರುವವರೆಗೆ (10 ರಿಂದ 15 ನಿಮಿಷಗಳು) ಆಟವನ್ನು ಆಡಿಸುವೆನು, ಎಲ್ಲಾ ಮಕ್ಕಳು ಆಟದಲ್ಲಿ ತೊಡಗಿಕೊಳ್ಳುವಂತೆ ಪ್ರೋತ್ಸಾಹಿಸುವೆನು. ಈ ರೀತಿಯಾಗಿ ಆಯಾ ಥೀಮ್ ಗಳ ಸಾಮಗ್ರಿಗಳನ್ನು ಬಳಸಿಕೊಂಡು ಹಲವಾರು ಆಟಗಳನ್ನು ಆಡಿಸುವೆನು.

2.3.3 गीत पर अभिनय करना (कन्नड़)

ನಾನು 3-6 ವರ್ಷದ ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಕಲಿಸುತ್ತೇನೆ. ನನ್ನ ಅಂಗನವಾಡಿಗೆ ಬರುವ ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಪ್ರತಿದಿನ ಬೇರೆ ವಿಷಯಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ ಹಾಡನ್ನು ಹಾಡಿಸುತ್ತೇನೆ, ಆ ಹಾಡನ್ನು ಮೊದಲು ನಾನು ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಅರ್ಥೈಸಿಕೊಂಡು, ಅಭಿನಯದೊಂದಿಗೆ, ರಾಗಬದ್ಧವಾಗಿ ಹಾಡಲು ತಯಾರಿಯಾಗುತ್ತೇನೆ. ಅಂದರೆ ಮಿಂಚು ಪಟ್ಟಿಗಳು, ಚಿತ್ರಪಟಗಳು, ಮಾದರಿಗಳನ್ನು ತಯಾರಿಸಿಕೊಂಡು ಸಿದ್ಧವಾಗಿರುತ್ತೇನೆ. ಹಾಡನ್ನು ಹಾಡಿಸುವ ಮೊದಲು ಎಲ್ಲಾ ಮಕ್ಕಳು ವೃತ್ತಾಕಾರದಲ್ಲಿ ನಿಲ್ಲಲು ಸೂಚನೆ ನೀಡುತ್ತೇನೆ. ಆರಂಭಿಕ ಚಟುವಟಿಕೆಗಳಾದ’ ಚಪ್ಪಾಳೆ ತಟ್ಟಿಸುವುದು’, ‘ಹೋಯಿ ಹೋಯ್’ ಹೇಳಿಸುವುದನ್ನು ಮಾಡಿ ಅವರ ಗಮನವನ್ನು ಕೇಂದ್ರೀಕರಿಸುತ್ತೇನೆ. ನಂತರ ಮಕ್ಕಳೇ, “ನಿಮಗೆ ಹಾಡುಗಳೆಂದರೆ ಇಷ್ಟಾನಾ?” ಎಂದು ಕೇಳಿ ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಇಷ್ಟವಾದ, ಅವರಿಗೆ ಬರುವ ಹಾಡುಗಳನ್ನು ಹಾಡಲು ಪ್ರೇರೇಪಿಸುವೆನು. ಹಾಡು ಹಾಡಿದ ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಚಪ್ಪಾಳೆ ತಟ್ಟುವ ಮೂಲಕ ಅಭಿನಂದಿಸುತ್ತೇನೆ. ನಂತರ ಮಕ್ಕಳೇ, ‘ಇದುವರೆಗೂ ನಿವೆಲ್ಲಾ ಚೆನ್ನಾಗಿ ಹಾಡುಗಳನ್ನು ಹಾಡಿದ್ದೀರಲ್ಲವೇ ಈಗ ನಾನು ನಿಮಗೆ ಒಂದು ಹೊಸ ಹಾಡನ್ನು ಹಾಡಿಸುವೆ. ನೀವು ಗಮನವಿಟ್ಟು ಕೇಳಿಸಿಕೊಳ್ಳಬೇಕು’ ಎಂದು ಸೂಚಿಸುತ್ತೇನೆ. ನಾನು ಹಾಡನ್ನು ರಾಗಬದ್ಧವಾಗಿ ಹಾಡುತ್ತೇನೆ. ನಂತರ ನನ್ನೊಟ್ಟಿಗೆ ಹಾಡುವಂತೆ ಹೇಳುತ್ತೇನೆ. ಹಾಗೆಯೇ ಮುಂದುವರೆದು ಅಭಿನಯದ ಮೂಲಕ ಮಕ್ಕಳು ಹಾಡು ಹಾಡಲು ಪ್ರೋತ್ಸಾಹಿಸುವೆನು. ಆ ಹಾಡಿನಲ್ಲಿ ಬರುವ ಹೊಸ ಪದಗಳನ್ನು, ಪ್ರಾಸ ಪದಗಳನ್ನು ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಪರಿಚಯಿಸುತ್ತೇನೆ. ಈ ಹಾಡನ್ನು ಮನೆಯಲ್ಲಿ ತಮ್ಮ ಪಾಲಕರ ಮುಂದೆ ಪ್ರದರ್ಶಿಸುವಂತೆ ತಿಳಿಸುವೆನು. ಈ ರೀತಿ ಹಾಡುಗಳನ್ನು ಹಾಡಿಸುವದರಿಂದ ಮಕ್ಕಳಲ್ಲಿ ಭಾಷಾ ಬೆಳವಣಿಗೆಯ ಭಾಗವಾಗಿ ಆಲಿಸುವ, ಮಾತನಾಡುವ ಕೌಶಲ್ಯಗಳು ಬೆಳೆಸಲು ಈ ಮೂಲಕ ಅವಕಾಶಗಳನ್ನು ಕಲ್ಪಿಸಿಕೊಡುತ್ತೇನೆ.

2.3.4 पैटर्न (असमिया)

শিক্ষকে শ্ৰেণীকোঠালৈ মেখেলা বা গামোচা দৰে বোৱা কাপোৰ আনিব পাৰে। শিশুসকলক ইয়াক স্পৰ্শ কৰি, অনুভৱ কৰিবলৈ আৰু কাপোৰটো অন্বেষণ কৰাৰ সুযোগ দিব পাৰি। শিক্ষকে ইয়াক প্ৰদৰ্শনত ৰাখি এনেধৰণৰ প্ৰশ্ন সুধিব পাৰে: তোমালোকে কি কি দেখিছা ? তোমালোকে আৰ্হিবোৰ (patterns) দেখিছা নে? তোমালোকে এই আৰ্হিবোৰ আগতে দেখিছা নেকি? আমি আমাৰ চাৰিওফালে একে ধৰণৰ আৰ্হি দেখিব পাৰোনে? তোমালোকে এনে কিছুমান বস্তুৰ নাম দিব পাৰিবানে য'ত আমি এনে ধৰণৰ আৰ্হি দেখিছোঁ?

শিক্ষকজনে বৰ্ণনা কৰিছে যে সকলো শিশুৱে কিছুমান এনে ধৰণৰ আৰ্হি প্ৰস্তুত কৰিব। শিক্ষকে কাগজৰ কিছুমান পটি বিতৰণ কৰে। শিশুৱে তেওঁলোকৰ কাপোৰত বিচৰা ডিজাইনৰ বাবে পাত বা কাটি লোৱা পাচলি (যেনে ভেণ্ডি, আলু, পিয়াঁজ আদি) ব্যৱহাৰ কৰি কাগজৰ পটিত বিভিন্ন আৰ্হি প্ৰস্তুত কৰিব পাৰে। শিক্ষকে তেতিয়া এখন ডাঙৰ বাতৰি কাকতত পটিবোৰ আঠা লগাব পাৰে আৰু ইয়াক প্ৰতিটো শিশুৱে মেখেলা বা গামোচা ৰ দৰে বা আনকি কোটৰ দৰে মেৰিয়াই ল'ব পাৰে।

শিশুসকলক সুধিব পাৰি কোনে এনে কাপোৰ তৈয়াৰ কৰে। যদি শিশুৱে কয় যে এগৰাকী মহিলা শিপিনী, শিক্ষকে কেৱল মহিলাই কিয় বয়ন কৰে বা আমি পুৰুষসকলক কাপোৰ বোৱা ও দেখিবলৈ পাওঁ নে নাই সেই বিষয়ে আলোচনা কৰাৰ এই শিক্ষণীয় সুযোগটো ল'ব পাৰে?

2.3.5 कहानी सुनाना (असमिया)

শিক্ষকে কাহিনী কোৱা ৰ বাবে কিছুমান ছবি বা ফ্লেছ কাৰ্ড ব্যৱহাৰ কৰিব।

জুপি এজনী ৩ বছৰীয়া শিশু । তাই বিহু নাচি ভাল পাই আৰু বহাগ বিহুত নাচিবলৈ আগ্ৰহেৰে অপেক্ষা কৰি আছে। যেতিয়া দিনটো আহিল, বৰষুণ আৰম্ভ হ'ল। তাই বৰ হতাশ হৈছিল। তাই তাইৰ মাকক সুধিলে, “মা, আজি কিয় বৰষুণ দি আছে?। মই মোৰ বন্ধুৰ সৈতে কেনেকৈ গৈ নাচিম? তাইৰ মাকে ক'লে, “জুপি,

তুমি একেবাৰে চিন্তা কৰিব নালাগে। আমি আমাৰ বাৰাণ্ডাত নাচিব পাৰোঁ নহয় । আহা আমি তোমাৰ বন্ধুবৰ্গৰ ঘৰলৈ যাওঁ। ছাতিটো ল'বলৈ নাপাহৰিবা "। জুপি আৰু তাইৰ মাকে তাইৰ তিনিজনী বন্ধুক তাইৰ ঘৰলৈ নিমন্ত্ৰণ কৰে। তেওঁলোকে গোটেই দিনটো বিহু নাচে। গোটেই কেইজনী ভাগৰি পৰে। তাৰ পিছত জুপিৰ মাকে লুচি-ভাজিৰ প্লেট লৈ উপস্থিত হয়।জুপীয়ে ফুৰ্তিত জঁপিয়াই পৰে ।

শিক্ষকে প্ৰশ্ন সুধিব পাৰে যেনে:

- কোনে বিহু নাচি ভাল পায়?
- আমি কেনেকৈ বিহু নাচিম? কোনোবাই মোক দেখুৱাব পাৰিবনে কেনেকৈ বিহু নাচিব লাগে?
- আমি বিহুত কি কৰোঁ?
- বৰষুণ হোৱাৰ সময়ত তাই কিয় দুখত আছিল?
- বৰষুণৰ সময়ত আমি ছাতি কিয় বয্‌ৱহাৰ কৰোঁ? কোনোবাই বৰষুণত তিতিবলৈ ভাল পায় নেকি?
- যেতিয়া আমি বৰষুণত বাহিৰলৈ যাওঁ তেতিয়া কি হয়?

শিক্ষকে শিশুৱে দিয়া উত্তৰৰ ওপৰত আধাৰ কৰি কথোপকথন টো সম্প্ৰসাৰিত কৰিব পাৰে।

2.3.6 गीत, नृत्य गतिविधि (गुजराती)

ગીતો અને નૃત્યો દ્વારા બાળકોનો સર્વાંગી વિકાસ પ્રોત્સાહિત થાય તે માટે વિવિધ પ્રવૃતિઓ નીચે ઉદાહરણ તરીકે આપેલ છે. આ પ્રવૃતિઓ વિવિધ ક્ષમતાઓ અને અભ્યાસક્રમના હેતુઓને પરિપૂર્ણ કરવામાં મદદરૂપ રહેશે.

પ્રવૃતિનું નામ: ગીત, સંગીત અને નૃત્ય

સમય: ૪૫ મીનીટ

સાધનસામગ્રી: ખંજરી અથવા ઢોલક

a. તાલની રમત (૫ મીનીટ);
પદ્ધતિ: રમનાર બાળકોને અર્ધગોળમાં બેસાડવા. એક રમનાર/બાળક ખંજરી કે ઢોલક દ્વારા તાલ આપશે જે તાલ પ્રમાણે બહેન રમાડનાર દૈનિક ક્રિયાઓ જેવી કે બ્રશ કરવુ, નહાવું, સાબુ ઘસવો, માથું ઓળવું, નખ કાપવા વગેરે જેવી ક્રિયાઓ નો અભિનય કરશે. રમનાર બાળકો પણ જોઇને તે પ્રમાણે કરશે. દરેક ક્રિયા પછી રમનાર બાળકોને તે પ્રમાણે કરવા કહેવું.

b. વરસાદ તાળી (૩ મીનીટ)
પદ્ધતિ: રમનાર બાળકોને અર્ધગોળમાં ઉભા રાખવા. એક વાર બહેન કરી બતાવશે. એક બોલે એટલે એક આગળીથી તાળી પાડવી, બે બોલે તો બે આગળીથી આમ પાંચેય આગળી સુધી તાળી પાડવી, પછી પાછા કરતા ૫,૪,૩, ૨, ૧ બોલી એમ એક આગળીની તાળી સુધી પહોંચવું. બધા સાથે કરે તો પાણીના ટીપા પડતા હોય તેવો અવાજ આવે

c. મુક્ત ડાન્સ (૭ મીનીટ)
પદ્ધતિ : શિક્ષક ખંજરી અથવા ઢોલક પર તાલ મધ્ય રીતે વગાડશે જેના તાલ ઉપર સૌ બાળકો તેમની મરજી મુજબ ડાન્સ કરશે. તાલ ને ઝડપી, ધીમું કરતું જવું. તે મુજબ ડાન્સ ની ગતિ પણ ઝડપી ધીમી થશે.

d. અભિનય ગીત (૧૦ મીનીટ)
પદ્ધતિ : દરેક બાળકો ને વર્તુળમાં ઉભા રાખી શિક્ષકે ગીતની અભિનય સાથે રજુઆત કરવી. તે મુજબ બાળકો એ પણ ગીત ગાઇને અભિનય કરવાનો રહેશે.

ગીત: મુંબઈથી ગાડી આવી રે ઓ રસિયા રાજા

એક ગાડીને આગળ હાંકો રે ઓ રસિયા રાજા, મુંબઈથી...

એક ગાડીને ઉભી રાખો રે, મુંબઈથી....

એક ગાડીને પાછળ હાંકો રે ઓ રસિયા રાજા, મુંબઈથી...

એક ગાડીને બેસાડી દો રે ઓ રસિયા રાજા, મુંબઈથી....

એક ગાડીને ઉભી કરો રે ઓ રસિયા રહ્યા, મુંબઈથી...

એક ગાડીને ગોળ ફેરવો રે ઓ રસિયા રાજા, મુંબઈથી ...

(જુદી જુદી ક્રિયા ઉમેરવી)

2.4 भाषा शिक्षण के माध्यम से 6–7 साल की आयु के बच्चों के लिए सीखने की सकारात्मक आदतें

सकारात्मक सीखने की आदतों से संबंधित कौशल, विशेष रूप से प्रारंभिक कक्षाओं में सबसे अच्छा तब प्राप्त होता है, जब कक्षा में विभिन्न विषयों को शिक्षण पद्धति के रूप में शामिल किया जाता है। इसके लिए नीचे सुझाई गई कुछ रणनीतियों को सभी शैक्षणिक विषयों की पाठ योजनाओं में शामिल किया जा सकता है। नीचे दी गई पाठ योजना, भाषा के पाठ का एक उदाहरण है जिसे बच्चों को पाठ के दौरान अधिक ध्यान केंद्रित करने और ध्यान देने में मदद करने के लिए संरचित किया जा सकता है।

2.4.1 सीखने के प्रतिफल और आकलन संकेतक

तालिका 1

सीखने के प्रतिफल	आकलन संकेतक
1. कक्षा में शिक्षक और साथियों के साथ बात-चीत पर ध्यान केंद्रित करते हैं।	1. बातचीत की सामग्री को याद करने में सक्षम और समझ बढ़ाने के लिए सवाल पूछना।
2. किसी दिए गए कार्य को अंत तक पूरा करना और पूरा करने की दक्षता रखते हैं।	2. किसी दी गई गतिविधि को बिना विचलित हुए निर्धारित समय में पूरा करने में सक्षम होना।
3. ऑडियो इनपुट को सुनने और स्वंय को उससे जोड़ने में सक्षम होते हैं।	3. किसी दी गई कहानी को सुनने, समझने और सोचने में सक्षम होना।

कक्षा में ध्यान के संदर्भ में विचार किया गया है—

(क) ऑडियो इनपुट (निर्देश, कहानी, बातचीत) पर ध्यान देना।

(ख) किसी के कार्यों पर ध्यान देना।

दिन में पढ़ने या लिखने की गतिविधि का समय, घेरा समय, भाषा के खेल, निर्देश, व्यक्तिगत कार्य और शिक्षक द्वारा पुस्तक पढ़ने में विभाजित किया गया है। नीचे दी गई पाठ योजना इस बात का सूचक है कि कैसे गतिविधियों को संरचित किया जा सकता है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि सभी बच्चे गतिविधियों में शामिल हों और समूह गतिविधियों पर ध्यान भी केंद्रित करें।

(क) सारांश

तालिका 2

	गतिविधि	अवधि	उद्देश्य	सामग्री
1.	उपस्थिति अंकन	5 मिनट	लिखित भाषा पर ध्यान देना और उससे जुड़ना।	कक्षा की दीवार पर उपस्थिति चार्ट लगाना और चिह्नित करना।
2.	पढ़ने और लिखने का समय	15 मिनट	बच्चों को कक्षा के वातावरण में लाकर उन्हें बाहरी दुनिया के विकर्षणों से दूर कक्षा में अपना ध्यान केंद्रित करने में मदद करना।	पठन कोना (किताबें) और लेखन कोना (कागज़ात, रंगीन क्रेयॉन, पेंसिल, स्केच पेन आदि)।
3.	घेरा समय– मूलाक्षर 'म' के निर्देश की ओर एक कदम	15 मिनट	सुनना दूसरे क्या कह रहे हैं उस पर ध्यान देना। यह जानने पर ध्यान देना कि कब किसकी बारी आने वाली है। बच्चों को विचार में खोने देने के बजाय गतिविधि पर ध्यान केंद्रित करवाया जाना।	गेंद
4.	छोटे समूहों में भाषा के खेल– शब्दों में 'म' ध्वनि खोजें	30 मिनट	ऑडियो और शारीरिक गतिविधि का समन्वय। श्रवण इनपुट के साथ-साथ स्वयं पर भी ध्यान दें।	तीन पेपर कप और तीन कंचे
5.	शारीरिक खेल और गीत	10 मिनट	ऑडियो और शारीरिक गतिविधि का समन्वय। श्रवण इनपुट के साथ-साथ स्वयं पर भी ध्यान दें।	कोई नहीं
6.	पुस्तक पठन– नीना आणि मांजर	20 मिनट	कहानी पर ध्यान देना और सक्रियता से सुनना।	किताब— नीना आणि मांजर।

(ख) गतिविधियों का विवरण

1. शिक्षक द्वारा उपस्थिति दर्ज करने के बजाय, बच्चे सामान्य उपस्थिति पत्रक (common attendance sheet) पर अपने नाम से हस्ताक्षर करें। बच्चे अपना नाम खोजने के लिए उपस्थिति पत्रक पर ध्यान केंद्रित करते हैं और फिर उसके सामने अपनी उपस्थिति दर्ज करते हैं। यह गतिविधि बच्चों को लिखित सामग्री पर अपना ध्यान केंद्रित करने और उसके साथ जुड़ने में मदद करती है।

आकलन के मानदंड—

- बच्चे बिना चूके या हर बार याद दिलाए बिना अपने नाम के आगे अपनी उपस्थिति लगा सकें।
- बच्चे अन्य नामों की सूची से अपना नाम पहचान सकें।

2. जब बच्चे कक्षा में आते हैं, तब वे विचलित अवस्था में होते हैं। दो कोनों (पठन और लेखन) में से एक में स्थिर होने की आदत उन्हें कक्षा के काम पर अपना ध्यान केंद्रित करने और बाहरी विकर्षणों को दूर रखने में मदद करती है। बच्चों में प्रिंट जागरूकता विकसित करने के लिए यह एक अच्छा अभ्यास है।

   आकलन के मानदंड—

   - बच्चे जब पठन-लेखन क्षेत्रों में बैठ जाते हैं तो शांत हो जाते हैं और किताब पढ़ना, चित्र बनाना या कुछ लिखना शुरू कर देते हैं।
   - वे एक-दूसरे से कम बात करते हैं और अपने द्वारा चुनी गई गतिविधि पर अधिक ध्यान केंद्रित करते हैं।
   - बच्चे घेरा समय में पढ़ने और लिखने (उद्गामी साक्षरता) की दिशा में पहला कदम उठाते हैं।

3. शिक्षक मूलाक्षर 'म' की ध्वनि को फिर से दोहराने का एक खेल आयोजित करता है। शिक्षक 'म' की ध्वनि वाला एक शब्द कहता है और गेंद को किसी बच्चे की ओर फेंकता है। गेंद पाने वाला बच्चा शब्द को दोहराता है और 'म' ध्वनि वाला ही एक नया शब्द कहता है। इसके बाद गेंद दूसरे बच्चे की ओर फेंकी जाती है। चूँकि गेंद फेंकने का कोई निश्चित क्रम नहीं है, सभी बच्चों को सतर्क रहना और खेल से जुड़ना चाहिए, ऐसा न हो कि वे अपनी बारी से चूक जाएँ। उन्हें कहे जा रहे शब्दों पर भी ध्यान देना चाहिए, क्योंकि उन्हें अंतिम शब्द को दोहराना होगा। इससे उन्हें अपनी बारी खत्म होने के बाद मानसिक रूप से साइन आउट करने के बजाय खेल की पूरी अवधि में गतिविधि पर अपना ध्यान केंद्रित करने में मदद मिलती है। इस प्रकार बच्चे 'म' की ध्वनि को डिकोड कर सकते हैं और उन शब्दों को बता सकते हैं जिनमें 'म' ध्वनि होती है।

   आकलन के मानदंड—

   - गेंद पर नज़र रखते हैं और ध्यान देते हैं कि किसकी बारी है।
   - सक्रिय रूप से सुनते हैं और खेल में कहे जा रहे शब्दों को याद रखते हैं।
   - विभिन्न ध्वनियों (ध्वनि संबंधी जागरूकता) के बीच अंतर कर सकते हैं।

4. बच्चे जोड़ों में बैठते हैं। प्रत्येक जोड़े को तीन पेपर कप और तीन कंचे दिए जाते हैं। कागज़ के कपों को पहले, मध्य और आखिरी के रूप में एक पंक्ति में व्यवस्थित किया जाता है और दोनों बच्चे कप के एक ही तरफ बैठते हैं। एक बच्चा एक शब्द कहता है जिसमें 'म' ध्वनि होती है। दूसरा बच्चा कंचे को पहले, मध्य या आखिरी प्याले में इस आधार पर रखता है कि शब्द में 'म' की आवाज़ कहाँ सुनाई देती है। उदाहरण के लिए 'कमल' शब्द के लिए बच्चे को बीच के प्याले में कंचे लगाने चाहिए। 'मामा' शब्द के लिए बच्चे को पहले प्याले में एक और आखिरी प्याले में एक कंच रखना चाहिए।

   आकलन के मानदंड—

   - शब्द को ध्यान से सुनते हैं, विशिष्ट ध्वनि के स्थान की पहचान कर सकते हैं और उसके अनुसार कंचे को रख सकते हैं।
   - विभिन्न ध्वनियों (ध्वनि संबंधी जागरूकता) के बीच अंतर कर सकते हैं।

5. शिक्षक बच्चों को 'तळ्यात-मळ्यात' के खेल में शामिल करता है। बच्चे एक घेरे में खड़े होते हैं और हाथ पकड़ते हैं। जब शिक्षक 'तळ्यात' कहते हैं, तो बच्चे अंदर की ओर कूदते हैं, और जब शिक्षक 'मळ्यात' कहते हैं, तो वे बाहर की ओर कूदते हैं। बच्चे को शिक्षक द्वारा कहे जा रहे विशिष्ट शब्द पर ध्यान देकर उसके अनुसार कार्य करना होगा। जब तक वे ध्यान नहीं देते, वे खेल को जारी रखने में असमर्थ होते हैं। शिक्षक बच्चों को ज्ञात कविता के शब्दों को गाए बिना क्रिया करता है, बच्चे क्रियाओं को देखते हैं और कविता गाते हैं। कक्षा में नियमित अंतराल पर शारीरिक गतिविधि, बच्चों का ध्यान आगे आने वाली गतिविधियों में बढ़ाने को मदद करती है।

   आकलन के मानदंड— ऑडियो और शारीरिक क्रियाओं को एक साथ समन्वित करते हैं।

6. अनुवर्ती गतिविधि के रूप में शिक्षक, बच्चों को कोई भी उपयुक्त कहानी ज़ोर से पढ़ने के लिए कह सकते हैं। वह बच्चों को चित्र दिखा सकता है, कहानी के बारे में सवाल पूछ सकता है और बच्चों को आगे की घटनाओं का अनुमान लगाने के लिए कह सकता है।

   आकलन के मानदंड—

   - कहानी को आखिर तक समझते हैं।
   - पूछे गए सवालों के जवाब कहानी से जोड़ सकते हैं।
   - कहानी किस दिशा में ले जाएगी, इसके बारे में अनुमान लगा सकते हैं।

2.5 आस-पास के जानवरों के माध्यम से गणित सीखना

तारकेश्वर में एक ग्रामीण स्कूल के आस-पास का समुदाय, कई जानवरों और पक्षियों को आश्रय देता है, विशेष रूप से जिन्हें पालतू या घरेलू जानवरों के रूप में पाला जाता है। समुदाय के परिवार इन जानवरों को खाना और जगह देकर उनकी देखभाल करते हैं। अन्य जानवर भी मानव आवास के निकट रहते हैं।

शिक्षिका (वर्षा) अपनी शिक्षण प्रक्रिया में इसका व्यापक रूप से उपयोग करती हैं। यहाँ 3–6 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए उनके द्वारा बनाई गई शिक्षण योजनाओं का एक नमूना है। जबकि यह योजना अधिगम के अन्य प्रतिफलों को प्राप्त करती है, यहाँ आसानी के लिए संज्ञानात्मक विकास के क्षेत्र से संबंधित और इसके भीतर गणितीय समझ व दक्षताओं को विकसित करने के पाठ्यचर्या के उद्देश्य को इस उदाहरण में रेखांकित किया गया है।

एक चरवाहे की कहानी सुनाइए। जो कुछ इस तरह है—

"बहुत समय पहले की बात है, तारकेश्वर में एक चरवाहा परिवार रहता था। उनके पास बहुत सारी गायें थीं। हर दिन दोपहर में देवांशी और दीपांजन उन्हें चराने जाते थे। वे मंदिर की गली से गुज़रते हुए गाँव के बाहर के जंगल में जाते और देर शाम को सभी गायों को इकट्ठा करके लौट आते।

एक दिन, देवांशी अचानक सोचने लगी... अगर कोई गाय गुम हो गई या खो गई, तो हमें कैसे पता चलेगा। वह परेशान थी। वह सोचने लगी कि क्या किया जाए? उसने अपनी इस परेशानी को अपने भाई को भी बताया। वे उस समय तक कोई संख्या या गिनती नहीं जानते थे।

जब उन्होंने इसे अपने पड़ोसी बाल्मीकि को बताया, तो उन्होंने एक योजना सुझाई। बाल्मीकि ने कहा कि उनके दरवाज़े से निकलने वाली प्रत्येक गाय के लिए एक बोरी में एक कंकड़ डालें और जब वे चरकर घर लौटती हैं, तब प्रत्येक गाय उनके द्वार में प्रवेश करती है, तो उसी बोरे में से एक कंकड़ निकाल लें। इस तरह आप जान पाएँगे कि क्या सभी गायें वापस आ गई हैं। देवांशी और दीपांजन अभी भी हैरान थे, क्योंकि उन्हें समझ नहीं आया कि यह कैसे काम करता है। बच्चों, क्या आप समझ गए कि बाल्मीकि की योजना कैसे जाँच करने में मदद करती है कि सभी गायें वापस आयीं या नहीं?

देवांशी और दीपांजन इस विचार पर कार्य करना चाहते थे और देखना चाहते थे कि यह कैसे होता है। अगले दिन उन्होंने ठीक वैसा ही किया जैसा बाल्मीकि ने सुझाया था। जैसे ही एक-एक गाय दरवाज़े से निकली, उन्होंने बोरी के अंदर एक-एक कंकड़ डालना शुरु कर दिया। जब वे लौटे, तो उन्होंने दरवाज़े में प्रवेश करने वाली प्रत्येक गाय के लिए एक कंकड़ निकाला। अचानक वे समझ गए कि यह कैसे काम करता है और बहुत खुश थे। उस शाम उन्होंने बाल्मीकि को धन्यवाद दिया और उन्हें कृतज्ञता के रूप में चावल और दूध से बनी खीर भेंट की।

बच्चों को व्यस्त रखने के लिए कथन को प्रश्नों के साथ जोड़कर प्रस्तुत करें।

कहानी के अंत में बच्चों को एक गतिविधि में शामिल करें। एक कंचों भरा और एक खाली डिब्बा लें। जैसे ही बच्चे बाहर जाते हैं, वे पहले डिब्बे से एक कंचा उठाते हैं और दूसरे डिब्बे में डालते हैं। जैसे ही वे वापस अंदर आते हैं, वे दूसरे डिब्बे से एक कंचा उठाते हैं और उसे पहले वाले बक्से में वापस रख देते हैं।

निर्देश— हमें बच्चों से तुरंत प्रतिक्रिया नहीं भी मिल सकती है। यह देखने और सोचने के अवसर प्रदान करने के लिए मुख्य है; अस्पष्ट निर्देश अधिक मददगार नहीं हो पाते हैं।

अगले दिन, यह कहानी वहीं से शुरू करें, जहाँ वह छूटी थी। कुछ इस तरह—

"देवांशी और दीपांजन गायों के झुंड पर नज़र रखने के नए तरीके से खुश हैं। एक दिन जब वे शाम को गायें चराकर लौटे और जब एक-एक गाय अंदर जाने लगी तो उन्होंने बोरी से एक-एक कंकड़ निकालना शुरू कर दिया। लेकिन वे हैरान और परेशान थे। दो कंकड़ अभी भी बचे थे लेकिन उन्हें बाहर कोई गाय नहीं दिखाई दी। बच्चों, आपको क्या लगता है कि देवांशी और दीपांजन हैरान और परेशान क्यों थे? इसका क्या मतलब है? किसी और दिन, बोरी खाली थी, क्योंकि सभी कंकड़ निकाल दिए गए थे। लेकिन फिर भी एक गाय बाहर थी। इसका क्या मतलब है, बच्चो? क्या यह संभव है?"

अगले दिन, जितनी बच्चों की संख्या है, फ़र्श से सटे बोर्ड पर उतने लकीरें खींचे। बच्चों से कहे कि हर दिन जब वे कक्षा में आए, तब एक लकीर उस पर खींचा करें।

कुछ महीनों बाद बच्चों से यह पूछें और इसका पालन करवाएँ, "आज हम केवल बोर्ड को देखकर पता लगा सकते हैं कि कुछ बच्चे स्कूल आए हैं और कुछ स्कूल नहीं आए हैं। अगर हम यह जानना चाहते हैं कि कौन स्कूल आए हैं और कौन-कौन नहीं आए तो हम क्या कर सकते हैं?"

2.6 कक्षा 2 में गणित के लिए समूहवार अलग-अलग सीखना

उत्पल, मोरी गाँव में दूसरी कक्षा के बच्चों को पढ़ाते हैं। वह बच्चों के लिए जोड़ और घटाव से संबंधित विभिन्न पहलुओं, अवधारणाओं व पैटर्न को शामिल करने, तलाशने एवं खोजने के लिए विभिन्न परिदृश्यों, संदर्भों व अवसरों को प्रस्तुत करते रहे हैं। कुछ दिनों के अवलोकन के बाद अपनी बातचीत के दौरान उन्होंने देखा कि बच्चे अलग-अलग स्तरों और स्थितियों पर थे। उत्पल ने अपने अवलोकनों के आधार पर कक्षा को कुछ समूहों में विभाजित किया है।

2.6.1 समूह 'क'

प्रियोम, आसिन और ताशी अभी भी संख्याओं के नाम और दो अंकों की संख्याओं की गिनती में महारत हासिल करना सीख रहे हैं। इससे उन्हें दो अंकों की संख्या वाले बुनियादी गणित करते समय भी परेशानी होती है। आसिन को घटाव के अर्थ के बारे में कुछ और जानकारी की आवश्यकता है। दीपशिका गिनती में काफी सहज है, फिर भी जोड़ना और घटाना सीख रही है।

इस समूह के लिए उत्पल ने नीचे दी गई गतिविधियों की योजना बनाई—

(क) संख्या कार्ड गतिविधि, इसे जोड़ों में किया जाना चाहिए, जहाँ संख्या कार्ड (संख्या 1–20) पर एक पैटर्न होता है। कार्ड को मिलाकर 2 बच्चों में बाँट दें। हमारे पास बीच में रखी बहुत सारी सामान्य वस्तुएँ हैं (बटन, बीज आदि)। कार्ड को बगल में रखी गई वस्तुओं की संख्या के बगल में सीधा रखा जाता है, जहाँ वस्तु और कार्ड पर छपी संख्या समान होती हैं। अपनी बारी पर प्रत्येक खिलाड़ी को अपने पास के कार्ड्स में से एक कार्ड को चुनकर बीच के ढेर पर रखकर कार्ड से मिलान वाली संख्याओं की वस्तुओं को मिलाना या निकालना होगा। इसलिए, हर बार उन्हें यह देखना होगा कि कितनी वस्तुओं को मिलाना या निकालना है, मतलब कि उन्हें अंतर जानना होगा।

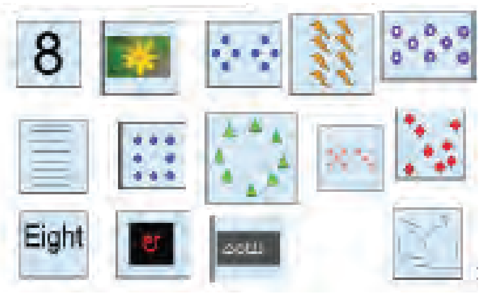

(ख) 1, 2, 3, ... 100 की गिनती करना और 10, 20, 30 की गिनती छोड़ना, इस गतिविधि को उल्टे और सीधे दोनों ओर से किया जा सकता है, इस प्रक्रिया में बच्चे एक-दूसरे को सही कर सकते हैं।

(ग) घटाव के अर्थ पर ज़ोर देने और जोड़ के साथ संबंध प्रदर्शित करने के लिए—

बच्चों के गिनने योग्य कुछ वस्तुओं (मान लीजिए 10 बटनों) को रखा जाता है। अब मान लीजिए, जैसे ही आसिन अपनी आँखें बंद करती है, ताशी कुछ वस्तुओं को अपने हाथ में छिपा लेती है (जैसे 4 बटन) और अपना

हाथ पीछे कर लेती है। जब आसिन अपनी आँखें खोलती है, तो उसे बताना होगा कि ताशी ने कितनी वस्तुएँ उठाई हैं। शिक्षक पहले इसे प्रदर्शित कर सकता है और नीचे दिए गए सवाल पूछ सकता है—

प्रकरण 1– उत्पल अपनी आँखें बंद करते हैं और आसिन बटन उठाती और छुपाती है। इसके बाद उत्पल अनुमान लगाते हैं कि आसिन के पास कितने बटन हैं?

1. मैं यह कैसे बता पाया? क्या यह कोई जादू की ट्रिक है?

प्रकरण 2– अगले दौर में आसिन अपनी आँखें बंद कर लेती है और टीचर बटन उठाकर छुपा देता है। इसके बाद आसिन अनुमान लगाती है कि उत्पल के पास कितने बटन हैं?

1. क्या आप आसिन से सहमत हैं?
2. आपको क्यों लगता है कि 4 बटन छिपे हुए हैं?
3. आपको कैसे पता चला?
4. क्या आप सभी सहमत हैं कि मेरे हाथ में 4 कंचे हैं? क्या आपको यकीन है?
5. हम कैसे पता लगा सकते हैं?
6. क्या आपका कोई सवाल है?

ऐसे प्रश्न या संकेत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे उत्पल को बच्चों की चिंतन प्रक्रिया का आकलन करने में मदद करेंगे और उन्हें सोचने, स्पष्ट करने और व्यक्त करने के अवसर प्रदान करेंगे। धीरे-धीरे, वस्तुओं की संख्या बढ़ाई जा सकती है (ज़मीन पर मौजूद 6 वस्तुओं से 10 तक गिनना और 10 से 4 वस्तुओं को उठाकर वापस गिनना जैसी गतिविधि की जा सकती है)।

2.6.2 समूह 'ख'

यद्यपि त्सेवांग, जावेद और तोशीली इसका अर्थ समझते हैं, लेकिन उन्हें अभी भी औपचारिक प्रतीकात्मक निरूपण को समझना या उनको आत्मसात करना बाकी है (अर्थात 4 पेंसिल एवं 3 और पेंसिल बराबर है या वही संख्या है या 7 पेंसिल => 4 +3 = 7)।

इस समूह के लिए जोड़ के माध्यम से घटाव के लिए वास्तविक जीवन की परिस्थितियाँ उत्पल द्वारा दी जाती हैं।

(क) समस्या– रिंटू और पिंकी के पास कुल मिलाकर 14 सीपियाँ हैं। रिंटू का कहना है कि उसके पास 5 सीपियाँ हैं। क्या हम बता सकते हैं कि पिंकी के पास कितनी सीपियाँ हैं?

(ख) समस्या– सतपिदा के पास 3 नींबू हैं, लेकिन सभी के लिए नींबू पानी बनाने के लिए उसे कुल 10 नींबू की आवश्यकता होगी। उसे बाज़ार से और कितने नींबू लाने चाहिए?

(ग) समस्या– 13 +___ = 29

(घ) समस्या– ___ + 45 = 59

(ङ) सरल ग्रिड जोड़ पहेली जैसे—

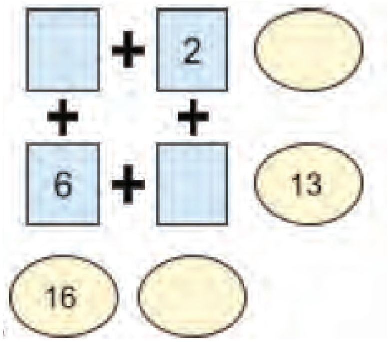

(च) उत्पल ने समझा कि वे छोटी संख्याओं के साथ सरल घटाव के सरल शब्द समस्याओं (word problems) को हल कर सकते हैं और उनसे संबंधित प्रतीकात्मक संकेतन दिखाने के लिए संवाद करते हैं। वे उन उदाहरणों/परिदृश्यों का उपयोग करते हैं जो उन्होंने पहले काम में लिए थे।

(छ) अपनी बातचीत के दौरान, उन्होंने पाया कि स्थानीय मान (place value) की समझ अभी भी पर्याप्त नहीं थी और त्सेवांग कभी-कभी बड़ी और छोटी संख्याओं की पहचान करने में चूक जाता था। उत्पल ने 10 से 'स्किप काउंटिंग' खेलने का सुझाव दिया और बच्चों को यह देखने के लिए प्रेरित करने की कोशिश की कि प्रत्येक संख्या नाम का क्या अर्थ है, चालीस और आठ यानी 40 + 8 ही अड़तालीस है।

(ज) 1–100 नंबर चार्ट का उपयोग करके एक गतिविधि या खेल दिया गया था। संख्या चार्ट पर कुछ खजाने (वस्तुओं) को यादृच्छिक रूप से (randomly) रखा जाता है। प्रत्येक खिलाड़ी के मोहरे को चार्ट पर अलग-अलग स्थानों पर बेतरतीब ढंग से रखा जाता है। प्रत्येक मोड़ पर एक खिलाड़ी या तो +1, -1, +10 या -10 कर सकता है (चलते समय उन्हें अपनी पसंद को ज़ोर से कहना होगा)। इसका उद्देश्य कीमती वस्तुओं की अधिकतम संख्या एकत्र करना है।

(झ) उत्पल ने महसूस किया कि स्थानीय मान प्रणाली (place value system) को ग्रहण करने के लिए पर्याप्त समय तक पूरी कक्षा को खेल में व्यस्त रखना होगा। उनके पास कुछ विचार थे—शुरू करने के लिए, टूथपिक्स, फिर फलैट्स-लॉन्ग-यूनिट है (flats-longs-units) और फिर एक्सप्लोडिंग (Exploading dots) डॉट्स विधि का उपयोग करें। उन्होंने सोचा कि इस पर बाद में सोचकर योजना बनाएँगे।

2.6.3 समूह 'ग'

कबीर, प्रोनोई और रिधिमा अलग-अलग हालातों में अपने स्वयं के तरीक़ों का उपयोग करके जोड़ और घटाव का सामना कर सकते हैं, पहचान सकते हैं और काम में ले सकते हैं। वे मुख्य रूप से 10s तक छोड़कर गिनना (स्किप काउंटिंग) का उपयोग कर रहे हैं और 1s के साथ आगे और पीछे गणना कर रहे हैं, यानी संख्याओं को दहाई और इकाई में तोड़ रहे हैं और संक्रियाएँ कर रहे हैं। प्रोनोई शब्द समस्याओं को समझने में थोड़ा संघर्ष करता है, लेकिन जब उत्पल उसे समझने में मदद करते हैं, तो वह समस्या का समाधान कर सकता है। बच्चे 20 तक की संख्या वाली समस्याओं के लिए मानसिक गणना करने में भी सक्षम होते हैं, लेकिन कभी-कभी बड़ी संख्या में वे चूक जाते हैं।

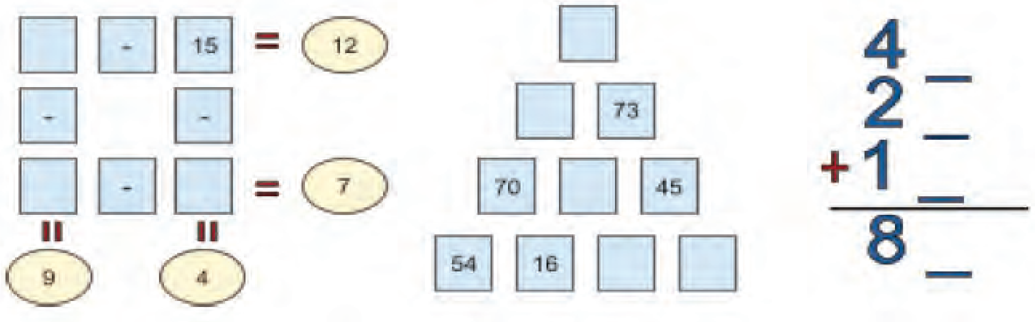

इस समूह के लिए उत्पल ने योजना बनाई कि—

(क) 2s, 5s और 3s तक छोड़कर गिनना (स्किप काउंटिंग) (समूह कार्य)। ('क्या आपको लगता है कि 46 नंबर 2s की छोड़कर गिनना (स्किप काउंटिंग) में आता है? क्यों या क्यों नहीं? आप कैसे जानते हैं?' जैसे सवाल 2s और 5s के लिए भी पूछे जा सकते हैं)।

(ख) समझने के कौशल का आकलन करने के लिए उत्पल ने प्रोनोई को एक छोटी कहानी पढ़ने और अपने शब्दों में सुनाने के लिए कहा।

(ग) संख्या लचीलेपन और संख्या समझ में सुधार के लिए सवालों के साथ अभ्यास पत्रक।

2.6.4 समूह 'घ'

खिरेन और मुमताज ने संक्रियाएँ करते समय और कभी-कभी मानसिक रूप से अंतरिम गणना करते समय लचीले ढंग से संख्याओं का उपयोग करना शुरू कर दिया है।

उनके लिए उत्पल ने सोचा—

1. जोड़ और घटाना के चार्ट का पैटर्न और संबंध का अवलोकन किया। कुछ इस प्रकार के प्रश्न—

(क) पैटर्न और संबंधों को देखने के लिए जोड़ और घटाव चार्ट में कुछ इस प्रकार के प्रश्न ___ – ____ = 18

(ख) पहेली के सरल संस्करण जैसे ग्रिड घटाव, संख्या मीनार और क्रिप्टारिथम (Cryptarithms)।

(ग) स्थानीय मान का उपयोग करके दाएँ से बाएँ घटाव की मानक विधि का परिचय दें। अर्थात यदि आवश्यक हो तो उधार लेना (स्थानीय मान की अवधारणा संबंधित गतिविधियों पर पूरे कक्षा सत्र के बाद)।

उत्पल ने उन गतिविधियों का एक अच्छा मिश्रण रखने की कोशिश की है जो बच्चे व्यक्तिगत रूप से, जोड़े में या छोटे समूहों में कर सकते हैं या सीख सकते हैं। वे लचीले ढंग से समूहों में सहायता करने, बातचीत या संवाद करने और उन गतिविधियों का नेतृत्व करने के लिए आगे बढ़ते रहते हैं, जिनमें उनकी आवश्यकता होती है। उन्होंने घटाव के अर्थ और संक्रिया पर ज़ोर देने से पहले, घटाव की मानक विधि प्रस्तुत करने को रोका हुआ है। उन्होंने अवधारणात्मक समझ, जो कि ठोस अनुभवों से शुरू करके अभिव्यक्ति, वर्णन और प्रतीकात्मक निरूपण तक

जाती है, का उपयोग करने के लिए विभिन्न स्थितियों, परिदृश्यों व समस्याओं से उनका परिचय करवाया। उन्होंने सोचा, एक बार जब बच्चे घटाव की एक अच्छी समझ बना लेते हैं और विभिन्न संदर्भों में उसे लागू करने के लिए लचीले ढंग से संख्याओं का उपयोग कर सकते हैं, तब वे मानक विधि को बेहतर तरीके से समझने और हासिल करने में सक्षम होंगे। सत्र के बाद जब वह विचार कर रहे थे, तब उन्होंने महसूस किया कि कुछ सप्ताह के बाद मुद्रा, सिक्कों और नोटों का उपयोग करके बाज़ार के अनुभव, इस प्रक्रिया को आगे बढ़ाने का बेहतर तरीका होगा।

निर्देश– कोई समूह निश्चित नहीं है। शिक्षक, समूह को गतिशील रूप से इस आधार पर चुनता-बदलता है कि बच्चे वर्तमान में कहाँ हैं और नियोजित कार्य या समस्या या गतिविधि की उपयोगिता क्या है?

उपरोक्त गतिविधियों में शामिल सीखने के प्रतिफलों का सारांश—

(क) बढ़ती हुई संख्या रेखा पर या ब्लॉक्स व चित्रों पर 2s या 3s में 'छोड़ कर गणना करना' प्रदर्शित करना।

(ख) दहाई और इकाई के समूहों में स्थानीय मान का उपयोग करके 99 तक की संख्याओं के लिए भारतीय अंकों को पढ़ना और लिखना।

(ग) 99 तक 10s, 20s, 30s के समूहों में गिनना।

(घ) विभिन्न पैटर्न्स में समान मात्रा के प्रतीकों या बिंदुओं का उपयोग करना।

(ङ) लचीली रणनीतियों का उपयोग करना और संख्याओं के संयोजन (साथ जोड़ना) और वियोजन (समूह से निकालना) से नया संयोग (combinations) प्राप्त करना।

(च) स्थानीय मान अवधारणा का उपयोग करते हुए दो संख्याओं को जोड़ना (योगफल 99 से अधिक नहीं) और उन्हें सरल दैनिक जीवन की समस्याओं या स्थितियों को हल करने के लिए लागू करना।

(छ) स्थानीय मान का उपयोग करके 99 तक की दो संख्याओं को घटाना और उन्हें दैनिक जीवन की सरल समस्याओं या स्थितियों को हल करने के लिए लागू करना।

(ज) संख्याओं के जोड़ और घटाव के बीच संबंधों को सीखना और लागू करना।

(झ) एक परिचित स्थिति या संदर्भ में समस्याओं को हल करने के लिए उपयुक्त संक्रिया (जोड़ या घटाव) की पहचान करना।

(ञ) 100 रुपये तक की राशि बनाने के लिए नोट और सिक्के जोड़ना।

(ट) कई चरणों (एक बार में 8 से 9 निर्देश) वाले निर्देशों का पालन करना।

(ठ) एक विषय के बारे में चर्चा में शामिल होना और प्रश्न उठाना तथा उनका जवाब देना।

(ड) वयस्कों द्वारा शुरू किए गए कार्यों में भाग लेना, जो उनकी रुचियों पर आधारित नहीं होते हैं (उदाहरण के लिए, शिक्षक के नेतृत्व वाले छोटे समूह में भाग लेना)।

(ढ) लंबे समय तक (30 मिनट) किसी कार्य के साथ जुड़ाव बनाए रखना।

(ण) विभिन्न गतिविधियों को आज़माने के लिए वयस्कों के सुझावों का लगातार जवाब देना।

(त) समाधान या रणनीति खोजने में वयस्कों और अन्य बच्चों की कल्पनाओं पर विचार करना।

2.7 मेरे शरीर पर बातचीत (तमिल)

நோக்கங்கள்:

இந்த செயல்பாடுகள் குழந்தைகளில் பின்வரும் கற்றல் திறன்களை மேம்படுத்துவதை நோக்கமாகக் கொண்டுள்ளன:

- ராகத்துடன் எளிய பாடல்களைக் கேட்டல் , குழுவாக நயத்துடன் பாடி மகிழ்தல்.
- பாடல்களைக் கவனத்துடன் கருத்தூன்றிக் கேட்டுப் புரிந்துகொள்ளுதல்.
- கேட்ட/படித்த பாடல்களிலிருந்து கேட்கப்படும் எளிய வினாக்களுக்கு முழுமையான சொற்றொடரில் விடை கூறுதல்
- கேட்டவற்றுடன் தன் அனுபவங்களைத் தொடர்புபடுத்திப் பேசுதல்
- எளிய சந்தப்பாடல்களை இசையுடன் படித்தல்

செயல்பாடு 1: முன்னறிவோடு தொடர்புபடுத்துதல்

ஆசிரியர் மாணவர்களின் உடல் உறுப்புகள் குறித்த முன்னறிவைச் சோதிக்கும் வகையில் எளிய கேள்விகளைக் கேட்டுப் பதில்களைப் பெறுதல்.

கண்ணால் நானும் பார்க்கிறேன்	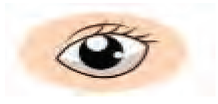
காதால் நானும் கேட்கிறேன்	
மூக்கால் நானும் முகர்கிறேன்	
நாக்கால் நானும் சுவைக்கிறேன்	
பல்லால் நானும் கடிக்கிறேன்	

வாயால் நானும் உண்கிறேன்	
கையால் நானும் எழுதுகிறேன்	
காலால் நானும் நடக்கிறேன்	
வாயால் நானும் பேசுகிறேன்	

நம் உடலில் உள்ள உறுப்புகள் யாவை? அவை எங்கெங்கே உள்ளன? (மாணவர்களை உடலுறுப்புகளின் பெயர்களைச் சொல்லவைப்பதோடு அவ்வுறுப்புகளைச் சுட்டிக்காட்டவும் செய்யவும்)

இந்த உடலுறுப்பின் பெயர் என்ன ? இது எதற்குப் பயன்படுகிறது?

செயல்பாடு 2:

ஆசிரியர் எளிய கேள்வி-பதில்கள் மூலம் 'என் உடல்' பாடலின் ஒவ்வொரு வரியையும் அறிமுகம் மாணவர்களிடையே அறிமுகம் செய்வார்.

- ஆசிரியர்: கண்ணால் நாம் என்ன செய்வோம்?
- மாணவர்: பார்ப்போம்.
- ஆசிரியர்: கண்ணால் நாமும் பார்க்கிறோம் (பாடல் வரி)
- ஆசிரியர்: காதால் நாம் என்ன செய்வோம்?
- மாணவர்: கேட்கிறோம்.
- ஆசிரியர்: காதால் நாமும் கேட்கிறோம் (பாடல் வரி)

இதே போன்று ஒவ்வொரு வரியையும் அறிமுகப்படுத்தியபின் ஆசிரியர் பாடிக்காட்ட ஆரம்பிப்பார்.

செயல்பாடு: 3 - ஆசிரியர் உடல்மொழியுடன் பாடிக்காட்டுதல்

பாடலின் ஒவ்வொரு வரியையும் தகுந்த ஏற்ற இறக்கங்களோடும் உரிய உடல் மொழியோடும் ஆசிரியர் ஓரிரு முறை பாடிக்காட்டி மாணவர்களைக் கவனிக்கச் செய்வார்.

நாம் எந்த உடல் உறுப்பால் பார்க்கிறோம்?

நாம் எந்த உடல் உறுப்பால் கேட்கிறோம் ?

மாணவர்கள் நன்கு கவனித்துப் பாடலை உள்வாங்கியபின் ஆசிரியர் மாணவர்களைப் பின்தொடர்ந்து பாடச் செய்வார். மாணவர்கள் ஆசிரியரைப் பின்தொடர்ந்து உரிய சந்தத்துடன் பாடுவார்கள்.

செயல்பாடு: 4 - ஆசிரியர் உடல்மொழியுடன் பாடிக்காட்டுதல்

ஆசிரியர் ஒவ்வொரு உடலுறுப்பையும் சுட்டிக்காட்டி அதற்குரிய பாடல்வரியை மாணவர்களைப் பாடிக்காட்டச் செய்தல்.

ஆசிரியர் கண், காது, மூக்கு முதலிய உறுப்புகளை தன் சுட்டுவிரலால் சுட்டிக்காட்டியபின் அதற்குரிய பாடல்வரியை மாணவர்களைப் பாடச்செய்தல்.

செயல்பாடு: 5 – மாணவர்களைக் குழுவாகப் பாடவைத்தல்

படங்களுடன் பாடல்வரிகள் அடங்கிய தாள்களை மாணவர்களிடையே அளித்து ஆண்/பெண்/ முதல் குழு/ இரண்டாம் குழு என மாறி மாறி பாடல் வரிகளை மாற்றி ஆசிரியர் மாணவர்களைப் பாடவைப்பார்.

கரும்பலகை: ஆசிரியர் உடல் உறுப்புகளின் பெயர்களை கரும்பலகையில் எழுதிக்காட்டி மாணவர்களை வாசிக்கச் செய்வார்.

செயல்பாடு: 6 – உடல் உறுப்புகளின் படங்களைக் காண்பித்துப் பாடவைத்தல் / பாடல்வரிகளை மாற்றிப்பாடுதல்.

ஆசிரியர் கண், காது, மூக்கு முதலிய உடல் உறுப்புகளின் படங்களை மாணவர்களிடையே காண்பித்து அதற்குரிய பாடல் வரிகளை மாணவர்களைப் பாடவைப்பார். மேலும் சிறு சிறு வினாக்களை எழுப்பி உரையாடுவார்.

கரும்பலகை: உடல் உறுப்புச் செயல்பாடுகளுக்குரிய வினைச் சொற்களைக் கரும்பலகையில் எழுதி மாணவர்களை ஆசிரியர் வாசிக்கச் செய்வார்.

பாடல்வரிகளை மாற்றிப்பாடுவதற்கான மாதிரி வரிகளை ஆசிரியர் வழங்கி மாணவர்களை பாடல்வரிகளை மாற்றிப்பாடவைப்பார்.

செயல்பாடு: 7 – மதிப்பிடுதல்

a) பாடலின் அடிப்படையில் வாய்வழி கேள்விகள் கேட்பது

எடுத்துக்காட்டு: உணவை சுவைக்க நீங்கள் எதைப் பயன்படுத்துகிறீர்கள்?

உங்கள் கால்களைக் கொண்டு என்ன செய்வீர்கள்?

b) மாணவரின் அன்றாட வாழ்க்கையுடன் தொடர்புடைய வாய்வழி கேள்விகளைக் கேட்பது

எடுத்துக்காட்டு: உங்கள் கைகளால் நீங்கள் செய்யும் பல்வேறு விஷயங்கள் என்ன?

உங்கள் குடும்ப உறுப்பினர்கள் தங்கள் கைகளால் என்ன செய்கிறார்கள்?

c) தனித்தனியாக பாடலைப் பாடுவது. மதிப்பீட்டு அளவுருக்கள் பின்வருமாறு:

மாணவர் பெயர்	குரல் ஏற்ற இறக்கம்	உடல் அசைவு	உச்சரிப்பு

d) பாடலில் ஒத்த ஓசையுடைய சொற்களை கண்டறிதல். அது போன்ற சொற்களை உருவாக்குதல

2.8 दृश्य कलाओं (Visual Arts) के लिए शिक्षण योजना (आयु 7–8)

2.8.1 सीखने के प्रतिफल

तालिका 1

सीखने के प्रतिफल	आकलन संकेतक
1. प्रतिरूपों, रंगों और डिजाइनों का प्रतिनिधित्व करने के लिए पर्यावरण का अवलोकन करते हैं।	रंगों, उनकी छवियों और उनके नामों को आस-पास की वस्तुओं और दर्शनीय स्थलों से जोड़ते हैं। बाज़ार में रंगों का अवलोकन, तुलना और मिलान करते हैं।
2. कलाकृतियाँ बनाते और देखते समय दृश्य और विषयगत विवरणों पर ध्यान देते हैं।	कोलॉज के लिए सामग्री का चयन करते समय पैटर्न, रंग और छवि के आधार पर चुनाव करते हैं जिसका वे प्रतिनिधित्व करना चाहते हैं।
3. विभिन्न सामग्रियों को कोलॉज करके विभिन्न प्रकार की बनावट बनाते हैं (6–7 वर्ष की आयु से लागू)	कोलॉज में कपड़े, कागज़, प्लास्टिक के रैपर, पत्रिकाओं के टुकड़े आदि को एक साथ रखते हैं।
4. विभिन्न पैटर्न्स को संयोजित करने और बनाने के लिए नवीन तरीकों का उपयोग करते हैं (6–7 वर्ष की आयु से लागू)	विभिन्न सामग्रियों का उपयोग करके एक ही रंग की अलग-अलग बनावट बनाते हैं; संरचित तरीके से दो या तीन सामग्रियों का कोलॉज करके दृश्य पैटर्न बनाते हैं।

2.8.2 संबंध और संयोजन (Connections and Linkages)

(क) तीसरे और चौथे सीखने के प्रतिफल 6–7 साल की आयु से लागू होते हैं और कोलॉज गतिविधियों की नींव बन जाते हैं। यद्यपि 7–8 वर्ष के आयु वर्ग में बच्चों को सामग्री के अधिक विस्तृत अन्वेषण की ओर ले जाया जाता है और वे जो विकल्प चुनते हैं, वह सीखने के प्रतिफल 1 और सीखने के प्रतिफल 2 में अपेक्षित हैं। उन्हें और अधिक पुनरावृत्तियाँ बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

(ख) इन सीखने के प्रतिफलों को संवेदी अनुभवों से संबंधित भाषा और शब्दावली विकास से भी जोड़ा जा सकता है।

2.8.3 निर्देशात्मक रणनीति

कक्षा की गतिविधियों के अलावा, इस पाठ को स्थानीय बाज़ार में एक क्षेत्र-भ्रमण और विभिन्न प्रकार के कपड़े-लत्ते इकट्ठा करने के लिए गृहकार्य द्वारा भी बढ़ाया जा सकता है।

2.8.4 विषयवस्तु

(क) इस सामग्री का औचित्य हमारे जीवन के सभी पहलुओं पर विस्तार से अधिक ध्यान देने के साथ ही उसमें मौजूद कई रंगों की खोज जारी रखने पर आधारित है। यह बच्चे को दिन के हर पल, आस-पास की वस्तुओं, सड़क पर व्यक्तियों आदि का अवलोकन करवाता है।

(ख) बच्चे विभिन्न प्रकार की सामग्रियों का उपयोग करके कोलॉज का भी पता लगाएँगे।

(ग) नज़दीकी बाज़ार का भ्रमण बच्चों को विभिन्न प्रकार की सामग्रियों और रंगों की एक सुखद खोज पर ले जाएगी।

(घ) उपयोग की गई सामग्री— कागज़, पेंसिल, रबड़, क्रेयॉन, फूल, पंखुड़ी, कंकड़ और रंगीन चॉक।

2.8.5 शिक्षण योजना और आकलन

इस पाठ योजना में हर दिन 60 मिनट के लिए, दो दिनों तक चलने वाली गतिविधियाँ शामिल हैं।

(क) पहला दिन– स्थानीय बाज़ार का क्षेत्र भ्रमण और कोलॉज से परिचय

बच्चों को पास के किसी भी सक्रिय बाज़ार में ले जाया जा सकता है, जहाँ वे अवलोकन करेंगे, नोट्स लेंगे और विभिन्न चीज़ों के चित्र बनाएँगे और व्यस्त बाज़ार में रंगों का खेल देख सकते हैं। बच्चों को वस्तुओं और सामग्रियों की बनावट को देखने या कल्पना करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

आकलन के मानदंड—

- रंगों, उनके नामों को अपने आस-पास की वस्तुओं और दर्शनीय स्थलों से जोड़ना।
- बाजार में रंगों का अवलोकन, तुलना और मिलान करना।

क्षेत्र भ्रमण के बाद, बच्चों को कोलॉज गतिविधि से परिचित कराया जाता है जो वे अगले पाठ में करेंगे, जिसके लिए उन्हें तैयारी करने की आवश्यकता है।

बच्चों को कुछ चित्र बनाने या उसकी योजना बनाने के लिए कहा जा सकता है कि वे किस तरह की कलाकृति बनाएँगे और विभिन्न सामग्रियों, रंगों और बनावटों का उपयोग कोलॉज बनाने के लिए करना चाहेंगे।

उन्हें खाली जगह छोड़कर बोल्ड चित्र बनाने के लिए कहें, जिसमें कोलॉज बनाने के लिए कागज़, कपड़े और अन्य सामग्री चिपकाई जा सके। अगले पाठ में कोलॉज बनाना जारी रखने के लिए उन्हें चित्र सुरक्षित रखने के लिए कहिए।

आकलन के मानदंड—

- भावों-विचारों को चित्रित करना।
- कोलॉज बनाने की प्रक्रिया में सामग्री की कल्पना कर उसके अनुसार चित्रों में बदलाव करना।

बच्चों को अपने कोलॉज के लिए आस-पास विभिन्न प्रकार की सामग्रियों का पता लगाने के लिए कहा जा सकता है। चयन के लिए मानदंड, रंग, बनावट और कागज़ या कार्डबोर्ड पर चिपकाने के लिए योग्यता पर आधारित होना चाहिए। उन्हें कुछ उदाहरण दें, जैसे पुराने समाचार पत्रों व पत्रिकाओं में चित्रों से रंगों के टुकड़े फाड़ना, रंगीन खाद्य रैपर इकट्ठा करना और उन्हें उपयोग के लिए साफ़ करना, एक दर्ज़ी या अपने घर से बेकार कपड़ों के टुकड़े इकट्ठा करना आदि। उन्हें अपने भाई-बहनों, दोस्तों और परिवार के सदस्यों से मदद लेने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। उन्हें अगले पाठ में अपनी सामग्री लाने के लिए कहा जाना चाहिए।

आकलन के मानदंड—

- बच्चे स्कूल के समय के बाद घर जाते समय, घर पर और समुदाय से विभिन्न प्रकार की सामग्री एकत्र करते हैं।
- बच्चे एकत्रित सामग्री को अगले पाठ में उपयोग करते हैं।

(ख) दूसरा दिन– कोलॉज गतिविधि

कक्षा में सभी को समूहों में बैठाया जाता है ताकि कैंची और गोंद दिया जा सके।

उन्हें अपने चित्रों को फिर से देखने और अपनी सामग्री को व्यवस्थित करने के लिए कहा जा सकता है। सभी बच्चों को अपनी सामग्री और विचारों को अपने सहपाठियों के साथ साझा करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

बच्चे अपनी-अपनी कलाकृतियों पर काम करते हैं, लेकिन समूह में अपनी सामग्री और उपकरण साझा करते हैं। उन्हें एक-दूसरे के काम का अवलोकन करने; नए विचारों, विधियों की खोज करने; और एक-दूसरे से सीखने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

बच्चों से बातचीत की शुरुआत कुछ इस प्रकार की जा सकती है—

- आपके पास पीले रंग की कई अलग-अलग छटाएँ हैं। आपने इन्हें कहाँ से इकट्ठा किया?
- क्या आप मुझे इस बारे में कुछ बता सकते हैं कि आप अपनी कलाकृति में रंग कैसे भरेंगे?
- क्या आप मुझे उस पैटर्न के बारे में और बता सकते हैं जो आप बना रहे हैं? क्या आपने इसे कहीं देखा है या आपने इसकी कल्पना की है?
- ऐसा लगता है कि आपके मित्र को यहाँ कुछ गहरे रंगों की आवश्यकता है। क्या आप उसे कुछ गहरे रंग खोजने में मदद कर पाएँगे?

आकलन के मानदंड—

बच्चों से बातचीत की शुरुआत कुछ इस प्रकार की जा सकती है—

- अपने कोलॉज में कपड़े, कागज़, प्लास्टिक के रैपर, पत्रिकाओं के टुकड़े आदि का मिलान करें।
- कोलॉज बनाते समय रंगों, छायाओं, पैटर्न और बनावट में भिन्नता पर ध्यान देना।
- विभिन्न सामग्रियों का उपयोग करके एक ही रंग की अलग-अलग बनावट बनाना।
- संरचित तरीके से दो या तीन सामग्रियों का कोलॉज बनाकर दृश्य पैटर्न बनाना।
- सामग्री को समायोजित करने के लिए मूल ड्राइंग में संशोधन और सुधार करना।
- कलाकृतियों के माध्यम से रोज़मर्रा की वस्तुओं और उनके परिवेश के साथ जुड़ाव बनाना।

बच्चों को अपने कार्यक्षेत्र को खाली करने और सामग्री को व्यवस्थित तरीके से वापस रखने के लिए कहा जाता है। जल्दी खत्म करने वालों से अपने साथियों की मदद करने के लिए कहा जाता है। बच्चों को अपने पूरे किए गए कार्यों को प्रदर्शित करने के लिए कहा जाता है ताकि हर कोई उन्हें देख सके।

कार्यों की सराहना करने और उनके सीखे गए कार्यों को साझा करने के लिए एक छोटी-सी समापन चर्चा शुरू की गई है।

आकलन के मानदंड—

- बच्चे रंग और बनावट के विवरण के साथ-साथ अपने साथियों की कलाकृतियों में प्रयुक्त सामग्री चुनाव की सराहना करते हैं।

- बच्चे काम करने की प्रक्रिया के माध्यम से खोजे गए तरीकों को समझते हैं और उनकी सराहना करते हैं।
- बच्चे प्राप्त सहायता की सराहना करते हैं या काम करते समय अपनी समस्याओं और चुनौतियों को व्यक्त करते हैं।

2.9 3 से 5 साल की आयु के लिए विविधता का परिचय

गतिविधियों का यह समूह उन बच्चों के लिए है, जिनके घर की भाषा हिंदी है—

दिन-1
- कहानी– पकड़ो-पकड़ो उस बिल्ली को

दिन-2
- आँख बंद कान खुले
- आइए हम स्वंय का चित्र बनाएँ

दिन-3
- हम सब हैं खास
- लुका-छुपी और काना की कहानी के अनुभवों पर चर्चा करना

दिन-4
- हम सब हैं खास
- अभिनय और भूमिकाओं में अंतर पर चर्चा करना
- लोमड़ी और सारस की कहानी

2.9.1 पहला दिन

व्हील चेयर पर एक उत्साही लड़की डिपडिप की यह कहानी दिव्यांगता को सामान्य करती है।

(क) गतिविधि– कहानी— उड़ने के लिए पंख या उड़ चली (20–25 मिनट)

टीचर– ठीक है बच्चों, चलिए उस लड़की के बारे में एक कहानी पढ़ते हैं, जिसने अपनी गाड़ी में व्हीलचेयर पर रोमांच का अनुभव किया था।

कापी नाम की बिल्ली खो गई है और डिपडिप उसे खोजने में अपनी दोस्त मिमो की मदद करना चाहती है। वह कापी की तलाश में उत्साहपूर्वक अपनी व्हीलचेयर पर घूमती है। डिपडिप हर जगह देखती है, और अंत में वह कापी को एक पेड़ के ऊपर पाती है। लेकिन डिपडिप को फुसलाने के लिए एक शरारती बिल्ली से भी ज़्यादा वक्त लगता है और वह इस बात को नहीं भूलेगी कि वह व्हीलचेयर पर है।

एक आम लेकिन खास लड़की की कहानी बताने वाली किताब काफी हौसला देने वाली है। यद्यपि व्हीलचेयर पर वह अपने जीवन का प्रबंधन कर सकती है। उसे आपकी मदद की आवश्यकता है, लेकिन उतनी ही जितना किसी और बच्चे को हो सकती है।

इस पूरी कहानी का सस्वर पाठ इस लिंक पर मिलेगा— https://www.youtube.com/watch?v=HPzK3ooyJ2A

शिक्षक– डिपडिप को क्या मज़ा आया! क्या आप सभी ने कभी ऐसा मज़ा किया है?

पहला बच्चा– एक बार जब मैं एक मुर्गी का पीछा कर रहा था...

दूसरा बच्चा– जब भी हम पकड़म-पकड़ाई खेलते हैं...

शिक्षक– हाँ, चलो कल एक खास तरह की पकड़म-पकड़ाई खेलते हैं। क्या आपने आँख-मिचौली खेली है? हमें बारी-बारी से अपनी आँखों पर पट्टी बाँधनी होगी और अन्य खिलाड़ियों को पकड़ना होगा।

2.9.2 दूसरा दिन

(क) गतिविधि 1– आँखें बंद-कान खुले (40–45 मिनट)

आँख-मिचौली बच्चों के बीच एक पुराना और लोकप्रिय बाह्य खेल है। इस खेल में, एक बच्चा जो 'खोजने वाला' होता है, उसकी आँखों पर कपड़े से पट्टी बाँधी जाती है और उसे सभी बच्चों के बीच से एक बच्चे को पकड़ना होता है। अन्य सभी बच्चे तितर-बितर हो जाते हैं और 'खोजने वाले' का पीछा करने और उन्हें पकड़ने के लिए शोर मचाते हैं। जैसे ही वह किसी दूसरे खिलाड़ी को पकड़ लेता है, 'खोजने वाले' की बारी समाप्त हो जाती है। अब यह दूसरा खिलाड़ी 'खोजने वाला' बन जाता है और खेल तब तक जारी रहता है जब तक कि हर कोई खेल को समाप्त करने का निर्णय नहीं ले लेता।

यह खेल संवेदी कौशल और सतर्कता विकसित करने में मदद करता है। 'साधक' को सुनाई देने वाली ध्वनियों के आधार पर अंतर का निर्णय करना चाहिए।

विविधता– बच्चे एक पैर वाली दौड़ अथवा एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचने के लिए एक पैर पर कूदना भी खेल सकते हैं।

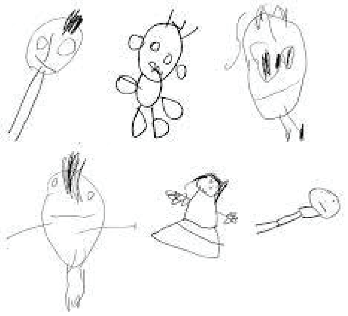

चित्र क

चित्र ख

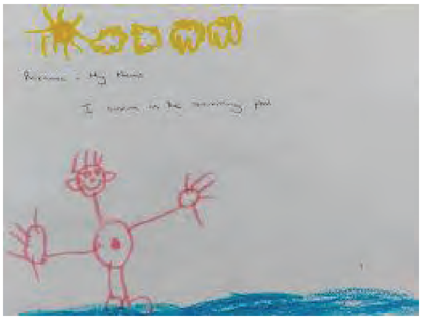

चित्र ग

(ख) गतिविधि 2– आइए हम स्वयं का चित्र बनाएँ (15–20 मिनट)

शिक्षक बच्चों को कागज़ और क्रेयॉन वितरित करता है।

शिक्षक– अब बच्चे कल्पना करें कि हम कैसे दिखते हैं, आइए आँखों पर पट्टी बाँधे हुए अपना चित्र बनाते हैं।

बच्चे पहली कक्षा में हैं, उनके चित्र बहुत अधिक परिष्कृत नहीं हैं, लेकिन पेंसिल, क्रेयॉन या पेंटब्रश पकड़ते समय उन्हें अच्छा नियंत्रण विकसित करना चाहिए। वे कुछ इस प्रकार से रेखाएँ खींच सकते हैं—

चित्र किसी भी आकार या संरचना का हो सकता है। जब बच्चे अपने रेखाचित्र बना रहे हों, शिक्षक को प्रत्येक मेज़ पर जाना चाहिए। उसे चित्र 'क' या 'ख' जैसा कुछ मिल सकता है। शिक्षक बच्चों से बात करेगा और बच्चे चित्र के बारे में जो कुछ भी समझाएँगे, उसे वह लिखेगा। उनकी व्याख्या जानने के लिए 'ओह! यह अच्छा है, आपने यहाँ

क्या बनाया है, राहुल?’ तथा ‘वाह! रज़िया, क्या इस चित्र में आप हैं? आँखें बंद करते हुए आप क्या महसूस कर रहे थे?’ जैसे सवाल भी शिक्षक पूछ सकते हैं।

शिक्षक को तब बच्चों से एक-दूसरे के काम को देखने के लिए कहना चाहिए और सराहना करनी चाहिए कि उन्होंने स्वयं को कैसे बनाया है।

शिक्षकों को गतिविधियाँ मोटे तौर पर उनके द्वारा तय किए गए समय में समाप्त कर देनी चाहिए। यदि कोई बच्चा अधिक चित्र बनाने पर ज़ोर देता है तो वह अपने पोर्टफ़ोलियो में शीट रख सकती है और शिक्षक उन्हें अपने खाली समय में इसे खत्म करने के लिए कह सकता है। इस तरह से शिक्षक अलग-अलग गति से काम करने वाले सभी बच्चों को अलग-अलग समय प्रदान कर सकते हैं।

2.9.3 तीसरा दिन

(क) गतिविधि 1– दिखावे और विभिन्न भूमिकाओं में अंतर पर चर्चा। लोमड़ी और सारस की कहानी (पंचतंत्र)।

एक दिन, एक लोमड़ी ने अपने घर पर एक सारस को रात के खाने के लिए आमंत्रित किया। सारस निमंत्रण पाकर खुश हुआ और तुरंत तैयार हो गया। लोमड़ी रसोई से बाहर आई और दो चपटी तश्तरियों में खीर परोस लाई। परोसकर वह स्वयं भी खीर का आनंद लेने बैठ गई। सारस अपनी लंबी चोंच के कारण खीर नहीं खा सकता था। लोमड़ी ने अपनी खीर चट कर दी और सारस देखता रह गया। अगले दिन, सारस ने लोमड़ी को रात के खाने पर आमंत्रित किया। सारस ने खीर से भरे दो जग लाकर रखे। जग की लंबी सँकरी गर्दन थी। न तो लोमड़ी जग में अपना थूथन डाल सकती थी और न ही उसकी जीभ नीचे तक पहुँच पा रही थी। लोमड़ी भूखी घर लौट आई।

पूरी कहानी यहाँ उपलब्ध है–https://www.youtube.com/watch?v=v5-kJSy6Yw8&ab_channel=KiddaTV

दोनों दिन, दोनों दोस्त एक-दूसरे के घरों से भूखे-प्यासे लौटते हैं क्योंकि उन्हें एक-दूसरे की खास व्यवस्था पसंद नहीं आई थी।

शिक्षक– देखो बच्चों, हम सब एक जैसे हैं फिर भी अलग हैं। हममें से किसी की आँखें भूरी हैं, किसी की काली, किसी के घुँघराले बाल तो किसी के सीधे, किसी के लंबे और किसी के छोटे। हमें स्वयं को और अपने दोस्तों को, वे जैसे हैं वैसे ही स्वीकार करना चाहिए।

3. सीखने को समझना

विभिन्न शिक्षक अपने बच्चों के सीखने, समझने और आगे बढ़ाने के लिए कक्षा में आकलन का उपयोग कैसे कर रहे हैं, इस अनुभाग में इसके नमूने दिए गए हैं।

3.1 भाषा के लिए कार्यपत्रक का उपयोग करना, 7–8 वर्ष की आयु हेतु

एक भाषा शिक्षक के रूप में पढ़ने और लिखने में बच्चों की धाराप्रवाहिता विकसित करने में सहायता करना पाठ्यचर्या का एक मुख्य उद्देश्य है। मैं जिस कक्षा 2 (7–8 वर्ष के बच्चों) को पढ़ाता हूँ, उन्हें किसी चित्र या चित्रों के अनुक्रम का वर्णन करने के लिए छोटे वाक्य लिखने में सक्षम होना चाहिए।

वे किस तरह अपना कार्य कर रहे हैं (यहाँ एक कार्यपत्रक पर कार्य करना) मुझे इस बात का स्पष्ट प्रमाण देता है कि वे कहाँ हैं और मुझे उनकी शिक्षा को आगे बढ़ाने के लिए क्या करने की आवश्यकता है? यहाँ मेरी कक्षा-2 के एक बच्चे नीरज के माध्यम से ऐसे कार्य का उदाहरण दिया गया है।

इससे ऐसी कई बातें निकलकर आती हैं, जिनकी मैं व्याख्या कर सकता हूँ। उदाहरणार्थ वह वर्णनात्मक भाषा का उपयोग करने का प्रयास करता है; उसकी वर्तनी अधिकांश शब्दों के लिए सही है, जिन्हें ध्वन्यात्मक रूप से सुना जा सकता है और वह कई दृष्ट शब्दों पर अपना नियंत्रण दिखाता है। वह वाक्य लिखते समय चित्र या विषय पर ही बना रहता है, अंग्रेज़ी के बड़े अक्षरों (capital letters) का उपयोग करता है और सभी वाक्यों के अंत में विराम चिह्न का उपयोग करता, 'a' वर्ण का स्थान निर्धारण के साथ प्रयोग करता है। दिए गए चित्र के बारे में नीरज का बहुत कुछ कहना है, लेकिन उसने बिना विविधता के एक सूची रूप में लिखा है।

इसी के आधार पर मुझे नीरज को कई तरह से ढाँढ़स बँधाना है। उदाहरणार्थ, मुझे उसके लेखन को अधिक रोचक बनाने के लिए 'दर्शकों या पाठकों' की भावना विकसित करने में सहायता करने की आवश्यकता है, जैसे– मैं यह क्यों और किसके लिए लिख रहा हूँ? मुझे उसके दो छोटे वाक्यों को एक लंबे वाक्य में संयोजित करने, नामों को सर्वनामों से बदलने और a/an जैसे आर्टिकल्स के उपयुक्त उपयोग पर कार्य करने की आवश्यकता है। मुझे उसे 'यह क्रिया कहाँ हो रही है, चित्र में क्या हो रहा है', जैसे प्रश्न पूछकर चित्र के और अधिक पहलुओं के बारे में लिखने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

He	in	on	she
playing	eating	sleeping	jumping
catching	mango	fruits	children
bench	throwing	ball	

Make sentences or a story on picture in own words with the help of given words

Mona was a Playing

Neeraj was Boll catching

Anshu was a eating a Mango

Haldi was a Siting

Harshita was a wadaning

3.2 भाषा के लिए आकलन का नमूना, 7–8 वर्ष की आयु के बच्चों हेतु

मैं अपनी कक्षा 2 (7–8 वर्षीय) विद्यार्थियों के साथ अंग्रेज़ी पर अपने कार्य में बहुत सारे कार्यपत्रकों का उपयोग करता हूँ। ऐसे ही एक कार्यपत्रक में बच्चों को कोई चित्र बनाना और कुछ वाक्यों में उसका वर्णन करना शामिल था। मैथ्यू की प्रतिक्रिया निम्नलिखित है—

इस कार्य के लिए प्रत्येक 'सीखने के प्रतिफलों' के प्रति प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण किया गया है और नीचे तालिका में प्रस्तुत किया गया है। जैसा कि इस आकलन में व्याख्या की गई, मैंने मैथ्यू की सीखने की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कुछ गतिविधियों और अगले चरणों की भी योजना बनाई।

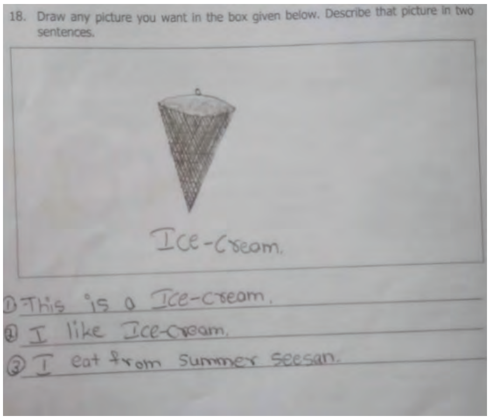

तालिका 1

	सीखने के प्रतिफल	प्राप्ति (प्राप्त/आगे सहायता की आवश्यकता है)	औचित्य
1.	निर्देशों को सुनते हैं और चित्र बनाते हैं।	प्राप्त	मैथ्यू ने निर्देशों में बताया गया या शिक्षक द्वारा समझाया गया एक चित्र बनाया है।
2.	सरल, छोटे वाक्य बनाते और लिखते हैं।	प्राप्त	मैथ्यू सुसंगत, सार्थक और अभिव्यंजक वाक्य लिखने में सक्षम है, यद्यपि उनमें कुछ गलतियाँ हैं। वाक्यों में शब्दों के बीच उचित अंतराल होता है, अंग्रेजी के एक बड़े अक्षर (capital letter) से शुरू होता है और एक पूर्ण विराम के साथ समाप्त होता है।
3	लिंग से संबंधित सर्वनामों, जैसे– 'his/ her/, 'he/she', 'it' और 'this/that', 'here/there' 'these/those' आदि अन्य सर्वनामों का उपयोग करते हैं।	प्राप्त	मैथ्यू ने वाक्य में 'I' और 'This' का उचित प्रयोग किया है।
4	'before'और 'between'' आदि जैसे– पूर्वसर्गों का उपयोग करते हैं।	सहायता की आवश्यकता है।	मैथ्यू ने तीसरे वाक्य में 'from' पूर्वसर्ग का गलत उपयोग किया है।

सारांश	
बच्चा क्या जानता है या क्या कर सकता है।	विचारों को अर्थपूर्ण ढंग से व्यक्त करता है और विचारों को क्रमबद्ध रूप से व्यवस्थित करता है। पसंद-नापसंद व्यक्त करता है। अंग्रेज़ी में घोषणात्मक वाक्यों के लिए उपयुक्त वाक्य संरचना का उपयोग करता है।

बच्चा क्या नहीं जानता क्या नहीं कर सकता है।	अंग्रेज़ी के बड़े व छोटे अक्षरों (capital and small letters) के प्रयोग में लगातार अंतर करने और सामान्य व विशिष्ट संज्ञाओं के बीच अंतर करने में असमर्थ है। स्वर और व्यंजन के पहले 'a' और 'an' के प्रयोग में अंतर नहीं कर पाता। उपयुक्त पूर्वसर्गों में मदद की आवश्यकता है, जैसे 'from' का उपयोग करना। कभी-कभी आविष्कृत वर्तनी का उपयोग करता है, उदाहरण के लिए 'seeson'।

अगला चरण—

- निर्धारित करें कि क्या मैथ्यू को सामान्य और विशिष्ट संज्ञाओं की समझ है? क्या उसमें सामान्य और विशिष्ट संज्ञाओं को अंग्रेज़ी के बड़े अक्षर से लिखने की समझ है। उसे अतिरिक्त कार्यपत्रक देकर उसके द्वारा किए गए कुछ और कार्यों का विश्लेषण करें।
- मौखिक रूप में विचार व्यक्त करने के लिए और उसे प्रोत्साहित करने के लिए चित्र पुस्तकों का अधिक उपयोग करें। उसे अपनी नोटबुक में लिखने के लिए प्रेरित करें और जहाँ भी आवश्यक हो, सहायता प्रदान करें।
- उचित रूप से उपयोग करने के नियमों को समझने में उनकी सहायता के लिए 'a', 'an', and 'the' के उपयोग वाले विशिष्ट उदाहरणों पर चर्चा करें। आमतौर पर उपयोग किए जाने वाले पूर्वसर्गों को संशोधित करें।

3.3 गणित के लिए आकलन का नमूना, 7–8 वर्ष की आयु हेतु

मेरे बच्चों को मात्राओं, आकृतियों व मापों के माध्यम से विश्व को पहचानने के लिए गणितीय समझ और दक्षताओं को विकसित करने की आवश्यकता है। इसमें लचीली रणनीतियों का उपयोग करके दो अंकों की संख्याओं का आसानी से जोड़ और घटाव करने की दक्षता शामिल है। मेरी कक्षा (7–8 वर्ष के बच्चों) में मैंने एक समस्या पर कार्य किया, जिसमें हासिल लेना और दहाई के स्थान से उधार लेना शामिल था।

संजीव ने इस तरह उत्तर दिया— 63–44 = 21

मैंने बच्चे की सीखने की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कुछ गतिविधियों और अगले चरणों की भी योजना बनाई। इस प्रतिक्रिया का विश्लेषण नीचे दी गई तालिका में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका 1

	सीखने के प्रतिफल	प्राप्ति (प्राप्त/आगे सहायता की आवश्यकता है)	औचित्य
1.	दो-अंकों की संख्याओं को लिखने और तुलना करने में स्थानीय मान का उपयोग करते हैं।	सहायता की आवश्यकता है।	ऐसा लगता है कि संजीव ने दहाई और इकाइयों को लिखित रूप में सही ढंग से दर्शाया है, लेकिन हल करते समय स्थानीय मान की समझ विकसित नहीं की है। बच्चे ने यह महसूस नहीं किया है कि 63 का इकाई स्थान 44 के इकाई के स्थान से कम है।

2.	दो-अंकों की संख्याओं के घटाव पर आधारित सरल प्रश्नों को हल करते हैं।	सहायता की आवश्यकता है।	ऐसा लगता है कि संजीव ने दो और एक-अंकीय संख्याओं के बीच के अंतर को याद कर लिया है, लेकिन यह नहीं समझ पाया कि घटाव में हासिल लेने की समस्याओं को कैसे किया जाए।
सारांश			
बच्चा क्या जानता और कर सकता है।	जानता है कि घटाव का परिणाम एक संख्या है, जो दी गई दो संख्याओं के मूल्यों से कम है। ऐसा लगता है कि उसने दो-अंकों की संख्या के दहाई और इकाई के स्थानों को सही ढंग से दर्शाया है। ऐसा लगता है कि दो और एक-अंकीय संख्याओं के बीच के अंतर को उसने याद कर लिया है।		
बच्चा क्या नहीं जानता और नहीं कर सकता है।	यह समझ में नहीं आया कि हासिल लेना तभी निष्पादित किया जाना चाहिए, जब बड़ी संख्या का इकाई स्थान छोटी संख्या के इकाई स्थान से कम हो। उसने यह सत्यापित नहीं किया है कि अंतर और छोटी संख्या का योग बड़ी संख्या होता है।		
संजीव को सीखने के लिए आगे के चरण— • ठोस सामग्री के माध्यम से हासिल लेने और उधार लेने की समस्याओं का चित्रण करें। • एकल अंकों के घटाव को फिर से देखें और फिर धीरे-धीरे दोहरे अंकों के सवाल की ओर बढ़ें। • उसे जोड़ और घटाव का उपयोग करके सरल समस्याएँ बनाने के लिए प्रोत्साहित करें और उन्हें हल करने का प्रयास करने दें। • उसे मोना के साथ काम करने को कहें, उन्हें जोड़ और घटाव कार्यपत्रकों को हल करने के सहयोगी कार्य दें।			

3.4 शिक्षक का वर्णनात्मक सारांश, 5–6 वर्ष की आयु के बच्चों हेतु

तालिका 1

बच्चे की प्रोफाइल	
बच्चे का नाम	सुरुचि
कक्षा	एल.के.जी. (अब वह यू.के.जी. में है)
अनुक्रम	XX XX XXXX
लिंग	स्त्री
जन्मतिथि	DD/MM/YYYY
माता का नाम	गीता दास
पिता का नाम	विजय दास

<table>
<tr><td>घर का पता</td><td>क, ख, ग...</td></tr>
<tr><td>संपर्क नंबर</td><td></td></tr>
<tr><td>भाई-बहन</td><td>कोई नहीं</td></tr>
<tr><td colspan="2">प्रगति का सारांश—
बच्चे की विशेष रुचियाँ और प्रतिभाएँ– सुरुचि एक शांत और शर्मीली बच्ची है। वह घर पर अपने भाई-बहनों के साथ खेलना और कार्टून देखना पसंद करती है। उसे घर की सामग्री, जैसे– गुड़ियों आदि से खेलने में आनंद आता है।
जिन क्षेत्रों पर ध्यान देने की आवश्यकता है– सुरुचि परिवार में सबसे छोटी है, इसलिए परिवार के अन्य सभी सदस्य उसे लाड़-प्यार करते हैं। वह स्वभाव से थोड़ी जिद्दी है और उसे भावनाओं के नियमन में समर्थन की आवश्यकता होती है। जो उसका सामान ले जाते हैं, उन्हें वह कभी-कभी काट भी लेती है।</td></tr>
<tr><td>प्रगति का विवरण</td><td></td></tr>
<tr><td>विकास का क्षेत्र</td><td>बच्चे का विकास</td></tr>
<tr><td>सामान्य व्यवहार</td><td>सुरुचि बहुत ही शांत, चुप रहने वाली, जो बहुत समय लेकर लोगों के साथ घुलती-मिलती है। वह काफी समय लेकर लोगों के साथ सहज होती है और सहज होने के बाद कुछ-कुछ बातें साझा करती है। कक्षा में भी वह प्रतिभाग करती है और प्रश्नों के जवाब देती है। शुरुआत में जब वह मम्मी के साथ आती थी, तो ही सहज हो पाती थी वरना वह एक शब्द भी नहीं बोलती थी। घुलने-मिलने के बाद सुरुचि छोटे समूहों में शायद सहज हो पाएगी, लेकिन अगर उसके मन की इच्छा पूरी न हो, तो वह झगड़ा कर लेगी। अपनी बातों को रखने के लिए उसे अभी भी सहायता की आवश्यकता पड़ती है।</td></tr>
<tr><td>परिवार</td><td>सुरुचि एक संयुक्त परिवार में रहती है, उसके परिवार में उसके माता-पिता, दादा-दादी, ताऊ-ताई और उनके 2 बच्चे एवं 2 सगी बहनें हैं। सुरुचि के दादा, पिता, ताऊ सभी लोग कृषि करते हैं और कंपनी में कार्य करने जाते हैं। सुरुचि की माता, दादी और अन्य सदस्य घर का कार्य करते हैं, इन्होंने घर पर जानवर भी पाल रखे है। सुरुचि अपने परिवार के साथ दुर्गापुर में एक पक्के मकान में रहती है, जिसमें 2-3 कमरे, किचन आदि बने हैं।</td></tr>
<tr><td>शारीरिक विकास</td><td>सुरुचि का शारीरिक विकास अपनी आयु के अनुसार हो रहा है। उसका सूक्ष्म माँसपेशीय कौशल अभी विकसित हो रहा है, वह अच्छे से पेंसिल पकड़ पाती है और चित्र में दी गई बाउंड्री के भीतर रंग भरने की कोशिश करती है। सकल माँसपेशीय कौशल भी विकसित हो रहा है, संतुलन वाली गतिविधियों में सुरुचि को अभी और अभ्यास करने की आवश्यकता है। वह धैर्य के साथ गतिविधियों को करने की कोशिश करती है। सरल गतिविधियों को बहुत ही आसानी से कर लेती है, किंतु जहाँ भी एक से अधिक कार्य होते हैं, उसमें वह थोड़ा-सा अटक जाती है।</td></tr>
<tr><td>सामाजिक-भावनात्मक विकास</td><td>सुरुचि चुपचाप, शांत अपनी दुनिया में खोए रहती है, वह किसी-न-किसी चीज़ से खेलती रहती है। वह लोगों के साथ बहुत समय लेकर घुलती-मिलती है और फिर सहज हो कर कुछ-कुछ बातें शुरू करती है। वह बहुत ध्यान से बातें सुनती है, समझती है, लेकिन उन पर प्रतिक्रिया अपने अनुसार ही देती है। जब वह आपसे पूरी तरह सहज हो जाएगी तब वह आपसे कुछ-कुछ शब्दों में बातें करेगी। घूमने के दौरान भी वह बातें सुनती है और जब कुछ पूछो तो सहज होने पर ही कुछ जवाब देती है।</td></tr>
</table>

संज्ञानात्मक विकास	सुरुचि के सीखने का कौशल आयु के अनुसार विकसित हो रहा है। वह धीरे-धीरे समय लेकर चीज़ों को सीख लेती है! उसकी कौशल की बात की जाए, तो वह अभी बोलती नहीं है इसलिए इसका आकलन अभी सही से नहीं हो पाया है। जिस दिन वह बोलती है उस दिन वह काफी बेहतर तरीके से बताती है, यदि उसका मूड नहीं है, तो वह कुछ नहीं बताती है। लेकिन जब उससे कार्य करवाया जाता है, तब अक्षरों को सही बनावट में लिखने के लिए अभी और अभ्यास की आवश्यकता है।
भाषा का विकास	सुरुचि का भाषाई विकास उसकी आयु के अनुसार सही है। वह अपने घरवालों के साथ पूरे वाक्यों में अपनी बातें बोल पाती है। कविता को लय और हाव-भाव के साथ थोड़ी सहायता से गा लेती है। अपनी बातें स्पष्टता से बोल पाती है। घर में घरवालों से काफी खुलकर बात करती है और बिना झिझक उनसे पूछ भी लेती है। अभी वह विद्यालय में किसी से अधिक बात नहीं करती है, बस कक्षा में खिलौने, किताबों, जैसी सभी चीज़ों से खेलती है।
सौंदर्यबोध और सांस्कृतिक विकास	सुरुचि को चित्र बनाने, वस्तुओं और खिलौनों को सजाने तथा रचनात्मकता वाले कार्यों जैसे क्ले मॉडलिंग आदि का बेहद शौक है। उसे वस्तुओं को बनाने, सही से रखने आदि में मज़ा आता है।
सत्रवार प्रगति रिकॉर्ड	
जुलाई–सितंबर	...
अक्तूबर–मार्च	सुरुचि शुरुआत में बात नहीं करती थी। वह कक्षा में किसी से भी बात नहीं करती थी। वह अपनी दुनिया में खोई रहती थी। बच्चों को देखकर कभी-कभी गतिविधि में प्रतिभाग करती थी। वह शांत थी, तो सभी उसे पसंद करते थे। यहाँ तक कि टॉयलेट आदि के लिए भी नहीं बोलती थी। वह पूरे दिन बिना टॉयलेट किए रहती थी। धीरे-धीरे उसे कक्षा में अपना नाम बोलने, उपस्थिति के दौरान 'हाँ' या 'ना' आदि में जवाब देने के लिए भी प्रोत्साहित किया गया। अब वह कविता भी सुनाने लगी है, किंतु अभी भी वह केवल 'हाथी राजा' को ही जल्दी से सुनाकर बैठ जाती है, किंतु कक्षा में अब वह सभी गतिविधियों में प्रतिभाग करती है और खुश होकर अपनी बातें बताती है।
अंतिम सत्र– संचयी आकलन	सुरुचि शांत और अपनी दुनिया में खुश रहने वाली बच्ची है। कक्षा में ध्यान से बातें सुनती है, कक्षा में उसे जोड़े रखने के लिए बीच-बीच में पूछना पड़ता है। चित्र बनाना, रंग करना और ब्लॉक्स से खेलना उसे पसंद है। अपनी बातें समूह में रखने लगी है और स्वयं से पहल करने लगी है। पठन-पाठन अपने परिवार, कक्षा के बारे में बता पाती है। कविताओं को हाव-भाव के साथ स्वयं से सुना पाती है। थीम आधारित चीज़ों, जैसे– फलों, सब्ज़ियों, जानवरों, दिनों, महीनों के नाम भी बता पाती है। अपने नाम को अंग्रेज़ी में पहचान कर सहायता के साथ लिख पाती है। कहानी सुनना पसंद करती है और चित्रों के माध्यम से पुस्तकों को पढ़ती है। शब्दों में उसके पहले अक्षर और उसमें आने वाले अक्षरों की ध्वनियों को सुनकर बता पाती है। कार्यपत्रक में सुनकर स्वयं से मिलान कर पाती है, वर्गीकरण और तुलना के कौशलों को कर पाती है। ट्रेसिंग का कार्य और रंगों को दिए गए चित्र के भीतर भर पाती है। गणित में 20 तक मौखिक रूप से, 10 तक के अंकों की पहचान और 5 तक के अंकों का सह-संबंध कर पाती है। अंग्रेज़ी की वर्णमाला के अक्षरों को क्रम में सुना पाती है और अंग्रेज़ी के बड़ी वर्तनी के अक्षर (uppercase letters) को भी पहचान पाती है।

कक्षा आकलन के दौरान— नमूना

तालिका 2

कार्यक्षेत्र— भाषा, संज्ञानात्मक, रचनात्मक		
	मौखिक	सुरुचि
1.	परिचय– नाम, वर्ग, परिवार, भावनाएँ	हाँ, विद्यालय और घर के बारे में जानती है
2.	पसंदीदा चीज़ें– मुझे पसंद हैं।	गोभी, अध्ययन, गुब्बारे का खेल, बुलबुला शूट आदि
3.	कम-से-कम 3–4 हिंदी कविता गाएँ	2–3 हाथी, मछली जल, आलू कचालू आदि
4.	1–2 अंग्रेज़ी कविता गाएँ	2 जॉनी, ट्विंकल
5.	अंग्रेज़ी में अपने नाम की पहचान करने में सक्षम	हाँ
6.	अंग्रेज़ी में अपना नाम लिखने में सक्षम	नहीं
7.	हिंदी में अपने नाम की पहचान करने में सक्षम	नहीं
8.	हिंदी में अपना नाम लिखने में सक्षम	नहीं
9.	पुस्तक का उन्मुखीकरण	हाँ
10.	पसंदीदा पुस्तक	छोटा चूहा और बड़ा शेर
11.	चित्रों के माध्यम से कहानी सुनाना	हाँ, केवल चित्र पढ़ना
12.	पाठ पर अँगुलियाँ फेरते हुए कहानी का वर्णन करना	नहीं
13.	कहानी और मुख्य पात्र को सार रूप में बताने में सक्षम	नहीं
14.	कहानी से प्रश्न के उत्तर बताने में सक्षम	हाँ
15.	कहानी या घटना के कम-से-कम 4–5 चित्र अनुक्रमण	नहीं
16.	प्रत्येक चार्ट से हिंदी और अंग्रेज़ी में चित्र पहचान, कम से कम 10 चार्ट	फल, सब्ज़ियाँ, जानवर, रंग आदि
17.	खेल कविता, कहानी को पूरा करें	हाँ, वर्णमाला, गिनती, सप्ताह के दिन, कविताएँ आदि
18.	ध्वनि पहचान– प्रारंभिक और पाठ्यक्रम	हाँ

19.	अंग्रेज़ी चार्ट वर्णमाला क्रम में पढ़ने में सक्षम	
20.	हिंदी चार्ट अक्षर को क्रम से पढ़ने में सक्षम	
21.	चार्ट संख्याओं को क्रम से पढ़ने में सक्षम	
22.	अक्षरों को क्रम से याद करने में सक्षम	हाँ
23.	मौखिक रूप से 20 तक गिनने में सक्षम	हाँ
24.	कम-से-कम 5 तक अर्थपूर्ण रूप से गिनने में सक्षम	हाँ
25.	गणित-पूर्व अवधारणाएँ, जैसे– बड़ी, छोटी, लंबी, छोटी, छँटाई, समूहीकरण, भारी-हल्का, पैटर्न और कम या अधिक	हाँ
26.	मुद्रा पहचानना	

4. शिक्षक को सक्षम बनाना

इस खंड में क्षमता संवर्द्धन के विभिन्न तरीकों के माध्यम से शिक्षकों को सक्षम बनाने के कुछ उदाहरण दिए गए हैं। शिक्षक का पेशेवर विकास प्रासंगिक होना चाहिए, ताकि शिक्षकों की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूर्ण किया जा सके। जैसा कि इस अनुलग्नक के अन्य भागों के साथ है, यह केवल कुछ संभावित उदाहरण हैं, व्यापक या निर्देशात्मक विवरण नहीं हैं।

4.1 शिक्षक संगोष्ठियाँ

शिक्षक संगोष्ठी सतत् व्यावसायिक विकास के तरीकों में से एक है। यह शिक्षकों के लिए अपने अनुभव और कार्यों को अपने साथियों के साथ साझा करने का एक अवसर है। यह उनके आत्मविश्वास का निर्माण करती है, उनके स्वयं के अभ्यास को बेहतर बनाने में सहायता करती है और उन्हें नए कार्यों को सीखने में सहायता करती है।

यह ब्लॉक या ज़िला स्तर पर वार्षिक या द्विवार्षिक रूप से आयोजित किया जाने वाला एक-दिवसीय कार्यक्रम हो सकता है। ऐसी संगोष्ठियों का आयोजन करने की प्रक्रिया के उदाहरण के तौर पर कम-से-कम तीन महीने पहले संगोष्ठी की घोषणा की जानी चाहिए। इसके बाद शिक्षकों को निमंत्रण भेजने की आवश्यकता होगी। उसके बाद समीक्षा व गुणवत्ता और प्रासंगिकता के आधार पर प्रस्तावों को अंतिम रूप देना होगा। संगोष्ठी को अलग-अलग विषयों में विभाजित किया जा सकता है, विषय में प्रत्येक उप-विषय के लिए प्रस्तुतियों और चर्चाओं को एक साथ जोड़ा जा सकता है और प्रत्येक विषय पर एक संचालक, संचालन कर सकता है।

शिक्षक महत्वपूर्ण विषयों पर तैयारी करके पर्चा प्रस्तुत कर सकते हैं, जैसे—

(क) बुनियादी स्तर पर बच्चों के लिए एक विशिष्ट दिन के लिए प्रभावी योजना

(ख) स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्री और शिक्षक द्वारा विकसित सामग्री का प्रभावी ढंग से उपयोग करना

(ग) साक्षरता-पूर्व और संख्या-पूर्व कौशल, प्रारंभिक साक्षरता या प्रारंभिक संख्या ज्ञान सीखना-सिखाना

(घ) अभिभावक या समुदाय की भागीदारी कैसे बढ़ाएँ।

4.2 शिक्षक मेला

शिक्षक मेला एक-दिवसीय आयोजन है, जहाँ शिक्षक सीखने व सिखाने पर जीवंत और रोमांचक प्रदर्शन सत्रों की एक शृंखला में भाग लेते हैं। इन सत्रों में शिक्षक अपने द्वारा निर्मित कार्यों और सीखने-सिखाने की सामग्री को प्रदर्शित करते और समझाते हैं। शिक्षक मेले का उपयोग शिक्षक अभ्यासों को प्रदर्शित करने के लिए किया जा सकता है। उदाहरण के लिए नाटक, बातचीत, कहानी, गीत, कला, शिल्प या साक्षरता-पूर्व और संख्या-पूर्व कार्य आदि।

एक-दिवसीय मेले के संभावित डिज़ाइन में विभिन्न विषयों वाले एक-एक घंटे के चार सत्र शामिल हो सकते हैं, जिन्हें दिन में चार बार दोहराया जा सकता है। प्रत्येक सत्र में दो शिक्षक सुगमकर्ता हो सकते हैं। 30–40 शिक्षकों का एक समूह, एक सत्र से दूसरे सत्र में जा सकता है।

तालिका 1

सुबह 9:30 से 10:45	प्रतिभागी पंजीकरण			
सुबह 10:45 से 11:45	खेल, पेंटिंग, शिल्प संगीत, शारीरिक गतिविधियाँ	स्क्रिबलिंग, रंग, समूह, समानता और भिन्नता	कहानियाँ, कविताएँ, गीत, पहेलियाँ	पैटर्न, आकार, मिलान, बड़ा-छोटा, मोटा-पतला, निकट-दूर
सुबह 11:45 से दोपहर 12:45	पैटर्न, आकार, मिलान, बड़ा-छोटा, मोटा-पतला, निकट-दूर	खेल, पेंटिंग, शिल्प संगीत, शारीरिक गतिविधियाँ	स्क्रिबलिंग, रंग, समूह, समानता और भिन्नता	कहानियाँ, कविताएँ, गीत, पहेलियाँ
दोपहर 12:45 से 1:45	मध्याह्न भोजन			
दोपहर 1:45 से 2:45	कहानियाँ, कविताएँ, गीत, पहेलियाँ	पैटर्न, आकार, मिलान, बड़ा-छोटा, मोटा-पतला, निकट-दूर	खेल, पेंटिंग, शिल्प संगीत, शारीरिक गतिविधियाँ	स्क्रिबलिंग, रंग, समूह, समानता और भिन्नता
दोपहर 2:45 से 3:45	स्क्रिबलिंग, रंग, समूह, समानता और भिन्नता	कहानियाँ, कविताएँ, गीत, पहेलियाँ	पैटर्न, आकार, मिलान, बड़ा-छोटा, मोटा-पतला, निकट-दूर	खेल, पेंटिंग, शिल्प संगीत, शारीरिक गतिविधियाँ
दोपहर 3:45 से 4:30	पैनल चर्चा और समापन			

जो शिक्षक अभ्यासों का प्रदर्शन करते हैं व सामग्री साझा करते हैं, वे प्रतिक्रिया हासिल कर सकते हैं और अन्य शिक्षक इन बेहतर अभ्यासों को देखकर सीख सकते हैं। हमेशा की तरह, इस तरह की शिक्षाओं को समूह और ब्लॉक स्तरों पर बैठकों और अकादमिक पदाधिकारियों द्वारा व्यवस्थित मंच स्थापित कर विभिन्न तरीकों और मंचों के माध्यम से सुदृढ़ किया जाना चाहिए।

4.3 शिक्षक का विकेंद्रीकृत सतत् पेशेवर विकास

प्रभावी शिक्षक के पेशेवर विकास को प्रासंगिक, निरंतर और शिक्षकों की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने वाला होना आवश्यक है। मूल भावना में ऐसा होने के लिए, इस तरह के पेशेवर विकास को यथासंभव शिक्षकों के अनुरूप निर्मित और संचालित की जाने की आवश्यकता है।

चूँकि विद्यालयी शिक्षा की संरचना और संगठन अलग-अलग राज्यों में भिन्न है, यह पूरे देश में विकेंद्रीकृत है। इसलिए ऐसा करने के लिए इस तरह की संरचनाओं और उसके कार्मिकों का पूरी तरह से लाभ उठाया जा सकता है।

यह उदाहरण राजस्थान में मौजूदा संरचना का एक नमूने के रूप में उपयोग करता है और शिक्षक पेशेवर विकास की प्रक्रिया को दिखाता है, जो कुछ हिस्सों में विभाग और गैर-सरकारी संगठनों के सहयोग से हो रहा है।

राजस्थान की विद्यालयी शिक्षा प्रणाली में *पंचायत* स्तर पर उच्च माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाचार्यों में से एक को पंचायत प्रारंभिक शिक्षा अधिकारी (पी.ई.ई.ओ.) नियुक्त किया गया। उस पंचायत के सभी विद्यालय एक पंचायत एकीकृत शिक्षा क्लस्टर बनाते हैं और पी.ई.ई.ओ. प्रशासनिक, वित्तीय, अभिसरण प्रक्रियाओं के प्रबंधन के साथ-साथ इन विद्यालयों में शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार सुनिश्चित करने के लिए नोडल व्यक्ति के रूप में कार्य करता है। इसलिए इन पी.ई.ई.ओ. का ध्यान न केवल परिचालन दक्षता पर है, बल्कि यह भी सुनिश्चित करने पर है कि सीखने-सिखाने की गुणवत्ता में समय के साथ और बड़े पैमाने पर सुधार हो। प्रत्येक ब्लॉक में औसतन 30 पी.ई.ई.ओ. हैं, प्रत्येक पी.ई.ई.ओ. 5–8 विद्यालयों यानी 35–45 शिक्षकों का समन्वय करता है।

इनमें से कई पंचायतों में, शिक्षकों को सहयोग प्रदान करने के लिए सभी शिक्षकों की मासिक कार्यशालाएँ, विशिष्ट शिक्षकों के लिए विद्यालय-आधारित मंच और इच्छुक शिक्षकों के लिए क्षमता संवर्द्धन के अन्य स्वैच्छिक तरीके शामिल हैं। जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, ये संबंधित पी.ई.ई.ओ. द्वारा भागीदार (गैर-सरकारी) संगठनों और अन्य व्यक्तियों के सहयोग से पंचायत स्तर पर निर्मित और संचालित किए जाते हैं। उदाहरण के तौर पर, एक पंचायत में—

(क) मासिक कार्यशाला

प्रारंभिक कक्षा के शिक्षकों के लिए हर महीने एक दो-दिवसीय कार्यशाला आयोजित की जाती हैं, आरंभिक भाषा और गणित दोनों विषयों के लिए एक-एक। ये कार्यशालाएँ शिक्षकों को विषयवस्तु और शिक्षण-अधिगम सामग्री प्रदान करती हैं, जिसका उपयोग वे सीधे अपनी कक्षाओं में कर सकते हैं, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि उनके बच्चे बुनियादी प्राथमिक स्तर की दक्षता प्राप्त कर सकें।

(ख) निरंतर मंच

उस माह की कार्यशाला में विषयवस्तु पर सुनियोजित फॉलो-अप स्कूल विज़िट्स ली गई। सहयोगी संगठन के संदर्भ व्यक्ति प्रासंगिक शिक्षण-अधिगम सामग्री और कार्यपत्रकों के साथ अपने उपयोग को प्रदर्शित करने के साथ-साथ बच्चों के सीखने के स्तर का आकलन करने के लिए विद्यालय का दौरा करते हैं। ऐसा मंच उन शिक्षकों को भी प्रदान किया जाता है जो इसके लिए अनुरोध करते हैं। यह शिक्षकों की विशिष्ट आवश्यकताओं का अवलोकन करने में भी सहायता करता है, जिसका उपयोग अगली कार्यशाला के सत्रों को बनाने के लिए किया जाता है।

(ग) अन्य सहयोगी गतिविधियाँ

क्षमता संवर्द्धन अन्य स्वैच्छिक गतिविधियों के माध्यम से किया जाता है, जो विद्यालयों में समग्र रूप से बेहतर सीखने के परिवेश को संभव बनाता है, उदाहरण के लिए—

1. *थैला पुस्तकालय*– बुनियादी भाषा और गणित कौशलों को हासिल करने में बेहतर सहायता के लिए, रुचि रखने वाले शिक्षकों को कक्षा-कक्षीय प्रक्रियाओं के साथ *थैला पुस्तकालय* संसाधन उपलब्ध कराए जाते हैं। इन थैलियों को एक से दूसरे को सौंपने के माध्यम से यह सुनिश्चित होता है कि नए संसाधन हर समय उपलब्ध हैं।

2. शिक्षा में रंगमंच– शिक्षकों और बच्चों के साथ कुछ मुद्दों पर बात करने के लिए रंगमंच एक प्रभावी माध्यम है। विद्यालयों की प्रार्थना-सभा में प्रदर्शन आयोजित किए जाते हैं, इसके बाद इस विषय पर एक घंटे की चर्चा होती है। इसका नेतृत्व अक्सर स्थानीय युवाओं के समूह करते हैं।

जैसा कि शुरुआत में उल्लेख किया गया है, यह सिर्फ उदाहरण है। मूल विचार शिक्षक विकास के लिए आधारभूत प्रक्रियाओं को निर्मित करने में सक्षम होने का है, जो शिक्षकों की वास्तविक आवश्यकताओं को पूरा करती हैं। अन्य राज्यों में इस तरह की शिक्षक सहायता प्रदान करने के लिए क्लस्टर संसाधन केंद्रों, जैसी– संरचनाओं का प्रभावी ढंग से उपयोग किया जाता है।

4.4 कठपुतली निर्माण की कार्यशाला

बुनियादी स्तर पर शिक्षकों को अपने शिक्षणशास्त्र में विभिन्न रोचक और आकर्षक तत्वों को शामिल करने की आवश्यकता होती है। इसमें कहानी सुनाना, अभिनय, संगीत, नृत्य, नाटक आदि, जैसी विधियाँ शामिल हैं। अन्य पहलुओं के अलावा, यह महत्वपूर्ण है कि शिक्षक पेशेवर विकास कार्यक्रम, शिक्षकों के ऐसे कौशल विकसित करने में सहायता करे, जो उन्हें अपने प्रदर्शनों की सूची में इस तरह के शिक्षण को जोड़ने में सक्षम बनाते हों।

ऐसा ही एक तरीका है कठपुतली बनाना। कठपुतली कला, ललित कला से लेकर प्रदर्शन कला तक, सबको अपने में समेट लेने वाली कला है। कठपुतली कला, प्रदर्शन के सबसे पुराने रूपों में से एक है और वर्षों से कला के एक परिष्कृत रूप में विकसित हुई है। साधारण अँगुली की कठपुतली से लेकर अत्यधिक जटिल कठपुतली तक तीन से अधिक लोगों द्वारा 'प्रदर्शन' की जाने वाली कठपुतली तक, इसके हज़ारों रूप हैं। भारत में कठपुतली के कई रूप हैं, जिन्हें शिक्षकों द्वारा शामिल किया जा सकता है।

कठपुतली के दो मुख्य पहलू हैं। एक है कठपुतलियों का डिज़ाइन तथा निर्माण और दूसरा है कठपुतलियों का प्रदर्शन। डिज़ाइनिंग के लिए विजुअलाइजेशन और निर्माण के तकनीकी कौशल की आवश्यकता होती है, जबकि प्रदर्शन के लिए उत्कृष्ट संचार कौशल की आवश्यकता होती है।

यह एक कार्यशाला का उदाहरण है, जिसे शिक्षकों को कठपुतली कौशल हासिल करने में मदद करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। इस कार्यशाला में शिक्षकों को कठपुतली और कठपुतली के विभिन्न रूपों से अवगत कराया जाता है। कठपुतलियों के रूपों और सौंदर्यबोध के बारे में चर्चा की जाती है। शिक्षक कठपुतलियों को डिज़ाइन करेंगे और बनाएँगे, एक स्क्रिप्ट तैयार करेंगे और कठपुतलियों के साथ प्रदर्शन करेंगे। इस कार्यशाला के माध्यम से, शिक्षक रोज़मर्रा की

ज़िंदगी में सौंदर्यशास्त्र और कला की सराहना करने, कठपुतली डिज़ाइन करने, अभ्यास करने और लघु कठपुतली प्रदर्शन बनाने में सक्षम होंगे। कार्यशाला के लिए शिक्षण विधि अनुभवात्मक अधिगम है। इसके माध्यम से, शिक्षक कला के विभिन्न रूपों से परिचित होते हैं—रंगों से खेलना, पोशाक डिज़ाइन करना, चेहरे का मेकअप, पटकथा लेखन, संगीत और प्रदर्शन आदि।

(क) पहला दिन

1. चार के समूह बनाए जाते हैं। प्रत्येक समूह को सभी आवश्यक स्टेशनरी संसाधन दिए जाते हैं। (जैसे–चार्ट पेपर, कैंची, गोंद, रंग, स्टेपलर और सेलो टेप)।
2. वे अपनी अँगुली पर आँख, नाक और मुँह की आकृतियाँ बनाकर अँगुली की कठपुतली बनाते हैं, अँगुली को रूमाल से ढकते हैं और अँगुली की कठपुतली को नचाते और बोलते हैं।
3. वे चार्ट-पेपर पर मछली बनाते हैं, फिर आकार काटते हैं। वे एक साधारण पक्षी बनाते हैं और उसे रंगते हैं और एक साधारण कागज़ को मोड़कर साँप बनाते हैं। वे कागज़ को शंकु आकार देकर एक चूहा बनाते हैं और साधारण रेखाचित्रों का उपयोग करके एक शेर बनाते हैं। सिर्फ कागज़ को मोड़कर और रंगों का उपयोग करके वे अलग-अलग जानवर बनाते हैं।

(ख) दूसरा दिन

1. वे अपने द्वारा बनाई गई सभी कठपुतलियों का प्रदर्शन करते हैं। एक कहानी बनाना शुरू करते हैं और कठपुतलियों का उपयोग करके एक छोटे से प्रदर्शन की योजना बनाते हैं। वे एक समूह के रूप में कहानी और प्रदर्शन का अभ्यास करते हैं।
2. फिर प्रत्येक समूह अपने द्वारा बनाई गई कठपुतलियों के साथ कहानी का प्रदर्शन करता है।

(ग) तीसरा दिन

1. वे कागज़ और पानी के रंग का उपयोग करके सरल एक-आयामी मुखौटा बनाना शुरू करते हैं। वे मुखौटे पहनते हैं, मुखौटे के इर्द-गिर्द एक छोटी-सी स्क्रिप्ट तैयार करते हैं और मुखौटे का उपयोग करके प्रदर्शन करते हैं।
2. वे रंगीन कागज़ और गोंद का उपयोग करके दो-आयामी मुखौटा बनाना सीखते हैं। वे मुखौटा पहनते हैं, मुखौटे के इर्द-गिर्द एक छोटी-सी स्क्रिप्ट तैयार करते हैं और मुखौटे का उपयोग करके प्रदर्शन करते हैं।
3. प्रदर्शन के तुरंत बाद प्रत्येक समूह को टिप्पणियाँ और इनपुट दिए जाते हैं।

(घ) चौथा दिन

1. वे रंगीन कागज़ और डंडियों की मदद से त्रि-आयामी कठपुतली बनाना सीखते हैं– ये रॉड कठपुतली हैं, जिन्हें अन्य कठपुतलियों की तरह ही उपयोग किया जा सकता है।
2. वे एक प्रदर्शन के लिए एक विस्तृत स्क्रिप्ट पर काम करते हैं, जिसे विद्यालय में छोटे बच्चों के साथ उनके छोटे समूहों में उनके द्वारा बनाई गई कठपुतली का उपयोग करके किया जा सकता है।

(ङ) पाँचवाँ दिन

1. प्रत्येक समूह साधारण रोशनी के साथ वेशभूषा, सामग्री सेट, गीत और संगीत का उपयोग करके प्रदर्शन करता है।
2. प्रदर्शन के बाद वे एक आकलन करते हैं और कार्यशाला के अपने अनुभव साझा करते हैं।

यद्यपि इस तरह की कार्यशाला शिक्षकों को कठपुतली कला में विशेषज्ञ नहीं बनाएगी, फिर भी यह उम्मीद की जाती है कि इससे उन्हें यह विचार मिलेगा कि वे अपनी कक्षाओं में अभ्यास करना शुरू कर सकते हैं और आगे इसका विकास कर सकते हैं। यह उदाहरण कार्यशाला मोड के बारे में है, इसे अलग-अलग समयों पर अन्य तरीकों के माध्यम से किया जा सकता है, उदाहरण के लिए शिक्षकों की मासिक क्लस्टर-स्तरीय बैठकों में।

अनुलग्नक 3

बुनियादी स्तर के लिए निपुण भारत और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा की दक्षताओं की मैपिंग

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के बुनियादी साक्षरता एवं संख्याज्ञान संबंधी पहलुओं को लागू करने के लिए निपुण भारत ने उल्लेखनीय कदम उठाए हैं। इस मिशन को सक्षम बनाने के लिए संबंधित दक्षताओं और सीखने के प्रतिफलों के साथ तीन विकासात्मक लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के आधार पर पूरे देश में पाठ्यचर्याएँ विकसित की जाएँगी, जिसमें पाठ्यचर्या के उद्देश्य बताए गए हैं, जिनसे दक्षताएँ प्राप्त की गई हैं और इनसे ही सीखने के प्रतिफल (उदाहरणात्मक) तय किए गए हैं। फिर यही पाठ्यचर्याएँ, पूरे देश में शैक्षिक अभ्यास के लिए आधार बन जाएँगी।

विकसित की गई प्रत्येक पाठ्यचर्या में दक्षताओं और सीखने के प्रतिफलों के अपने समूह होंगे। महत्वपूर्ण यह है कि ये सीखने के प्रतिफल व दक्षताएँ, निपुण भारत के सार्थक प्रयासों की संगति में हों, जिनमें शिक्षण-अधिगम सामग्री व प्रशिक्षण शामिल हैं। इससे शैक्षिक प्रयास व अभ्यास, पाठ्यचर्या के उद्देश्यों की पूरी संगति में हो सकेंगे।

इसे सुनिश्चित करने का तरीका यह है कि पहले निपुण भारत के विकासात्मक लक्ष्यों को इस राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के उद्देश्यों से मैप किया जाए। क्रियान्वयन के लिए सबसे महत्वपूर्ण कदम निपुण भारत की दक्षताओं को राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा की दक्षताओं से मैप करना होगा।

इस अनुलग्नक में निपुण भारत के विकासात्मक लक्ष्यों की मैपिंग राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के उद्देश्यों के साथ की गई है, फिर निपुण भारत की दक्षताओं की मैपिंग राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा की दक्षताओं के साथ की गई है। इसी तरह का मैपिंग, सीखने के प्रतिफलों के लिए भी की जा सकती है।

मैपिंग के ये दो स्तर, पाठ्यचर्या की दक्षताओं और सीखने के प्रतिफलों को उचित तरीके से लागू करने के लिए निपुण भारत के तहत बनाई गई विधियों व सामग्रियों (शिक्षण अधिगम सामग्री, प्रशिक्षण सामग्री आदि) के उपयोग को सुगम बनाएँगे। इस पूरे अभ्यास को सावधानी से लागू किए जाने की आवश्यकता है, ताकि सभी प्रयासों का सघन संयोजन हो सके और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के क्रियान्वयन तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लक्ष्यों को प्राप्त करने की ओर बढ़ा जा सके।

1. निपुण भारत विकासात्मक लक्ष्य 1– बच्चे का अच्छा स्वास्थ्य और खुशहाली बनाए रखना

1.1 राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा पाठ्यचर्या के उद्देश्यों से मैपिंग– इस विकासात्मक लक्ष्य 1 से मैप होने वाले पाठ्यचर्या के उद्देश्य (CG)

CG-1 बच्चे ऐसी आदतें विकसित करते हैं, जो उन्हें स्वस्थ और सुरक्षित रखती हैं।

CG-3 बच्चे एक फिट और लचीले शरीर का विकास करते हैं।

CG-4 बच्चे भावनात्मक बुद्धिमत्ता अर्थात् अपनी भावनाओं को समझने व प्रबंधन करने और सामाजिक मानदंडों के प्रति सकारात्मक रूप से प्रतिक्रिया देने की क्षमता विकसित करते हैं।

1.2 राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा दक्षताओं से मैपिंग

नीचे दी गई तालिका में विकासात्मक लक्ष्य 1 के अंतर्गत निपुण भारत की दक्षताओं को राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा की दक्षताओं से मैप किया गया है—

तालिका 1

निपुण भारत दक्षता	राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा दक्षता
स्वयं के प्रति जागरूकता	C-4.1 परिवार और समुदाय से संबंधित व्यक्ति के रूप में 'स्व' को पहचानने लगते हैं।
सकारात्मक आत्म-धारणा का विकास	C-4.1 परिवार और समुदाय से संबंधित व्यक्ति के रूप में 'स्व' को पहचानने लगते हैं।
स्व-नियमन	C-4.2 अलग-अलग भावनाओं को पहचानते हैं और उनका उपयुक्त तरीके से नियमन करने के लिए सुविचारित प्रयास करते हैं।
निर्णय लेना और समस्या समाधान	C-8.13 मात्राओं, आकृतियों, स्थान और मापन से संबंधित सरल गणितीय समस्याओं को निरूपित करते हैं और हल करते हैं।
समाजोन्मुखी व्यवहार का विकास	C-4.3 अन्य बच्चों और वयस्कों के साथ आराम से बातचीत करते हैं। C-4.4 दूसरे बच्चों के साथ सहयोगात्मक व्यवहार प्रदर्शित करते हैं। C-4.5 कक्षा और विद्यालय में सामाजिक नियमों को समझते हैं और उन पर सकारात्मक रूप से प्रतिक्रिया देते हैं। C-4.6 दूसरों (जानवरों, पौधों सहित) के प्रति आवश्यकता के समय दयालुता और सहायता का भाव प्रदर्शित करते हैं। C-4.7 दूसरे बच्चों के विभिन्न विचारों, प्राथमिकताओं और भावनात्मक आवश्यकताओं को समझते हैं और उनके प्रति सकारात्मक रूप से प्रतिक्रिया देते हैं।

स्वस्थ आदतों, स्वच्छता, सफ़ाई, और आत्मरक्षा के प्रति जागरूकता का विकास	C-1.1 पौष्टिक भोजन में रुचि व इसकी समझ दिखाते हैं तथा भोजन बर्बाद नहीं करते हैं। C-1.2 अपनी देखभाल और स्वच्छता का बुनियादी व्यवहार करते हैं। C-1.3 विद्यालय या कक्षा-कक्ष को स्वच्छ और व्यवस्थित रखते हैं। C-1.4 सामग्रियों और सरल उपकरणों के सुरक्षित उपयोग का व्यवहार करते हैं। C-1.5 गतियों (चलना, दौड़ना, साइकिल चलाना) में सुरक्षा संबंधी सावधानी प्रदर्शित करते हैं और समुचित तरीके से ये कार्य करते हैं। C 1.6 असुरक्षित स्थितियों को समझते हैं और सहायता मांगते हैं।
सकल माँसपेशीय कौशलों का विकास	C-3.1 विभिन्न गतिविधियों में संवेदी अनुभूतियों और शरीर संचालन के मध्य समन्वय प्रदर्शित करते हैं। C-3.2 विभिन्न शारीरिक गतिविधियों में संतुलन, समन्वय और लचीलापन दिखाते हैं।
सूक्ष्म माँसपेशीय कौशलों और आँख-हाथ समन्वय का विकास	C-3.3 हाथों और अँगुलियों से काम करने में सटीकता और नियंत्रण दिखाते हैं।
व्यक्तिगत और सामूहिक खेलों में भागीदारी	C-3.4 ढोने, चलने और दौड़ने में ताकत तथा सहनशक्ति प्रदर्शित करते हैं।

2. निपुण भारत विकासात्मक लक्ष्य 2– बच्चे प्रभावी संप्रेषक बनें

2.1 राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, पाठ्यचर्या के लक्ष्य

इस विकासात्मक लक्ष्य 2 से मैप होने वाले पाठ्यचर्या के उद्देश्य (CG) निम्नलिखित हैं–

CG-9 बच्चे दो भाषाओं में रोज़मर्रा की बातचीत के लिए प्रभावी संप्रेषण कौशल विकसित करते हैं।

CG-10 बच्चे भाषा 1 (L1) को पढ़ने और लिखने में धाराप्रवाहिता विकसित करते हैं।

CG-11 बच्चे भाषा 2 (L2) में पढ़ना और लिखना शुरू करते हैं।

CG-12 बच्चे दृश्य और प्रदर्शन कलाओं में क्षमताएँ और संवेदनशीलता विकसित करते हैं और कला के माध्यम से अपनी भावनाओं को सार्थक और आनंदपूर्ण तरीके से अभिव्यक्त करते हैं।

2.2 राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा दक्षताओं से मैपिंग

निपुण भारत विकासात्मक लक्ष्य 2 के अंतर्गत आने वाली दक्षताओं को तीन श्रेणियों में बाँटता है। नीचे दी गई तालिका में इन्हें राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा की दक्षताओं से मैप किया गया है।

2.2.1 सुनना और बोलना

तालिका 1

निपुण भारत दक्षता	राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा दक्षता
समझ के साथ सुनना	C-9.1 सरल गीतों, तुकबंदियों और कविताओं को सुनते-सराहते हैं। C-9.4 किसी जटिल कार्य के लिए दिए गए मौखिक निर्देशों को समझते हैं और दूसरों को उसी कार्य के लिए स्पष्ट मौखिक निर्देश देते हैं। C-9.5 सुनाई गई या बोलकर पढ़ी गई कहानियों को समझते हैं, पात्रों, कथानक और लेखक क्या कहना चाहते हैं, को पहचानते हैं।
रचनात्मक आत्म-अभिव्यक्ति और बातचीत	C-9.2 स्वयं सरल गीत और कविताएँ बनाते हैं। C-9.3 धाराप्रवाह और सार्थक बातचीत कर सकते हैं।
भाषा और रचनात्मक चिंतन	C-9.5 सुनाई गई या बोलकर पढ़ी गई कहानियों को समझते हैं, पात्रों, कथानक और लेखक क्या कहना चाहते हैं, को पहचानते हैं। C-9.6 स्पष्ट कथानक और पात्रों के साथ छोटी कहानियाँ सुनाते हैं।

शब्दावली विकास	C-9.7 प्रभावी ढंग से रोज़मर्रा की बातचीत करने के लिए पर्याप्त शब्द जानते हैं, उनका उपयोग करते हैं और मौजूदा शब्दावली का उपयोग करके नए शब्दों के अर्थ का अनुमान लगा पाते हैं
बातचीत और बोलने का कौशल	C-9.3 धाराप्रवाह और सार्थक बातचीत कर सकते हैं। C-9.4 किसी जटिल कार्य के लिए दिए गए मौखिक निर्देशों को समझते हैं और दूसरों को उसी कार्य के लिए स्पष्ट मौखिक निर्देश देते हैं
भाषा का अर्थपूर्ण उपयोग	C-9.3 धाराप्रवाह और सार्थक बातचीत कर सकते हैं। C-9.4 किसी जटिल कार्य के लिए दिए गए मौखिक निर्देशों को समझते हैं और दूसरों को उसी कार्य के लिए स्पष्ट मौखिक निर्देश देते हैं। C-9.7 प्रभावी ढंग से रोज़मर्रा की बातचीत करने के लिए पर्याप्त शब्द जानते हैं, उनका उपयोग करते हैं और उपस्थित शब्दावली का उपयोग करके नए शब्दों के अर्थ का अनुमान लगा पाते हैं। C-10.7 लघु समाचारों, निर्देशों, व्यंजन विधियों और प्रचार सामग्री को पढ़ते-समझते हैं (L1)।

2.2.2 समझ के साथ पढ़ना

तालिका 2

निपुण भारत दक्षता	राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा दक्षता
पुस्तकें के साथ जुड़ाव	C-10.9 विविध प्रकार के बच्चों की पुस्तकें चुनने और पढ़ने में रुचि दिखाते हैं (L1)।
छपाई के प्रति जागरूकता और अर्थ निर्माण	C-10.2 पुस्तक का बुनियादी ढाँचा या प्रारूप, छपे हुए शब्द और उनकी छपाई की दिशा के विचार को समझते हैं और मूलभूत विराम चिह्नों को पहचानते हैं। C-10.7 लघु समाचारों, निर्देशों, व्यंजन विधियों और प्रचार सामग्री को पढ़ते-समझते हैं।
पढ़ने का प्रदर्शन करना	*इस दक्षता के पहलुओं को C-10.2 (प्रिंट अवधारणा) और C-10.5, C-10.6 (कहानियाँ और कविताएँ पढ़ना) के सीखने के प्रतिफलों में संबोधित किया गया है।*
ध्वनि (Phonological) जागरूकता	C-10.1 L1 में ध्वनि जागरूकता विकसित करते हैं और स्वनिमों (phonemes) / शब्दांशों (syllables) को मिलाकर शब्द बनाते हैं और शब्दों को स्वनिमों (phonemes) या शब्दांशों (syllables) में विभाजित करते हैं।
ध्वनि-प्रतीक संबंध	C-10.3 लिपि (L1) की वर्णमाला के सभी अक्षरों को पहचानते हैं और इस ज्ञान का उपयोग शब्दों को पढ़ने-लिखने के लिए करते हैं।

पूर्व-ज्ञान और अनुभवों का उपयोग करके अंदाज़े से पढ़ना	C-10.5 छोटी कहानियाँ पढ़ते हैं और पात्रों, कथानक और लेखक क्या कहना चाहता है, इसकी पहचान करके, स्वयं से ही उनका अर्थ समझते हैं (L1)। C-10.6 छोटी कविताएँ पढ़ते हैं और शब्दों व कल्पना के चुनाव के लिए कविता की सराहना करना शुरू करते हैं (L1)।
आनंद और विविध उद्देश्यों के लिए स्वतंत्र पठन	C-10.5 छोटी कहानियाँ पढ़ते हैं और पात्रों, कथानक और लेखक क्या कहना चाहते हैं, इसकी पहचान करके, स्वयं से ही उनका अर्थ समझते हैं (L1)। C-10.9 विविध प्रकार के बच्चों की पुस्तकें चुनने और पढ़ने में रुचि दिखाते हैं (L1)।

2.2.3 उद्देश्य के साथ लेखन

तालिका 3

निपुण भारत दक्षता	राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा दक्षता
बुनियादी साक्षरता कौशल	इस दक्षता के पहलुओं को भाषा और साक्षरता की कई दक्षताओं के सीखने के प्रतिफलों तथा सौंदर्यबोध और संस्कृति संबंधी पाठ्यचर्या के उद्देश्यों में संबोधित किया गया है।
आत्म-अभिव्यक्ति के लिए लेखन	C-10.8 अपनी समझ और अनुभव को व्यक्त करने के लिए एक अनुच्छेद लिखते हैं (L1)।
वर्णों और ध्वनियों के अपने ज्ञान का उपयोग करके लिखने के लिए वर्तनी बनाना	C-10.3 लिपि (L1) की वर्णमाला के सभी अक्षरों को पहचानते हैं और इस ज्ञान का उपयोग शब्दों को पढ़ने-लिखने के लिए करते हैं।
पारंपरिक तरीके से लिखने का प्रयास करना चित्र बनाकर या शब्दों और अर्थपूर्ण वाक्यों के माध्यम से पढ़े हुए (रीडिंग) पर प्रतिक्रिया देना तुकबंदी वाले या तुकांत शब्द लिखना संज्ञाओं और क्रियाओं का उपयोग करके अर्थपूर्ण वाक्य लिखना अपने को अभिव्यक्त करने के लिए संदेश लिखना मिश्रित भाषा कोड्स का उपयोग करना कक्षा की गतिविधियों में और घर पर विभिन्न उद्देश्यों के लिए लिखना, जैसे– सूची बनाना, दादा-दादी, नाना-नानी को अभिवादन और मित्रों को संदेश या निमंत्रण आदि लिखना	C-10.8 अपनी समझ और अनुभव को व्यक्त करने के लिए एक अनुच्छेद लिखते हैं (L1)। (इस दक्षता में सीखने के 15 प्रतिफल अंतर्निहित हैं, जो निपुण भारत द्वारा रेखांकित विभिन्न दक्षताओं को शामिल करते हैं)

3. निपुण भारत विकासात्मक लक्ष्य 3– बच्चे का सक्रिय शिक्षार्थी बनना और अपने आस-पास के परिवेश से जुड़ना

3.1 राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, पाठ्यचर्या के उद्देश्य

इस विकासात्मक लक्ष्य 3 से मैप होने वाले पाठ्यचर्या के उद्देश्य (CG) निम्नलिखित हैं—

CG-2 बच्चे संवेदी अनुभूतियों में कुशाग्रता विकसित करते हैं।

CG-6 बच्चे अपने आस-पास के प्राकृतिक वातावरण के प्रति सकारात्मक सोच विकसित करते हैं।

CG-7 बच्चे अवलोकन और तार्किक चिंतन के माध्यम से विश्व को समझते हैं।

CG-8 बच्चे मात्राओं, आकृतियों और मापों के माध्यम से गणितीय समझ और विश्व को पहचानने की क्षमता विकसित करते हैं।

CG-13 बच्चे सीखने की आदतें विकसित करते हैं, जो उन्हें विद्यालय की कक्षा, जैसे औपचारिक सीखने के वातावरण में सक्रिय रूप से संलग्न रहने में सहायता करती हैं।

3.2 राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा दक्षताओं से मैपिंग

निपुण भारत विकासात्मक लक्ष्य 3 के अंतर्गत आने वाली दक्षताओं को सात श्रेणियों में बाँटता है। नीचे दी गई तालिका में इन्हें राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा की दक्षताओं से मैप किया गया है—

3.2.1 संवेदी विकास

तालिका 1

निपुण भारत दक्षता	राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा दक्षता
दृष्टि, ध्वनि, स्पर्श, गंध और स्वाद	C-2.1 आकृतियों, रंगों और उनके शेड्स के बीच अंतर करते हैं। C-2.2 प्रतीकों और निरूपणों के लिए दृश्य स्मृति विकसित करते हैं। C-2.3 ध्वनियों में उसके उतार-चढ़ाव, हल्के-भारीपन से और ध्वनि पैटर्न्स में उतार-चढ़ाव, हल्के-भारीपन और गति से अंतर करते हैं। C-2.4 विभिन्न गंधों और स्वादों के बीच अंतर करते हैं। C-2.5 स्पर्श की अनुभूतियों में विभेद की क्षमता विकसित करते हैं।

3.2.2 संज्ञानात्मक कौशल

तालिका 2

निपुण भारत दक्षता	राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा दक्षता
अवलोकन, पहचान, स्मृति, मिलान, वर्गीकरण, क्रमिक चिंतन, रचनात्मक चिंतन, आलोचनात्मक चिंतन, तर्क, जिज्ञासा और प्रयोग	C-7.1 वस्तुओं की विभिन्न श्रेणियों और उनके बीच के संबंधों को देखते-समझते हैं। C-7.2 प्रकृति में कार्य-कारण संबंधों को सरल परिकल्पनाएँ बनाकर देखते व समझते हैं और परिकल्पनाओं को समझाने के लिए अपने अवलोकनों का उपयोग करते हैं। C-13.1 ध्यान व सुविचारित कर्म—विशिष्ट लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए, योजना बनाने, ध्यान केंद्रित करने तथा गतिविधियाँ निर्देशित करने के कौशल हासिल करते हैं। C-13.2 स्मृति और मानसिक लचीलापन—समुचित कार्यकारी स्मृति, मानसिक लचीलापन (समुचित तरीके से ध्यान बनाए रखने या बदलने के लिए) और आत्म-नियंत्रण (आवेगी क्रियाओं और प्रतिक्रियाओं के प्रतिरोध के लिए) विकसित करते हैं जो संरचित वातावरण में सीखने में उनकी सहायता करेगा। C-13.3 अवलोकन, आश्चर्य, जिज्ञासा और अन्वेषण—वस्तुओं के सूक्ष्म विवरणों का अवलोकन करते हैं, आश्चर्य करते हैं और विभिन्न इंद्रियों का उपयोग करते हुए अन्वेषण करते हैं, वस्तुओं के साथ छेड़छाड़ करते हैं और प्रश्न पूछते हैं।

3.2.3 परिवेश से संबंधित अवधारणाएँ

तालिका 3

निपुण भारत दक्षता	राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा दक्षता
प्राकृतिक– जानवर, फल, सब्ज़ियाँ और भोजन	C-6.1 सभी सजीवों के प्रति देखभाल और उनसे जुड़ने में प्रसन्नता दिखाते हैं। C-7.1 वस्तुओं की विभिन्न श्रेणियों और उनके बीच के संबंधों को देखते-समझते हैं।
भौतिक– पानी, हवा, ऋतु, सूरज, चाँद, दिन और रात	C-7.1 वस्तुओं की विभिन्न श्रेणियों और उनके बीच के संबंधों को देखते-समझते हैं।
सामाजिक– स्वयं, परिवार, परिवहन, त्योहार और सामुदायिक सहायक आदि	C-4.6 दूसरों (जानवरों, पौधों सहित) के प्रति आवश्यकता के समय दयालुता और सहायता का भाव प्रदर्शित करते हैं। C-5.1 दूसरों की सहायता के लिए अपनी आयु के उपयुक्त शारीरिक कार्य करने की इच्छा और भागीदारी प्रदर्शित करते हैं।

3.2.4 अवधारणा निर्माण

तालिका 4

निपुण भारत दक्षता	राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा दक्षता
रंग, आकृतियाँ, दूरी, मापन, आकार, लंबाई, वज़न, ऊँचाई और समय	C-2.1 आकृतियों, रंगों और उनके शेड्स के बीच अंतर करते हैं। C-8.9 अपने आस-पास के वातावरण में वस्तुओं की लंबाई, वज़न और आयतन का सरल मापन करने के लिए उपयुक्त उपकरणों और इकाइयों का चयन करते हैं। C-8.10 मिनटों, घंटों, दिनों, सप्ताहों और महीनों में समय का सरल मापन करते हैं। C-8.12 मात्राओं, आकृतियों, स्थान और मापन से संबंधित अवधारणाओं और प्रक्रियाओं को समझने और व्यक्त करने के लिए पर्याप्त और उपयुक्त शब्दावली विकसित करते हैं। C-8.13 मात्राओं, आकृतियों, स्थान और मापन से संबंधित सरल गणितीय समस्याओं को निरूपित करते हैं और हल करते हैं।
स्थानिक समझ	C-8.8 बुनियादी ज्यामितीय आकृतियों और उनके अवलोकनीय गुणों को पहचानते, बनाते और वर्गीकृत करते हैं और किसी स्थान (space) में वस्तुओं के सापेक्ष संबंध (relative relation) को समझते व समझाते हैं।
एकैक संगति	C-8.3 सीधी और उल्टी गिनती से और 10-10 एवं 20-20 के समूहों में 99 तक गिन पाते हैं।*

3.2.5 संख्या बोध/समझ (Number Sense)

तालिका 5

निपुण भारत दक्षता	राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा दक्षता
गिनकर संख्या बताना	C-8.3 सीधी और उल्टी गिनती से और 10–10 एवं 20–20 के समूहों में 99 तक गिन पाते हैं।
संख्या पहचान	C-8.5 दाशमिक स्थानीय मान प्रणाली की समझ के साथ 99 तक की मात्राओं को दर्शाने के लिए संख्याओं को पहचानते और उनका उपयोग करते हैं।
क्रम की समझ (किसी संख्या से 10 आगे तक क्रम से गिन सकना)	C-8.1 चीज़ों को एक से अधिक गुणों के आधार पर समूहों और उप-समूहों में छाँटते हैं। C-8.2 अपने परिवेश, आकृतियों और संख्याओं में सरल पैटर्न्स को पहचानते और उनका विस्तार करते हैं। C-8.4 99 तक की संख्याओं को आरोही और अवरोही क्रम में व्यवस्थित करते हैं।

** गिनने की दक्षता के अंतर्गत आने वाला सीखने का प्रतिफल है एकैक संगति।*

3.2.6 संख्याओं के बीच संक्रियाएँ

तालिका 6

निपुण भारत दक्षता	राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा दक्षता
जोड़ और घटाव	C-8.6 संयोजन और वियोजन की लचीली रणनीतियों का उपयोग करके आसानी से दो–अंकों की संख्याओं का जोड़ और घटाव करते हैं।
गुणा और भाग	C-8.7 गुणा को बार-बार जोड़ और भाग को बराबर बँटवारे के रूप में जानते-समझते हैं।

3.2.7 मापन, आकृतियाँ और अन्य दक्षताएँ

तालिका 7

निपुण भारत दक्षता	राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा दक्षता
लंबाई, द्रव्यमान, आयतन और तापमान	C-8.9 अपने आस-पास के वातावरण में वस्तुओं की लंबाई, वज़न और आयतन का सरल मापन करने के लिए उपयुक्त उपकरणों और इकाइयों का चयन करते हैं।
आकृतियाँ (द्विविमीय आकृतियाँ, त्रिविमीय आकृतियाँ, सीधी रेखा, घुमावदार रेखा, सपाट और घुमावदार सतहें)	C-8.8 बुनियादी ज्यामितीय आकृतियों और उनके अवलोकनीय गुणों को पहचानते, बनाते और वर्गीकृत करते हैं, और किसी स्थान (space) में वस्तुओं के सापेक्ष संबंध (relative relation) को समझते व समझाते हैं।
आँकड़ों का प्रबंधन	*बुनियादी स्तर के लिए, आँकड़ों का प्रबंधन में C-29, C-31 समूहों में दी गई चीज़ों को छाँटना, वर्गीकरण, समूह बनाना और गिनना शामिल होगा।*
पैटर्न	C-8.2 अपने परिवेश, आकृतियों और संख्याओं में सरल पैटर्न्स को पहचानते और उनका विस्तार करते हैं।
कैलेंडर गतिविधियाँ	C-8.10 मिनटों, घंटों, दिनों, सप्ताहों और महीनों में समय का सरल मापन करते हैं।
तकनीकी का उपयोग	C 7.3 दैनिक जीवन की परिस्थितियों में और सीखने के लिए उपयुक्त उपकरणों व तकनीकी का उपयोग करते हैं।

3.2.8 राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा में वर्णित अतिरिक्त दक्षताएँ

सौंदर्यबोध विकास और संज्ञानात्मक विकास के क्षेत्रों के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा में वर्णित अतिरिक्त दक्षताएँ नीचे दी गई हैं।

तालिका 8

निपुण भारत दक्षता	राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा दक्षता
	C-12.1 विभिन्न आकारों की द्विआयामी और त्रिआयामी कलाकृतियाँ बनाने के लिए तरह-तरह की सामग्रियों और उपकरणों की खोज करते हैं और उनसे खेलते हैं। C-12.2 संगीत, भूमिका निर्वहन, नृत्य और गतिविधियाँ निर्मित करने के लिए अपनी आवाज़, शरीर, स्थानों और तरह-तरह की चीज़ों की खोज करते हैं और उनसे खेलते हैं। C-12.3 कला के माध्यम से विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने के लिए नए तरीकों की खोज करते हैं और कल्पनाशीलता के साथ कार्य करते हैं। C-12.4 कला में सहयोगात्मक ढंग से कार्य करते हैं। C-12.5 कला, स्थानीय संस्कृति और विरासत के विभिन्न रूपों की रचना और अनुभव करते हुए विभिन्न तरह की प्रतिक्रियाएँ संप्रेषित करते हैं और इनकी सराहना करते हैं।
	C-5.1 दूसरों की सहायता के लिए अपनी आयु के उपयुक्त शारीरिक कार्य करने की इच्छा और भागीदारी प्रदर्शित करते हैं।
	C-13.4 कक्षा के नियम– संस्था और समझ के साथ नियमों को अपनाते और उनका पालन करते हैं।
	C-8.10 ₹100 तक की मुद्रा का उपयोग करते हुए सरल लेन देन करते हैं।

अनुलग्नक 4

भारत और विश्व में प्रारंभिक बाल्यावस्था और देखभाल शिक्षा पर शोध

विश्वभर में कई समकालीन अध्ययनों से पता चला है कि गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक शिक्षा कार्यक्रम, जो छोटे बच्चों को उचित प्रोत्साहन और सार्थक सीखने के अनुभव प्रदान करते हैं, से न केवल विद्यालय में बल्कि उससे भी आगे सीखने और बेहतर प्रदर्शन करने की व्यक्तिगत क्षमता को अत्यधिक लाभ होता है।

1. गुणवत्तायुक्त प्रांरभिक बाल्यावस्था और देखभाल शिक्षा कार्यक्रमों का महत्व

(क) तंत्रिका विज्ञान के साक्ष्य बताते हैं कि जीवन के पहले आठ वर्षों के दौरान मस्तिष्क का विकास तेजी से होता है। वातावरण के अनुभवों की गुणवत्ता और निरंतरता के आधार पर मस्तिष्क में तंत्रिकाओं के बीच संबंध मज़बूत या गठित होते हैं। इन वर्षों को मानव जीवन में सबसे महत्वपूर्ण और रचनात्मक माना जाता है। इसीलिए इन वर्षों में बच्चे के सर्वांगीण विकास के लिए देखभाल करने वाला, पोषक, प्रेरणादायक और स्वस्थ वातावरण आवश्यक होता है।[13]

(ख) मानव मस्तिष्क की मूल संरचना उन प्रक्रियाओं के माध्यम से निर्मित होती है, जो जीवन के आरंभ में शुरू होती हैं और वयस्कता में जारी रहती हैं। आनुवंशिकी, वातावरण और अनुभव मस्तिष्क की संरचना के साथ परस्पर क्रिया करते हैं और उसे प्रभावित करते हैं। नमनीयता या मस्तिष्क की पुनर्गठित और अनुकूलन करने की क्षमता तथा उसके कारण सीखना, जीवन के प्रारंभिक वर्षों में सबसे अच्छे से होता है। विकास की संवेदनशील अवधियों के अनुभव मस्तिष्क की क्षमताओं को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्रारंभिक वातावरण और प्रारंभिक अनुभवों का मस्तिष्क की संरचना पर विशेष रूप से गहरा प्रभाव पड़ता है।[13]

(ग) प्रारंभिक बाल्यावस्था का समय आजीवन सीखने और विकास की नींव रखता है और वयस्क जीवन की गुणवत्ता का एक प्रमुख निर्धारक है। अनुदैर्ध्य अध्ययन (Longitudinal studies) शुरुआत के वर्षों में आर्थिक निवेश की वापसी की एक उल्लेखनीय दर का संकेत देते हैं, जो विद्यालयी शिक्षा को पूरी करना और समाज के वयस्क सदस्यों के रूप में सकारात्मक योगदान सुनिश्चित करता है।[14]

(घ) संज्ञानात्मक, भावनात्मक और सामाजिक क्षमताएँ जीवनभर अटूट रूप से जुड़ी होती हैं। प्रारंभिक अनुभवों को प्रोत्साहित करना बाद में सीखने की बुनियाद रखता है। खराब प्रारंभिक अनुभव बाद में मस्तिष्क की क्षमताओं पर लंबे समय तक रहने वाले हानिकारक प्रभाव डाल सकते हैं।[13]

2. भारत में हुए शोधों के निष्कर्ष

(क) प्रारंभिक बाल्यावस्था की शिक्षा में आयु-उपयुक्त भागीदारी को विद्यालय पूर्व में जाने वाले बच्चों में ठहराव (retention) की दर में 8–20 प्रतिशत की बढ़त के लिए उत्तरदायी बताया गया था।[15] इसी तरह बिहार और उत्तर प्रदेश में किए गए एक अन्य अध्ययन में पाया गया कि 7 से 18 वर्ष की आयु के बच्चों के विद्यालय में नामांकित होने की संभावना अधिक थी। यदि वे प्रारंभिक बाल्यावस्था कार्यक्रमों में सहभागी बने।[16] व्यवस्था के दृष्टिकोण से, हरियाणा आई.सी.डी.एस. केंद्रो में विद्यालय-पूर्व शिक्षा के प्रभावी कार्यान्वयन में मध्य और वरिष्ठ स्तर के अधिकारियों का सहयोग एक महत्वपूर्ण कारक था।[17]

(ख) अंबेडकर विश्वविद्यालय, दिल्ली द्वारा किए गए प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा प्रभाव अध्ययन (2017) ने दिखाया कि सभी राज्यों (असम, तेलंगाना और राजस्थान) में 5 वर्ष की आयु के बच्चों की विद्यालयी तैयारी का स्तर संज्ञानात्मक और भाषा के क्षेत्र (जैसे संख्या से वस्तुओं का मिलान, चित्र में किसी वस्तु के स्थान की पहचान करना आदि) में अपेक्षाओं से बहुत कम था।[18]

जहाँ भी विद्यालयी तैयारी का स्तर गुणवत्तापूर्ण था, वहाँ बच्चों ने अपना अधिकांश समय खेल-आधारित सीखने की गतिविधियों में बिताया। इन कार्यक्रमों में बच्चों के लिए अवधारणा निर्माण, अवधारणात्मक कौशल के विकास और तैयारी गतिविधियों के लिए पर्याप्त अवसर थे।

बच्चे की आयु, माँ की शिक्षा, घरेलू संपन्नता और घर पर प्रारंभिक सीखने का परिवेश ऐसे अन्य कारक थे जिन्होंने विद्यालयी तैयारी के स्तर को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया। अध्ययन में यह भी पाया गया कि विद्यालय पूर्व और प्रारंभिक प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों की भागीदारी एक रैखिक आयु-आधारित प्रक्षेपवक्र (linear age-based trajectory) का पालन नहीं करती है। कुछ राज्यों में 4 साल के बच्चे पहले से ही विद्यालय में हैं और अन्य में 6 और 7 साल के बच्चों का एक बड़ा हिस्सा अभी-भी विद्यालय पूर्व में है। बच्चे अनियमित रूप से विद्यालय जाते हैं। 8 वर्ष की आयु आते-आते ही नामांकन स्थिर हो पाता है। यह एक ऐसे पाठ्यक्रम की आवश्यकता को पुष्ट करता है, जो आयु-आधारित प्रक्षेपवक्र के इतर बच्चों के सीखने के स्तर पर केंद्रित हो।

(ग) शोध से पता चला है कि कम आयु और सीमित संसाधन वाली व्यवस्थाओं में, गुणवत्तापूर्ण ई.सी.सी.ई समता को बढ़ावा देने के लिए एक तंत्र के रूप में कार्य करता है।[19]

(घ) एक अध्ययन में भारत के एक ज़िले में आँगनवाड़ियों में नामांकित 200 बच्चों और घर में रहने वाले 200 बच्चों की तुलना छह संज्ञानात्मक कौशल— अवधारणात्मक जानकारी (conceptual information), समझ (comprehension), दृष्टि बोध (visual perceptions), स्मृति (memory) और वस्तु शब्दावली (object vocabulary) पर की गई। इस अध्ययन के द्वारा पुष्टि की गई कि आँगनवाड़ी में उपस्थिति का बच्चों के संज्ञानात्मक कौशल पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। भौगोलिक सीमाओं के बावजूद यह अध्ययन विद्यालय पूर्व और संज्ञानात्मक विकास के बीच संबंध पर महत्वपूर्ण साक्ष्य प्रदान करता है।[20]

3. ई.सी.सी.ई. में निवेश के प्रतिफल पर अध्ययन

शिक्षा में निवेश के लाभ में निजी अर्थात् वेतन तथा संबंधित सुविधाओं के साथ और रोज़गार के रूप में लाभ और सामाजिक (समाज और राष्ट्र को लाभ देना यानी अधिक नागरिक समाज से करों के माध्यम से अर्जित राजस्व के साथ तथा कल्याण के फलस्वरूप सामाजिक कल्याणकारी कार्यक्रमों पर कम सार्वजनिक व्यय के संदर्भ में) दोनों शामिल हैं।

शिक्षा के लाभों का अनुमान आमतौर पर वास्तविक 'बाज़ार' के लाभों के माध्यम से होता है। ये श्रम बाज़ार (labour market) में व्यक्तियों की आय या सकल घरेलू उत्पाद (जी.डी.पी) में उनके योगदान, जैसे आँकड़ों पर आधारित होते हैं और ये व्यक्ति के कामकाजी जीवन की अवधि से जुड़े होते हैं।

इस तरह, शिक्षा के कई लाभकारी प्रभावों से उत्पन्न 'गैर-बाज़ार' लाभों का एक और समूह है। ये प्रभाव अधिक वास्तविक निजी और सामाजिक-आर्थिक लाभों को मिश्रित करते हैं; वे न केवल शिक्षा प्राप्तकर्ताओं और उनके परिवार को प्रभावित करते हैं, बल्कि पूरे समाज को भी प्रभावित करते हैं, उदाहरण के लिए शिशु मृत्यु दर में कमी, स्वास्थ्य प्रभाव, जनसंख्या वृद्धि दर में कमी, लोकतंत्रीकरण और मानवाधिकार, राजनीतिक स्थिरता, अपराध की दर में कमी, गरीबी में कमी असमानता में कमी और सकारात्मक पर्यावरणीय प्रभाव।

लाभ अर्जित करने के लिए प्रारंभिक बाल्यावस्था और बुनियादी शिक्षा में निवेश महत्वपूर्ण है। विश्वभर में कई अध्ययनों ने पुष्टि की है कि बाल विकास के प्रारंभिक वर्षों में निवेश से दीर्घकालिक लाभ मिलते हैं। बच्चों की देखभाल से संबंधित उच्च गुणवत्ता वाले कार्यक्रम, बच्चों की परवरिश (Parenting) से संबंधित कार्यक्रम और पैतृक/मातृ अवकाश (Parental Leave) कार्यक्रम महत्वपूर्ण हैं; ऐसे हस्तक्षेप (intervention) आमतौर पर वंचित इलाकों में अधिक महत्वपूर्ण होते हैं।

35 से अधिक वर्षों में किए गए एक अनुदैर्ध्य अध्ययन (Longitudinal Study) ने वंचित बच्चों के लिए जन्म से पाँच साल तक के प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा कार्यक्रमों के लाभों की गणना की। इन लाभों को शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक व्यवहार और रोज़गार में बेहतर परिणामों के रूप में परिभाषित किया गया था। परिणामों से पता चला कि वंचित बच्चों (जन्म से पाँच साल तक के) के लिए उच्च गुणवत्ता वाले प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा कार्यक्रम निवेश पर प्रति वर्ष 13 प्रतिशत प्रतिफल दे सकते हैं। इसके अलावा, जबकि व्यापक प्रारंभिक बाल्यावस्था कार्यक्रमों की लागत अधिक होती है, गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक बाल्यावस्था कार्यक्रमों में निवेश किया गया प्रत्येक अमेरिकी डॉलर, 4 अमेरिकी डॉलर और 16 अमेरिकी डॉलर के बीच प्रतिफल दे सकता है।(21)

2006 में, हेकमैन ने प्रस्थापित किया कि शिक्षा के विभिन्न चरणों में वंचित बच्चों में निवेश पर प्रतिफल की दरों में गिरावट आई है। नीचे दिया गया रेखाचित्र, जिसे हेकमैन कर्व के नाम से जाना जाता है, दिखाता है कि प्रतिफल की अधिकतम दर विद्यालय पूर्व शिक्षा से जुड़ी है।(22)

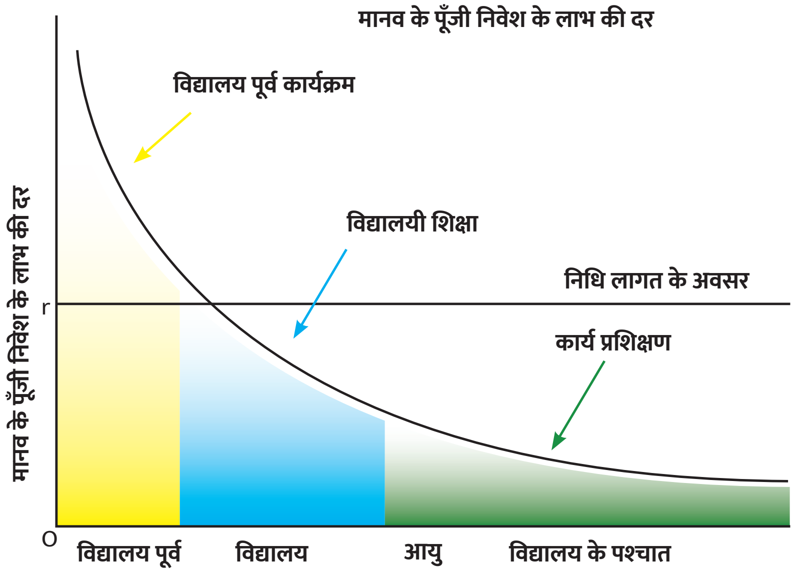

चित्र 1

स्रोत— हेकमेन जे. जे.— (2006) स्किल फंार्मेशन एंड दि इकोनॉमिक्स इन सएडवंटण्ड

प्रारंभिक बाल्यावस्था के कार्यक्रमों के तीन गहन अध्ययनों ने प्रतिभागियों और सामान्य जन को बड़े पैमाने पर प्रतिफल दिया, जो निवेश किए गए प्रत्येक अमेरिकी डॉलर के लिए अमेरिकी डालर 3.23 से अमेरिकी डालर 9.20 तक था।[23]

लागत/लाभ का विश्लेषण सकारात्मक लाभ दर्शाता है।
प्रारंभिक बाल्यावस्था कार्यक्रम लाभों को समाज को प्रदर्शित करते हुए

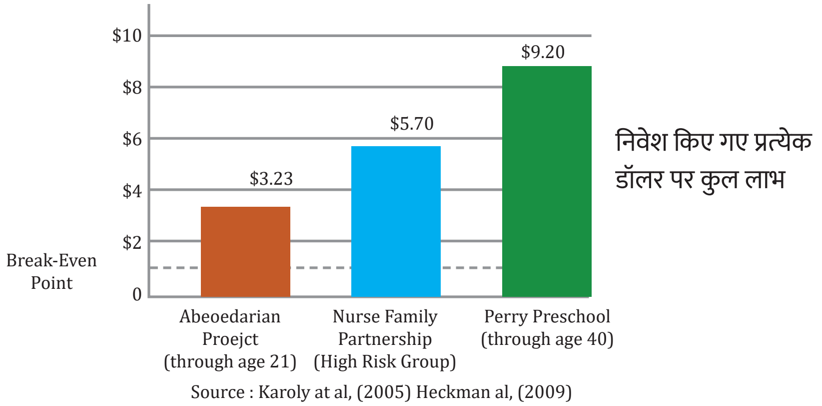

चित्र 2

स्रोत— विकासशील बच्चों का केंद्र, हार्वर्ड यूनिवर्सिटी (2007) अर्ली चाइल्डहुड प्रोग्राम इफेक्टिवनेस

अन्य अध्ययनों ने भी ई.सी.सी.ई. में निवेश पर प्रतिफल के लिए इसी तरह के आँकड़ों का हवाला दिया है। प्रारंभिक बाल्यावस्था की शिक्षा के लिए 7 प्रतिशत और 18 प्रतिशत के बीच मुद्रास्फीति के लिए समायोजित प्रतिफल की वार्षिक दर का अनुमान लगाया गया था। इसे 1985 में शुरू हुए एक अनुदैर्ध्य अध्ययन (Longitudinal Study) द्वारा रिपोर्ट किया गया और पाया गया कि प्रारंभिक बाल्यावस्था की शिक्षा में निवेश किए गए प्रत्येक डॉलर के परिणामस्वरूप निवेश पर लगभग सात डॉलर का प्रतिफल प्राप्त हुआ।[24]

पारिभाषिक शब्दावली

1. आँगनवाड़ी— बच्चों की देखभाल का केंद्र, जो पूरे देश में छह साल से कम आयु के बच्चों, माताओं और किशोरों को स्वास्थ्य, शिक्षा और पोषण सेवाएँ प्रदान करता है तथा जो एकीकृत बाल विकास सेवा (आई.सी.डी.एस.) योजना के तहत स्थापित हैं।
2. संतुलित पद्धति (Balanced approach)— साक्षरता शिक्षण की एक पद्धति, जो डिकोडिंग के लिए स्पष्ट निर्देश और प्रस्तुत लेख के अर्थ-निर्माण के माध्यम से लिपि सीखने को संतुलित करता है।
3. बालवाटिका— 5–6 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए कक्षा 1 से पूर्व एक वर्षीय प्रिपरेटरी कक्षा; यह आँगनवाड़ी, प्री-स्कूल, प्राइमरी स्कूल या किसी अन्य रूप में हो सकती है।
4. बालवाड़ी— पूरे देश में दूरदराज़ के क्षेत्रों में परिवारों और समुदायों को एकीकृत शिक्षा, स्वास्थ्य और देखभाल प्रदान करने के लिए केंद्रीय समाज कल्याण बोर्ड की एक योजना के तहत स्थापित एक प्री-स्कूल। इसे गैर-सरकारी निकायों द्वारा भी स्थापित किया जा सकता है।
5. बुनियादी शिक्षा— इसका तात्पर्य वास्तविक जीवन की परिस्थितियों के आधार पर उत्पादक कार्य के आस-पास केंद्रित स्कूली पाठ्यचर्या के उस गाँधीवादी प्रस्ताव से है, जो समग्र विकास और सीखने की ओर बढ़ाता है। इसे नई तालीम के नाम से भी जाना जाता है।
6. देखभाल— किसी व्यक्ति या वस्तु आदि के प्रति रुचि या चिंता व्यक्त करने वाला व्यवहार; ऐसी कोई भी गतिविधि जो लोगों के बीच अच्छे संबंध स्थापित करने, बनाए रखने और सुधारने का प्रयास करती है।
7. संज्ञानात्मक— सोचने या चिंतन और तर्क की प्रक्रियाओं से संबंधित या इसे शामिल करने वाली कोई मानसिक गतिविधि है।
8. दक्षताएँ— ये सीखने की वे उपलब्धियाँ हैं जिनका अवलोकन और व्यवस्थित आकलन किया जा सकता है।
9. प्रिंट की अवधारणाएँ या प्रिंट जागरूकता— छपी हुई विषयवस्तु कैसे काम करती है, इस बारे में जागरूकता है। अन्य बातों के अलावा इसमें यह ज्ञान भी शामिल है कि किताबें किसलिए हैं, मुद्रित सामग्री को किस दिशा से किस दिशा में पढ़ा जाता है। इसमें लेखन के अन्य नियमों जैसे शब्दों के बीच की जगह और विराम चिह्नों का ज्ञान भी शामिल है।
10. क्रेच— जब बच्चों के माता-पिता व्यस्त होते हैं, खासकर काम पर गए होते हैं, उस समय इस जगह पर दिन में छोटे बच्चों की देखभाल की जाती है।
11. पाठ्यचर्या के उद्देश्य— ये ऐसे विवरण हैं जो पाठ्यचर्या विकास और क्रियान्वयन को दिशा देते हैं।
12. डिकोडिंग— पढ़ना सीखने के लिए यह एक महत्वपूर्ण कौशल है। इसमें लिपि के अक्षरों और भाषा की ध्वनियों के बीच समुचित संबंध बनाने की क्षमता है। लिखित रूप में प्रस्तुत पूर्ण शब्दों को बोलने के लिए यह क्षमता आवश्यक है।
13. विकासात्मक विलंब— यह किसी आयु वर्ग के बच्चों से संबंधित मानदण्डों के अनुसार बच्चे के विकास में विलंब को संदर्भित करता है। यह विलंब गतिक कौशल के कारण, भाषा और बोलने, संज्ञानात्मक कौशल व सामाजिक कार्यों आदि में हो सकता है।

14. विकासात्मक प्रतिफल— वे व्यवहार जो विकास और परिपक्वता की प्रक्रिया के परिणाम हैं।
15. विकासात्मक क्षेत्र— विकास और प्रगति के क्षेत्र, जिन्हें शारीरिक, भावनात्मक, सामाजिक, संज्ञानात्मक और भाषा अर्जन के रूप में जाना जाता है।
16. प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा— जन्म से आठ वर्ष तक के बच्चों की देखभाल और शिक्षा।
17. आरंभिक भाषा— जीवन के पहले कुछ वर्षों में बच्चों का भाषा को सीखना, जिसमें मौखिक कौशल अर्जित करने, उच्चारण और स्वर का अभ्यास करने तथा नई ध्वनियों, शब्दों और भाषा के नियम सीखना महत्वपूर्ण है और इस पर बल दिया जाता है।
18. उद्गामी साक्षरता— सीखने का प्रारंभिक चरण, जिसमें बच्चे पढ़ने और लिखने में संलग्न होते हैं। यह स्कूल में औपचारिक रूप से इन कौशलों से परिचित होने से पहले की अवस्था है।
19. उद्गामी संख्या ज्ञान— सीखने का प्रारंभिक चरण जिसमें बच्चे बुनियादी संख्या अवधारणाओं और गणना कौशलों में संलग्न होते हैं। यह स्कूल में औपचारिक रूप से इनसे परिचित होने से पहले की अवस्था है।
20. भावनात्मक बुद्धिमत्ता— अपनी और दूसरों की भावनाओं को समझने, उनका प्रबंधन करने और सामाजिक नियमों के प्रति सकारात्मक ढंग से प्रतिक्रिया देने की क्षमता।
21. इनकोडिंग— किसी लिपि में ध्वनियों और प्रतीकों के बीच संबंध की समझ का उपयोग, विचार या सुनी गई भाषा से अक्षर, शब्द और वाक्य लेखन करने का कौशल और क्षमता।
22. अनुभवात्मक अधिगम— वास्तविक जीवन की स्थितियों जैसे अनुभवों के जरिए गतिविधियों के माध्यम से शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया।
23. सूक्ष्म माँसपेशीय कौशल— सटीक गति के लिए हाथों और कलाई की छोटी माँसपेशियों का उपयोग करने की क्षमता।
24. बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान (एफ.एल.एन.)— बुनियादी लिखित या पाठ्यसामग्री को पढ़ने और जोड़-घटाव जैसी मूलभूत गणितीय समस्याओं को हल करने की किसी बच्चे की क्षमता।
25. बुनियादी स्तर— 3 से 8 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए स्कूली शिक्षा का चरण।
26. मुक्त खेल— शिक्षक द्वारा विकसित उत्प्रेरक वातावरण में बच्चों के नेतृत्व वाला, बच्चों द्वारा निर्देशित खेल।
27. मुक्त लेखन— लेखन गतिविधि का एक रूप जिसमें लेखक रूप, व्याकरण और शैली की चिंता किए बिना स्वतः स्फूर्त ढंग से और लगातार लिखता है।
28. मार्गदर्शित खेल— शिक्षक के मार्गदर्शन और मदद के साथ बच्चों के नेतृत्व वाले खेल।
29. समग्र विकास— किसी व्यक्ति में बौद्धिक, सामाजिक, शारीरिक, नैतिक और भावनात्मक क्षमताओं का विकास।
30. समग्र प्रगति कार्ड— सीखने की उपलब्धि और विकास के सभी क्षेत्रों में बच्चे के सीखने और प्रगति का रिकॉर्ड।
31. घर की भाषा— बच्चे के घर में सदस्यों के बीच बोली जाने वाली (L1)।

32. परिकल्पना— एक विचार जो किसी चीज़ के संभावित स्पष्टीकरण के लिए सुझाया गया है लेकिन अभी तक सच या सही नहीं पाया गया है।
33. समावेशन— शामिल करना; यह सुनिश्चित करना कि बच्चों के व्यक्तिगत सीखने के अंतर की परवाह किए बिना, उनके पास सभी स्कूल और कक्षा-कक्षीय प्रक्रियाओं में भाग लेने के समान अवसर हैं।
34. एकीकृत शिक्षा— ऐसी शिक्षा प्रणाली, बच्चा जिसका पहले से ही हिस्सा है, उस संदर्भ से किसी नए ज्ञान को जोड़ने और बच्चों की मातृभाषा के उपयोग के ज़रिये बच्चों को स्वयं को खोजने और अपनी वास्तविक क्षमता हासिल करने में मार्गदर्शित करती है।
35. एकीकृत अधिगम— पाठ्यचर्या के सभी क्षेत्रों के अंतर्सबंधों पर ध्यान केंद्रित करते हुए सीखने का एक समग्र दृष्टिकोण।
36. सीखने की उपलब्धियाँ— किसी भी क्षेत्र में सीखने के प्रतिफलों और संबंधित दक्षताएँ प्राप्त करने की दिशा में प्रगति करना।
37. सीखने के प्रतिफल— ये ज्ञान, कौशलों, अभिवृत्तियों और मूल्यों के सार प्रस्तुत करने वाले कथन हैं, जो सभी बच्चों द्वारा अर्जित किए जाने चाहिए और सीखने के अनुभव या सीखने के अनुभवों के अनुक्रम के पूरा होने पर उन्हें प्रदर्शित करना चाहिए।
38. अधिगम निर्धारित पथ— दक्षताओं को प्राप्त करने का विकासात्मक मार्ग।
39. गणितीय समझ— इसमें गणितीय ज्ञान के अर्थ और लक्ष्यार्थ जानना और समझना शामिल है।
40. अर्थ निर्माण— भाषा और साक्षरता विकास के संदर्भ में, सुने या पढ़े जा रहे का अर्थ समझने के लिए श्रोता या पाठक की सक्रिय भागीदारी से यह प्रक्रिया पूर्ण होती है।
41. बहुभाषिकता— यह शिक्षण और सीखने के संदर्भ में संप्रेषण के लिए घर की भाषा के अलावा कई भाषाओं का ज्ञान और सक्रिय उपयोग है।
42. एकैक संगति— छोटे बच्चों में एक कौशल जिसमें समूह की हर वस्तु को गिनना शामिल है, इसमें हर एक वस्तु की एक संख्या नाम के साथ केवल एक बार गिनती की जाती है।
43. फोनिक्स— मेल खाती ध्वनियों के साथ अक्षरों की डिकोडिंग सिखाने की एक विधि।
44. ध्वनि जागरूकता— किसी बोले गए शब्द में ध्वनियों को पहचानने और भेद करने की क्षमता।
45. सीखने की सकारात्मक आदतें— ये सीखने की आदतें हैं जो बच्चों को स्कूली कक्षा जैसे औपचारिक सीखने के वातावरण में सक्रिय संलग्नता के लिए सक्षम बनाती हैं।
46. साक्षरता-पूर्व— ये प्रारंभिक दौर में पढ़ने की तैयारी से संबंधित व्यवहार और कौशल हैं, जो बच्चे को बाद में सफलतापूर्वक पढ़ने की क्षमता विकसित करने में सक्षम बनाते हैं।
47. संख्या-पूर्व— ये प्रारंभिक दौर में गिनने, संख्याओं की पहचान व मात्राओं की तुलना करने की संख्या-तैयारी के व्यवहार व कौशल हैं जो एक बच्चे को बाद में सफल गणना क्षमताएँ विकसित करने में सक्षम बनाते हैं।
48. आरंभिक स्तर— 8 से 11 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए चरण; कक्षा 3–5 के लिए।

49. प्री-स्कूल— 6 साल और उससे कम आयु के बच्चों के लिए शिक्षा प्रदान करने वाला स्कूल।
50. सुरक्षा— यह जोखिम का आकलन को संदर्भित करता है और नुकसान, खतरे या चोट से किसी व्यक्ति का सक्रिय बचाव है।
51. संबलन— सहयोग का विशिष्ट और व्यवस्थित रूप है जो किसी विशेष अवधारणा को सीखने में बच्चों की मदद करने के लिए बनाया जाता है।
52. स्कूल की भाषा— स्कूल में उसके सदस्यों के बीच बोली जाने वाली भाषा।
53. स्कूल तैयारी— इच्छा या खुलेपन के साथ सीखने के प्रारंभिक अनुभवों से जुड़ने और उनका लाभ उठाने के लिए स्कूल में प्रवेश करने वाले बच्चों की तैयारी; इसे स्कूल रेडीनेस के रूप में भी जाना जाता है।
54. स्वयं की देखभाल— स्वयं के स्वास्थ्य, कल्याण और विकास के प्रति रुचि या चिंता के रूप में किया जाने वाला व्यवहार।
55. अलगाव की दुश्चिता— माता-पिता या किसी अन्य संलग्न व्यक्ति से बिछड़ने के दौरान कुछ बुरा होने का तीव्र या लंबे समय तक बना रहने वाला डर।
56. स्थानिक कौशल— वस्तुओं, आकृतियों और स्थानों के सादृश्यीकरण और उनमें हेर-फेर या बदलाव करने की मानसिक क्षमता।
57. उत्प्रेरणा— बच्चों के साथ खेलने, पढ़ने और गाने जैसी सरल गतिविधियाँ, जो छोटे बच्चों की सोचने, संप्रेषण और दूसरों के साथ जुड़ने की क्षमता में सुधार करती हैं।
58. संरचित खेल— शिक्षक के नेतृत्व वाला खेल जिसमें बच्चे सक्रिय रूप से भाग लेते हैं।
59. प्रक्षालक— बिना गिने किसी समूह में चीज़ों की संख्या को सटीकता से समझने की क्षमता, आमतौर पर जब वस्तुएँ कम संख्या में हों।
60. सिनैप्टिक सह-संबंध (Synaptic connections)— ये सीखने और स्मृति को संभव बनाने वाली न्यूरॉन्स (तंत्रिका आवेगों को संचारित करने वाली तंत्रिका कोशिकाएँ) के बीच स्थानिक लिंक हैं।
61. सकल शारीरिक प्रतिक्रिया— मौखिक इनपुट के साथ-साथ या इस पर प्रतिक्रिया स्वरूप शारीरिक गतियों का उपयोग करते हुए भाषा या शब्दावली सिखाने की एक विधि।
62. शब्दावली— यह शब्दों और उन शब्दों के अर्थ को जानना है। भाषा और साक्षरता विकास के संदर्भ में, शब्दावली उन शब्दों के समूह की तरफ भी इशारा करती है, जिन्हें बच्चा समझता है।
63. समग्र भाषा पद्धति— भाषाओं के शिक्षण का एक दर्शन और पद्धति जहाँ किसी विशेष भाषा को अनुभवात्मक और सामाजिक तरीकों से अधिक समग्रता में सिखाया जाता है, इसमें भाषा के हिस्सों (ध्वन्यात्मक संरचनाएँ, व्याकरण और शब्दावली) को एक के बाद दूसरे के क्रम में नहीं पढ़ाया जाता।

संदर्भ

1. शिक्षा मंत्रालय. 2018–19. *यूडायस डेटा.* शिक्षा मंत्रालय. नई दिल्ली.
   http://udise.in/flash.htm http://udise.in/flash.htm
2. महिला एवं बाल विकास मंत्रालय. 2013. *नेशनल अर्ली चाइल्डहुड केयर एंड एजूकेशन पॉलिसी.* महिला एवं बाल विकास मत्रांलय. नई दिल्ली.
   https://wcd.nic.in/sites/default/files/National%20Early%20Childhood%20Care%20and%20Education-Resolution.pdf
3. भारत सरकार. 2022. *लोकसभा अतारांकित प्रश्न क्रमांक 2146.* भारत सरकार. नई दिल्ली.
   http://164.100.24.220/loksabhaquestions/annex/179/AU2146.pdf
4. शिक्षा मंत्रालय. 2020–21. *यूडायस डेटा.* शिक्षा मंत्रालय. नई दिल्ली.
   https://dashboard.udiseplus.gov.in/#/home
5. स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय. 2022. *राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS-5), 2019–20.* स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मत्रांलय, नई दिल्ली.
   http://rchiips.org/nfhs/NFHS-5_FCTS/India.pdf
6. शिक्षा मंत्रालय. 2021. *'स्टूडेंट एंड टीचर्स हॉलिस्टिक एडवांसमेंट थ्रू क्वालिटी एजूकेशन (सार्थक)'.* शिक्षा मंत्रालय. नई दिल्ली.
   https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/upload_document/SARTHAQ_Part-1_updated.pdf
7. भारत सरकार. 2020. *लोकसभा अतारांकित प्रश्न क्रमांक 3980.* भारत सरकार. नई दिल्ली.
   http://164.100.24.220/लोकसभा प्रश्न/annex/175/AU3980.pdf
8. एन.सी.टी.ई. 2020. *लिस्ट ऑफ रिक्गॉइज्ड टीचर एजूकेशन इंस्टीट्यूट.* नई दिल्ली.
   https://www.ncte.gov.in/website/RecognizedInstitutions.aspx
9. शिक्षा मंत्रालय. 2022. *नेशनल अचीवमेंट सर्वे (एन.ए.एस. 2021).* नेशनल रिपोर्ट. शिक्षा मत्रांलय, दिल्ली.
   https://nas.gov.in/download-national-report
10. फिशर, डी. और फ्रे, एन. 2013. *बेटर लर्निंग थ्रू स्ट्रक्चर्ड टीचिंग— ए फ्रेमवर्क ऑफ ग्रैजुअल रिलीज रिस्पॉसबिलिटी.* एसोसिएशन फॉर सुपरविजन एंड करिकुलम डेवलपमेंट (ए.एस.सी.डी.).
11. यूनिसेफ और लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन. 2019. *मैनुअल फॉर अर्ली लैंग्वेज एंड लिटरेसी.* यूनिसेफ.
12. फैन, एल. 2010. *प्रिंसिपल एंड प्रोसेस फॉर पब्लिशिंग टेक्स्टबुक्स एंड अलाइनमेंट विद स्टैंडर्ड— ए केस इन सिंगापुर.* 7–12 मार्च 201 को थाइलैंड में आयोजित गणित शिक्षा में अनुकरणीय प्रथाओं की प्रतिकृति पर APEC सम्मेलन में प्रस्तुत पत्र. कोह समुई, थाईलैंड.
13. सेंटर ऑफ द डेवलपिंग चाइल्ड हार्वर्ड यूनिवर्सिटी. *द साइंस ऑफ अर्ली चाइल्डहुड डेवलपमेंट (एन.डी.-बी.).* हार्वर्ड यूनिवर्सिटी.
    13 सितंबर, 2022 को https://developingchild.harvard.edu/resources/inbrief-science-of-ecd/ से लिया गया.

14. हेकमैन, जे.जे. 2000. 'पॉलिसीज टू फोस्टर ह्यूमन कैपिटल'. *रिसर्च इन इकोनॉमिक्स*, 54(1), 3–56. https://doi.org/10.1006/reec.1999.0225

15. कौल, वी., रामचंद्रन, सी. और उपाध्याय, जी.सी. 1994. *ए स्टडी ऑफ इंपैक्ट ऑफ प्री-स्कूल एजूकेशन ऑन रिटेंशन* इन प्राइमरी ग्रेड्स. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्. नई दिल्ली.

16. हजारिका, जी. और वीरेन, वी. 2013. 'द इफेक्ट ऑफ अर्ली चाइल्डहुड डेवलपमेंट प्रोग्राम अटेंडेन्स ऑन फ्यूचर स्कूल एनरोलमेंट इन रूरल नॉर्थ इंडिया'. *इकोनॉमिक ऑफ एजूकेशन रिव्यू.* 34, 146–161. https://doi.org/10.1016/j.econedurev.2013.02.005

17. मीनाई, जेड., सेन, आर.एस. और फिरदौस, एस. 2015. क्वालिटी इनहैन्समेंट ऑफ प्री-स्कूल एजूकेशन कंपोनेंट ऑफ आई.सी.डी.एस. थू इम्प्लीमेंटेशन ऑफ रिस्ट्रक्चर्ड करिकुलम इन थ्री स्टेट्स. एस.अजमत (सं.) *अर्ली लर्निंग पर्सपेक्टिव टू अर्ली चाइल्डहुड एजूकेशन (अर्ली चाइल्डहुड डेवलपमेंट नॉलेज सीरीज).* पृ. 191–202). ग्लोबल बुक ऑर्गनाइजेशन.

18. कौल, वी., चौधरी, ए.बी., शर्मा, एस. 2017. *क्वालिटी एंड डायवर्सिटी इन अर्ली चाइल्डहुड. एजूकेशन.* सेंटर फॉर अर्ली चाइल्डहुड डेवलपमेंट. अम्बेडकर विश्वविद्यालय.

19. राव, एन. और सन, जे. 2015. 'क्वालिटी अर्ली चाइल्डहुड केयर एंड एजूकेशन इन लो-रिसोर्स लेवल कंट्रीज इन एशिया'. पी.टी.एम. मैरोपे और वाई. कागा (सं.). *इन्वेस्टिंग अगेंस्ट एविडेंस— द ग्लोबल स्टेट ऑफ अर्ली चाइल्डहुड केयर एंड एजूकेशन* (पृ. 211–230). यूनेस्को.

20. ढींगरा, आर. और शर्मा, आई. 2011. 'असेसमेंट ऑफ प्री-स्कूल एजूकेशन कंपोनेंट ऑफ आई.सी.डी.एस. स्कीम इन जम्मू डिस्ट्रिक्ट'. 7. *ग्लोबल जर्नल ऑफ ह्यूमन सोशल साइंस.* https://globaljournals.org/GJHSS_Volume11/2-Assessment-of-Preschool-Education-Component-of-ICDS-Scheme-in.pdf

21. गार्सिया, जे.एल., हेकमैन, जे.जे., लीफ, डी.ई., प्राडोस, एम.जे. 2017.*क्वान्टीफाइंग द लाइफ साइकल बेनिफिट्स ऑफ ए प्रोटोटिपिकल अर्ली चाइल्डहुड केयर प्रोग्राम.* आधार पत्र 23479. नेशनल ब्यूरो ऑफ इकोनॉमिक रिसर्च वर्किंग पेपर सीरीज. https://heckmanequation.org/www/assets/2017/01/w23479.pdf

22. हेकमैन, जे.जे. 2006. *स्किल फॉर्मेशन एंड द इकोनॉमिक ऑफ इन्वेस्टिंग डिस्एडवांटेज्ड* चिल्ड्रन. साइंस, वॉल्यूम 312. https://jenni.uchicago.edu/papers/Heckman_Science_v312_2006.pdf

23. सेंटर फॉर द डेवलपिंग चाइल्ड. 2007. *अर्ली चाइल्डहुड प्रोग्राम इफेक्टिवनेस.* हार्वर्ड यूनिवर्सिटी. https://46y5eh11fhgw3ve3ytpwxt9r-wpengine.netdna-ssl.com/wp- content/uploads/2015/05/inbrief-programs-update-1.pdf से लिया गया.

24. क्विंटन, एस. 2013. 'व्हाट सेन एंटोनियो हैज टू टीच टू वाशिंगटन'. *नेशनल जर्नल 36.*

ग्रंथ-सूची

1. अनुसंधान समूह. 2021. *इश्यूज इन एजूकेशन, टीचर्स एंड टीचर एजूकेशन.* अजीम प्रेमजी विश्वविद्यालय. https://azimpremjiuniversity.edu.in/SitePages/research-projects.aspx
2. अनुसंधान समूह. 2014. *पीपल टीचर्स रेशियो एंड देयर इम्प्लीकेशन.* अजीम प्रेमजी विश्वविद्यालय. https://docplayer.net/10997038-Pupil-teacher-ratios-in-schools-and-their-implications-february-2014-azim-premji-foundation.html
3. इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट फॉर पॉपुलेशन साइंसेज (आई.आई.पी.एस.) एंड आई.सी.एफ. 2021. *नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे (एन.एच.एफ.एस. 5), 2019–20.* https://dhsprogram.com/pubs/pdf/FR375/FR375.pdf
4. ईश्नर, ई.डब्ल्यू. 2002. *द आर्ट्स द क्रिएशन ऑफ माइंड.* यूनिवर्सिटी प्रेस. *येल.*
5. एलिस, जी. और ब्रयुस्टर, जे. 2014. *टेल इट अगेन द स्टोरी टेलिंग हैंडबुक फॉर प्राइमरी इंग्लिश लैंग्वेज टीचर्स.* ब्रिटिश काउंसिल. https://www.teachingenglish.org.uk/sites/teacheng/files/pub_D467_Storytelling_handbook_FINAL_web.pdf
6. कपूर, ए. और शुक्ला, आर. 2022. 'सक्षम आँगनवाड़ी एवं पोषण 2.0'. *एकाउंटेबिलिटी इनीशिएटिव— रिस्पॉन्सिव गवर्नेंस.* https://accountabilityindia.in/publication/saksham-anganwadi-budget-briefs-2022-accountability-initiative-centre-for-policy-research/
7. कपूर, एम. (एन.डी.). *चाइल्ड केयर इन एनशियंट इंडिया— ए लाइफ स्पैन अप्रोच.* 13 सितंबर 2022 को https://ipi.org.in/texts/others/malvikakapur-childcare-sp.php से लिया गया।
8. कमिंस, जे. 2008. 'बी.आई.सी.एस. और सी.ए.एल.पी.— इम्पीरिकल एंड थ्योरेटिकल स्टेटस ऑफ द डिस्टिंक्शन'. स्ट्रीट, बी. और हॉर्नबर्गर, एन.एच. (सं.). *इनसाइक्लोपीडिया ऑफ लैंग्वेज एंड एजूकेशन,* सेकेंड एडिशन, खंड 2— लिटरेसी. पृ. 71–83. स्प्रिंगर साइंस + बिजनेस मीडिया एल.एल.सी.
9. कारपेंटर, टी.पी. और लेहरर, आर. 1999. '*टीचिंग एंड लर्निंग मैथमेटिक्स विद अंडरस्टैंडिंग*'. ई. फेनेमा और टी. ए. रोमबर्ग (सं.) *मैथमेटिक्स क्लासरूम्स दैट प्रमोट अंडरस्टैंडिंग.* रूटलेज.
10. कोस्टलनिक, एम.जे. 1998. *गाइडिंग चिल्ड्रेंस सोशल डेवलपमेंट.* डेलमार पब्लिशर.
11. कौल, वी. 2019. 'इंट्रोडक्शन— पोजिशनिंग स्कूल रेडीनेस एंड अर्ली चाइल्डहुड एजूकेशन इन द इंडियन कॉन्टेक्स्ट. वी. कौल एंड एस भट्टाचर्जी (सं.) *अर्ली चाइल्डहुड एंड स्कूल रेडीनेस इन इंडिया.* (पृ. 3–18). स्प्रिंगर. सिंगापुर. https://doi.org/10.1007/978-981-13-7006-9_1
12. ———. , चौधरी, ए.बी., शर्मा एस. 2017. *क्वालिटी द डायवर्सिटी इन अर्ली चाइल्डहुड एजूकेशन.* सेंटर फॉर अर्ली चाइल्डहुड एजूकेशन एंड डेवलपमेंट. अंबेडकर यूनिवर्सिटी.
13. ———., रामचंद्रन, सी. और उपाध्याय जी.सी. 1994. *ए स्टडी ऑफ इम्पैक्ट ऑफ प्रीस्कूल एजूकेशन ऑन रिटेंशन इन प्राइमरी ग्रेडस.* राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्.
14. क्विंटन, एस. 2013. *व्हाट सैन एंटोनियो वांट्स टू टीच वाशिंगटन. नेशनल जर्नल, 36.*

15. गनिमियाँ, ए.जे., मुरलीधरन, के. और वाल्टर्स, सी.आर. 2021. 'ऑगमेंटिंग स्टेट कैपिसिटी फॉर चाइल्ड डेवलपमेंट— एक्सपेरिमेंटल एवीडेंस फ्रॉम इंडिया'. *एन.बी.ई.आर. वर्किंग पेपर नंबर 28780.* https://econweb.ucsd.edu/~kamurali/papers/Working%20Papers/w28780.pdf

16. गार्सिया, जे.एल., हेकमैन, जे.जे., लीफ, डी.ई. और प्राडोस, एम.जे. 2016. 'लाइफ-साइकल बेनिफिट्स ऑफ ऐन इंफ्लुएन्शियल चाइल्डहुड प्रोग्राम— वर्किंग पेपर'. *नेशनल ब्यूरो ऑफ इकोनॉमिक रिसर्च.* https://doi.org/10.3386/w22993

17. गुप्ता, ए. 2013. *अर्ली चाइल्डहुड एजूकेशन, पोस्टकोलोनियल थ्योरी एंड टीचिंग प्रैक्टिसीज एंड पॉलिसीज इन इंडिया— बैलेंसिंग वायगोत्स्की एंड द वेद* (संशोधित संस्करण). पालग्रेव मैकमिलन.

18. ———. और विलियम्स, एल. 2006. *अर्ली चाइल्डहुड एजूकेशन, पोस्टकोलोनियल थ्योरी एंड टीचिंग प्रैक्टिसीज इन इंडिया बैलेंसिंग वायगोत्स्की एंड द वेद.* सेंट मार्टिन प्रेस इंक. http://www.palgraveconnect.com/doifinder/10.1057/9780312376345

19. गुप्ता, वी. और सामंत, एस. 2017. *यूजिंग चाइल्ड असेसमेंट टू इम्प्रूव प्रोग्राम क्वालिटी.* https://www.linkedin.com/palse/using-child-assessments-improve-program-quality-vini-gupta

20. गॉर्डन, ए.एम. और ब्राउन, के. डब्ल्यू. 2010. *बिगनिंग एंड बियांड— फाउंडेशन इन अर्ली चाइल्डहुड एजूकेशन (8वां संस्करण).* वर्ड्सवर्थ पब्लिकेशन. कंपनी

21. डेनियल्स, ई. और पाइल, ए. 2018. *डिफाइनिंग टॉय बेस्ड लर्निंग. 7.* https://www.child-encyclopedia.com/pdf/expert/play-आधारित-learning/according-experts/defining-play-based-learning

22. ड्वेक, सी.एस. और येगर, डी.एस. 2012. 'माइंडसेट दैट प्रमोट रेसिलेंस— व्हेन स्टूडेंट बिलीव दैट पर्सनल कैरेक्टरस्टिक्स कैन बी डेवलप्ड'. *एजूकेशनल साइकोलॉजिस्ट. 47:51.*

23. ढींगरा, आर. और शर्मा, आई. 2011. 'असेसमेंट ऑफ प्री-स्कूल एजूकेशन कंपोनेंट ऑफ आई.सी.डी.एस. स्कीम इन जम्मू डिस्ट्रिक्ट'. *7. ग्लोबल जर्नल ऑफ ह्यूमन सोशल साइंस.* https://globaljournals.org/GJHSS_Volume11/2-Assessment-of-Preschool-Education-Component-of-ICDS-Scheme-in.pdf

24. नंदा, एम.,बनर्जी, एम., रामानुजन, पी., चौधरी, ए.बी., भट्टाचार्जी एस. और कौल, वी. 2017. *द इंडिया अर्ली चाइल्डहुड एजूकेशन इम्पैक्ट स्टडी.* यूनिसेफ. https://www.unicef.org/india/media/2076/file

25. नाग, एस. 2007. 'अर्ली रीडिंग इन कन्नड़— द पेस ऑफ अक्विजिशन ऑफ ऑर्थोग्राफिक नॉलेज एंड फोनेमिक अवेयरनेस'. *जर्नल ऑफ रिसर्च इन रीडिंग. आई.एस.एस.एन.— 0141-0423, वाल्यूम– 30, इश्यू– 1*, 7–22.

26. निडो अर्ली स्कूल. 2017. *प्रोजेक्ट बेस्ड लर्निंग इन अर्ली लर्निंग सेंटर्स.* https://www.poter.com.au/article/148/project-आधारित-learning-in-early-learning-centres/

27. निर्मला, आर. और सन, जे. 2015. 'इंवेस्टिंग अगेंस्ट एविडेंस— द ग्लोबल स्टेट ऑफ अर्ली चाइल्डहुड केयर एंड एजूकेशन'. पी.टी.एम. मैरोपे और वाई. कागा (सं.). *क्वालिटी अर्ली चाइल्डहुड केयर एंड एजूकेशन इन लो रिसोर्स लेवल कंट्रीज इन एशिया.* यूनेस्को.

28. पांडे, एस. और कपूर, ए. 2022. 'प्रधानमंत्री पोषण शक्ति निर्माण'. *एकाउंटेबिलिटी इनीशिएटिव— रिस्पॉन्सिव गवर्नेंस.*
https://accountabilityindia.in/publication/pm-poshan-budget-briefs-2022-accountability-initiative-centre-for-policy-research/

29. पिंटो, सी.एफ. और सोरेस, एच. 2012. *यूज़िंग चिल्ड्रेन लिटरेचर इन ई.एल.टी.— ए स्टोरी बेस्ड अप्रोच.*
https://core.ac.uk/download/pdf/47141003.pdf

30. प्रेंडरगैस्ट, टी. और डायमेंट-कोहेन, बी. 2015. रिसर्च राउंडअप—इंवेस्टिंग इन अर्ली चाइल्डहुड. *चिल्ड्रेन एंड लाइब्रेरी.*
https://journals.ala.org/index.php/cal/article/view/4189

31. फेनेमा, ई. और रोमबर्ग, टी.ए. 1999. *मैथमेटिक्स क्लासरूम्स दैट प्रमोट अंडरस्टैंडिंग.* रूटलेज.

32. फैन, एल. 2010. *प्रिंसिपल एंड प्रोसेसेस फॉर पब्लिशिंग टेक्स्टबुक्स एंड अलाइनमेंट विद स्टैंडर्ड— ए केस इन सिंगापुर.* 7–12 मार्च 201 को थाइलैंड में आयोजित गणित शिक्षा में अनुकरणीय प्रथाओं की प्रतिकृति पर APEC सम्मेलन में प्रस्तुत पत्र. कोह समुई, थाईलैंड.

33. बाशम, ए.एल. 2004. *द वंडर दैट वाज इंडिया— खंड 1* (भारतीय संस्करण). पिकाडोर.

34. बैरेट, पी., ट्रेव्स, ए., श्मिस, टी., अंबास्ज, डी. और उस्तीनोवा, एम. 2019. *द इम्पैक्ट ऑफ स्कूल इंफ्रास्ट्रक्चर ऑन लर्निंग— ए सिंथेसिस ऑफ द एविडेंस.* वर्ल्ड बैंक.
https://doi.org/10.1596/978-1-4648-1378-8

35. ब्रोजक, जे. 2017. *द इम्पॉर्टेन्स ऑफ लो स्टूडेंट टू टीचर रेशियो.*
https://classroom.synonym.com/disadvantages-teaching-small-class-7324788.htm

36. भट्टाचार्जी, एस. और रामानुजन, पी. 2019. 'व्हाट टू डू चिल्ड्रेन इन रूरल इंडिया डू इन देयर अर्ली इयर्स'? *आइडियाज फॉर इंडिया.*
14 सितंबर, 2022 को http://www.ideasforindia.in/topics/macroeconomics/what-do-children-in-rural-india-do-in-their-early-years.html से लिया गया।

37. भारत सरकार. 2012. *द प्रोटेक्शन ऑफ चिल्ड्रन फ्रॉम सेक्सुअल ऑफेंसेस एक्ट 2012.*
https://wcd.nic.in/sites/default/files/POCSO%20Act%2C%202012.pdf

38. ——— . 2016. *द राइट्स ऑफ पर्संस विद डिसएबिलिटी एक्ट 2016.*
http://www.disabilityaffairs.gov.in/upload/uploadfiles/files/RPWD%20ACT%20 2016.pdf

39. ———. 2020 *लोकसभा अतारांकित प्रश्न क्रमांक. 3980.*
http://164.100.24.220/लोकसभा प्रश्न/annex/175/AU3980.pdf

40. ———. 2021. *लोकसभा अतारांकित प्रश्न क्रमांक. 3068.*
http://164.100.24.220/लोकसभा प्रश्न/annex/176/AU3068.pdf

41. ———. 2022. *लोकसभा अतारांकित प्रश्न क्रमांक. 2146.*
http://164.100.24.220/लोकसभा प्रश्न/annex/179/AU2146.pdf

42. महिला एवं बाल विकास मंत्रालय. 2016. *नेशनल प्लान ऑफ एक्शन फॉर चिल्ड्रन, 2016— सेफ चिल्ड्रन हैप्पी चाइल्डहुड.*
https://wcd.nic.in/sites/default/files/National%20Plan%20of%20Action%20 2016.pdf

43. ———. 2017. *प्रीस्कूल एजूकेशन किट (पी.एस.ई. किट) रिकमेंडेड लिस्ट ऑफ प्ले एंड लर्निंग मैटेरियल.* https://wcd.nic.in/sites/default/files/Pre-School%20Education%20Kit.pdf

44. ———. 2013. *नेशनल अर्ली चाइल्डहुड केयर एंड एजूकेशन पॉलिसी* (ड्राफ्ट). https://wcd.nic.in/sites/default/files/National%20Early%20Childhood%20Care%20and%20Education-Resolution.pdf

45. ———. 2014. नेशनल *अर्ली चाइल्डहुड केयर एंड करिकुलम फ्रेमवर्क.* https://wcd.nic.in/sites/default/files/national_ecce_curr_framework_final_03022014%20%282%29.pdf

46. मीनाई, जेड., सेन, आर.एस. और फिरदौस, एस. 2015. क्वालिटी इन्हैन्समेंट ऑफ प्रीस्कूल एजूकेशन कम्पोनेंट ऑफ आई.सी.डी.एस. थ्रू इम्प्लीमेंटेशन ऑफ रिस्ट्रक्चर्ड करिकुलम इन थ्री स्टेट्स. एस. अजमत (सं.). अर्ली लर्निंग पर्सपेक्टिव्स टू *अर्ली चाइल्डहुड एजूकेशन (अर्ली चाइल्डहुड डेवलपमेंट नॉलेज सीरीज)* (पृ.. 191–202). ग्लोबल बुक्स ऑर्गनाइजेशन.

47. मेनन, एस. और दास एच.वी. 2019. *कॉम्प्रिहेंसिव लिट्रेसी इंस्ट्रक्शन मॉडल इन इंडियन क्लासरूम्स.* टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंस हैदराबाद 23. http://eli.tiss.edu/wpcontent/uploads/2017/08/Comprehensive_Literacy_Practitioner_Brief_12_PDF.pdf

48. मॉरिशन, जी.एस. 2012. *अर्ली चाइल्डहुड एजूकेशन टुडे प्लस न्यू माय एजूकेशन लैब विद पियर्सन ई-टेक्स्ट— एक्सेस कार्ड पैकेज.* (12वाँ संस्करण). पियर्सन.

49. येजर, डी.एस. और ड्वेक, सी.एस. 2012. 'माइंडसेट्स दैट प्रमोट रेसिलेंस— व्हेन स्टूडेंट बिलीव दैट पर्सनल कैरेक्टरस्टिक कैन बी डेवलप्ड'. *एजूकेशनल साइकोलॉजिस्ट*, 47 (4), 302-314. https://doi.org/10.1080/00461520.2012.722805

50. यूनिसेफ. 2018. *लर्निंग थ्रू प्ले— स्ट्रेंथनिंग लर्निंग थ्रू प्ले इन अर्ली चाइल्डहुड एजूकेशन प्रोग्राम्स 2018.* शिक्षा अनुभाग, कार्यक्रम प्रभाग. यूनिसेफ. https://www.unicef.org/sites/default/files/2018-12/UNICEF-Lego-Foundation-Learning-throw-Play.pdf

51. राजेश, ए. और सामंत, एस.पी. 2017. *गीत, नाचो, गप्पो (सिंगिंग, डांसिग, स्टोरी टेलिंग)— ए रूट टू जॉयफुल लर्निंग. बेनिफिट्स ऑफ मल्टीलिंगुअल एजूकेशन.* चाइल्ड केयर एक्सचेंज.

52. रामचंद्रन, वी., दास, डी., निगम, जी., शांडिल्य, ए. 2020. *कॉन्ट्रैक्ट टीचर इन इंडिया. रीसेन्ट स्टेटस एंड करेंट ट्रेंड्स.* अजीम प्रेमजी विश्वविद्यालय. https://eruindia.org/files/Contract%20Teachers%20in%20India%202020.pdf

53. राव, एन. 2010. 'प्रीस्कूल क्वालिटी एंड द डेवलपमेंट ऑफ चिल्ड्रेन फ्रॉम इकॉनामिकली डिसएडवांटेज फैमिलीज इन इंडिया'. *अर्ली एजूकेशन एंड डेवलपमेंट*, 21(2), पृ.सं. 167–185. https://doi.org/10.1080/10409281003635770

54. ———. और कौल, वी. 2018. 'इंडियाज इंटीग्रेटेड चाइल्ड डेवलपमेंट सर्विस स्कीम— चैलेंजेस फॉर स्केलिंग अप — इंटीग्रेटेड चाइल्ड डेवलपमेंट सर्विस'. *चाइल्ड— केयर हेल्थ एंड डेवलपमेंट*, 44 (1), 31–40. https://doi.org/10.1111/cch.12531

55. ——— और सन, जे. 2015. *क्वालिटी अर्ली चाइल्डहुड केयर एंड एजूकेशन इन लो रिसोर्स लेवल कंट्रीज इन एशिया.* पी. टी. एम. मैरोपे और वाई. कागा (सं.). इनवेस्टिंग अगेंस्ट एविडेंस–द ग्लोबल स्टेट ऑफ अर्ली चाइल्डहुड केयर एंड एजूकेशन, यूनेस्को.

56. राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद्. 2022. *रिक्गनॉइज्ड इंस्टीट्यूशन्स.* ईस्टर्न रीजनल कमिटी एन.सी.टी.ई. https://ncte.gov.in/website/ercrecognizedInstitutions.aspx

57. ———. 2010. *नोटिफिकेशन नंबर एफ. नं. 61 -03/20/2010/NCTE/(N&S). 2016-08-24* (1) https://ncte.gov.in)

58. राष्ट्रीय अनुसंधान परिषद्. 1999. *हाउ पीपल लर्न— ब्रेन, माइंड, एक्सपीरिएंस एंड स्कूल.* एक्सपैंडेड एडीशन.
https://doi.org/10.17226/9853

59. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. 2005. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005.* शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार. नई दिल्ली.
https://ncert.nic.in/pdf/nc-framework/nf2005-english.pdf

60. ———. 2006. *प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा पर राष्ट्रीय फोकस समूह.* शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार. नई दिल्ली.
https://ncert.nic.in/pdf/focus-group/early_childhood_education.pdf

61. ———. 2008. *प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा.* एक परिचय शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार. नई दिल्ली. https://ncert.nic.in/dee/pdf/Earlychildhood.pdf

62. ———. 2017. *प्रारंभिक स्तर पर सीखने के प्रतिफल.* शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार. नई दिल्ली. https://ncert.nic.in/pdf/publication/otherpublications/tilops101.pdf

63. ———. 2020. *पूर्व प्राथमिक शिक्षा के लिए दिशानिर्देश.* शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार. नई दिल्ली. https://ncert.nic.in/dee/pdf/guidelines-for-preschool.pdf

64. ———. 2019. *पूर्व प्राथमिक पाठ्यचर्या.* शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार. नई दिल्ली. https://ncert.nic.in/dee/pdf/Combined_Pre_school_curriculumEng.pdf

65. लैंसेंट. 2016. 'एडवान्सिंग अर्ली चाइल्डहुड एजूकेशन डेवलपमेंट— फ्रॉम साइंस टू स्केल'. *ऐन एक्जीक्यूटिव समरी फॉर द लैंसेंट्स सीरीज.*
https://els-jbs-prod-cdn.jbs.elsevierhealth.com/pb-assets/Lancet/stories/series/ecd/Lancet_ECD_Executive_Summary-1507044811487.pdf

66. विद्या भारती. 2022. विद्या भारती से लिया गया.

Vidya Bharati: https://vidyabharati.net/

67. शिक्षा मंत्रालय. 2016–17. *यूडायस डेटा.* http://udise.in/flash.htm

68. ———. 2018–19. *यूडायस डेटा.* http://udise.in/flash.htm

69. ———. 2019. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति प्रारूप 2019. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/Draft_NEP_2019_EN_Revised.pdf*

70. ———. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति प्रारूप 2020.* https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf

71. ———. 2020–21. *यूडायस डेटा.* https://dashboard.udiseplus.gov.in/#/home

72. ———. 2022. प्रशस्त— ए डिसएबिलिटी स्क्रीनिंग चेकलिस्ट फॉर स्कूल.
https://ncert.nic.in/pdf/DSCS_booklet.pdf

73. ———. 2021. *स्टूडेंट एंड टीचर्स हॉलिस्टिक एडवांसमेंट थ्रू क्वालिटी एजूकेशन (सार्थक).*
https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/upload_document/SARTHAQ_Part-1_updated.pdf

74. ———. 2021. निपुण भारत. *नेशनल इनीशिएटिव फॉर प्रोफिशिएंसी इन रीडिंग विद अंडरस्टैंडिंग एंड न्यूमरेसी (निपुण भारत).* गाइडलाइंस फॉर इम्प्लीमेंटेशन.
https://nipunbharat.education.gov.in/fls/fls.aspx

75. ———. 2022. *टॉय बेस्ड पेडागॉजी— ए हैंडबुक— लर्निंग फॉर फन, जॉय एंड हॉलिस्टिक डेवलपमेंट.*
https://dsel.education.gov.in/sites/default/files/update/toy_based_pedagogy.pdf

76. शिक्षा विभाग, *प्ले बेस्ड लर्निंग.* ऑस्ट्रेलिया.
https://earlychildhood.qld.gov.au/earlyYears/Documents/age-proper-pedagogies-play-based-learning.PDF

77. शिक्षा विभाग. 2022. *स्टैंडर्ड ऑफ लर्निंग (एस.ओ.एल.) एंड टेस्टिंग.* शिक्षा विभाग, वर्जीनिया.
13 सितंबर, 2022 को https://doe.virginia.gov/testing/index.shtml से लिया गया।

78. सेंटर फॉर द डेवलपिंग चाइल्ड (एन.डी.–ए.). *द साइंस ऑफ अर्ली चाइल्डहुड डेवलपमेंट.* हार्वर्ड यूनिवर्सिटी.
13 सितंबर, 2022 को https://developingchild.harvard.edu/resources/inbrief-science-of-ecd/ से लिया गया।

79. ———. (एन.डी.–बी). *अर्ली चाइल्डहुड प्रोग्राम इफेक्टिवनेस.* हार्वर्ड यूनिवर्सिटी.
13 सितंबर, 2022 को https://developingchild.harvard.edu/resources/inbrief-early-childhood-program-effectiveness/ से लिया गया।

80. स्कूल शिक्षा निदेशालय, पुडुचेरी. 2021. *प्री-स्कूल करिकुलम.*

81. स्वामीनाथन, एम. 2003. ट्रेनिंग फॉर चाइल्ड केयर एंड एजूकेशन वर्कर्स इन इंडिया'. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ अर्ली इयर्स एजूकेशन*, 2, पृ.सं. 67–76
https://doi.org/10.1080/09669760.2003.10807107

82. हजारिका, जी. और वीरेन, वी. 2013. 'द इफेक्ट ऑफ अर्ली चाइल्डहुड डेवलपमेंटल प्रोग्राम अटेंडेंस ऑन फ्यूचर स्कूल एनरोलमेंट इन रूरल नॉर्थ इंडिया'. *इकोनॉमिक्स ऑफ एजूकेशन रिव्यू*, 34, 146–161.
https://doi.org/10.1016/j.econedurev.2013.02.005

83. हेकमैन, जे.जे. 2000. 'पॉलिसीज टू फोस्टर ह्यूमन कैपिटल'. *रिसर्च इन इकोनॉमिक्स,* 54(1),. पृ. 3–56।

84. ———. 2006. स्किल फॉरमेशन एंड इकॉनामिक्स ऑफ इन्वेस्टिंग इन डिस्एडवान्टेज्ड चिल्ड्रेन. *साइंस, 312(5782)*

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के विकास के लिए विस्तृत और समावेशी प्रक्रिया

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.) की राष्ट्रीय संचालन समिति (एन.एस.सी.) ने शिक्षा मंत्रालय और राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के साथ मिलकर एन.सी.एफ. के विकास के लिए एक विस्तृत, समावेशी और पुनरावृत्ति वाली प्रक्रिया निर्मित की। यह प्रक्रिया हमारे देश के विविध और जीवंत शैक्षिक परिदृश्य से लाभान्वित हुई।

यह प्रक्रिया राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के साथ राज्य फोकस समूहों की स्थापना के साथ शुरू हुई, जिसमें एन.सी.एफ. के विकास के लिए 25 प्रासंगिक विषयों पर आधार पत्र लिखने के लिए 4000 से अधिक विशेषज्ञ शामिल थे। 32 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों ने 500 से अधिक आधारपत्र प्रस्तुत किए गए।

इन 25 विषयों पर एक एकीकृत राष्ट्रीय दृष्टिकोण के साथ आधारपत्र विकसित करने के लिए 25 राष्ट्रीय फोकस समूह भी बनाए गए।

देशभर से जिला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थानों (डाइट) ने 1550 से अधिक जिला परामर्श रिपोर्टें (डी.सी.आर.) प्रस्तुत कीं। शिक्षकों और शिक्षाविदों की राय प्राप्त करने के लिए एक मोबाइल सर्वेक्षण शुरू किया गया जिसमें 13100 प्रतिभागियों ने अपने विचार साझा किए।

साथ ही, भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों के साथ परामर्श बैठकें आयोजित की गईं ताकि उनकी दृष्टि को समझा जा सके और यह भी समझा जा सके कि उनकी दृष्टि को साकार करने के लिए शिक्षा कैसे महत्वपूर्ण है। ज़मीनी स्तर पर काम कर रहे गैर सरकारी संगठनों और अन्य संस्थानों ने अपने अनुभव और सुझाव साझा किए। विद्यालयी शिक्षा से विद्वानों की क्या अपेक्षाएँ हैं, इस विषय में सुझाव के लिए विश्वविद्यालयों में संगोष्ठियाँ आयोजित की गईं। शिक्षकों, अभिभावकों और विद्यार्थियों के विभिन्न समूहों के साथ खुले परामर्श सत्रों का आयोजन किया गया। विभिन्न श्रेणियों में 100 प्रश्नों के माध्यम से भारत के नागरिकों की राय प्राप्त करने हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या के लिए डिजिटल सर्वेक्षण (DiSaNC) शुरू किया गया था। इस मंच पर अब तक अभिभावकों और विद्यार्थियों सहित 10 लाख से अधिक इच्छुक नागरिकों ने अपनी राय दर्ज़ की है।

एन.एस.सी. ने सभी प्राप्त सुझावों का विश्लेषण-संश्लेषण करने और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा बनाने के लिए एक सुगठित प्रक्रिया तैयार की।

इस प्रकार, यह राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, शिक्षकों, अभिभावकों, राज्यों के प्रासंगिक सरकारी विभागों, प्रशासकों, विद्यालयों, शिक्षा के क्षेत्र में काम कर रहे गैर सरकारी संगठनों, शिक्षाविदों, विभिन्न क्षेत्रों के विद्वानों व भारत के अन्य नागरिकों की सहभागिता से बनी गहन समावेशी प्रक्रिया का परिणाम है।

संस्करण 1.0

इस दस्तावेज़ को अद्यतन करना जारी रहेगा क्योंकि यह स्कूली शिक्षा के लिए समूची राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के साथ एकीकृत है और उसमें सम्मिलित है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर
2022

32160

विद्यया ऽ मृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-93-5292-539-1